बीजक कबीरदास सटीक ॥

जिसमें

आदिमंगल, रमैनी, शब्द, कहरा, बसन्त, चौंतीसी, साखी इत्यादि खण्डों में जनन मरणादि अनेक दुःख सन्तप्त जीवोंके अकारक योग और उपासनादिमत का प्रकाशक और परमपुरुष श्री रामचन्द्र के स्वरूप ज्ञानका प्रदर्शक सर्वोत्तम मत वर्णन कियाहै ॥

जिसको

श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरीवांराज्याधिपतिश्री १०८ विश्वनाथ वैकुण्ठवासीने अत्युत्तमता से सम्पूर्ण ग्रन्थकी प्रत्यक्षर टीकाकी ॥

श्रीमद्विद्वद्वृन्दशिरोमणि महात्मायुगलानन्य शरण जी
वैकुण्ठवासी अयोध्यानिवासीके पुस्तकालय से उक्त
श्रीमहात्माजीके स्थानापन्न श्रीमहोपाध्याय
परमसाधु श्रीजानकीवर शरणजी के
द्वारा बड़े परिश्रम से प्राप्त हुआ

सम्पूर्ण विद्यारसिक व वेदांत मतानुरागियोंके अवलोकनार्थ

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
जून सन् १८९२ ई० ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादिसारभूत परमरहस्य गीताशास्त्र का सर्वविद्या निधान सौशील्यविनयौदार्य सत्यसंगर शौर्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जानके हृदय जनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता बज्रवत् वेदान्त व योग शास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठनकरनेकी सामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्ते हैं—और यह प्रत्यक्षहो है कि जब तक किसी पुस्तक अथवा किसी बस्तु का अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धि में न भासित हो तबतक आनन्द क्यों कर मिले इस प्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्रीमद्भगवत्पदाब्ज रसिक जनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ संतत धर्म्मधुरीण सकल कलाचातुरीण सर्व विद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी (सी,आई,ई) ने बहुतसा धन व्ययकर फ़र्रुख़ाबाद निवासि स्वर्गबासि पण्डित उमादत्त जी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषामें तिलक रचाय नवलभाष्य आख्य से प्रभात कालिक कमल सरिस प्रफुल्लित करा दिया है कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुष भी जानसक्ते हैं ॥

विचित्रचरित्र ॥

अद्भुत मिथ्या ईश्वर और उसके परम मायावी म्लेच्छ और दानव सहायकों को हरिभक्त क्षत्रियों के विजय करनेकी कथा ॥

श्रीमत् गौड़ देशाधिपति श्री महाराज शत्रुंजय परम भागवत के भय से अद्भुत नामी मिथ्या ईश्वर के सहस्र मायानिधि से विस्मयी माया रचित देश की सींवा पर भागकर जाने और वहां महाराज शत्रुंजय और उस मिथ्या ईश्वर के परम मायावी म्लेच्छ और दानव सहायकों से युद्धहोने की कथा नाना चित्रविचित्र और अपूर्व वीररस-भक्तिरस-प्रेमरस-मोहरस और वियोग रस आदि नानारसों से संपुटित मनोहर आख्यानों सहित गद्यपद्य परमललित मध्य देशीय भाषा में वर्णित है ॥

सारस्वत सटीकका विज्ञापनपत्र ॥

पण्डित लोगों को उचित है कि प्रथम जिससमय छोटे २ विद्यार्थी उनके पास पढ़ने को आयें उनको अत्यन्त आदर से अपने पुत्र के समान समझकर बहुत लाड़ प्यार से उनको अकारादि सब स्वरों और ककारादि सब व्यंजनों को पहिचनवाकर लिखायें पढ़ायें और जिस समय छोटे

बीजक कबीरदास ॥

अथ आदिमंगल ॥

दो० ॥ प्रथमै समरथ आप रहे दूजा रहा न कोइ ॥
दूजा केहि बिधि ऊपजा पूछतहौं गुरु सोइ १
तबसतगुरु मुखबोलिया सुकृतसुनोसुजान ॥
आदि अन्त की पारचै तासों कहौं बखान २
प्रथमसूर्ति समरथ कियो घटमेंसहजउचार ॥
ताते जामन दीनिया सात करी विस्तार ३
दूजे घट इच्छा भई चितमनसातो कीन्ह ॥
सातरूप निरमाइया अविगत काहुनचीन्ह ४
तब समरथके श्रवणते मूलसुरति भै सार ॥
शब्द कला ताते भई पांच ब्रह्म अनुहार ५
पांचौ पांचै अंड धरि एक एकमा कीन्ह ॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्तहैं सो सुकृत चित चीन्ह ६
योगमया यकु कारण ऊजे अक्षर कीन्ह ॥
याअविगतिसमरथकरी ताहिगुप्तकरिदीन्ह ७
श्वासा सोहं ऊपजे कीन्ह अमी बंधान ॥
आठ अंश निरमाइया चीन्हो संत सुजान ८

तेज अंड आचिंत्यका दीन्हों सकल पसार ॥
अंड शिखा पर बैठिकै अधर दीप निरधार ९
ते अचिन्त के प्रेमते उपजे अक्षर सार ॥
चारि अंश निरमाइया चारिवेद विस्तार १०
तब अक्षरका दीनिया नींद मोह अलसान ॥
वेसमरथअविगतिकरी मर्मकोइनहिंजान ११
जब अक्षरके नींदगै दबी सुरति निरबान ॥
श्यामवरणयक अंडहै सोजलमें उतरान १२
अक्षर घटमें ऊपजे व्याकुल संशय शूल ॥
किन अंडा निरमाइया कहा अंडका मूल १३
तेही अंडके मुक्खपर लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षर दृष्टिसे फूटिया दशद्वारे कढ़ि बाप १४
तेहिते ज्योति निरञ्जनौ प्रकटेरूपनिधान ॥
कालअपरबलबीरभा तीनिलोकपरधान १५
ताते तीनों देवभे ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
चारिखानितिनसिरजिया मायाकेउपदेश १६
चारि वेद षट शास्त्रऊ औ दशअष्ट पुरान ॥
आशादै जग बाँधिया तीनों लोक भुलान १७
लख चौरासी धारमा तहां जीव दियबास ॥
चौदहयम रखवारिया चारिवेद विश्वास १८
आपु आपु सुख सबरमै एक अंडके माहिं ॥
उत्पातिपरलयदुःखसुख फिरिआवहिंफिरिजाहिं १९
तेहि पाछे हम आइया सत्य शब्द के हेत ॥
आदिअन्तकी उतपती सोतुमसोंकहिदेत २०
सात सुरति सबमूलहै प्रलयहु इनहींमाहिं ॥
इनहींमासे ऊपजे इनहींमाहिं समाहिं २१
सोई ख्यालसमरत्थकर रहेसो अछप छपाइ ॥
सोईसंधिलै आइया सोवतजगहिजगाइ २२

सात सुरति के बाहिरे सोरह संखिकेपार ॥
तहँ समरथको बैठका हंसन केर अधार २३
घर घर हम सबसों कही शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं लख चौरासी धार २४
मंगल उत्पति आदिका सुनियो संत सुजान ॥
कह कबीर गुरु जाग्रत समरथका फुरमान २५

दो० प्रथमै समरथ आपरहे दूजा रहा न कोय।
दूजाकेहिबिधिऊपजा पूंछतहौंगुरुसोय १।

कबीरजीकी बाणीके अर्थ करिबेको मोमें सामर्थ्य नहीं
परंतु साहब यह बिचारिकै कि कबीरजी के बीजकको पा
अर्थलगाइकै जीव बिगरेजायँहैं सोसाहब तो परमदयालुहैं उन
करुणाभई तबकबीरजीको भेज्यो याकहिकै कि आगेहम तुम
भेज्यो हतो सोतुम ग्रन्थबनाइकै बहुत जीवनको उपदेशक
उद्धारकियो सो अबतिहारे ग्रन्थको पाखंडअर्थकरिकै पाखंड
कै जीव बिगरेजायँ हैं औ बहुत बिगरिगये सो तुमजाइकै
अर्थतुम बीजकमेंराख्योहै सो अर्थ बिश्वनाथ सों बनवावो
सो अर्थ समुझिकै जीव हमारे पासआवैं सो कबीरजी आ
मोसोंकह्यो कि तुम बीजकको अर्थबनावो हमतुमको बतावेंगे
उनके हुकुमते मैं बीजकको अर्थ बनाऊंहौं बतावनेवाले श्रीक
हिजी हैं मोमें ताक़तनहीं है जोमैं बनायसकौं और नाभाजी
मालमें लिख्योहै कि ॥ कबीरकानिराखीनहीं वरणाश्रमषट
शनी ॥ सोइहां कबीरजीको सिद्धांत सतमैं कहौंगो औ सर्व
द्धांतग्रंथ जोमैं बनायोहै तामें सबको सिद्धांत यथार्थ राख्यो
यहां बीजकके तिलकमें साहबको औकबीरजीको हुकुम य
कि एक सिद्धांतरहै जो सब ते परे है और सिद्धांत सबखंड
जायँ सोसबके सिद्धांतनको खंडन करिकै एकसिद्धांत मैं
करौंहौं सोसुनिकै साहबके हुकुमी जानिकै साधुलोग पंडित

और और मतवालेजेहैं तेमेरे ऊपर खफा न होयँ प्रसन्नरहैं नास-मुझिपरै तौ प्रसन्न होइकै गुरूसों पूंछिलेइँ औ यह बस्तु निर्देशात्मक मंगलहै ताको अर्थलिखैंहैं अथ अर्थ ॥ प्रथम समरथ जे श्रीरामचन्द्रहैं ते आपहीहैं दूसरा कोईनहीं रह्यो जोकहौ उनके लोकमें तौ हंस हंसिनी सबबर्णनकरैहैं उनकेपार्षद सबहैं ताको वर्णननिर्भय ज्ञानमें बिस्तरतेहैं सो इहां संक्षेप ते सूचित किये देइहैं ॥ सत्यपुरुषनिर्भयनिरबाना। निर्भयहंस तहँनिर्भयज्ञाना॥ इत्यादिक बहुत बर्णन निर्भयज्ञानमें कबीरजी कियोहै तुम एकही कैसे कहौहौ सो सत्यहै उहांकेजीव सनातन पार्षद बनेरहे हैं औ साहब औ साहब को लोक सनातन बनोरहै है परन्तु उहांके पार्षदजीव और उहांकी सबबस्तु साहबहीके रूप है औ सब चिन्मयहै सो वेदकहैहैं ॥ श्लोक ॥ सच्चिदानन्दोभगवान् सच्चिदानंदात्मिकाअस्यव्यक्तिः ॥ औ वह अयोध्यानगरी ब्रह्मके परेहै ब्रह्मवाको प्रकाशहै औ रघुनाथजीके समीपके जे पार्षद हैं ते साहबके स्वरूप हैं तामें प्रमाण ॥ अयोध्याचपरब्रह्मसरयूसगुणःपुमान् ॥ तन्निवासीजगन्नाथः सत्यं सत्यंवदाम्यहम् १ अयोध्यानगरीनित्या सच्चिदानन्दरूपिणी ॥ यदशांशेनगोलोकःवैकुण्ठस्थाःप्रतिष्ठिताः २॥इतिबशिष्ठसंहितायाम्॥देवानांपूरयोध्यातस्यांहिरण्मयः कोशः स्वर्गलोकोज्योतिषावृतः इतिश्रुतेः ॥ सो इहांकहैहैं कि प्रथम तौ समरथसाहब वह लोकमें आपही आपहै दूजा कोईनहीरह्यो दूजा जोरह्योसोतौ साहबकेलोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें रह्योहै सो कबीरजीते धर्मदास कहैहैं कि हे गुरूजी मैं तुमसे पूछौंहौं कि साहबके लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें जो समष्टि जीववहदूजारह्यो सो केहिविधितेउपज्यो संसारीभयो काहेते कि साहब तो दयालु हैं जीवों को संसारते छुडाइदेइ हैं जीवोंको संसारीनहीं करिदेइहैं औ वह समष्टिजीवके तब मनादिकनहीरहे शुद्धरह्योहै उपजिबेकी सामर्थ्यनहीरहीहै औ साहब सामर्थ्य दैकै जीव को संसारीकरवही न करैंगे सो दूसरा जो है

समष्टिजीव सो उपाजिकै व्यष्टिरूप संसारी केहिविधितेभयो औ जीव के अपने ते उपजिबे की सामर्थ्य नहीं रही ता में प्रमाण॥ कर्तृत्वंकरणत्वंचसुभावश्चेतनाधृतिः ॥ तत्प्रसादादिमेसंतिनसंतियदुपेक्षया इतिपयंगश्रुतेः १ ॥

दो० तबसतगुरुमुखबोलिया सुकृतसुनोसुजान॥
आदिअन्तकीपारचै तोसोंकहौंबखान २

गुरूसाहबको कहै हैं काहेते सबतेश्रेष्ठहैं औ जे यथार्थ उपदेश करै हैं तिनको सतगुरुकहैहैं औ जेअयथार्थ उपदेशकरै हैं तिनको गुरुवालोगकहै हैं सोयह बिजकग्रंथकी औ अनभवातीत प्रदर्शनी यहटीकाकी यहसैलीहै तबसतगुरुजे कबीरजी हैं ते मुखतेबोले कि हे सुजान हेसुकृत जीवसमष्टिते व्यष्टि जेहिप्रकार भयेहैं सो सुनोमैं तुमसों आदिअंतकीपरचैकहौंहौं जोहितेतुमजानिलेउ२॥

दो० प्रथमसुरतिसमरथकियो घटमेंसहजउचार॥
तातेजामनदीनिया सातकरीबिस्तार ३

प्रथमसमर्थ जे साहबश्रीरामचन्द्र हैं साकेत निवासी दयालु जिनके लोककेप्रकाशमें समष्टिरूपते यहजीव है ते श्रीरामचन्द्र परमदयालु यहजीवकोदेखिकै कि कछूवस्तुको याकोज्ञाननहीं है जबयहजीवपर साहबकी दयाभई तब सुरतिमात्रदैकै अपने जानिबेको वाकोसमर्थ करतभये कि जबयाके सुरतिहोयगी तब मोकोजानैगो मैं हंसस्वरूपदैकै अपनेलोकलैआऊंगो जहांमनमाया कालकीगतिनहींहै तहांसुखपावैगो अबैतोयाको सुखको ज्ञानई नहीं है यहकरुणाकरिकै वहसमष्टिरूपजीवकेघटमेंसहजहीसुरति को उच्चारकरतभये कहेअंकुरकरतभये सोसाहब तो अपने जानिबे कोसुरतिदियो कि मोकोजानै औ यहजीववहीसुरतिकोपाइकैऔ मनादिकनको कारण इनके रहबईकरै औ शुद्धरहै दूधरहै जीव अपनी शुद्धतारूपदूधमें जगत्कोकारण बनोईरहै तामेंवहीसुरति

को जामनदैदियो सो विनशिगयो सो वह सुरतिपाइकै साहबके पास तो न गयोजीवविनाशिकै इच्छादिक जेसात तिनको बिस्तार करतभयो औ यह चैतन्यजीवको सुरतिदैकै साहब चैतन्यकरैहै साहब चैतन्योको चैतन्यहै तामें प्रमाण श्लोक ॥ नित्योनित्यश्चेतनश्चेतननां। द्रव्यंकर्मचकालंचस्वभावोजीवएवच। यदनुग्रहतःसंतिनसंतियदुपेक्षया इतिभागवते ॥ औ इच्छादिकन को कौन सातविस्तार करतभयो सो आगे कहे हैं ३ ॥

दो० दूजेघटइच्छाभई चितमनसातौकीन्ह ॥
सातरूपनिरमाइया अविगतकाहुनचीन्ह ४

जबयाको साहबसुरतिदीन तबजीवकेजगत्को कारणमें रामाज्ञानवनोईरहै तेहितेसुरतिसाहबमें नलगायो जगत्मुखलगायो जबसुरतिजगत्मुखलाग्योतबप्रथमजगत्को कारणपुष्टभयो विनशिगयो तेहितेदूसरइच्छारूप अंकुरभयोतीसरचित्तभयोचौथमनभयो पांचौंबुद्धिभई छठौंअहंकारभयो सातौंअहंब्रह्मकहेअनुभव तेभयो जोब्रह्मताकोमान्यो कि महींब्रह्महौं सो शुद्धतेअशुद्धह्वैकै सातविस्तारकरिकैसमष्टिरूप जो जीवसो अहं ब्रह्मास्मिमान्यो तवयाकोअनुभव ब्रह्ममायासवलितभयो ताहीद्वाराजगत्उत्पन्न भयो ताहीद्वारा यहजीवौ उत्पन्नभयो अर्थात् समष्टिरूपजीव को अनुमान जो ब्रह्म सो इच्छाकियो एकते अनेकहोऊं सो वा अनुमान ब्रह्मसमष्टिजीवको है यहिहेतुतें वहसमष्टिजीव एकतेअनेकह्वैगयो औ फिरि वहसमष्टिरूपजीवको जो अनुमान ब्रह्मसो विचारयो कि ई जे अशुद्धरूपजीवात्मा तिनमें प्रवेशकैकै नामरूपकरो याहीअर्थमें प्रमाणश्लोक ॥ सदैवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं तदैक्षतवहुस्यांअनेनजीवेनात्मनानु प्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणिइत्यादिश्रुतयः ॥ जो कहो वा सत्ब्रह्मजीवको अनुमान कैसेकहौहौ ब्रह्महीसवभयो ऐसोकाहेनहींकहौहौ तौ ॥ यतोवाचोनिवर्त्तन्ते अप्राप्यमनसासह ॥ इत्यादिक श्रुतिनकरिकै मन

बचनकेपरेहैं सत्नाम कहनो वामेंनहीं संभवितहैकाहेते वो निर्विकारहै सविकारव्हैकै एकते अनेक ह्वैजैवोनहीं संभवै या हेतुते यहसमष्टि जीवही अपनो अनुमान रूपधोखाब्रह्मठाटकैकै माया सबलित ह्वैकै तद्द्वारा जगत् उत्पन्नकैकै तद्द्वारा आपो उत्पन्नह्वै कै समष्टिते व्यष्टिह्वैगये अविगति समर्थजेसाहबहैं तिनकोनाचीन्हतभये यहसंक्षेप सूक्ष्मरीतिते जो उत्पत्तिभई सो कहिदियो औ जबजीवसाहबके जानिबेको समर्थभयो तब जैसी उत्पत्ति भईहै सोकहैहैं साहब जो सुरतिदियो सोतौ अपनेमें लगायबेको दियो यहसंसारमेंलगायो परंतुजोसंसारतेखैंचिकै अजहूं सुरति सम्हारै साहबमें लगावै तो साहब के हजूर आठौ पहर बनो रहै अर्थात् साहबै सर्वत्र देखेपरै संसारदेखिहीनापरै तामें प्रमाण कबीरजी को साखी ॥ सुरतिफँसी संसारमें तेहिसेपरिगादूर ॥ सुरतिबांधि अस्थिरकरै आठौपहरहजूर १ आगेजौनीतरहते उत्पत्तिभई साहबको त्यागि संसारीभयो सुरतिपाय काजकरिबेको समर्थभयो तबहूंसाहब सारशब्दको उपदेशदियोहै ताको साहब मुखअर्थना समुझिकै संसार मुखअर्थ समुझिकै ब्रह्मकी कल्पनाकैकै संसार को उत्पन्न कैकै संसारीभयोहै यहजीव सो आगे कहैहैं ४ ॥

दो० तबसमरथकेश्रवणते मूलसुरतिभइसार ॥
शब्दकलाताते भई पांचब्रह्मअनुहार ५

साहबको दियो सुरतिपाइकै समरथभयो जोसमष्टि जीवताके श्रवणमें मूलसुरतिजो साहब अपने जानिबेकोदियोहै सोसार भई कहेरामनाम रूपते प्रकटभई साररामनामको कहैहैंतामें प्रमाणसाखीकबीरजीकी ॥ रामैनाम अहैनिजसारू । औसबझूंठसकलसंसारू १ साहबजो सुरतिदियोहै सोवहसुरतिके चैतन्यताते नामसुन्यो अर्थात्साहबजो याकोगोहरायोकिरामनामको जपिकै बिचारिकैमोकोजानो तोमैंहंसस्वरूपदैकै अपनेपासबुलाइलेउँ सोसुनिकैरामनाममें जगत्मुखअर्थहैताकोग्रहण कियोऔशब्दमें

लगाइ दियो वही रामनाम लैकै शब्दरूप वाणी उचरीहै सोक-
बीरजीकी रमैनीमें आगेलिख्याहै ॥ रामनामलैउचरीवाणी ॥औ
वही रामनामते शब्द कलावाणी होतभई सो पांचब्रह्मके अनु-
हार हैं पांचब्रह्म कौनहैं तेकहैहैं सोहंररंकार ओंकार अकार परा-
शक्ति रूपरपरम श्रीकबीरजी के भेदसारग्रंथको प्रमाण ॥ प्रथम
शब्दसोहंजोकीन्हा। सबघटमाहींताकरचीन्हा ॥ ररंकारयकशब्द
उचारी। ब्रह्माविष्णुजपैंत्रिपुरारी ॥ ओंकारशब्दजोभयऊ। तिन
सबही रचना करिलयऊ ॥ शब्दस्वरूपनिरंजनजाना। जिनयह
कियो सकल बंधाना ॥ शब्दस्वरूपीशक्ति सो बोलै। पुरुषअंडो
लनकबहूं बोलै ५ ॥

दो० पांचौपांचैअंडधरि एकएकमाकीन्ह ॥
दुइइच्छातहँगुप्तहैं सोसुकृतचितचीन्ह ६

ते पचहुंनको पांचअंड कहे पांचस्वरूप बनाइकै एकएकस्व-
रूपमें एक एक अक्षर राखत भये औ दुइइच्छा जे प्रथम कहि
आयेहैं एकवह इच्छा कारणरूपा जबसाहबसुरतिदियोहै तबजो
रहीहै साहब मुखनहीं होनदियो याको बिनशिकै जगत्मुख कि-
यो औ दूसरी वह सुरतिपाइकै जगत् मुखहोइकै अपने अनुभव
ब्रह्मको खड़ाकियो वह ब्रह्ममाया सबलित ह्वैगई तौन माया
आदि शक्ति गायत्रीरूपा इच्छा सो येदोनों इच्छापचहुंनमेंगुप्तहैं
सो कबीरजी कहैहैं कि हेसुरुत चित्तमें चीन्हों मैं बर्णन करौहौं
विचारिकै देखो ये पचहुंनमें दोनोंइच्छाहैं कि नहीं येसिगरेब्रह्म
जेसार शब्द के जगत् मुख अर्थ ते भयेहैं ते माया सबलित हैं
कि नहीं तुमचीन्हों सो आगे कहै हैं ६ ॥

दो० योगमयायकुकारनो ऊंजोअक्षरकीन्ह ॥
याअविगतिसमरथकरी ताहिगुप्तकरिदीन्ह ७

कारण रूप सुरति औ योगमाया गायत्री ये जे दुइ इच्छा
हैं ते वे पांचों ब्रह्म को करतीभईं सो सर्वत्र तो यह सुनै हैं कि

ब्रह्मते सब होइहै औ यहांइनते ब्रह्म होइहै पांचौ यह बड़ो आश्चर्य है यह अविगति समर्थ जे परम पुरुष श्री रामचन्द्र हैं ते जब सुरति दियोहै तब ये सब भये हैं तिनको गुप्त करिदियो अर्थात् इनहीं पांचौ ब्रह्म में औ जीवमें नामकोअर्थ लगायदियो है ते पचहुनको बतावैहै ७॥

दो० श्वासासोहंऊपजे कीनअमीबंधान ॥
आठअंशानिरमाइया चीन्होंसंतसुजान ८

यहसोहंशब्दवहपरमपुरुषजोहै समष्टिजीवताकेश्वासाते उपज्योसोईबतावैहै किसोहं कहेसःअहंसो जोहै अनुभवगम्यब्रह्मसो मैंहौंऔवही आदिपुरुषसमष्टिजविश्वासातेअमबिंधानकरतभयो कि इनकीमिठाई पाइकैलोग लोभायजायँ कौनअमीबंधानकरत भयो वहीश्वासाते आठअंश बनावतभये कहेआठौ सिद्धि निकासतभये आठौ सिद्धिकेनाम ॥ अणिमामहिमाचैव गरिमालघिमातथा। प्राप्तिःप्राकाम्यमीशित्वंवाशित्वंचाष्टसिद्धयः ॥अथवाआठअंश निरमाइया कहेआठ प्रधान ईश्वर प्रकट कियो तेईपरम पुरुष समष्टि जीवके मंत्रीभये तामेंप्रमाण महातंत्रमें महादेवकी वाक्य ॥ कालीचकौशिकीविष्णुः सूर्योहंगणनायकः ॥ ब्रह्माचभैरवश्चैवचाष्टधातेप्रकीर्तिताः १ इक्थोवई छबराइति कीर्तिताः १ यहप्रमाण सतानन्द भाष्यमें विस्तारकैकैहै सो हे संतसुजानौ तुम चीन्हत जाउ वह जोसार शब्द रामनामहै सो साहब समष्टि जीव पुरुषको बतायो सोसुन्यो औसाहबको न जान्यो धोखाब्रह्मरूप आपहूवैकै वाको और ई जगद्रूप अर्थ निकासिलियो औ वह जो सोहं शब्द प्रकटभयो सो संकर्षणहै काहेते कि सोहंशब्द जीवमें घटितहोइहै कि वह जीव जोहै सोई बिचारकरै है कि सो जोहै ब्रह्मसो अहंकहे मही हौं एक और दूसरो कोई नहींहै सो उन्हींको आदिपुरुषऔविराट औहिरण्यगर्भ कहैहै औसहस्रशीर्षी पुरुषकहैहै औ ई समष्टिरूपजीव पुरुषहै सोवही समष्टिरूप ते संकर्षण स्थूलरूप धा-

रणकरिकै प्रकट भयो सबको आकर्षणकरिकै एकह्वैरहै ताको संकर्षणकही समष्टिजीवकाहेते महाप्रलयमें सबजीव समष्टिजी-वैमें रहैहैं औव्यंजन मकार पचीसौबर्णहै सोजीवबाचकहै ताको अर्थ समष्टिजीवरूप संकर्षण समुझ्यो औरामनामकी जोमकार है सोतौ वर्णातीतहै पचीसौ वर्ण नहींहै रामनामके व्यंजन म-कार में संकर्षण के अंशजे हैं लक्ष्मण तिनको अर्थ न समुझयो वहां पांच ब्रह्म कहि आयेहैं सो इहां एकब्रह्मकी औ रामनामके एकमात्राकी प्राकट्य भई ८॥

दो० तेजअण्डआचिन्त्यका दीन्होसकलपसार॥
अण्डशिखापर बैठिकै अधरदीपनिरधार ९

अचिन्त्यजोहै रामनाम ताकोतेज अंडजोहै रामनामको रेफ तौने रेफको अर्थलेकै सर्वत्र पसराइ दियो अर्थात्रेफ अर्धमात्रा को अर्थपराआद्याशक्ति ब्रह्मस्वरूपासमुझ्योसोसबजगत्में पस-राइ दियो वहीमायाते संपूर्ण जगत् होतभयो सोवह पराआद्या शक्ति अंडजोहै ब्रह्मांडताकी शिखापर बैठिकै अधरदीपकहे नीचे के ब्रह्मांडनको निरधारकहे प्रकाशकरिकै निर्माण करत भई सो वहीको योगीलोग ब्रह्मांडमें प्राण चढ़ाइकै वही ब्रह्मज्योति को ध्यानकरैं हैं औवहीज्योतिमें जीवको मिलावै हैं औरेफपदवाच्य ते श्रीजानकीजी हैं सो अर्थ न समुझ्यो इहां दूसरे ब्रह्म की प्राकट्य भई ९॥

दो० तेअचिन्त्यके प्रेमते उपज्यो अक्षर सार॥
चारिअंशनिरमाइया चारिवेदविस्तार १०

तौन जो अचिन्त रामनाम ताकेप्रेमते कहे जबवामें प्रेमकि-यो कि याको समुझै कहाहै तब रामनाममें जो है रकार तेहिमें जोहै लघुअकार तौनेके शक्तिहू अक्षर सारजोहै रामनामसोप्रण-वरूपते प्रकटहोतभयो ताहीको शब्दब्रह्मरूपकरिकै समुझतभये

तौने प्रणवकीचारि मात्राहैं अकार उकार मकार विंदुते एकएक मात्राते एकएक वेदभये सो चारिवेदहोतभये औ सबते परे जे श्रीरामचन्द्रहैं रकारार्थ तिनको न समुझतभये सोयाहीमें एकाक्षरौ ब्रह्मकी औशब्दहू ब्रह्मकी प्राकटयभई सो इहांतीसरे ब्रह्म की प्राकटयभई १ वहांरकारकी अकारको अर्थकरिआयो यहांरकारार्थश्रीरामचन्द्रकोकहौहौं यहकैसे सोरेफ बाच्यते जानकीऔ श्रीरामचंद्रते बिलग नहीं होयहै याही अभिप्रायते लघुरकारकी जो अकार तौनेके रेफतेसहितै कह्योहै रकार वाच्य श्रीरामचंद्र को लिख्योयाही प्रमाणके अनुसेयते वोहू रकारवाच्य श्रीरामचंद्रको लिखिदियो सीताराम बिलग नहींहोयहैं तामें प्रमाण॥ अनन्याराघवेणाहंप्रभायथा वा जानकीको बचन है॥ अनन्याहि मयासीता भास्करस्यप्रभायथा॥ येश्रीरामकेबचनहैं याहीअभिप्रायतेकबीरजी जानकीकोवर्णन नहींकियो श्रीरामहीकेवर्णनते जानकीआइगई काहेतेसीताराममेंभेदहैतामेंप्रमाण॥ नरामःसीताजानकीरामचंद्रोनित्यास्वंडोधेचपश्यंतिधीराःइतिश्रुतिः १०॥

दो० तब अक्षरका दीनिया नींद मोह अलसान॥
वेसमरथअविगतिकरी मर्मकोइनाहिंजान ११

तब योगमाया अक्षर कहे जो एकाक्षर ब्रह्मप्रणव तत्प्रतिपाद्य जोईश्वर प्रकटभयो जोजीव ताकोनींद मोहआलस्य देतभईऔ प्रणव औवेदनते पृथ्वी अप तेज वायु आकाशादिकसबजगत्प्रकट भयो औ ताहिप्रणव वेदनते सब जीवनके नामरूप शुभाशुभकर्मादिक सबबस्तु प्रकटभई अर्थात् वेदहीमें सबवर्णितहै औ सब के नाम रूप वेदहीते निकसे हैं सो प्रणव रकारहीते प्रगट भयो है औ सब अक्षर प्रकट भये हैं ताहीते सब वेद भयेहैं याही हेतु ते प्रणव औ वेदहू अविगति समर्थ जे श्री रामचन्द्र हैं तिनकी महिमा करीकहे कही जो वेद तात्पर्य्य करिकै बतावैहैं तौनेको मर्म कोई न जानतभयो औप्रणव तात्पर्य्यकरिकै श्रीरामचंद्रही

को कहेहैं सो अर्थ तापिनी का प्रमाणदैके लिख्योहै सो मेरेरह-
स्यत्रय ग्रन्थमें है सो प्रणव अक्षर वेद सब राम नामही ते नि-
कसेहैं सो मेरे मन्त्रार्थ में प्रकट है ११॥

दो० जबअक्षरकेनींदगइ दबीसुरतनिरवान ॥
श्यामवरणयकअण्डहैसोजलमेंउतरान १२

योगमाया में सोय रहे अक्षर कहे नाश रहित जे नारायण
तिनको जब योगमाया जगायो नींद गई तब उनको निर्वाण
सुरति देतभई काहेते ईजेहैं नारायण तिनको निर्वाण रूप कहे
निराकार रूपकैके अंतर्यामी रूपते सबके भीतर दबाइ देतभई
अर्थात् चेष्टा रहित दिव्य गुण विशिष्ट सर्वत्र व्यापक अंतर्यामी
तत्त्वरूप जे निर्वाण नारायण तिनको सबकेअन्तर दबाइदेतभई
कहे सबके अन्तर्यामी करिदेतभई तेई प्रकटहोतभये श्याम वर्ण
अण्ड कहे चतुर्भुज रूप धारणकरिकै जलमें उतरानकहे जलमें
रहत भये सो इनके शरीरमें शरीर जे हैं निराकारनारायणति-
नको नित्य सम्बन्ध होत भयो सो रकारमें जो है अकार ताको
नारायण अर्थ करत भये औभरत बांची जोहै अकार सो अर्थ न
समुझत भये यहां चौथे ब्रह्मकी प्राकट्य भई १२॥

दो० अक्षरघटमेंऊपजेव्याकुलसंशयशूल ॥
किनअण्डानिरमाइया कहांअण्डकामूल १३

अक्षर जेनारायणहैं तिनके घटतेऊपजे अर्थात् तिनकीनाभि
में कमल होइहै तेहिते ब्रह्महोइहै ते ब्रह्मा सब जगत् करै हैं
तब समष्टि जीव शुद्धते अशुद्ध ह्वैके ब्रह्माते उत्पन्न ह्वैके बहुत
शरीर धारणकरै हैं ते ब्रह्म जब उत्पन्नभये तब व्याकुलभये औ
संशय करतभये कि कहां अंडका मूलहै औ को अंडाको बनायो
है औ हम कहांते उत्पन्न भये हैं सो खोज्यो खोजे न पायो तब
तपस्या करत भयो तब नारायण प्रकट भये ते ब्रह्माते कह्यो कि

तुम जगत्की उत्पति करौ यहकथा पुराणन में प्रसिद्धहै १३ ॥

दो० तेहीअण्डकेमुख्यपर लगीशब्दकीछाप ॥
अक्षरदृष्टिसेफूटिया दशद्वारेकढ़िबाप १४

तौने ब्रह्मरूपी अण्डके मुखपर शब्दकी छाप लगी अर्थात् शब्दब्रह्म जो बेदसार ताको नारायण बताय दियो तौनेको ब्रह्मा जपतभये तबवाहीते प्रकटे जे चारो बेद ते ब्रह्माके चारिउ मुख ते निकसतभये तौने वेदनको अक्षर जो समष्टि जीवहै सो जगत् मुखदृष्टि कियो अर्थात् जगत् मुख अर्थ देख्यो तबद्वारे ह्वैकै वह मायाते सबलित जोहै ब्रह्मजाको आगे बाप कहिआये हैं जो शुद्धते अशुद्ध जीवनको कैकै उत्पन्न करैहैसो दशद्वारेते कहेदशौ इंद्रिनते कढ़तभयो तबइंद्रिनकी बिषयह्वैकै इंद्री ह्वैकै चिदंशह्वैकै चिदचिदात्मक जगत होतभयो अर्थात् वेदनको अर्थ जब जगत् मुख देख्यो तबवहजीव चिदचिदात्मक जगत्को धोखा ब्रह्महीं देखतभयो सो जगत्तौ साहबके लोक प्रकाशको शरीरहैतौनेको वेदार्थ करिकै धोखा ब्रह्महीं देखत भयो यही धोखाहै तात्पर्यकै कै बेद जोसाहबको कहै है ताको न जानत भये लघु रकार की अकार ते नारायणभये तिनतेब्रह्माकी उत्पत्तिभई सो कहिआये अरु वहिते जेतो जगत् के उत्पन्नको प्रयोजन रह्यो सो कहिगये अबफेरि सिंहावलोकनकरिकै पंचम ब्रह्मकी प्राकट्यकहैहैं १४ ॥

दो० त्यहितेज्योतिनिरञ्जन प्रकटेरूपनिधान ॥
कालअपरबलबीरभातीनलोकपरधान १५

तेहिते कहे वही रामनामते व्यञ्जन मकारको जो अर्थकरि आये हैं तामें जो अकार रही है ताको महाविष्णु अर्थ करतभये जेविरजाकेपारपर बैकुण्ठमें रहैहैं जिनकेअंशतेरमा वैकुण्ठवासी भगवान भये हैं सो अञ्जन जो अविद्यामाया ताते वे रहित हैं काहेते कि अविद्या माया बिरजाके यही पार अर वननहै पै पु-

राणादिकमें सो व्यञ्जन मकार की मकार को महाविष्णु अर्थ करत भये औ वह अकार शत्रुघ्न वाचक है सो अर्थ न समुझत भयेते अकार रूप महाविष्णु ते महाकाल अपरबल बीरभा कहे जेहिते प्रबल वीर कोई नहीं है अथवा अकार जे विष्णु हैं तेई हैं परमबल जिनके सो तीन लोकमें प्रधान होत भये इहांपांचो ब्रह्मकी प्राकट्य ह्वैगई १५ ॥

दो० तातेतीनों देव भे ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
चारिखानितिनसिरजिया मायाकेउपदेश १६

तौनेकालते कहे वही कालमें काल पाइपाइकै एकएक ब्रह्माण्डमें तीनतीन देवता ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पन्नहोतभये सो कोटिन ब्रह्माण्डनमें कोटिन ब्रह्मादिकभये तेमायाके उपदेश ते कहे मायाको ग्रहण करिकै संसार में चारिखानिजे जीवहैं तिन को सिरजिया कहे उत्पत्ति करतभये सो उत्पत्तिको क्रम ब्रह्माते पहिले कहि आयेहैं १६ ॥

दो० चारिवेदषट्शास्त्रऊ औदशअष्टपुरान ॥
आशादैजगबांधिया तीनोंलोकभुलान १७

छवोशास्त्र औ अठारहो पुराणमें माया जोहै सो औरई और फलकी आशा बताइकै औरई और नाना मतन में लगाइ दियो और सम्पूर्ण जगत् बांधि लियो मुख्य अर्थकरिकै साहबको भुलायदियो ये सब तात्पर्य्य कैकै साहबको कहै हैं सो साहबको न जाननपाये तातेतीनोंलोकके जीव भुलायगये १७ ॥

दो० लखचौरासीधारमा तहांजीवादियवास ॥
चौदह यम रखवारी चारिवेदविश्वास १८

चौरासीलाख जोयोनिहैं सोईहैं धारा ताहीमें जीवकोवास देतभये कहेवही चौरासी लाख योनिरूपी धारामें सबजीव वहे

जाइहैं अर्थात् नानारूप धारण करैहैं सो चारिवेदके विश्वासते कहे चारिवेदके मतते नानामतहोतभये ॥ शीतलेत्वं जगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिता ॥ इत्यादिक नानादेवतनकी उपासना गुरुवालोग बतावत भये वेद जो तात्पर्य्य करिकै बतावैहै साहब को सो अर्थ न जानतभये औचौदौयम जीवकी रखवारी करत भये यहजीव निकसिकै साहबके पास न जानपायो चौदह यमकेनाममें प्रमाण ज्ञानसागरको॥ दुर्गदचित्रगुप्तबरिआरा। ईतोयमके हैं सरदारा ॥ मनसामलअपरबलमोहा। कालसैनमकरन्दी सोहा॥ चित्तचंचल औअंधअचेता॥मृतकुअंधजोजीतैखेता॥ सूर सिंह औरौक्रमरेखा। भावीतेजकालकापेखा॥ अघनिद्राऔक्रोधितअंधा। जेहिमाजिवजंतु सबबंधा॥ परमेश्वर परबल धर्म राजा। पाप पुण्यसबतेभलछाजा॥ यहसबयमैंनिरंजनकीन्हा। लिखनी कागदरचिकै दीन्हा ॥ १ ॥ प्रथम दुर्गदकहे हैं दुर्गकहावै कि जो कोई पुण्यकरै है ताको स्वर्गदैकै पुण्यभोगकरावैहै औजो पापकरैहै तिनको नरकनमें पापको भुगताइकै किलारूपी जोहै शरीर सो जीवकोदेयहै याते दुर्गदयम एक औ दूसर चित्रगुप्त जे कर्मनके लेखाकरैहै तीसर मलिनमन औचौथ मोह औपांचौ कालकीसेनाका मकरन्दी कहेबसंततेसहित औछठौ अंधअचेत जोहै चित्त सो औ सातौंमृत्यु भई जो खेतकोजीतैहै कहेसबको मारैहै औ आठौंसूरकहे अंधा अर्थात् अशुभकर्मकी रेखा औनवों सिंह कहेसमर्थ शुभकर्मकी रेखा औदशौं यमभावी जो कालको पेखाहै कहे जो कर्म होनहारहै सो काल करिकै होइहै अर्थात् कालकी अपेक्षा राखैहै औग्यारहौं अघकहे पापरूपनिद्रा औबारहौंअंधको देनवारो क्रोध जामें सबजीव जंतु बँधेहैं तेरहौं प्रबल परमेश्वर रमाबैकुण्ठबासी विष्णु जेशुभाशुभ फलके दाताहैं औ चौदहौं धर्मराज यज्ञपुरुष ये चौदहौं यमनिरंजन जो आगे कहि आयेहैं बिरजा पार विष्णुकी सत्ताबिना ये सब जड़हैं कार्यनहीं करिसकैहैं वोई लिखनी कागद देहहैं १८ ॥

दो० आपु आपुसुखसबरमैं एकअण्डके माहिं ॥
उत्पातिपरलयदुःखसुखफिरिआवैंफिरिजाहिं १९ ॥

एक अंडजोहै ब्रह्मांड तौनेमें जीव अपने अपने सुखके लिये सबरमेंहै कोई मानैहै कि हम जीवात्माहैं कोईमानै है कि हम ब्रह्महैं कोई मानैहै कि हमईश्वरहैं कोई मानैहै कि हम देवताहैं कोई मानै है कि हम सेवकहैं कोई मानै है कि शरीरभर सबकुछ है आगेकछू नहीं है सो विषयही सुखकरिलेइ कोई यज्ञादिक करिकै स्वर्गको सुखचाहै है औकोई यशचाहैहै कि अपने स्वस्वरूपको प्राप्तहोयँ सो हमको अक्षय सुखहोय सो जिनजिनमतन करिकै जौनजौन स्वस्वरूपई मानैहै तेइनके स्वस्वरूप नहीं है ये अच्छे सुख काहेको पावैं तेहिते इनके जनन मरण न छूटत भये उत्पत्ति प्रलयमें दुःख सुखको प्राप्तिहोइहै औफिरि आवै है फिरि जाइहै ककार चकार आदिक जे बर्ण हैं तिनमें बुन्दार्थ चंद्रदेइ तब सानुनासिक ताकी एकमात्रा रामनाममें औरहै सो याके अर्थहंस स्वरूपहै सोसाहब देइहै सो ना समुझो प्राकृतनानाजीवरूप आपनेको मानिकै नानामतनमेंलागिकै संसारीह्वैगये औ रामनाममें छात्राहैं तामें प्रमाण ॥ रामनाममहाबिंधे षड्भिर्वस्तुभिरावृतम् ॥ जीवब्रह्ममहानादै स्त्रिभिरन्यंबदामिते ॥ स्वरेणअर्धमात्रेणदिव्ययामाययापिच ॥ इति महारामायणे ॥ औ राम नाम को जो अर्थ भूलि गये हैं तामें प्रमाण सबमुनिन को भ्रम भयो श्रुतिनको प्रमाण दै कोई कहै हमारोमत ठीकहै कोई कहै हमारोमत ठीक है तब सब मुनि वेदनते पूंछ्यो जाइ वेदहू विचारेउ कि सबमें तो हमारही प्रमाण मिलैहै सोवेद हूको भ्रमभयो तब सबमुनि औ वेद ब्रह्माके पासगये तब ब्रह्मा ते पूंछ्यो तब ब्रह्मोंके भ्रम भयो कि सांचमत सांच साहब कौन है सो महादेवजी पार्वती जीते कहै हैं कि तब सबको साहब श्रीरामचन्द्रको ध्यान कियो तब साहब कह्यो कि यह बात

चार्य जे संकर्षणहैं ते जानै हैं तिनके पास सबको पठै
ाय देयँगे तब ब्रह्माकी आज्ञाते सब संकर्षण रूप
...क इहांगये सो वेदउहां पूंछ्यो संकर्षण ते तब संकर्षण
जी एक सिद्धांत जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बतायो
है राम नामको यथार्थ अर्थ तौन सदाशिव संहिता के
ये श्लोक हैं ॥ रामनाम्नोथमुख्यार्थभगवत्स्वेतप्रतिष्ठितम् ॥
विस्मृतं कण्ठमणिवद्वेदाश्शृणुततत्त्वतः १ तात्पर्य्यवृत्त्याविज्ञेय
बोधयामिविभागतः ॥ रामनाम्निशुचिर्ज्ञेयाः परमात्रांतत्त्वबो
धकाः २ रामनाम्निस्थितोरेफोजानकीतेनकथ्यते ॥ रकारे
णतुविज्ञेयःश्रीरामःपुरुषोत्तमः ३ अकारेणतथाज्ञेयोभरतोविश्व
पालकः ॥ व्यञ्जनेनमकारेण लक्ष्मणोत्रनिगद्यते ४ ह्रस्वाका
रेणनिगमाःशत्रुघ्नःसमुदाहृतः ॥ मकारार्थोद्विधाज्ञेयःसानुना
सिकभेदतः ५ प्रोच्यतेतेनहंसावैजीवाःचैतन्यविग्रहाः ॥ संसार
सागरोत्तीर्णापुनरावृत्तिवर्जिताः ६ दास्याधिकारिणःसर्वेश्रीराम
स्यमहात्मनः ॥ एततात्पर्य्यमुख्यार्थादन्यार्थोयोनभूपते ७ सोन
र्थइतिविज्ञेयःसंसारप्राप्तिहेतुकः ॥ इतिसदाशिवसंहितायां विंश
ध्यायेवेदांप्रतिशेषवचनम् ॥ सो जौननाम साहब बतायो ताके
औरई और अर्थकरिकै जीवसंसारी ह्वैगये साहबकोनजान्यो १९॥

दो० तेहिपाछेहम आइया सत्यशब्दकेहेत ॥
आदिअन्तकीउत्तपातिसोतुमसोंकहिदेत २०

इहांकबीर जी कहै हैं कि तेहि पीछे कहे जब संसारकी उ-
त्पत्ति ह्वैगई औ जीव नाना दुःख पावनलगे तब साहब जे
दयालुहैं तिनके दयाभई कि हमतो आपने नामको उपदेश कि-
यो कि हमारे राम नाम को जो यहअर्थ लक्ष्मण जानकी हम
भरत शत्रुघ्न हमारे हंसरूप पार्षद तिनको जानिकै हमारे पास
आवै औये सबजीव संकर्षण आद्या पराशक्ति शब्दब्रह्म नारायण
महाविष्णु जीव इनके पक्षमें राम नामकी छवो मात्रा इनमें

लगाइकै और और मतनमें लगिके संसारी ह्वैकै नाना दुःख पावन लगे तब रामनामको यथार्थअर्थ बतावनको हमको भेज्यो सो हम सारशब्दजो है रामनाम ताको सत्यकहे सांच जो अर्थहै ताके बतावनके हेतु हमआये सो आदि अन्तकी उत्पत्ति हमतुम से कहे देयहैं आदिकौनहै जोयह उत्पत्ति ह्वै आई संसार भयो औ अन्तकौनहै जोहम रामनामको सांचअर्थ बतायो सो अर्थ समुझिलेइ साहेबके पासजाय वाकोसंसारको अन्त ह्वै जाइहै फिरि संसार में नहीं आवै है सो यह आदि अन्तकी उत्पत्ति हम तुमसों कहि दियो कि यहिभांतिते जगत्की उत्पत्ति होय है जीव संसारी होइ हैं औ यहि भांतिते जब राम नाम को सांच अर्थ जानै है तब संसार को अन्त ह्वै जाइ है २० ॥

दो० सात सुरति सब मूल है प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
इनहीं मा से ऊपजै इनहीं माहिं समाहिं २१

इहां मंगल को उपसंहार करै है सबकी मूल सात सुरतिजेप्रथम वर्णन करि आये हैं सो वेतो सोई सुरति स्थूलरूप सात रूप ते प्रकटभई है सात कौन हैं दुइच्छा एकयोगमाया एकजगत्को अंकुरकारणरूपा औ पांचोब्रह्मरूपा येई सातो सबकेमूलहैं इनहींते उपजैहैं इनहीं ते प्रलय ह्वैजाय है कहे नाश ह्वै ह्वै जाय है औ इनहीं में पुनिसमाइ है सातो सूरति में प्रमाण साखी शंकर गुष्ट की ॥ निरञ्जनअक्षर अचित वोहं सोहंजान ॥ औ पुनि मूल अंकूर कहि सात सूर्त परमान २१ ॥

दो० सोइख्याल समरत्थ कर रहेसोअछपछपाइ ॥
सोई संधि लै आयउ सोवत जगहि जगाइ २२

सो समष्टि जीव आपनेको समर्थ मानिकै साहब को न जानिकै यह ख्याल करतभयो अछपकहे रामनाम के अर्थमें साहब न छपेहै और सर्वत्र पूर्ण रहे साहबकै सब सामग्री साहब को लोक

साहिबै को रूपवर्णन करिआयेहैं जो साहब के लोक को प्रकाश सर्वत्रपूर्णरहा तौ साहब पूर्णई रहे सर्वत्र सो जीव रामनामको और और अर्थ करिकै और और मतन में लग्यो तेहिते साहब छपाय गये साहब को जीव न जानत भये सो तौनै सन्धि लैकै मैं आयों कि जीवते सन्धिकहे बीचपरिगयो है रामनामको सांच अर्थ भूलिगयो सोजौने संसारमें यह सोवै है तौनी जगह में आयो कि मैं याको सोवत ते जगाय देहुँ कि जौने जौने मतनमें तुम लगे हौ सो रामनामको अर्थ नहीं है ये संसार के देनवारे हैं तुम संसारी ह्वै गये सब स्वप्न देखौ हौ वह अर्थ नाम को मिथ्या है तुम जागिकै रामनामार्थ जे साहब हैं तिनको जानौ २२ ॥

दो० सात सूर्तके बाहिरे सोरह संख्य के पार ॥
तहँ समरथ को बैठका हंसन केर अधार २३

साहब कैसे हैं कि सात सूर्त जे कहिआये तिनके बाहिर हैं औ षोड़शकलाजीवको छान्दोग्य उपनिषदमें तत्त्वमसीके पूर्व लिख्यो है सो इहां कहेहैं कि सोरह संख्यके कहे सोरह संख्यक जे जीव हैं अर्थात् षोड़शकलात्मक जे समष्टि जीव जे लोक के प्रकाश में रहै हैं शुद्धरूप तिनके साहब पारहैं सो जहां सोरह संख्यक है षोड़शकलात्मक जीव है तिन के पार वह लोक साहब को है तहां समर्थ जे साहब हैं तिनको बैठका है कहे वही लोक में रहै हैं समर्थ जो कह्यो सो समर्थ साहिबही हैं जीव समर्थ नहीं है उन्हीं के किये जीव समर्थ होइ है यह आपको झूठही समर्थ मानि लियोहै याही हेतु ते जीव संसारी भयो है सो हंसनके आधार तो परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तेहितेजब हंसरूप पावै तब साहबके पास वह लोक में बसै जाय २३ ॥

दो० घरघर हम सब सों कही शब्द न सुनै हमार ॥
ते भव सागर डूबही लख चौरासी धार २४

सो कबीरजी कहेहैं किघरघरहम सबसों बातकहीहमारोकह्यो सांच शब्दको अर्थ कोई नहीं समुझैहै नासुनै है ते संसाररूपी सागरके चौरासीलाख योनिजो हैं धारा तामें डूबिजाय है २४॥

दो० मंगल उतपति आदिका सुनियो संतसुजान ॥
कह कबीर गुरुजाग्रत समरथ का फुरमान २५

सो आदिकी उत्पत्तिका मंगल हमयहकह्योहै सो हेसंतसुजानौ सुनतजाइयो हमआपनो बनाइकै नहीं कह्यो है हमयहमंगल गुरुकहे सबतेश्रेष्ठ औतीनोंकालमें जाग्रतकहे ब्रह्ममनमायादिकन के भ्रमतेरहित ऐसे जेसमर्थ सत्यलोकनिवासी श्रीरामचन्द्रहैं तिनको फुरमानकहे उनकेहुकुमते मैं कह्यों है औ सबके परसाहेबहैं औ साहेबकोलोकहै तामें प्रमाण आदिवाणीको शब्द ॥ बलिहारी अपने साहेबकी जिन यह जुगुति बनाई । उनकी शोभाकेहि विधि कहिये मोसोंकही न जाई ॥ विनाज्योतिकीजहँ उजियारी सो दरशै वह दीपा । निरतैहंसकरै कौतूहल वोहीपुरुषसमीपा ॥ झलकै पदुम नाना विधि बानी माथेछत्र बिराजै । कोटिनभानु चन्द्रतारागण एकफुचरियनछाजै ॥ करगहिबिहँसि जबैमुखबोलै तब हंसा सुखपावै । वंश अंशजिन बूझ बिचारी सो जीवनमुकतावै ॥ चौदहलोक वेदकामण्डल तहँलगकाल दोहाई । लोकवेद जिन फन्दाकाटी ते वहलोक सिधाई ॥ सातशिकारी चौदहपारथ भिन्नभिन्न निरतावै । चारिअंश जिन समुझि विचारी सोजीवन मुकतावै ॥ चौदहलोकवसै यमचौदह तहँलग कालपसारा । ताके आगे ज्योति निरंजन बैठेसुन्न मझारा ॥ सोरहषट्अक्षर भगवाना जिन यह सृष्टि उपाई । अक्षर कलासृष्टिसे उपजी उनहीं माहँ समाई ॥ सत्रह संख्यपर अधरदीपजहँ शब्दातीत विराजै । निरतैसखी बहुविधि शोभा अनहद बाजाबाजै ॥ ताकेऊपरपरम धामहै मरम न कोई पाया । जो हमकही नहीं कोउ मानै न कोइ दूसरआया ॥ वेदनसाखी सबजिउ अरुझेपरमधाम ठहराया । फि-

रि फिरिभिटकै आपचतुरहै वहघर काहुनपाया ॥ जो कोइहोइ सत्यका किनका सोहमका पतिआई। और न मिलैकोटि कर थाकै वहुरिकाल घरजाई॥ सोरहसंख्यके आगे समरथ जिनजग मोहिं पठवाया। कहैकबीर आदिकी बाणी वेदभेद नहिंपाया २५

व मंगलको सातसुरतितेईशिकारी औ चौदहजे यमपारथ हैं कहे तेऊ शिकारीहैं औचारिअंश चारिबेद तिनको बूझिकै बिचारै तौ जीवनका समुझावैका विचारै जे सातौ शिकारीहैं सूरति ते भीतर जीवमृगाके भीतरको शिकार खेलैहै बाहरते मारै है सो आगे निरंजनशून्यमें बैठाहै जीवपकरबेकेरहा शून्यमेंवैठा निरंजनको कस्तोसो सबके ऊपरहै वोई सबको बांधेहै साहेबके इहां नहीं जान पावैहै शून्यमें लगाय देइहै अपने में लगाइ राखै सोरह खण्डकहे समष्टिजीव सोरहकलात्मक तौनेते उतपत्य होइहैसो उनहींमेंसमाइहै सत्रहसंख्यकहे सत्रहतत्त्वजे सूक्ष्मशरीरमेंरहतीहैंतेहिके ऊपर अधरदीपिकाल्लोकहैजो मंगलमेंज्योति रूपकोबर्णनकरि आयेहैं सबके ऊपरतहांसूक्ष्मशरीरनहीं पहुंचि सकैहै तेहिकेऊपर पात्रदैकै आगेलिखैंगे अर्थातुयह स्पष्टहैधाम औरहैसो दशमुकामी रेखताप्रमाण॥ उपक्रमोपसंहारवभ्यासो पूर्वताफलैः॥ अर्थबादोपपत्तोभलिंगंतातपर्यनिर्णये १ उपक्रमउपसंहारअभ्यासअपूर्वताफल अर्थबादउपपत्तिइहांवस्तुतात्पर्यके वर्णनमें लिंगकहे बोधकहै ॥ उपक्रमको लक्षणयह है प्रकरण के बिषे प्रतिपाद्य जोबस्तुताको आदिअन्तके विषयजोहै वर्णन सो उपक्रम औ उपसंहार कहावै १ औप्रकरणके विषे प्रतिपाद्य जो है बस्तुताको फेरि फेरिजोहैं बर्णनसो अभ्यास कहावैहै २ औ प्रकरणके बिषे प्रतिपाद्य जोहैबस्तुसो औरैप्रमाण करिकै वर्णन मेंनआवैसो कहावै अपूर्वता३प्रकरणके विषे प्रतिपाद्य जोहै वस्तु ताकेज्ञानैकरिकै ताकीजो है प्राप्तिसो कहावैफल ४ औ प्रकरणमें प्रतिपाद्यजोहै वस्तुताकीजो है प्रशंसासोकहावै अर्थ वाद ५ औ प्रकरणमें प्रतिपाद्यजोहैबस्तुताकोदृष्टांतकरिकै फेरिजोहै प्रतिपा-

दनसो कहावै उपपत्ति ६ इहांकबीरजीके बीजकके प्रकरणके आदिमें औ आदिमंगलमें कहाहै कि शुद्धजीव साहबके लोक के प्रकाशमें पूर्णरहैहैं जबसाहब सुरतिदेइहै तब जीव उत्पन्न होइ है यह जीव शुद्धहैसाहब को है मन मायादिक यामें नहीं है ये बीचहीते भयेहैं मन मायादिकको कारण यामें बनोरह्यो है ताते साहबमें नालगे संसार मुखह्वैगये जब श्रीरामचन्द्रकीप्राप्ति होई तबहीं शुद्धजीवहोइ सोसाहब हटक्यो सोनामान्यो मन माया ब्रह्ममें लगिकै संसारी ह्वै गयो। जीवरूप यक अन्तर बासा। अन्तर ज्योति कीनपरकासा १ इच्छारूप नारि अवतरी। तासुनाम गायत्री धरी २ यहउपक्रम बाक्यहै औ पदनके अन्तमें बिरहुलीहै विषहरमन्त्र न मानबिरहुलीगाडुरि बोलै और बिरहुली विषकी क्यारबोयो बिरहुली जन्मजन्म अवतरे बिरहुली फलयक कनइल डाल बिरहुली कहैंकबीर सचुपाय बिरहुली जोफलचाखहु मोर बिरहुली १ सोबिरहुली में यह लिख्यो है कि तुमतौ प्रथमशुद्ध रह्यो है तुमहीं मनमायादिकन को बनायकै फँसि गयेहौ यह उपसंहार भयो औ साखिन के आदिमें यह साखीहै। जहियाजन्म मुक्ताहता तहियाहतान कोय। छठीतिहारी हौंजगा तू कहँचला बिगोय १ औ एक पोथीकेअन्तमेंयहसाखीहै। जासोंनाताआदिकाबिसरिगयोसोठौर। चौरासीकेवशपरेकहतऔरकेऔर १ सोयेहूमेंवहीबातहैऔदूसरी पोथीकेअन्तमेंयहसाखीहै धोखेधोखेसबजग बीताद्वैतअंगके साथ कहै कबीर पेड़जो बिगरघो अबका आवैहाथ १ सोयहूमें वहीबातहै औ अट्ठाइस साखीकौनिउँ पोथीमें औरहैं कौनिउँपोथीमें औरहैं ताते दुइसाखी अन्तकी लिख्योहै यह उपक्रम उपसंहारभयो १ और प्रकरणमेंयहहै कि श्रीरामचन्द्रको जबजीव जानै तबछूटैसोग्रन्थभरेमें बारबार यहीउपदेशहै ॥ लखचौरासी जीव योनिमें भटकिभटकि दुखपावै। कहैं कबीर जोरामहि जानै सो मोहिंनकिभोवै १ राम बिनानरह्वैहौकैसा। बाटमांझगोबरौरा

जैसा २ इत्यादिक बहुतवाक्य हैं याते अभ्यास भयो औ सगुण जेहैं ईश्वर परमेश्वर अवतार अवतारी सबनिर्गुणजोहैब्रह्म जौन मनवचनकेपरेहै ताहूते परे नित्यसाकेत रासविहारी रामचन्द्रहैं यह अपूर्बताभई अवधूछोड़हुमनबिस्तारा। सोपदगहौजाहितेसद गति पारब्रह्मतेन्यारा॥ नहीं महादेव नहीं महम्मद हरिहजरत तवनाहीं। आदम ब्रह्मनाहिं तवहोतेनहीं धूपनहिं छाहीं॥ असी सहसपैगम्बर नाहीं सहस अठासीमूनी। चंद्रसूर्य तारागण नाहीं मच्छ कच्छ नहिंदूनी॥ वेदकिताबसुमृतिनाहिं संयमनाहियमन परसाही। बांगनिवाज नहींतव कलमारामौनहींखोदाही॥ आदि अंतसन मध्य न होते आतश पवन न पानी। लखचौरासी जीव जंतुनाहिंसाखी शब्द न बानी॥ कहहिं कबीर सुनौहो अवधू आगेकरहु विचारा। पूरणब्रह्म कहांते प्रकटेकरतिम किनउपचारा१ यह पदयही बीजक ग्रन्थकोहै सोजहां या पदहै तहांअर्थलिख्यो है सो देखिलीजियो याते अपूर्बताभई औराम नामहीं के जपेते श्री रामचन्द्रही के जानेते मनवचनके परे श्रीरामचन्द्र रूपफल की प्राप्तिहोइहै यह फल है छच्छाआहि छत्रपाति पासा। छकि किनरहे छोंडिसबआसा॥ मैंतोहींक्षणक्षणसमुझाया। खसमछोड़िकस आपबँधाया १ ररारारिरहाअरुझाई। रामकहेदुखदारिद जाई॥ ररांकहैसुनौरेभाई। सतगुरुपूंछिकैसेवहुआई २ इत्यादिक बहुत बाक्यहैं यहफलहै औ अर्थ बादकबीरजी तो साहब के पासकेहैं उनको संसारका कौन डर है यह प्रशंसा करै है याते अर्थ बादभयो डरपतअहो यहभूलिवेको राखुयादवराय। कहक बीर सुनु गोपाल बिनती शरण हरितुवपाय॥ औ प्रकरणमें प्रतिपाद्य जोहै कि रामनामै को जानैहै सोईछूटिजायहै औजेनहीं जानैहैं औरऔरेमतनमें लगेहैं तेईसंसारी होयहैं यहवात दृष्टांत दैकै रामनामही को दृढ़कियोहै। राम नाम बिन मिथ्याजन्म गँवाईहो। सेमरसेयसुवाजोजहँड्योऊनपरेपछिताईहो॥ ज्यों बिनमदिपगांठि अरथैदै घरहुकी अकिलगँवाईहो। स्वादहुउदर

भरैजोकैसे ओसहिप्यास न जाईहो ॥ इत्यादिककहरामेंलिख्यो है यहउत्पत्तिभई येई षट्लिंग हैं जे इनको देखिकैअर्थकरैहैं सो सत्यहै जे इनको नहीं जानिकै अर्थकरैहैं वहग्रन्थको तात्पर्य ओ-रहै और अर्थकरैहै सो अनर्थहै जैसे बीजकको कोई निराकार ब्रह्ममें लगावैहै कोई जीवात्मामें लगावै कोई नये नये खामि-न्द बनाइकै अर्थलगावैहै इत्यादि बेमनमुखी अपने अपने मन ते नाना मतनमें अर्थ लगावैहैं ते अनर्थहैं अर्थनहींहैं वे गुरूजे हैं सबते गुरू परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके द्रोहीहैं ताते प्रमा-ण गुरुद्रोही औमनमुखीनारिपुरुष अविचार । तेनर चौरासीभ्र-महिं जबलगि शशिदिनकार १ अरुहम जो बीजक को यह अर्थ करैहैं तामें छइउलिंग श्रीरामचन्द्रमें घटितहैं तेहितेजो अर्थहम करैहैं अनिर्बचनीय श्रीरामचन्द्रको प्रतिपादन सोईठीकहै काहे ते कि जहांभरि प्रभुहैं तिनहू के प्रभुहैं तौनेमें प्रमाण बाल्मीकी कोसूर्य्यस्यापिभवेत्सूर्यो ह्यग्नेरग्निप्रभोप्रभुः । अर्थ जो येईसूर्य मेंयेईअग्निमें अर्थलगावै तोपुनरुक्तिहोयहै काहेतेजबबड़ोप्रकाश मान सूर्यकोकह्यो तब अग्नि को कहिबे कोहै तातेयह अर्थहै जो कर्मन में लोकनकी प्रेरणाकरै सो कहावै सूर्य अर्थात् अन्तर्यामी औ सबकेआगेरहतभयो याते अग्निकहावै ब्रह्मसोसूर्यके सूर्यकहे अंतर्यामीके अंतर्यामीऔअग्निकेअग्निकहे ब्रह्मकेब्रह्म अंतर्यामी परिछिन्नहै तातेबड़ो ब्रह्महै जोसर्वत्र पूर्णहै औपरिछिन्नहै ताते बड़ोजाको प्रकाश यह ब्रह्महै जामें सबजीवभरे रहैहैं ऐसोसाह-बकोलोकहै सबको प्रभु परब्रह्मस्वरूप ताहूकेप्रभुवह लोकके मा-लिक श्रीरामचन्द्रहैं वह ब्रह्मजोहै सोईमन बचनकेपरेहैं पुनिजा को वो प्रकाशहै ब्रह्मसो लोककैसेमनवचनमें आवै साहब तौदु-हुन का मालिकहैं उनकी कहवाई कहाकरै जो कहौ सबके मा-लिक श्रीरामचन्द्रहैं या कहतई जाउहौ औ कहौ कि मन वचन मेंनहीं आवैहै यह बड़ो आश्चर्यहै सो सत्य है ये कबीरहूजीकहैहैं किरामोनहीं खोदाई काहेते रामोनहीं खोदायहौकहैहै रामैनाम

अहै निज सारू। औ सब झूठ सकल संसारू॥ इत्यादिक बहुत प्रमाण दैके बीजकभरेमें रामैनामको सिद्धांतकियो है ताही में याको समाधानहै औताही में कबीरजीको बीजकलगैहै औरी भांतिअर्थ किये नहीं लागै है सोसुनो जो साहबको रामनाम है ताके साधनकीन्हेते वह मनबचन के परे जोरामनामताकोसाहब देइहै सो वह नाम याके बचनमें नहीं आवै है साहिबै के दीन्हेते पावै है जब याको संसार छूटयो तब अपने लोकको साहब हंस स्वरूपदेइहै तौनेहंसस्वरूप में टिकिकै साहबकोदेखैहै नामलेइहै साहब साहब को नाम साहबको लोक साहबकोदियो हंसस्वरूप या प्राकृत अप्राकृत मन बचनके परेहैं तामें प्रमाण॥ यतोवाचो निवर्त्ततेयत्परम्ब्रह्मणःपरं। अतःश्रीरामनामादिनभवेद्ग्राह्यमि न्द्रियैः॥ औ यहरामनामके जपनकी विधि जैसीजैसी कबीरजी आपने शब्दनमेंकह्योहै तेहि रीतिते जो जपकरै तौरामनाममन बचनकेपरे जो आपनो स्वरूप सोयाके अन्तष्करणमेंअस्फूर्तिकरि देयहै औ साहबको रूप अस्फूर्तिकरिदेयहै अर्थात् आपहिअस्फूर्ति होइजाइ है तामें प्रमाण॥ नामचिन्तामणीरामश्चैतन्यपरावि- ग्रहः। नित्यशुद्धो नित्यमुक्तो न भिन्नन्नामनामिनः॥ अतःश्री रामनामादिनभवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः॥ स्फुरतिस्वयमेवैतज्जिह्वादौ श्रवणेमुखे२ सो यही रामनाम जो मनबचनकेपरे है ताही को कबीर जानै॥ सो जानै जेहिमहीं जनाऊं। बांह पकरि लोकै लै आऊं॥ सहजजाप धुनि आपैहोई। यह सँधिबूझै बिरला कोई॥ रंग२ बोलै राम जी रोम२ राकार। सहजै धुनिलागीरहै सोई सु- मिरणसार॥ ओठकण्ठहालैनहींजिह्वानाहिंउचार। गुप्तवस्तुको जो लखै सोई हंसहमार॥ जो हंसरूपमें टिकिकै जपतरहे हैं तौ ने में प्रमाण भक्तमाल के टीकामेंश्रीप्रियादासजीलिख्यो है॥बितै तानो बानो हियराममड़रानो॥ श्री महाराजाधिराज रामसिंह बाबा पूछयो है कबीरसाहब कह्यो है॥ रा अक्षरघट रम्यो कबी- रा॥ निजघर मेरोसाधुशरीरा १ तातेरामनामहीकोपरत्व बीजक

में है मुक्ति रामनामहीमें है औरसाधनमें नहीं है यह कबीरजी बीजकभरे में कह्योहै और अर्थ जे करें हैं ते बीजक को अर्थ नहीं जानै हैं काहेते भागूदास बीजक लै भागे हैं सो बघेलवंश बिस्तार में कबीरही जी कहि दियो है कि अर्थ नहीं जानै हैं तामें प्रमाण। भागूदासकी खबरिजनाई । लै चरणामृत साधुपियाई ॥ कोउ आयकह कछि जरि गयऊ। बीजकग्रन्थ चोराइलै गयऊ ॥ सत गुर कहँ वह निगुरापन्थी । काह भयोलै बीजकग्रन्थी ॥ चोरीक-रि वह चोर कहाई । काह भयो वड़ भक्त कहाई ॥ बीजमूल हम प्रगट चिन्हाई । बीजन चीन्हो दुर्मति ल्याई ॥ बघेलवंश में प्रगटी हंसा । बीजक ज्ञान को करी प्रशंसा ॥ सबसों पूछी प्रेमहिं ताई । आप सुरति आपै में ल्याई ॥ बीजक लाय गुफामें राखी । सत्यै कहौं वचनमैं भाखी ॥ सो और २ अर्थ जे कबीरहा करै हैं ते भागूदास औ भागूदास के शिष्य प्रशिष्य ते बीजक को वितण्डावाद अर्थ करिकै कबीरजी के सिद्धान्त को अर्थ जोरा-सनामहै ताते जीवनको विमुख करि डारयो नरककी राहबताय दियो काहे ते दूसरी पोथी तौ रही नहीं वोही पोथी रही तौनेको मनमुखी अर्थ करिकै आपबिगरे औ शिष्यन प्रशिष्यनको बिगा-रयो जे उनके सत्संग किये ते सब याहीतें नाम तोर है भगवान दास पै भागूदास कबीरजी कह्योहै औ मैं जो तिलककरौं हौं बी-जक को सो एकतो साहब के हुकुमई ते कियो है सो आगेलिखि आयेहैं दूसरे तिलक बनाइ बांधौगढ़में आयो तहां बयालिस बंश बिस्तार ग्रन्थदेख्यो ताकोप्रमाणतिलकमें लिखिदियोहै पोथीपं-द्रहसैपकइसकेसालकी धर्मदासके हाथकी लिखीहै औयेहीपोथी में कबीरजी राजाराम ते आगम कहिदियो है ॥ तुमसे दशौ बंश जो है हैं । सो तौ शब्द हमारो गहिहैं ॥ परम सनेही अनुभव वानी । कथि हैं शब्द लोक सहिदानी २ तेहिते मैं जो अर्थ करौं हौं । सोई कबीरजी का सिद्धान्तहै औ यह ग्रंथ में चारि साधन करिकै युक्त जो पुरुष है सो अधिकारी है चारि साधन कौन हैं

नित्यानित्यवस्तु विवेक १ औ इहां मुत्रार्थफल भोग विराग २ औ दमसम उपपति तितिक्षा औश्रद्धा समाधान ईपट्संपति ३ औ मुमुक्षुता ४ नित्यानित्य विवेक का कहावै जीवात्मा नित्य औ देह इन्द्री आदि दैकै जो संसार सो अनित्यहै यहै कहावै नित्यानित्य विवेक औ इहां मुत्रार्थ फल भोग बिराग का कहावै यह लोकके औ परलोक के बिषे जे हैं स्रक् चन्दन वनिता यह आदि दैकै जे हैं तिनको अनित्यता बुद्धि कैकै तिनते जो है वैराग्य सो इहां मुत्रार्थ फलभोग बिराग कहावै औ लौकिक व्यापारते मनकै जो है निवृत्ति सो कहावै सम औ बाह्य जे इन्द्रिय हैं तिनकी श्रीरामचन्द्रके सम्बन्धते व्यतिरिक्त जो विषय है तेहिते निवृत्तिहोब जो है सो कहावै दम औ श्रीरामचन्द्र को जो ज्ञान है तेहि पूर्वक उपासना के अर्थ विहित जे हैं नित्यादिक कर्म तिनको जो है त्याग सो कहावै उपरति औ शीत उष्ण आदि दैकै जे हैं द्वन्द तिनको जो है सहब सो कहावै तितिक्षा औ निद्रा आलस्य प्रमाद इनको जो है त्याग तेहि पूर्वक मनकै जो है अस्थिरता सो कहावै समाधान औ गुरु वेदान्त बाक्यमें अविचल विश्वास सो कहावै श्रद्धा औ संसारते छूटिबेकी जो है ३ इच्छा सो कहावै मुमुक्षुताई साधना चतुष्टय जामें होय सो कहावै अधिकारी १ औ यह जीव साहब को है और को नहीं है यह जो है ज्ञान सो यह ग्रन्थमें बिषय है २ औ ग्रन्थको विषय सो सम्बन्ध कौन है तात्पर्य करिकै प्रतिपाद्य प्रतिपादक भाव ३ औ यहग्रन्थमें प्रयोजन का है कि मनमाया औ अहम्ब्रह्म जो है ज्ञान तौने में वँधा जो है जीव सो मनमाया ब्रह्मते छूटिकै रघुनाथजीको प्राप्तिहोय सो प्रयोजन ४ जीवको मनमाया ब्रह्मते छोड़ायकै श्रीरघुनाथ जीके पास प्राप्ति करिबेको कही अपनी उक्तिते कही साहबकी उक्तिते कही मायाकी उक्तितेकही जीवकी उक्तिते कहीं ब्रह्मकी उक्तिते कबीरजी उपदेश कियो है औ उत्पत्ति प्रकरण कैयो प्रकारते अपने ग्रन्थनमें कबीरजी कह्यो है सो इहां कबीरजी प्रथम

रमैनी में आदिकी उत्पत्ति कहै हैं जब कुछ नहीं रह्यो है तबवही साहबको लोक रह्यो है ताहीको परम अयोध्या कहै हैं औ सत्य लोक सांतानक लोक नापैदलोक आदि दैकै नाना नामहैं तौनें लोकमें जे हंस हंसनी हैं गुल्मलता तृणआदिदैकै तेसब चिन्मयहैं औ परम पुरुष श्रीरामचन्द्र सबकेमालिकहैं तामें प्रमाण ॥ राजाधिराज सर्वेषां रामएवनसंशयः । इतिश्रुतेः ॥ दूसरोप्रमाण । यत्र वृक्षलतागुल्मपत्रपुष्पफलादिकम् । यत्किंचित्पक्षिभृङ्गादितत्सर्वं भांतिचिन्मयम् ॥ इतिवशिष्ठसंहितायां ॥ कबीरौजी कह्यो है सदाबसंत जहँफूलहिंकुंज सोहावहीं । अक्षयवृक्षतरसेज सोहंस बिछावहीं ॥ धरती आकाशजहां नहीं जगमगै । वहियांदीनदयाल हन्सके सँग लगै ॥ तौनै श्री अयोध्याजी को जो है प्रकाश तामें शुद्ध जीव जे हैं ते भरे हैं तिनको साहबको औ साहबके लोकको ज्ञान नहीं है जो साहबको जानै औ साहब के लोक जाय तौना उलटि आवै सो साहबको तौ जानै नहीं है याहीते मायाउनको धरि लैआवै है सो प्रथम साहब दयाल उनसें दयाकरिकै आपनी शक्तिदैकै उनके सुरति उत्पत्ति करतभये कि हमको जानै हमारे पास आवै तौ मायातें बचिजाय सो आदि मंगलमें कहि आये हैं जब उनके सुरति भई तब वै धोखा ब्रह्ममें औ माया में लगिकै संसारीभये सो साहब बहुत हटक्यो सो हटको ना मान्यो सो आगे बेलिमें कहैंगे ॥ तूहन्सामनमानि कहौ रमैया राम । हटलनमान्यो सोरहोरमैयाराम ॥ जसकीन्ह्योतसपायोहो रमैया राम । हमरदोषजनिदेहुहोरमैयाराम ॥ औसाहबके लोक में मनादिकन को कारण नहीं है तामें प्रमाण ॥ नयत्रशोकोनजरानमृत्युर्नकालमायाप्रलयादिविभ्रमः । रमेतरामेतसतत्रगत्वा स्वरूपतांप्राप्यचिरन्निरन्तरम् ॥इतिवशिष्ठ संहितायां १॥कबीरौजी कह्यो है ॥ तत्वभिन्ननिहतत्वनिरक्षरमनौप्रेमसेन्यारा। नाद बिंदुअनहदानिरगोचरसत्यशब्दानिरधारा ॥ औ साहब को लोक सबके पारहै सो मंगल में कहिआये हैं जो साहब को जानै औ

साहबके लोक जाइ तौ संसारमें ना आवै सोतौनै उत्पत्ति श्री कबीरजी प्रथम रमैनीमें संक्षेप ते कहै हैं औ सबकी उत्पत्ति साहब के लोक के प्रकाशके बहिरेहीते होइहै तामें प्रमाण ज्ञानसागरको ॥ जानैभेदनदूसर कोई । उतपतिसबकीबाहरहोई १ ॥

इतिआदिमंगलसम्पूर्णम् ॥

अथरमैनीप्रथम १ ॥

चौ० जीवरूपयकअन्तरबासा । अन्तरज्योतिकीनपरगासा १
इच्छारूपनारि अवतरी । तासु नाम गायत्री धरी २
तेहिनारीकेपुत्रतिनभयऊ।ब्रह्माविष्णुमहेशनामधरेऊ ३
तबब्रह्मापूंछतमहतारी । कोतोरपुरुषकाकरितुमनारी ४
तुमहमहमतुमऔरनकोई।तुममोरपुरुषहमैंतोरिजोई ५
साखी ॥ बापपूतकी एकै नारी औ एकै माय विआय ॥
ऐसापूत सपूत नदेख्यो जोबापै चीन्हैधाय १

चौ० जीवरूपयकअंतरबासा।अंतरज्योतिकीनपरगासा

श्रीरघुनाथजी के लोकको जो है प्रकाश तेहिके अन्तरजे हैं जीव एकहूपते कहे समष्टिरूपते बास किये रहे अन्तर ज्योति कहे साहब के लोकको जोहै प्रकाशतेहिके अन्तरैकहे भीतरै आपनई प्रकाश करतभये अर्थात् सुरतिकी चैतन्यता पाय मनादिक उत्पन्नकै संसार प्रकटकै संसारी ह्वैगये साहबको नजानत भये याबात मंगलमें बिस्तारते कहिआये हैं याते इहां प्रसंगमात्र सूचितकियो है जबप्रलयहोय है तबहूं वही ब्रह्म में लीन होइ है उहैंते पुनि उत्पत्ति होइ है औ अनुभव धोखा ब्रह्म में ज्ञान करिकै जे मुक्तहोयहैं तेसनातन ज्योति जोहै अयोध्या जीको प्रकाश वही ब्रह्म जहां पूर्वलीन रहै है तहैंजाय लीनहोयहै औ जे श्रीरामचन्द्रको जानै हैं तेज्योति वह भेदिकै श्रीरामचन्द्रके पास

जायहै तामें प्रमाण॥ सिद्धाब्रह्मसुखेमग्नादैत्याश्चहरिणाहताः। तज्ज्योतिर्भेदनेशक्तारासिकाहरिवेदनः॥ जैसे माया मन मिल्यो ऐसेरामरमाय। तारामंडलभेदिकैतवैअमरपुरजाय॥ औ धोखा को अर्थयहहै जो औरेको और देखे सो कौनहै कि एकजोहै सर्वत्रपूर्णलोकः प्रकाशब्रह्मताके अन्तर कहे भीतर अनुरूपजेजीव ते समष्टि रूपते वास कियेरहे सो अन्तर ज्योति प्रकाशकहे जब साहब सुरति दियो सोई अन्तरप्रकाश करतभई तबजीवकोजान परनलग्यो चैतन्यताआई तब संकल्प विकल्पकियो कि मैं कौन हौं यही मनकी उत्पत्तिभई सोजीवको रूपतौ॥ बालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्यच। भागोजीवःसविज्ञेयः सचानंत्यायकल्पते॥ इतिश्रुतेः॥ इत्यादिक प्रमाण करिकै वाको स्वरूप तो अनुहै सोतौ वाको न देखिपरयो सर्वत्र प्रकाशरूप ब्रह्मदेख्योसो मान्यो कि मही ब्रह्महौं यहीधोखा ब्रह्महै कहीजीव ब्रह्मतो बनै है जीवकहना यहीयाकी भूलहै जब याको ज्ञानभयो ज्ञानते बिज्ञानभयो अनुभवानन्द प्राप्तिभयो जबभर अनुभवानन्द बनोरहै है तबभर याको जीवत्वको लेश बनोरहैहै जब अनुभवानन्दरूप ही ह्वैगयो तबयाको जीवत्व मिटिगयो संसारऊ मिटिगयो एक आपहीआप रहत भयो तुम कैसे कहौहौ कि जीवको ब्रह्महोना धोखाहै जोऐसोकहौ तौ सुनौ जोपदार्थ बीचकोहोयहै सो मिटि जायहै औ जोपदार्थ सनातनहै सो नहीं मिटिजायहै कैसे जैसे तुमकहौहौ कि जीवत्व बीचहीकोहै वही ब्रह्म अनेकरूप धारण कै लियोहै एकते अनेक होइगयोहै जब जीवत्वको भ्रम मिटि गयो तब ब्रह्महो रहिजाय है जो प्रथम रह्योहै सोई रहिजाय है जो पदार्थ बीचको होयहै सो मिटिजायहै तैसे हमहूं कहैहैं कि आदिमें तो जीवरह्यो है सो जब संसार छूट्यो तब शुद्धजीवको जीवही रहिजायहै जोकहो ब्रह्मही जीवह्वैजायहै तौहमतुमसों या पूछैहैं कि प्रथम तोब्रह्मही रहतभयो सो ब्रह्म अकर्ता है निर्धर्महै मनमायादिकते रहितहै देशकाल वस्तु परिच्छेदते शून्य है

सो ऐसे ब्रह्मको जीवत्त्वको भ्रम कहांतेभयो जो कहो वह ब्रह्म
जीवत्त्वको धारणनहीं कियो वाकोतो भ्रमही नहींहै काहेते कि ॥
सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ यह श्रुति लिखैहै वाको भ्रमतो सम्भवितै
नहींहै भ्रमतो जीवनकोभयोहै जिनको ब्रह्मको विज्ञानहै तिन-
को न जीवत्त्वहै न संसारहै जैसे अज्ञानी जीवनको संसारही
देखिपरैहै तैसेज्ञानी जीवनको ब्रह्मही देखिपरैहै तौ सुनौतुमहीं
दुइजीव कहौहौ एक अज्ञानी जीव एकज्ञानी जीव सो अज्ञानी
जीवको या कह्यो कि संसारही देखाय है सो ब्रह्मके तौ अज्ञान
होतही नहीं है जाते आपको जीवत्त्व मानिकै संसारीहोय जो
कहो मायाते सबलित ह्वैकै ब्रह्मही जीव होइ संसारी ह्वैजाय
है तौमाया को तौ मिथ्याकहौं हौं जायासामाको अर्थः मिथ्यैव
फिरि ब्रह्म को तौ ज्ञानस्वरूप कहि आयेहौं कि ब्रह्मको माया
को स्पर्श नहीं होयहै ब्रह्म जीव नहीं होइ सकै है तौ ज्ञानी
अज्ञानी जीव औ संसार वह ब्रह्मभ्रम करिकै कैसे भयो जो कहो
जीव औ संसार या हई नहीं है तौ पुराण औकुरान वेदांत काको
उपदेश करै है तेहिते तुम्हारो समाधान कियो नहीं होय है जीव
ब्रह्म कबहूँ नहीं होइहै सनातन तेजीव भिन्न है औ ब्रह्मभिन्नका-
हेते साहब के लोकःप्रकाश ब्रह्ममें अनादिकालते समष्टिरूप ते
जीव रहै है ताको साहब दयालु दयाकरिकै सुरतिदियो कि मोमें
सुरति लगावै तौ मैं हंसरूप दैकै अपनेपास लैआऊँ सोअनादि
कालते श्रीरामचन्द्रको जनबई न किये या मनादिकनको कारण
उनके रहबही करै वह सुरतिपायकै संसारी ह्वैगये जो साहबको
जानते तौ संसारमें ना आवते जब मनादिक भये तब अनुभव
ब्रह्मको उत्पन्न कियो सो यह तो साहबको है सो साहबको ना
जान्यो आपही को ब्रह्म मान्यो यही धोखाहै और जीव सनातन
है सर्वत्रपूर्ण लोकप्रकाशरूप ब्रह्म नहीं होय है वहीप्रकाशमें अ-
चल समष्टि रूपते भरो रहै है तामें प्रमाण ॥ नित्यःसर्वगतःस्था-
णरचलोयंसनातनः ॥ इतिगीतायाम् ॥ औ लोक प्रकाश व्यापक

ब्रह्मते जीवते भेदहै तामें प्रमाण॥ सत्यआत्मासत्योजीवः सत्यं भिदः सत्यंभिदः॥ औ अज्ञानहूते ब्रह्ममें लीनहोयहैं तबहूं माया धरिलै आवैहै तामें प्रमाण॥ येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिन स्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः॥ आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतंत्य धोनादृतयुष्मदंघ्रयः॥ इतिभागवते॥ तेहिते साहबके लोक प्रकाशमें भरे जेजीवहैं तेहतेव्यष्टिहोतहै औ तेहैं समष्टि रूप करि लीनहोतहै अनादिकाल यहीक्रमहै सो जैसोहम वर्णनकरिआये हैं ताही रीतिमें प्रकाशरूप जो ब्रह्महै तामें निर्विकारत्व निर्धर्मत्वादि जे वेदांतमें विशेषणहैं ब्रह्मके ते बनरहे हैं औरीभांतिनहीं संघटित होयहै औ प्रकाश रूपजो ब्रह्महै सो निर्विकारहै निर्धर्म है अकर्त्ताहै वाकी करी रक्षा जीवकी नहीं होयहै दूनोंते परे जे साहबहैं तिनको जोजानैहै जानिकै उनके लोकको जाय है सो फेरि नहीं आवैहै वेरक्षा करिलेयहैं काहेते वहां मनमायादिकन की गति नहीं है॥ तामेंप्रमाण॥ यद्गत्वाननिवर्तन्तेतद्धामपरमंमम॥ औ जगत्की उत्पत्ति जो उपनिषदनमेंलिखै है सोसमष्टि रूप जीवहीते लिखै है सो कहै हैं॥ सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं॥ इतिश्रुतेः॥ एककहे सजातीय भेद शून्य अद्वितीय कहे विजातीय भेदशून्य ये वकारते स्वगत भेदशून्य यद्यपि सूक्ष्म भेद वामें बने हैं परन्तु समष्टि रूप करिकै जीव एकहीरहै हैं प्रलय में अथवा जीवत्व करिकै एक रहै है यह श्रुति सदनाम कैकै कहै है ताते अनामा जो ब्रह्म है तामें नहीं लगै है औ दूजी श्रुति है॥ सऐच्छतएकोहम्बहुस्याम्॥ तौनै जो है समष्टि जीव सो सुरति पायकै इच्छा करतभो कि एकते बहुत होउँ सो या ब्रह्मष्टि जे समष्टि जीव ताही में लगै है औ ब्रह्मपद यह समष्टि जीवही में घटित होयहै काहेते वृहिवृद्धौ यह धातु है व्यष्टिते समष्टि ह्वैजाय है समष्टिते व्यष्टि होइजायहै औ वह जो लोक प्रकाश ब्रह्म एक रसना घटै न बढ़ै तामें एकोहंबहुस्याम् या अर्थ नहीं लगै है औ अनुभव करि आपने को जो ब्रह्म मान्यो है

सो तो धोखे है नाममिथ्यैहै सो एकतो समष्टि जीव रूप सगुण ब्रह्म तौन औ एक लोकः प्रकाशरूप निर्गुण ब्रह्म तौनई दूनौंते साहब परे है औ मंगल में पांच ब्रह्मकहिआयेहैं सो नारायणजेहैं साकारते औ तिनके अंतर्यामिजे हैं निराकारतत्त्व रूप नारायण तेई दूनों जे साकार निराकार हैं तिनते साहब परे है औ निराकार साकार ये दोऊ साहब के शरीरहैं तामें प्रमाण॥ यामिच्छसिमहाराजतांतनुंकविशश्वकाः। वैष्णवींतांमहातेजो यद्वाकाशंसनातनम्॥ इतिबाल्मीकीये॥ औ साहब साकारद्विभुज नराकृति है। तामें प्रमाण॥ स्थूलंचाष्टभुजप्रोक्तंसूक्ष्मंचैवचतुर्भुजं। परातुद्विभुजंरूपंतस्मादेतत्त्रयंयजेत्॥ इतिआनंदसंहितायां॥आनन्दोद्विभुजःप्रोक्तोमूर्त्तश्चामूर्त्तएवच। अमूर्त्तस्याश्रयोमूर्त्तःपरमात्मानराकृतिः॥ इतिआनन्दसंहितायां॥ औ मुसल्मानन के जे अच्छे समुझवारेहैं तेसाकारहीमानैहैं काहेतेकि कुरान में लिखेहै अल्लाह कहैहै कि महम्मद मोको एकबार जब लड़कामें देखा है औ एक बार मैं ने बुलाया मेरे सामने चलाआया दुइकमानते कम फरक रहि गया सो महम्मद देखा यातो अल्लाह के सुरति है यह आयो औ महम्मदकी हदीस खलकल्लईसान अल्लाह के सूरतिही में बनायाहै ईसान अपनी सुरतिकायहिसेया आया कि अल्लाह द्विभुजहै यहिसे या माल्म भया कि अल्लाह कहि के द्विभुज श्रीरामचन्द्रही बर्णन करै है औ जेअल्लाहकी सुरतिकहतेहैं कि नहीं है कुरान की जबान नहीं मानते हैं तिनको काफर कहते हैं औ वह जो है निर्गुण सगुण के परे साहब नराकृति सो जाके ऊपर कृपा करै है ताको आपनो हंसरूप आपनी इन्द्री देइहै आपै देखि परै है तामें प्रमाण॥ ब्रह्मणैवजिघ्रति ब्रह्मणैव पश्यति ब्रह्मणैवशृणोतिइतिश्रुतेः॥ औ साहबको रूप साकार निराकारते विलक्षणहै याते अरूपी रूपकहै हैं औ जैसोयहनाम है तैसोनामनहींहै वहनामबिलक्षण मनवचनकेपरे है याते वाको अनामानामकहैहैं तामेंप्रमाण॥अनामासोऽप्रसिद्धत्वादरूपोभूत

वर्जनात् ॥ इतिअग्निपुराणे ॥ अप्राकृतशरीरत्वादरूपी भगवान् विभुः ॥ इतिवायुपुराणे ॥ औ साहब के हाथ पांय नहींहैं निराकार आयो औ चलै है ग्रहण करि लेइहै याते साकार आयो तामें प्रमाण ॥ अपाणिपादोजवनोगृहीतापश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः इतिश्रुतेः ॥ सो ऐसे साहब के लोकःप्रकाशब्रह्मको यहजीव ना समुझयो कि साहबको लोकः प्रकाश है मनते अनुभव करि वह ब्रह्म आपहीको मानत भयो यही धोखा ब्रह्म है सो जीवपै कहे एकरूपते औ कहे समष्टि रूप ते जीव लोकः प्रकाश के अंतर में वास किये रहै सो अन्तर ज्योति कहे सुरति पाय प्रकाश कीनकहे मतादिक उत्पन्न करि समष्टिते व्यष्टि होवे की इच्छा करत भये सो आगे कहै हैं १ ॥

इच्छारूप नारि अवतरी । तासुनामगायत्रीधरी २

आपनेको जो धोखाते ब्रह्म मानिलियो समष्टिरूप जीव ताके जब इच्छाभई सोई मूल प्रकृति माया है तेहिते सबलित ब्रह्म भयो सो इच्छा माया जबप्रगटभई ताको नाम गायत्री धरावत भये गायत्री तो सूर्यमध्यवर्ती जे श्री रामचन्द्रहैं तिनको तात्पर्य ते बतावैहै सो अर्थ तोना ग्रहण करतभये सूर्यके मध्यमें साहबहै तामेंप्रमाण ॥ सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामंसीतासमन्वितम् ॥ सूर्यप्रतिपादक अर्थ ग्रहण करतभये तेहिते दिन राति सन्ध्याहोतभई औ ब्रह्मादिक देवताभये सो आगे कहैंगे यह संसार मुख अर्थ समुझयो तेहिते गायत्री सबकी उत्पत्ति करतभई जो कहो काहे ते जानो कि गायत्रीके द्वै अर्थ हैं तौ सुनो यहबाणी जो है सो सार शब्द जो रामनाम ताको लैकै प्रथम प्रगटभई है तामें द्वै अर्थ हैं एकसाहब मुख एक संसारमुख ऐसे प्रणव निगम आगम इनमें द्वै द्वै अर्थ हैं एकसाहबमुख एक संसारमुख काहे ते कि रामनाम ते सब निकसेहैं सो जो कारण में द्वै अर्थभये तौकार्यमें द्वैअर्थहोगई यहै सो संसारमुख अर्थ लै कै जीव संसारी होत भये सो यह

उत्पत्ति मंगलमें बिस्तारते लिखिआयेहैं ताते संक्षेप इहां उत्पत्ति लिख्योहै २ ॥

तेहिनारीकेपुत्रतिनिभयऊ।ब्रह्माविष्णुमहेशनामधयऊ ३

तौने गायत्री रूप नारीके ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पन्न होत भये तबवह जोगायत्री रूपनारी है ३ ॥

तबब्रह्मापूँछतमहतारी । कोतोरपुरुषकेकरितुमनारी ४

तासों ब्रह्मा पूँछत भये कि को तोर पुरुष है काकरि तूनारी है औ काके हम पुत्रहैं सो बताउ हम जानो चहै हैं तब वा नारी कहतभई ४ ॥

तुमहमहमतुमऔरनकोई । तुममोरपुरुषहमैंतोरजोई ५

प्रथम साहब के लोक प्रकाश में अनादिकाल ते साहब ते विमुखतारूप जो जगत्को कारण तेहि ते सहित जीव समष्टिरूप वास किये रह्यो तिन के ऊपर साहब दया कियो कि ये अबोध सुषुप्ति ऐसे में परे हैं इन को सुख को अनुभव नहीं है यह जानि साहब बिचारयो कि हम इन को सुरति दयँ जेहिते हमको जानि लेइ तौ मैं हन्स रूप दैकै आपने धामको बोलाय लेउँ सो जब साहब सुरति दियो तब चैतन्यता भई अर्थात् स्मरणभयो यही चित्तकी उत्पत्ति है औवाको रूप तो अनुरै सोतो आपनोदेखैनहीं है सङ्कल्प बिकल्प करै है कि मैंहौं कि नहींहौं यहीमनकी उत्पत्ति है फिरि विचारयो किमैंहौं तौपै कौनहौं आपनोरूपतो देखै नहीं है फिरि निश्चयकियो कि जो मैं होतो न तो यहसङ्कल्प बिकल्प काको होतो याते मैंहौं यही बुद्धि की उत्पत्ति भई जौने लोक प्रकाशमें अपार है ताको देखि मानत भयो कि सत्चित् आनंद स्वरूप सो महींहौं यही अहंब्रह्मरूप अहङ्कारकी उत्पत्ति है सो जब समष्टि जीव आपनेको चिद्रूप ब्रह्म मान्यो तब वही पूर्वजगत् कारण रूपा योगमाया अर्थात् साहब ते विमुखता रूपा सो

स्थूलरूप ते चिद्रूपा योगमाया लागी तव आपनेको सच्चिदानंद ब्रह्म मानिकै एकतेअनेक होवेकी इच्छा कियो अर्थात् समष्टिते व्यष्टि होवेकी इच्छाकियो तव साहब जान्यो कि समष्टि जीव आपने को सच्चिदानन्द ब्रह्म मानि संसारी होन चहै हैं तव सार शब्द जो राम नाम ताको दियो कि याको अर्थ समुझि हमको जानै तौ हम हन्स स्वरूपदै आपनेधामको लै आवैं सो रामनाम को अर्थ साहब मुखतो न समुझ्यो जगत् मुख अर्थ लगाय राम नामकी जे षट् मात्रा हैं तिन ते पांचमात्रा ते पांच ब्रह्म प्रगट कियो छठौं मात्राको अर्थ जीव को हन्सस्वरूप है सो न जान्यो वाही को जीव को अर्थ करि समष्टि ते व्यष्टि ह्वै गयो सो समष्टि ते व्यष्टि होवेवाली जो इच्छाहै सोई गायत्रीरूपामाया है तेहि ते ब्रह्मादिक देवता भये सो प्रथम शुद्ध जीव आपने को ब्रह्म मानि अशुद्ध ह्वै गये हैं याही हेतु ब्रह्म को कोई जगत् को निमित्त कारण कहैहैं कोई निमित्त उपादान कारण कहैहैं याही ते वा ब्रह्म अशुद्ध जीनवको वाप है सो तो धोखई है गायत्री कैसे वतावै कि प्रथम ब्रह्मासों कि तिहारा वापहै ताते यह कहै हैं कि प्रथम तुम रहे तिन के इच्छा हमहैं अव हमतुम कहे हम ते तुम भये और तो कोई हई नहीं है तुमहीं हमार पुरुषहौ हमैं तुम्हारि जोईहैं अर्थात् जव तुम शुद्ध ते अशुद्ध भयेहौ तव चित अचित रूपा जो माया हमहैं तिन्हींते सवलित ह्वै उत्पन्न भयोहै तवहूं हम तुम्हारी नारीरहीहैं औ अवहूं सरस्वतीआदिक तुमको देयँगे ते हमहीं हैं याते तुमहीं पुरुषहौ हमहीं नारी हैं ५ ॥

साखी ॥ वापपूतकीएकैनारी औएकैमायविआय ॥
ऐसापूतसपूतनदेखौं जोवापैचीन्हैंधाय ६

वापतो धोखाब्रह्महै जाते शुद्धजीवअशुद्धह्वै उत्पन्नभयेहैंतेअशुद्ध जीव पूतहैं सो दोऊ माया सवलित भये ताते वाप पूतकी एकै

नारी भई औ पूर्व जगत्कारण रूपा जो मायाहै तौनेहींते अ-
हंब्रह्मास्मि मान्योहै औ तौनेहींते व्यष्टि जीवनकी उत्पत्तिहूभई
है याते दोहुनकी एकै महतारी है याते एकै माया बियानी है
सो ऐसा पूतसपूत नहीं देखहु है कौनसो बाप जो है ब्रह्मताको
धायकै कहै बहुत बुद्धि दौरायकै चीन्है कि यह धोखा है अब
जाकी शक्ति करिकै यह जगत् भयोहै जौनी भांतिते सो समेटि
कै सिंहावलोकन कैकै पुनि कहैहैं ६ ॥

इति प्रथमरमैनी समाप्तम् ॥

अथ दूसरी रमैनी २ ॥

अन्तर ज्योति शब्द यकनारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी १
ते तिरिये भग लिंग अनन्ता । तेउनजाने आदिउ अन्ता २
बखरी एक बिधातैं कीन्हा । चौदहठहर पाटिसोलीन्हा ३
हरि हर ब्रह्म महंतौ नाऊ । तेपुनि तीन बसावलगाऊ ४
तेपुनि रचि निखण्डब्रह्मण्डा । छः दरशनछानबेपखण्डा ५
पेटहि काहु न बेद पढ़ाया । सुनतिकरायतुरुकनहिंआया ६
नारी मोचित गर्भ प्रसूती । स्वांगधरे बहुतै कर तूती ७
तहिया हम तुम एकै लोहू । एकै प्राण बियायल मोहू ८
एकै जनी जना संसारा । कौन ज्ञानतेभयो निनारा ९
भा बालक भग द्वारे आया । भग भोगेते पुरुष कहाया १०
अबिगतिकीगति काहुनजानी । एकजीभकितकहौंकहानी ११
जो मुख होय जीभ दशलाखा । तौकोइआइ महंतौभाखा १२
साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै ईलेऊ व्यवहार ॥
एकरामनामजानेबिनाभवबूडिमुवासंसार १३

अन्तरज्योतिशब्दयकनारी।हरिब्रह्माताकेत्रिपुरारी १

अन्तर ज्योति कहे वह ज्योतिके अन्तरकहे भीतरैनारीजो है

गायत्रीरूपवाणी सो शब्द जो है रामनाम ताको लैकै प्रगट भईहै सो मंगल में कहि आयेहैं तौने शब्दकी शक्तिते तानारीके हरि ब्रह्मा त्रिपुरारी भये हैं अर्थात् रामनामको जगत् मुख अर्थ लैकै वहै वाणीरूपनारी वेद शास्त्र औ सब संसार प्रगट कियो रामनाम में ये सब भरेहैं सो मैं अपने मन्त्रार्थमें लिख्योंहै सो रामनाम में जोसाहब मुखअर्थहै ताको छिपाय दियो १ ॥

तेतिरियैभगलिंगअनन्ता । तेउनजानिआदिउअन्ता २

तौन जो है तिरिया ताते अनन्त भग लिंग होतभये अर्थात् बहुत स्त्री पुरुष भये ते अनेक शास्त्रन में अनेक बेदनमें बिचार करत २ तबहूं वहराम नामके अर्थको अन्तनपाये २ ॥

बखरीएकबिधातैंकीन्हा । चौदहठहरपाटिसोलीन्हा ३

एक बखरी यह ब्रह्मांड ब्रह्मा बनावत भये सो चौदह ठहर कहे चौदह भुवन करिकै पाटि लेतेभये ३ ॥

हरिहरब्रह्ममहंतौनाऊ । तेपुनितीनिबसावलगाऊ ४

औ हरिहर ब्रह्मा जौन ब्रह्मांड प्रथम ब्रह्मा बनायो है वोही ब्रह्माण्डमें तीनि गांव बसावत भये तहांके मालिक होत भये औ जे प्रथम ब्रह्मादिक देवता भये हैं तेई ब्रह्मादिकन के अंगन के देवता होतभये सो मंगल में लिखि आयेहैं ब्रह्मादिकनकी उत्पत्ति औ पुनि भगवानकी नाभीमें कमल भयो तेहिते ब्रह्माभये हैं तिनते उत्पत्ति भईहै औ ब्रह्मवैवर्त्तमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति प्रकृति पुरुषके अंगनते भईहै औपुनिभगवान्‌की नाभीमें कमल भयोहै जो मंगलमें कहिआयेहैं तेहिते ब्रह्माभयेहैं तिनते उत्पत्ति भईहै औ तौनै बात यारमैनीहू में कहे हैं कि पहिले इच्छा रूपी नारीते ब्रह्मादिक भये औ पुनि ब्रह्माण्डांतरानुवर्ती ब्रह्मादिकभये ते सतोगुणाभिमानी जे विष्णुते ऊपर देवलोक

बसावतभये ते ताके मालिक और जो गुणाभिमानी जे ब्रह्माते मध्यके लोक बसाये ते तहां के मालिक औ तमोगुणाभिमानी जे महादेव ते नीचे के लोक बसाये ते तहांके मालिक होत भये सो येतीनौं तीन लोकके मालिकै हैं परन्तु तीन तीन लोकनकी प्रधानता देखाई है ४ ॥

तेपुनिरचिनिखंडब्रह्मण्डा । छादर्शनछानबेपखण्डा ५
पेटहिकाहुनवेदपढ़ाया । सुनतिकरायतुरुकनहिंआया६

ते तीनौं देवता मिलिकै ब्रह्माण्डमें छा दर्शन छानबे पाखंड बनावत भये योगीजंगमसेवरा संन्यासीदुरवेश। छठयेंकहियेब्राह्मण छाघरछाउपदेश दशसंन्यासी बारहयोगी चौदहशेषबखाना। बौध अठारहि जंगम अठारहि चौबिस सेवरा जाना । औ प्रथम उत्पत्ति में कहिआये हैं ब्रह्मा विष्णु महेशते यह ब्रह्मांड के ऊपर अपने लोक बसाये फिरि एक २ अंशते अनंतकोटि ब्रह्माण्डनमें बसे जाय ५ औ पेटैते कोऊ वेद नहीं पढ़ि आया कहे गायत्री नहीं पढ़्यौ बरुवा नहीं भयो औ न पेटैते सुनति करायकै तुरुक बनि आयाहै ताते हिन्दू तुरुकको जीव एकई है सो तो नाजान्यो वेद किताब की बाणी सुनिकै अपने २ कर्मते सब अनेक भेदह्वै गये वेद किताब को भेद न जान्यो ६ ॥

नारीमोचित्त गर्भ प्रसूती । स्वांगधरै बहुतै करतूती ७
तहियाहमतुम एकै लोहू । एकै प्राण बियापत्त मोहू ८

गर्भबासमें जब तुमरहेहो तब न हिन्दूए रह्यो है नातुरुकरह्यो न वेद पढ़्यो न तिहारी सुन्नतिभई जब गर्भते निकसे तब कर्म करिकै हिन्दू मुसल्मान ह्वै गये वहै नारी जो है बाणी ताही में चित्त लगायकै कर्म करिकै नाना स्वांग हिन्दू मुसल्मान भये ७ सो कबीरजी कहे हैं कि जैसे हम शुद्धहैं तैसे तुमहूँ शुद्धरहेहौजब तुमहीं मन प्रकट कियो है औ इच्छा भई है तब हम तुम एकही

लोह रहे हैं अर्थात् एकई जाति चित्त स्वरूप शुद्ध रहेहौ सो एक मोह कहे भ्रम जो है मन सो व्याप्त ह्वैकै नाना भांति तुमको कराइ दियो कि हम हिन्दू हैं हम तुरुकहैं इत्यादिक सबसों ८ ॥

एकै जनी जनासंसारा। कौन ज्ञानते भयो निनारा ९
भाबालकभगद्वारेआया। भगभोगेतेपुरुष कहाया १०
अविगतिकीगतिकाहुनजानी। एकजीभकेतकहौंबखानी ११

एक जनी कहे उत्पत्ति करनहारी माया औ एकै जना कहे उत्पत्ति करनहार मनका अनुभव ब्रह्ममाया सबलित इनहीं ते सब जगत् है तुम कौन ज्ञानते हिन्दू तुरुक नाना जाति बनाय लिये निनार निनार ९ जब भगकेद्वारे आया तब बालककहाया औ जब भोग न लग्यो तब पुरुष कहाया १० अविगति जो है धोखा ब्रह्म ताकी गति कोई नहीं जानै है मैं एक जीभते केतो बखानिकै कहौं ११ ॥

जोमुखहोइजीभदशलाषा। तौकोइआयमहंतौभाषा १२

जो एक मुख में लाख जीभ होयँ तौ कोई कहे महन्त वही ब्रह्मको भाषै अर्थात् न भाषै यह का कुअर्थ है काहेते कि वाके तौ कुछ रूप रेखा हुई नहीं है धोखही है अथवा महत जे ब्रह्मादिक अपने २ लोक के मालिक जिन जगत् की उत्पत्ति कियो है तिनके करतब्यता को जो काहूके दशलाख जीभ होयँ कहै तौ का कहिसकै अर्थात् नहीं कहिसकै १२ ॥

साखी ॥ कहहिंकबीर पुकारिकै ईलयऊ ब्यवहार ॥
रामनामजानेबिना भवबूड़िमुवासंसार १३

कबीरजी पुकारिकै कहै हैं किया जो उत्पत्ति वर्णन करिआये सो सबलयकहे नाशमान है औ ऊकहे वह धोखा ब्रह्मको जोबर्णन करि आये सो व्यवहारै मात्रहै अर्थात् समुझेते धोखही है कुछ

वस्तु नहीं है सो एक बिना रामनामके जाने कहं साहबको जो बतावैहै रामनाम सो अर्थ विन जाने मायाको वतायो जो है राम नाममें संसार औ ब्रह्माको अर्थ तौने है भव कहे भयरूप समुद्र तौनेमें संसार बूडि मुवाइहां लक्षणा है संसार बूड़ि मुवाकहे सं- सारी जीव बूड़ि मुये १३ ॥ इतिदूसरीरमैनीसमाप्तम् ॥

अथ तीसरी रमैनी ॥

चौ० प्रथम अरम्भकौनकेभाऊ। दूसरप्रगटकीन सोठाऊ १
प्रगटेब्रह्म विष्णुशिवशक्ती। प्रथमैभक्तिकीनजिवउक्ती २
प्रगटिपवन पानीऔछाया। बहुबिस्तारकैप्रगटीमाया ३
प्रगटेअण्डपिण्डब्रह्मण्डा। पृथवीप्रगटकीननवखण्डा ४
प्रगटेसिद्धसाधकसंन्यासी। येसबलागिरहे अविनासी ५
प्रगटेसुरनरमुनिसबझारी। तेऊ खोजि परे सबहारी ६
साखी ॥ जीउ सीउ सब प्रगटे वै ठाकुर सब दास ॥
कबिर और जानै नहीं एक रामनामकीआस ७

प्रथमअरम्भकौनकेभाऊ। दूसर प्रगटकीनसोठाऊ १
प्रगटेब्रह्मविष्णुशिवशक्ती। प्रथमैभक्तिकीनजिवउक्ती २

प्रथम अरम्भ कौनके भाऊ कहेभयो औ दूसरकौन प्रगटकियो जाते ये सब व्यवहारहैं १ प्रथम अनमान समष्टि जीव कियो मनके अनुभव ते ब्रह्मभयो औ बाणीभई ताते ब्रह्मा विष्णुमहे- शादिक देवता प्रगटभये उनकी सबशक्ती प्रगटभई औप्रथमहीं जीव जोहै सो अपनी उक्तिकरिकै उनदेवतनकी भक्तिकरतभयो अर्थात् नाना उपासना बांधि लेतभयो २ ॥

प्रगटिपवनपानीऔछाया। बहुबिस्तारकैप्रगटीमाया ३
प्रगटेअंडपिंडब्रह्मण्डा। पृथवीप्रगटकीननवखण्डा ४

वेजे ब्रह्मादिकहैं ते अपनो अपनो करतब करतभये तेहि ते

पवन पानी औ छाया बहुत विस्तारकैकै मायाप्रगटभई औचारि
जे खानि हैं अण्डज पिण्डज स्वेदज उद्भिज प्रगटभये जेब्रह्मांडमें
हैं औ नवखण्ड पृथ्वी प्रगट भई ३ । ४ ॥

प्रगटेसिधसाधकसंन्यासी । येसबलागिरहेअबिनासी ५
प्रगटेसुरनरमुनिसबझारी । तेऊखोजिपरे सबहारी ६

औ सिद्धसाधक संन्यासी प्रगट होतभये येसम्पूर्ण जे हैं ते
अविनाशी में लागिरहे हैं अर्थात् अबिनाशी को खोजै हैं ५ औ
सुर नर मुनि सबझारिकै प्रगटहोतभये तेऊ अविनाशीको खो-
जत खोजत हारि परे तिनहूँ न पायो ६ ॥

साखी ॥ जीवसीव सबप्रगटे वैठाकुर सबदास ।
कबिरऔरजानैनहीं एकरामनामकीआस ७

जीव औ सीव कहे ईश्वर सो सब प्रगटे सो ईश्वर तो ठाकुर
भयो औ सब जीव दासभये सोकबीरजी कहै हैं कि हम तो दू-
सरो काहूको नहीं जानै हैं न अविनाशी निर्गुण ब्रह्मको जानैं न
सगुण ईश्वर को जानैं निर्गुण सगुण के परे जे श्रीरामचन्द्र हैं
तिनके एक रामनाम की हमारे आशा है कि वही हमारो उद्धार
करैगो ७ ॥ इतितीसरी रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौथी रमैनी ॥

चौ० प्रथम चरणगुरुकीनविचारा । करतागावै सिरजनहारा १
कर्म करिकै जग बौराया । शक्ति भक्ति लैबांधिनिमाया २
अद्भुतरूप जातिकीवानी । उपजीप्रीति रमैनी ठानी ३
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया।वहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ४
जो चीन्है तेहि निर्मलअंगा । अनचीन्हेनलभयेपतंगा ५
साखी॥ चीन्हि चीन्हि कहिगावहूवानी परी न चीन्हि ॥
आदिअन्त उत्पतिप्रलय सब आपुहि कहिदीन्हि ६

प्रथमचरणगुरुकीनविचारा। करतागावैंसिरजनहारा १
कर्मैकरिकैजगबौराया। शक्तिभक्तिलैबांधिनिमाया २

प्रथम चरण कहे जगत्की आदि में गुरुकहे साहब विचारकीन कहे सुरतिदीन कि हमको जानै हमहंस रूपदै आपने धामको लै आवैं सो जीव जे हैं ते वा चैतन्यता पाय जगत् मुखह्वै जगत्उत्पन्न करिकै संसारी ह्वैगये सो करता तो साहबहैं जिनकीचैतन्यता पाय जीव समष्टिते व्यष्टिभये तौने साहबकी कर्तव्यता तो न जान्यो ब्रह्मादिक आपही को सिरजनहार मानतभये १ तेई ब्रह्मादिकनाना कर्मनको प्रतिपादन करि कै जगत् बौरायदियो औ शक्तिजो है गायत्री तौनेके उपदेश की बिधिकैकै ताकी भक्ति थाप कैकै औ जीवन को करायकै मायामें बांधदियो २ ॥

अद्भुत रूप जातिकीबानी। उपजीप्रीति रमैनी ठानी ३
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया। बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया४

अद्भुत रूप औ नाना जाति की जो है कर्म प्रतिपादक ब्रह्मादिकनकी बाणी अर्थात् अद्भुतरूपनके हैं ध्यान जिन में कहेकाहूके बहुत मूड़ काहू के बहुत हाथ काहूके बहुतपाँय यहिरीतिके देवतनकी उपासना करै हैं औ नाना जातिकीकहे नानातरहकी है उपासना बर्णन जिनमें ऐसी उनकी बाणी सुनके तिन तिन देवनपर जीवन की प्रीति उपजतभई औ रमैनी ठानी जोकह्यो सो अपने अपने उपास्य देवगुणी जे हैं सगुण उपासनावाले ते जीव को स्वस्वरूप दासरूपता खोजन लगे औ अनगुणी जे हैं निर्गुण वाले ते जीव को अनुमान जो ब्रह्मस्वरूपता खोजन लगे सो वा वेदतात्पर्य्यार्थ दुइ में कोई नहीं पाये अर्थात् बहुतेरे जने बहुत बिचार कियो परन्तु न चीन्ह पायो ३। ४ ॥

जोचीन्हे तेहि निर्मलअङ्गा। अनचीन्हेनलभयेपतङ्गा ५

जे यह धोखाको जानै है कि यहधोखा है तिन्हींकोजानिये कि इनके पारखहै यहबात बिनाजाने जगत् के जेजीवहैं ते जैसे

दीपक में पतंग जरिजायहै ऐसे वहधोखा में परिकै नानादुःखपा-
वै हैं और जोकोई साहबको चीन्है है जाकोनेतिनेतिवेदकहै हैं औ
पारिख करै हैं ताके निर्मलअंग ह्वैजाय हैं अर्थात् हंसरूप पाव है
काहे ते कि वह साहब तो निर्गुण सगुण मनवचन के परे है सो
जब वाको चीन्ह्यो तब वाहू मनवचन के पर ह्वैजाय है ५ ॥

साखी ॥ चीन्हिचीन्हि कह गावहू बाणीपरी न चीन्हि ॥
आदि अंत उत्पति प्रलय सबआपुहि कहिदीन्हि ६

चीन्हौ चीन्हौ तुमकहा गावहुहौ अर्थात् कहा कहौहौ वहबा-
णी तो तुमको चीन्हि नहीं परी काहेते बाणी आपही कहतजाय
है कि जाकी उत्पत्तिहोयहै ताकी प्रलय भी होयहै जाकी आदि
होयहै ताको अंतहू होयहै तातेजेते पदार्थ जगत्में बाणीआदिदे-
केहैं ते मन बचनके परेनहीं हैं औ जो चीन्हैहै ताको निर्मलअंग
होयजायहै यह जो कह्यो ताते यह देखाय दियो कि जबमनादि-
कएको नहीं रहिजायहैं तबमन बचनके परे जो पुरुषहै सो वह
मुक्तजीवको हंसरूप देइहै ताको पायकै तेहिहंसरूपके इन्द्रिनते
साहबको देखैहैं सो याकोप्रमाण बेदमेंहै ॥ मुक्तस्यविग्रहोलाभा
इतिकंठसाखाया सो यह बिचार नहीं करैहैं बाणीकेफेरमें ब्रह्महू
भूलिगये सो आगे कहैहैं ६ ॥ इति चौथीरमैनीसमाप्तम् ॥

अथ पांचवीं रमैनी ॥

चौ० कहँलौ कहौं युगनकी बाता । भूले ब्रह्म न चीन्हे त्राता १
हरि हर ब्रह्माके मन भाई । बिबिअक्षरलै युक्तिबनाई २
बिबिअक्षरकाकीनबिधाना । अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३
अक्षर पढ़िगुणि राहचलाई । सनकसनंदनकेमनभाई ४
वेद किताब कीन विस्तारा । फैलगैलमनअगमअपारा ५
चहुं युगभक्तन बांधलबाटी । समुझिनपरैमोटरीफाटी ६
भै भै पृथिवी चहुंदिशि धावै । स्थिरहोय न औषध पावै ७

होयभिस्तजो चितनडोलावै। खसमैंछोंड़ि दोजखकोधावै ८
पूरुब दिशा हंसगति होई। हैसमीप सँधि बूझै कोई ९
भक्तो भक्तिन कीन शृंगारा। बूड़िगये सवमांझीधारा १०
साखी ॥ बिनगुरु ज्ञानैदुंदभो खसमकही मिलिबात ॥
युग युग कहवैया कहै काहु न मानी जात ११

कहँलौंकहौंयुगनकी बाता। भूलेब्रह्म न चीन्हैत्राता १
हरिहर ब्रह्माकेमनभाई। बिबि अक्षर लैयुगतिबनाई २

युगनकी बातमैंकहांलौंकहौं मनबचननके परेजोहै ताकीबाटब्रह्मौं भूलिगयेहैं जो बाट पाठहोयहै तो यह अर्थहै औजोत्राता पाठ होयहै तो यहअर्थ है कि सबके त्राताकहे रक्षक जो साहब ताको ब्रह्मा भूलगयेहैं १ जौन रामनामको अर्थ जगत्मुख लैकै बाणी औसमष्टि जीव आदि जगत् रच्योहै तौनैयुगति ब्रह्मोविष्ण महेशके मन में भावत भई सो दूनो अक्षर रामनाम को लैकै रचतभये २॥

बिबिअक्षरकाकीनबिधाना। अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३
अक्षरपढ़िगुनिराहचलाई। सनकसनन्दनकेमनभाई ४

ओई जे द्वै अक्षरहैं तिनकोबिधान करतभये कहांविधानकियोको बंधान कर देते भये अनहदशब्द ज्योति तिनते प्रमाणहै कि ज्योति रूपी जोहै आदिशक्तिरेफ रूपअग्निवीज जाकोमंगल में पांचब्रह्ममें लिख्योहै ताहीते अनहद शब्द उठे व मनमेंजो कुछ कहनेकी बासना आई चित्तमें सो मूलाधारकी जोहै ज्योति तौनेमें मन मिल्योकहे संकल्पउठ्यो तबवह ज्योति डोलीताते कछु पवनको संचारभयो ताते नादकी प्रगटता भई तब वहवानी उठी सो पश्यती मध्यमाहै त्रिकुटी के ऊपर मकारहै विन्दुरूप तहां टक्करपाय बैखरी ये तीनरूपह्वैकै वाहरको आई औयोगीसो जहां अग्निको औपवनको संयोग होयहै तहां जोशब्दहोयहै सो अनहद कहावैहै सो वह बाणी जो बाहरआई सोसम्पू-

णअक्षर भे तौने पढ़ि गुणिकै सनक सनंदन जेजीव हैं तिनके मनमें भावत भई अथवा सनकसनंदनादिक जे ब्रह्माकेपुत्रतिनके मनमें भावत भई सो वहै राह चलावत भये ३४ ॥

वेदकिताबकीन्हविस्तारा।फैलगैलमनअगमअपारा ५

तेई अक्षरनको लैकै वेद किताब कुरान पुराण जेहैं तिनको विस्तार करतभये सो सबके मनमें फैलगैल कहे फैलजात भई अर्थात् जाकेमन में जौन गैलनीकीलगी सोचलतभये सोवहगैल तोभूलहीगये बहुतगैल ह्वैगई अपने अपने मतनकीअपनीअपनी गैलकहैहैं कि यही सिद्धांतहै तेहिते नानासिद्धांत ह्वै गये जोसिद्धांतहै ताको तो पावै नहीं वेदादिकनको कुरानादिकनको कहनलग कि अगमहै अपारहै काहेते कि नानामतहैं तिनमेंवेदकुरानको प्रमाण सबमें है सो एक सिद्धांतमें निश्चय काहूकी न होत भई अथवा अगम अपार जो धोखा ब्रह्महै ताहीमें अपनो अपनो सिद्धांत करते भये सो वह तो अगम अपारहै काहूको मिलबइ नहीं कियो ५ ॥

चहुंयुगभक्तनबांधलबाटी। समुझिनपरै मोटरीफाटी ६
भें भेंपृथ्वीचहुंदिशिधावै। अस्थिरहोयनऔषधिपावै ७

चारिहुयुगके नाना देवतनके जेभक्तहैं ते अपनी अपनी राह बांधत भये तबहू वह सिद्धांत न समुझि परयो काहेते कि बहुत राह ह्वैगई रामनामके संसार मुख अर्थमें है तो सब मतबनेही हैं परंतु साहब मुख जो अर्थहै रामनामको ताको भूलही गये भरमकी जो है मोटरी सो फटी कहे पण्डितभये पढ़े भरम नाशकी उपाय करनलगे अर्थात् शास्त्रनके अर्थ विचारनलगे यही थोरो पढ़िबोहै सो वह राहतो पाई नहीं बहुतराह ह्वैगई तब नाना प्रकारकी शंका उठी भरम फैलिरह्यो नानाशास्त्रनके सिद्धांतन में वेदको प्रमाण सबहीमें मिलैहै काको सांच कहैं काको असांच कहैं ताते शास्त्रनमें एको सिद्धांत न करिसके ६ तब जीव जेहैं

ते भैभैं पृथ्वीमें चारो ओर भ्रमन लगे खोजनलगे एकहु मतको सिद्धांत नहीं पावैहैं सो यहरोगकी औषधि जो साहवको जानैहै ताही बिरले संतमेंहै सोतौ पावत न भये औरे ओर में लगे ताते अस्थिर न होतभये ७॥

होयभिस्तजोचितनडोलावै।खसमैंछोड़िदोजखकोधावे ८
पूरुबदिशा हंसगतिहोई । है समीप सँधि बूझैकोई ९

जो चित्त न डोलावै सुधर्ममें चलै तौ भिस्त जो स्वर्गसोहोय है अथवा जौने जौने देवतनकी उपासनाकरैहै तिनकेलोकजा-यहै अथवा यज्ञपुरुषकी आराधनाकरिकै स्वर्गजायहै औ खसम कहे मालिक ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको भुलाइकै सब जीव दौरै हैं मुक्तकहांते होय दोजख जो नरकहै ताहीमें परैहैं इहांस्व-र्गहूको नरकही मानिकै कहैहैं काहेते कि खसमकेभूले जो स्वर्गहू जायगो तौ दुखही पावैगो आखिर गिरिही परैगो ८ पूर्व दिशा कहे सबके पूर्व जब शुद्धजीव रह्योहै कहे जब शुद्धह्वैकै अपनेस्व-स्वरूपको चीन्है तब साहब हंसस्वरूप देयहै सो वा साहब को बिचार कर्मके बाहिरेहै सो याकी जो संधिहै कहे बिचार है सो समीपही है जो अपने स्वरूपको चीन्है तौ साहब हंसरूप देवै करै परन्तु कोई बूझत है ९॥

भक्तौभक्तिनकीनशृंगारा। बूड़िगयेसबमांझहिधारा १०

ज्ञानमिश्रावाले जे भक्तहैं ते भक्तिनि जो माया तेहिते शृंगार करतभये कहे बिचार करतभये कि हमहीं ब्रह्महैं वह मनकी धा-रामें बूड़िगये कहां बूड़े कि यहसब मिथ्याहै यहकहत कहत एक अनुभव सिद्धांतराख्यो सो अनुभवजीव को है ताते मनते भिन्न नहीं है वही मनकी मांझ धारामें बूड़िगये अथवा साहब को छो-ड़िकै जे नाना देवतनके भजन करैहैं ते भक्त भक्तिनि कहावै हैं ते साहबको तो न जान्यो शृंगार करतभये कहे नानावेष बना-वतभये कोई क्षाभ्रछिद्रनाकोकी ओर चंदनदियो कोई मृत्तिका

दियो कोई राख लगायो इत्यादिक नानावेष बनावत भये ते सब संसार रूपी समुद्रकी मांझ धारामें बूड़िगये १० ॥

साखी ॥ बिनगुरुज्ञानैद्वन्दभो खसमकही मिलिबात ॥
युगयुग कहवैया कहै काहु न मानी जात ११

खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं ते मिली बात कही कहे अपनो रामनाम बतायो तामें द्वैअर्थ रह्यो एकसाहबमुख एकसंसार मुख सो आदिमंगलमें लिखि आयेहैं सो सबते श्रेष्ठगुरुसाहब तिनको ज्ञान तो नहीं भयो संसार मुख अर्थ ग्रहण कियो ताते द्वन्दकहे जन्ममरण दुःख सुख स्त्री पुरुषज्ञानअज्ञान इत्यादिक संसारमें होतभयो सो कबीरजी कहैहैं कि युगयुगमें कहनहार जो मैंहौं कबीर सो कह्यो मेरीकहीबात काहूसों नहीं मानी जातहै ११ इतिपँचईरमैनी समाप्तम् ॥

अथ छठी रमैनी ॥

चौ० वर्णहु कौनरूप औ रेखा । दूसर कौन आयजो देखा १
औ ॐकार आदिनहिंवेदा । ताकर कहौंकौन कुलभेदा २
नहिंतारागणनहिंरविचंदा । नहिंकछुहोत पिताके बिंदा ३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना। कोधरैनामहुकुमकोवरना४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती । ताकरकहहुंकौनकुलजाती५

साखी ॥ शून्य सहज मनस्मृतिते प्रगटभई यक ज्योति ॥
बलिहारी तापुरुष छवि निरालंब जो होति ६

वर्णहुंकौनरूपऔरेखा । दूसर कौन आय जो देखा १
औओंकार आदि नहिंवेदा । ताकरकहौंकौनकुलभेदा २

वह जो अनिर्वचनीय है ताको कौनरूपरेखा वर्णनकरौं मैंहीं नहीं वर्णन करिसकौंहौं तौ दूसर कौन आय जो देख्यो १ प्रणव को वेदहू नहींजानैहैंकाहेते कि प्रणव एकाक्षरब्रह्मवेदनको आदि

है सो तौ प्रणवहू नहीं रह्यो ताहूको आदि है उसको कौनकुल भेदकहौं २ ॥

नहिंतारागणनाहिंरविचंदा। नहिंकछुहोतपिताकेबिंदा ३
नहिंजलनाहिंथलनाहिंथिरपवना। कोधरैनामहुकुमकोवरना ४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती।ताकरकहहुंकौनकुलजाती ५

न तारागण न सूर्य्य न चंद्रमा न पिताको बिंदु एकौ नहींरहे जाते सब उत्पत्तिहै ३ पृथ्वी अपतेज बायु आकाश येएकौनहीं रहे तहां कौन नाम धरतभये औ काको हुकुम बर्णन करत भये ४ औ तहां न दिवस होत भयो न रात्रि होत भई ताकी कौन कुल जाति कहौं ५ ॥

साखी ॥ शून्यसहजमनस्मृतिथे प्रगटभई एकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुषछबि निरालंब जो होति ६

सहजशून्य जो प्रकाश देखिपरै ब्रह्म ताके मनके स्मरणतेएक ज्योति प्रगट होयहै सो सालंबहै योगीजन ब्रह्मांडमें देखैहैं औ वह जो अनुभव ब्रह्महै सोऊ सालंबहै काहेते कि वाहूको मनकरिकै अनुभव होयहै सो कबीरजी कहैहैं कि ये दोऊ सालंबहैं कि तिनकी बलिहारी मैं कहां जाऊं सबकेमालिक निरालंब परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकीछबिकी मैं बलिहारी जाउंहौं साहब निरालंब कहेतेहैं कि जीवकी जेतीसामर्थ्यहैं मनादिकइन्द्रिनकरिकै ज्ञानकरिकै अनुभव करिकै साहब न देखेजायहैं न जाने जायहैं जब आपही आपनो हंसरूप देय हैं तब वह रूप करिकै देखेजायहैं औ आपही ते जानेजाय हैं तामें प्रमाण ॥ सो जानै जेहि देहुजनाई। जानत तुम्हैं तुम्हैं ह्वैजाई ॥ तुम्हरीकृपा तुम्हैं रघुनन्दन। जानहिंभक्तभक्ति उरचंदन १ अर्थ हेश्रीरामचन्द्रजाको तुमजनाइ देहुहौ सोजानैहै जोकहो हमारहीजनाये कैसेजानैगो वेद शास्त्रतो सब जनौतैहैं तौ एकबड़ो अवरोधहै जबतुम्हारे जानबेके लिये समदमादिक कियो हृदयशुद्धभयो तब आपहीको

मानैहै कि महीं रामहौं सो तुमको कैसे जानिसकै या हेतुते तु-
म्हारीकृपै ते तुमको जानैहै जब तुमने वाको हंसरूपदियो तब
वहपांचौशरीरते भिन्नह्वैकै हंसरूपमें स्थितभयो वह हंसस्वरूप
कैसोहै तुम्हारी अनिर्वचनीया सभक्तिरूप जो चन्दनहै सो वाके
उरमें लग्यो है ताकी शीतलता ते वह धोखा ब्रह्मके ज्ञानकीगर-
मीनहीं आयसकैहै जिनको कृपाकरिकै तुम हंसरूप देहुहौ सो
जानैहै तुमको सो ऐसे जे साहबहैं परमपुरुष निरालंब तिनको
कबीरजी कहैहैं कि मैं बलिहारी जाउंहौं परम पुरुष श्रीरामच-
न्द्रहीहैं तामें प्रमाण ॥ धर्मात्मासत्यसंधश्चरामोदाशरथिर्यदि ॥
पौरुष्येचाप्रतिद्वंदःशरएयहिरावणि । इतिबाल्मीकीयेलक्ष्मण-
जीने मेघनाद के मारतमें शपथ कियोहै कि जो पौरुषमें अप्रति-
द्वंदी जो श्रीरामहोयँ कहेपुरुषत्वमें वैसो दूसरानहोय तौ हमारो
बाण मेघनाद को शिरकाटि लेइ सो मेघनादको शिरकाटिलियो
औ भागवतहूमेंहै ॥ ध्येयंसदापरिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदंशि-
वविरंचिनुतंशरएयम् ।भृत्यार्तिहंप्रणतपालभवाब्धिपोतंबंदेमहापु
रुषते चरणारबिंदम् १ अर्थ हेमहापुरुष तिहारेचरणारविंदकोहमबं-
दना करेहैं कैसे तिहारे चरणारविंदहैं कि सब कालमें ध्यानकरि-
वेके योग्यहैं औ परिभव जोतिरस्कार ताकेनाश करने वाले हैं
अर्थात् जो कोई ध्यानकरैहै ताको तिरस्कार लोकमें कोई नहीं
करैहै औ मनोवांछित पूर्ण करनेवाले तीर्थजेहैं तिनके आश्रय
भूत औ शिव विरंचिते स्तुतिकरेगयेशरएयम्कहे रक्षाकरनेमें सम-
र्थ औ दासनके पीड़ाहरणवाले दीननके पालनवाले औ संसार
समुद्रके नौकारूप तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ साहब कहियेएक
को दूजा कहा न जाय । दूजा साहब जो कहैबादबितंडैआय ६ ॥
इतिछठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ सातवीं रमैनी ॥

जीवमुख-जहियाहोतपवननहिंपानी।तहियासृष्टिकौनउतपानी १

तहिया होत कली नहिं फूला । तहिया होत गर्भ नहिं मूला २
तहिया होत न विद्या वेदा । तहिया होत शब्द नहिं खेदा ३
तहिया होत पिंड नहिं बासू । नाधर धरणि न गगन अकासू ४
तहिया होत गुरू नहिं चेला । गम्य अगम्य न पंथ दुहेला ५
साखी ॥ अविगति की गति क्याकहों जाके गाँउ न ठाँउ ॥
गुण विहीना पेखना का कहि लीजै नाँउ ६

जहियाहोतपवननहिंपानी। तहियासृष्टिकौनउतपानी १
तहियाहोतकलीनहिंफूला। तहियाहोतगर्भनहिंमूला २

जहिया कहे जेहिसमय सृष्टि नहीं रही जेहिसमय न पवन रह्यो न पानी रह्यो तब सृष्टिको कौनउत्पन्नकियो १ न तबकली रही न फूल रह्यो अर्थात् न बालरह्यो न वृद्धरह्यो न गर्भरह्यो न गर्भ को मूल बीज रह्यो २ ॥

तहियाहोतनविद्यावेदा। तहियाहोत शब्दनहिंखेदा ३
तहियाहोतपिंडनहिंबासू । नाधरधरणिगगनअकासू ४
तहियाहोतगुरूनहिंचेला । गम्यअगम्यनपंथदुहेला ५

न वेदरह्यो न चौदहौ विद्यारहीं न शब्द रह्यो न खेद कहे दुःखरहो ३ न पिंडरह्यो न पिंड में जीवको वासरह्यो न अधरकहे पाताल रह्यो ना धरणिरही न अकाश रह्यो ४ न गुरूरह्यो न चेला रह्यो न गम्यकहे सगुणरह्यो न अगम्यकहे निर्गुण रह्यो औ दुहेलाकहे दूनौ पंथ नहीं रहे ५ ॥

साखी ॥ अविगतिकीगति क्याकहौं जाकेगाँउनठाँउ ॥
गुण बिहीना पेखना काकहि लीजै नाँउ ६

वह जो अविगत कहे अव्यक्त जोनहीं प्रगटहोय धोखा ब्रह्म है निराकार ताके गाँउ ठाँउ नहीं है वह गुणकरिकै विहीन जो निर्गुण है ताको पेखना कहे देखिबे को काकहिकै नामलीजै कि

यहहै वातो कुछ वस्तुही नहीं है ६ ॥ इतिसातवींरमैनीसमाप्त

अथ आठवीं रमैनी ॥

चौ० तत्त्वमसी इनके उपदेशा । ई उपनिषद कहै संदेश
ऊनिश्चय उनके बड़भारी । वाहिकिवर्णकरैंअधिका
परमतत्त्वकानिजपरमाना।सनकादिकनारदसुखमा
याज्ञवल्क्यऔजनक सँवादा । दत्तात्रयीवहै रसस्वा
वहै वशिष्ठ राममिलि गाई । वहै कृष्णऊधोसमुझा
वहै वात जो जनक दृढाई । देहै धरे बिदेह कहा

साखी ॥ कुलअभिमानाखोयकैजियतमुवानहिंहोय ॥
देखत जो नहिं देखिया अदृष्टकहावै सोय ७

तत्त्वमसी इनके उपदेशा । ईउपनिषद कहै संदेश

तौनै धोखा ब्रह्म को जौनी रीतिते गुरुवालोग उपनिष
प्रमाण देकै प्रतिपादन करैहैं सो औ सांचा जो अर्थहै सोकव
दोऊ तात्पर्य्य करिकै देखावैहै तत्त्वमसी जो श्रुति उपनिष
उपदेश ताको गुरुवालोग संदेश ऐसो कहैहैं संदेश कौनक
कि वात को पूर्वापर नहीं समझै वाकी कहनूति वासों क
जो संदेश को हेतुपूंछै किकौने हेतुते कह्योहै तो वह कहै
संदेश कहिदियो यह नहीं जानै हैं कि कौन हेतुते क
सो ऐसे गुरुवालोग श्रुतिको तो पूर्वापर जानै नहीं हैं
मात्रको अर्थ करैहैं कि तत्त्व ब्रह्मत्व असि तौन ब्रह्मत्वही
जीवही को अनुमान तो ब्रह्महै जीवब्रह्मकैसे होयगो ब्रह्मत
नस्वरूपहै शुद्धहैं माया कैसे धरिलावती अज्ञानी कैसेहो
गुरुवालोग कहैहैं कि वा अतर्क है तर्क न करो सो श्रुतिके
यहहै कि पूर्वषोड़श कलात्मक जीवको कहिआयेहैं ताहिकै
हैं कि त्वंअसितौन षोड़श कलात्मक जीवते है षोड़श कला

मेंहैं तो उनते भिन्न हैं शुद्ध है यह जीव को स्वरूप लखायो सो नहीं समुझै हैं सो या वात मेरे तत्त्वमस्यार्थवादमेंविस्तरतेहै १॥

ऊनिश्चयउनकेबड़भारी।वाहीकिवरणकरैअधिकारी २

ऊकहे वह जो धोखा ब्रह्महै ताहीकी निश्चय उनकेबड़ी भारी है वाहीकी वरण कहे वहीधोखा ब्रह्मको अधिकारी जे चेलाहैं तिनको वर्णकरै है अर्थात् अंगीकार कराइदेइहै परमतत्त्व जे श्री रामचन्द्रहैं तिनको नहीं जानैहै जे जानैहैं तिनको कहैहैं २॥

परमतत्त्वकानिजपरवाना।सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा। दत्तात्रयीवहैरसस्वादा ४

परमतत्त्व जे हैं श्रीरामचन्द्र तिनको निजते पर मानतभये याहिहेतु ते सनकादिक औ नारदजे हैं ते सुख जानत भये अर्थात् सुखीहोतभये भाव यहहै कि जे कोई परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अपनेते परमानैं हैं तेई सुखीहोयहैं ३ औफिरि कहैं हैं याज्ञवल्क्य औ जनक को सम्वाद भयो है सो याज्ञवल्क्य कह्यो जो परमतत्त्व श्रीरामचन्द्र सो जनकजी जान्योहै और वही तत्त्वदत्तात्रयी चौबीसगुरूबनाय संसारते बैराग्यकैकै तात्पर्य्य वृत्तिते जान्यो है ४॥

वहैबशिष्ठराममिलिगाई। वहैकृष्णऊधवसमुझाई ५
वहैबात जो जनकदृढ़ाई। देहै धरे बिदेह कहाई ६

वही परमतत्त्व जे श्री रामचन्द्रहैं तिनको मिलिकै गाय कहे कहिकै बशिष्ठजी जान्यो है औवही परमतत्त्व तात्पर्यवृत्तिकरिकै कृष्णचन्द्र ऊधवको उपदेश कियो है ५ वहीपरमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको दृढ़स्मरण कैकै देहै धरे जनकजी विदेह कहावत भये इहां है जनक जोकह्यो सो वा वंश में एकजनक नामकरि कै राजा भये हैं तेहिते बिदेह होत आये ६॥

साखी ॥ कुलअभिमानाखोयकै जियतमुवानहिंहोय ॥
देखत जो नहिंदेखिया अदृष्टकहावै सोय ७

ऐसेजे परमतत्त्व श्री रामचन्द्रहैं तिनको जानि आपनोकुलाभिमानखोयकै कहे त्यागिकै ज़ियतै मुवा प्रसन्नाभये अर्थात्‌हंसस्वरूप में टिकिकै पांचौ शरीरते भिन्न ना भये औ देखत जो ना देखै सो अदृष्टि कहावै सो परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकोवेद पुराण कुरान शास्त्र महात्मा इनकेद्वारा देखतऊ हैं औ जिनको वर्णनकरिआये सनकादिक महात्मनको उद्धारह्वैगयो यहौ देखतऊहैं समस्त दृष्टिते परन्तु ये मूर्खजीव गुरुवालोग ना जाने तेहिते अदृष्टिकहावैहैं कहे आंधरे कहावैहैं परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रही हैं तामेंप्रमाण ॥ रामएवपरंतत्त्वं श्री रामोब्रह्मतारकम् ॥ इतिहनुमतोपनिषदे जो यहकहौ शुकसनकादिक येऊ न जान्यो तौ अबको जानैगो नास्तिकपना आवै बस्तु मिथ्याहोयहै तातेसाधु तौ जानतईहैं जिनको साहब जनायदियो है कबीरौजी कहै हैं ॥ ध्रुवप्रहलादउबारिया सो हरि हमरे साथ । हमको शंकाकछुनहीं हमसेवें श्री रघुनाथ ७ ॥ इति आठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ नवीं रमैनी ॥

चौ० बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यम बांधे अंजनि के पूता १
यमकेवाहनबांधिनिजनी । बांधे सृष्टि कहांलौं गनी २
बांधे देव तेंतीस करोरी । सुमिरतबंदिलोहगै तोरी ३
राजा सुमिरै तुरियाचढी । पंथी सुमिरि नामलैबढी ४
अर्थविहीना सुमिरै नारी । परजासुमिरैपुहुमीभारी ५
साखी ॥ बंदि मनाय फल पावही बंदि दिया सो देव ॥
कह कबीर ते ऊबरे निशि दिन नामहि लेव ६

चौ० बांधेअष्टकष्टनौसूता । यमबाँधेअंजनिकेपूता१

अष्ट जे अष्टांग योगहैं औ कष्ट जो विज्ञानहै तेहिते बांधिगयो धोखा ब्रह्मको विज्ञानरूपकष्टहै तामें प्रमाण ॥ अव्यक्ताहिगति-

दुःखंदेहवभिरवाप्यते ॥ इतिगीतायां ॥ श्रेयःश्रुतिंभक्तिमुदस्यते विभो क्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्धये । तेषामसौक्लेशलएवशिष्यते नान्यद्यथास्थूलतुषावघातिनाम् ॥ इति भागवते । औ नौसूतकहे सगुना जो नौधा भक्ति है तेहिकरिकै बांधिगयो औ यमकहे दुइ विद्या औ अविद्या तेहिकरिकै अजनी जोमाया ताके पूत जेजीव हैं तेसब बांधिगये १ ॥

यमकेबाहनबाँधिनिजनी । बाँधेसृष्टिकहांलौंगनी २
बाँधेदेवतेंतीसकरोरी । सुमिरतबंदिलोहगैतोरी ३

औ यमजे विद्या अविद्या दूनौं मायाहैं तिनके सब जीव बाहनभये काहेते कि उनहींको ढोवन लगे उनहीं के चाल चलन लगे औ वैजे दूनौं मायाहैं ते बांधिनिजनी कहे फेरि फेरि जीवन को उत्पन्न करिकै संसार दैकै बांधि लियो औ शिशमें चढ़ीरहती हैं सो अनादि कालते बँधीजो सृष्टि ताको कहांलौं गनी २ तेंतीसकोटि देवता बांधेगये तिनको सुमिरत मात्रहीमें बंदि कहेलोहे की बेड़ीमें परिकै तोरी कहे मारेगये अथवा तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनके सुमिरतमें का बन्दिलोहेकी बेरी जीव तोरिगये नहीं तोरिगये ३ ॥

राजासुमिरै तुरियाचढ़ी । पंथीसुमिरि नामलैबढ़ी ४
अर्थबिहीनासुमिरैनारी । परजासुमिरैपुहुमीभारी ५

तुरिया अवस्था को नाम है तामें ज्ञानी लोग चढ़ीकहे आरूढ़ ह्वैकै राजित होयहैं ताहीते राजा कहै हैं ते अहंब्रह्मको सुमिरैहैं औ पंथी जे अनेकपंथ चलावन वालेहैं ते नानामतके पंथमें आरूढह्वै अपनेअपने इष्टदेवनके नामलैकै साधनमें बढ़ेहैं सोयहौ बिरही हैं ४ अर्थ बिहीना कहे अर्थ जो है द्रव्य ताको वैराग्य ते त्यागि बनमें बासिकै अपनेइष्टदेवनको सुमिरै हैं ते औ पर जो ब्रह्म है तामें जो जायोचाहै सारी पुहुमी सहित सुमिरैहै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्महीं देखैहै ते ये दोऊ सगुण निर्गुण उपासक नारी जो

माया है ताहीको सुमिरै हैं कादेते कि जहांलौं मन जायहै तहां लौं सब मायाहै ५ ॥

साखी ॥ बंदिमनायफलपावहीं बन्दिदियासोदेव ॥
कहकबीरतेऊबेरैनिशिदिननामहिलेव ६

बंदि कहे विद्या अविद्या रूप जो बेरी ताको जे मनावै हैं ते तौनै फलपावै हैं अर्थात् जे स्वर्गादिक की चाह करै हैं तेलोहेकी बेरीमें परे जे अहंब्रह्मास्मि मानेते सोने की बेरीमें परे सो जौने इष्टदेवतनको मनाये सोबन्दीही फल देतभये अथवा बन्दिमेंनाय कहे बान्दिमें डारिदिये हैं तेई फल पावै हैं अर्थात् स्वर्गादिक जे फूलहैं तेसब बंदिमें डारनवारे हैं सो बंदि डारनवारो जेफलदेय हैं तेकादेव हैं नहीं हैं देवसो, कबीरजी कहै हैं कि जे श्रीरामचंद्र कोनामनिशिदिनलेयहैं तेईउबरैं हैं ६ ॥ इतिनवींरमैनीसमाप्तम् ।

अथ दशवीं रमैनी ॥

चौ० राही लै पिपराही बही । करगी आवत काहु न कही १
आई करगी भो अजगूता । जन्म जन्म यम पहिरे बूता २
बुतापहिरयमकरैपयाना । तीन लोक में कीन समाना ३
बांधे ब्रह्मा विष्णुमहेशू । पार्बती सुत बांध गणेशू ४
बँधेपवनपावकनभनीरू । चन्द्र सूर्य्य बांधे दोउ बीरू ५
सांच मन्त्रबांधेसबझारी । अमृत बस्तु न जानै नारी ६

साखी ॥ अमृत वस्तु जानै नहीं मगन भये कित लोग ॥
कहहिं कबिर कामोनहीं जीवह मरण नयोग ७

राहीलैपिपराहीबही । करगीआवतकाहुनकही १

राहीकहे सुराहके चलनवाले औपिपराही कहेपीपरकी बनिका की नाईं अनेक मति में डोलनवाले जे जीव ते राही जे हैं

तिनहूंको लैके संसारसागरमें वहतभये करगी बूड़ाको जल जो छिटकै है ताकोकहै हैं सो यह माया ब्रह्मको जो धोखारूपबूड़ा है ताकेआवतमेंकाहुनकहीं कियाधोखाब्रह्ममें नपरोबूड़िजाउगे १॥

आईकरगीभोअजगूता। जन्मजन्मयमपहिरेबूता २

जब करगी आई तब अयुक्ति होत भई कैसी भई कि जन्म जन्मकहे जबजब ब्रह्माण्डनकी उत्पत्तिभई तबतब यम पहिरे बूता कहे यमको काल निरञ्जन जेहैं तिनको बूता कहे पराक्रम काल पहिरत भयो अर्थात् काल तो जड़है निरञ्जनै को परा क्रम लैके जीवनको मारै है २ ॥

बुतापहिरियमकीनपयाना। तीनिलोकमोकीनसमाना ३
बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू। पार्बती सुत बाँधगणेशू ४
बँधे पवन पावकनभनीरू। चन्द्रसूर्य बांधे दोउबीरू ५

वही निरंजन को बुताकहे पराक्रम काललैकै पयानकियो सो लव दिन पक्ष मास वर्ष युग कल्प रूप करिकै तीन लोकमें स-माइ जातभयो ३ जौन काल तीनलोकमें समानो ताहीमें ब्रह्मा विष्णु महेश षटमुख गजमुखादि आयुर्दाय प्रमाण रूपते सबबँ-धतभये ४ अरु ताहीमें पवन औ पावक औ पानी औ चन्द्रसू-र्य्य नभ सब बँधत भये ५ ॥

सांचमंत्र सबबांधे झारी। अमृत बस्तु न जानै नारी६

झारादैकै जे साहबके सांचमंत्रहैं तिनहूंको काल बांधिलियो काहेते कि जो साहबके मंत्रको अर्थ प्रभाव औ साहबको ज्ञानरूप अमृत वस्तुनारी जो आवर्णकैलियो माया तामेंपरे जे जीव ते न जानैं जो जानैंगे तौहमारे मारे न मरैंगे याही हेतुते बांध्यो है ६॥

साखी ॥ अमृत बस्तुजानै नहीं मगनभये कित लोग॥
कहैंकबिरकामोनहीं जीवहमरन न योग ७

अमृत बस्तु जो साहब है ताको तो न जान्यो कौनेकुत्सित

संसारमें तू मगन भयो कौन साहबजो कामो नहीं अर्थात् का में नहीं है सबही में है सो ऐसो अमृत वस्तु साहब समीपई है वा जीव का जननमरण योगहै अर्थात् नहीं है व्यंग्यतेयाकहे हैं कि जीव महामूढ़है अथवा जिनको सांत्र मंत्र माने रहे ते तो सब बांधिगये अमृत वस्तु जो रामनामका साहब मुख अर्थ सो जानतही नहीं है याते जनन मरण न छूटत भयो ७ ॥

इति दशवीं रमैनी समाप्तम ॥

—o—

अथ ग्यारहवीं रमैनी ॥

गुरुमुख ॥ आंधरगुष्टिसृष्टिभैबौरी । तीनिलोकमहँलागिठगौरी १
ब्रह्महिं ठग्यौ नाग संहारी । देवन सहित ठग्यो त्रिपुरारी २
राज ठगौरी विष्णुहिं परी । चौदह भुवन केर चौधरी ३
आदिअन्त जेहिं काहुनजानी । ताको डर तुम काहे मानी ४
ऊ उतंग तुम जाति पतंगा । यमघर किहेहु जीव के संगा ५
नीमकीट जस नीम पियारा । विषको अमृत कहै गँवारा ६
विषके संग कवन गुण होई । किंचित लाभ मूल गो खोई ७
विष अमृतगो एकहिसानी । जिन जाना तिन विषकैमानी ८
कहा भये नल सुध बेसूझा । बिन परचै जग मूढ़ न बूझा ९
मति के हीन कौनगुण कहई । लालच लागे आशा रहई १०
साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे मुये कि बाजी ढोल ।
स्वप्नसनेही जग भया सहिदानी रहिगाबोल ११

आँधरगुष्टि सृष्टि भै बौरी । तीनिलोकमहँलागिठगौरी १

साहब कहैहैं कि जे मोको ज्ञानदृष्टि करिकै नहीं देखैहैं ते जे आँधरहैं ते माया औ निराकार धोखा ब्रह्म याहीकी गोष्टी जो वार्ता सो करतेभये ताहीं में सारीसृष्टिबौरी ह्वैजातभई कोईतो मैंही ब्रह्महौं यह मानि अपनेको मुक्तमानत भये कोई मायामेंपरि नानादेवतनकी उपासना करि अपनेको भक्त मानत भये कोई जी-

वात्मै को मानै कोई सुनिनको मानत भये सो यही ठगोरी जो मायाहै सो तीनों लोकमें लागतभई सो आगे कहैहैं १ ॥

ब्रह्महिठग्योनागसंहारी। देवनसहितठग्योत्रिपुरारी २
राजठगोरीविष्णुहि परी। चौदहभुवन केर चौधरी ३

शेषनाग को संहारि कै कहे बांधिकै मायाब्रह्मकोठग्यो ते संसारकी उत्पत्ति करन लगे नागकहे जाई जो पाठहोय तौमाया ब्रह्माको ठगिसि औ शेषनागकहँ जाइकै ठगिसि सो शेषनाग पृथ्वीको भार शीशमें धरतभये देवन सहित महादेवको ठग्यो ते संसारके संहारमेंलगे देवता अपने अपने काममेंलगे २ औचौदह भुवन को चौधरी विष्णुको करिकै ठग्यौ ते संसारको पालन करनलगे याहीरीति ते मायाते जोगुणाभिमानी रहे तिनको सब को ठग्यो ३ ॥

आदिअंतजेहिकाहुनजानी। ताकोडरतुमकाहेनमानी ४

फिरिकैसोई मायां जाको आदि अंत कोईजनवई न कियो काहते नजान्यो वाकुछवस्तुही नहीं है भ्रमही मात्रहै जेतोपदार्थ देखैहै सुनै है कहै है सोसबत्रिगुणमय है गुण न आत्मईमें है न ब्रह्महीमें है ताते येसब मिथ्याही हैं औ धोखाब्रह्म मिथ्याहै कैसे सो कहैहैं सबको निराकरण करत करत जो वा रहिजायहै ताहीकोमानोहौ किसोब्रह्महमहैं ताहूको मूलअज्ञान कहो सोजब सोऊ नरह्यो तब वहदशामें बिचारि देखो तुमहीं रहिजाउ हौ तुम्हारोई अनुमान ब्रह्महै ताते मिथ्याही है जबतुम्हीं रहिगये तब तुममेंतो मायाब्रह्म ते छूटने की सामर्थ्य है नहीं जो सामर्थ्य होती तो तौपहिलेहीते तुमको काहे को बांधिलेती याततुम डेराउ हौ कि हमकैसेकै छूटैगे सो या माया औ धोखाब्रह्म काडर तुम काहे कोमानते हो मैं जो अनिर्वचनीय हौं ताके तुम अंशहौ तुमहूं अनिर्वचनीयहौ नाहक धोखा ब्रह्म औ मायाको अनुमान कैकै नानादुःख पावतेहौ तुममायाब्रह्मको भ्रमत्यागि मेरे अनिर्वे-

चनीय नाममें लगिके मेरेपासआवो मैं रक्षा करिलेउंगो यह मालिक जे श्रीरामचन्द्र हैं ते कहैहैं ४॥

ऊउतंगतुमजातिपतंगा। यमघरकिहेहु जीवकेसंगा ५
नीमकीटजसनीमपियारा। विषको अमृतमानगँवारा ६

वह जोमाया औ धोखाब्रह्म अग्निरूप ताकी उतंग कहे बड़ी ऊंची लपटेंहैं तुमजातिके पतंग ह्वैके वामें काहे जरि जरि मरौहौ सोहेजीव नानावस्तुनको संग करि जाहीमें मनलगायमरयो औ सोई भयो याहीभांतिजनमिकै मरिकै यमकेपासघरबनायेहौ अर्थात् यासंगकाप्रभावहै जोयमकेयहांघरबनायेहै ५जैसे नीमके किरवा को नीमहीपियारलगै है जोमिष्टान्नौपावै तौ न खाय ऐसे विष रूप जो विषय ताको अमृतमानि गँवार जो जीव हैं सोखायहैं ६

विषकेसंग कौनगुणहोई। किंचितलाभ मूलगोखोई ७
विषअमृतगोएकहिसानी। जिनजानातिनविषकैमानी ८

सोयाविषरूपी विषयकेसंग कौनगुणहै क्षणभरेको सुखहै औ सबको मूल जो मेरोज्ञान सो नशायगो अनेकजन्म दुख पावन लग्यो ७ साहब कहैं हैं कि और नानादेवतनको जो नामजपिबो औ तिनहीं के लोक में जाय सुख पाइबो याते विषहै औ मेरे नामको जपिबो मेरे लोकमें जाय सुखपाइबो याते अमृतहै सो ये दूनों विष अमृत एकैमें सानिगो कैसे जैसे साहबको नाम लीन्हे मुक्तह्वैजायहै साहब के लोकमें जाय सुखपावै है ऐसे औरहू देवतनके नामलीन्हेसे मुक्तह्वैजायहै औ तिनकेलोकमें जाय सुख पावै है वास्तव एकही नाम भेदते और और कहै हैं याभांति ते जे ज्ञान राखै हैं तिनके ज्ञानको मेरे अनिर्वचनीय नामरूप धाम के जे जनैयाहैं तिनके ज्ञानको ते विषही मानै हैं ८॥

कहाभयेनलसुधबेसूझा। बिनपरचे जगमूढ़ न बूझा ९
मतिकेहीनकौनगुणकहई। लालचलागेआशारहई १०

ऐसे वेसूझ जीव जिनको नहीं सूझपरै है तेकहां शुद्धभये नहीं

भये मैं जो अनिर्वचनीय ताके पर धोखा जगमें मूढ़जीवो तुम न बूझत भये सो ऐसे मतिकेहीन जे तुम तिनके कौन गुणकहें लालचई में लागे रहे हैं काहूको द्रव्यकी आशा काहूको ब्रह्मज्ञान की आशा काहूको नाना देवतनकी आशा काहूको विषयकी आशामें फिरै है सांचजो वेदको अर्थ मैं ताको न जानत भये १० ॥

साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे मुये किबाजीढोल ॥
स्वप्नसनेहीजगभयासहिदानीरहिगाबोल ११

साहब कहै हैं किहेजीवो मुवा जोधोखा ब्रह्म नानादेवता तिनमें जो लागौगे तो मरिजाहुगे अर्थात् जनमतेमरत रहौगे या तुम्हारे मुयेकीढोलजोवेदपुराण है सो बाजै है कहै कहै हैं तब तुम्हारा इष्टदेवनको स्नेह औ सबसुख जगत्को सपन ऐसा है जायगा ये सब मुये हैं ये वेदपुराण तात्पर्य्यते डंका दैकेकहै हैं अथवा जो गुरुवा लोग ब्रह्मको नाना देवतनमें लगावै हैं सो सब संसारमेंमुये की ढोलबाजैहै मरिजाहुगे जोयामें लगौगे तो तुम्हारीसहिदानी बोलरहिजायगा बोल कहाहै जे तुम अपनेइष्टदेवनके ग्रन्थबनाय जावगे तेई रहिजायगे कि फलानेकेबनाये ग्रन्थहैं कालपाय वोहू न रहिजायगे अथवा सहिदानी बोल रहिजायगा कौन जौन मेरे रामनामको संसारमुख अर्थ करि संसारी भयेहौ सोई जगत् की सहिदानी मेरो नाम रहिजायगो ताही को फेरि संसारमुख अर्थ करि संसारी होउगे जब नाममें मोको जानोगे तबहीमुक्त होउगे ११ ॥　इति ग्यारहवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ बारहवीं रमैनी ॥

चौ० माटिकिकोटपषानकताला । सोईबनसोई रखनवाला १
सोबिन देखत जीवडेराना । ब्राह्मण विष्णु एककरिजाना २
जारिकिसानकिसानीकरई । उपजैखेत बीजनहिं परई ३
त्यागिदेहु नर झेलिकझेला । बूडे दोऊ गुरु अरु चेला ४

तीसर बूड़े पारथ भाई । जिन बन दाह्यो दवा लगाई ५
भूंकिभूंकि कूकुर मरिगयऊ । काजनएकस्यारसोंभयऊ ६
साखी ॥ मूस बिलारी एकसंग कहु कैसे रहिजाय ।
एक अचरज देखो हो संतो हस्ती सिंहहिखाय ७

माटीककोटपषानकताला । सोईबनसोइरखनेवाला १

माटीका कोट यहशरीरहै पषानकाताला है कठिन भ्रमजो-नेते माया औ धोखाब्रह्ममें लगोहै सोई भ्रमके बनको नानाबा-णीमाया ताको रक्षक सोई भ्रमही है जब भ्रम मिटै तब मायाधो-खाब्रह्म तबहीं मिटै संसारताला खुलै तबमें सर्वत्र देखै परै १ ॥

सोबनदेखतजीवडेराना।ब्राह्मणविष्णुएककरिजाना २

तौन जो भ्रमको वन नानाशास्त्र तिनके नाना मतनमें तुम सब नहिं पारपाये कि कौनमतलैकै संसार पारहोइ ये शास्त्रएक मतनहीं कहै हैं तब डेराय ब्राह्मण भये ॥ ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ एक व्यापक तुमसब विष्णुहीको मानतभये व्याप्य पदार्थ न मानतभये सो है जीवो जो व्याप्य पदार्थ न होयगो तो व्यापक कामें होयगो ताते एक मानिबो धोखई है अथवा ब्राह्मण जे हैं ब्रह्मज्ञानी औ वैष्णव जेहैं विष्णुकेदास तौने के एकै मानत भये कि दास भाव करत करत जब अंतष्करण शुद्धहोइगो तब अभे-दई भावहोइगो काहे ते कि देवै ह्वै कै देवता की पूजा करिबे को होइ है यह शास्त्र में लिखा है ताते हम विष्णुही ह्वैजाइंगे तौने दृष्टांत देइ हैं कि वहै तो वनै है वहै रखवार तो कैसे पूरपरै मा-या ब्रह्म ईश्वर ई सबमनके कल्पित हैं मनै है औ यही मनको रक्षक मानै अथवा ब्रह्मज्ञान को रक्षक मानै है सो वहीतो भ्रम है औ वही को रक्षक मानै है सो कैसे पूर परैगो २ ॥

जोरिकिसानकिसानीकरई । उपजैखेतबीजनहिंपरई ३

जैसे सिगरी सामग्री जोरि किसान किसानी करै है जौनबी-जखेतमें बोवै है सोई उपजै है तैसेहेजीवो तुमसबनाना बाणीको

विस्तारकरि नानामतनमें लाग्यो सोईफलभयो मेरो जोराम नामबीजसोतौखेतमें परवईनकियो मेरोज्ञानफल कहांतेहोय३॥

छांड़िदेहुनर भेलिकभेला। बूड़े दोऊगुरु अरुचेला४
तीसर बूड़े पारथ भाई। जिनवन दाह्यो दवालगाई ५

सो हे नरौभेलीका झेला तुमछांडिदेहु धोखा ब्रह्ममेंलागिकै तुममाया को भेलाचाहौहौ माया तुमहींका भेलैहै यानहीं जानौहौ कि धोखाब्रह्म मायासबलितहै ताही मायाके धारमें गुरु जे तुमको उपदेश किये ते औ तुमदोऊ बूडे ४ पृथुविस्तारे धातुहै अपने ज्ञान दवाग्निको विस्तार कैकै अपने सेवकनकेजे वनरूप कर्म जारि अपनेलोकनको लैगये ऐसे जेइष्ट देवता जिनकोगुरुवालोग उपदेश करैहैं सो हे भाई तीसर तेऊ मायाके धारमेंबूडे काहेते महाप्रलयमें वोऊ नहीं रहिजायँ ५॥

भोंकिभोंकिकूकुरमरिगयऊ।काजनएकस्यारसोभयऊ ६

हे नरौ जैसे कूकुर शीशाके महलमें अपनारूप देखि भोंकि भोंकि मरिजायहै तैसे तुम्हाराई अनुभव जोधोखाब्रह्म तामेंलागिभोंकि भोंकिकहै शास्त्रार्थ करिकरि जन्मत मरतरहौहौ स्यार जोवाणी ताते एकोकाज नहीं भयो अर्थात् ज्ञाने वाणीके देखायेप्रतिबिम्बदेख्यो अनुभव ब्रह्ममान्यो तौनेकेकाज न भयो जनन मरणन छूट्यो अथवा हे जीवो तुमजे कूकुरहौ ते स्यार शिवा भवानी रुद्राणी अमर में लिखैहै अथवा अहंब्रह्म अहंब्रह्म महंईश्वरः अहंभोगी अहंसिद्धः अहंवलवान् अहंसुखीइहै भोंकैहै तामें प्रमाण ॥ ईश्वरोहमहंभोगी सिद्धोहंबलवान्सुखी इत्यादिकरूप जो वाणीहै ताको देखिदेखि भोंकतेहौ कहे पढतेहौ वा स्याररूप वाणीके धरिबेको तौ भोंकि भोंकि तुमहीं मरिगये स्यारतेे कार्य न भयो अर्थात् स्याररूप जोवाणीसो तुम्हारोधरी न धरिगई वाको तात्पर्यार्थको धनजानतभयो रूपजो वाणीमोमें वृत्तितौनहीं राखौहौ अपने जानपनेको घमण्डराखोहो तातेमायातेनछूटे ६॥

साखी ॥ मूस बिलारीएकसँग कहु कैसे रहिजाय ॥
अचरजएक देखौहो सन्ताहस्तीसिंहैखाय ७

हे नरौ मूसजे तुमहौ तिनको बिलारी जोमायाहै सोकैसे न खाय एकसंग तोरहौहौ सोकैसे बिनाखाये रहिजाय सोहेसंतो एकआश्चर्य्य और देखो तुमजे जीवहौ तेतौ सिंहहौ तिनकोजो हाथी धोखाब्रह्महै सोखायलेयहै जोमोको तुमजानौ तौ तुम सिंहहीबनेहौ तुमसब धोखा मिटावन वारेहौ ७ ॥

इति बारहवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ तेरहवीं रमैनी ॥

गुरुमुख-नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा।द्रव्यकचोटकठिनकोमारा१
सोतौ शेषै जाय लुकाई । काहूके परतीति न आई २
चलेलोगसब मूलगँवाई । यमकी बाढिकाटिनहिंजाई३
आजुकाजजियकालिअकाजा।चलेलादिदिग्गंतरराजा४
सहजविचारत मूलगँवाई । लाभतेहानि होयरे भाई ५
ओछी मती चन्द्रगोमथई । त्रिकुटीसंगमस्वामीबसई ६
तबहींविष्णु कहासमुझाई । मैथुनाष्ट तुमजीतहुजाई ७
तबसनकादिकतत्त्वविचारा।ज्योंधनपावहिरंकअपारा८
भोमर्य्याद बहुतसुखलागा । यहिलेखेसबसंशयभागा ९
देखतउत्पतिलागुन बारा । एकमरै यककरै विचारा १०
मुयेगयेकी काहुन कही । झूठी आश लागिजबरही ११
साखी ॥ जरतजरत सेबाचहू काहेन करहु गोहारि ॥
विषविषयाकैखायहू रातदिवसमिलिझारि १२

नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा।द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १

साहब कहैहैं यहतो उपदेश हमकरतेहैं तुमसबको परतीति जो नहीं आई सो यहि संसारमें पृथ्वी अपतेज वायु आकाश दिशाकाल मन आत्मा को धोखा ब्रह्मई नवो द्रव्यका चोट

कठिन कौन मारयो तुमको जातेतुमयामारयोकी शरीर मेंहीहों देवतामेंहीहूंब्रह्ममेंहीहौं सो तुम भूलगये नवौ द्रव्यमेराही शरीर है ताको न जान्यों तुम तामेंप्रमाण॥ खंवायुमग्निंसलिलंमहींच ज्योतिष्मसत्त्वानिदिशोद्रुमादीन्॥ सरित्समुद्रांश्चहरेःशरीरंच तुकिंचभूतंप्रणमेदनन्यः॥ इतिभागवते॥ येआत्मनितिष्ठन्यमा रमानवेदयस्यात्माशरीरमितिश्रुतिः १॥

सोतो शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २

साहेब कहैहै हेजीवौ चित अचित जगत्रूप जोमेरो शरीरता-में तुम द्रव्य बुद्धि कियेहौ सो त्यागिदेहु यह मेरही शरीर कैकै देखौ तौ नित्य है नहींतोशेषहोतहो तब सबलुकाय जाय हैं एक एक में लीनह्वैजायहैं निषेधकरत करत तुमहीं रहिजाउहो कि मैं रहिजाउँहों तब मैं तुमको हंसरूपदै आपने धामको लैआवों हों सो या जगत् मेरही शरीरहै यापरतीतितुमको काहूकोन आई द्रव्यही बुद्धि मानतेभये २॥

चलेलोगसबमूलगँवाई। यमकी बाढ़िकाटिनहिंजाई ३

सबकोमूल जो मेरो रामनाम ताको गँवायकहेभूलिकै हेजीवो तुम सब नानापन्थ चलेहौ परन्तु यमकहे दोउविद्या अविद्यारू-प जो घोरनदी तिनकीबाढ़िजोहै धारा सो नकाटीजायगी अर्था-त् न पैरी जायगी वाहीमें बूड़िजाओगे अथवा यम जोहै काल-रूपब्रह्म ताकी बाढ़ि जो वाणी जो एकते अनेक भई है सो हे जीवो तुम्हारी काटी न काटीजायगी जो काटि पाठहोय तौयह अर्थ है विद्या अविद्याकी दुइ नदी बाढ़ी तुम्हारे हिय में सो तुम्हारी काटी न काटिजायगी अर्थात् वाही में परेरहौगे अथवा चौदहौ जे यम वर्णन करिआये हैं तिनकीबाढ़िबढ़ीहै सो तुम्हारी काटी न कटैगी बिनामोकोजाने ३॥

आजुकाजजियकाल्हिअकाजा। चलेलादिदिग्गंतरराजा४

हेजीवौ अनिर्बचनीय जोमेरोनाम ताको जोआजु समुझौतौ कार्य्य होयगो तिहारो औ जो काल्हि कहे शरीर छूटेमें समुझौ

चाहौतौ अकाजहै नाजानै कौनीयोनिमेंपरौ फिरि समुझौ धे
समुझौ सो हे जीवो तुमतो राजाहौ मन मायादिक ये तुम्ह
ही बनाये हैं सोतौ तुम भूलिगये चलेलादि कहे विद्याअविद
जे नानाकर्म तिनको अंगीकार करि अर्थात् वहै बोझाअपनेम
में धरि दिगंतरमेंजाय नानाशरीर धारण करत हौ सो भ
मोको जानि तुम सब यहदुख त्यागो यह मायारूप धोखावाल
को उपदेश दियो अब सहजसमाधिवालेन को कहैहैं ४ ॥

सहज बिचारत मूलगँवाई । लाभतेहानिहोयरेभाई

सहजकहे सोहंस अहंयह प्रतिश्वास बिचारतबिचारतसब
मूल जो मेरोनाम ताको गँवाय दियो अर्थात् भुलायदियो स
जीवौ तुमको तो धोखा ब्रह्मकी लाभभई परन्तु यह लाभते
जाननेवाला जो ज्ञान ताकी हे भाइयो हानिह्वैगई अर्थात्
प्राप्तभई ५ ॥

ओछी मतीचन्द्रगोअथई । त्रिकुटीसंगमस्वामीबसः
तबहींविष्णुकहासमुझाई । मैथुनाष्टतुमजीतहुजाइ

वीर्यकी उलटीगति करतकरत ओछीमति कहे बुद्धया
सूक्ष्म ह्वै थिरह्वैगई तब चन्द्ररूपजो वीर्यसो अथैगयो अ
उलटी गतिह्वैगई तब दूनौंनेत्रकोउलटिकै ध्यानलगाय प्रा
साथवीर्य को चढ़ाय त्रिकुटीमें जहां इड़ा पिंगला गंगा यमु
सरस्वतीको संगमहै स्वामीबसैहै जहां पहुंचौहौ ६ तब लक्ष
नारायण तुम सो कहैहैं कि अब ऊपर गैब गुफामें जायकै अ
प्रकारके मैथुन जीतिलेहु अबै एकही प्रकार जीत्योहै तब
वहां जाउहौ सो आगे कहैहैं ७ ॥

तबसनकादिकतत्त्वबिचारा । जैसेरंकधनपावअपारा
भोमर्य्यादबहुत सुखलागा । यहिलेखेसबसंशयभाग

सो जब गैबगुफामें ध्यान लग्यो जोतिमें मिल्यो तब स

कादिक कहे हे जीवौ तुम सब वाहीको सखस्तुतत्त्व विचारौहौ कैसे जैसे रंक अपारधन पायकै परमतत्त्व मानैहै ८ सो सर्य्याद ब्रह्मजो ज्योति तामें जब आत्मा को मिलायो जोतिहीहैवैगयो यहीं तक मर्य्यादहै यामान्यो तब तुमको बहुत सुख लागतभये अर्थात् वाही में मग्न होइ जातेभये सो तुम्हारे लेखे तो सब संशय भागिगई परंतु संशय नहींगई सोआगेकहैहैं ९॥

देखतउतपतिलागुनबारा। एकमरैएककरैबिचारा १०

हे जीवौ तुम यादेखतहौ कि जो समाधि उतरी तो मनादिक उत्पन्नहोत बारनहीं लगैहै तौ संसार कबै छूटयो औ येहू देखतहौ किएकै मरैहैंतिनको लायआय गैवगुफाजरिगई औफिर वही गैवगुफामें प्राणचढ़ाय मुक्तिको बिचारौहौ अर्थात् मुक्तिचाहौहौ सो हे जीवौ तुम सब बिचारौ तौ जो समाधि सुख नित्य होतो तौकैसे मिटिजातो ताते नित्य नहीं है १०॥

मुयेगयेकीकाहुनकही। झूंठीआशलागिजगरही ११

तुम्हारे गुरुवालोग मरे मरिकै कहांगये कौनी गतिको प्राप्त भये या त्रिकालकी बात तो काहू न कह्यो सो तौ तुम सबनविचारयो धोखा ब्रह्महोबेकी जो झूंठी आशा ताहीमें तुमसबलागि रहेहौ मोको न जानतभये ११॥

साखी॥ जरतजरतसेबाचहु काहेनकरहुगोहारि॥
बिषबिषयाकैखायहुरातिदिवसमिलिझारि १२

प्रथम तो हेजीवौ नानायोनि नरक गर्भवासके जठराग्नि में जरत जरत सेबचेहु अर्थात् मोसों नानाप्रार्थना करि गर्भवासते निकसे सो गर्भवास को दुःख तो तुमको भूलिगयो औजौन सोसों करार कियेरहौ सोऊ भूलिगयो विषरूपा जो विषयताही को रातिवदिन खायहु अर्थात् झारि विषयही भोगकीन्ह्यो मेरीशरण को काहेन गोहरायो जे मेरी शरणको गोहरावै हैं तेइबचैहैं सोहे जीवौ जबमेरी शरणको गोहरावौगे तबहीं बचौगे मेरी याप्रति-

ज्ञाहै जो कोई मेरी शरणको गोहरावैहै ताको मैंबचायही लेउ
गोहारिको अर्थ यहहै कि कोईहमारी रक्षाकरै सो साहबशरण
येरक्षा करतहीहैं तामेंप्रमाण ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिच
चते ।अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतम्मम् १इतिवाल्मीकीये १
इतितेरहवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौदहवीं रमैनी ॥

गुरुमुख ॥ बड़ोसोपापीआयगुमानी । पाखँडरूपछलोनरजानी
वामनरूपछल्योबलिराजा । ब्राह्मणकीनकौनसोकाज
ब्राह्मणही सबकीन्होंचोरी । ब्राह्मणही को लागीखोरी
ब्राह्मण कीन्होंग्रन्थपुराना । कैसेहुकैमोहिंमानुषजाना
यकसे ब्रह्मै पंथ चलाया । यकसेहंस गोपालहिगाय
यकसे शंभू पन्थ चलाया । यकसे भूतप्रेत मनलाय
यकसे पूजा जौनबिचारा । यकसेनिहुरिनेवाजगुजार
कोइ काहूको हटानमाना । झूठा खसमकबीरनजान
तनमनभजिरहु मेरेभक्ता । सत्यकबीर सत्यहै बक्ता
आपुहिदेवआपुहीपाती । आपुहिकुलआपुहिहैजाती
सर्वभूतसंसारनिवासी । आपुहिकुसुमआपुसुखरासी
कहते मोहिंभये युगचारी । काके आगे कहौं पुकारी
साखी ॥ सांचो कोइ न मानई झूठा के सँग जाय ।
झूठे झूठा मिलिरहा अहमक खेहाखाय

बड़ोसोपापीआयगुमानी । पाखँडरूपछलो नर जानी
वामनरूपछल्योबलिराजा । ब्राह्मणकीनकौनसोकाजा

साहब कहै हैं तैं बड़ोपापी है बड़ो गुमानी है काहे ते कि मैं
तो समझाऊंहौं तैंनहीं समझैहै सो मैंजान्यो पाखण्डरूप जो
खाब्रह्मताते हेनर तुमछलेगये और जिनको छल्यो तिनको कहै
१ वहीमाया सबलितब्रह्मवामन रूप करिकै बलिराजाकोछल

है सो या ब्राह्मण जो माया सबलित ब्रह्म सो कौन को काज कीन्हों है अर्थात् नहीं कीन्हों है २ ॥

ब्राह्मणहीसबकीन्होंचोरी । ब्राह्मणहीकोलागीखोरी ३

वही ब्रह्म सबकी चोरीकियोहै काहेते कि मायातो जड़है यह चैतन्यहै ब्रह्महीमाया सबलितह्वै मायहू को कर्ताकै मेरेसांचेज्ञानको संसारमें शकादिक पदार्थ बनाइ चोराइराख्यो है सो जब व्यापकरूप ते सबपदार्थ ब्रह्मही ठहरयो औ ब्रह्महीके संयोगतेमायाकर्ता भई है तब ब्रह्महीको खोरिलगी कि वही सब करै है ३ ॥

ब्रह्महिकीन्होग्रन्थपुराना । कैसेहुकैमोहिंमानुषजाना ४

वहीमाया सबलित जो ब्रह्महै ताहीते सब वेदपुराण निकसेहैं ताहीते नानामतभये कोई निराकार ब्रह्मही कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज इत्यादि मानतभये तुमसब बसहु जो निर्गुणकेसगुणपरे वेदपुराणको तात्पर्य ताको जानिकै ऐसो मेरो मनुष्य रूप कैसेहु कैकहे जसतसकै कोई बिरले संत जानैहैं और नहीं जानै हैं अथवा मोको सब बात के जनैया श्री रामचन्द्रको सांचमनुष्य रूप है तामें प्रमाण ॥ आत्मानंमानुषंमन्ये रामंदशरथात्मजं ॥ इति और जे नानापन्थ वेदतेनिकसे तिनको आगेकहैं अर्थ दशन्तिमयानितिदशःगरुड़ःसरथोयस्यसःदशरथः विष्णुःसएवंआत्मजोयस्यसःदशरथात्मजःतं ४ ॥

यकसेब्रह्महिपन्थचलाया । यकसेहंसगोपालहिगाया ५

एकसे कहेएकजो माया सबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादनकरत ब्रह्मै नाना शास्त्र के नानापन्थ चलावतभये औ एकसेकहे एक जो माया सबलित ब्रह्मताहीको विचारकरत हंसजो जीवसो गोपालहि गावतभये अर्थात् गो जो इंद्री ताको पालनवारो जो मन ताहीको गावतभये अर्थात् मनमुखी पन्थचलावतभये औब्रह्माने वेदकह्यो है वेदते सबमत निकसे हैं जीवनको जोजुदेकरिकै कह्यो

सो मेरे सन्मुखकोजो अर्थ है ताको छपाय दीन्हों वेद अर्थ नाना देवतन यज्ञादि में लगाय दीन्हे ५ ॥

यकसे शम्भूपन्थ चलाया । यकसे भूत प्रेत मनलाया६
यकसेपूजाजीनबिचारा । यकसेनिहुरिनेवाजगुजारा ७

एकसेकहे एकजो मायासबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादनकरत वेदको अर्थ बदलिकै महादेवजीको तामसमत चलावत भये औ एकसे कहे एकजो माया सबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत जीवनको मन भूत प्रेत देव सब लगाय देतेभये अर्थात्माया में अरुझाय देतेभये ६ एकसे कहे एकजो मायासबलित ब्रह्म ताके ज्ञानहेतु निहुरिकै मुसल्मान लोग नेवाज गुजारतभये ७ ॥

कोउकाहूकोहटानमाना । झूठाखसमकबीरनेजाना ८
तन मन भजिरहुमेरेभक्ता । सत्य कबीर सत्यहैबक्ता ९

कोऊकाहूको हटको नमानतभये झूठाजो धोखा ब्रह्मताही को दृढ करिकै कायाके बीर जे जीवते नाना देवतनसोंते खसम जानतभयेकोई महीं ब्रह्महौं या मानतभये खसमजो परमपुरुष मैंहौं ताको तुमसब न जानत भये८तनमनते मोहींमेंलगो तबहीं तिहारो उबारहोइगो सो हे कबीर जीवो एक तो तुम सत्यहौ औ एक जो तिहारे समुझावनवालो बक्ता मैं सो सत्यहौं और सवझूठहैं वही ब्रह्मचारोओर ह्वै गयो है यह द्वै मत देखायो तामें प्रमाण सत्यं आत्मा सत्य जीवो सत्यंभिदः ९ ॥

आपुहिदेवआपुहीपाती । आपुहिकुलआपुहिहैजाती १०
सर्बभूतसंसारनिवासी। आपुहिखसमआपुसुखरासी ११
कहतेमोहिंभयेयुगचारी । काकेआगेकहौंपुकारी १२

औवहीमाया सबलित ब्रह्मआपुही देवताह्वैगयो है आपुही फूलपाती हैं आपुही पूजाकरनवालो है आपही कुलजातिहै १० सो याभांतितेवहीब्रह्म सर्बभूतमें निवासीह्वैकै आपुहीखसमह्वै

रह्यो है औजामें पुरुषके सुखको सांचहै ऐसीसुखराशी नारीह्वै रह्योहै ११ सो यह बातचारोयुग मोंको कहतभयो काके भागे पुकारिकै कहों कोई समुझै या धोखा ब्रह्मको नहींदेखोपरे १२॥

साखी ॥ सांचेकोइनमानई झूठाकेसँगजाय ॥
झूठेझूठामिलिरहा अहमक खेहाखाय १३

सांचोमैं सांचेतुम जीव यहमततो कोई नहींमानैहै झूठाजो वहब्रह्म ताकेसंग सबजायहैं अर्थात् वहीको सर्वस्व मानैहैं सोझूठा वहब्रह्म औ झूठाज्ञानवाला जोजीव सोमिलिकै अहमकखेहा खायहै अर्थात् मरयो तब राखखायहै जनन मरण नहीं छूटै है १३ ॥ इतिचौदहवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथपंद्रहवींरमैनी ॥

चौ० उनई बदरिया परिगैसांझा। अगुवा भूले बनखँड मांझा१
पियअनतै धनअनतै रहई। चौपरि कामरि माथे गहई२

साखी ॥ फुलवाभार न लैसकै कहैसखिन सों रोइ ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी त्यों त्यों भारी होइ ३

उनईबदरियापरिगैसांझा। अगुवाभूलेबनखँडमांझा १

भ्रमकी बदरी ओनई परिगै साँझा कहेजगत्में अँधियारीह्वैगई साहबको ज्ञानरूपी रविमूंदिगयो न समुझि परत भयो तब बनखंड जो चारिउ वेद तामें अगुवा जे ब्रह्मादिक सब मुनि ते भूलिगये कोई भैरव कोई भवानीको कोईगणेशको इत्यादि नानादेवतनकी उपासनाकरतेभये औ शास्त्रहुमें नानामत होतभये कोई कर्मको कोई ब्रह्मको कोई प्रकृतिपुरुषको कोई ईश्वरको कोई कालको कोईशब्दको कोई ब्रह्मांडमें ज्योतिको प्रधानमानतभये औ तिनहूंमें एकएक मतनमें अनेक मतहोतेभये औमुसलमानहूंके मजहबमें तिहत्तरि फिरके होत भये एकमें तो मुक्ति होती है औरनमें नहींहोती सो जो जौने फिरकेमें पराहै सो

ताहीको मुक्तिवाला मानेहै सो या एक सिद्धांत ब्रह्माके पुत्र वेदन ते पूछ्यो वेदब्रह्माते पूछ्यो तबब्रह्मै संभ्रम पूर्वक सबको शेषके पास पठयो सो शेषजी जौन वेदको तात्पर्य्य सिद्धांत सबको समुझायो है सो आदि मंगलमें लिखि आयेहैं औमेरे बनायेरामायणके अंतहूमें लिख्योहै सो या हेतुते कबीरजी कहैहैंकी अगुवा जेब्रह्मा तिनहीको भ्रमभयोहै १॥

पियअनतै धनअनतैरहई। चौपरिकामरिमाथेगहई २

पियतो साहबहै औपियके मिलनवारो जोजीवनको ज्ञानसोई धनहै सो दोऊ अनतही रहै हैं कोई बिरले संतपावै हैं चौपरिजो चारों वेद तिनकी कामरि ऐसी भारी शीशपर धरे अपने अपने मनको अर्थ करै हैं वेदको सिद्धांत नहीं पावै हैं अथवा चौपरि जो चारो खानिके जीव ते कर्मरूप जोहै कामरिताको कांधेमेंधरेहैं २॥

साखी ॥ फुलवाभारनलैसके कहैसखिनसोंरोय ॥
ज्योंज्योंभीजैकामरी त्योंत्योंभारीहोय ३

जीवजेहैं ते अनुहैं अल्प बुद्धि हैं कर्मकांडरूप जो फूल ताही को भार नहीं सहिसकैं अर्थात् सोई नहीं समुझिपरै ब्रह्मबिचार कैसे समुझिपरै सो वेदरूप कामरी कांधेधरे जब ब्रह्मबिचारकरनलगे निषेध करतकरत तब विचारमें ब्रह्म न आयो तबसखी जे जीवहैं तिनते रोइकैकहतेहैं नेति नेति यतनै नहीं है अबैं और कुछहै नहीं समुझिपरै यही रोइबोहै सो ज्योंज्यों वेदरूप कामरीभीजैहै कहे विचारत जायहैं त्यों त्यों भारीहोतजायहै अर्थात् गहिरो अर्थ होतजायहै सो कैसे समुझिपरैवातो धोखा ब्रह्मकुछ वस्तुही नहींहै ३॥ इतिपंद्रहवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथ सोरहवीं रमैनी॥

चलत चलत अतिचरण पिराने। हारिपरे तहँअतिखिसिआने १
गण गन्धर्व मुनि अंत न पाया। हरि अलोप जग धंधे लाया २

गहनी बंधन बांध न सूझा। थाकि परे तब कछू न बूझा ३
भूलि परे तब अधिक डेराई। रजनी अंध कूप ह्वै जाई ४
माया मोह उहां भरि भूरी। दादुर दामिनि पवनहु पूरी ५
वरसै तपै अखण्डित धारा। रैनि भयावनि कछु न अहारा ६
साखी॥ सबैलोग जहँडाइया औ अंधा सबै भुलान॥
कहाकोइ नहिं मानही सब एकैसाह समान ७

चलतचलतअतिचरणपिराने।हारिपरेतहँअतिखिसियाने १

नाना मतमेंलगे जीव तिनकेचरण ब्रह्मके खोजहीमें पिरान लगे अर्थात् थकिआये मति नहीं पहुंचै एकहू शास्त्रके विचारके पार न गये अतिरेसयान पाठ होय तौ यह अर्थ कि बड़ेसयानो रहे तेऊ हारिगे तामें प्रमाण॥ इन्द्रादयोपियस्यांतंनययुःशब्दवारिधेः। प्रक्रियांतस्यकृत्स्नस्यक्षमोवक्तुंनरःकथम्॥ तबखिसिआइकै यह कहते भये १॥

गणगंधर्वमुनिअंतनपाया। हरिअलोपजगधंधेलाया २

जौने ब्रह्मको अंत गन्धर्व औ मुनिनके गण नहींपायो ताको हमकैसे जानिसकैं जो ब्रह्मकोसाकारकहैहैं तौ मध्यम प्रमाणमें आयजाय हैं अनित्य होयहै औजो ब्रह्मको निराकारकहैहैं तौजगत्की करतृत्व सिद्धांत न भयो कबीरजी कहै हैं कि कैसेहोयगी सन्देहमें परे जैसे हरिहैं तैसे बिनासतगुरुके बताये तोजानतही नहीं है यहिते हरि अलोप कहे हरि अप्रकट भये तिनके बिना जाने जगत्के धन्धेमें जीव सब अपनो मन लगाय राख्यो २॥

गहनी बंधन बांध नसूझा। थाकिपरेतबकछूनबूझा ३

गहनी बंधनजोमाया सबलितब्रह्मजौन बांधिकै संसारमें डारि देनवारो ऐसोजो ब्रह्मताको बांधजीवनको न सूझि परयोकौन बांध कि जो कोई सोहमिंलगैहै तौमैं बांधिकै संसारमें डारिदेउं हौं या माया सबलित ब्रह्मको बांधना सूझिपरयो जोकहोकाहेते बांधबांध्यो है तो जगत् की उत्पत्ति वही ब्रह्मते होयहै वा

ब्रह्म जगत्को रहिबोई चाहैहै याहीते जोकोई वामेंलगैहै ताको साहब को ज्ञान भुलायकै संसारहीमें राखैहै सो कबीरजी कहै हैं कि जब वही संसारमें थकिपरे तब कछू न बूझतभये अर्थात् अनेक मतनको बिचारैहै पै सिद्धांत न पावतभये साहबको ज्ञान भूलि गये ३ ॥

भूलिपरे तब अधिक डेराई । रजनी अंधकूपह्वैजाई ४
मायामोहउहांभरि भूरी । दादुर दामिनिपवनहुपूरी ५
बरसैतपैअखंडितधारा । रैनिभयावनि कछुनअहारा ६

सो जब साहबको ज्ञानभूले संसारमें परे तबअधिकडरआवत भयो काहेते कि मूला अज्ञानरूप रजनीकी बड़ी अँधियारी होत भई कछून सूझिपरयो काहेते कि अहंब्रह्मास्मिमानिकै लीनह्वै कै वही संसारमें परयो जहां माया मोह भूरिभरेहैं तब तो माया कारणरूपा रहीहै अबकार्यरूपा भई बहुतमोहादिकहोतभयेतामें परे जैसेदादुर बोलैहैं अर्थ कछू नहीं है तैसे उनको वेदकोपढ़िबो है अर्थनहीं जानैहैं जोकाहूकेकहेकछूज्ञानभयो तबदामिनी कैसी दमक ह्वैजाय है कछु हृदयमें नहीं ठहराय है औ पवनहु पूरी जो कह्यो सो पवन चढ़ायकै योगकरिये तो श्रम करैहै कि कोई खेचरी आदिक मुद्राकरि अखंडधारा अमृतबर्षाइ नागिनी उठाइ समाधिकरै है औ कोईतपै अखंडित धाराकहे पांचहजार कुंभक करिकै ज्वाला उठाइ तौनेते नागिनी को जगाय प्राणचढ़ायस-माधिकरैहै तहौंभयावनिरैनिजो मूलाअज्ञानकी अँधियारी ताही मेंपरयो अर्थात् जब तक ज्योति देख्यो तबतक तो उजियारी जब ज्योतिमें लीन ह्वैगयो तब सुषुप्ति ऐसे में परयो रह्यो यही भयावनि रैनिहै भयावनिको हेतु यह है कि प्राणके उतरिबेकी अवधि बनी है ॥

साखी ॥ सबैलोगजहँडाइया औ अन्धासभैभुलान ॥
कहाकोइनाहिंमानहीसबएकैमाहँसमान ७

औ जे माया ते सभयरहे डेरातेरहे ते लोग जहँ डाइया कहे वहकिकै औरई और मतनमें लगिगये औ जे अज्ञान आंधरेरहैंते संसारहीमें परे संसार छूटिवेको उपावैना किये भूलिही गये सो कबीरजी कहैहैं कि मेरो कहा कोई नहीं मानैहै सब जे जीव हैं ते एक जो मायाब्रह्म ताहीमें सब समातेभये इत्यर्थः औसाहब को विनाजाने ब्रह्महूमें लीनह्वै संसारहीमें आवैहैं वाकोप्रमाण पीछे लिखिआये हैं इति ७॥ सोलहवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ सत्रहवीं रमैनी॥

चौ०जसजिवआपुमिलैअसकोई। बहुतधर्मसुखहृदयाहोई १
जासों बातरामकी कही। प्रीतिन काहूसों निर्वही २
एकैभावसकलजगदेखी। बाहेरपरैसो होयविवेकी ३
विषयमोहकेफंदछोड़ाई। जहांजायतहँकाटुकसाई ४
आय कसाई छूरी हाथा। कैसहु आवै काटोंमाथा ५
मानुष बड़े बड़े ह्वै आये। एकै पण्डित सबै पढ़ाये ६
पढ़नापढ़हुधरहुजिनगोई। नहिंतोनिश्चयजाहुविगोई ७
साखी॥ सुमिरन करहुसुरामको औ छांड़हु दुखकी आस॥
तरऊपर धरिचापिहैं जसकोल्हू कोटि पचास ८

जसजिवआपुमिलैअसकोई। बहुतधर्मसुखहृदयाहोई १
जासोंबात रामकीकही। प्रीतिनकाहूसों निर्वही २

जैसो आपु होइ तैसो जबताको मिलै तबहीं धर्म बढ़ैहै औ हृदयमेंबड़ो सुखहोयहै तामें प्रमाण गोसाईंजी को॥ दोहा॥ इष्टमिलै अरु मनमिलै मिलै भजनरसरीति॥ तुलसिदास तासों मिलै हठिकै उपजै प्रीति १ सोऔरीभांति सुखनहींहोयहै ? काहेते कि जासों कहे जौने जीवनसों रामकी बात मैं कहौंहौं कितैं रामचन्द्रकोहै तिनको अपनोसाहब मानुनाना ईश्वर जो तैंने मानेहैं सोये सब मायाके जालमें परेहैं ताको कहा उबारैंगे

सो कबीरजी कहैहैं कि या मेरी बातपै काहू जीवनकी प्रीति न निबहतभई अर्थात् जो मेरीबात प्रीतितेसुनै साहब को जानै अपनेअपने मतमेंमारूढ़ह्वै बादसोकरैहैबस्तुनहींग्रहणकरैहै २॥

एकैभावसकलजग देखी । बाहेरपरैसो होय बिवेकी ३
बिषयमोहकेफंद छोड़ाई । जहांजायतहँकाटुकसाई ४

एकैभाव सकल जगदेखीकहे जे एकब्रह्मैभाव जगत्कोदेखैहैं तेहिते बाहेर अपनेको दासमानि साहब रूपते जगत्को जानैहैं सोई बिवेकी होयहैं सो ऐसे बिवेकिनके पास तो नहींजायहै ३ नाना बिषयके मोहके फंद छोड़ायकै अर्थात् संसारते बैराग्य करिकैअधिकारिहूह्वैकै जहांजहांजायहै तहांतहां कसाईजे गुरुवा लोग तेगलाकाटै हैं अर्थात् साहबको ज्ञानकाटिधोखा ब्रह्ममेंलगाय देयँहैं सो याकोगला काट्यो गलाकाटे फेरिजन्महोयहै याते गुरुवालोगनको कसाईकह्यो ऐसे याहूको जनन मरण होय है व्यंग्य यहहै कि जे जीव साहबको त्यागि औरै औरमें लगै है ते पशुहैं उनको ऐसही गलाकाट्यो जायहै ये कसाई शरीर को गलाकाटैहैं यहौ द्वैत ज्ञानवाले गुरुवालोग जीवनको गलाकाटैं हैं जो संसारमें रहतो तो कबहूं दैवयोगते साधु संगभयो उद्धार हू होतो सो तौने धोखा ब्रह्ममें लगायदियो जहांते उद्धार नहीं है वहां काहेको कोई साहबको बतावैंगे ४ ॥

आय कसाई छूरीहाथा । कैसेहु आवै काटों माथा ५
मानुष बड़े बड़े ह्वैआये । एकै पंडित सबै पढ़ाये ६

कसाई जेगुरुवा लोग तिनकी बनाई पोथी सोईछूरी हाथमें लीन्हे यह ताकेहैं कि कैसेहुके कोन्यो मतको आवै तो ठगि कै अपनेमतमेंकैलेइँ माथकाटिलेइँ कहेमूड़िडारैं चेलाकरिलेयं सो साहबको छोड़ाइ औरे औरमें लगावनवारोहै सो गुरू कसाईहै ५ मनुष्य जे बड़े बड़े ज्ञानीलोगहैं ते यही पढ़ावतभये कि एक

वही ब्रह्महै जीवनहींहै औकोई यो पढ़ाया कि एकजीवही सांच है और सब असांचहै ६ ॥

पढ़नापढ़हुधरहुजनिगोई । नहिंतौनिश्चयजाउबिगोई ७

जौनपढ़ना तुम गुरुवा लोगन तेपढ़्योहै सोअबजनिगोइराखो औ जो गोइराखोगे तौ कुमतिहीमें परेरहौगे जो न गोइ राखोगे तो संतलोग समुझायकै भ्रम काटि डारैंगे कैसेकि जो एक ब्रह्म होतो तौ भ्रम कौन को होतो औ जोएक जीवही साहब हो तो तौ बंधिकैसे जातो सोमायातो बांधनवालीहै औजीवबंधनधारीहै औ साहब छुड़ावनवालो है यह बिचारि साहबको जानो साहब छुड़ायलेइँगनहीं निश्चय बिगोइ जाहुगे अर्थात् कुमतिमें लागि कै बिगरिजाहुगे ७॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसुरामकोऔछांड़हुदुखकीआस ॥
तर ऊपरधरिचापिहै जसकोल्हूकोटिपचास ८

सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरनकरौ धोखा ब्रह्म औ माया इनकी दुखरूप जो आश सोछांड़ोजोनाछांड़ोगेतौ तरे तो मायारूप कोल्हू ऊपर ब्रह्मरूपजाटमें तुमको पेरिडारैगोपचास कोटिकोल्हूकह्यो सोअगणित ब्रह्मांडहैं तामेंडारिकै८ ॥

इति सत्रहवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ अठारहवीं रमैनी ॥

चौ० अद्भुत पंथ बरणिनहिं जाई । भूले रामभूलिदुनिआई १
जोचेतौ तौ चेतुरेभाई । नहिंतो जियजरिमूलैजाई २
शब्द न मानै कथै बिज्ञाना । ताते यम दीन्हयो है थाना ३
संशय साउज बसै शरीरा । तेखायल अनबेधलहीरा ४
साखी ॥ संशय साउज देहमें संगहि खेल जुआरि ॥
ऐसाघायल बापुराजीवन मारै झारि ५

अद्भुत पंथबरणि नहिं जाई । भूलेरामभूलिदुनिआई १

जोचेतौ तौ चेतुरे भाई । नहिंतौजियजरिमूलैजाई २

अद्भुत पंथ जो ब्रह्मताको वर्णतकोई ने अंतनहींपायो रामजे साहबहैं तिनके भूलेकहे बिना जानेते सब दुनिया धोखा ब्रह्म मायामें भूलिगई १ हेभाइउ चेतौतौ चेतौनहीं तौ मायाब्रह्मकी आगिमें जरिकै मूलतेजाउगे यहकबीरजीकहैहैं नहींतौ यमजीव लैजाइँ जोयहपाठहोयतौ यहअर्थहै कि चेतौतौ चेतौनहींतौ यम लैजायके नरकमें डारिदइँगे २ ॥

शब्द न मानैकथै बिज्ञाना । तातेयमदीन्ह्योहैथाना ३
संशय साउज बसै शरीरा । तेखायलअनबेधलहीरा ४

बिज्ञानहूको सार जाते सब शब्द निकसेहैं ऐसो जोरामनाम ताको तौ मानै नहीं है और और मतिमें लगिकै बिज्ञानकथै है ताते यमराज जो जैसो कर्मकरै है ताको तैसो नरक स्वर्गकोथान देयहैं ३ संशयरूपी साउज जो मनसो शरीररूपी बनमें बसिकै अनबेधलकहे जाकोयश रामनाम में नहीं है ऐसो जो हीराजीव ताको खायगयो कौनरीतिते खायो सो आगे कहैहैं ४ ॥

साखी ॥ संशयसाउजदेहमें संगहिखेलैजुआरि ॥
ऐसाघायलबापुरा जीवनमारैभारि ५

जैसे शिकारी बाघको मारैहै जो बाघ घायलभयो तौ शिकारीको धरिडारैहै तैसे संशय साउज जोव्याघ्ररूप मनसो देहरूपी बनमें बसैहै ताके संग जीव जुआं खेलैहै जब मनोबासनाक्षयकी उपायकियो तब वही वाको घायल ह्वैबोहै सो व्याघ्ररूपजोमन है सो घायलह्वैकै बापुरे जे सबजीवहैं तिनको भारादैकै मारैहै अर्थात् सबको वही माया धोखा ब्रह्ममें लगायदियो औ जो यह पाठहोय कि ऐसा घायल बापुरा सब जीवनमारै भारि तौ यह अर्थहै कि ऐसा घायलकहे घाती जो मनसो बापुरे जीवनकोभारादैकैमारैहै जननमरणदेइहै ५॥इतिअठारहवींरमैनीसमाप्तम् ॥

अथ उन्नीसवीं रमैनी ॥

चौ० अनहदअनुभव की करिआशा । देखौयहविपरीतितमाशा १
यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहैशून्यतहांचलिजाई २
शून्यहि बांछा शून्यहि गयऊ । हाथाछोड़ि बेहाथाभयऊ ३
संशय साउज सब संसारा । कालअहेरी सांझसकारा ४
साखी ॥ सुमिरन करहु सो राम को काल गहे है केश ॥
ना जानौं कब मारि है क्या घर क्या परदेश ५

अनहदअनुभवकीकरिआशा।देखौयहविपरीतितमाशा १

अनहद शब्द सुनतसुनत जौने ब्रह्मको अनुभव होइहै ताको तू बिचारै है कि ब्रह्म मैंहीहौं या नहीं जानैहै कि अनहद मेरे शरीरही को है वह ब्रह्म मेरही अनुभव है यह बड़ो तमाशा है ताही की आशा करै है यह बड़ी बिपरीति है १ ॥

यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहै शून्यतहां चलिजाई २
शून्यहिबांछाशून्यहिगयऊ । हाथाछोड़िबेहाथाभयऊ ३

सो हे भाइयो हेजीवो यहतमाशा तुमहूं अनेकन जन्मते देखतैआयेहो परन्तु जहां शून्यहै तहां जाइकै मुक्ति ह्वैबो चाहौ हौ तुम या नहीं बिचारौहौ कि शून्य जो धोखा ब्रह्म तामें जो हम जाइँगे तौ हमारी मुक्तिकी बांछहु शून्य ह्वैजायगी अर्थात्मुक्ति न होयगी सो या बड़ो आश्चर्य्य है आपनेते झूठेमें बांधिकै साहब को हाथ छोड़िकै बेहाथ भयऊ कहे धोखा ब्रह्मके हाथमेंह्वैजाउ हौ अथवा कबीरजी छूट जीवनते कहैहैं हे भाइयो देखो तो तमाशा ये जीव जहां शून्य है धोखाहै तहां सब चलेजायँ हैं जौने ज्ञान में साहब भरे पूरे हैं तहां नहीं जायँ हैं ३ ॥

संशयसाउजसबसंसारा । कालअहेरी सांझसकारा ४

संशय कहे मनरूप जो साउज ताही को सकलकहे सुरतिया संसार ह्वैरह्योहै अर्थात् मनरूप जीव ह्वै रह्योहै संकल्पविकल्प सबकैरहेहैं सो अहेरी जोकाल शिकारी सो सांझसकारकहे काहू

को जन्मतमें मारै है आदि अन्त कहे मध्य को काल है काहूको आयुर्दाय के अन्त में मारै है यगवो ४ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसो रामको कालगहेहै केश ॥
नाजानौंकबमारिहै क्या घर क्यापरदेश५

सो कबीरजी कहैहैं कि परमपुरुष जे श्री रामचन्द्रहैं तिनको सुमिरण करहु शिकारी जो काल है सो केश करमें गहे है यानहीं जानौहौ धौं कबमारै या घरमें या परदेशमें अर्थात् साहबके बिना स्मरण घरमें रहोगे तौ न बचौगे जो बनमेंजाउगे तो न बचौगे५॥

इति उन्नीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

———०———

अथ बीसवीं रमैनी ॥

चौ० अबकहुरामनामअविनासी।हरितजिजियराकतहुंनजासी१
जहांजाहु तहँहोहु पतंगा। अबजनिजरहुसमुझिबिषसंगा २
रामनामलौलायसोलीन्हा । भृङ्गीकीटसमुझिमनदीन्हा ३
भोअतिगरुवा दुखकै भारी। करुजिययतनसोदेखुबिचारी ४
मनकीबातहैलहरिबिकारा । त्वहिंनहिं सूझै वार न पारा५

साखी ॥ इच्छाको भवसागरै वोहित राम अधार ॥
कहैंकबिरहरिशरणगहुगोबच्छखुरबिस्तार ६

अबकहुरामनामअविनासी। हरितजिजियरा कतहुंनजासी १

विनाशी जो रामनाम ताकोअबहूं कहु हरिकहे भक्तन के आरतिहरणहारे जे साहब हैं तिनको छोडि हेजीव औरे मतनमें कतहुं नजा अर्थात् चितचित्तते बिग्रहकरि सर्वत्रसाहिबैकोदेखु १॥

जहांजाहुतहँहोहुपतंगा।अबजनिजरहुसमुझिविषसंगा २

जैनेन मतमें जाहुहौ तहां पतंगहीसे जरिजाउहौ सो संगजो विषाग्नि ताको समुझि अबजनि जरहु अर्थात् जो इनको संगकरहुगे तौ मन इन्द्रियादिकन को विषय जो सिद्धांत कीन्हेहै ताही

में तुमहूंको लगाइ देयँगे तौसंसारही में परेरहोगे ताते इनको संगत्यागि रामनाम जपौ जोकहौ कौनीरीतिते जपें रामनामतो मन वचनके परेहै सो आगे कहैहैं २ ॥

रामनामलौलायसोलीन्हाँ।भृंगीकीटसमुझिमनदीन्हाँ३

रामनाममें सो लौ लगाय लीनहै कौनजौन भृङ्गी औ कीट की ऐसीगति समुझिकै अपने मनदीन्हहै अर्थात् जैसे कीटभृंगी को देखत देखत वाको शब्द सुनत सुनत वाको डेरात डेरातत-दाकारकैह्वै भृंगीहीरूप ह्वैजाय है तैसे रामनाम जपतजाइ है वाको सुनतजाइहै जगत्मुख अर्थते डेरातजायहै औ साहबमुख अर्थमें साहबको रूप औ अपनोहंसस्वरूप विचारत निजहंसरूप में तदाकारह्वैजायहै मनादिक मिटिजायहै शुद्ध रहिजायहै सो अपनेरूप पायजायहै तब मन वचनके परे जो रामनाम सोआ-पनेते अस्फूर्तिहोइ है तामें लौलगायकै जैसे कीटभृंगी बनिकै औरे कीटको भृंगी बनावैहै तैसे यहौजीव उपदेश करिकै औरेहू को हंसरूप बनावैहै सो जो भृंगीको शब्द कीट न ग्रहण करै तौ कीटही रहिजाय ऐसे जो रामनामको जीव नाग्रहणकरै तौ भा-सारही रहिजायहै तामें प्रमाण अनुराग सागरको ॥ ज्योंभृंगीगे कीटकेपासा। कीटहिगहि गुरगमि परगासा ॥ विरला कीटहोय सुखदाई। प्रथम अवाज गहै चितलाई ॥ कोइ दूजे कोइतीजे मानै। तन मनरहित शब्दाहित जानै ॥ तबलैगे भृंगी निजगेहा। स्वाती दैकर निजसमदेहा ३ ॥

भोअतिगुरुवादुखकैभारी।करुजिययतनजोदेखुविचारी४
मनकीबातहैलहरिविकारा। त्वहिंनहिंसूझैवारनपारा ५

यह संसार भारी दुःखकरिकै अति गरुवा बोझाहै जीवतूवि-चारि देखु जो तोको बोझालगै तौ रामनामको यतन करु४मन की बातकहै मनते गुरुवन को धोखा ब्रह्म तेहिते उठी जो

काररूप लहरिमाया ताको कौनो मनकहिकै तोको वारपारनहीं सूझै है ५ ॥

साखी ॥ इच्छाकेभवसागरै बोहितरामअधार ॥
कहैकबीरहरिशरणगहुगोबछखुरबिस्तार ६

यह जो समष्टि जीवको इच्छारूप भवसागरतामें बोहित जो नौका रामनाम सोई आधार है और नहींहै सो कबीरजी कहैहैं हरि जे साहेबहैं तिनकी शरणगहु यह भवसागर गऊके बछवाके खुरके सम उतरिजायगो यामेंसंदेहनहीं है ६ ॥ इतिबीसवींरमैनी समाप्तम् ॥

अथ इक्कीसवीं रमैनी ॥

चौ० बहुतदुखैहै दुखकी खानी । तबबचिहौजबरामहिजानी १
रामहिजानियुक्तिजोचलई। युक्तिहिते फंदा नहिं परई २
युक्तिहि युक्तिचलतसंसारा । निश्चयकहानमानुहमारा ३
कनककामिनी घोरपटोरा। संपतिबहुत रहे दिनथोरा ४
थोरेहि संपतिगो बौराई । धरमराय की खबरिनपाई ५
देखित्रासमुखगोकुम्हिलाई । अमृत धोखे गोबिष खाई ६

साखी ॥ मैं सिरजों मैं मारहूं मैं जारौं मैं खाउँ ।
जलथलमैंहींरमिरह्योंमोरनिरंजननाउँ ७

बहुतदुखैहैदुखकीखानी। तबबचिहौजबरामहिजानी १
रामहिजानियुक्तिजो चलई। युक्तिहितेफंदानहिं परई २
युक्तिहियुक्तिचलतसंसारा। निश्चयकहानमानुहमारा३

यह दुःखकी खानिजो संसारसो बहुतदुःखहै अर्थात् बहुतदुःख देइहैतुम तबहीं यातेबचौगे जब सबकेमालिक रक्षक जेश्रीरामचन्द्रतिनकोजानौगे आनउपाय न बचौगे १ काहेते जेश्रीरामचन्द्र को जानिकै युक्ति सहित चलैहैं तेई वही युक्तिहीते संसारके फंदा

में नहीं परैहैं सो कबीरजीकहैहैं सो युक्ति आगे लिखेंगे २ यासंसार केवल अपनी अपनी युक्तिहीते चलै है कबीरजी कहै हैं मैं जो निश्चय बात कहौहौं कि रामनामहीते तेरो उद्धार होयगो याको युक्तिकोई नहीं मानैहै अपनेही मनकी युक्ति चलैहै ३ ॥

कनककामिनी घोरपटोरा। संपतिबहुत रहैदिनथोरा ४
थोरेहि संपति गो बौराई। धर्मराजकीखबरि न पाई ५

कनक जोहै कामिनी जोहै घोडेजेहैं हाथी जेहैं पटंबरजेहैं ये संपति तो बहुत हैं परंतु इनके भोग करिबेको दिनतो थोरही है अर्थात् आयुर्दाय थोरीहै सोतौ भोगमें बितावै है साहबको कब जानैगो ४ सोतैंतो थोरही संपतिमें बौराय गयो धर्मराज की खबरि तैं नहीं पाई कि जब मोको धरिलैजायँगे तब सारी संपति हियईं परीरहि जायगी तब कौन भोग करैगो यहबिचारि साहब को जानो ५॥

देखित्रासमुखगोकुँम्हिलाई। अमृतधोखेगोबिषखाई ६

औ दैवयोग जो कदाचित् तुम्हैंधर्मराजको त्रासदेखिकै मुखजब कुँम्हिलायगयो कहे संसारते बैराग्य भई तब गुरुवालोगन के निकटजाइ अपनो स्वरूप समुझ्यौ कि मैं अमृतहौं मन मायादिक ते भिन्नहौं सो बाततो तू सांचबिचारी ऐसहीहै परन्तु भगवत अंशत्व तेरे स्वरूपमें है सो गुरुवालोग नहींबतायो औरहीमें लगाय दियो सो अपनो स्वरूप समुझबो जो अमृत ताहीके धोखे ते अहं ब्रह्मास्मि बिषखायगयो भगवतदास आपने को नमान्यो साहबको न जान्यो सर्वत्र मैंहींहौं या मानि कहनलाग्यो ६ ॥

साखी ॥ मैंसिरजौं मैंमारहूं मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जलथल मैंहींरमिरह्यौं मोरनिरंजननाउँ ७

औ मैंहीं जगत्को सिरजौंहौं मही मारौंहौं महींजारौंहौं जौने अग्नि ते जारौंहौं ताको महीं खाउँ हौं औ जल थलमें मैंहींरमि

रह्योंहौं मोर निरंजन नाउँहै कैवल्य महींहौं औ अंजन जोमाया ताते सबलितह्वैके मैंहीं सबकरौंहौं ७॥

इति इक्कीसवीं रमैनी समाप्तम्॥

बाईसवीं रमैनी॥

चौ० अलखनिरंजन लखैनकोई। जेहिके बँधे बँधा सबकोई १
जेहि झूठो सो बँधोअयाना। झूठीबात सांच कै माना २
धंधा बँधा कीन्ह व्यवहारा। कर्म बिवर्जितबसै निनारा ३
षटआश्रम षटदरशनकीन्हा। षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारि वृक्ष छाशाख बखानै। विद्याअगणित गनैन जानै ५
औरौ आगम करै विचारा। तेहिनहिंसूझै वार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजे भूता। दान पुण्यऔ किये बहूता ७

साखी॥ मंदिर तो है नेहको मति कोइ पैठै धाइ॥
जोकोइपैठै धायकै बिन शिर सेंतीजाइ ८

अलखनिरंजनलखैनकोई। जेहिकेबँधे बँधासबकोई १
जेहिझूठो सो बँधो अयाना। झूठी बातसांचकै माना २
धंधाबँधा कीन्ह व्यवहारा। कर्मबिवर्जितबसैनिनारा ३

कबीरजी कहैहैं कि हे जीव तूतो आपनेको निरंजन मान्यो सो निरंजन तो अलखहै वाको कोईनहीं लखैहै जाके बँधेतेकहे मायामें सब कोई बँधेहैं १ हे अजानौ जौने झूठे सो तुमबँधोहौ सो झूठही है तुम सांच मानोहौ सो नमानौ २ धन्धा जोसाहब की सेवा ताको बँधा कहे बांधनवारे तौनेको व्यवहार तुम कीन अर्थात् व्यवहार मानि कर्मते वर्जित ब्रह्म सबते न्यारही रहै है या परमार्थ तुम लोग कहौहौ औ वाहीमें आरूढ़ होतहौ साहब को नहीं जानौहौ ३॥

षटआश्रमषटदरशनकीन्हा। षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारिवृक्ष छाशाखबखानै। विद्याअगणितगनैनजानै ५

षटरसनको खोटमानि त्याग न करिकै औ षटआश्रम करिकै षटदर्शन करिकै वही धोखा ब्रह्महीको सिद्धांत मानते भये ४ पुनि चारि वेद छवोशास्त्र अगणित विद्या वाच्यार्थ करिकै धोखा ब्रह्मको कहै हैं ताको तो तुमग्रहणकियो तात्पर्य्यवृत्तिते जो साहबको कहैहै सो तुम न जानत भये ५॥

औरौ आगम करैबिचारा। त्यहिनहिंसूझैवारनपारा ६
जपतीरथ व्रत पूजे भूता। दानपुण्यऔकियेवहूता ७

अरु औरौ आगम जेहैं ज्योतिष यंत्र मंत्र आदिदैकै तेऊ तात्पर्य्य वृत्तिते जौने साहबको कहैहैं ताको वारपार तो तुमको न सूझिपरयो वाच्यार्थ प्रतिपाद्य जो धोखा ब्रह्म ताहीमेंलागतभये और और देवता ६ सो यहिप्रकार नानामतन करिकै मानतेभये कोई नाना देवतन के जपकिये कोई तीर्थकिये कोई व्रत किये कोई भूतनकी पूजाकिये कोई दानकिये कोईपुण्य जो यज्ञादिक कर्म ते किये ७॥

साखी॥ मंदिरतोहै नेहको मतिकोइ पैठेधाइ॥
जोकोइपैठैधायकै बिनुशिरसेंतीजाइ ८

सो यह सब मतमा एक नानादेवता धोखा ब्रह्म इनमें जो प्रीतिहै सो नेहको मंदिरहै तामें तूधायकै मतिपैठै जो इनमें धायकै पैठैगो तौ बिनु शिरकहे सबकेशिरे जे साहब तिनके विना सेंतिही जाइगो कछुहाथ न लगैगोतेरेसाधनमुक्तिदेनवाले न होवेंगे संसारही देनवाले होइँगे अथवा तुम्हारो माथा काटोजायगो वृथा मारेजाउगे ८॥ इति बाईसवींरमैनीसमाप्तम्॥

अथ तेईसवीं रमैनी॥

चौ० अलपसौख्यदुखआदिहु अंता। मन भुलान मैगर मैंमंता १
सुख बिसराय मुक्ति कहँपावै। परिहरिसांचझूठनिजधावै २

अनल ज्योति डाहै यकसंगा। नयननेह जसजरै पतंगा ३
करुविचारज्यहिसबदुखजाई। परिहरिझूठा केरि सगाई ४
लालचलागे जन्म सिराई। जरामरण नियरायलआई ५
साखी ॥ भ्रमको बांध लई जगत यहिबिधि आवहिजाइ ॥
मानुष जन्महि पाइनर काहे को जहँडाइ ६

अलपसौख्यदुखआदिहुअंता।मनभुलानमैगरमैमंता १
सुखबिसरायमुक्तिकहँपावै।परिहरिसांचझूठनिजधावै २
अनलज्योतिडाहै यक संगा। नयननेहजसजरैपतंगा३

जौने संसारमें अलप तो सुखहै औ आदिहूमें अंतहूमें दुखहै ऐसे संसारमें मैगर मैंमंताकहेमतवारो हाथी जो मन सोभुलाइकै मैंमंताकहे मही ब्रह्महौं या मानिलियो अथवा मैंहीं देहहौं या मानिलियो १ सुखरूप जे साहव हैं तिनको बिसराइकै कबीरजी कहैहैं कि मुक्ति कहांपावै सांचको छोड़िकै झूंठ जोधोखा ब्रह्महै तामें तो धावैहै यहजीव कैसेसुखपावे २ अनलज्योतिजो ब्रह्महै सो एकसंग सब ज्ञानिनको दाहैहै अग्नि ब्रह्मको नाम है अज्ञात्वादग्निनामासौ ॥ कैसेदाहैहै जैसे नयननेह कहे देखनके लालचलगे दीपककीज्योतिमें पतंगजरैहैं ३ ॥

करुबिचारज्यहिसबदुखजाई।परिहरिझूठाकेरिसगाई ४
लालचलागेजन्मसिराई। जरामरण नियरायलआई ५

झूठ जो या धोखा ब्रह्महै औ अपनो कलेवर तौने की सगाई त्यागि कै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बिचार करु जाते तेरे सब दुःख जाइँ ४ धोखा ब्रह्मके लालच में लगे कि हमारी मुक्ति होयगी हमको विषयही ते सुख होयगो याहीमें लगे लगे जन्म सिरायगयो जरा जोबुढ़ाई औमरण सोनियराइ आयो ५ ॥
साखी ॥ भ्रमको बांधलई जगत यहिबिधि आवैजाय ॥

मानुषजन्महि पायनर काहेकोजहँडाय ६

यही रीतिते भ्रमको बांधा या जगत्है वही ब्रह्मते आवै है कहे उत्पन्न होइहै औ जाइहै कहे लीन होय है मानुष जन्महि पायनर काहेको जहँडाय कहे काहे जड़वत् होयहै मनुष्य जन्म याते कह्यो अथवा जहँडाय कहे काहे भूले जाते हैं कि मनुष्य के मानुष्यै होय हैं हाथीके हाथी होय हैं कछू हाथी के मनुष्य नहीं होयहैं ऐसे जो तैं निराकार ब्रह्मकोहो तो तोहूं निराकार होतो सो तैं मनुष्य है ताते मनुष्य रूप जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनही को है ६ ॥ इति तेईसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौबीसवीं रमैनी ॥

चौ० चंद्रचकोर कसिबातजनाई। मानुषबुद्धि दीनपलटाई १
चारिअवस्था सपनो कहई। झूठे फूरे जानत रहई २
मिथ्याबात नजानैकोई। यहिबिधिसिगरे गयेबिगोई ३
आगे दैदै सबन गँवावा। मानुष बुद्धिन सपनेहुपावा ४
चौंतिस अक्षरसों निकलैजोई। पापपुण्य जानैगासोई ५
साखी ॥ सोइकहते सोइ होउगे निकलिन बाहेरआउ ॥
होहजूरठाढ़ो कहौं धोखे न जन्म गँवाउ ६

चन्द्रचकोरकसिबातजनाई। मानुषबुद्धिदीनपलटाई १

साहब कहैहैं कि हे जीवो तुमको गुरुवालोग चन्द्रचकोर कैसो दृष्टांत जनायकै नानाईश्वरमें लगायदियो कैसे जैसेचन्द्रमा को ताकतताकत चकोरचन्द्ररूपैहै या बुद्धिमानैहै तब चकोरको अग्निकी गरमीनहीं लगैहै अग्नि खायजायहै तैसे अपनो स्वरूप जो ब्रह्म ताको जबजानिलेहुगे तब तुमको दुखसुख न जानिपरैगो कोई यह कहैहैं कि जैसे चन्द्रमा चकोरमें नेहकरै है ऐसेतुम ईश्वरनमें प्रीतिकरोगे तौ दुख सुखन्न जानिपरैगो यह जोतुम्हारी मनुष्यबुद्धि कि मैं हंसस्वरूपहौं द्विभुजहौं द्विभुजई को होउँ-

गो सोपसारायकै ब्रह्ममेंलगायदिये नानादेवतनमेंलगायदिये १ ॥

चारि अवस्था सपनो कहई । झूठफूरे जानत रहई २
मिथ्याबातनजानै कोई । यहिबिधिसिगरेगये बिगोई ३

चारिअवस्थाजेहैं जाग्रतस्वप्नसुषुप्तितुरीयाते सपनकहातीहैं तो झूठीफुरि जानतरहेहैं २ वहकैवल्यजोहै पचईअवस्था तद्रूपह्वै जाइबो कि मैंहीं ब्रह्महौं सोमिथ्याहै यहबात कोई नहींजानैहै यहीविधि सिगरे जीव बिगरिगये कहे बिगोइगये ३ ॥

आगे दैदै सबन गँवावा । मानुषबुद्धि न सपनेहुपावा ४
चौंतिसअक्षरसोंनिकलैजोई । पापपुण्य जानैगासोई ५

वहीधोखा ब्रह्मके आगे और कछुनहींरह्यो आदिकी उत्पत्ति वहीतेहै यही बात आगे दैदै कहे बिचारि कै सिगरे जे ऋषिमुनि हैं ते आजअपने स्वस्वरूपको गँवावतभये मनुष्यरूपजो मैं तिन के जाननेवाली बुद्धिसपन्यो न पावतभये ४ चौंतिसअक्षरके जो निकरैगा सोईपाप पुण्य जानैगा मैंसाहबको हौं और मैं लागौंहौं सो पापईकरौंहौं याबातमेरोअनिर्बचनीयनिवार्णजो नामहैताको जापिकै जानैगो औ अपनो स्वस्वरूप जानैगो ५ ॥

साखी ॥ सोइकहते सोइहोउगे निकलि न बाहरआउ ॥
होहजूरठाढ़ो कहौं धोखे नजनम गँवाउ ६

जोपदार्थ देखोगे जो सुनौगे जो कहौगेजो स्मरण करौगे संसारमें सोई होउगे वहीधोखामें लागिकै पुनिसंसारी होउगेवामेंते निकरिकै बाहर न होउगे काहेते कि वहतो अकर्त्ता है तुम्हारी रक्षाकौन करैगो सो साहब कहैहैं कि सर्वत्रपूर्णहौं तेरे हजूर ठाढ़कहतईहौं कि तैं मेरोहै तूकाहेधोखा ब्रह्ममें ईश्वरनमें जगत् के नानापदार्थ में लगिकै जन्मगँवायेदेतहै ६ ॥ इतिचौबीसवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ पचीसवीं रमैनी ॥

चौ० चौंतिस अक्षरकोयही विशेखा। सहसौ नामयहींसेंदेखा १
भूलिभटकि नरफिरि घरआवैं। होतज्ञानसो सबनगँवावैं २
खोजहिंब्रह्मविष्णुशिवशक्ती।अमितलोगखोजहिंवहुभक्ती ३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा। अमित लोकखोजहिंवहुसेवा ४
साखी ॥ जतीसती सबखोजहीं मनैन मानै हारि ॥
बड़ेबड़े वरिबाचैं नहीं कहहि कबीर पुकारि ५

चौंतिसअक्षरकोयहीबिशेखा। सहसौंनामयहीसेंदेखा १
भूलिभटकिनरफिरिघरआवै।होतज्ञानसोसबनगँवावै २

चौंतिस अक्षर को विशेष धोखईहै काहेते हजारननाम यही चौंतिस अक्षरैमें देखैहै अर्थात् जे भरि वचनमें आवै है ते माया ब्रह्मरूप धोखईहै मिथ्याही सो चौंतिसै अक्षरके भीतर सबहैअ-निर्बचनीयपदार्थ ताको कैसेमिले १ चौंतिस अक्षरको बिस्तार जो निगम अगम तामें साहब को ज्ञानभूलि भटकिकै जब पार नहीं पावैहै तब फिरि थकिकै आपने घटमें आय या कहैहै कि एकयेहूनहींहै वेदहू तौ नेतिनेतिकहैहैं तबअपनो स्वरूपमें आयो सो साहबके ज्ञान होतही गुरुवा लोग भटकाइकै अज्ञानमेंडारि दिये जौन यहविचारकियोकि ये सब अनिर्बचनीयनहीं हैं सो गँवायदियो अनिर्बचनीयधोखा ब्रह्महीको मानतभये २ ॥

खोजहिंब्रह्मविष्णुशिवशक्ती। अनत लोकखोजहिंवहुभक्ती ३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा।अनतलोकखोजहिंवहुसेवा ४

अनंतजे लोकहैं तिनमें अनंतजे ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति तिनकी भक्ति करिकैवही ब्रह्माण्डनमें अनिर्बचनीय को खोजन लगे अरु वही को अनंत लोकमें बहुत सेवाकरि गंधर्व मुनि देव-ता खोजनलगे ३।४ ॥

साखी ॥ जती सती सबखोजहींमनैनमानैहारि।

बड़े बड़ेबीरबाचैंनहीं कहहिकबीरपुकारि ५

औ यती सती सब मनमें हारिना मानिकै वही अनिबचनीय जो मायाब्रह्म ताहीको खोजैहैं सो कबीरजीकहै हैं कि मैं पुकारिकै कहौंहौं या माया ब्रह्मके धोखाते बड़े बड़े वीरनहींबाचै हैं जे कोई विरले सन्तसाहेबको जानैंहैं तेई बाचेहैं तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ रसना रामगुण रमिरमि पीजै। गुणातीत निर्मूल कलीजै। निरगुण ब्रह्मजपौ रेभाई। जेहि सुमिरतसुधिबुधि सबपाई ॥ विषतजिराम न जपसि अभागे। काबूड़ेलालचकेलागे॥ ते सब तरे रामरस स्वादी। कह कबीर बूड़े बकबादी ५ ॥

इतिपचीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ छब्बीसवीं रमैनी ॥

चौ० आपुहि करताभे करतारा। बहुबिधिबासनगढ़ै कुम्हारा १
बिधनासबैकीनयक ठाऊं। अनेकयतनकै बनकबनाऊं २
जठरअग्निमहंदियपरजाली। तामेंआपुभये प्रतिपाली ३
बहुत यतनकै बाहरआया। तबशिवशक्ती नामधराया ४
घरको सुतजो होयअयाना। ताकेसंगन जायसयाना ५
सांचीबात कहौं मैं अपनी। भयादेवाना औरकिसपनी ६
गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा। काको कहिये ब्राह्मणशुद्रा ७
झूठ गर्ब भूलै मति कोई। हिंदू तुरुक झूठ कुल दोई ८

साखी ॥ जिनयह चित्र बनाइयासांचीसूरतिढारि ॥
कहहि कबिरते जन भले चित्रवंतहिलेहिंबिचारि ९

आपुहिकरताभेकरतारा। बहुबिधिबासनगढ़ैकुम्हारा १
बिधनासबैकीनयकठाऊं। अनेकयतनकैबनकबनाऊं २

विधिजे ब्रह्माहैं तेअपनेको कर्ता मानिसब साजुजोरि अनेक यतन कै जगत् बनावतभये जैसे कुम्हार डंड चक्र सब साजु जोरिकै बासन गढ़ै है सो करतार जो अपनेको करता मान्यो सो

भाकी अज्ञानताहै काहेते कबीरजी कहैं हैं कि सबसाजु आगेहि उत्पन्नह्वै रहीहै कौन नईसाज बनाइकरतार अपनेको करतामानैसाजुतो सब आगेहि की उत्पन्नभईहै सो कहैहैं १ । २॥

जठरअग्निमहंदियपरजाली।तामेंआपुभयेप्रतिपाली३
बहुतयतनकैबाहरआया । तबशिवशक्तिनामधराया ४

जब महाप्रलयहोयजाइहै तबजौनकालरहिजायहै सो काल सदा शिवरूपहै ताके जठरमें कहे पेटमें अग्निजो लोक प्रकाश ब्रह्मतामें समष्टि जीवपर जालिदिये पराशक्ति को जाललगाइ दिये अर्थात् अग्नि जो लोक प्रकाश ब्रह्म सो महींहों यह मानि माया सबलित होतभयो तामें तौने मायाके प्रतिपालीआप ही होतभये अर्थात् जीवनके माने मात्रमायाहै ३ सो मायासबलित जो ब्रह्म समष्टि जीवरूप सो अनेक यत्नकहे रामनामको संसार मुखअर्थ करि पांचौब्रह्म आदि सब वस्तु उत्पन्नकै समष्टिते व्यष्टिह्वैकै जगत् उत्पन्न कियो ताको शिव शक्त्यात्मक नामधरावतभये ४ ॥

घरकोसुतजोहोयअयाना । ताकेसंग न जाहि सयाना५

सोकबीरजी कहैंहैं कि हे जीवो येब्रह्मादिकतुम्हारही सुत हैं तुमहीं समष्टिते व्यष्टिभये हो कि जो घरकोपूत अयान होइ है ताकेसंग सयाननहींजायहै ऐसेहीब्रह्मादिक जे अनेकमत करिकै आपनेको करतामानि लियेहैं तिनकेसंग तुमनलागो अर्थात् अनेक मतनमें तुमनपरौ तुम साहेब कोजानो ५ ॥

सांचीबातकहौंमेंअपनी । भयादेवानाऔरकिसपनी ६

सो कबीरजी कहैंहैं कि सांचीबात मैं अपनी कहौंहों अपनी कौनकी मैं नाना मतनको छांडि साहबको जान्योहै सोतुमनहीं बूझौहौ और की सपनी कहे स्वप्नवत् झूठीनाना मतनकीवाणी में देवाना कहे विकल हेजीवोह्वै रहेहो सो नानामत त्यागिसाहबको जानौ कहे औरकी पुनी जो या पाठ होय ताको अर्थ पा

है सांचीबात अपनी मैं कहताहूं जो मेरे मतमें साहबको जानता है सोई सांच है यासुनि पुनि और का जोभया सोई देवाना ६ ॥

गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा । काकोकहिये ब्राह्मणशुद्रा ७
झूठगर्व भूलै मतिकोई । हिंदू तुरुकझूठ कुल दोई ८

सा हेजीवौ गुप्त कहे जब समष्टिमें रहेहो तबहूं औ जबप्रगट कहे व्यष्टिमें रहेहो तबहूं एकही मुद्रारहेहौ अर्थात् साहिबैके रहेहौ तुम जे नाना मतनमें परिनानासाहेब मानि ब्राह्मणशूद्रकहतेहो सो झूठेहो जीवत्व तो एकही है ७ मैं हिंदूहौं मैंतुरुकहौं यह झूठो गर्वकरिकै मति कोई भूलौ विचारिकै देखौ तौ हिंदू तुरुक कुल ये दोऊ झूठेहैं तुमतौ साहबके हौ ८ ॥

साखी॥जिन यह चित्र बनाइया सांचीसूरतिढारि ॥
कहहिकबिरतेइजनभलेचित्रवंतहिलेहिविचारि ९

जिन यह नाना चित्र बनाइया कहे जिन यह जीवकोमन नाना शरिर जगत्में बनायोहै तौने को सूत्रधारी साहब सांचोहै जौन सबको सुरतिदियो है सो कबीरजी कहैहैं चित्रवंत जो या मन नानादेह देनवालो याको जोकोई बिचारिलियो कि यामिथ्याहै औसांच साहब को जानिलियो ते जन भले हैं ९ ॥ इति छब्बिसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ सत्ताईसवीं रमैनी ॥

चौ० ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मण्डा । सात दीप पुहुमी नौखण्डा १
सत्य सत्यकै विष्णुदृढाई । तीनिलोक महंराखिनिजाई २
लिंगरूप तब शंकरकीन्हा । धरतीकीलि रसातलदीन्हा ३
तब अष्टंगीरची कुमारी । तीनिलोक मोहानिसबझारी ४
द्वितियानामपार्वतिभयऊ । तपकरता शंकर को दयऊ ५
एकै पुरुष एक है नारी । ताते रचिनि खानि भौचारी ६
शर्मन वर्मन देवो दासा । रजगुणतमगुणधरनिअकासा ७

साखी ॥ एक अंडओंकारते यह जग सब भयो पसार ॥
कहकबीरसबनारिरामकी अविचलपुरुष भतार ८

ब्रह्माकोदीन्होंब्रह्मण्डा । सातद्वीपपुहुमीनौंखण्डा १
सत्यसत्य कै विष्णुदृढ़ाई । तीनिलोकमहँराखिनिजाई २

अष्टांगकौनहै भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच । अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥ ऐसी जो इच्छारूपी नारि अष्टांगीसो ब्रह्माको ब्रह्मांड देतभई औ सातद्वीप नवोखण्ड पृथ्वी विष्णुको दैकै तीनिलोकमें राखिनि कहे व्यापक करिदेतभई औ विष्णुको नाम सत्य धरावतभई सो आठ नाममें प्रसिद्धहै हरिःसत्योजनार्दनः सो जब ब्रह्मा बिष्णु दोऊ अपने अपनेको मालिक मानिलरे तब महादेवजी कह्यो कि हम लिंग बढ़ावै हैं जोई अंतलैआवै सोई बड़ो १ । २ ॥

लिंगरूपतबशंकरकीन्हा । धरतीकीलरसातलदीन्हा ३

तब महादेवजी सातलोक नीचेके सात ऊंचेके तामेंकीलवत् लिंग बढ़ावत भये ब्रह्मा विष्णु दोऊकोपठयो कि जाय अंतलैआवो सोविष्णु जायकै या कह्यो कि हम अंत नहीं पाये ब्रह्माकह्यो हम अंत लैआये सुरभिके दूधते नहवायो केतकीके फूलतेपूज्यो है सो सुरभी औकेतकीसाखीहैं तब महादेव तीनोंको झूठाजानि तीनोंको शापदियो ब्रह्माको कह्यो लोकमें अपूज्यहोउ सुरभीको कह्यो तुम्हारोमुख अशुद्धहोइ केतकीको कह्यो हमपर न चढ़ौ औ विष्णुको प्रसन्न ह्वैकै या कह्यो कि तीनलोकमें पूज्यहोउ तुम सत्य कह्योहै यह पुराणनमें कथा प्रसिद्धहै ३ ॥

तबअष्टंगीरचोकुमारी । तीनिलोकमोहनिसबझारी ४
द्वितियानामपार्बतिभयऊ । तपकरताशंकरकोदयऊ ५

तबअष्टंगी जोकारण रूपाशक्ति सोप्रसन्न ह्वैकै तीनिलोककी मोहनहारी कुमारीसती रचिकै तपकरता जेदक्षहैं तिनकेद्वारा महादेवजीको देतभई तौनेहीको दूसरो पार्वती नाम भयो ४।५॥

एकैपुरुषएकहै नारी। ताते रचिनिखानि भै चारी ६
शर्मनवर्मनदेवोदासा। रजगुणतमगुणधरणिअकासा ७

एकै पुरुष जोहै ब्रह्म अरु एकै नारीजोहै माया ताते चारिखानिके जीव उत्पत्ति होतभये अंडज पिंडज स्वेदज उद्भिज ६ औ शर्मन वर्मन देवोदासा कहे शर्मन ब्राह्मण वर्मनक्षत्री देवोवैश्य दासाशूद्र अथवा शर्मन कहे श्रोता वर्मनकहे बक्ता अरु देवता औ उनकेदास रजोगुणी तमोगुणी औरधरतीऔआकाशहोतभये ७॥

साखी॥एकअंड ओंकारते यह सब जग भयो पसार॥
कहकबीरसबनारिरामकीअविचलपुरुषभतार ८

मंगलमें पांचब्रह्म पांच अंडमें राख्यो है या कहि आये हैं सो तामें शब्द ब्रह्मरूप जोहै अंडप्रणवताप्रतिपाद्य जो ब्रह्म सोमाया सवलितह्वै इच्छाआदि अष्टांगी उत्पन्नकै जगत् पैदाकियाहै सो कबीरजी कहैहैं कि धोखा वहीहै प्रणव प्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं काहेते रामनामहीके जगत् मुख अर्थते प्रणव प्रगटभयोहै ताते प्रणव प्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं यह रामनाम को साहबमुख अर्थ रामतापिनीमें प्रसिद्धहै ताते हे जीवो तुमसब रामचन्द्रहीकी नारिहौ अविचल कहे न चलायमान निर्विकार सदा एकरसऐसे भतार कहे स्वामी तुम्हारे श्रीरामचन्द्रही हैं जीव चित् शक्तिमाया अष्टांगी आदि अचित् शक्ति ई दूनों शक्ति उनहींकी हैं याते पति श्रीरामचन्द्रहीहैं इहां कबीरजी मायामें सबपरेहैं या देखाय साहबको लखायो इहां सब जीवनको या देखायो कबीरजी कि तुम रामकी नारिहौ और पुरुषकरौगी तौ मारीजाउगी ८॥ इति सत्ताईसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ अट्ठाईसवीं रमैनी॥

चौ० असजोलहाकामर्मनजाना। जिनजगआइपसारलताना १
महि अकाश दुइ गाड़वनाई। चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई २

सहस तार लै पूरिन पूरी। अजहूं विनय कठिनहैदूरी ३
कहहिं कवीर कर्मसों जोरी। सूतकुसूतविनयभलकोरी ४

असजोलहाकामर्मनजाना॥जिनजगआयपसारलताना १
महिअकाशदुइगाड़बनाई। चंद्र सूर्य दुइनरा भराई २

यहिभांतिको जोलहा जो मनहै जौन जगत्में तानापसारयो है कहे वाणी पसारयोहै ताकोमर्म कोई न जानतभयो भतारश्री रामचन्द्रको भूलिगये धोखाब्रह्म नानापति खोजनलग्यो १महि औ आकाशकहे अर्द्ध ऊर्ध्व दुइगड़वा बनावतभये तामें चन्द्र सूर्य इला पिंगलाहै तिनकर नराभरावत भये २॥

सहसतारलै पूरिनपूरी। अजहूं विनयकठिनहै दूरी ३
कहहिंकबीरकर्मसोंजोरी। सूतकुसूत विनयभलकोरी ४

अरु तार जोहै प्रणव ताको हजारन दोनों कुम्भकमें जपत भये अजहूं लों वाहीमें लगेहैं औ यहकहैहैं कि कठिन दूरिहै ३ कबीरजी कहैहैं जब तानाकोताग टूटिजाइहै तब कोरी भिजैके जोरिदेइहै ऐसे वहसाधक अभ्यासरूप कर्मते जोरिदेइहै सोकर्म कीलाठिनमें बांधिकै सूतजो है जीव कुसूत जोहै वाणीताकोजो-लहाजोमनहै सोविनयहै अथवा विद्याअविद्या सूतकुसूत विनय है जब वस्तुतय्यारहोइजायहै तब जोलहाको बिनिबोछूटैहै सो धोखाब्रह्ममें लागि अनादिकालते बिनतईहै जबसाहबको जानै तबसाधनरूप कर्मकरिबो छूटिजाइ हंसरूपसाहबदेइ जरा मर-णमिटिजाइ ४॥ इति अट्ठाईसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ उनतीसवीं रमैनी॥

चौ० बज्रहु ते तृणक्षण में होई। तृणते वज्रकरै पुनि सोई १
निझरूनरू जानिपरिहरई। कर्मकबांधललालचकरई २
कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया। झूठानामसांचलै धरिया ३
रजगतित्रिबिधिकीनपरकाशा॥कर्मधर्मबुधिकेरविनाशा ४

रविकेउदय ताराभो छीना। चरवेहर दोनों में लीना ५
विषकेखायेविष नहिं जावै। गारुड़सोइजोमरतजिआवै ६
साखी ॥ अलखजोलागी पलकमों पलकहिमोंडसिजाय ॥
विष हर मन्त्र न मानही गारुड़ काह कराय ७

वज्रहुते तृण क्षणमें होई। तृणते वज्रकरै पुनिसोई १
निझरूनरूजानिपरिहरई। कर्मकबांधललालचकरई २

वज्रहु तृण क्षणमें करिदेइहै अरु तृणते वज्रकरिदेइहै ऐसेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रको जानो १ निझरूनरूकहे जिनको मायाब्रह्मको धोखा निझरिगयो कहे मिटिगयो ऐसे जे नरहैं ते पूरा गुरुपाइके परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानिके संपूर्ण जगत्के कर्म त्यागिदेइँ हैं औ जेकर्ममें बँधेहैं ते अनेक लालचकरैं हैं कोई द्रव्यादिक की कोई ब्रह्ममिलन की कोईईश्वरनकी २॥

कर्मधर्मबुधिमातिपरिहरिया। झूठानामसांचलैधरिया ३
रजुगतित्रिबिधिकीनपरकाशा। कर्मधर्मबुधिकेरबिनाश ४

साहबके मिलनवारी जोकर्मधर्म बुधिहै ताको त्यागिदेतेभये झूठेझूठे जे देवताहैं तिनको नाम सांचमानिके जपतभये ३ गुरुवालोग रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी तीनप्रकारके मत प्रकाश कैकै साहबके मिलनवारो जोकर्म धर्म बुधिहै ताको नाश करि देतभये ४॥

रविकेउदय ताराभोछीना। चरवेहर दोनोंमें लीना ५
विषकेखायेविषनहिंजावै। गारुड़सोजोमरतजिआवै ६

गुरुवालोग हे जीवो तुमको उपदेश देयँहैं जैसे सूर्यके उदय मों ताराको तेजक्षीण ह्वैजायहै ऐसे जवज्ञानभयो जीवत्वमिट्यो तब चर औ वेहर जोअचर येदोनों में लीनह्वै जायहै चर अचर ब्रह्मरूपते आपनेनको मानैहै ५ सोसाहब कहैहैं कि हे जीवो ऐसो उपदेश जो गुरुवालोग तुम्हैंदियो सो ठीकनहींहै काहे ते

कि संसारविष उतारिबेको तुम धोखा ब्रह्ममें लगेहौ सो विषके खाये विषनहीं जाइहै यह धोखाब्रह्म विषरूपैहै संसार देनवारोहै गारुडसो कहावैहै जो मरतमें जिआइलेइ सोमेरोज्ञानधोखा ब्रह्मविषते बचाइ कालते बचाइलेइ ताको जानो ६ ॥

साखी॥अलखजोलागीपलकमोंपलकहिमोंडसिजाय ॥
विषहरमंत्र न मानही गारुड़काह कराय ७

अलख जो वह ब्रह्महै सो सबके पलकमें लाग्योहै अर्थात्पल पलमें ध्यानकरैहै औएक पलहीमें डसिजायहै अर्थात् जोगुरुवन के मुँहेते कढ्यो सो पलैमें वा ज्ञान लगिजायहै सो साहब कहै हैं कि तैं मेरोहैमेरीतरफ़ आउ यहि बिषको हरनवारो जो ज्ञान ताको तोमानतही नहीं है मैं जो गारुड़सो काहकरौं ७ ॥ इति उनतीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ तीसवीं रमैनी ॥

चौ० औ भूले षटदरशन भाई । पाखण्डभेष रहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना । चारोवद्द चतुरगुण मौना २
जैनी धर्मकमर्म न जाना । पातीतोरि देव घर आना ३
दवना मरुवा चंपा फूला । मानोंजीवकोटि समतूला ४
औ पृथिवीको रोम उचारै । देखत जन्म आपनोहारै ५
मन्मथ बिन्दुकरैअसरारा । कलपैविन्दुखसै नाहिंद्वारा ६
ताकर हाल होय अघकूचा । छादरशनमेंजौन बिगूचा ७

साखी ॥ ज्ञानअमर पद बाहिरे नियरे तेहै दूरि ॥
जोजानैतेहि निकटहै रह्योसकलघटपूरि ८

औभूले षटदरशन भाई । पाखण्डभेष रहा लपटाई १
जीवसीवकाआयनसौना । चारोवद्दचतुरगुण मौना २

पाखण्ड बेषजो धोखा ब्रह्म सो सर्वत्र लपटाइ रह्योहैताहीमें षटदर्शन जेहैं तेऊ भूलिगये १ यह जो धोखा ब्रह्मको ज्ञानहै सो

जीव जोहै ताको सीव जो कल्याणहै सो नशावनवारोहै औचारो प्रकारके जीवजेहैं तेऊ बद्धहैं जेचतुरहैंतेगुणमौनाकहे गुणातीत हैं परन्तुवोऊ धोखा ब्रह्महीमेंहैं २ ॥

जैनी धर्मक मर्म न जाना । पातीतोरिदेवघर आना ३
दवना मरुवा चम्पा फूला । मानोंजीवकोटिसम तूला ४

अरुजैनी जे नास्तिकहैं ते धर्मको मर्म नहीं जान्यो काहे ते कि बांधे तोमुंहे पट्टीरहैहैं कि कहूं किरवा न घुसिजाय जीवको बचावैहैं कि हिंसा हम न करैंगे सो जिनबृक्षनमें जीवहैं तिनकी पातीको तोरिकै पाषाण जेपारसनाथ देवहैं तिनमें चढ़ावैहैं ३ दवना औ मरुवा औचम्पाके फूलको तोरिकै कोटिन जेजीवहैं ते सूंघिकै अघायहैं तिनको तोरितोरिकै पारसनाथकी मूर्तिमें चढ़ावैहैं सो अरे मूढ़ो प्रत्यक्ष जेजीव वृक्षहैं तिनका पत्रको तोरि कै जड़जो पाषाणहै तामें काहेको चढ़ावोहौ तुम तोप्रत्यक्ष प्रमाण मानौहौ कर्म किये फल होयहै या मानतही नहींहौ पाषाणपूजे कहा फल होइगो ४ ॥

औ पृथिवीकोरोमउचारैं । देखतजन्मआपनो हारैं ५
मन्मथ बिंदु करैअसरारा । कलपैबिंदुखसैनहिं द्वारा ६
ताकरहालहोयअघकूचा । छादरशनमेंजौन बिगूचा ७

औ पृथ्वीके रोमाजेहैं वृक्ष तिनको चेलनते उखरावैं हैं औ शिष्यनकी स्त्रिनको देखिकै भोगकरिकै अपनो जन्म हारिदेइहैं कहे नरकको जायहैं ५ साधन करिकैमन्मथ के बिन्दुको असरार कहे सरलकरैहैं औकन्यन ते भगिनी नाते औउनकी स्त्रिन ते भोगकरैहैं तबवह बिन्दुऊपरते नीचेको कल्पतहै कहे बढ़तहै औ पुनि नीचे तेमेरु दंडह्वैकै ऊपरको चढ़ाइ लैजाइहै ६ सो जे जैन धर्मीहैं छः दर्शनमें बिगूचा कहे भूलि गयेहैं तिनकी औ जिनको कहि आयेहैं वीर्य बढ़ावन वारे तिनको हाल अघकूचा कहे नरकनमें कूचेजाहिहैं ७ ॥

साखी॥ ज्ञान अमरपद वाहिरे नियरेतेंहै दूरि॥
जोजानैतेहि निकटहै रह्योसकलघटपूरि ८

अमर पद कहे आत्माकोजो स्वस्वरूपहै सो साहवकोअंशहै दासहै सोई अमरहै ताको ज्ञान नियरेते दूरिहै औवाहिरेहै इहां नियरेते दूरि कह्यो ताते अपनेको ज्ञाननहींहै औ वाहिरे है कहे वहुत दूरि देखि परैहै परन्तुजो सतगुरु भेद वतावैहै तौ ज्ञान होइहै आत्माके स्वरूपको जानैहै ताको साहव निकटहीहै काहे घटघट में तौ पूर्णहै तौ आत्माके निकटैहै ८॥ इतितीसवींरमैनी समाप्तम्॥

अथइकतीसवींरमैनी॥

चौ० स्मृतिआहिगुणनकोचीन्हा।पापपुण्यको मारगलीन्हा१
स्मृति वेदपढ़ै असरारा। पाखण्ड रूपकरै अहँकारा २
पढ़ै वेद औकरै बड़ाई। संशय गांठिअजहुं नहिंजाई ३
पढ़िकैशास्त्रजीववधकरई। मूड काटि अगमनकै धरई ४
साखी॥ कहकबीर पाखण्डते वहुतक जीव सताय॥
अनुभवभावन दर्शई जियतन आपुलखाय ५

स्मृतिआहिगुणनकोचीन्हा।पापपुण्यकोमारगलीन्हा १
स्मृतिवेदपढ़ैअसरारा। पाखण्डरूप करै अहँकारा २

स्मृति कहे स्मृति गुणनको चीन्हा आपकहे तीनों गुण स्मृति में देखिपरै काहेते कि पाप पुण्यको मार्गकीन्हेहैं अर्थात् पापपुण्यके मार्गवही तेजानि परैहैं १ राराजो जीव स्मृति वेदकाअस पढ़तहै पाखण्डरूप ह्वैकै या अहंकार करैहै जानिवेके लिये नहीं पढ़ैहै अर्थात् हमविद्यामेंजीतै कोई विद्यामानजानि हमें मानै चेलाहोइ इत्यादिकछू आपनै पढ़ैहै २॥

पढ़ै वेद औ करैबड़ाई। संशयगांठि अजहुंनहिंजाई ३
पढ़िकैवेदजीवबध करई। मूड़काटिअगमनकै धरई ४

वेद पढ़है सब देवतनकी बड़ाई कहेस्तुति करैहै अथवाअपनीबड़ाई करैहै कि महापण्डितहौं संशयकी गांठिजो परिगई है सो अजहूंनहीं जाइहै ३ वेदांत शास्त्र आदि पढ़ैहै आत्मासर्वत्रहै या कहैहै पै चैतन्य जोजीवहै ताको मूड़ काटिकै पाषाण की मूर्तिहै ताके आगूधरैहै ४॥

साखी॥ कहकबीर पाखण्डतेबहुतक जीवसताय॥
अनुभवभावनदर्शई जियतनआपुलखाय ५

कबीरजी कहैहैं कि यहिपाखण्डते बहुत जीवनको सतावत भये उनको अनुभवकी भावनहीं दरशैहै कि जैसे हममारैहैं तैसे येऊ हमको मारैंगे जब मरिजिअैहैं तबभर अपनी इच्छा नहींकरैहैं जेहिते बचैं ५॥ इति इकतीसवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथबत्तीसवींरमैनी॥

चौ० अंध सो दर्पण वेद पुराना। दरवीकहा महारस जाना १
जसखर चन्दनलादेभारा। परिमल बासनजानगँवारा २
कहकबीरखोजैअसमाना।सोनमिलाजोजायअभिमाना ३

जैसे आंधरको दर्पण वह आपनो मुख कहादेखै औदरवीजो करछुलीहै सो पाककेरसको कहाजानै१औगदहाचन्दनको लादे चन्दनकी सुवास कहाजानैं तैसे गँवारजेहैं तेवेद पुराणको तात्पर्यार्थजे साहबहैं तिनको कहाजानैं जो गरवीपाठ होय तो या अर्थहै अहंकारी लोगमधुर रसको काजानैं २ सोकबीरजीकहैहैं कि आसमानजो निराकार धोखा ब्रह्म ताकोखोजैहैंसो वातोभूठईहै सो पुरुषयाको न मिला जाके उपदेशते अहंब्रह्मको अभिमान जाय औ साहबको जानिलेय ३॥ इतिबत्तीसवींरमैनीसमाप्तम्॥

अथ तेंतीसवीं रमैनी ॥

चौ० वेद की पुत्री स्मृति भाई । सो जेवरि कर लेतै आई १
आपुहिबरी आपु गरबन्धा । झूठी मोह कालको धन्धा २
बँधवतबन्ध छोड़िनाजाई । विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरेलखत सकलजगलूटा । दासकबीर रामकहिछूटा ४
साखी ॥ रामहि राम पुकारि ते जीभ परोगो रोस ॥
सूधा जल पीवैनहीं खोदिपियनकी होस ५

वेद की पुत्री स्मृति भाई । सो-जेवरि कर लेतै आई १

इहां कर्मकाण्ड उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड ये तीनोंकी कठिनतादेखाइ तात्पर्य वृत्तिते छड़ाइ साहब में लगावै है कबीरजी कहै हैं कि हे भाइउ जोनीस्मृतिको कर्मप्रतिपादक अर्थकरिकर्मरूप जेवरीमें तुम बँधिगयेहौ स्मार्त्त भयेहौ सो स्मृति वेदकी पुत्री है तौने वेदहीको अर्थ तुम नहीं जानतेहौ धौंवाको तात्पर्य कर्म के छड़ाइबेमें है धौंकर्मके बांधिबेमें है तौ स्मृतिको अर्थ कब जानोगे सो वेदको तात्पर्य तौ कर्मते छड़ाइबेहीमें है कैसेजैसे जीवन की मांसमें आशक्ति स्वभावईते है वैसे छोड़ावै तौ न छूटै तातें वेद नेम बतावै है कि मांसखाय तौ यज्ञमें खाय ताते या आयो कि जब बहुत श्रमकरि बहुत द्रव्यलगाय यज्ञकरैगो तब थोड़ामांस बिनास्वादका पावैगो तामें या बिचारैगो कि या थोड़ेमांसबिना स्वाद के खाये यामें कहाहै याविचारि मांसछोड़िदेयगो या भांति कर्मकाण्डको तात्पर्य निवृत्तिहीमें है औ स्मृतिनानादेवतनकीउपासना कहैहैं सो उन पूजनकी यंत्र मंत्रकी पुरश्चरणकी विधि कठिनहै जो करतमें सिद्धिभयो तौ उनके लोकको गयो जो कछू बीच परिगयो तौ बैकलाइके मरि जाइहै या भांति उपासना काण्डको तात्पर्य निवृत्तहीमेंहै औ स्मृतिज्ञानकाण्ड जोकहैहै सो मनको साधन कठिन है काहे ते कि जो अहंब्रह्मास्मि मानसबै कर्मनको त्यागिदियो औ दूसरी बुद्धि न गई तौ पतित ह्वै जाय

है तामें एक इतिहासहै एकराजाके गोहत्यालगी सो हत्याआई तव राजाकह्यो कि सर्वत्र ब्रह्महीहै हमहूं ब्रह्महैं हमको हत्याकाहेको लगैगी हाथ के देवता इन्द्रहैं सो इन्द्रही को लगैगी इत्यादिक जवाब देतभयो तव वहहत्या राजाकी बेटीके पासगई सोवो शृंगारकरि रानीके पलंगमें परिरही तहां राजा आये कन्याको परी देखी तव कह्योकि तू कहापरी है तव कन्याकह्यो जैसे रानी तैसे मैं ब्रह्मतो एकही है तव राजा उलटिचले हत्याराजाकेशिरमें चढ़ि बैठी या भांति ज्ञानकाण्डहूको तात्पर्य निवृत्तिही में है कि जौनसरल उपाय वेद तात्पर्य कैकै बतावैहै कि मनादिकन को छोड़िकै रामनामकोजपै साहबको ह्वै जाय तौमुक्ति ह्वै जाय तामें प्रमाण॥ द्वापरान्ते नारदोब्रह्माणंप्रतिजगाम कथंनु भगवन् गांपर्य्यटन्कलिंसतरेयं मितिसहोवाच भगवत्॥ आदि पुरुषस्यनारायणस्यनाम्नेतिनारदः पुनःपप्रच्छभगवतः किंतन्नामेतिसहोवाच हरेरामहरेरामरामराम हरेहरेश्रुतिः॥ आदि पुरुष भगवाननारायणके नामहैं उद्धार करनवारे सो नारायणनाम सुनावहू कियो औ पूछ्यो कि कौननामहै तब रामनामको बतायो तेहिते उद्धार कर्त्तारामनामहीहै पुनि स्मृतिहू कहै है॥ सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः। एकएवपरोमंत्रो रामइत्यक्षरद्वयं॥ ताते वेदको तात्पर्य कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड तीनों के त्याग मेंहै साहबकेमिलायबेमेंहैतामेंप्रमाण॥ सर्ववेदायत्पदःसामनंति इतिश्रुतः॥ औ कबीरजीहू कह्योहै कि बेदकोअर्थ उलटि कै कहे तात्पर्यते समुझैतोतौने अर्थ वेदको सांचहै अपरोक्ष अर्थतोझूठो हैतामें प्रमाण॥ दौरधूपसबछोड़ो सखिया छोड़ो कथापुरान। उलटि वेदका भेदलखौ गहिसारशब्द गुरुज्ञान॥ दूजो प्रमाण॥ आसन पवन किये दृढ़रहुरे। मनको मैल छांड़िदेबौरे॥ काशृंगी मूड़ा चमकाये। क्या विभूति सब अंगलगाये॥ क्या हिंदूक्या मूसलमान। जाको साबितरहै इमान॥ क्याजो पढ़ियावेदपुरान। सोब्राह्मणबूझैब्रह्मज्ञान॥ कहैकबीर कछुआननकीजे। राम

नामजपिलाहालीजे ॥ सोस्मृतिमेंजोतुमको नानाअर्थ भासमान होय है सोई बंधनरूपजेवरी करमें लेते आई है सो वा जेवरि तुम्हारही वरी है १ ॥

आपुहिवरी आपुगरबंधा । झूठामोह कालकोधंधा २

सो आपही स्मृतिको कर्म प्रतिपादनकरि कर्मरूप रसरीवरिकै आपही गरबांधत भयो अर्थात् कर्म करनलग्यो झूठाजोमोहहै तामें परिकै कालको धन्धाबनावतभयो अर्थात् नानादेहधरतभयो कालमारतभयो साहबको जो तात्पर्य ते स्मृति बतावैहै ताको मासबुझावत भयो २ ॥

बंधवतबंधछोंड़िनाजाई । बिषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरेदेखत सबजगलूटा । दासकबीर रामकहिछूटा ४

सो बांधतो बांध्यो पै वह बंधते छोड्यो नहीं छूटैहै विषयमें सब दुनिया भूलिगई मांस खाइबे को चाह्यो तौ छागरमारि बलिदानदै खाइलियो औसुरापानहू करिवेको चाह्यो औ वेश्या राखिबो चाह्यो तौ वाममारगलियो इत्यादिक अर्थ करिकै ३ सो कबीरजी कहैहैं कि हमारे देखत देखत यहमाया संपूर्ण जगको लूटिलियो सो मैंतौ रामै कहिकै छूटिगयो सो मैं सबको बताऊं हौं सो दुष्टजीव नहीं मानै ४ ॥

साखी ॥ रामहिंराम पुकारते जीभपरीगोरोस ॥
सूधाजलपीवैनहीं खोदिपियनकीहोस ५

मोको रामैराम पुकारत पुकारतकी राममें लगौ जीभमेंरोस परिगयो कहे ठहर परिगयो पैजीव न मानतभये सो सूधा जल तो पीवै नहीं है कि सीधे रामकहै तरिजाय वही धोखा ब्रह्म में लगाइकै नानामत दक्षिण वामादिक करिकै खोदिकै जलपियन की होशकरैहै कहे आशा करैहै सोये तौसब धोखाई है मुक्तिकैसे होयगी सीधे रामजापि स्वामी सेवक भावकरि संसार सागरते

उतरि काइ नहीं जाय है ५ ॥ इतितेंतीसवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथ चौंतीसवीं रमैनी ॥

चौ० पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई।निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुवुझाई १
कहँवसै पुरुषकवनसोगाऊँ। सोम्वाहिंपंडितसुनावहुनाऊँ २
चारिवेद ब्रह्मा निज ठाना। मुक्तिक मर्मउन्हौंनहिंजाना३
दानपुण्यउनबहुतबखाना। अपनेमरनकिखबरिनजाना४
एकनाम है अगम गँभीरा। तहवां अस्थिर दास कबीरा ५
साखी॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै राई नाहिं ठहराय॥
आवागमन किगमनहीं तहँ सकलौजगजाय ६

पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई।निजमुक्तिहिमोहिंकहहुवुझाई १
कहँवसैपुरुषकवनसोगाऊँ।सोमोहिंपंडितसुनावहुनाऊँ २

हे पण्डितौ पढ़ि पढ़िके चतुराई करौहौ सो अपनी मुक्तितौ समुझाइ कहौ कहां ते तिहारी मुक्तिहोइहै जौने को मुक्ति मानेहौ सोब्रह्म धोखाहै १ अरु वहब्रह्मलोक प्रकाशहै सोजाकेलोक को प्रकाशहै सो वह पुरुष कहां बसैहै ताको गाउँ कौन है सो मोको बतावो अरु वाको नाउँ बताओ वह कौनहै २ ॥

चारिवेदब्रह्मानिजठाना। मुक्तिकमर्मउन्हौंनहिंजाना ३

चारिवेद को हम कियो है औ हमहीं जानैहैं हमहींपढ़ैहैंयह ब्रह्मा मानत भये पै वेदको तात्पर्य्यार्थ मुक्तिको मरम वोऊ न जानत भये काहेते कि जो जानते तो रजोगुणी अभिमानिह्वैके जगतकी उत्पत्तिकाहेको करते ब्रह्महूको भ्रम भयोहै सो प्रमाण मंगलमें कहिआयेहैं तौ पण्डित कहाजाने वही धोखामें पण्डित लोग लगावत भये कि वह जो ब्रह्मसर्वत्र पूर्णहै सोतुहीं है अहं-ब्रह्मास्मि यह भावना करु सो वातो जीवही अनुभवहै जीवब्रह्म कैसे होइगो अरु पंडित कहां बतावै वाको तौ अनामाकहैहैं अरु

वाको वस्तु गाउँ कहां बतावैं वाको तो देशकाल वस्तुते रहित कहैहैं सो जाके नामरूप नहीं है देशकाल वस्तुते रहितइहै सो वहहै कि नहीं है जो कहो अनुभवमें तौ आवैहै तोतौ अनुभवो तौ जीवहीको है जो यह विचारिवो धोखाई भयो तौ जीवब्रह्म कैसे होइगो ३ ॥

दानपुण्यउनबहुतबखाना। अपनेमरनकिखबरिनजाना ४
एक नामहैअगम गँभीरा। तहवांअस्थिरदासकबीरा ५

अरु कर्मकांडवारे दानपुण्य बहुतबखान्योहै पै अपनेमरिवेकी खबरि नहीं जान्यो कि यहकाल बहुत दान पुण्यवारेनको खाइ लियोहै हमकैसेबचैंगे ४ जौनेनाममेंलगे जन्म मरणनहीं होइहै औअगमहै कहे जेसंतलोगहैं तेईपावैहैं अरुगंभीर पदहै कहेगहिर अर्थहै सो कबीरजी कहै हैं कि तौने नाममें मैं स्थिरहौं ५ ॥

साखी ॥ चीटी जहां न चढ़िसकै राई नहिं ठहराय ॥
आवागमन किगमनहींतहँ सकलो जगजाय ६

वो ब्रह्म कैसो है कि चीटी जो वाणी है सो नहीं पहुंचै औ राई जो बुद्धिहै सो नहीं ठहराय अर्थात् मन वचन के परहै औ आवागमनकी गमनहीं है अर्थात् न वहां ते कोई आवैहै न यहां ते कोई जायहै अर्थात् मिथ्याहै तहां सिगरो जग जायहै ६ ॥

इतिचौंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥

अथ पैंतीसवीं रमैनी ॥

चौ० पण्डित भूले पढ़ि गुणवेदा। आपुअपनपौजानुनभेदा १
संध्या तर्पण औषटकर्मा। ईबहुरूप करहिं अस धर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई। पूछहु जाइ मुक्ति किनपाई ३
औरके छुयेलेतहौ सींचा। तुमते कहौ कौन है नीचा ४
यह गुणगर्वकरौ अधिकाई। अतिकेगर्व न होइ भलाई ५

जासु नाम है गर्व प्रहारी। सोकसगर्वहि सकैसिहारी ६
साखी ॥ कुल मर्यादाखोइकै खोजिनि पद निर्वान ॥
अंकुर बीज नशाइ कै भये विदेही थान ७

पण्डित भूलेपढ़ि गुणवेदा। आपुअपनपौजानुनभेदा १

पण्डित जे हैं ते गुण भेद कहे त्रैगुण्य बिषयक जो वेद है ताको ते भूलि गये कहे वेदको तात्पर्य्य त्रैगुण्य जानत भये कौन तात्पर्य न जान्यो सोकहै हैं कि न आपुको जान्यो कहे अपने स्वस्वरूपको न जान्यो कि मैं साहबको अंशहौं औअपनपौ नजान्यो कहे याके प्रियसखा साहबहैं तिनहींते जीवको अपनपौ है तिनको न जान्यो यह देश बोलीहै कि फलानेसों अपनपौहै कहेसख्यहै अरु जीवसाहबको सखाहै तामेंप्रमाण द्वासुपर्णास्युजायायाइतिश्रुतेः १॥

संध्या तर्पण औ षटकर्मा। ईबहुरूपकरहिंअसधर्मा २
गायत्री युगचारि पढ़ाई। पूछहु जाइ मुक्तिकिनपाई ३

अरु संध्या तर्पण औ षटकर्म इनहीं आदिदैकै बहुरूप कहे बहुतभांति के जे धर्महैं तिनको करैहैं २ अरु साक्षात् वेदमाता गायत्री ताकोचारियुगमें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य उपदेशपावैहै कहो मुक्तिकेहिकी भईहै काहेते वाकोतात्पर्य तो यहहै कि जब साहब को स्वरूप अरु आपनो स्वस्वरूपजानै तौ मुक्तिहोइसो साहब को स्वरूप औ आपनो स्वस्वरूपतो जानतई नहीं है मुक्तिकैसे पावै ३॥

औरकेछुयेलेतहो सींचा। तुमते कहौ कौनहै नीचा ४
यहगुणगर्वकरौअधिकाई। अतिकेगर्व न होइभलाई ५
जासु नामहै गर्व प्रहारी। सोकसगर्वहि सकैसिहारी ६

औरको छुवौहौ तौगंगाजल सींचौहौकि पवित्र ह्वैजाय सोकहौ तुमहींते कौननीचहै ४ मलमूत्रादिक तुमहीं में भरेहैं औ अपने

गुणको गर्वअधिक तुम करतेहौ सो अतिगर्व किये भलाई नहीं होइहैकाहेते कि ५ जाकोनामगर्वप्रहारीहै सो कैसेगर्वको सिहारि सकैवहजो परमपुरुषहैसोगर्व प्रहारीहैतिहारो गर्व कैसेसहैगो६ ॥

साखी ॥ कुल मर्यादा खोइकै खोजिनि पद निर्वान ॥
अंकुर बीज नशाइकै भये विदेहीथान ७

जे कर्मको त्यागकियेहैं तिनको गांठिहू को धर्मगयो आपनी कुल मर्यादा तो पहिले खोइदियो है औ निर्वान पदको खोजत भये अंकुर जो है सरतिबीज जो है शुद्धजीवआत्माबीजजो है साहेब ताको नशाय के विदेहजो है ब्रह्म निराकारताही के थानभये कहे आपनेको ब्रह्म मानत भये सो जाको अनुभवहै ब्रह्मताको तौ भूलिहीगये विना अंकुर पाले कैसे होइगो अर्थात् धोखही में परेरहिगये वामें कुछुनहीं मिलै है तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ अंकुरबीज जहांनहीं नहीं तत्त्व परकाश । तहांजाय का लेउगे छोड़हुझूठी आश ॥ अर्थात् चेष्टा रहित ब्रह्मको खोजतभये सो वातो कुछु बस्तुहीनहीं है मिलिबोई कहांकरै ७ ॥

इति पैंतीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ छत्तीसवीं रमैनी ॥

चौ० ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई । एकसयान सयान न होई १
दुसर सयानको मर्मनजाना । उत्पतिपरलयरैनिबिहाना२
बाणिजएकसबनमिलिठाना। नेमधर्म संयम भगवाना ३
हरिअस ठाकुरते जिनजाई । बालनभिस्तगांवदुलहाई ४
साखी ॥ ते नर मरिकै कहँ गये जिन दीन्हो गुरु छोट ॥
राम नाम निज जानिकै छोड़हु वस्तू खोट ५

ज्ञानी चतुरबिचक्षण लोई । एकसयान सयाननहोई १
दुसरसयानकोमर्मनजाना । उत्पतिपरलयरैनिबिहाना२

ज्ञानी जे हैं चतुर जेहैं बिचक्षणजेहैंतिनहींलौजेईलोगहैं अर्थात् सूक्ष्म ते सूक्ष्म ताहूतेसूक्ष्मलौबिचारनवारे जे अद्वैतवादीसबलोगहैं ते एक जो ब्रह्मताहीमें सयान जो भये कि महींब्रह्महौं यही मानतभये तौ वै सयाननहींहैं १ दूसर सयान जे द्वैतवादी हैं जे साहबको औ आपनेहीको मानै हैं ताको तौ मरमई नहीं जानैहैं भूलिकै उतपति परलयकहेसंसारकी जो उत्पत्तिप्रलय होतरहै है ताही में रैनि बिहाना कहे दिनराति जन्मतमरत रहै हैं २ ॥

वाणिजएकसबनामिलिठाना। नेमधर्मसंयमभगवाना ३
हरिअसठाकुरतेजिनजाई। बालनभिस्तगांवदुलहाई ४

एक वणिज तब मिलि ठानतभये नेमधर्म संयम इत्यादिक जे सब साधनहैं तिनहींको भगकहे ऐश्वर्य्य मानिकै तिनमेंसब लागतभये ३ हरिकहे आरतके हरनहारे जेसाहबहैं तिनतेजिन जाइकहे जेजेफरक ह्वैगये हैं ते बालनकहे बालककी ऐसी है बुद्धि जिनकी ऐसे जेजीवहैं ते भिस्त गाँव दुलहाई कहे भिस्त जो स्वर्ग है ताहीको दुलहाइकै गावत भये अर्थात् संयम नेमकरि स्वर्ग में जाइ अप्सरन ते भोगकरै यही गावत भये ४ ॥

साखी ॥ ते नर मरिकै कहँगये जिन दीन्हीं गुरुछोट ॥
राम नाम निज जानिकै छोड़हु बस्तू खोट ५

जिनको गुरुछोट दियो है अर्थात् थोरे अक्षरको मंत्रदियो औ जो घोट पाठहोइ तौ यह अर्थ है कि गुरू उनको मूड़घोटिदियो अर्थात् मूड़मूड़ि दियो अथवा जूँठप्यालाको घोटादैदियो पियाय दियो तेनरजे हैं हिन्दू मुसल्मान तेमरिकैकहांगये अर्थात् कहूँनहीं गये संसारही में परे हैं सो अपनो जो रामनाम ताको जानिकै खोटवस्तु जो नानादेवतनकी उपासना धोखा ब्रह्म स्वर्गकीचाह ताकोछांड़ो अंतसेंउबार रामनामहीकरैगो तामें प्रमाण ॥ मनरे जबते राम कह्योरे। फिरि कहिवेको कछु न रह्योरे ॥ काभोयोग यज्ञजपदाना। जो तैं रामनाम नहिंजाना ॥ कामक्रोधदोउभारे।

गुरुप्रसाद सबतारे ॥ कहै कबीर भ्रमनाशी । राजाराम मिले अविनाशी ५ ॥ इतिछत्तीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथसैंतीसवींरमैनी ॥

चौ० एक सयान सयान न होई । दुसर सयान न जानै कोई १
तिसर सयान सयानै खाई । चौथ सयान तहां लै जाई २
पँचयें सयान न जानै कोई । छठयें महँ सब गैल बिगोई ३
सतयेंसयान जोजानौभाई । लोक वेद मो देहु देखाई ४
साखी ॥ बिजक बतावै वित्तको जो बित गुप्ताहोइ ॥
शब्द बतावै जीवको बूझै बिरला कोइ ५

एकसयान सयान न होई । दुसर सयान न जानै कोई १
तिसरसयान सयानैखाई । चौथ सयान तहां लैजाई २

एक जो ब्रह्म ताहीमें जेसयानहैं अर्थात् वाहीको सांचमानै हैं और सब मिथ्याहै तेसयान नहीं हैं और दूसर मायामेंजेसयान हैं वे कहै हैं कि मायाको हम जानै हैं सो माया तौ सतअसत ते बिलक्षणहै ताको कोई जानतही नहीं है कि कौनवस्तुहै १ अरु तीसर जो जीव तामें जेसयानहैं कि जीवात्मै सबका मालिकहै या बिचारै हैं ऐसे जे गुरुवालोग हैं ते सयान जो जीवहै ताको खाइहैं कहे पाखण्डमत में लगाय नरकमेंडारिदेइ हैं चौथ जो ईश्वर और सबदेवता तामें जेसयानहैं अर्थात् उनकी उपासना जो करै हैं ईश्वर देवता तिनको अपनेलोकको लैजाय हैं २ ॥

पँचयें सयान न जानैकोई । छठयेंमहँ सबगयेबिगोई ३
सतयेंसयानजोजानौभाई । लोक वेदमहँ देहुदेखाई ४

औ पाँचौंइन्द्रिनकी विषय तिनमें जे सयानहैं तेतौ वे कछू जानतही नहीं हैं बद्धही हैं अरु छठों है मन ताहीते सबैगैल बिगोइगई है ३ सातवें सयान जो साहब ताको जो जानौ तौ है

भाई लोक वेदमें में देखायदेउँ कि जेते वर्णन करिआये तिनते साहब परेहै ४ ॥

साखी ॥ बिजकबतावैबित्तको जोवित गुप्ताहोइ ॥
शब्द बतावै जीवको बूझै बिरलाकोइ ५

श्री कबीरजी कहै हैं कि जैसे जौन बित्त गुप्तहोय है कहे गाड़ा होइ तौने धनको बीजक बतावै है तैसे सारशब्द जोरामनाम बीजक सोसाहब मुख अर्थ में जीवको बतावै है कि साहबको है तेरोधन साहिबै है सो या बात कोई बिरलासाधु बूझै है ५ ॥

इति सैंतीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ अड़तीसवीं रमैनी ॥

चौ० यहिविधिकहौंकहानहिंमाना । मारगमाहिंपसारिनिताना१
रातिदिवसमिलिजोरिनितागा । ओटतकाततभर्मनभागा२
भर्मै सबघट रह्यो समाई । भर्म छोड़ि कतहूँ नहिं जाई ३
परैनपूरि दिनोंदिन छीना । जहां जाहु तहँ अंग बिहीना ४
जोमतआदिअंतचलिआया । सोमतउनसबप्रगटलखाया५
साखी ॥ वहसँदेश फुरमानिकै लीन्हो शीश चढ़ाय ॥
संतो है संतोषसुख रहहु तौ हृदय जुड़ाय ६

यहिविधिकहौंकहानहिंमाना । मारगमाहिंपसारिनिताना १

कबीरजीकहै हैं कि सतयुगमें सत्यसुकृतनामते त्रेतामें मुनीन्द्रनाम ते द्वापरमें करुणामयनामते कलियुगमें कबीरनामते मैं चारो युगमें जीवनको रामनामको अर्थ साहबमुख समुझायो पै कोई जीव कहा न मान्यो वेदमार्ग में ताना पसारत भये कहे अपने अपने मतमें अर्थ करिलेते भये १ ॥

रातिदिवसमिलिजोरिनितागा । ओटतकाततभर्मनभागा २

औ रातिउ दिन तागा जोरतभये कहे वेदार्थको अपने अपने मतमें लगावत भये अर्थात् जहांजहां अर्थ नहीं लगै है तहां तहां

अपने मतमें योजितकरतभये औ ओटत काततकहे शंकासमाधान करत करत भर्म न भाग्यो इहां ताना प्रथम कह्यो ओटव कातव पीछे कह्यो सो प्रथम शंका समाधान करिकै काति ओटि कैताना तनतभये अर्थ वनावत भये जब वन्यो तब फेरफेरशंका समाधान करि ओटिकाति अर्थको ताना पसारत भये भर्म न भाग्यो एक सिद्धांत न भयो २ ॥

भर्मैंसबघटरह्यो समाई । भर्मछोड़ि कतहूं नाहिं जाई ३
परैनपूरदिनौदिनछीना । जहांजाहु तहँअंग बिहीना ४
जोमतआदिअंतचलिआया। सोमतउनसबप्रगटलखाया५

वही भर्म घट घटमें समाइ रह्यो है भर्म छोडि कै अनत न जात भये वही संशयमें रहिगये ३ पूर नहीं परै है कहे निश्चय नहीं होइहै दिनौदिन क्षीण होत जाइहै क्षीणकहां होइहै कि यह जानैहै कि हमारो अज्ञान दूरिभयो पै जहांजाइहै तहैं निराकार धोखई मिलैहै हाथकछु नहीं लगैहै ४ वेदकोअर्थ तौ परोक्षहैकहे अप्रगट है तात्पर्य वृत्तिकरिकै साहबको लखावै तौनअनादिमत ताको न समुझतभये वहवेदको अर्थ गुरुवालोग प्रगट करिकै अर्थात् अपरोक्ष जौन आदि अंतते चलो आयो है ताको बल गरिगयो ५ ॥

साखी ॥ वहसंदेश फुरमानिकै लीन्हों शीश चढ़ाइ ॥
संतोहै संतोषसुख रहहु तौ हृदय जुड़ाइ ६

वही तत्त्वमसी उपनिषदको संदेश शीश चढ़ाइलेतेभये वेदनमें वाणीमें तात्पर्यकरिकै सांचपदार्थकह्यो ताको न जानत भये संतपद संतोष सुखहै तौने जो रहौ तौ हृदय जुड़ाइ औरे में तौ तापई होइगो काहेते सबते परेहै जाको साहब दूसरो नहींहै ऐसे जेचक्रवर्ती श्रीरामचन्द्रहैं तिनकोजबपायो तबउनतेकम ब्रह्महोबेकीईश्वरके मिलिबेकी और मायिक जेपदार्थहैं तिनके मिलिबे

कीचाहई न होइगी काहेते कि वह चक्रवर्तीके मिलिबेकेसमसुख नहीं है ब्रह्मानंद विषयानंद आदिकनमें तबलगैगो तहहीं सबते संतोपहूवै याको मनशांत ह्वैजाइगो ६ ॥ इति अडतीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ उन्तालीसवींरमैनी ॥

चौ० जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया।कुदरतखोजितिन्हैंनहिंपाया १
करि मत कर्मकरै करतूती । वेद किताब भया सबरीती २
करमतसो जोगर्भऔतरिया । करमतसोजोनामहिंधरिया ३
कर्मते सुन्नति और जनेऊ । हिंदू तुरुक न जानै भेऊ ४
साखी ॥ पानी पवन सँजोयकै रचिआई उतपात ॥
शून्यहिसुरतिसमानियाकासोकहियेजात ५

जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया। कुदरतखोजितिन्हैंनहिं पाया १
करिमतकर्मकरै करतूती । वेदकिताब भया सबरीती २

जिन्ह महम्मद सबको कलियुगमें कलिमा पढ़ायोहै तेऊकह्योहै कि हम अल्लाहके कुदरतिको खोजकहे अंतनहीं पायो १ आपन आपन मतकरिकै करतूति कैकै कर्म करनलगे सो वेद किताव सब रीति ह्वै जातभये २ ॥

करमतसोजोगर्भऔतरिया।करमतसोजोनामहिंधरिया ३
कर्मतेसुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरुक न जानै भेऊ ४

कर्महिंते गर्भमें आय अवतार लेतेभये अरु कर्महीते नामधरतभये ३ औ कर्मैंते सुन्नति औ जनेऊ चलत भयो ताको भेद हिंदू तुरुक दूनौ न जानत भये ४ ॥

साखी ॥ पानी पवन संजोयकै रचिआई उतपात ॥
शुन्यहिसुरतिसमानियाकासोकहियेजात ५

पानी कहेविंदु अरुपवन ये दूनौके संयोगते गर्भभयो कहेशरी-

ररूपी उत्पात खड़ाभयो सो कर्ममें लगे जन्म मरणादिक येते उत्पात भये पैकर्म न छोंड़तभये अरु जिन कर्मछोड़िदीउकियो तिनकी सुरति शून्यै में समाइ जातिभई सो वहांकी बात कासों कही जातहै अर्थात् काहूसोंनहीं कहिजायहै नेतिनेतिकहि देइहैं अर्थात् उहां तौ शून्यहै कुछुहाथ न लग्यो ५॥ इतिउन्तालीस-वीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चालीसवीं रमैनी ॥

चौ० आदम आदि सुद्धि नहिंपावा । मामाहौवा कहँतेआवा १
तबहोते न तुरुक औहिन्दू । मायकेरुधिर पिताकेबिन्दू २
तबनहिंहोते गायकसाई । कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई ३
तबनरह्योहै कुलऔजाती । दोजकभिस्तकहां उतपाती ४
मनमसलेकीखबरिनजानै । मतिभुलानदुइदीन बखानै ५

साखी ॥ संयोगे का गुणरवै बिनयोगे गुणजाय ॥
जिभ्यास्वादकेकारणेकीन्हेबहुतउपाय ६

आदमआदि सुद्धिनहिंपावा । मामाहौवाकहँतेआवा १
तबहोते न तुरुक औहिंदू । मायकेरुधिरपिताकेबिंदू २

आदि आदम जेब्रह्माते मामाकहे जगतपिताहौवा नामऐसी जो वाणी ब्रह्माकी नारी सों ब्रह्महू सुधि ना पायो कि कहां ते आई है १ तब आदिमें न हिंदूरहे न तुरुकरहे औमायके रुधिरते पिताके बिंदुते गर्भ होइहै सोऊ नहीं रह्यो २ ॥

तबनहिंहोतेगायकसाई। कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई३
तबनरह्योहैकुलऔजाती । दोजकभिस्तकहांउतपाती४
मनमसलेकीखबरिनजानै। मतिभुलानदुइदीनबखानै५

तब न गाइ रही न कसाई रहे सो जो बिसमिल्ला कहिकै ह-लालकरैहै सो किन फुरमाईहै ३ अरु तब न कुलरह्यो औ न जाति रही दोजक भिस्त कहांरह्योहै ४ मनके मसलेकी सुधि नजान्यो

कोई मेरेमनैके बनायेहैं दोनोंदीन औ अपने आत्माको मत न जान्यो कि यह न हिंदू है न मुसल्लमान है मतिहीन दुइदीन बखानत भये ५ ॥

साखी ॥ संयोगे का गुणरवै बिनयोगे गुणजाय ॥
जिभ्यास्वादके कारणे कीन्हेबहुतउपाय ६

जबमनको आत्माको संयोग होइहै तबहीं संकल्प होइहै औ तबहीं गुणहोयहै अरुजब मनको आत्माको संयोग नहीं होइहै तबगुण जाइहै कहे गुणौ नहीं रहैहै अरु संकल्पौ नहींरहैहै सोनर जेहैं ते जिभ्या सुखके कारण औशिष्ण इन्द्री सुखकेकारण बहुत उपाय करतभये औमन औआत्माको संयोग छोड़ावनको उपाइ करतभये औजेमन आत्माको संयोगछोड्योहै तेआपने स्वस्वरूप को प्राप्तिभयेहैं ६ ॥ इति चालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ इकतालीसवीं रमैनी ॥

चौ० अंबुकिराशि समुद्रकिखाई । रबिशशिकोटि तेंतिसौभाई १
भँवरजालमें आसनमाड़ा । चाहतसुखदुखसंग न छाड़ा २
दुखकामर्म काहुनहिंपाया । बहुतभांतिके जग बौराया ३
आपुहिबाउरआपुसयाना । हृदयाबसत रामनहिंजाना ४
साखी ॥ तेई हरितेइ ठाकुरा तेई हरिके दास ॥
जामेंभयानयामिनीभामिनिचलीनिरास ५

अम्बुकिराशिसमुद्रकिखाई । रविशशिकोटितेंतिसोभाई १
भँवरजालमेंआसनमाड़ा । चाहतसुखदुखसंगनछाड़ा २

अंबुकहे बिंदु ताकीराशि शरीरहै समुद्र जोहै संसारसागरताकीखाईहै अर्थात् संसारहीमें सबशरीरपरेहैं जैसे जलजीव समुद्रमें रहे आवैहै तैसे नानाजीवनके शरीर परेरहैहैं औसूर्यचन्द्रमा तेंतिस कोटि देवता १ यहीसंसार सागरके भँवरजालमेंपरेकबहूं नरकको जायहैं कबहूं स्वर्गको जायहैं याहीभांति सबजीव औ

सब देवता चाहत तो सुखकोहैं कि हमको सुखहोय पै दुखरूप जो संसारहै ताको संगनहीं छोड़ें हैं २ ॥

दुखकामर्मकाहुनाहिंपाया । बहुतभांतिकेजगबौराया ३
आपुहिबाउरआपुसयाना । हृदयाबसतरामनाहिंजाना ४

वह दुखरूप जो संसारहै ताको मर्मकोई न जानतभयेबहुत भांति करिकै जगमेंसबजीव बौरायगये ३ सोजीवजेहैं तेआपुहीते बाउर होतभये अरु आपहीते सयान होतभये हृदयमें बसत जे श्रीरामचंद्रहैं तिनको न जानतभये अर्थात् जे संसारमें परेहैंतेतो बाउरईहैं जे आपनेको बहुत ज्ञानीमानै हैं औसयान मानैहैंतेऊ बाउरैहैं अर्थात्जे और और ईश्वरनके दासभये औजे आपहीको ब्रह्म मानत भये किहमहीं ब्रह्महैं औ आपने आत्मैको मानत भये तिनको साहब को ज्ञान नहीं होयहै या हेतुते दुखही को सुखमानैहै ४ ॥

साखी ॥ तेई हरि तेइ ठाकुरा तेई हरिके दास ॥
जामें भया न यामिनीभामिनिचली निरास ५

तेई जेजीवहैं ते अपने को हरि मानत भये औ आपनेहीको ठाकुरमानत भये कि हमहीं जगत् कर्त्ता हैं औ आपनेही को हरिके दास मानतभये अर्थात् सब आपहीको मानतभये औया-मिनी कहावैहै लगनिया वह वस्तु कराइदेइहै सोपूरागुरूकहावै है सो यह जीवको उद्धार कराइदेइहै सोजोजीव पूरागुरुरामो-पासक ना पायो जो समझाइदेइ कि यह धोखाहै तिन जीवनते भामिनि जो मुक्ति सो निराश ह्वैगई कि ई न मुक्ति होयँगे ५ ॥
इति इकतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ बयालीसवीं रमैनी ॥

चौ० जबहमरहल रहानाहिंकोई । हमरेमाहँरहलसबकोई १
कहहुसोरामकवनतोरसेवा।सोसमुझाइकहौमोहिंदेवा २

फुरफुरकहउँ मारुसबकोई। झूंठे झूठा संगति होई ३
आंधर कहै सबै हमदेखा। तहँदिठियारपैठिमुँहपेखा ४
यहिबिधिकहौमानुजोकोई।जसमुखतसजोहृदयाहोई ५
कहहिं कवीरहंसमुकुताई। हमर कहले छुटिहौभाई ६

जबहमरहल रहानहिं कोई। हमरेमाहँ रहलसबकोई १
कहहुसोरामकौनतोरसेवा। सोसमुझायकहौमोहिंदेवा २

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जबहम साहबके लोकमेंरहेहैं तबतुम कोई नहीं रहेहौ तुमसब हमरे साहबके लोकः प्रकाशमें रहेहौ १ अपनेको रामतौ कहौहौ तुम्हारीसेवा कौनहै कहां वेदपुराणमें लिखोहै कि इनकीसेवाकिये मुक्तिहोइगी सो तुमदेवताबने फिरौहौ परन्तु मोको समुझायके कहौ तौ कौन मुनि तुम्हारी सेवा कियो है काकी मुक्तिभई है २ ॥

फुरफुर कहउँमारुसबकोई। झूंठे झूंठासंगतिहोई ३

जो कोई फुरफुर कहैहै तौ सब मारनधावैहै अर्थात् जो कोई कहैहै कि तुमसांचहौ साहबकेहौ तौ सब मारनधावै है शास्त्रार्थ करिलेहै काहेते लोकमें रीतिहै कि झूंठेकी झूंठेनसोंसंगतिहोयहै सो सांच जो जीव सो झूंठामन उत्पत्तिकरिकै झूंठाजो धोखाब्रह्म ताहीकी संगतिहोतभई ३ ॥

आंधरकहैसबैहमदेखा। तहँ दिठियारपैठिमुहपेखा ४

साहबके ज्ञानते विहीन जे आंधरहैं ते या कहैहैं कि वेदशास्त्र पुराणमें अर्थ सबहम ब्रह्मरूपई देखाहै जाके देखेते सबको ज्ञान हमको ह्वैगयो तामें प्रमाणयेनाश्रुतंश्रुतं भवत्यमंतं मुत्तमविज्ञातं विज्ञातं भवति तहां दिठियार जे साहबके देखनवारो ते वोईश्रुतिनमें साहेबमुख अर्थ देखैहैं कैसे जैसे येनाश्रुतं श्रुतं कहे जौने रामनामके सुनेजो नहीं सुनाहै सोऊसुनै असहोइजाइहै काहेते वेदशास्त्र पुराणादि रामनामहीते निकसेहैं औ जौने रामनामके जानेते यह जो भ्रमतहै सर्वत्र ब्रह्ममानिबो धोखा सोमत होइ-

जाइहै अर्थात् परमपुरुषश्रीरामचन्द्रको चितअचित विग्रहीसब को मानैहै औ मन वचनके परे जे अविज्ञात साहेब ते रामनाम साहेब मुख अर्थ में व्यंजित होयहै अथवा रामनामको जानिकै साधन किहेत साहेब हंसरूप दैजानेजाइ है ४ ॥

यहिविधिकहौंमानुजोकोई । जसमुखतसजोहृदयाहोई५
कहहिंकबीरहंसमुसकाई । हमरे कहले छुटिहौभाई ६

सो याभांतिते मैं सब जीवनको समुझाऊंहौं पै कोई विरला मानैहै कौनमानै है जौनजस मुखते कहैहै तैसै हृदयते होइहै५ कबीरजी कहैहैं कि मुसकाई सुसकैंबँधों जीवो हमारेही कहेतेतुम छूटौगे औरीभांति न छूटौगे औ मुकुताई पाठहोय तौ या अर्थ मुक्तिहोबेकीहैइच्छाजिनके ६॥ इतिबयालीसवींरमैनीसमाप्तम्॥

अथ तेंतालीसवीं रमैनी ॥

चौ० जिन्हजिवकीन्हआपुविश्वासा।नरकगयेतेहिनरकहिवासा१
आवत जात न लागहि बारा। काल अहेरीसांझ सकारा२
चौदहि विद्यापढ़ि समुझावै। अपनेमरनकिखबरिनपावै३
जाने जिवको परा अँदेशा। झूंठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगतिछोंड़ि करै असरारा। उबहै मोट नरकको भारा ५

साखी॥ गुरुद्रोही औ मन मुखी नारी पुरुष विचार॥
तेनरचौरासभ्रिमहिंजबलगि शशिदिनकार ६

जिन्हजिवकीन्हआपुविश्वासा।नरकगयेतेहिनरकहिवासा १

जे नर अपने में विश्वास कियो कि हमारो जीवात्माहैसोई मालिकहै दूसर नहीं है एकैहै ते नरकी मुक्तिकी बातैं कौनकहै वै स्वर्गहू नहीं जायहैं नरकमें जायकै नरकही में वास किये रहैहैं काहेते नरकही जायहैं कि इहांतौतीर्थव्रत सय्यँम जो स्वर्गजावे को उपायहै तेतौमिथ्यामानि छांड़िदियोजीवात्मैको मालिकमान्यो दूसरा मालिक न मान्यो जो यमतें रक्षाकरै औ वेद पुराण को मिथ्या मान्यो छूटनकी उपाय एकौनकियो जबयमदूतमो-

गरालैकै मारनलगे बांधिकै कांटामें कढ़िलावनलगेतबमूढ़पुकारनलाग्यो गुरुवालोगनको ते रक्षा न किये औगुरुवालोगनहूंकी वही हवाल देखनलग्यो सो साहेबको नाम तो सबछोड़िकै लियोनहीं जो यमते रक्षाकरि वहांको लैजाय इहांस्वर्गजाबेवारोसुकर्म कियो नहीं ये अहमक ऊंटकेसे पाद जनम गँवाइ दिये न इतके भये ना उतके भये तामें प्रमाण ॥ रामनाम जान्यो नहीं कहाकियो तुमआय। इतकेभये न उतके रहियाजनमगँवाय १॥

आवतजातनलागहिबारा। कालअहेरीसांझसकारा २
चौदहबिद्यापढ़िसमुझावै।अपनेमरणकिखबरिनपावै ३

आवत जात बारनहीं लगैहै कहे पुनिपुनि जन्मलेइहै काल जो अहेरीहै सोसांझ सकार उनहींको खायहै वही वासना उनकी बनीरहैहै फेरि वाही मनमें आरूढ़ह्वै फेरि वही नरकहीको जायहै २ औ चौदहौ विद्या पढ़िकै गुरुवालोगजेहैं ते औरेको तौ समुझावैहैं परंतु अपने मरणकी खबरि नहीं पावैहैं ३ ॥

जानोजियकोपराअंदेशा। झूठआनिकैकहैसंदेशा ४
संगति छोड़ि करैअसरारा। उबहै मोटनरककोभारा ५

जे जीवात्महीको जाने हैं साहबको नहीं जानैहैं तिनहीं को अंदेशपरैहै काहेते कि सब झूठहीहै वही सँदेश कहैहैं जबयमदूत मारनलगे तब वा मारुदेखि उनको अँदेश परैहै कि हमारीरक्षा कौनकरैहै सो या पापिनकी दशा गरुड़पुराणमें प्रसिद्धहै ४ साहबके जाननवारे जेसाधुहैं तिनकी संगति छोड़िकै जे असरारकहे कफरई करैहैं अपने जीवात्मैको मालिक मानैहैं साहेबको नहीं जानैहैं ऊ कहे वै जे दुष्टहैं ते वहैमोटनरकको भारा कहे नरककोहै भार जामें ऐसी जोमायाकी मोटरी ताहीको बहै कहेढोवैहैं ५ ॥

साखी ॥ गुरु द्रोही औ मनमुखी नारीपुरुषबिचार ॥
ते नर चौरासीभ्रमहिं जब लगिशशिदिनकार ६

कबीरजी कहैहैं कि शुकादिक मुनि वेद पुराण साधु औ जे

जे साहब के बतावनवारे हैं सो येई गुरु हैं जोकोई इनकी वाणी को मिथ्या मानै है सोई गुरुद्रोही है सो गुरुद्रोही औ मनमुखी कहे अपने मनैते नारि नर विचारिकै जे एक जीवात्महींको मालिक मानै हैं ते चौरासी लक्ष योनिहीमें जबलगि सूर्य चन्द्रमा रहै हैं तबलगि वाहीमें परे रहै हैं ६ ॥

इति तेंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथचौवालीसवींरमैनी ॥

चौ० कबहुँ न भये संग औ साथा । ऐसो जन्म गँवाये हाथा १
बहुरि न ऐसो पैहौ थाना । साधुसंगतुमनहिंपहिंचाना २
अब तोर होइ नरकमें बासा । निशिदिनपरेलवारकेपासा ३
साखी ॥ जात सबन कहँ देखिया कहैं कबीर पुकार ॥
चेतवा होहु तौ चेतिले देवस परत है धार ४

कबहुँ न भये संग औ साथा । ऐसोजन्मगँवायेहाथा १

साहब के जाननवारे जेसाधु तिनको सतसंग कबहूँ न कियो औ उनके बताये साहबको साथ कबहूँ न कियो जेहिते आवागमन रहित होय मनुष्य ऐसोजन्म अपनेहाथते गँवायदियो १ ॥

बहुरिनऐसोपैहौथाना । साधुसंग तुमनाहिं पहिंचांना २
अबतोरहोइनरकमेंबासा । निशिदिनपरेलवारकेपासा ३

ऐसो थानकहे मनुष्यदेह तुम फेरि न पावोगे साधुसंग तुम नहीं पहिचान्यो है साधुसंगकरो जो पूरागुरुपाइजाउगे तौउद्वार है जाइगो २ धोखा जो है ब्रह्म औ माया ताके उपदेश करनवारे जे हैं गुरुवालोग लवरा तिनके पास में निशिदिन परयो है सो बिना पारिख तेरो नरकही मो वास होइगो ३ ॥

साखी ॥ जातसबनकहँदेखिया कहैंकबीरपुकार ॥
चेतवाहोहुतौचेतिले देवसपरतहैधार ४

तूनौ ब्रह्ममायाके धोखा में सब को नरक जातदेखिकै कबीर

जी पुकारिकै कहै हैं कि चेतिबेको होइ तो चेतौ नहीं तौ दिनैकै तिहारे ऊपर धारपरै है कहे गुरुवालोगनको डाकापरै है भावयह है जो गुरुवालोगनको डाका तुम्हारे ऊपर परैगो औ वह ब्रह्म को उपदेश करैगो औ तुम्हारे वह धोखा दृढ़परिजाइगो तौ तुम मारेपरोगे कहे जैसे मरा काहूको फेरो नहीं फिरै है तैसे तुमहूँ वह धोखाते काहूकेफेरे न फिरौगे अर्थात् काहूको कहा न मानोगे तौ संसारही में परेरहौगे बहुत बड़ेबड़े वही धोखाते ब्रह्ममें परिकै मरिगये साहबको न जानत भये सो आगे कहै हैं ४ ॥ इति चौवालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथपैंतालीसवींरमैनी ॥

चौ० हिरणाकुश रावण गये कंसा । कृष्णगयेसुरनरमुनिबंसा १
ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना । बड़ सबगये जोरहे सयाना २
समुझिनपरीरामकीकहानी । निरबकदूधकिसरबकपानी ३
रहिगयोपंथ थकितभोपवना । दशौदिशाउजारिभोगवना ४
मीन जाल भोई संसारा । लोहकिनावपषाणकोभारा ५
खेवै सबै मरम नहिं जाना । तहिवो कहै रहै उतराना ६
साखी ॥ मछरी मुख जस केचुवा मुसवन मुहँ गिरदान ॥
सर्पनमाहँ गहेजुवा जाति सबनकी जान ७

हिरणाकुशरावणगयेकंसा । कृष्णगयेसुरनरमुनिबंसा १
ब्रह्मागये मरमनहिंजाना । बड़सबगये जोरहेसयाना २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हिरणाकुश रावण कंस मरिजातभये औ इन तीनोंके मरवैया कालस्वरूप जे कृष्ण तेऊ मरिजातभये दशौ अवतार निरंजन नारायणै ते हैं या हेतुते मरिजानवारे तीनि कह्यो मारनवारो एकही कह्यो औ सुर नर मुनि इनके वंशवारे तेऊ मरिगये१ औ ब्रह्माआदिक जेबड़ेबड़े सयानरहैं तेऊ वेदको तात्पर्य न जान्यो मरिगये २ ॥

समुझिनपरीरामकीकहानी । निरबकदूधकिमरबकपानी ३
रहिगोपंथथकितभोपवना । दशौदिशाउजारिभोगवना ४

रामकी कहानी कहे रामनामकी कहनि जो चारोवेद कहै हैं सो काहूको न समुझिपरी धौं निरबक दूधही है धौं पानिहीपानी है अर्थात् जिनको परम पुरुष श्रीरामचन्द्र को ज्ञानभयो वेद को तात्पर्य बूझ्यो साहबमुख अर्थ लगायो सोदूधही पियतभयो औ जोजगत् मुख अर्थमें लग्यो सोपानिहीपानीपियतभयो साहब मुख अर्थ न जान्यो एते सब मरिगये ३ अपनेअपने पंथ चलावत भये जब पवन थकितभयो कहे श्वासारहितभई तब दशौदिशा कहे दशौ इन्द्रिनद्वार के जे देवता ते जातरहे तब दश द्वारको जो शरीर गाउँ सो उजारि ह्वैगयो कहे मरिगये याते या आयो कि जे नाना मत चलावै हैं मत यहै रहिजाय है जा शरिर में मरिकै गये ताही की सुधि रहै है ४ ॥

मीनजालभो ई संसारा । लोहकिनावपषाणको भारा ५

याही रीतिते मरत जियत जे मीनरूप जीवहैं तिनको यहि संसार समुद्रमें बाणी जालफन्दनको भयो सो जे जालमें फँदेते तो अविद्याके जालमें फंदेही हैं जेउबरे चाहै हैं तेजड़वत् जो मन पाषाण ताहीको है भार जामें ऐसी जो अविद्यारूपी लोहेकीनाव तामें चढ़े सो वहबूड़िहीजायगी फिरवहीसंसारमें पररहे हैं ५ ॥

खेवै सबै मर्म नहिं जाना । तहिवो कहै रहै उतराना ६

सब गुरुवाजन खेवै हैं कहेवहीधोखा ब्रह्ममें लगावै हैं औ या कहै हैं कि हममर्मजान्यो है तुमयामेंलगौ पारह्वैजाउगेसोवह जो संसारसमुद्र में अविद्यारूपी नाव मन पाषाण ते भरी बूड़िही जायगी तामें गुरू चेला दोऊबूड़िही जायँगे पार न पावैंगे अर्थात् वेदान्त आदि नाना शास्त्रनमें नाना तर्क उठाय उठाय बिचार करतऊ जाय हैं संकल्प बिकल्प नहीं छूटै तात्पर्य तो जानै नहीं औ जन्मभरि चेला पूँछतई जाय है परन्तु तबहूँ यही कहै हैं कि

तुम संसार समुद्रमें उतरानेहौ कहे उवरेहौ यह नहीं विचारै हैं कि संकल्प विकल्प छूटवेई नहीं कियो संसारते कैसेउबरैंगे ६ ॥

साखी ॥ मछरीमुखजसकेचुवा मुसवनमुहँगिरदान ॥
सर्पन माहँ गहेजुवा जाति सबनकी जान ७

जैसे मछरीके मुखमें केंचुवा मुसवानकेमुहँमें गिर्दान अर्थात् जब मूस गिर्दानको रँगदेख्यो तब लालमास अथवा लालफल जानि धरनधायो जब फूँकमारयो तब आँधर ह्वैगयो गिर्दानहीं मूसकोखायलियो औ सर्प जैसे गहेजुवा कहे छछूँदरकोधरैहै जो उगिलै तो आँधर ह्वैजायहै खायतौ मरिजाय ऐसे सबजीवनकी जातिहै जेकर्मकांडी हैं ते जैसे मछरी केंचुवाको जब खायहै तब मुहँमें वर्‍वा चुभिजायहै वाहीमें फँसिजायहै तैसे स्वर्गादिकफल की चाहकरि कर्मकरै है जनन मरन नहीं छूटै है कालखायलेइ है औ जे ज्ञानकांडी हैं ते साहबकोज्ञान तो काचो है अपने शास्त्र-बल या कहै हैं कि हम समुझायकै पाखण्डमतवारे जेहैं तिनको अपने मतमें लै आवैंगे या विचारि तिनके यहां गये सोवै धोखा ब्रह्मरूप उपदेश फूँक ऐसा मारयो कि आंधरे ह्वैगये साहब को जौन ज्ञानरहै सो भूलिगये तो उनके खावेको पै वोई उलटिकै खायगये औ उपासना कांडी जे हैं ते अपने अपने इष्टकी उपा-सना धरयो सो तौ छोड़तही नहीं बनै है डरै है कि देवता खफा न होइ आंधर न करिदेइ जो न छोड़ै तो वाही देवताके लोकगये औ फेरिआये जन्ममरन नहीं छूटै है जैसे सांप छछूँदरको धरयो परन्तु न उगिलत बनै न लीलतबनै ताते कबीरजी कहै हैं कि साहबको जानो जनन मरन उनहीं के छुड़ाये छूटैगो ७ ॥

इति पैंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ छियालीसवीं रमैनी ॥

चौ० विनसैनागगरुड़गलिजाई । विनसै कपटी औसतभाई १

विनसैपापपुण्यजिनकीन्हा।विनसैगुणनिर्गुणजिनचीन्हा २
विनसैअग्निपवनअरुपानी। विनसै सृष्टिजहांलों गानी ३
विष्णुलोकविनसैछनमाहीं। होदेखा परलयकी छाहीं ४
साखी ॥ मच्छरूप माया भई यमरा खेलहि अहेर ॥
हरिहर ब्रह्म न ऊबरे सुरनर मुनि केहिकेर ५

जे भर ब्रह्माण्डके भीतरहैं ते सबनाशमानहैं संसार समुद्रमें ऐसो माया लपेट्यो कि यह मत्स्यजीव माया ह्वै गई अर्थात् मिलिगई है कहे जीवनको शरीरमें डारिदियोहै शरीरही देखेपरेहै जीवको खोजनहीं मिलैहै भीतर बाहर मनमास आदिकदेह जड़मायही देखिपरैहै यमरा जोढीमर कालहै सो शिकार खेलैहै ताते कोईनहीं उबरैहैकोईहालहीमरैहै कोईमहाप्रलयमेंमरैहै ५॥

इति छियालीसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ सैंतालीसवीं रमैनी॥

चौ० जरासिंधुशिशुपालसंहारा। सहसअर्जुनैछलसो मारा १
वड़छलरावणसोगयेवीती। लंकारह कंचनकी भीती २
दुर्योधनअभिमानहिंगयऊ। पंडवकेर मरम नहिंपयऊ ३
मायाके डिभगे सबराजा। उत्तममध्यम वाजनवाजा ४
छांचकवैवितधरणिसमाना। यकौजीवपरतीतिनआना ५
कहंलौं कहौं अचेते गयऊ। चेतअचेतझगरयकभयऊ ६
साखी ॥ ईमाया जगमोहनी मोहिसि सब जगधाय ॥
हरिचन्द्र सतिके कारने घरघर सोगोविकाय ७

येजे राजाबड़े २ गनाय आये तेसब मारेपरे कोई उत्तमकोई मध्यम कोई निकृष्ट कर्मकरिकै गये सो कहांलों मैं कहों चित अचितके झगराते कहे चित जीव अचित माया ई दूनोंके संयोग ते सब जीव पृथ्वीमें मिलिगये अपने शुद्ध आत्माको न जानत भये यह माया जो है जगमोहनी सोसब जगको धायकै मोहिलेतभई हरिश्चन्द्र जेराजा हैं तेसत्यके कारणे विद्यामाया में

बँधिकै घर २ बिकाय जातभये पुत्र बिकानो स्त्री बिकानी ७ ॥
इति सैंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ अड़तालीसवीं रमैनी ॥

चौ० मानिक पुरहिकबीरबसेरी । मद्दतिसुनो से खतकिकेरी १
ऊजो सुनी जमनपुरधामा । भूसी सुनी पिरनकेनामा २
इकइसपीरलिखेतेहिठामा । खतमा पठैं पैगसरनामा ३
सुनिबोलमोहिंरहा न जाई । देखि मकुरवा रहेलोभाई ४
हवीवी औ नवीके कामा ।जहलोअमलसोसबेहरामा ५
साखी ॥ शेखअकरदीशेख सकरदी मानहु बचन हमार ॥
आदिअंत उत्पति प्रलय देखो दृष्टि पसार ६

प्रकट कबीरजी तो यह कहैहैं कि मानिकपुरमें रह्यो तहांसे खतकी मद्दति सुन्यो जिन पीरनके स्थान १ जमनपुरमें सुन्यो ते भूसीपारमें आये तहां मैंहूंगयों २ इकैसौ जे पीरहैंतिनकेनामलिखेहैं कि ये सब पैगंबरैकेर फातियां देइहैं औकलमापढ़ैहैं ३ सो उनके बोलसुनि २ मोपै नहीं रहाजायहै मकुरवा देखि २ ये सब भुलायरहेहैं यह जानिकै तहां मैं जाइकै कह्योकि ४ हवीकहे देवतनको खाना अथवा हबी फारसीमें दोस्तकोकहैहैं औजहांभर नामहै नवीके जे तुम लेतेहौ औ नवीके जहांभर कामहै जे पीरलोग तुमको उपदेश करतेहैं सो सबहरामहै काहेते अल्लाह तो मनबचन के परेहै ५ हे शेख अकरदी हेशेखसकरदी हमारो कहो जो वचनहै सो सब सांचमानो आदि अंतमें जो दृष्टिपसारिकै देखौ तो जहांभर मनवचनमें पदार्थ आवैहैं सो सब माया को पसारहै अल्लाह नहींहै सो कबीरजीके चौबिसपरचैसे खत केलिखे पीछे शिष्य भये सो सब कथा निर्भय ज्ञानमें बिस्तारते हैं ६ ॥ इति अड़तालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथउनचासवीं रमैनी ॥

चौ० दरकीबात कहौंदुर्वेशा । बादशाह है कौने भेशा १
कहां कूच कहँकरै मुकामा । कौनसुरतिकोकरौंसलामा २
मैंतोहि पूंछौं मूसलमाना । लाल जर्दकी नाना बाना ३
काजीकाज करौ तुमकैसा । घर २ जबै करावौ वैसा ४
बकरीमुर्गीकिनफुरमाया।किसकेहुकुमतुमछुरीचलाया ५
दर्द न जानै पीर कहावै । बैता पढ़ि २ जग समुझावै ६
कहकबीरयकसय्यदकहावै । आपुसरीका जगकबुलावै ७
साखी ॥ दिन भर रोजा धरतहौ राति हततहौ गाय ॥
यहतौखून वहबंदगी क्योंकर खुशीखोदाय ८

और पदको स्पष्टही है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ दर्दतो तिहारे दिलमें आवती नहींहै गला कटावतेमें अल्लाहको बागी चाखवैव करतेहौ अरु बैतैं पढ़ि २ कै पीरकहावतेहौ औ जगत् को समुझावतेहौ अर्थात् हौंवेपीर पीरभर कहवावतेहौ ६ सोकबीरजी कहैहैं कि एक सय्यदजोहै वह पीर गुरुवा सो जैसाआप खुआरहै औ तैसे सबको खुआरकरैहै ७ दिनको तो रोजा धरते हौ औ बंदगी करतेहौ औ रातिको गाईहततेहौ कहेमारतेहौ सो यह तौ खूनकरतेहौ बहुतभारी औ वहवन्दगी बहुतथोरी करतेहौ दिनको न खायो रातिहीको खायो क्योंकर तिहारे ऊपर खोदाय खुशीहोय ताते यह कि वह तो साहबको है सो जिनको गला तुम काटतेहौ तिनहींके हाथ तुम्हारऊ गला वह साहबकटावैंगे ८ ॥ इति उनचासवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ पचासवीं रमैनी ॥

चौ० कहतेमोहिंभयलयुगचारी।समुझतनाहिंमोहिसुतनारी १
बंशआगिलगि बंशैजरिया।भ्रमभुलाय नलधंधेपरिया २
हस्तीके फंदे हस्ती रहई । मृगी के फंदे मिरगा परई ३

लोहै लोह काटजसआना। तियकैतत्त्व तियापहिंचाना४
साखी॥ नारि रचंते पुरुष है पुरुष रचंते नार॥
पुरुषहिपूरुष जो रचै तेहि बिरलेसंसार ५

चारिउ जग मोको समुझावतभया पैसुत नारीके मोहतेकोई समुझत नहीं है १ जैसे बांसकी आगी बांसैकोजारिदेइ है तैसे सुतनारीके मोहरूप भ्रममेंभुलायकै नरधंधेमें परे जाइ हैं कोई नाना ज्ञान उपासनामें परिकै जरैहै कोई सुतनारीके धंधेमें परिकैजरैहै २ जैसे हथिनीके फंदे हाथी रहैहै मृगीकेफंदे मृगा परै है कहे फँदिजायहै ऐसे जीवके फंदेमें जीवपरैहै३ जैसे लोहते लोह कटिजाय है तैसै जीवहीते जीव यहमारो परै तियकी तत्त्व स्त्री पहिचानैं स्त्रीजो ऊटिनी ताकी तत्त्व वही जानैहै अर्थात् जीवही तेजीव भ्रमिजायहै काहेते साहबको तो जानैनहीं जीव जीवही मोंविश्वास माने मायामें मिलिकै या जीव मायाहीमें रह्यो है ताते मायाकही पदारथमें बिश्वास मानैहै ४ नारीते पुरुष रचि जाइहै कहे मायाते सब पुरुष भयेहैं औ पुरुष जोहै शुद्धसमष्टि जीव ताहीते मायाभई है औ पुरुष जोहैं शुद्धजीव सोपरमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं सबके बादशाह तिनमें रचे कहे प्रीतिकरै ऐसो कोई बिरलाहै ५॥

इति पचासवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ इक्यावनवीं रमैनी॥

चौ० जाकरनाम अकहुवाभाई। ताकर कहां रमैनी गाई १
कहैको तात्पर्य है ऐसा। जस पंथी वोहित चढ़िबैसा २
हैकछुरहानिगहानिकीबाता। बैठारहत चला पुनिजाता ३
रहैवदननहिंस्वागसुभाऊ। मनअस्थिर नहिंबोलैकाऊ ४
साखी॥ तनरहतै मन जात है मनरहते तनजाय॥
तनमन एकै ह्वै रह्यो हंस कबीर कहाय ५

जाकरनाम अकहुवाभाई। ताकरकहां रमैनी गाई १

जाको नाम अकहहै ताको तौ हिन्दू मन वचनकेपरे कहतेहैं औ मुसलमान बेचून बेचिगून बेसुभा बेनिमून कहतेहैं सो हम पूछतेहैं हिन्दूकहैहैं कि वह तो निराकार होतो तोकहैहैं कि वेद मेरी श्वासाहै शरीर न होतो तौ वेदश्वासा कैसेहोतो जोकहोवेद तो माय कहे तौ मिथ्याके वताये तुमहीं सांच पदार्थ कैसे जानिहौ जो कहै साकारहै तौ मध्यम परमान ठहराय तौ अनित्य होइहै अकहुवा नहोइगो अरु जो मुसलमान निराकार कहैहैं कि उसके आकार नहीं है तो मूसा पैगंबरको कोहतरकै पहाड़ में छँगुनी देखायो सो वह पहाड़ छारह्वैगयो जो शरीर न होतोतौ छँगुनी कैसे देखावतो कुरानमेंलिखेहै कि जिसतरफ अपनामुहँ फेरै तिसी तरफ साहेबका मुंहहै औ सबके हाथके ऊपर अल्लाहको हाथहै औअल्लाह महम्मदसों कहतेहैं कि जिसका हाथ पकरा तूने तिसका हाथपकरामैं तब सो इनलीलौते यहआवताहै कि उसके शकलहै पै जिसतरहका उसकाशकलहै सो कोईनहीं कहिसकैहै काहेते कि जो उसके मिसाल दूसरा कोई होय तौ उसकी उपमादैकै समुझाय सक्के सो उसकीशकल तो कोईनहीं समुझाय सक्ताहै लेकिन जो कोई उसकी शकल देखाहै सोई जानताहै जैसी उसकी शकलहै लेकिन वयान नहीं करसक्ताहै औ कुरान खोदाको कलामहै कहे वातहै जो वदन न होता तौ कलाम कैसे कहते सो निराकार साकारके परे अकह जो साहव है ताकी रमैनी कहे तिसके रूपादि वर्णनकी कथाजवानमें किस तरहसे कहौ वचनमें तौ आवै नहीं है अथवा जाकर नामैअकहुवाहै ताकोरूप अकहुवाबनैहै तिसको कथाकहांकहैं जोवाहूअकहुवा होयगी जो ऐसाभया तौ जानि न परैगो किसूको मिथ्या होइजाइगो तौनेको कबीरजी कहैहैं कि सबको हमको अकहुवा है कछू उसको साहवको कोई वात अकहुवा नहीं है हमताही कीकहीरमैनीगाइतहैसोजोकछुरमैनीमेंलिख्योहैसोसांचहीहै १॥

कहेको तात्पर्यहै ऐसा । जस पंथीबोहित चढ़िबैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता । बैठारहा चलापुनिजाता ३

जौनकहि आये तौनेको तात्पर्य ऐसाहै कि पांचशरीरते साहब नहीं मिलैहै काहेते मन वचनके परेहै साहब औजोहमसो साहब कहा कि जीवनको रमैनी उपदेशकरौ ताको हेतुयहहै साहबबिचारयो कि मन वचकेपरे जो मैंहौं सोबिना मेरेबताये जीव मोको नजानैंगेजोकहौ साहबकोकापरीहै न जानैंगेजीवतौसाहबकेदयालुताकी हानिहोइहै याते उपदेशकरै कहै हैं सो जौनेअकह राम नामके जपेते साहब प्रसन्नहै हंसरूपदेइहै तौन रामनाम रमैनी ते जानिकैकाहिते कि इच्छाकर भवसागर बोहितराम अधार । कहहिं कबिर हरि शरणगहु गोबछखुर बिस्तार ॥ ऐसी साखीरमैनी में लिखीहै तेहिते याअर्थ आया कि संसारसागर पारहोवैकोएक रामनामही जहाजमानिनामार्थमें जोशरणकीबिधिहैताको अनुसंधानकरत रामनामजपै २ यहरहनि गहनि कैके जैसे बछवाको खुरलोग उतरिजायहैं ऐसोसंसार सागरमें रामनामको अभ्यासकै तरिजायहैं कैसे जैसे नावकोचढ़ैया नावमेंबैठाहै पैपारहोत जायहै ऐसे रामनामको जपैया संसार सागरमें बैठोदेखो परैहै परन्तु पारको चलोजायहै ३ ॥

रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ । मनअस्थिरनहिंबोलैकाऊ ४

इसतरहके जेहैं जिनकेबदनकहे संभाषण करिबे तेजीवनको स्वागको सुभाउ कहे ब्रह्म ह्वैजावो चतुर्भुजा।दिकनके लोकमेंजाइ चतुर्भुज ह्वैजावो और नानादेवतनके लोकजाय तिनके तिनके रूपधरिबो सो मिटिजायहै संसार तो छूटिही जायहै सो वैबोलै हैं औ मन स्थिरह्वैगयोहै कहेमनको संकल्प विकल्प तो छूटैनहीं है मनते भिन्न ह्वैबो कहाहै कि संकल्प विकल्पही मनको स्वरूपहै जब संकल्प विकल्प छूटि गयो तब मनते भिन्न ह्वैगयो सो कैसे मनते भिन्नहोइगो सो साधन आगे कहैहैं ४ ॥

साखी ॥ तनरहते मनजातहै मन रहते तन जाय ॥
तन मन एकै ह्वैरहौ हंस कबीर कहाय ५.

तनजोहै वा शरीर स्थूल सूक्ष्मकारण महाकारण सोअर्थअ-नुसंधान करत रामनाम जपत २ तनते जब रहित ह्वैगयो तब मन जातरहैहै औ मन जायहै तब चारिउशरीर जात रहै हैं सो जब तनमन एकह्वैरहै कहे सिगरे तन प्राणमें बँधेहैं सोप्राणऔ मनको एकवर करिदेइसोनामजपिबिधिजानितबसंकल्प विकल्प मनको छूटिजाय है मनतो संकल्प विकुल्परूपहै सो जबसंकल्प विकल्प छूट्यो तब मन नाश ह्वैगयो तब चारिउ शरीरको हेत जो है ज्ञानसोऊ जातरहैहै तब चारिउ शरीर भिन्नह्वैजायहैं एक शुद्धआत्मा में स्थिरह्वैरहे हैं मुक्तिह्वै जाय हैं जैसे पूर्वशुद्धसम-ष्टिरूपमें रह्योहै तैसे सो ह्वैगयो जैसेसमष्टिजीव में जब रह्यो है तब जगत् को कारणरह्यो आयो है साहबको न जानिबो रूप ताते संसारही ह्वैगयोहै तैसे यह जो शरीरनमें साहबको भजन करिराख्यो साहब को जानिराख्यो सो जब मनादिक याके छूटि गये शुद्ध ह्वैगयो तब वाही भांति साहब को जाने को का-रण रहिगयो काहेते कि राम नाम को साहब मूर्ख अर्थ जानि राख्योहै सो मंगलमें साहब कहिआयेहैं कि जो रामनाम जपिकै मोकोजानै तो मैं हंसरूपदै अपनेपास बुलायलेऊं याहीते साह-बहंसरूप देइहै तब वह कायाको वीरजीव हंसकहावैहै कैसे हंस कहावैहै कि असारजेहैं चारिउ शरीर औ मन माया रूप पानी ताको छोड़िदियो औ सारजोहै साहबको ज्ञानरूपदूध ताकोग्रहण कियो औ अकह रामनाम जो मोतीहै ताको चुनन लग्यो कहे लेनलग्यो सोकबीरजी लिखवै कियोहै शब्दमें निर्मल नामचुनि चुनि बोलै अरु अकह रामनामईहै अरु अकहनिर्गुण सगुणकेपरे है श्रीरामचन्द्रईहैं तामें प्रमाण ॥ राम के नामतेपिंडब्रह्मांडसब रामकोनामसुनिभर्ममानी । निर्गुणनिरंकार के पार परब्रह्म है

तासुको नामरंकारजानी ॥ विष्णुपूजाकरै ध्यानशंकर धरै मनहि सुविरचि वहुविविध वानी । कहैकव्वीर कोइ पारपावैनहीं राम को नामहै अकह कहानी ५ ॥ इति इक्यानवीं रमैनी ॥

अथ बावनवीं रमैनी ॥

चौ० ज्यहिकारणशिवअजहुंबियोगी । अंगबिभूतिलायभेयोगी १
शेषसहसमुखपार न पावै । सोअबखसमसहितसमुझावै २
ऐसीविधिजोमोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै ३
कौनेहु भांति दिखाई देऊ । गुप्तै रहि सुभाव सब लेऊ ४

साखी ॥ कहहिं कवीर पुकारिकै सबका उहै हवाल ॥
कहाहमर मानै नहीं किमिछूटै भ्रमजाल ५

ज्यहिकारण शिवअजहुंवियोगी । अंगबिभूतिलायभेयोगी १
शेषसहसमुखपारनपावै। सोअबखसमसहितसमुझावै२

जाकेकारण शिवअंगमें बिभूतिलगाइकैयोगीभयेपरन्तुअजहूंलों वासों बियोगीहैं काहेते कि जोवियोगी न होतो तौ तमोगुणाभिमानी काहे रहते १ औ शेष सहस मुखते कहि कै पार न पायो तेई दुर्लभ खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तेहिते सहित जीवनको समुझावैहै काहेते जीवनको हित मानिकै समुझावैहै कि मोको जानिकै मेरे पासआवै संसार दुःखनपावै २ ॥

ऐसीबिधिजो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्शसोपावै ३
कौनेहुंभांति दिखाईदेऊ । गुप्तैरहि सुभाव सबलेऊ ४

साहब कहा समुझावैहै कि जैसो पूर्व कहिआयेहैं नामार्थमें लिखि आयेहैं शरनकी बिधि तैसो अनुसंधान करत रामनामजपिकै निरंतर जो छठयें मास या होइतो जोया शरीर ते करैहै छा महीनामें दर्शन सो पावैहै याही भांतिसों जो मोकोध्यावैतौ छठयेंमास मेरो दर्शन पावै कहे छठौं जो हंस स्वरूप तामें स्थिर

ह्वैकै ३ तौ कौनिउँभांतिसों मैं देखाइ देउहौं औ निशिदिन वाके साथ गुप्तरहिकै वाको सब सुभाव लेउ औ जो दृढ़होइ तौ राम नामका स्तवकहेत ताको छठौ शरीर देकै वाको प्रत्यक्ष ह्वैजाउ पाछे२रघुनाथजी नित्य वनेरहतहैं तामें प्रमाण। रामरामेतिरामेतिरामरामेतिवादिनम्।वत्संगौरिवगोर्य्यंच्यौधावंतमनुयावति ४

साखी ॥ कहहि कबीरपुकारिकै सबका उहै हवाल ॥
कहा हमरमानै नहीं किमिछूटै भ्रमजाल ५

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि जिनको शेष शिवादिक ने पार नहीं पायो यह भांति के दुर्लभ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते आजुकाल्हि ऐसेसुलभ ह्वैगये हैं कि आपई उपाय बतावैहैं कि जो ऐसो उपाय करैं तो छठयें शरीरमें मोको पाइजाईं ते साहबकोकह्यो मैं यतनो समुझावतहौं पैसबबेवकूफहैं जीवनको हवाल उहैहैकहे वहीमायाके नानामतनमेंलगे हैं वहीको विचार करै हैं जौन धोखाते संसार पायो है हमारो कहो यतनेहूपै नहीं मानै हैं सो ऐसे दुष्ट जीवनको भ्रमजाल कैसे छूटै ५ ॥

इति बावनवींरमैनी समाप्तम् ५२ ॥

अथ तिरपनवीं रमैनी ॥

चौ० महादेवमुनि अन्त न पावा। उमासहितउनजन्मगँवावा १
उनते सिद्ध साधु नहिंकोई। मन निश्चलकहु कैसेहोई २
जौ लग तनमें ऐहै सोई। तौ लग चेत न देखो कोई ३
तबचेतिहौजबतजिहौप्राना। भयाअनततबमनपछिताना ४
यतनासुनतनिकटचलिआई। मनकोविकार न छूटैभाई ५
साखी ॥ तीनिलोकमों आयकै छूटि न काहु कि आश ॥
यकआंधर जग खाइया सबजग भया निराश ६

उनते अधिक सिद्धि कौनसाध्यो है जाको मन निश्चलहोइ अर्थात् सिद्धिसाधमन निश्चल नहीं होयहै २ जबलग शरीर से

मनहै तबलग चेतन करिकै अथवा महा महादेवता जे हैं सो बड़े बड़े मुनि जेहैं ते अंतनहीं पायो जो कोऊ जान्यो है ते वोही साधन ते जान्यो है कहे ज्ञान करिकै वह परम पुरुषको कोई नहीं देखै हैं ३ कबीरजी कहै हैं कि तुम तब चेतिहौ जब प्राण छोड़ोगे तब कहां चेतौगे यह काकुहै जब अनतही जानना शरीर पावोगे तब मनको पछितावई रहिजायगो जो भया अयान पाठ होइ तौ यह अर्थहै कि तुम जो अयानेभये साहबको न जान्यो हमारकहा मानवई न कियो तौ अब पछिताना क्याहै पछितातो काहेकोहै संसार पीर सहो ४ यह सबजगत् शास्त्रनमें सुनाहै कि मौत निकट चली आवैहै हमहूँ मरिजायँगे पै मरघट ज्ञान कथैहै मनको विकार नहीं छोड़ै है ५ तीनिलोकमें आइकै सब मरिगयो परन्तु काहूकी आशा न छूटतभई एकआंधर जो है मन सोजगत्को खाइलियो सब जगत् परमपुरुषके मिलिबेको निराशह्वैगयो इहां आंधर कह्यो सो मन परमपुरुषको कबहूं नहीं देखैहै काहेते कि साहबमनबचनकेपरे है आपही शक्तिदेइहै जीवकोतबहींदेखै है६॥

इति तिरपनवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौवनवीं रमैनी ॥

चौ० मरिगयेब्रह्माकाशिकेबासी । शीवसहित मूये अबिनाशी १

मथुरा मरिगयेकृष्णगुवारा । मरि मरि गये दशौ अवतारा २

मरिमरिगयेभक्तिजिनठानी । सर्गुण में जिन निर्गुणआनी ३

साखी ॥ नाथ मछन्दर ना छुटै गोरखदत्ता व्यास ॥

कहहिं कबीर पुकारिकै सबपरेकालकेफाँस ४

ब्रह्मा जेहैं काशीके वासी शम्भू जेहैं तिनते सहित अविनाशी जे विष्णु ते मरिगये सो अबिनाशी सबकोई कहतईहै औ मरिबो कहे हैं सो उनको तो नाश कबहूं होतही नहीं है महाप्रलयमें तिरोधानह्वै पुनि प्रकटहोइहैं याते अविनाशी कह्योहै १ मथुरा

के कृष्ण औ गुवार औ दशौ अवतारतेऊ मरि कहे तिरोधान है गये कहां गये जहां श्रीरामचन्द्रके आगे हजारन ब्रह्मा विष्णु महेश दशौअवतार ठाढ़ेहैं जाकोजौने ब्रह्माण्डको हुकुमहोइहै सो तहां अवतारलै पुनि अपने अंशनमें लीनहोइहै तामें प्रमाण शिवसंहिताको अगस्त्यवचन हनुमान्प्रति॥आसीनंतमनुध्यायेसहस्रस्तंभमंडिते।मंडपेरत्नसंगेचजानक्यासहराघवम्॥ मत्स्यःकूर्मश्चकृष्णश्चनारसिंहाद्यनेकधा। वैकुण्ठोपिहयग्रीवाहरिःकेशववामनौ॥यज्ञोनारायणोधर्मपुत्रौनरवरोपिच।देवकीनंदनःकृष्णोवासुदेवोबलोपिच॥पृष्णिगर्भोमधून्माथीगोविंदोमाधवोपिच।वासुदेवोपरोनन्तःसंकर्षणइरापतिः॥ एतैरन्यैश्चसंसेव्योरामनाममहेश्वरः। तेषामैश्वर्य्यदातृत्वंतंमूलत्वंनिरीश्वरः॥इन्द्रनामासइन्द्राणांपतिःसाक्षीगतिःप्रभुः।विष्णुःस्वयंसविष्णूनांपतिर्वेदांतकृद्विभुः॥ब्रह्मासब्रह्मणंकर्ताप्रजापतिपतिर्गतिः।रुद्राणांसपतीरुद्रोरुद्रकोटिनियामकः॥चन्द्रादित्यसहस्राणिरुद्रकोटिशतानिच। अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानिच॥ब्रह्मकोटिसहस्राणिदुर्गाकोटिशतानिच।सभांयस्यनिषेवंते सश्रीरामइतीरितः॥ २ औ जिनसगुण में भक्तिकोठानीहै तेऊ मरिगये औ जे निर्गुणमान्यो है तेऊमरिगये याते यहआयो कि निर्गुण सगुणवारे भक्त द्वौमरिगये ३ औमछंदर औगोरख औदत्तात्रेय औव्यास सोई योगऊकियो छूटिबेको पै श्रीकबीरजी कहैहैं कि सबकालके फांसमें परतभये कहे महाप्रलयमेंनाश ह्वैगये महाप्रलयमें जबब्रह्मा मरेहैं तब कोई नहींरहेहैं ४॥ इतिचौवनवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथपचपनवीं रमैनी॥

चौ० गये रामअरुगये लक्ष्मना।संग न गै सीताअसिधना १
जातकौरवनलागन वारा।गयेभोज जिनसाजलधारा २
गेपांडवकुन्तीसी रानी।गे सहदेवजिनमतिबुधिठानी ३

सर्वसोनेके लंक उठाई। चलत बार कछु संग न लाई४
कुरियाजासुअंतरिक्षछाई। सोहरिचन्द्र देखिनहिंजाई ५
मूरुखमानुषअधिकसजोवै। अपना मुवलऔरलगिरोवै६
इनजानै अपनोमरि जैबै। टकादश बिढैऔरलै खैबै ७
सारवी॥ अपनी अपनी करिगये लागि न काहुके साथ॥
अपनी करिगयो रावणा अपनी दशरथनाथ ८

गयेराम अरुगये लक्ष्मना। संगन गैसीताअसिधना१

देवतन मुनिनको कहिआयेहैं अब राजनको कहैहैं काहे ते कि आगे दशअवतार कहिआयेहैं इहां पुनि रामकहे हैं तहां इहां जेजीव रामराजाभये ताको औ लक्ष्मणको महा भारत सभापर्वमें नारद युधिष्ठिरते कह्यो है राजनके गिनतीमें यमकीसभामें तिनको कहैहैं कि रामगये लक्ष्मणगये औ संगमेंसीता असिनारी न जातभई जोयह अर्थ कोई न मानै तौयह कहैहैं कि नारायणके अवतार रामचन्द्रहैं तिनहींको जाइबो कबीरकहे हैं तौ कबीरजी तौ सांचके कहवैयाहैं झूंठी कैसे कहैंगे सब रामायणमें वर्णनहै कि प्रथम जानकी शरीरते सहितगईहैं पुनिश्रीरामचन्द्र शरीरते सहित जातभये जिनकेसंग श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्ति शरीरसहित चलीजातीहैं सो जो कबीरजी व राजा जे भयेहैं तिनको जाइबेको न कहते तौ संगमें सिया असिधना न गई यह कैसे लिखते १॥

जातकौरवनलागिनबारा। गयेभोजजिनसाजलधारा२
गेपांडव कुन्तीसी रानी। गेसहदेवजिनमतिबुधिठानी३
सर्बसोनेकी लंक बनाई। चलत बारकछुसंग नलाई ४

औ कौरवनको जातबार न लग्यो औराजाभोजगये जिनधारानगरीको वसायोहै कहे साज्योहै जरासंधके पुत्रहैं भोज ते कलियुगके राजा सब आयगये २ औ पांडवराजेहैं औकुन्ती ऐसी

रानी जोहै औ सहदेव जेहैं ते सब जातभये जेपरिडतहैं तिनहूं में अपनीमति कहे बुद्धि अधिक ठानतभये कहे करतभये ३ औ सब लंका सोनेकै रावण बनायो पैचलतबार संगमें न गई ४॥

कुरियाजासुअंतरिक्षछाई । सोहरिचंद्रदेखिनहिंजाई ५

औ जाकी कुरिया अंतरिक्षमें छाईहैकहे स्वर्गमें महलबनोहै इन्द्रते अधिक सिंहासनमेंबैठेहैं ऐसेजेहैं हरिश्चन्द्र राजातेऊनहीं देखिपरै हैं अर्थात् तेऊ न रहिगये मरिगये भावयह है कि महा प्रलय भये त्रैलोकमें कोई नहीं रहिजाइहै ५॥

मूरुखमानुषअधिकसजोवै। अपनामुवलऔरलगिरोवै ६
इन जानै अपनो मरिजैबै। टकादशबिढैऔरलैखैबै ७

मूरुख जो मनुष्यहै सो संजोवै कहे अधिक सम्यक् प्रकारते जोवै है अर्थात् और को मरिबो कहे आजा मरिगयो बाप मरि गयो इत्यादिक सबको मरिबो देखतई जायहैं औ रोवैहैं अपने मरनकी चिन्तानहीं करैहैं ६ यानहींजानैहैं कि जेतेदिन बीतिगये जेतने मरिगये औ मरिही जायँगे यहै बिचारै हैं कि और दशटका बिढवैं जाते बहुतदिन बैठेखायँ ७॥

साखी॥ अपनी अपनी करिगये लागिनकाहुके साथ॥
अपनी करिगयोरावणा अपनी दशरथनाथ ८

जीतिजीति पृथ्वी सबै अपनी अपनी करिकै गये यशीदशरथराजा ते अधिक कोई न भयो जाकी सब प्रशंसा करैहैं उनके सुकृतको यश जगतही में रहिगयो उनके साथ न गयो औअयशीरावणते अधिक कोई न भयो जाकी सब कोई निन्दाकरै हैं जाके दुःकृतको अयश जगतहीमें रहिगयो ८॥

इति पचपनवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ छप्पनवीं रमैनी ॥

चौ० दिनदिन जरै जरलके पाऊ । गाडे जाइन उमगै काऊ १
कंधन देइ मसखरी करई । कहुधौंकौनिभांतिनिस्तरई २
अकरमकरै करमको धावै ।पढ़िगुणिवेदजगतसमुझावै ३
छूछेपरे अकारथ जाई । कहकबीर चितचेतहुभाई ४

दिन दिन जरैजरलके पाऊ । गाड़ेजाइ न उबरैकाऊ १

कबीरजी कहैहैं कि जे रोजरोज ज्ञानाग्नि करिकै कर्मकोजारै हैं औ अपने जीवत्वको जारैहैं कि हम ब्रह्म ह्वैजायँ सो जरल के पाऊ कहे न काहूके कर्मही जरे न कोई ब्रह्मही भयो अथवा जरलके पाऊ कहे जारिगयेहैं कर्म जाको अर्थात् कर्मही नहींहै ऐसो जो ब्रह्म ताको पायोहै अर्थात् कोई नहीं पायोहै जो कहो जड भरतादिक पायो है तौ वेजो ब्रह्महीं ह्वैजाते तौ दूसरोमानिकै रहूगणको कैसे उपदेशकरते कपिलदेव सगरकेलरिकनकाहेजारिदेते औ सनकादिक जे बिजयको काहे शापदेते सो तुम ब्रह्मह्वैवेकी आशा न करो जो संसार परे रहौगे तौ कबहूं सत्संग पायकै उद्धारहू होइ जाइगो जो ब्रह्मरूपी गाड़में परौगे तौ गड़िजाउगे कबहूं न उमगौगे अर्थात् तिहारो कतहूं उद्धार न होइगो १ ॥

कंधनदेइ मसखरी करई । कहुधौंकौनभांतिनिस्तरई २

कहो या कौनी भांति ते जीवको निस्तारहोय समीचीनसाधुनको सत्संग तो मिलै नहींहै गुरुवा लोगको सत्संग मिलै है ते मसखरी करैहैं मसखरी कौनकहावै जो आप तो जानै औऔरेनको ठगै सो गुरुवालोग आपतोजानैहैं कि याझूठाब्रह्ममें हम लागे हमारे हाथ कछुवस्तु न लागी ब्रह्म न भये परन्तु जोसाहवमें लगेहै जीवतिनकोकांधातोनदिये अर्थात् उनकोज्ञान अधिक पुष्ट तो न किये कि भलेलगेहैं तुम मसखरी किये कि जो तुमहूं अहंब्रह्मास्मि मानौ तौ तुमको अनेक प्रकारकी ऋद्धिसिद्धिप्राप्त

होइ है साहव को ज्ञान छांड़िदेहु या भांति समुझाय नरक में डारिदिये २ ॥

अकरमकरैकरमकोधावै। पढ़िगुणिवेदजगतसमुझावै३
छूंछे परै अकारथजाई। कह कबीर चित चेतहुभाई ४

कैसेहैं वे गुरुवा लोग करतते अकरममतहै कि हमको करमत्यागहै हम संन्यासीहैं हम ज्ञानीहैं औ करम करिवेको धावे हैं औ वेदको पढ़ि गुनिकै जगत्‌को समुझावैहैं कि निःकर्महोउचाहईते सब बिकारहै चाह छोड़िदेउ औ आप भाजीकेलिये बजारमें झगरैहैं सो उनके कहे जीवनको कैसे समुझिपरै ३ उनको उपदेश अकारथई जायहै औ जोसुनैहै सोछूंछई परैहै अर्थात् कछूवस्तु हाथनहीं लगैहै सो कबीरजी कहैहैं कि हे भाई चितचेत करो जेहितेकनककामिनीरूपमायाते औधोखाब्रह्मते बाचिजाउ४

इति छप्पनवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ सत्तावनवीं रमैनी ॥

चौ० कृतियासूत्रलोक यकअहई। लाख पचासके आगेकहई १
विद्या वेद पढ़ै पुनि सोई। बचन कहत परतक्षै होई २
पहुंचि बात विद्या के वेता। वाहु के भर्म भये संकेता। ३
साखी ॥ खग खोजनको तुमपरे पीछे अगम अपार ॥
बिन परचैकिमि जानिहौ झूठाहै हंकार ४

कृतियासूत्रलोकयकअहई। लाखपचासकेआगेकहई १

अथ कृतिया कहे यह कृत्तिम जो है कर्म अहं ब्रह्म मानिवो सो यहलोक में एक सूत्रके बरोबरहै कहेरसरीकेबरोबरहै जीवनके बाँधिवेको मंगलमें कहेउ आयेहैं कि ब्रह्ममेंअणिमादिकसिद्धिहोइहैं सो वह कृत्यकरिकै कहेब्रह्ममानिकै पचासलाख वर्षके आगेकी कहैहैं सो पचासलाख यह उपलक्षणहै अर्थात् भूतभविष्यवर्तमान सब कहैहैं १ ॥

विद्या वेद पढ़ैपुनि सोई। बचन कहतपरतक्षै होई २
पहुंचि बात बिद्या के वेता। बाहुके भर्मभये संकेता ३

विद्या जोहै वेद जोहै सो संपूर्ण पढ़िलेइ अर्थात् आइ जाइ तब जौनबात कहैहैं तौनपरतक्ष होइहै कहेबाक्य सिद्धिह्वैजाइ है २ वै विद्याके वेत्ताकहे जनय्या जे लोगहैं तेवह बातको पहुंचि कहे पहुंचत भये अणिमादिक सिद्धि होत भई औब्रह्मको जानतभये परन्तु साहबको जोहै साकेत लोक ताके जानिबेको उनहूंको भ्रमभयो अर्थात् साहबको लोक न जानतभये ३॥

साखी॥ खगखोजन को तुमपरे पीछे अगमअपार॥
बिन खरचै किमिजानिहौ झूठाहै हंकार ४

औखग जोहै हंसतिहारो स्वरूप ताके खोजिबेको तुमचल्यो कि हम अपनेआत्माको स्वरूपजानैं सो साहब अगमअपारजो धोखाब्रह्मसों लग्योहै वाहीको अपनोस्वरूप मानिलियोहै जब कुछ संसार तुमको छूट तब अगमअपार जो धोखाब्रह्महै ताही को अहंब्रह्मास्मि मानिकै बैठ्यो सो वह अगमहै काहूकी गम्य नहींहै अपारहै अर्थात् झूठाहै भाव यहहै कि जब साकेत लोक को जानौगे तब साकेत निवासी जेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिन को जानौगे तब वै हंसस्वरूपदै अपने धाम को लैजायँगे तबहीं जन्म मरणतेरहिहितहोउगे तबहंसस्वरूपपावोगे औरीभांति संसार ते न छूटौगे न सिद्धिप्राप्त भये न ब्रह्मभये तामें प्रमाण गोसाईं तुलसीदासजी को दोहा॥ बारिमथे घृतहोइबरु सिकताते बरु तेल। बिनहरिभजन न भवतरै यह सिद्धांत अपेल १ औकबीरहूजी को प्रमाण॥ रामविनानरहूवैहो कैसा। बाटमांझ गोबरौ राजैसा ४॥ इति सत्तावनवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ अट्ठावनवीं रमैनी॥

चौ॰ तैसुत मानु हमारीसेवा। तोकहँ राजि देहुहो देवा १

गम दुर्गम गढ़देहु छुड़ाई। अवरोबात सुनो कछु आई २
उत्पति परलै देउ देखाई। करहुराजसुखविलसहुजाई ३
एकोबार नजइहै वांको। बहुरिजन्मनहिंहोइहै ताको ४
जायपाय देहौसुखधाना। निश्चयवचनकवीरकोमाना ५

साखी॥ साधुसन्त तेई जना जिन माना वचन हमार॥
आदिअन्त उत्पति प्रलय सब देखाहृष्टिपसार ६

तै सुत मानु हमारीसेवा। तोको राजिदेहुं हो देवा १
गम दुर्गम गढ़देहुछुड़ाई। अवशोबात सुनोकछुआई २

वही लोकके गये जन्म मरण छूटैहै सो कबीरजी साहिबैकी उक्ति कहैहैं साहब कहैहैं हे सुत हे जीव तू हमारिही सेवा मानु जिन देवतनको तैं चाहैहै कि मैं इनको दासहौं तिन देवतनकी राज्यमें तोको देहुंगा अर्थात् मेरोपार्षद जब होयगो तब सब के ऊपर ह्वै जायगो ते देवता तुम्हारही सेवाकरैंगे १ औ गमजो है जगत् दुर्गम जोहै निर्गुण ब्रह्म ये दूनौ धोखाजे गढ़हैं ते तोकोछोड़ाय देउंगो अर्थात् मायाते रहित तोको करिदेउंगो औ वहधोखा ब्रह्ममें न लगन देउँगो जोजीवनको संसारी करिदेइहैं तबसगुण निर्गुण के परे जो और कछुबात है सो मेरे पार्षद कहैहैं सो तैहू मेरे नगीच आइकै सुनैगो २॥

उतपतिपरलैदेउदेखाई। करहुराज्यसुखबिलसहुजाई ३

अरु उत्पत्ति प्रलय जौनीभांति सों मेरेप्रकाशकेभीतर समष्टिजीव ते होइहै सो मैं ऊँचेते तोकोदेखाइदेउँगो औजगत्में आयकै जो मोको जानिकै मेरीभक्ति करै हैं सो सुखहै सो तैंहू मेरी भक्तिकरिकै संसाररूपी राज्यमें जाइकै सुखसोंविलसैगो तोको संसारबाधा न करिसकैगो जगत्रूपीराजिके विषयानंद ब्रह्मानंद आदिक जे सुखहैं ते सुख नहीं हैं जो कहो साहब के लोकजाइ फेरि कैसे आवैगो उहांगये तो अपुनरावृत्ति कहिआये हैं तोकबीरजी बीरसिंह देवको साहब के लोक लैगये लोक देखाइकै पुनि

लैआइकै शिष्य करतभये औ श्रीकृष्णचन्द्र गोपनको आपनो लोकदेखाइ पुनि लैआये हैं उनको जगत्‌बाधा नहींकरिसकैहै वे स ह यलोकहीमेंहैं काहेते कि साहबको लोकप्रकाशसर्वत्रव्यापक है साहब की सकल सामग्री साहब के रूपई वर्णन करिआये हैं साहब लोकप्रकाश सर्वत्रपूर्ण है तौ साहबको लोक औ साहब सर्वत्रपूर्णई है जे साहबको जानैं हैं औ जगतऊमें हैं तौ साहब के लोकई में बने हैं उनको संसार बाधा नहीं करिसकै ३ ॥

एकोबार न जैहै बांको । बहुरिजन्मनहिं होइहै ताको ४
जायपायदेहौसुखधाना । निश्चयबचनकबीरकोमाना ५

एकोबार न बांको जाइगो जन्म मरण तेरो छूटिही जायगो फेरि जन्म मरण न होइगो ४ औ सम्पूर्ण जे पापहैं तेरहैंगे औ सुखको धाना कहे समूह तोको देउँगो सोसाहबकहैहैं कि हेजीव कबीरजी को बचन तुम निश्चय मानिकै मेरेपास आवो ५ ॥

साखी ॥ साधुसन्त तेईजना जिनमाना बचनहमार ॥
आदिअन्तउत्पतिप्रलय सबदेखादृष्टिपसार ६

जे हमारोकह्यो बचन प्रमाण मान्यो है तेईसाधुहैं कहेसाधन करणवारे हैं औ तेई संतहैं तिनहीं के मनादिक शांतह्वैगये हैं औ तेई आदिअन्त उत्पत्ति प्रलय सब बात दृष्टि पसारिकै देख्यो है अर्थात् सब बात जानिलियो है ६ ॥

इति अट्ठावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ उनसठवीं रमैनी ॥

चौ० चढ़तचढ़ावत भड़हरफोरी । मननहिंजानै को करिचोरी १
चोर एक मूसल संसारा । बिरलाजनकोइजाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमिलै बारी । एकै राम सकल रखवारी ३
साखी ॥ पाहन ह्वै है सबचले अनभितियनको चित्त ॥
जासों कियो मिताइया सोधनभे अनहित्त ४

चढ़तचढ़ावतभइहरफोरी। मननहिंजानैंकोकरिचोरी १
चोर एकमूसलसंसारा। बिरलाजनकोइजाननहारा २
स्वर्ग पतालभूमिलैबारी। एकैराम सकल रखवारी ३

गुरुवालोग आप प्राण चढ़ावैंहैं अरु औरको सिखैसिखैप्राण चढ़वावैंहैं सो यही प्राण चढ़त चढ़त भइहरजोब्रह्मताकोफोरिके वही धोखा ब्रह्म में लीनभये मनते या नहीं जानैहैं कि साहब के ज्ञान की चोरी को करैहै वहीधोखाब्रह्महो तो करै है यहनहीं जानैहैं वाहीमें लगेहैं १ सोचोर एकजोधोखाब्रह्महै सोसंसारभरेको मूसिलियो अर्थात् ब्रह्महो के ज्ञानको सबदौरै हैं परमपुरुष को नहीं दौरैहैं तेहिते कोई बिरला जन परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकोजानैहै २ जेश्रीरामचन्द्र एकस्वर्गपाताल भूमिको बारीकेसम रखवारी कहे रक्षा करैहैं इहां एकैराम रखवारहै यह जो कह्यो ताते बांधनवारे धोखा देनवारेबहुतहैं पै बंधनते छोड़ावनवारे एकश्रीरामचन्द्रईहैं दूसरोनहींहै स्वर्गतेऊपरके भूभूमिते मध्यके पातालते नीचेके लोक सबआये ३ ॥

साखी ॥ पाहनह्वैकै सबचले अनभितियनकोचित्त ॥
जासोंकियो मिताइया सोधनभे अनहित्त ४

अनभितिया को चित्तजो धोखाब्रह्महै तौनेमें लगिकै संपूर्णजे जीवहैं ते पाहनह्वैगये कहे जड़वत् ह्वैगयेबंधनते छोड़ावनवारे श्रीरामचन्द्रको न जानतभये जौनब्रह्मते सबजीव मिताईकियो सो अनहितभये कहे संसारमें डारनवारो धोखई ठहरयो ४ इति उनसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ साठवीं रमैनी ॥

चौ० छाड़हुपतिछाड़हु लबराई। मनअभिमानटूटितबजाई १
जनचोरी जो भिक्षाखाई। फिरिबिरवापलुहावनजाई २
पुनिसंपतिऔपतिको धावै। सोबिरवा संसार लैआवै ३

साखी ॥ झूठा झूठेके डारहू मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारण मैं कहतहौं जासों होयउबार ४

छाड़हुपतिछाड़हुलबराई। मनअभिमानटूटितबजाई १
जनचोरीजोभिक्षाखाई। फिरि बिरवापलुहावनजाई २
पुनिसंपतिऔपतिकोधावै। सोबिरवासंसारलै आवै ३

कबीरजी कहैहैं कि नाना देवता जो पतिमानौहौ औ लबराई जो धोखाब्रह्म है ताको छोड़िदेउ न छोड़ोगे तौ पुनिकै जबसंसारआवोगे तबतोअभिमान दूरिहोजाय अर्थात्नानादेवतनहींकी सुधि रहिजायगी न धोखा ब्रह्महीकी सुद्धिरहिजाइगी १ काहेते कहै हैं कि ब्रह्मको छोड़िदेउ सो आगेकहैहैं जीव या सनातनको साहबको है सो जे जन साहबते चोराइकै और देवतनते भिक्षा मांगि खायहैं औ फिरि फिरि बिरवा रूप देवतनको पलुहावैंकहे प्रश्नकरे जाय हैं पुनि उनहीं सों सम्पतिकहे नाना ऐश्वर्यहोय सिद्धि होइ औ पति कहे राजाहोय इंद्रहोय याको धावै हैं सो वे बिरवा रूप जे देवता हैं ते फिरि फिरि संसारमें लैआवै हैं जन्म मरण होय है ३ ॥

साखी ॥ झूठाझूठे के डारहू मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारणमैं कहतहौं जासोंहोय उबार ४

सो झूठा जो ब्रह्महै ताको झूठसमुझिलेउ अरु देवता संसार ही में हैं सो यह संसार जोहै ताको मिथ्या मानिलेउ औसबको कारण जौन सर्वत्रहै जाको पूर्वकहि आयेहैं कि ऐकै राम रखवारी करैहैं सो मैंहींहौं तिहारो पति तुम मो में लगौ जाते तुम्हारो उवार ह्वै जाइ जिनको तुमपति मानिराख्यो है ते तुम्हारे पतिनहीं हैं वे बांधने वारे हैं ४ ॥ इति साठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ इकसठवीं रमैनी ॥

चौ० धर्म कथा जो कहतै रहई। लबरी नितउठि प्रातै कहई १

लवरिबिहानेलवरीसांझा। यकलावरिबसहृदयामांझा २
रामहुँकेर मर्म नहिं जाना। लैमति ठानी वेदपुराना ३
वेदहुकेर कहानहिं करई। जरतै रहै सुस्त नहिं परई ४
साखी॥ गुणातीतके गावते आपुहि गये गमाय॥
माटीतन माटीमिल्यो पवनहि पवन समाय ५

धर्मकथाजो कहतैरहई। लवरीनितउठिप्रातैकहई १

धर्म की कथा जो कहतई रहे हैं कि स्त्री आपने पतिही को जानै और दूसरे को पति करि न जानै परन्तु धर्म कछु जानैनहीं हैं धर्म कहां है कि जीव यह साहबकी शक्तिहै याके पति साहब हैं तामें प्रमाण॥ अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिंविद्धिमेपराम्। जीवभूतांमहाबाहो ययेदंधार्य्यतेजगत्॥ इतिगीतायाम्॥ वासुदेवःप्र-माणैकः स्त्रीप्रायमिदंजगत्॥ दूसर कबीरका प्रमाण॥ दुलहिन गावोमंगलचार। हमरेघरआयेरामभतार॥ तनरतिकरिमैं मन रतिकरिहौंपांचौतत्त्वबराती। रामदेवमोहिंब्याहनऐहैं मैंयौवन मदमाती॥ सरिरसरोवरवेदीकरिहौंब्रह्मावेदउचारा। रामदेवसंग भावरिलेहौं धनिधनिभागहमारा॥ सुरतैंतीसौ कौतुकआये मुनि वरसहसअठाशी। कहैकबीरहमब्याहिचलेहैंपुरुषएकअविनाशी॥ तेसाहबको या जीव नहीं जानैहै और औरमें लगेहै बड़े प्रातः-कालउठिकै लवरी कहैहै कि हमहीं रामहैं दूसरो नहींहै अथवा जब जीव जन्म लेइ है सो प्रातःकाल है जब गर्भ में रह्यो तब साहब ते कह्योहै कि तुम मोको गर्भ ते छुड़ायो मैं तिहारोभजन करौंगो औ जब गर्भते निकरयो जन्मलियो तब वहबात लवरी कै डारयो मैं कहा कह्यो है साहब को भजन न कियो कहां कहां करन लग्यो १॥

लवरिबिहानेलवरीसांझा। यकलावरिबसहृदयामांझा २
रामहुंकेर मर्मनहिं जाना। लै मतिठानी वेद पुराना ३

सो यहितरह ते लवरी बिहाने कहै है औ सांझकै लवरीकहै

है कहे आपन औ गुरुके औ देवताके ऐक्यता मानै है काहेते तीनि हैं कि एक लबरीजोहै मायासो हृदयमें बसैहै सोई सब लबरी कहावैहै २ सोभला ब्रह्मको मर्म नजानै तो न जानै काहेते कि वहतो धोखाहै जो कछू वस्तु होइ तौ जानै परंतु सांच औ सर्वज्ञ पूर्ण औ सबते श्रेष्ठ ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जो या मर्महै कि जोकोई मेरे सन्मुख होइ ताको मैं छुड़ाइ लेउँ या जीवन जानतभये साहब छुड़ाइ लेइहै तामें प्रमाण ॥ अवहीं लेउं छुड़ायकालते जोघटसुरति सम्हारो ॥ याहीहेतु सुरतिदियो है मतिलैके कहे ग्रहण करिकै वेदपुराणके अर्थ ठानैहै कहे अपने सिद्धांतनमें लगाय देइहै ३ ॥

वेदहु केर कहानहिं करई। जरतैरहै सुस्तनहिं परई ४

सिद्धांततौ एकैहोइहैसाहबको सिद्धांतजोतात्पर्यवृत्ति करिकै यह कहैहै सो भला न जानै मुक्ति न होइ परन्तुवेदमें जोसुकर्म लिखेहैं सो करिकै नरकते तौ बचै सो वेदहू की कही जो विधि निषेधहै सोऊ नहीं करैहै ऐसो मूढ यह जीव शोकरूपी अग्नि में जरते रहैहै स्वस्त नहीं परैहै सुचित्त नहीं होयहै अर्थात्इहां कुछ छोड़यो उहां धोखाजोब्रह्महै तहौं कुछ न समझ्यो औईश्वर जहैं तिनहूं को काहू न मान्यो औ सबके रखवार दयालु जे श्री रामचन्द्रहैं तिनहू छोड़यो तेहिते मूर्ख ऊंटके पाद ह्वैगयो न जमीनको न आसमान को वाको कौन बचावै जो कहो आत्मा को चीन्हिके बचिजाय तौ जो आत्मामें एती शक्तिहोती तौबंधन में न परतो आपही बचिजातो ताते सबके रखवार जे साहब हैं तिनहींके बचाये बचैहै ४ ॥

साखी ॥ गुणातीतके गावते आपुहि गये समाय ॥
माटीतन माटीमिल्यो पवनहि पवनसमाय ५

गुणातीत जोसाहबको लोक ताके गावते कहेप्रकाशतेजहांसमष्टि जीवरहैहै तहां आपुही रामनाम को साहबमुख अर्थगमाय

कै संसार सुख अर्थ करि संसारी ह्वै गये शरीर धारणकियो पुनि माटीमें माटी मिलिगयो औ पवनमेंपवन मिलिगयो अर्थात् ते पुनि जैसेके तैसे ह्वै गये औ जो गुणातीतके गावते यह पाठ होइ तौ यह अर्थ है गुणातीत जो है धोखा ब्रह्म ताको गावत गावत साहबको गवांइ जातभये ५ ॥ इतिइकसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥

अथ बासठवीं रमैनी ॥

चौ० जोतोहिं कर्त्ता वर्ण बिचारा। जन्मत तीनिदण्ड अनुसारा १
जन्मत शूद्र भये पुनि शूद्रा। कृत्रिम जनेउ घालि जग दुंद्रा २
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये। और राह तुमकाहे न आये ३
जो तू तुरुक तुरुकिनी जाया। पेटै काहे न सुरति कराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई। ताकर दूध देहु बिलगाई ५
छांडुकपटनलअधिकसयानी। कहकबीरभजुशारँगपानी ६

जोतोहिंकर्त्तावर्णबिचारा। जन्मततीनिदण्डअनुसारा १

जोतोको ब्रह्मा वर्णको बिचारकियो कि ये ब्राह्मणहैं क्षत्री हैं बैश्य हैं शूद्र हैं मुसल्मान हैं सो येतो शरीर के धर्म हैं तीनिदंड जे हैं संचित क्रियमान प्रारब्ध तिनके कर्मकेअनुसार ते जन्मत कहे जन्म लेइ हैं १ ॥

जन्मतशूद्रभयेपुनिशूद्रा। कृत्रिमजनेउघालिजगदुंद्रा २

जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये। औरराहतुमकाहेनआये ३

जब प्रथम तेरो जन्म होइहै तबतैं शूद्रई रहै है काहेते कि संस्कार कुछनहीं रहैहै औ जब मरैहै तब अशुद्धईरहैहै शिखाजनेऊ दूनो आगीमें जरिजाइहैं तबहूंशूद्रै ह्वै जाइहै सो कृत्रिम जनेऊ पहिरि के तैं जगतमें द्वन्द मचाइ दियोहै कि हम ब्राह्मण हैं ये क्षत्री हैं ये बैश्यहैं येशूद्रहैं २ जो कहो हम जन्म करिकै ब्राह्मण हैं ब्राह्मणीते उत्पन्न हैं और राह ह्वै काहे आये ब्रह्मांड फोरि कै आवते आंखी के राह ह्वै आवते अशुद्ध राह ह्वै काहेआये अर्थात् न

ब्राह्मणी आपनी शक्तिते उत्पन्न करिसकै औ न तैं आपनी शक्ति ते आइसकै कर्महीते ब्राह्मणी उत्पन्नकरै है कर्महीते तैं आवै है तेहिते जन्मते तौ शूद्रहौ संस्कारते द्विजभये वेद अभ्यास कियो तव विप्रभये औ जब ब्रह्मको जानैगो तबब्राह्मण कहावैगो ताते कर्महीते ब्राह्मणत्व तोमें आवै है अहंब्रह्म तो धोखही है परब्रह्म जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूंको तैं न जान्यो सो तैं ब्राह्मण कैसेहोइ-गो जबतैं साहबको जानैगो तबहीं ब्राह्मण होइगो ३ ॥

जोतूतुरुकतुरुकिनीजाया । पेटैकाहेनसुरतिकराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूधदेहु बिलगाई ५

औ जो तू कहैहै कि हम तुरुकिनीते उत्पन्नहैं तौ पेटै काहेन सुरति करायो तेहिते तुरुकिनीके पेटते भयेते मुसल्मान नहीं है ४ कारीपीरी गाइको दूध मिलायकै कोई बिलगावैतौ का बि-लगहोइहै ऐसे आत्मातो एकही जातिहै हिन्दू तुरुक नहीं ह्वै सकै है ५ ॥

छांडुकपटनलअधिकसयानी । कहकबीरभजु शारंगपानी ६

आपनी सयानी अधिककरिकैजोकपट करिराख्योहै सोछांड़ि दे बिचारिकै देखु तैंतो आत्मा न हिंदू है न तुरुकहै तैंजाको अंश है ऐसे शारंगपाणि जे साहबहैं ताको भुज ताकी सेवा करु शारंग पाणी जो कह्यो ताको यह हेतुहै कि धनुषबाण लिये तेरीरक्षा करिवेको तैयार हैं औरै औरैमें लगेहैं जो साहबमें लागैहै सोई सबते श्रेष्ठ होयहैं तामें प्रमाण ॥ बिप्रात्द्विषट्गुणयुता दरविंद नाभपादारविंदविमुखात्श्वपचंवरिष्ठम् ॥ मन्येतदर्पितमनोवचने हितार्थप्राणंपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः१ इतिभागवते ॥

इति बासठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ तिरसठवींरमैनी ॥

चौ० नानाबर्ण रूपयककीन्हा । चारिबर्ण उनकाहुनचीन्हा १

नष्टगये करता नहिं चीन्हा । नष्टगये औरहि मन दीन्हा २
नष्टगये जिन वेद बखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
बिमलषकरैनयननहिंसूझा । भो अयानतबकछुव नबूझा ४
साखी ॥ नाना नाच नचाइकै नाचै नटके वेष ॥
घट घट अविनाशी बसै सुनहु तकी तुमशेष ५

नानावर्णरूपयककीन्हा । चारिवर्ण उनकाहुनचीन्हा १
नष्टगयेकरतानहिंचीन्हा । नष्टगयेऔरहि मनदीन्हा २
नष्टगयेजिनवेदबखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
बिमलषकरैनयननहिंसूझा । भोअयानतबकछुवनबूझा

साखी ॥ नाना नाच नचाइकै नाचै नटके वेष ॥
घटघटअविनाशीबसै सुनहुतकीतुमशेष ५

वर्ण-धर्म खंडनकरिआये अब सब वर्णको एक मानिजे साहबको भूलैहैं तिनको खंडनकरैहैं नानारूप जेजीवहैं तिनको एक वर्ण कहे एक रंग करिदेत भयो अहंब्रह्मास्मि करिकै सब मानत भयो कि हमहीं सबहैं दूसरो नहीं है चारिउवर्ण वहीको वर्णन करतभये यह न जानतभये कि यह धोखा ब्रह्मको खाइलेइहै १ फिरि फिरि सब जीव नष्ट ह्वै गये कहे मरिगये उद्धार कर्त्ता जो साहब है ताको न चीन्हतभये औ औरहि जो वा धोखा ब्रह्म है तौनेमें मनदैकै नष्ट ह्वैगये अर्थात् लीन ह्वैगये साहबको तो जाने नहीं फिर संसारीभये २ जे वेदको बखानि बखानिकै पढ़िपढ़िकै औरनको अर्थ सुनावैहैं तेवेदपढ़्यो परंतु भेद न जान्यो कहे वेदको तात्पर्य जे साहब हैं तिनको न जान्यो तेहिते नष्ट ह्वैगये सब वेदको भेद साहबहै तामें प्रमाण ॥ सर्ववेदायत्पदमामनन्ति ३ विमलष जो साहब मन वचनके परे ताको खंकहे आकाशवत् शून्य ज्ञान करै है कि वह नहीं है आकाशवत् ब्रह्मही पूर्णहै सो उनके ज्ञान नेत्र तौहईनहींहैं साहब कैसे सूझिपरै जब न सूझि

परयो तब अज्ञानह्वैगये नेतिनेति कहनलगे कि अकथहै कबीरका प्रमाण॥ वेद विचारिभेदजो जानै। सतगुरु मर्मशब्द पहिचानै ४ गुरुवा लोग कहैहैं कि वही जो है अविनाशी सो सबके घटघटमें सबको नाचनचावैहै औनटकेवेषआपौ नाचैहै सोकबीरशेखतकी सोंकहैहैं कि हेशेखतकी जोसबकोनाचनचावैगो आपनटकेवेषना- चैगोसो अविनाशी कैसेहोइगो काहेते कि नटएकवेषलैआयो पुनि वह वेष छोड़िके और वेषलैआयो याहीभांति नानावेष नट धारण करैहैं तेसब अनित्यहैं नानावेषधरिबो तो मायाके गुणहैं वह माया के परे कैसे होइगो औ जब मायाते परे न होइगो तौ अविनाशी कैसे होइगो सो हे शेखतकी तुमसुनो वाहू बिचारकरत करतजो शेष रहिजायहै सो तुमहौ वातो तुम्हारही अनुभवहै अथवा तुम शेषहौ सो कार निराकार के परे जो साहब है ताको तुम शेषहौ कहे अंशहौ ५ इति तिरसठवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ चौंसठवीं रमैनी॥

चौ० काया कंचन यतन कराया। बहुतभांतिकै मन पलटाया १
जो सौबारकहौं समुझाई। तहिबोधराछोड़ि नहिंजाई २
जनकेकहे जोजनरहिजाई। नवोनिद्धि सिद्धी तिनपाई ३
सदाधर्म तेहि हृदयाबसई। राम कसौटी कसतै रहई ४
जोरि कसावै अंतै जाई। तौ बाउर आपुहि बौराई ५
साखी॥ ताते परी कालकी फांसी करहु आपनो शोच॥
जहां संत तहँसंत सिधावै मिलिरहे पोचैपोच ६

कायाकंचनयतनकराया। बहुतभांतिकैमनपलटाया १
जोसौबारकहौंसमुझाई। तहिबोधराछोड़ि नहिंजाई २
जनकेकहेजोजनरहिजाई। नवोनिद्धि सिद्धीतिनपाई ३
सदाधर्मतोहिहृदयाबसई। राम कसौटी कसतैरहई ४

जोरि कसावै अंतै जाई। तौ बाउर आपुहि बौराई ५

साखी॥ तातेपरी कालकी फांसी करहु आपनोशोच॥
जहांसंततहँसंत सिधावै मिलिरहेपोचैपोच ६

कवीरजी कहै हैं कि ई जीवनके कायाको हमबहुत यतनकरवाया औ वहुत भांति ते मन पलटाया कि तू धोखा को त्यागि कंचन आपने स्वरूप को जानो १ याबात यद्यपि मैं सौवार समुझाऊंहौं ताहू पै ऐसो धोखाको धर्यो कि छोंडिनहीं जाय सो जे जनगुरुवाजनकेकहेरहिजायँ हैं धोखाकोनहींत्यागै हैं २ तेनवोनिछिपावैहैं औ निर्गुण सगुणकेपरे मैं जोबातकहौहौं ताकोकहांवूझै ३ जे मेरोकह्योवूझै हैं किहमसाहवकेहैं याधर्मजिनकेहृदयमेंवसै हैतेसाहवके रूपकसौटीमें आपनो कञ्चनस्वस्वरूपकसतईरहै हैं औ जे साहव नहीं कसैहैं गुरुवालोगनके कसावै जाइहैंते वे वाउर ऊनिराकारब्रह्म तामेंआपही बौरायजाय हैं जो औरको और कहै सो वाउरहै ४। ५ सो हे जीवो तुम साहव के होइ कै धोखा में लागे ताहीते कालकी फांसीमें परेहौ सो आपने छूटिवे को शोच करौ देखो तौ जहां संत रामोपासकहैं तहैं संतजाइहैं अपनोस्वरूपजानि छूटिजाइहैं जे गुरुवालोगनको उपदेश लेइहैं ते जीव पोचै पोच मिलिरहे हैं ६॥ इति चौंसठवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ पैंसठवीं रमैनी॥

चौ० अपने गुणके औगुण कहहू। यहै अभाग जो तुमनविचरहू १
तुमजियरा वहुतैदुखपाया। जलविनमीनकवनसचुपाया २
चातृकजलहल भरे जोपासा। मेघ न वरसै चलैउदासा ३
स्वांग धर्यो भवसागर आसा। चातृकजलहलआशेपासा ४
रामै नाम अहै निज सारू। औ सब झूठ सकल संसारू ५
किंचित है सपनेनिधिपाई। हियनमाय कहँ धरै छिपाई ६
हरि उतंग तुम जातिपतंगा। यमघर कियो जीवको संगा ७

हियनसमायछोड़नहिंपारा। झूठलोभतें कछुन विचारा ८
स्मृतिकहा आपुनहिंमाना। तरिवरछलछागर ह्वै जाना ९
जियदुरमति डोलै संसारा। तेहिनहिंसूझै वारनपारा १०

साखी॥ अंधभया सब डोलई यह कोइनहिं करैबिचार॥
हरिकी भक्ति जाने बिना भव बूड़ि मुआसंसार ११

अपनेगुणकेअवगुणकहहू। यहैअभागजोतुमन बिचरहू १
तुमजियराबहुतैदुखपाया। जलबिनमीनकवनसचुपाया २
चातृकजलहलभरेजोपासा। मेघनबरसैचलैउदासा ३
स्वांगधस्योभवसागरआसा। चातृकजलहलआशेपासा ४

स्वतःसिद्धतुम साहबकेदासहौ याजोआपनोगुणताको अवगुणकहैहौ कि हम ब्रह्महैं सो या नहीं बिचारौहौ कि हम ब्रह्महैं किदासहैं याही तुम्हारी अभागहै दासभूतप्रेतमान ॥ दासभूता स्वतः सर्वदात्मनःपरमात्ममे बहुत दुःखपायो है जो छायापाठ होय तौ बहुत दुःखमेंआयो सोजब विनाकौनो सचुपायोहै नहीं पायो ऐसे विनासाहबके जाने सचुनपावोगे १। २ जैसे जब मेघ स्वाती को जल नहीं वरषैहैं तब चातृकउदासैरहैहैकहे पियासे रहैहै जो नजीक समुद्रौभरोहोइ तौकहाहोइ ऐसेस्वामी मेघसम रामोपासक पूरागुरु तुमनहीं पायो जो साहबको बताइदेइ ताते तुम उदासई गया और औरमें लगावन वारे गुरुवालोग जोउपदेशऊ कियो पै जनन मरण छूट्यो ३ भवसागर ते पार होवे की आशाकरि स्वांगजो धोखाब्रह्म तौनेको तुमधर्योकि अहंब्रह्मास्मि मानि संसारते छूटि जाइँगे सो तुम्हारो आशा चातृककी भईकि स्वातीतौ पायोनहीं जो वहुतजलहै पैबिना स्वातीचातृककी आशाफांसही ह्वैगई अथवास्वांग धोखाब्रह्मको जो तुमधर्योहै सो साहबकी आशाकहेदिशानहींहै भवसागरहीकीआशाकहेदिशाहै॥

रामैनाम अहै निजसारू। औसबझूठ सकलसंसारू ५

किंचित हैसपनेनिधिपाई । हियनमायकहँधरेत्रिपाई ६
हरिउतंगतुमजानिपतंगा । यमघरकियोजीवकोसंगा ७
हियनसमायछोड़नहिंपारा । झूठलोभतेंकछुनविचारा ८
स्मृतिकहाआपुनहिमाना । तरिवरछलछागरह्वैजाना ९
जियदुरमतिडोलैसंसारा । तेहिनहिंसूझैवारनपारा १०

हे जीवो तुम यह विचारत जाउ कि निज कहे आपनो सार रामै नाम को साइब मुख अर्थ समुझिकै संसार ते छूटोगे अर्थात् साहब को स्वरूप औ तुम्हारो स्वरूप राम नामही में है औ सब कहे सब ब्रह्मई है यह जो मानि राख्यो है सो धोखा है झूठा है औ मायिक जो सकल संसार है सो झूठा है अथवा सकल संसार में और जे मत हैं ते सब झूठेहैं ५ जो अहंब्रह्मास्मि ज्ञान करै है सो सपने कैसी है अर्थात् झूठीहै तैंतो किंचित् कहे अनुहै वा बिभु है झूठलोभते कछुनविचारा तुम्हारेहिये में ब्रह्म नहीं समाय है कहे तुम्हारो ब्रह्म होइबो नहीं संभवित होइ है याको छोड़िदेव औ वाको पार नहीं है कहे लवरी औरनहोय है याते झूठ लोभकिये है कि मैं ब्रह्महोइ जाउंगो सो कछुन बिचारा काहेते अच्छा विचारनहीं कियेहै अथवाकछू न बिचारा कहे वा बिचार कछूनहींहै मिथ्याहै ८ जौन स्मृतिबतावैहै ॥ स्याज्जविनेच्छायदितेस्वसत्तायांस्टहायदि । आत्मदास्यंहरेःस्वाम्यंसंभावंचसदास्मर १ सोतुम स्मृतिको कहा आप कहे आपनो स्वस्वरूप न मान्यो धोखाब्रह्ममें लगिकै अपनेको ब्रह्ममानिकै तरिवरजोहै संसार ताको छल जोहै धोखाब्रह्मसोई है छागरकहे बोकरा ताही ह्वैकै कहे वहब्रह्मह्वैके तुम जान्यो कि हमचरिलेइं अर्थात् संसारते छूटिजाइं सो येतो बड़ा संसार रूपी वृक्ष कहा धोखाब्रह्म बोकरा चरोचरिजाइ है ९ जौनजीमें दुर्मति करिकै संसारमें डोलौहौ कहे फिरौहौ सो अहंब्रह्म माने संसारको वारापार न पावोगे यहतो धोखाहै १० ॥

साखी ॥ अंधभयासबडोलईयहकोइनाहिंकरैबिचार ॥
हरिकिभक्तिजानेबिना भवबूड़िमुआसंसार ११

श्रीकबीरजी कहैहैं कि मैं येतो समुझाऊं हौं परंतु सबसंसार की आंखी फूटिगईहैं अंधभया सबडोलैहै कहे फिरैहै यह बिचार कोईनहीं करैहै भक्तनको संसार दुःखहरै सो हरिजे हैं सबकेरक्षक परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी अनुरागात्मिका भक्ति बिना जाने भव जो है धोखाब्रह्मतौने है भ्रमको समुद्र ताही में संसार बूड़िमुआ कहे संसारी जीव बूड़िमुये ११ ॥

इति पैंसठवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथछाछठवीं रमैनी ॥

चौ० सोई हितूबंधु मोहिंभावै। जात कुमारग मारग लावै १
सोसयान मारगरहिजाई। करै खोज कबहूं न भुलाई २
सोझूठा जो सुतकै तजई। गुरुकी दया रामको भजई ३
किंचितहैयकजगतभुलाना।धनसुतदेखिभयाअभिमाना ४
साखी ॥ जियजो नेरूपयान किय मंदिर भया उजार ॥
मरे जे जियते मरिगये बाचे बाचन हार ५

सोई हितू बंधु मोहिं भावै। जातकुमारग मारगलावै १
सोसयान मारग रहिजाई। करैखोजकबहूंन भुलाई २
सोझूठा जो सुतकै तजई। गुरुकीदया रामकोभजई ३
किंचितहैयहजगतभुलाना।धनसुतदेखिभयाअभिमाना ४
साखी ॥ जियजोनेकपयानकिय मन्दिरभयाउजार ॥
मरे जे जियते मरिगये बाचे बाचन हार ५

सोई हितू वा बंधु मोको भावैहै जो कुमारगमें जात जे जीव हैं तिनको सुमारगमें लैआवै कहे साहबको बतावै अथवा कुमार्गमें जातजो जीव हैं ताकोसाहबके सुमार्गमें लगावै १ अरुसोई

जीव सयानहै जो सुमार्गमें आयकै रहिजायहै कहे स्थिरह्वैजा-यहै अरु और और मतनको खोज करिकै सबको सिद्धांत साहब-हीमें लगाइदेइ सो कबहूं न भुलाइहै २ ऐसो गुरुवा झूठाहै जो सुतकै कहै मूड़ मूंड़िकै आपनो चेला बनाइकै तजिदेइहै साहब को नहीं बतावैहै औरे औरे देवतनको सौंपिदेइहै औजाकी दया ते अर्थात् जाके उपदेशते यह जीव श्रीरामचन्द्रको भजन करैहै सोई सांचो गुरूहै भावयहहै कि विना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रजी केजाने यहजीवको शोक नहीं छूटैहै जे गुरू साहबको बताइकै संसारते नहीं छुड़ावैहैं औरे औरे मतनमें लगाइकै संसारमेंडारि देइहैं ते अज्ञान दूरि करनवारे नहीं हैं वे नरकदेनवारे हैं औ आप नरकजानवारेहैं तामें प्रमाण ॥ शिष धनहरै शोक नहिं ह-रई । सोगुरु घोरनरकमें परई ॥ औकबीरहूजी लिखिआये हैं ॥ छोड़िदेहु नर झेलिकझेला । बूड़े दोऊ गुरु अरुचेला ॥ इहैजीवतू तो अनुहै एकजो ब्रह्म औ जगद्रूपजोहै माया तामें भुलाइरह्योहै याही ते तैं जगत्में उत्पत्ति भयोहै आपनेको मालिकमानिधन सुतादिको तोको अभिमानहोइहै ३ । ४ हे जीव जो नेकहु पयान ते किये स्थूल शरीर मंदिर उजार होइजाइहै सो विना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके भजन जे मरेते जीव तौ मरिकै चौ-रासीलाख योनिमें भटकनेलगे औबाचे बाचनहार कहे जे पांचौ शरीरते बचिकै पार्षदरूप बाचनहार रहे ते बाचे ५ ॥

इति छाछठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ सतसठवीं रमैनी ॥

गुरुमुख चौ० । देहहलाये भक्तिनहोई । स्वांगधरेबहुतैनरजोई १
धिंगाधिंगी भलोन माना । जोकाहू मोहिं हृदयनजाना २
मुखकछुऔरहृदयकछुआना । सपन्योकबहूंमोहिंनजाना ३
ते दुखपावैं यहि संसारा । जो चेतौ तौ होहु निनारा ४

जो नर गुरुकी निन्दा करई । शूकर श्वान जन्मसोधरई ५
साखी ॥ लखचौरासीयोनिजीवयह भटकिभटकिदुखपावै ॥
कह कबीर जो रामहिं जानै सो मोहिं नीकेभावै ६

गुरुमुख॥देहहलायेभक्तिनहोई।स्वांगधरेबहुतैनरजोई १
धिंगाधिंगीभलोनमाना । जो काहूमोहिंहृदयनजाना २

देह हलाये कहे पेट हलाय कुंडलनी उठावैहै औ स्वांगधरे कहे कोई खाख लगावैहै कोई जटानहीं बढ़ावै है कोई टोपीदै अलफी पहिरि कुबरी लेइहै कोई कोई तिलकै नहींदेयहै कोई वेंड़ा तिलक देइहै कोई नाकते तिलक देइहै कोईकाठफल पाषाण अस्थिइत्यादि माला पहिरैहै ऐसे स्वांगधरे नरनको देखे है सो विना साहबके जाने भक्तिहोइ है नहीं होइहै १ धिंगाधिंगीकहे बड़ेबड़े मालपुवा मोहनभोग खाय मोटायकै बड़ेबड़े धिंगा ह्वै रहे हैं औ बड़ी बड़ी धिंगी ह्वैरही हैं भलो जो सांचमत ताको नहीं मानै हैं साहब कहै हैं जोकोई मोको हृदयते नहीं जानै है सो मोको पावै है नहीं पावै है २ ॥

मुखकछुऔरहृदयकछुआना । सपन्योकबहूँमोहिंनजाना ३
ते दुख पावहिं यहि संसारा । जोचेतौतौहोहुनिनारा ४
जोनरगुरुकी निन्दा करई ।शूकरश्वानजन्मसोधरई५

मुखमें तो औरहै कि हमसंन्यासी हैं हमसाधुहैं हमब्रह्मचारी हैं औ हृदयमें औरहै धनमिलैको उपाय खोजै हैं तेनर सपन्यो कबहूँ मोको नहीं जानिसकै हैं ३ सो ऐसे जेप्राणी हैं तेयहिसंसार में दुःख नानाप्रकारकेपावै हैं सो हे जीवो तुम चेतकरौ तो इनते न्यारा ह्वैजाउ ४ औ जेतात्पर्य्य वृत्तिकरिकै मोको बतावै हैं ऐसे जे गुरुहैं तिनकी जोकोई निन्दाकरै हैं कि जोई वर्णन करै हैं सो सबमिथ्याहै तेमरिकै श्वान अरु शूकरकोजन्म धारणकरै हैं ५ ॥

साखी॥लखचौरासीयोनिजीवयह भटकिभटकिदुखपावै ॥

कहकबीरजोरामहिंजानै सोमोहिं नीकेभावै ६

साहब कहै हैं कि मेरोभक्त कवीर कहै है कि चौरासीलाख योनिमें जीव यह भटकि भटकि दुख पावैहै सो तिनमें जोकोई श्रीरामचन्द्रको जानै सोई मोको भावैहै सोऐसो प्रगट कवीर बतावैहै ताहूको और और अर्थकरि और और लगै हैं सो मोको नहीं जानै हैं ६ ॥ इतिसतसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ अड़सठवीं रमैनी ॥

चौ० तेहि वियोगतेभये अनाथा। परिनिकुञ्जबनपावनपाथा १
वेदौ नकलकहै जे जानै। जो समुझै सो भलो न मानै २
नटवर बन्द खेल जोजानै। ताकर गुण जो ठाकुरमानै ३
उहै जो खेलै सबघटमाहीं। दूसर कोलेखी कछु नाहीं ४
भलोपोच जो अवसरआवै। कैसहुकै जन पूरा पावै ५

साखी ॥ जेकरे शरलगै हिये तब सो जानैगा पीर ॥
लागै तौ भागै नहीं सुखसिंधु निहारु कबीर ६

तेहिवियोगतेभयेअनाथा। परिनिकुञ्जबनपावनपाथा १
वेदौ नकल कहै जो जानै। जो समुझै सोभलोनमानै २

सम्पूर्ण जे जीव हैं ते परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहीं के बियोग अनाथ ह्वैगये निकुञ्जबन जो वाणीको जालहै नाना मत जिनमें परिकै एक सिद्धान्तमत परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के मिलन के पाथ कहे पंथ न पावत भये १ जिनको पूर्वकहिआये कि साहब को नहीं जानै स्वांगभर बनावै हैं तिनको हे जीव जो तैं जानै तौ वेदहू वे मतवारेनको नकलई कहै हैं तौ जो साहब को समुझै है सोऊ उनको नहीं मानै है नकलई मानै है २ ॥

नटवरबन्दखेल जो जानै। ताकरगुणजो ठाकुरमानै ३
उहैजो खेलै सबघटमाहीं। दूसरको लेखी कछुनाहीं ४

भलोपोचजोअवसरआवै। कैसे कै जन पूरापावै ५

अब योगिनको कहैहैं नट कैसे बंटा जो कोई खेलै जानै है कहे यह जीव आत्माको ब्रह्माण्डमें चढ़ायकै फिरि उतारै जानै है ताको गुण यहहै कि समाधि लगिजाइहै कहे ब्रह्मरूपह्वैजाइ है सो वही ब्रह्मको जो कोई ठाकुर मानै है ३ अर्थात् जौनब्रह्म में ह्वैजाउहौं तौनै घटघटमें है दूसरेकी कछू नहीं लगै है अर्थात् दूसरो पदार्थ कछु नहीं है ४ सो जे यहमतकरैहैं तिनको भलो पोच कहे नीको नागा अवसर आवतहै अर्थात् जब जीवमेंलीन ह्वै ब्रह्मरूपह्वैजाइहै यातो भलो अवसर औ जब समाधि उतरि गई जैसेके तैसे ह्वैगई या पांच अवसरह्वै सो कैसेकै जन पूरो ज्ञान पावै कि हमपूर्णब्रह्महैं तो सर्वत्रपूर्ण हैं जो या ब्रह्मह्वैजातो तो समाधि उतरेहू में वही वृत्ति बनी रहती ५॥

साखी॥ जेकरे शरलगै हिये तब सोजानैगा पीर॥
लागैतौभागैनहीं सुखसिन्धुनिहारुकबीर ६

जेकरे शरलागै है सोई बाणलागे की पीर जानै सो जोकोई समाधिलगावैहै सोई समाधि उतरेको दुःखजानैहै सो समाधि तौ तोर लागै हैना भागु समाधिही लगाये रहु सो तेरोभागिबो तौ बनतई नहीं है समाधि उतरैही आवैहै याते यह धोखा छोड़िदे कबीरजी कहैहैं सुखसिंधु जे साहब हैं तिनको निहारु जिनको एकबार निहारे समाधिलगी रहैहै अर्थात् जो एकहूबार साहबके सन्मुख भयोहै सो फिरिनहीं संसार में बच्योहै तामें प्रमाण ॥ एकोपिकृष्णस्यकृतःप्रणामो दशाश्वमेधावभृथेनतुल्यः। दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय ॥ इति अथवा जाके बाण लगैहै सोई पीर जानैहै सो जो साहबमें लागे हैं तेई धोखाकी पीर जानैहैं कि हमयोगमें यज्ञादिमें लगिकेनाहक जन्म गँवाये सो कबीर जी कहैहैं कि साहबको दुर्लभजानि तैंलागुतौभागु न साहब सुखसिंधुहैं तिनको तूनिहारुतौ ये सब

धोखनकी परि दूरि करि देयँगे तब अपराध तेरोन गनैंगे तामें प्रमाण॥कथंचिदुपकारेणकृतेनैकेनतुष्यते ॥ नस्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया इतिबाल्मीकीये ६ ॥

इति अड़सठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथउनहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० ऐसा योग न देखा भाई । भूला फिरै लये गाफिलाई १
महादेवको पंथ चलावै । ऐसो बड़ो महंत कहावै २
हाट बाट में लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्तै मावासी तोरी । कब शुकदेव तोपची जोरी ४
कब नारद बंदूखचलाया । व्यासदेव कब बंब बजाया ५
करहिं लड़ाई मतिकेमंदा । ईहैं अतिथि कि तरकसबंदा ६
भये विरक्त लोभमनठाना । सोना पहिरि लजावै बाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा । गांवपाय यश चलो करोरा ८
साखी ॥ तियसुन्दरी नसोहई सनकादिक के साथ ॥
कबहुंक दाग लगावई कारी हांडी हाथ ९

ऐसा योग न देखाभाई । फूला फिरै लयेगफिलाई १
महादेवको पंथ चलावै । ऐसो बड़ो महंत कहावै २
हाटबाट में लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्तै मावासी तोरी । कब शुकदेव तोपचीजोरी ४

श्रीकबीर जी कहैहैं कि ऐसा योग हम नहीं देख्यो है कि साहबको तो जानै नहीं हैं गाफिलह्वैकै भूले भूले फिरै हैं १ अरु महादेवको पंथजो तामस शास्त्रहै सो चलावै हैं औ बड़े महंत कहावै हैं २ सबके देखावनको हाटमें औ पहारन के बाट में तारी लगायकै बैठे हैं औ सिद्धकहावै हैं औ सबके देखावन को यह कहैहैं कि संन्यासी को धर्मनहीं है कि द्रव्यलेय औ हाथछुवै परंतु जो कोई चढ़ाइकै चलोजाइहै ताको चिमटाते लैकै कमं-

डलुमें डारिलेइहैं सो ऐसे कच्चे सिद्धन को माया बहुत प्यारी लगैहै ३ दत्तात्रेय कबै मवासिनको शत्रुन को तोरयोहै औशुकदेव कबै तोपखाना अपनेसाथ जोरिकै चलायोहै ४ ॥

कब नारद बंदूख चलाया । व्यासदेवकबबंबबजाया ५
कराहिंलराई मतिकेमंदा । ईहैंअतिथिकितरकसबंदा६
भये विरक्त लोभमनठाना । सोनापहिरि लजावैंबाना७
घोराघोरी कीन्ह बटोरा । गांवपाययशचलोकरोरा ८

औ नारद मुनि कबै बंदूख चलायो है औ व्यासदेव कबै नगारादैकै काहूके ऊपर चढ़ैहैं ५ ई संन्यासी बैरागी मतिके मंद लड़ाई करैहैं ई अतिथि हैं तरकस बन्द सावंतहैं ६ भये तौ बिरक्त संन्यासी परंतु लोभ करिकै रोजगार करै हैं सोना पहिरि कै बानाको लजावैहैं ७ औ घोरा घोरी हाथी बहुत आपने संगलेत भये औ काहू राजाते गांव पायो करोरपती हैं या यश चलायो बड़े ज्ञानीहैं बडे भक्तहैं या यश चलायो ८ ॥

साखी ॥ तियसुन्दरी न सोहई सनकादिक के साथ ॥
कबहुंक दाग लगावई कारी हांडी हाथ ९

लाव लश्कर में स्त्री साथ रहतई है सनकादिक जटाधारे वैष्णवनको कहैहैं अथवा सनकादिक कहे जिनकी पांच वर्ष की अवस्था बनीरहैहै ऐसेब्रह्माके पुत्रतिनहूंको यामजाहोयतोकबीरजी कहैहैं कि स्त्रीनके साथमें सुन्दरीका सोहैहै नहींसोहैहैकबहूं दाग लगावतई है जैसे कारी हांडी हाथमें लेइतो दाग लागिही जायहै ऐसे जिनके जिनके संगमें स्त्रीरहैहै ते पाखंडिन को दाग लगतै है स्त्रिनतेनहीं बचैहैं नामके तोसंन्यासी बैरागी हैं अखाड़ा गृहस्थी बांधेहैं तहां स्त्री आवई चाहैं सो दाग लगावई चाहैं अथवा ऐसे पाखंडीहैं तेमाया रूपईह्वैरहैहैं तेई मायारूपीसुन्दरी कहे स्त्री हैं तिनको संग न करै औ जो संग करै तौ दाग लगवई

करै सो जीवते पाखंडिन को संग न करै तामेंप्रणाम॥पुंसांज्जटाधरणमोञ्जवतांवृथैवमेधाविनामखिलशौचनिराकृतानाम्। तोयप्रदानपितृपिण्डवहिःकृतानां संभाषणादपिनराःनरकं प्रयांतिइतिविष्णुपुराणे १ ॥ इतिउनहत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥

अथ सत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० बोलानाकासों बोलियेभाई । बोलतही सबतत्त्वनशाई १
बोलतबोलत बाढु बिकारा । सोबोलिय जोपरैबिचारा २
मिलैजोसंत बचनदुइकहिये ।मिलैअसंतमौनह्वै रहिये३
पंडितसों बोलियहितकारी । मूरुखसों रहियेझखमारी४
कह कबीर ई अधघट बोलै । पूरा होय बिचार लैबोलै५

बोलाना कासोंबोलियेभाई। बोलतही सबतत्त्वनशाई १
बोलतबोलतबाढु बिकारा । सोबोलियजोपरैबिचारा २

बैरागिन की संन्यासिन की दशा जैसी ह्वै रहीहै सो पूर्वकहिआये सो ऐसे पाखंडी संसारमें ह्वैरहेहैं बोलाना का सों बोलिये बोलतहीमें सब तत्त्व नशाय जाइहैं तत्त्वकहावैहै यथार्थ सोसाहब के जे नामरूप लीला धाम यथार्थ हैं तेनशाइ जाइहैं कहे भूलिजाइहैं १ बोलत बोलत बिकारई बाढैहै ताते सो बात बोलिये जेहिते साहब के नामादिकन को बिचार ठीक परिजाइ कौनी तरहते सांच बिचार ठीक परै सो कहैहैं २ ॥

मिलैजोसंतबचनदुइकहिये । मिलैअसंतमौनह्वैरहिये ३
पण्डितसोंबोलियहितकारी।मूरुखसोंरहियेझखमारी ४

जो संत मिलैतो द्वैबचन कहबऊ करिये द्वै वचन कह्योताको भाव यह है कि थोरई आपने प्रयोजन मात्र बोलिये औ सत्संग करिये काहेते कि उनके सत्संग किये बिचार बाढ़ैहै औ असंत

मिलै तो मौन ह्वै रहिये बोलिये न काहेते कि उनके संगते अ-
ज्ञान बाढ़ैहै ३ तेहिते पंडितसों बोलिबो हितकारीहै काहेते कि
पंडित जेहैं ते सारासारको विचार करिकै सार पदार्थ जेसाहबहैं
तिनको ठीक करिकै असार जोहै धोखा ब्रह्म औ माया ताको
छोडि दियो है वे साहबको बतावैंगे औ मूरुख सों बोलिबो झख-
मारी है काहेते कि जो मूरुख सों बोलै तौ अपने स्मरणकीहानि
होइहै वह तो समुझायेते समुझैगो नहीं तबआपही झखमारिकै
रहिजाइगो पीछेक्रोध होइगो अरुमूरुख नहींसमुझैहै तामेंप्रमाण
गोसाईं जीको ॥ सोरठा ॥ फरैनफूलैबेत यदपिसुधाबरषैजलद॥
मूरुखहृदयनचेत जोगुरुमिलैंबिरंचिसम १ज्यों पानीको पान
भींजे तो बेधै नहीं । त्यों मूरुखको ज्ञान बूझै तौ सूझैनहीं ४॥

कहकबीर ई अध घट डोलै । पूराहोय बिचार लैबोलै५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जे सत्संगऊ करैहैं औ मूरुखहू सोंबोलै
हैं शास्त्रार्थ करैहैं औ और और मतको सिद्धांत जानो चाहैहैं कि
हमारै मत ठीकहै कि औरऊमतठीकहै परमपुरुष श्रीरामचंद्र
सबते परे हैं यह सिद्धांतको निश्चय नहींहै ते अधघट जेहैं और
और मतवारे इनके समुझाये नहीं समुझैहैं औ असंत संगकरिकै
विचारकी हानिहोइहै कहाहानिहोइहै कि औरऊकोबिचारमनपर
न लागै हैअपने मतमें भ्रम होन लगैहै आपनो ठीकनहींठीकहै
जैसे आधीगगरी जलसे भरीहोइ तोवाकोजल डोलैहै ऐसेसाहब
मेंउनको ज्ञानतो पूरो नहीं ताते डोलैहै औजोपूरा सो बिच लैकै
बोलैहै औरे प्रश्न सुनिकै वाकोविचार लैलियोकहे समझि लियो
कि यह बोलिबो अधिकारीहै हमारो कह्यो समुझैगो तब बोलै
है जैसे भरी गगरी को जल नहीं डोलैहै और जल वामें नहींअ-
मायहै ऐसे वेतो साहबके ज्ञानमें पूरहैं सो उनको ज्ञान डोलै
नहीं है अरु और मतनको सिद्धांत के जे ज्ञानहैं ते उनके अंतःक
रण में नहीं समायहैं ५ ॥ इतिसत्तरवींरमैनीसमाप्तम् ॥

अथ इकहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० सोग बधावासम करिजाना । ताकी बात इन्द्रनहिंजाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही । योग युक्तिकै गर्भ दुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई । जैसे काग चील्ह मड़राई ३
जैसी भिस्ति तैसिहै नारी । राजपाट सब गनै उजारी ४
जैसे नरक तसचन्दनमाना । जस बाउरतस रहैसयाना ५
लपसी लौंग गनै यकसारा । खांड़ै परिहरि फांकै छारा ६
साखी ॥ यहि विचारते वह गयो गयो बुद्धि बल चित्त ॥
दुइमिलि एकै ह्वैरह्यो मैं काहि बताऊं हित्त ७

सोगबधावासम करिजाना । जाकीबात इंद्रनहिंजाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही । योग युक्तिकै गर्भदुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई । जैसे काग चील्हमड़राई ३
जैसी भिस्ति तैसिहै नारी । राजपाटसब गनै उजारी ४

औरैपद को अर्थ स्पष्टहै १।२।३। अबफिरि साहब के जनै-यनको कहैहैं कि भिस्तिकहे स्वर्गको मानै है तैसेनारीकहे दोजख को मानैहैं अरबी की किताबनमें भिस्तिको जिन्नत औ दोजखकी नाईं अर्थ के संबन्धते बहुत जगह कह्योहै अथवा नारकहे आगि सो जामें होय ताको नारी कहैहैं अर्थात् नरक औ भिस्ति पाठहो-य तो जैसे भिस्तिकहे देवालको मानैहैं तैसे नारीको मानैहैं औ राजपाट जो है जगतताको उजारई गनैहैं कि संसार हई नहीं है चित अचितरूप साहबई केहैं नरक स्वर्गादिक तामें प्रमाण ॥ नरक स्वर्ग अपवर्ग समाना । जहँ तहँ देखि धरे धनु बाना ४ ॥

जैसे नरक तस चन्दनमाना । जसबाउरतसरहैसयाना५
लपसीलौंगगनै यकसारा । खांड़ैपरिहरि फांकै छारा ६

जस नरककहे विष्ठाको तैसेचन्दनको मानैहैं औ हैं तो सयान कहे साहब को जानैहैं परन्तु रहत बहुत बाउरही के तरह हैं ५

औ जे साहबको नहीं जानै हैं आपहीको ब्रह्म मानैहैं तिनको कहै हैं लपसी लोंगको एकई मानैहैं खांड़ छोड़िकै छारको फांकै हैं अर्थात् ताहूको एकही गनै हैं सर्वत्र एकही ब्रह्म मानैहैं जो कहो समान दृष्टि करतई हैं साहब के गैर जनैयन कहे जाननवारे हैं ये आपही को ब्रह्म मानैहैं औ खांड़ परिहरिकै छार फांकैहैं ताकोभाव यह है खांड़ साहब जे मिठाई ताके देने वारे तिनको छांड़ि कै छार फांकैहैं जामें सारकछु नहीं है अहंब्रह्मास्मि ज्ञान करै हैं ६ ॥

साखी ॥ यहिबिचारते बहगयो गयोबुद्धिबल चित्त ॥
दुइमिलि एकै ह्वै रह्यो मैंकाहिबताऊंहित्त ७

श्रीकबीरजी कहैहैं बिचारत बुद्धिको बलजो है निश्चयकरिकै अहंब्रह्म मानि सो येहू जातरह्यो औ चितजोहै सोऊ जातरह्यो मनोनाश वासना क्षय ह्वैगई कछुबासना न रहगई दुइ जे हैं ब्रह्म औ जीवते मिलिकै एकही ह्वै रहे जैसे जल मिलिकै एकैह्वै जायहै हितुवा वह कहावैहै जो रक्षाकरै ये तो दूनों एकई ह्वै रहे ब्रह्म में लीनहोइहैं पुनि जब सृष्टिसमय भई तब माया धरिलै आवै है तबतो दूसरो यह मानतै नहीं है मैं काको हितुवा बताऊं जो मायाते रक्षा करिलेइ औ जोसाहब हितुवा मानै रक्षकमानै तौसाहब याको हंसस्वरूप दैकै आपने पास बोलाइलेइ इहांमायाकी गति नहीं है तौ पुनि धरि के जीव को संसारी करै ७ ॥

इति इकहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ बहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० नारि एक संसारै आई। माय न वाके वाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राणअधारा। तामें भरमिरहा संसारा २
दिना सातलौं वाकी सही। बुध अधबुधअचरजयककही ३
वाहिकिवन्दनकरसवकोई। बुधअधबुधअचरजअइहोई ४

नारि एक संसारै आई। माय न वाके वाप न जाई १

गोड़ न मूड़ न प्राणअधारा। तामेंभरमिरहासंसारा २
दिनासातलोंवाकीसही। बुधअधबुधअचरजयककही ३
वाहिकिबंदनकरसबकोई। बुधअधबुधअचरजयड़होई ४

एक नारि जो यह मायाहै सो संसार में आवतभई न वाके महतारी है औ न वह वापते उत्पन्नहै अर्थात् अनादिहै १ अरु न वाके गोड़हैं न मूड़है न प्राणहै न आधारहै अर्थात् निराकार है भर्मई है ताहीमें संसार भरमिरह्यो है २ औसातो जे वारहैं दिन तिनमें वही मायाकी सही है अर्थात् कालमें वही अमिली है औ सातौबार वोई फिरि फिरि आवै हैं वही मायाको चारोंओर विस्तारहै बुधजो है पण्डित निर्गुणवारे जेसारासारके विचारकरिकै आपहीको ब्रह्ममानै हैं औअधबुध जेहैं आधे पण्डित सगुण उपासनावारे सो ये दूनोंमें आश्चर्य्य जो है माया ताको एक कहै हैं दूनोंमें यह माया बरोबरि व्याप्तहै ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह बड़ो आश्चर्य्य हैं तौ कछु नहीं है औ वहीमायाकी वन्दना निर्गुण सगुणवारे दोऊ करै हैं जो मनबचनमेंआवै है सोमायाही है ४ ॥

इति बहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ तिहत्तरवीं रमैनी ॥

गुरुमुख चौ० चलीजातिदेखायकनारी। तरगागरिऊपरपनिहारी १
चलीजातिवहबाटैबाटा। सोवनहारकेऊपरखाटा २
जाड़नमरैसुपेदीसौरी। खसमनचीन्हैघरणिभैबौरी ३
सांझसकारदियालैबारै। खसमछोंड़िसुमिरैलगवारै ४
वाहिके सँगमें निशिदिन राँची। पियसोंबातकहै नहिं साँची ५
सोवत छांड़ि चली पिय अपना। ईदुखअबधौं कहौंक्यहिसना ६

साखी ॥ अपनी जाँघ उघारिकै अपनी कही न जाय ॥
की जानै चित आपना की मेरोजन गाइ ७

चलीजातिदेखायकनारी। तरगागरिऊपर पनिहारी १

चलीजातिवह बाटै बाटा। सोवनहारके ऊपर खाटा २

सुरतिरूपी जो नारी सोई है दूती ताकोहमचलीजात देखाहै हृदय जो गगरी है सो तरेहै औसुरति उठी सोऊपर सुधासरोवरमें जलभरनकोगई है शीशमेंपहुँची १ वहसुरति जबचलै है तब षट चक्रवेधिकै राहराहजायहै काहेते कि नाभीमें मणिपूरकचक्रहैतामें शीशदिये नागिनी बैठी है सोई षट कहे पलँग है सो ऊपरहै ताके नीचे सोवनहार जो है आत्मा सो रहैहै तहांते सुरतिउठै है तहां ज्वाला साथ नागिनी उठावै ताही साथ प्राणजायहै २॥

जाड़नमरैसुपेदीसौरी। खसमनचीन्है घरणिभैबौरी ३

सांझसकारदियालैबारै। खसमछोड़िसुमिरैलगवारै ४

सुपेदी कहे रजाई जो है यह शरीर सो जाड़नमरै है अर्थात् शीत उष्ण वहीको लगैहै सौरीकहे सुपेदी को सुमिरण करिकै जाड़नमरै है अर्थात् जबलग देहाभिमानहै तबलग शीतउष्ण है आत्माको नहीं लगै है साहब कहै हैं कि वह जो हैं आत्मा मेरी घरणि कहे स्त्री अर्थात् जीवरूपा मेरीशक्ति सो मैं जो हौं याको खसम ताको नहीं चीन्है है त्यहिते बौरीकहे बौरायगई ३ सांझ सकार दियालै बारै है कहे समाधिलगायकै ज्योतिको बारिकै कुण्डलिनी उठाय आत्माको लैजाइकै वहीज्योतिमें मिलायै है औ याको मैं खसमहौं सो मोको छोड़िकै लगवार जो है धोखा ब्रह्म ताको सुमिरैहै ४॥

वाहिकेसँगमेंनिशिदिनराँची। पियसोंबातकहैनहिंसांची ५

सोवतछाँड़िचलीपियअपना। ईदुखअबधौंकहवकयहिसना ६

सुरतिरूपी नारी जो है दूती ताहीके साथह्वैकै वहीधोखा ब्रह्म में निशिदिन रचिरही है कहे प्रीतिकरिरही है पिय जो मैंहौंतासों सांचीबात नहीं कहै है सांचीबातकहाहै कि मैं तिहारोहौं यह जो कहै तौ मैं जीवरूपा शक्तिको छोड़ायलेउँ साहबकी यह प्रतिज्ञा है जो मोकोजानै मोकोगोहरावै तो मैं संसारते छड़ायलेउँ तामें

प्रमाण॥ अवहूंलेउँ छड़ायकाल ते जोघटसुरति सम्हारै ५ सो जीवरूपाशक्ति मोको न जान्यो मोको न गोहरायो सोवत रहिगई जागत न भई सोवत में मोको छोड़ि स्वप्न देखनेवाली संसारी ह्वैगई अर्थात् मोहरूपी निद्रा जब प्राप्तभई तबसंसार में परिकै नानादुःखपावै है सो यह दुःख अपनो कासों कहै सांच जो मैं ताको तौ जानै नहीं है अरु और सब स्वप्न ते झूठे हैं ६ ॥

साखी ॥ अपनी जांघ उघारिकै अपनीकहीनजाइ ॥
की जानै चित आपना की मेरो जनगाइ ७

साहब कहैहैं कि यहिभांति मेरी जीवरूपाशक्ति मोको छोड़ि कै संसारी ह्वै गई सो अपनी जंघा जो उघारिहोइ तौकोईकहां अपनो गिल्ला करैहै नहीं करै है ऐसे मेरीशक्ति यह जीव सो जो और और लगवार जोहैं सो यह दुःखका मोसोंकहिजाइहै नहीं कहिजाइहै कितो मेरोदिलजानै है याको उद्धार ह्वैजाइ याही चाहौंहौं औ कि मेरेजन जेहैं तेमेरो सौशील्यदया वात्सल्यादिक गुणगान करिकै जानै हैं कि साहबमें निर्देह सौशील्यादिक गुण हैं जीवको उद्धारई चाहैहैं और तो अज्ञानीजीव अपनो भूलनजानैंगे याही जानैंगे कि जो साहब सबको मालिकहै सबकरिबेकोसमर्थ है ताकी जो इच्छा होती तौहमसब जीवके बंधते तामें प्रमाण ॥ सो परन्तु दुखपावत शिर धुनिधुनि पछिताय। कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाय ७ ॥

इति तिहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

—o—

अथ चौहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० तहिया गुप्त थूलनहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमल पत्र तरंग यकनाहीं। संगहिरहै लिप्त पै नाहीं २
आशओस अण्डन महँरहई। अगणित अंडनकोईकहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लै उचरी वानी ४

धर्मकहै सब पानी अहई। जाती के मन बानी रहई ५
ढोर पतंग सरै घरिआरा। गहि पानी सब करै अचारा ६
फंद छोड़ि जो बाहर होई। बहुरि पंथनहिं जोहै सोई ७
साखी॥ भर्मक बांधलई जगत कोइ नाहिं किया विचार॥
हरि कि भक्तिजानेबिना भवबूडि मुवा संसार ८

तहियागुप्तथूलनहिंकाया। ताकेसोगनताके माया १
कमलपत्र तरंगयकमाहीं। संगहिरहै लिप्तपैनाहीं २
आशओसअंडनमहँरहई। अगणितअंडनकोईकहई ३
निराधारआधारलैजानी। रामनाम लै उचरी बानी ४

जबजीव भूल्यो है तहिया कहे तब स्थूलशरीर नहीं रह्यो औ गुप्तकहे सूक्ष्म कारण महाकारण ये शरीर नहीं रहेहैं औ न तेहि जीवके सोगरह्यो औ न मायारहीहै १ जैसे कमलपत्र में जलरहै है पै कमलपत्रमें लिप्त नहीं रहै है तैसे यह आत्मामें माया ब्रह्म यद्यपि सब कारण रहै हैं परन्तु माया ब्रह्म में आत्मा लिप्त न रह्यो २ ब्रह्म ह्वैवेकी जो आशाहै सोई पियासहै सो ओसचाटेकहूं पियास जाइहै नहींजाइहै ओसके सम जो है ब्रह्मानन्द सो जीव रूप जे हैं अंड तिनमें रहै है अर्थात् कारण रूपते जीवमें बनोरहैहै जब समष्टिजीव रह्यो है तब रहेतौ अगणित हैं अण्ड परन्तु सब मिलि एकई कहावत रह्यो है अगणित कोई नहीं कहत रह्यो ३ निराधार जो निराकार ब्रह्महै जामें सबजीवभरेहैं ताको आधार लै जानिये कि साहबके लोकमें है अर्थात् साहब के लोकको प्रकाशहै तबतो समष्टिरही याही रामनाम लैकै वाणी उचरी कहे प्रगटभई इहां रामनाम लैकै वाणी प्रगटभई ताको हेतु यहहै कि वाणी में जगत् प्रगट करिवेकी शक्ति नहीं रही रामनामको जगत् मुख अर्थ लै कै वाणी उचरी है पांचो ब्रह्म समेत जगत् उत्पत्ति कियो है सोई इहां सिद्धांत करै है ४॥

धर्मकहै सब पानी अहई। जातीके मन बानी रहई ५

ढोर पतंग सरै घरि आरा। तेहिपानी सबकरै अचारा ६
फन्दछोड़ि जोबाहरहोई। बहुरिपन्थनहिं जोहै सोई ७

वेदशास्त्रमें आत्माको धर्मकहै हैं कि आत्माचित्तहै याते चित्त धर्म है जैसे जलमेंजलमिलै तोएकईहोजाइहै ऐसे चिन्मात्रजो ब्रह्महै तामें मिलिकै चित्तजो है जीव सो एकईह्वैजाय काहेते कि दुहुनको चित्तधर्म एकई है औ जातिकहे सब जाति जेजीवहैं ते आपने स्वस्वरूपको चीन्हैहैं कि मैं साहबको अंशहौं जातिकरिकै वहीहौं कछु स्वरूप करिकै नहींहौं भेद बनोई है वह सर्वज्ञहै मैं अल्पज्ञहौं वह विभुहै मैं अणुहौं वह स्वतन्त्रहै मैं परतन्त्रहौं यह जो कहै हैं कि आत्मा ब्रह्मई है सोतौ बाणीको बिस्तारहै सामान्यधर्मलैकै कहै हैं ५ ढोर पतंग घरिआर आदिक जामेंसरै हैं ताही जलमें सब आचार करै हैं अर्थात् जौनी वाणीमें सबमरिमरि समाइहै औ पुनि वहीते उत्पत्ति होइहै औ जौन सबजीव को फँदाये है तौनीही बाणीमें कहे सब आचार करै है अथवा वही बाणीको आचरणकरै है आपनेकोब्रह्ममानैहै काहूकोआचारठीक नहींहै ६ यह बाणीके फन्दते बाहरह्वैकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें जो लागै तो पुनि न जगत्के पंथको जोहै अर्थात फिरि न जगत्में आवै ७॥

साखी॥ भर्मकबांधलईजगत कोइनहिंकियाविचार॥
हरिकिभक्तिजानेबिना भवबूड़िमुवासंसार ८

यहिभांति भर्म जो माया सबलित ब्रह्मत्यहि करिकै बँध्यो जो यहसंसारहै ताको कोई नहीं बिचार कियो हरिकहे सब के कलेशहरनहारे वेद तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी भक्तिके बिना जाने भर्म के समुद्र में संसार बूड़ि मुवा कहे संसारीजीव बूड़ि मुयो ८॥ इति चौहत्तरवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथपचहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० तेहिसाहबके लागोसाथा। दुइ दुखमेटिकै होहुसनाथा१
दशरथकुलअवतरिनहिंआया। नहिंलंकाके रायसताया २
नहिं देवकिके गर्भहिआया। नहींयशोदा गोद खेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया।पैठिपतालनहींबलिछलिया४
नहिंबालिरायसोमाड़ीरारी। नहिंहिरणाकुशबधलपछारी५
वराहरूपधरणीनहिंधरिया। क्षत्रीमारि निक्षत्रनकरिया ६
नहिंगोबर्द्धनकरतेधरिया। नहींग्वालसँगबनबनफिरिया७
गण्डकशालग्रामनशीला। मत्स्यकच्छहूवैनहिंजलहीला८
द्वारावती शरीर न छांड़ा। लै जगनाथ पिंड नहिंगाड़ा९

साखी॥ कहहिं कबीर पुकारिकै वा पन्थे मतभूल॥
जेहिराखे अनुमानकरि थूलनहीं अस्थूल १०

तेहिसाहबकेलागोसाथा। दुइदुखमेटिकैहोहुसनाथा१

जिनको पूर्व कहि आयेहैं ते हरि कहे रक्षक मन वचन के परे परम पुरुष जे श्री रामचन्द्रहैं तिनके साथमें लागो दूनों जे दुखहैं निर्गुण और सगुण तिनको मेटिकै सनाथ होउकहे नाथ जे साहबहैं तिनते सहित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्म है नहीं है औ कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परे है कबहूं जब कौन्यो कल्प में बाणनके युद्धकी इच्छा होइहै तब आपही प्रकटहूवैकै प्रतापी नामको रावणहोइहै तासों बाणनको युद्ध करै है औ फिर शरीर सहित को चले जाइहै औ बहुधा जे अवतार होइ हैं ते नारायणै अवतार लेइहैं १॥

दशरथकुलअवतरिनहिंआया।नहिंलंकाकेरायसताया२
नहिंदेवकिकेगर्भहिआया । नहींयशोदागोदखेलाया ३

पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया। पैठिपतालनहींबलिछलिया ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि वे श्रीरामचन्द्र कौन्यो अवतार में नहीं हैं दशरथ के यहां अवतार नहीं लियो दशरथके इहां अवतारलै नारायणै रावणको मारै हैं २ अरु वे साहब देवकीकेगर्भ में नहीं आयो अरु वाको यशोदा गोदमें नहीं खेलायो ३ अरु वे साहब पृथ्वी रमण ह्वैकै म्लेच्छनको दमन अर्थात् वामन रूप नहीं धरयो ४ ॥

नहिंबलिरायसोंमाड़ीरारी। नहिंहिरणाकुश बधलपछारी ५
बराहरूपधरणीनहिंधरिया। क्षत्रीमारिनिक्षत्रनकरिया ६
नहिंगोबर्द्धनकरगहिधरिया। नहींग्वालसँगबनबनफिरिया ७

अरु वेसाहब बलिरायसों रारि नहीं मांड़यो कहे मोहनी अवतारलै देवतनको अमृतपिआय दैत्यनको वारुणीपिआय बलिसों युद्धकरि दैत्यनको विष्णुरूपह्वै नहीं मारयो औ हिरण्यकश्यप को पछारिकै नहीं बाध्यो कहे नहीं बध्यो अर्थात् नृसिंह रूप नहीं धरयो ५ अरु वेसाहब बाराहरूपधरिकै डाढ़में धरणी नहींधरयो औ क्षत्रिनको मारिकै निक्षत्र नहीं कियो अर्थात् परशुराम को अवतार नहीं लियो ६ अरु वे साहब करते गोवर्द्धन को नहीं धरयो अर्थात् गोविन्दरूप नहीं धरयो औ न ग्वाल के संग बन वनमें फिरयो है याते हलधररूप नहीं धरयो ७ ॥

गंडकशालग्रामनशीला। मत्स्यकच्छह्वैनहिंजलहीला ८
द्वारावतीशरीरनछांड़ा। लैजगनाथ पिण्डनहिंगाड़ा ९

अरु वे साहब गण्डकमें शालग्राम की शिला नहीं भये औ न मत्स्य कच्छ ह्वैकै जलमें परे हैं ८ अरु वे साहब द्वारावती में शरीर नहींछोड़ोहै अर्थात् कालस्वरूप नहींधारणकियो जौनजौन फिरि द्वारावती में छोड़यो है औ जगन्नाथ के उदरमें ब्रह्म जो इधामें तेज राख्यो है सो वे साहब को तेज नहीं है यहि तरह ते सगुण जे नारायण हैं औ सब अवतार हैं ते वे नहीं हैं ९ ॥

साखी ॥ कहहिंकबीरपुकारिकै वापन्थेमतिभूल ॥
ज्यहिराखेअनुमानकरि थूलनहींअस्थूल १०

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि वापंथेमतिभूलकहे न जाउ ज्यहि राखे अनुमानकरि कहे अनुमानकरि राख्यो है ब्रह्म को सोऊ वे साहब नहीं हैं औ थूल नहीं अस्थूल कहे न थूलहोइ सो स्थूल कहावै अर्थात् निराकार नहीं हैं ताते सगुण निर्गुण साकार निराकारके परे श्रीरामचन्द्र हैं यह बतायो दशरथकेइहां नारायण अवतारलेइ हैं तिनको रामनाम होइहै तिनहीं नाम रूपते सगुण निर्गुण के परे हैं १० ॥

इति पचहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ छिहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० मायामोहकठिन संसारा । यहैविचार न काहु बिचारा १
मायामोह कठिनहै फन्दा । होय बिबेकी सो जन बन्दा २
रामनाम लै बेराधारा । सो तैं लै संसारहि पारा ३
साखी ॥ रामनाम अतिदुर्लभै अवरे से नहिं काम ॥
आदि अन्त औ युगयुगे रामहिं ते संग्राम ४

मायामोह कठिन संसारा । यहैबिचार नकाहुबिचारा १

मायामोह रूपते संसारको देखैहै कहे नानापदार्थ भिन्न देखै है याहीते संसार कठिनहै यामें व्यंग यह है कि जो संसारको भगवत् चिदचिद विग्रहरूपकरिके देखै तो संसार उतरिजायबे को सरलै है सो यह विचार कोई न विचारयो १ ॥

मायामोह कठिनहै फन्दा । होयबिबेकी सोजनबन्दा २

अरु यह संसारमें मायामोहरूप कठिनफन्दाहै जो संसारमें सब भिन्नभिन्न पदार्थ देखै है तौने संसार कोई भगवत् चिदचिद विग्रहरूप देखै औ बिबेकी होइ सोई जन साहबको बन्दाहै २ ॥

राम नामलै बेरा धारा। सो तैं लै संसारहि पारा ३
औं रामनाम जोहै बेरा ताको आधारलैकै जोकोई साहबको जान्योहै ताको उबारह्वैगयोहै सोतैं हू रामनामजोहै बेरा ताको आधारले कहे रामनाममें आरूढ़हो साहबको जानु तौ तैंसंसार समुद्रको पारह्वैजाय ३ ॥

साखी ॥ रामनाम अति दुर्लभै अवरेसे नहिं काम ॥
आदि अंत औ युग युगे रामहिंते संग्राम ४
श्री कबीरजी कहैहैं कि यह रामनाम अतिदुर्लभहै मोकोऔरे से काम नहीं है आदि अन्तमें औ युगयुगमें मोसों रामैतेसंग्राम कहाहै कि शास्त्रार्थ करिकै रामनाममें जो जगत्मुख अर्थहै ताकोखण्डन करिकै अतिदुर्लभ जो साहबमुख अर्थ ताकोग्रहणकरौहौं अर्थात् जबजगत्की उत्पत्ति नहीं भईहै तबऔयुगयुगनमें कहे मध्यमें अन्तमें कहेजब मुक्तह्वैगयो तबहूं रामनामहीते संग्रामकियो है अर्थात् रामनामको विचारकरत रहौहौं ४ ॥
इति छिहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथसतहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० एकैकाल सकलसंसारा। एकै नामहै जगत पियारा १
तियापुरुषकछुकथोनजाई। सर्वरूप जग रहासमाई २
रूपअरूपजायनहिं वोली। हलुकागरुवाजाय न तोली ३
भूखनतृषाधूपनहिं छाहीं। दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४
साखी ॥ अपरम परम रूपमगुरंगी नहित्यहि संख्याआहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै अद्भुत कहिये ताहि ५

एकै कालसकलसंसारा। एकै नामहै जगत पियारा १
एक जोहै लोकप्रकाश ब्रह्मताको अनुभव करिकै जोब्रह्ममानिलेइहै सोई माया सबलितह्वैगोहै सोई काल सकल संसा-

रमैहै सो जगत् को पियार एक जोहै रामनाम ताको बिनाजाने याही ते जन्ममरण होइहै १ ॥

तियापुरुषकछुकथोनजाई । सर्बरूप जग रहासमाई २
रूपअरूपजायनहिं बोली । हलुकागरुवाजायनतोली३
भूखनतृषाधूपनहिंछाहीं । दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४

वह माया सबलित ब्रह्मको स्त्री न कहिसकै न पुरुषकहिसकै सर्वरूपह्वैकै संसारमें समाइ रह्योहै २ वाको न रूप कहिसकै औ न वह हलका गरुवा तौलि जाइहै कि हलुकै गरूहै अर्थात् अहंब्रह्म मानिबो तो धोखाहै जो कछुहोइ तोकहिजाइ औतौलि जाइ ३ जौनेलोकमें न भूखहै न तृषाहै न धूपहै न छाहीं है न दुःख सुखहै तौने साहबके लोकमें प्रकाशरूप ब्रह्मरहैहै ४ ॥

साखी ॥ अपरमपरमरूपमगुरंगीनाहिंतेहिसंख्याआहि॥
कहहिंकबीर पुकारिकै अद्भुत कहिये ताहि ५

वह साहबको लोक परमरूपहै ताको प्रकाश जोहै वह ब्रह्म सो परमरूप है कहेपरम नहीं है तौने को आपनेहीको मानिबो जोहै कि वह ब्रह्महमहीं हैं सो धोखाहै तौनेके मगमें रँगे जीव हैं तिनकी संख्या नहीं है अर्थात् वही प्रकाशमें भरेरहे जे समष्टि जीवहैं ते व्यष्टि ह्वैगयेहैं तिनकी संख्या नहीं है सो कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि आपही कलपना करिकै वहप्रकाशरूप ब्रह्मको मान्यो कि वह ब्रह्ममैंहौं सो वह तो लोकप्रकाशहै जीववहप्रकाशब्रह्म नहीं ह्वै सकैहै यही धोखामें जीव बूडो जाइ है यह बड़ो आश्चर्यहै औ जोयह पाठहोइ ॥ अपरमपारै परमगुरु ज्ञानरूप वहुआहि ॥ तौ यह अर्थहै अपरम जोहै प्रकाशरूप ब्रह्मताहू के पारजोहै परमलोक जाको प्रकाश वह ब्रह्महै ताको परमश्रेष्ठकहेमालिक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको न जान्यो वहजो है प्रकाशब्रह्म ताको जोज्ञान कियो कि ब्रह्ममैंहौं वहैजोहै धोखा ब्रह्म तेहिते बहुआहि कहे जीव बहुत ह्वैगये काहेते कि ज्ञानव-

हुतहै ज्ञानी ज्ञानकरिकै ब्रह्ममानै हैं औ योगी जे हैं ते ज्योतिरू-
पमें आत्माको मिलाइकै ब्रह्ममानै हैं इत्यादिक नानारूप करि
कै ऐक्य मानै हैं औ और सगुण उपासनावारे कोई चतुर्भुज
कोई अष्टभुज कोई देवी कोई गणेश कोई सूर्य इत्यादिकन में
ऐक्य मानै हैं ज्ञान करिकै तेहिते ज्ञान नाना हैं औ साहब तो
मन बचन के परे वह लोकमें एकही बनो है ५ ॥

इति सतहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

—o—

अथ अठहत्तरवींरमैनी ॥

चौ० मानुषजन्म चुकेजगमाँझी । यहितनकेर बहुत हैं साँझी १
तातजननिकहैहमरोबाला । स्वारथलागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहै मोरपिय आही । बाधिनिरूप गरासै चाही ३
पुत्र कलत्र रहैं लवलाये । जम्बुक नाईं रह मुँहबाये ४
काग गीध दोउमरणविचारैं । शूकरश्वानदोउपन्थनिहारैं ५
धरतीकहै मोहिंमिलिजाई । पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अग्नि कहै मैं ई तनजारों । सोनकहै जो जरत उबारों ७
ज्यहिघरको घर कहै गवारे । सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुमआपन कैजानी । विषयस्वरूप भुलेअज्ञानी ९

साखी ॥ यतने तनके साझिया जन्मोभरि दुखपाय ॥
चेततनाहीं बावरे मोर मोर गोहराय १०

मानुषजन्मचुकेजगमाँझी । यहितनकेरबहुतहैंसाँझी १
तातजननिकहैहमरोबाला। स्वारथलागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहैमोरपियआही । बाधिनिरूपगरासैचाही ३

हे जीव तैंमानुष जन्मजगत् के बीचमें पायकैचूकिगयो साह-
बको भजन न कियो या तनके साझिया बहुत हैं १ औ माता
पिता कहैहैं हमारोपुत्रहै आपने अर्थ में लगिकैप्रतिपाल करै हैं २

औ कामिनि जो परस्त्रीहै सो कहै है हमारो बड़ो प्यारो पति है वाविनिरूप मरति समयमें गरासिबोई चाहै है अथवा वाके संगते मूड़हू काटो जाय है ३ ॥

पुत्र कलत्र रहैं लव लाये । जम्बुकनाईं रहमुँहबाये ४
कागगीधदोउमरणबिचारैं।शूकरश्वानदोउपन्थनिहारैं५
धरतीकहै मोहिंमिलिजाई। पवनकहै मैं लेबउड़ाई ६
अगिनिकहै मैं ईतन जारों। सोनकहै जो जरत उबारों ७

पुत्र कलत्र जो घरकीस्त्री सो लालच लगाये रहै हैं धनलेवे की औ वाको उनकी चिन्तामें मांससुखान जात है जैसे सियार मांस खावे को मुँहफारे रहै है तैसे वोऊ हैं ४ औ काग जे हैं गीध जे हैं शूकर जे हैं श्वानजे हैं ते मरन को पंथ तेरो निहारैं हैं या बिचारैं हैं कि जो मरै तौ हम मांसखायँ ५ औ धरती कहै है कि मोहीं में मिलिजाइ पवन कहै है कि याकी खाख मैं उड़ाय लै जाउँ ६ औ अग्नि चाहै है कि याके तनको जारिडारों सो या बात कोई नहीं कहै है जाते जरत में उबारहोइ बचिजाय७॥

जेहिघरको घरकहै गवारे । सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तनतुमआपनकैजानी । बिषयस्वरूपभुलेअज्ञानी९
साखी ॥ यतनेतनके साझिया जन्मो भरि दुखपाय ॥
चेतत नाहीं बावरे मोर मोर गोहराय १०

जेहि घरको शरीरको तू कहै है कि मेरो है सो घर शरीर तेरे गलेकी बेरीकहे फांसी है अथवा बैरी है यमकेयहां गलाकटावैंगे ८ हे अज्ञानी तैंने शरीरको तू आपनो मानिकै बिषयनमें परिकै भूलिगयोहै ९ सो यतने जेतने कहिआये ते यहि तनके साझी हैं तिनते जन्मभरि तैं दुखपायकै हे बावरे कहे मूढ़ मोरमोर तैं गोहरावै है कि या तनमेरो है अजहूं चेत नहीं करै है कि या तनै मोको फांसे है १० ॥ इति अठहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ उन्नासिवीं रमैनी ॥

चौ० बढ़वतबाढ़िघटावतछोटी। परखतखरपरखावतखोटी १
केतिककहौं कहांलोंकही। औरौ कहौं परै जो सही २
कहेबिनामोहिं रहोनजाई। बेरहि लैलै कूकुर खाई ३
साखी ॥ खातै खातै युगगया अजहुं न चेतो जाय ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै जीव अचेतै जाय ४

बढ़वतबाढ़िघटावतछोटी।परखतखरपरखावतखोटी १
केतिककहौं कहांलों कही। औरौ कहौं परैजो सही २
कहेबिनामोहिंरहो न जाई। बेरहि लैलै कूकुर खाई ३

यह मायाको प्रपंच जोहै सो बढ़ावत जाइ तो बढ़तई जाय है रंकते इंद्रहू ह्वैजाय तऊ चाहबढ़तईजायहै औ जोघटावैलगै तो घटिहीजाइ है औ नानामतमें लागि मनमुखी बिचारैहै तब तो खरकहे सांचैहै औ जबकाहू साधुते परखायो तब झूठहीह्वै-जाय है १ औ मैं केतिको बातकह्यो परन्तु पाथरकैसो पानी बहि जाइ है बेधैतौ हईनहीं है मैं कहांलों कहों औ औरऊ कहों जो सहीपरै कहे जो तोको सांच जानिपरै २ हे जीव तेरे ये दुःखदेखि कै मोको दयाहोइहै ताते बिनाकहे मोसों नहीं रहिजायहै जौने बेरा रामनाम संसार सागरके उतरिवेको मैं बताइदेउँहौं तौने बेराको कूकुर जे तामस शास्त्रवारे गुरुवालोग ते खाइजाइहैं कहे मेरोकहो तामें नहीं लगनदेइ हैं औरे औरे मतमें लगाइ देइहैं जो यह पाठहोइ बिरहिनि लैलै कूकुर खाइ तौ यह अर्थ है कि बिरहिन जे लोगहैं जिनको साहबकी अप्राप्तिहै तिनको गुरुवा लोग खाइजाइ हैं अथवा बीर जे साहबहैं तिनते हीन जे प्राणी हैं तिनको कूकुर खाइहैं ३ ॥

साखी ॥ खातेखाते युगगया अजहुँ न चेताजाय ॥
कहहिंकबीर पुकारिकै जीव अचेतै जाय ४

सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि खातखात केतन्यो युग बीति

गये याहीते जन्म मरण याको नहीं छूटै है अज्ञान नहीं जाइ है सो अबहूं नहीं चेतकरैहै सो यहजीव अचेतै कहेविना साहब के चेताकिये अर्थात् विना साहबकेजाने नरकको चलोजाइहै ४॥

इति उन्नासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ असिवीं रमैनी॥

चौ० बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहेबसोंभेटनसपना १
खराखोटाजिननहिंपरखाया। चहतलाभसोंमूरगमाया २
समुझिनपरै पातरी मोटी। आछी गाढ़ी सबभो खोटी ३
कहहिंकबीरकेहिदेहौंखोरी । जबचलिहौंझिनआशातोरी४

बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहेबसोंभेटनसपना १
खराखोटजिननहिंपरखाया। चहतलाभसोंमूरगमाया २

हे जीव आपहीते तुम ज्ञानयोग वैराग्य तपस्यामें साहसक-रिकै बहुत क्लेश सह्यो परन्तु इनते तेहि साहब सों भेट सपनहू नहींहै जौन छुड़ावनवारोहै १ जिन जीव गुरुवालोगनके समु-झाये नानामतमेंलागि कहूँसांचसाधूते खराखोट नहीं परखायो ते जीव चाहत तो मुक्तिको लाभहै परन्तु जिन सुकर्मनते अ-न्तष्करण शुद्धद्वारा सांचे साधुको ज्ञान बतायो ठहरै सोऊ सो मूर गमाय दियो २ ॥

समुझिनपरै पातरीमोटी। आछीगाढ़ी सबभोखोटी ३
कहकबीरकेहिदेहौंखोरी। जबचलिहौंझिनआशातोरी४

सो जिन मूरगमाय दियो तिनको पातरीकहे अरु मोटीकहे विभु नहीं समुझि परै है काहेते ओछी जो मतिहै तामें निश्चय रूप गांठी नहीं परै है कि यतनोई विचारहै नेतिनेति कहै है यातें सब खोटही ह्वैगयो ३ श्रीकबीरजी कहै हैं सांचो जो है साहब रक्षक ताको न जान्यो झिनकहे झीन आशा जो है कि हमब्रह्म ह्वै जायँ तौनेकोतोरि ब्रह्ममें लीन होउगे फिरि संसारमें परोगे तब

काको खोरी देहुगो तुमहीं ब्रह्महो ४ ॥ इति अस्सीवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथइक्यासिवीं रमैनी ॥

चौ०देव चरित्र सुनौ रे भाई। सो तो ब्रह्मा धिया नशाई १
ऊजे सुनी मँदोदरि तारा। ज्यहि घर जेठ सदा लगवारा २
सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया॥सुरगुरुघरणिचंद्रमाहरिया ३
कहै कबीर हरिके गुण गाया॥ कुंती कर्ण कुंआरेहि जाया ४

देव चरित्र सुनौ रे भाई। सोतो ब्रह्मा धिया नशाई १
ऊजे सुनी मँदोदरितारा। ज्यहिघरजेठ सदालगवारा २

बड़ेबड़े जीव मायामें परिकै भूलिगयेहैं छोटे जीवनको कहा कहिये हे भाइउ देवचरित्र सुनौ ब्रह्मा अपनी कन्यासंग भूलि गये १ ऊजे मन्दोदरी तारा जेहैं तिनकेघरमें जेठहीलगवारहोत आयो है जो कहो सुग्रीव विभीषणको कहतेहौ तौ तिनकेघर न कहते तिनके कहते औ ई लहुरेहैं वे जेठकहेहैं सो ब्रह्माकेहवाले कह्यो ब्रह्माकेपुत्र आपुसे में काज करतभये सो पुलस्त्य जेठे हैं ते लहुरे भाईकी कन्याको विवाहे या मन्दोदरी के घरको हवाल भयो औ ऋक्षराज स्त्रीभये तिन्हेंसूर्य औ इन्द्रगहे तिनते सुग्रीव औ बालिभये सो प्रथम सूर्य ग्रहण कीन्हो सो उनकी स्त्री भई औ सूर्यते जेठेइन्द्रहैं तेऊपाछे ग्रहणकियो ताराके घरकोहवाल भयो सो तारा मन्द्रोदरीके घर जेठही लगवार होतआयोहै जो लहुर पाठहोइ तौ सुग्रीव विभीषण बनेहैं शकै नहीं है २ ॥

सुरपतिजाइअहल्याहिछलिया। सुरगुरुघरणिचंद्रमाहरिया ३
कहहकबीरहरिकेगुणगाया। कुंतीकर्णकुंवारेहिजाया ४

सुरपति अहल्याको गमन करतभयो औ सुरगुरुजे वृहस्पति हैं तिनकी स्त्रीको चन्द्रमा गमन करत भयो ३ औ कुन्ती जो हैं सो कुंवारेहिमां कर्णको उत्पन्न कियो है सो कर्म तो या ढोलके

हैं जो नीचहू नहीं करैहै परन्तु कबीरजी कहै हैं कि हरिके गुण गावतभये ताते इनहूंकी सज्जनही में गिनतीभई ऐसहुमें हरि रक्षाकैलियो सो हेजीव तैं केता अपराध कियो ४॥

इति इक्यासिवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ बयासिवीं रमैनी॥

चौ० सुखकवृक्षयकजक्तउपाया।समुझिनपरीविषयकछुमाया १
छौक्षत्री पत्री युग चारी। फल द्वै पाप पुण्य अधिकारी २
स्वादअनँदकछुवर्णिनजाहीं। कै चरित्र सो तेही माही ३
नटवरसाजसाजियासाजी। सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहा बपुरा युक्त न देखा। शिवशक्ती विरंचिनहिं पेखा ५

साखी॥ परदे परदे चलिगया समुझि परी नहिं बानि॥
जो जानै सो बाचिहै होत सकल की हानि ६

सुखकवृक्षयकजक्तउपाया। समुझिनपरीविषयकछुमाया १
छौक्षत्रीपत्री युगचारी। फलद्वैपापपुण्य अधिकारी २
स्वादअनँदकछुवर्णिनजाहीं। कैचरित्रसो तेहीमाही ३

साहबको बिसरायकै सूखा जो वृक्षहै यह संसार माया कहे पावतभयो विषय विषरूप माया न समुझिपरी संसारीह्वैगयो १ शरीर धारणकै छौ उरमिनको धारण करनेवाला जो जीव क्षत्री सो पत्री कहे पक्षीहै जौनेवृक्ष चारिउ युगमें पक्षीह्वैगयो अथवा क्षयमान जेनवगुणहैं तिनको धारणकीन्हे जो जीव सोई पत्री कहे पक्षीहै नवगुण कौनहैं सुखदुःख इच्छा जल द्वेष धर्माधर्म भावना यहितरहको जीव जोहैपक्षी सो पाप पुण्यफलताको खाइवेको चारिउयुग अधिकारीहैं २ तिनफलनमें बहुतस्वाद है कछु कहो नहींजाय है तेही वृक्षमें जीवरूप पक्षी चरित्रकरै है सो आगे कहैहैं ३॥

नटवरसाजसाजियासाजी। सो खेलै सो देखै बाजी ४

मोहावपुरायुक्तिन देखा। शिवशक्ती विरञ्चिनहिंपेखा ५

नटके बटा कैसी साज साजि कहे नानारूप धारण करिकै आवैजायहै जो बाजीगर खेलखेलैहै तौने देखैहै अर्थात् जेब्रह्ममें लगे ते ब्रह्महीं देखै हैं जे जीवात्मामें लगे हैं ते जीवात्मैको देखैहैं इत्यादि जो जौने मतमें है सो ताहीमें लगो है सांचबताये लरै धावै है काहेते उनकीवासना अनेकजन्मते बढ़ी है ४ गुरुवाकरिकै मोहा जो वपुराजीवहै सो साहब के जानिवे की युक्ति न देखत भयो शिवशक्त्यात्मक जगत् पूर्व कहिआये हैं सो या शिवशक्ति विरञ्चि मायारूप या बात न जानत भये ५ ॥

साखी ॥ परदे परदे चलिगया समुझिपरी नहिंबानि ॥
जो जानै सो बाचिहै होत सकलकी हानि ६

परदे परदे कहे बिना साहबकेजाने संसारमें जीव चलिगया कहे संसारमें जातरहा बाणी जो है वेद शास्त्र सो तात्पर्यकरिकै साहबको बतावै है सो जीवको न समुझिपरयो जो कोई वेद शास्त्रादिमें तात्पर्य करिकै परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्रको जानै सोई बाचै है अपरोक्ष अर्थ जगत्मुख जानिकै सबकीहानिहोतही जायहै ६ ॥ इति बयासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ तिरासिवीं रमैनी ॥

चौ० क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १
जिनअवधूगुरुज्ञानलखाया। ताकरमनतहँई लै धाया २
क्षत्री सो कुटुम्बसों जूझै। पांचों मेटि एककरि बूझै ३
जीवहिमारिजीवप्रतिपालै। देखत जन्म आपनो घालै ४
हालै करै निशाने घाऊ। जूझिपरे तहँ मनमत राऊ ५

साखी ॥ मनमत मरै न जीवई जीवहि मरन न होइ ॥
शून्य सनेही रामबिन चले अपनपो खोइ ६

क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १

जिनअवधूगुरुज्ञानलखाया। ताकरमनतहँईलैधाया २
क्षत्री सो कुटुम्बसों जूझै। पांचोंमेटि एककरिबूझै ३

जैसे क्षत्री क्षत्रियाधर्म करै है तौ वाके सवाई कर्मबढ़ै हैं रणमें पैठिकै शत्रुनको मारिकै शूरतारूप कर्मबढ़ै हैं ऐसे जीव यहक्षत्री हैं क्षत्री जे साहबहैं तिनकी जातिहै सो संसार रणमें पैठिकैमन माया धोखाज्ञानई शत्रुमारि साहब के मिलनरूप शूरताबढ़ैहै १ जे अवधूकहे अधु जो माया त्यहिते रहित रामोपासक जेसाधुते गुण जे साहबहैं तिनको ज्ञान जाको लखायो है ताकोमन तहँई लै भयो मनो नाश बासना क्षयह्वैगई जब मनो नाशभयो तब धायाकहे हंसरूप में स्थितह्वै साहब के पास को धावतभयो २ क्षत्री सो है जो कुटुम्बसों जूझैकुटुम्ब याकेकोहै पांचौशरीर तिन को मेटिकै एक जो है हंसस्वरूप त्यहिकरिकै साहबको बूझै ३॥

जीवहिंमारिजीवप्रतिपालै। देखतजन्मआपनो घालै ४
हालै करै निशानेघाऊ। जूझिपरे तहँ मनमतराऊ ५

जीवहि मारिकै कहे जो और औरेको जीव ह्वैरह्यो है आपने को ब्रह्ममानैहै आपनेको औरै औरै देवताके दास मानै है यह नाममिटाइदेइ औ यह जीवको जीवनाम मिटाइदेइ औहंसरूप में स्थितह्वैकै जीवको नाम रामदास धरावै तबहीं यहजीव को प्रतिपाल होइहै आपने देखतै जन्म मरण कोलैहै कहे छोड़िदेइ है ४ सो जो कोई या भांति साधन करै सो हालै निशानेमें घाउ करै अर्थात् मनोनाश बासक्षय हालै ह्वैजाइहै औ जे मनमत राउहैं अपने मनमतमें अपनेको राजा मानै हैं जूझिकै संसारमें परे अर्थात् कोई आपनेनको ब्रह्ममानै है कोई आत्मैको मालिक मानैहै ते जैसे मिथ्या वासुदेव अपनेको कृष्णमानि जूझिपरयो ऐसे येऊ मनमाया करिकै मारेजाय हैं ५॥

साखी॥ मनमतमरैनजीवई जीवहिमरननहोय॥

शून्यसनेहीरामबिन चलेअपनपौखोय ६

मनमती न मरै है न जियै है काहेते जीवहि मरण न होय जीवको जीवत्व नहीं जाइहै जिअब तो तवकहिये जवसाहवको जानिकै साहब के लोकहि में जन्म मरण छूटिजाय मरिबो तब कहिये जब ब्रह्ममें लीनहोय जीवत्व छूटिजाइ जनन मरण न होइ सोशून्य जेहैं वे धोखा तिनके सनेही जे मनमतीहैं तेमरै हैं न जियै हैं जीवको तत्त्व नहीं जाइ है जीव सनातनकोहै तामें प्रमाण ॥ ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः ६ ॥

इति तिरासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौरासिवीं रमैनी ॥

चौ० जोजिय अपने दुखै सँभारू। सोदुखव्यापिरहो संसारू १
मायामोह बंध सब लोई। अलपै लाभमूलगो खोई २
मोर तोरमें सबै बिगूता। जननीउदर गर्भमहँसूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता। जनभौंरा असगये बहूता ४
उपजैखपै योनिफिरिआवै। सुखकलेशसपनेहुँनाहिंपावै ५
दुख सन्ताप कष्ट बहुपावै। सो न मिलाजोजरतबुझावै ६
मोर तोर में जरजगसारा। धृग जीवन झूठो संसारा ७
झूँठे मोह रहा जगलागी। इनतेभागिबहुरिपुनिआगी ८
जे हितकै राखे सबलोई। सोसयान बाचे नहिं कोई ९

साखी ॥ आपुआपु चेतै नहीं औकहौतौ रिसिहाहोइ ॥
कहकबीरसपनेजगै निरस्थिअस्थिनाहिंकोइ १०

जोजियअपनेदुखैसँभारू। सोदुखव्यापिरहो संसारू १
मायामोह बन्ध सबलोई। अलपैलाभमूलगोखोई २
मोरतोरमें सबै बिगूता। जननीउदरगर्भमहँसूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता। जन भौंरा असगयेबहूता ४

हे जीव जौन दुःख यह संसारमें व्यापिरह्यो है तौने आपने

दुःखको सँभारु अर्थात् तौने दुःखते निकसु १ मायामोह में सब बँधेहौ सो अल्प तो लाभहै अर्थात् विषय सुखते थोरही है तिन सबकेमूल सम्पूर्ण दुःखके मेटनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते खोइजाइ हैं कहे बिसरि जायहैं २ मोर तोर याही में सब जीव बिगूता कहे अरुझिरहै है याहीते जननी के उदरमें सदा सूततहै अर्थात् गर्भवास नहीं मिटै है ३ जैसे भौंरा फूलनमें रस लेनको जाइहै संध्याह्वैगई तब कमल सम्पुटित ह्वैगयो तब फँसिगयो तैसे ये जीव बहुरूपते बहुत पराक्रमकरिकै खेलखेलै हैं कहे विषय रसलेन को जायहैं मायामें फँसिजांय हैं ४ ॥

उपजैखपैयोनिफिरिआवै। सुखकलेशसपनेहुँनहिंपावै ५
दुखसन्तापकष्टबहुपावै। सोनमिला जोजरतबुझावै ६

उपजै है औ खपैकहे मरै है पुनि पुनि योनिमें फिरि आवै है सुखकोलेश सपन्यो नहीं पावै है ५ दुःख सन्ताप कष्ट बहुतपावै हैं जो आगीते जरत बुझावै सोगुरुनहीं मिलै है इहांदुःखसंताप कष्ट तीनवार जो कह्यो तामें कुछ भेदहै दुःख वह कहावै है जो काहूमारेहोइहै औ जो रोगादिकन करिकै होइहै सो संकष्टकहावै है औ जो कोई हानिते होइहै सो सन्ताप कहावै है ६ ॥

मोर तोरमें जरजग सारा। धृगजीवन झूँठो संसारा ७
झूँठेमोहरहाजगलागी। इनतेभागिबहुरिपुनिआगी ८
जेहितकै राखे सबलोई। सो सयान बाचे नहिं कोई ९

औ तोर मोर करिकै सब संसार जरजाइहै यह संसार साहब को चिद्रूप करिकै नहीं देखै वे यह संसारको संसाररूप करिकै देखै हैं यही झूठो है सो ऐसे झूठे संसारमें जीवनको जीबेको धिक्कारहै ७ मायाको जोमोहहै सो सबसंसारमें लगिरह्यो है सो झूठो है इनते जोकोई भागिवेऊ कियो तौ फेरि वही झूठ ब्रह्माग्नि में जरै है ८ जेजे सब लोई कहे लोगनको हितकै राखै हैं ते सयान कालसे कोई नहीं बचै हैं तू कैसे बचैगो ९ ॥

साखी॥ आपुआपु चेतैनहीं औकहौंतौरिसिहाहोइ॥
कहकबीरसपनेजगै निरस्थिअस्थिनहिंकोइ १०

आपुआपुकहे आपने स्वरूपको नहीं चेतै है कि मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकेहौं सो मैं जो समुझाऊँहौं तौ रिसहाहोइहै सो कबीरजी कहै हैं कि जो सपनेजागै सपनकहाहै देहको अभिमानी मनमुखी ह्वैजागे कहे अपने मनते यह विचारिलेइ कि मैं जान्यो मैं ब्रह्म ह्वैगयो अथवा आपनेको जान्यो महीं सबको मालिकहौं और कोई दूसरो छोड़ावनवारो नहीं है मैं अपने को जान्यो सो छूटिगयो सो कोई साहबको न मान्यो सो निरस्थि कहे नास्तिकहै सो अस्थिकहे आस्तिकन होइहै सो कहा जागै है नहीं जागैहै अर्थात् वह ज्ञान तो धोखाहै संसार समुद्रते तेरी रक्षा कहाकरैगो ताते वह साहबको समुझिजाते तेरो संसार समुद्रते उबार करिदेइ १०॥

इति चौरासिवीं रमैनी सम्पूर्णम्॥

इति॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ शब्द लिख्यते ॥

सन्तौभक्ति सतोगुरु आनी । नारी एक पुरुषदुइ जाये बूझौ पण्डितज्ञानी १ पाहनफोरिगंगयकनिकरी चहुँदिशिपानीपानी । तेहिपानी दुइपर्वतबूड़े दरियालहरि समानी २ उड़िमक्खी तरुवरके लागी बोलैएकैवानी । वहिमक्खीके मक्खानाहीं गर्भरहा विनपानी ३ नारी सकल पुरुषवहिखायो तातेरहेउ अकेला । कहै कबीर जो अबकी समुझै सोई गुरू हम चेला ४ ॥

सन्तौभक्तिसतोगुरुआनी ।
नारीएकपुरुषदुइजायेबूझौपण्डितज्ञानी १

हे सन्तो हे जीवौ तुमतो शांतरूपहौ गुरुजेहैं सबते श्रेष्ठ परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी सतो कहे सातौ जे भक्तिहैं ते आनी कहे आनई हैं अर्थात् सगुण निर्गुणके परे मनबचनके परेहै कौन सातभक्तिहैं ते कहै हैं शांत प्रथम ताकर द्वैभेद सूक्ष्मा सामान्या सोशांतकेसूक्ष्माके सामान्याके जुदेजुदेलक्षणहैं तातेतीनिभक्ती ये हैं औ दास्य सख्य बात्सल्य शृङ्गार चारि येमिलाय सातभक्ति भईं सोई जे हैं सातौ रसहैं ते मनबचन ये नहीं आवै हैं जब प्राप्ति होइहैं तवहीं जानिपरै है कि ऐसे हैं सो याभांति साहबकी जे सातौ भक्तिहैं ते गुप्तह्वैगईं काहेते कोऊ न जानतभयो सोकहैहैं नारी जो है कारणरूपा माया सो द्वैपुरुषको प्रकटकियो एकजीव दूसरो ईश्वर सो पांच ब्रह्मईश्वर प्रकटभये हैं सो आदि मंगलमें कहिआये हैं जनी प्रादुर्भावेधातुहै या जायोकोअर्थ प्रकटकरबोई है औ मायातेजीव ईश्वर प्रकटभये हैं तामें प्रमाण ॥ मायाख्यायाःकामधेनोर्वत्सोजीवेश्वरावुभौ इति। जीवेशावाभासेनकरोति मायाचाविद्याचेतिश्रुतेः ॥ सो हे पण्डित ज्ञानी तुम बूझौ तौ

सारासारके विचार करनवारे सांचहौ यहवाणीजोहै सोई तुमको भरमाइ दियोहै १ ॥

पाहनफोरिगंगयकनिकरी चहुंदिशिपानीपानी ।
तेहि पानी दुइपर्वत बूड़े दरिया लहरि समानी २

पाहन कहिये कठिनको सोकठिन मनहै ताको फोरिकै गंगा निकसी नानापदार्थनमें जो रागहोइ है सोई गंगा हैं सो वही रागरूपा मायामें परिकै जीव संसारमेंरागकरि बूडिगये औईश्वर उत्पत्ति प्रलय करिकै दोनों जीव ईश्वरजेहैं तेई दुइभारी पर्वत हैं ते बूड़िगये औ दरिया जो धोखा ब्रह्महै तामें रागरूपी जो है गंगा ताकी जो लहरिहै सो समाइ जातीभई अर्थात् सब धोखहीमें रागकरत भये सांच वस्तुमें जिनजाना तेई बाचे अथवा वही राग गंगालहरि संसारसागरमें समाइ जातीभई सबजीव ईश्वर संसारमें रागद्वेष करिकै बूडिगये अथवा वहै जोवाणीगंगा सो पाहन जोमनहै तौनेको फोरिकै निकरीहै सो चारिउ ओर पानीपानी ह्वै रहीहै तौने पानी दुइ पर्वत बूडे एक जीव एक ईश्वर औगंगा समुद्रमें समानी हैं इहां वाणीरूप गंगाको पर्यवसानदरिया जो ब्रह्महै ताहीमें होतभयो २ ॥

उडि मक्खी तरुवर के लागी बोलै एकै बानी ।
वहि मक्खीके मक्खा नाहीं गर्भ रहाबिन बानी ३

मक्खीजेहैं जीवते तरुवर जोहै देहतामें उडिकै आपनेआपने वासननते लागतभये अर्थात् प्रलयजबभई तबवही ब्रह्ममेंलीन भये पुनि जबसृष्टिभई तब पुनिशरीर पावत भये अथवा मक्खी जेहैं जीव ते संसार वृक्षमें लागतभये ते सब एकवाणी बोलैहैं कि एक ब्रह्महीहै दूसरो नहींहै साहबको नहीं जानैहै सो वही मक्खी जो जीवहै ताकेमक्खा नहींहै कहेप्रथम जीव जोहिरण्य गर्भ समष्टि जीवहै ताके पतिनहीं है परन्तु बिना पानी गर्भरह-

तईभयो जीव ते संसार प्रकटै यह आपहीते नामको जगत्मुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो साहब तौ याको उद्धार करिबो रमा नामदियो ताकी मेरेनाम मेरो अर्थ जानिकै मेरे पासआवै संसार न होइ ३ ॥

नारी सकल पुरुष वहि खाया ताते रह्यो अकेला ।
कहै कबीर जो अबकी समुझै सोइ गुरूहम चेला ४

नारी जोहै वहै कारणरूपा माया सो सब जीव ईश्वरजेपुरुषहैं तिनको खाइलियो कहे आपने पेटमें डारिलियो अर्थात् उन के काहूके ज्ञान न रहिगयो आपनोचेरो बनाइलियो तेहिते हे संतौ हे जीवो तुमतो शुद्धहौ इनको छोड़िदेउ तब साहब जेहैं तेई छोडाइ लेइँगे अकेलारहौ कहे अकेल जेसबके साहब परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके ह्वैकैरहौ जो जीव ईश्वरन को संग करौगे तो तुमहूंको माया धरिलेइगी श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो अबकी समुझैकहे यह मानुष शरीर पाइकै समुझै सोई गुरूहै तौने जीवको हमचेला ह्वै जाइँ अर्थात् ताकेहम सेवक ह्वैजाइँ जो जो हमसों पूछै सो सब वाको बताइदेइँ कछू गोप्य न राखैं अथवा सो हम पूछिलेइँ कि ऐसे भ्रमजालमें परिकै कौनीभांति ते छूट्यो सो कबीरजी तो कबहूं बंधिकै छूटेनहीं हैं ताते कबीर जी कहैहैं कि जो अबकी या समुझि लेइ तौ हम पूछि लेइँ बँधिकै छूटै कैसे सुख होइ ४ ॥ इति पहिला शब्द समाप्तम् ॥

अथ दूसरा शब्द ॥

संतौ जागत नींद न कीजै । काल न खाय कल्प नहिं व्यापै देह जरा नहिं छीजै १उलटी गंग समुद्रहिसोखै शशि औ सूरगरासै । नवग्रह मारि रोगियावैठे जलमें बिंबप्रकासै २ बिनुचरणनको दहुँदिशि धावै बिन लोचन जगसूझै । शशासो उलटि सिंधु को ग्रासै अचरज कोउबूझै ३ औंधे घडा नहीं जल डूबै सूधेसों

घट भरिया । जेहिकारण नर भिन्न भिन्न करु गुरुप्रसादते तरिया ४ पैठि गुफामें सबजगदेखै बाहर कछुव न सूझै । उलटाबाण पारथिव लागै शूराहोय सो बूझै ५ गायन कहै कबहुँ नहिं गावै अनबोला नितगावै । नटवर बाजीपेखनी पेखै अनहदहेतु बढ़ावै ६ कथनी बदनी निजुकै जोहैं ईसब अकथकहानी । धरतीउलटि अकाशहि बेधै ई पुरुषहि की बानी ७ बिना पियाला अमृत अचवै नदी नीर भरि राखै । कहै कबीर सो युगयुग जीवै राम सुधारस चाखै ८ ॥

सन्तो जागत नींद न कीजै ।

काल न खाय कल्प नहिं व्यापै देह जरा नहिं छीजै १

हे सन्तौ हे जीवौ तुमतो चैतन्यरूपहौ तुम काहेको सोवौहौ अर्थात् काहे जड़ भ्रममें परेहौ मायादिक तो जड़हैं औ तिहारो अनुभव जो ब्रह्महै सोऊ जड़है काहेते कि तिहारो मन तो जड़है ताही की कल्पना ब्रह्महै जो कहो मनको विषय ब्रह्महै यह तो कोई वेदान्तमें नहीं है तो जहां भर मन बचनसें आवै तहां भर अज्ञान कल्पित है औ अहंब्रह्मास्मिमें ब्रह्म है यह मानिवो तो मूलाज्ञानमेंहै यहवेदान्तकोसिद्धान्तहै जैसेधूरिधूमबादरघटादिक के आकाशही रहिजायहै कबीरजी कहै हैं कि तैसे तीनोंअवस्थामें तुमहीं रहिजाउहौ जहांभर ब्रह्मकहै हैं औ बिचारकरै हैं सो मन बचनमें आइजाइहै ताते मनहीं को कल्पितहै ताते वोऊ जड़हैं सो तुम नहींहौ तुमतौ चैतन्यहौ तिहारेरूपको काल नहीं खाय है औ कौनौ कल्पना नहीं व्यापैहै अर्थात् कौनौ तुम्हारेस्वरूपसें कल्पना नहीं उठैहै औतेरो जो स्वरूपहै यातेपरमपुरुपश्रीरामचन्द्रके समीप रहैहै सो रूप जरा जो बुढ़ाई है ताते नहीं छीजैहै अर्थात् कबहूँ बुढ़ाई नहीं होइहै सदा किशोर बनोरहै है १ ॥

उलटी गंग समुद्रहि सोखै शशि औ सूर गरासै ।
नवग्रहमारि रोगिया बैठे जलमें बिम्ब प्रकासै २

रागरूपी जोहै गंगा सो संसार मुख ब्रह्ममुख ह्वैरहीहै सोजो उलटै साहब मुखहोइ साहबमें जीव अनुरागकरै तोसमुद्रजोहै संसार सागर औधोखा ब्रह्मसागर येदुहुँनको सोखिलेइ औशशि जोहै जीवात्मा मानिबो कि एक आत्महीहै दूसरो पदार्थ नहीं है यहज्ञान औ सूरजोहै नाना निरंजनादिक ईश्वरनके दासमानिबेको ज्ञान तौनेको गरासिलेइहै औ यहसांचो साहबकोहै जानयाको देइहै संसारवालो जो रोगहै सो पारखहीते जायहै सो नवग्रह जब निबलहोइहै तब रोगहोइहै सो नवग्रह नौद्रव्य हैं नौद्रव्यके नाम पृथ्वी अप तेज वायुआकाश काल आत्मादिकमन तिनको मारिकै कहैमिथ्यामानिकै औआपनी आत्माको साहब को दास मानिकैबैठे तब रागरूपी जलमें बिंब जोहै शुद्धसाहब को अंशयाको स्वरूप जाको प्रतिबिंब धोखा ब्रह्महै औ संसारहै तौन प्रकाशै कहे अपने स्वस्वरूपको जानै २ ॥

बिनचरणनकोदशदिशि धावै बिनलोचन जगसूझै।
शशासोउलटि सिंहको ग्रासै अचरज कोऊ बूझै ३

तब बिना चरणनको कहे संसारमुख चलिबो ब्रह्ममुखचलिबो याको छूटिगयो अर्थात् येई चरणहैं तिनते हीन ह्वैगयो तब नवधाभक्तिकोछोड़िकै दहुकहेदशौ जो साहबकी अनुरागात्मिका भक्तिहै तौनेके दिशाको धावैहै अथवा नवद्वारको छोड़िकै दशौ द्वारको जोहै मकरतार साहब के इहांकी डोरिलगी है तहां को धावैहै औ शरीरनको जेप्राकृत नयनहैं तेयाके न रहिगये साहब को दियो जो याको हंसस्वरूप है तौने के नेत्रकरिकै साहब को चिदचिद रूप यह संसार सो सूझि परनलग्यो कहे बूझिपरनलग्यो तब अरेमूढ़ भ्रमरूपजोहै शशा खरहा अहंब्रह्म बिचार सोतैं जोहै समर्थसिंह ताको ग्रासैहै सो वहतो धोखाहै वहीभर्म भूलि गयो सो हेजीवो यह अचरज कोऊ बूझौ औ जौनज्ञानमैं कहि आयों तौनकरि साहबमें लगो जो कबहूं न होइ नई बात होय

सो यह आश्चर्य्यहै शशासिंहकोकवहूं नहींखाइहै जीवब्रह्मकवहूं नहीं होयहै सो तुम कवहूं ब्रह्म न होउगे वहब्रह्म तुम्हारई अनुभवहै ताहीमें तुम भुलाने हौ ३ ॥

औंधे घड़ा नहीं जल भरिया सूधे सों घट भरिया।
जेहि कारण नर भिन्नभिन्न करु गुरुप्रसादते तरिया ४

औंधा घड़ा जो जलमें डारिदीजै तौ नहींडूवैहै जलनहींभरि आवैहै सोतैं जो साहबको पीठिदैकै ब्रह्ममें औ संसारमेंलगै सो तौधोखाहै जैसेसूधे घटमें जलभरि आवैहै तैसे तैंहूसाहवकीओर मुखकरु जब साहब तेरेऊपर प्रसन्नहोइगो तवहींतैं ज्ञान भक्ति करिकै पूराहोइगो जाकारण नर भिन्नभिन्न करैहै कहे भिन्नभिन्न पदार्थ मानैहै औ सब पदार्थ साहबको चिदचिद रूपकरिकै नहीं देखैहै सो यह भ्रम समुद्र गुरु सबते श्रेष्ठअंधकारको दूरिकरनवारे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके प्रसादते तरौगे अथवा साहबके बतावनवारे अंधकारके दूरिकरनवारे जब गुरुमिलैंगे तब तिनके प्रसादते तरौगे ४ ॥

पैठि गुफामों सब जग देखै बाहर कछुव न सूझै।
उलटा बाण पारथिव लागै शूराहोय सो बूझै ५

दुर्लभ मनुष्य शरीररूपी जो गुफाहै तौनेमें पैठिकै कहेशरीर पाइकै चिदचित साहबकोरूप सबसंसार याकोसूझिपरै औसाहबके रूपते बाहिरे औकछु वस्तु न सूझिपरै सुरतिरूपी जोवाणहै सो जगतमुख ब्रह्ममुख ईश्वरमुख जीवात्मामुख ह्वै रहा है सो उलटा कहे उलटिकै पार्थिवकहे राजाजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें लगावै यहवात जो कोई शूराहोइ कहे ब्रह्मज्ञान ईश्वरज्ञान जीवात्मा ज्ञानकी एक आत्मै सत्यहै तिनको जीति लेइ सो बूझै तवहीं जन्म मरण याको छूटैहै ५ ॥

गायन कहैकबहुं नहिं गावै अनबोला नितगावै।
नटवर बाजी पेखनी पेखै अनहद हेतु बढ़ावै ६

गायन जोहै बाणी वेदशास्त्र पुराण सो तात्पर्य करिकै अनिर्वचनीय साहबको कहैहैं तौनेको तौ कबहूं नहीं गावै है अनबोला जो निराकार धोखा ब्रह्महै जो कबहूं बोलतै नहीं है सो कैसे पूरपरै कौनीतरहते अनबोलाको गावैहैं सो आगे कहैहैं वह जो धोखा ब्रह्मको पेखनोहै सो नटवत बाजीहै कहे झूंठै है उहां कछू नहीं देखोपरै है जो कहो अनहदको हेतु तो बढ़ावै है कहे दशौधुनि अनहद की तौ सुनिपरैहै ६ ॥

कथनीबदनी निजुकै जोहै ईसब अकथ कहानी।
धरतीउलटि अकाशहि बेधै ईपुरुषहिकीबानी ७

सोई तो सब कथनी बदनीहै जो बिचारिकै देखौ तौअनहद आदिदैकै ईसब अकथ कहानीहैं साहबके जाननवारे पूरेसंतनके कहिबे लायक नहींहै झूंठेहैं कछु इनमें है नहीं सबमनके अनुभवहैं पुरुषजे हैं तिनकी यह बाणिकहे सुभावहै धरती जो जड़मायाहै ताको उलटिदेइहै वाकोमुख सुरकाइ देइहै वासों आप फिरिआवै है औ आकाश जोब्रह्महै ताको बेधैकहे ब्रह्मकेपारजाय है तामें प्रमाण ॥ सिद्धाब्रह्मसुखेमग्ना दैत्याश्चहरिणाहताः। तज्ज्योतिर्भेदनेशक्तारसिकाहरिवेदिनः ॥ औकुपुरुषजेहैं तेसंसार में लगैहैं कि धोखाब्रह्ममेंलगैहैं उनकीबानीकहेयहै सुभावहै ७॥

बिना पियाला अमृत अचवै नदी नीर भरि राखै।
कहै कबीर सो युगयुग जीवै राम सुधारस चाखै ८

स्थूल सूक्ष्मादिक जेपांचौ शरीरहैं तेईपियालाहैं स्थूलसूक्ष्म कारण करिकै विषयानंद पियैहैं औ महाकारण कैवल्यते ब्रह्मानंदपियैहैं पांचौ शरीर पियाला बिना कहेते निकसिकै जेपुरुष साहबको दियो जो हंसस्वरूप है तामें स्थितह्वैकै साहबको प्रेम रूपी जो अमृतहै ताको अँचवैहैं जाते जन्म मरणनहोइ तिनको जगत्के रागरूपी नीरकरिकै भरो जो नदीहै जाको आगे वर्णन करिआयेहैं नदियानीर नरकभरि आई सो तिनको राखै कहे

छारई हैं अर्थात् भूरहीहैं अथवा संसारमें जो रागकियेहैं सोनरक भरी हैं ताकोनिकारिकै रसरूपाभक्ति जो साहबकीनीर ताको भरि राखै सो कबीरजी कहैहैं कि सोई युगयुगजीवै है कहे वहीको जनन मरण नहीं होय जो याभांति परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकेप्रेमरूपीसुधारसकोचाखैहै ८ ॥ इतिदूसराशब्दसमाप्तम् ॥

अथ तीसरा शब्द ॥

सन्तौ घरमें झगराभारी । राति दिवसमिलि उठिउठिलागें पांचढोटायकनारी १ न्यारोन्यारोभोजनचाहैंपांचौअधिकसवादी । कोइकाहूकोहटानमानै आपुहिआपुमुरादी २ दुर्मतिकेरदोहागिनि मेटे ढोटैचापचपेरै । कहकबीरसोईजनमेरा घरकीरारिनिवेरै ३ ॥

सन्तौघरमें झगराभारी ।
रातिदिवस मिलि उठिउठिलागें पांचढोटा यकनारी १

आगे या कहिआयेहैं कि विना पियाला अमृत अचवैहैं औ जे नहीं अचवै हैं तिनको कहैहैं हे सन्तौ हे जीवौ या घर जो शरीर है तामें भारी झगरामच्यो है पांचौ ढोटा जे पांचौ तत्त्वहैं औ नारी जो मायाहै सोउठिउठि लागे हैं कहेझगराकरै हैं यहैउपाधिराति दिन जीवको लगी रहै है १ ॥

न्यारो न्यारो भोजन चाहैं पांचौ अधिक सवादी ।
कोउ काहूको हटा न मानै आपुहि आपु मुरादी २

अपने अपने न्यारे न्यारे भोजन चाहै हैं पांचौ बड़े सवादी हैं आकाश श्रोत्र इन्द्री प्रधानहै सोशब्दचाहै है वायु त्वच इन्द्री प्रधान सोस्पर्शको चाहैहै औतेज चक्षु इन्द्रीप्रधानहै सोरूपकोचाहै है औजल रसनेन्द्री प्रधानहै सोरसकोचाहै है औधरती घ्राणेन्द्री प्रधानहै सो गन्धको चाहै है औ माया जीवही को ग्रासन चहै है कोई काहूको हटको नहीं मानै हैं आपही आपु मालिक ह्वैरहेहैं आपुही आपु आपनी मुरादि कहे वांछा पूरकरै हैं २ ॥

दुर्मतिकेर दोहागिनि मेटै ढोटै चापचपेरै ।
कहकबीरसोईजनमेरा घरकीररिनिवेरै ३

दुर्मति जे हैं गुरुवालोग जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको छोंडि आत्महीको सत्यमानै हैं औ याकहै हैं कि सबसुख करिलेउँ वहां कछु नहीं है ऐसे जेनास्तिक हैं तिनकी दोहागिनिकहे नहीं ग्रहण लायक वाणी तिनको मेटिकै कहे छोंड़िकै ढोटा जे हैं पांचौतत्त्व तिनको जो है चाप कहे दबाउब ताको आपै चपरैकहे दबाइलेइ अर्थात् वे न दवावन पावैं आपने आपने विषयनमें मनकोखैंचि लैजाइहैं तहां मन न जानपावै सोकबीरजीकहै हैं कि जो पारिख करिकै शरीर जो घरहै तौनेमें जो पांचौइन्द्रिनको झगड़ाहै ताको निवेरै कहे सबतत्त्वजेपृथ्वीआदिकहैं तिनमेंलीनजेपांचौइन्द्री हैं तिनकी जेविषयहैं तिनकोनिवेराकरै कि भगवत्कीअचिदविग्रह है पृथ्वीआदिक तत्त्वरूप करिकै जो देखै है इन्द्रीरूपकरिकै जोदेखै औ विषयरूपकरिकै जोदेखै है सो न देखे औयहमानै कि मैंजोहौं जीवात्मा तौनेकी एकौ नहीं हैं काहेते कि मैं चिदचित विग्रहहौं ये जड़ विग्रहहैं इनते भिन्नहौं सो ये जे हैं जड़ ते आत्मैकी चैतन्यता पाइकै आपुसमें लड़ै हैं सो इनते जब आत्मा भिन्नह्वैजाइगो तब सब शरीरै एकौ कार्य करनको समर्थ न होइगो कैसे जैसे शरीरते जीव इनतेअपनेको जुदोमानैगो हंसस्वरूपमेंस्थित होइगो सो इनहीं को चपाइ लेइगो घरकी रारिनिवर जायगी सो इसतरहते जोकोई अपने स्वरूपकोजानि घरकी रारिनिवेरै परमपुरुष श्रीरामचन्द्रमें लगै सोई जन मेरो है ३ ॥

इति तीसराशब्द समाप्तम् ॥

अथ चौथाशब्द ॥

सन्तो देखत जगबौराना । सांचकहौं तौ मारनधावै झूठेजग पतियाना १ नेमीदेखे धर्मी देखे प्रातकराहि असनाना । आतम

मारि पषाणहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना २ बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना । कैमुरीद तदबीर बतावैं उनमें उहै जो ज्ञाना ३ आसनमारि डिंभ धरिबैठे मनमें बहुत गुमाना । पीतर पाथर पूजनलागे तीरथगर्व भुलाना ४ मालापहिरे टोपीदीन्हे छाप तिलक अनुमाना । साखी शब्दै गावतभूले आतमखबरि न जाना ५ हिंदूकहै मोहिं रामपियारा तुरुक कहै रहिमाना । आपुसमें दोउ लरिलरि मूये मर्म न काहूजाना ६ घरघर मंत्रजे देत फिरतहैं महिमाके अभिमाना । गुरुवा सहित शिष्य सबबूड़े अंतकाल पछिताना ७ कहै कबीर सुनोहोसंतो ईसबभर्मभुलाना । केतिककहौं कहा नहिं मानै आपहि आप समाना ८ ॥

सन्तौ देखत जगबौराना ।
सांचकहौं तौ मारन धावै झूठेजग पतियाना १

हे संतौ यह जगत् देखत देखत बौराइ गयो यह जानैहै कि यह कल्पना मनहींकी है एकनको दुखपावत देखैहै एकनकोभूतहोत देखैहै एकनको रोगग्रसित देखैहै एकनको घोड़े हाथीचढ़े देखैहै एकनको राजा होतदेखैहै औ एकनको मरतदेखैहै आपही मरघट ज्ञानकथैहै कि ऐसेही हमहूं मरिजाइँगे सोयहिदेखतदेखत भुलाइजाइहैं परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भजन नहीं करैहै जाते संसारतेछूटै जोसांच बताऊंहौं कि सांच जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं जो चितअचितमें व्यापकहैं सब ठौर बनेहैं तिनमें लगौ जाते उबारहै तौ मारन धावैहै औ झूठे जे मायाब्रह्महैं तिनके विस्तारके जे नानामतहैं तिनमें जोकोई लगावैहै तौ तिनको सांचमानिकै पतिआय जायहै १ ॥

नेमी देखे धर्मी देखे प्रात करहिं असनाना ।
आतममारिपषाणाहिंपूजैं उनमेंकछूनज्ञाना २

बहुत नेमी धर्मी देखेहैं बहुत प्रातःस्नान करनवालेन को

देखेहैं स्वर्गको जाय हैं औ आत्माको मारिकै कहे भगवान् को मंदिर शरीरमें साक्षात् सबके हृदयमें भगवान् अंतर्यामी रूपते वसेहैं तौने शरीरको फोरिकै मेढ़ा महिषादिकनको मूड़लैके पीतर पाथर आदिक जे देवीकी मूर्त्तिहैं तिनमें चढ़ावैहैं औ सब के उद्धार ह्वैबेको बतावै हैं तौ इनमें कौन ज्ञानहै कछू ज्ञान नहींहै काहेते कि साहबको सर्वत्र नहीं जानैहैं २ ॥

बहुतकदेखे पीरऔलिया पढ़ैं किताबकुराना ।
करिमुरीदतदबीर बतावें उनमें यहैजोज्ञाना ३

औ बहुते पीर औलियनको देखे किताब कुरानके पढ़नवाले ते जीवनको मुरीद कहे शिष्यकरिकै मुरगी बकरीके हलालकरै की तदबीर बतावैंहैं औ आपौ हलाल करैहैं ३ ॥

आसनमारिडिंभधरि बैठे उनमें बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गर्ब भुलाना ४

औ कोई चौरासी आसनकैकै प्राण चढ़ायकै डिंभधरि बैठहैं कि हमारे बरोबरि कोई सिद्धनहींहै यही मनमें गुमानकरैहैं यह योगिनको कह्यो औ कोई पीतरकी मूर्त्तिकोई पाथरकी मूर्त्ति पूजैहैं औ सर्वभूतमें व्यापक जो भगवान् तिन भूतनको द्रोहकरै हैं ते अज्ञानीहैं साहबको नहीं जानै हैं तामें प्रमाण ॥ अहमुच्चावचैर्द्रव्यैःक्रिययोत्पन्नयानघे । नैवतुष्येऽर्चितोर्च्चायां भूतग्रामावमानिनः १ यस्यात्मबुद्धिःकुणपेत्रिधातुकेस्वधीःकलत्रादिषुभौमइज्यधीः॥ यत्तीर्थबुद्धिःसलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषुसएवगोखरःइतिभागवते ॥ औ कोई तीर्थनमें वागैहैं इनहीके गर्बमें सब भुलानेहैं कि हम मुक्तिह्वै जाइँगे ४ ॥

मालापहिरे टोपीदीन्हे छापतिलक अनुमाना ।
साखी शब्दै गावतभूले आतम खबरिन जाना ५

अब कबीरपंथिनको नानापंथिनको कहैहैं कि मालापहिरे हैं टोपीदीन्हेहैं औ नाकतेलैकै अछिद्र ऊर्ध्वतिलक दीन्हेहैं ताहीके

अनुसार छापपायेहैं या कहैहैं हमको गद्दीकीछापभईहै हममह-न्तहैं पानपायोहै औसाखीशब्द गावतहैं पै वाको अर्थभूलेहैं सा-खीशब्दमें जोसाहबकोरूप बतावैहैं जीवात्माको सोनहींजानै५॥

हिंदूकहैमोहिंरामापियारा तुरुककहैरहिमाना ।
आपसमेंदोउ लरिलरिभूये मर्मनकाहूजाना ६

सो हिन्दूतो कहैहैं कि वेदशास्त्रमें रामही पियाराहै औमुस-लमान कहैहैं कि रहिमानही पियाराहै यहदुविधा लगायराख्यो है या न जानतभये कि एकहीहैं आपसमें लड़िलड़िकै मरिगये मर्मकोई न जानतभये कि वही रामहै वही रहिमान है साहब एकई है दूसरो नहीं है सबनामवहीकेहैं तामेंप्रमाण ॥ सर्वाणिना-मानिनिजमाविशंतिइतिश्रुतिः॥सोसबनामवहीमेंघटितहोयहै६॥

घरघर मंत्र जेदेत फिरतहैं महिमाके अभिमाना ।
गुरुवासहित शिष्य सबबूड़े अन्तकालपछिताना ७

घरघर जे मंत्रदेत फिरतहैं अपनी महिमाके अभिमानतें कि हमासिद्धहैं योगीहैं पीरहैं औलियाहैं ऐसे जे गुरुवाहैं तेयही अभि-मानते सबकीरक्षाकरनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको भुलायकै सब जीवनको और औरमें लगाइदेइहैं औ कहै हैं कि हम उद्धारकै देइहैं गुरुवा सहित सबशिष्य बूड़िजाइँगे औ जब यमकेर मोंगरा लगैगो तब पछितायगो कि हम परमपुरुष श्री-रामचन्द्रको भजन न कियो जे सबके रक्षकहैं ७ ॥

कहहि कबीर सुनोहो संतो ई सबभर्म भुलाना ।
केतिककहौं कहानहिंमानै आपहि आपसमाना ८

सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतो तुमसुनो येसबभर्मई भुलान रहैहैं मैं चारोयुगमें केतनो समुझाऊंहौं पैमानैनहींहैं यद्यपिमाया ब्रह्मकी येती सामर्थ्यनहीं है कि यहजीवको धरिलैजाय काहेतेकि वहजीवहीको अनुमानहै सो यह आपनेनते आप यहभर्ममें स-

भाइगयोहै कि मैं ब्रह्महौं आपआपहीते यह मायाब्रह्मसो आपस मानलियोहै अर्थात् संगतिकैलियोहै तेहिते संसारीह्वैगयो ८॥
इति चौथाशब्द समाप्तम्॥

अथ पांचवां शब्द॥

संतो अचरज यक भो भाई। यह कहौं तोको पतिआई १ एकैपुरुष एकहैनारी ताकर करहु बिचारा। एकैअंड सकल चौरासी भर्म भुला संसारा २ एकैनारी जालपसारा जगमेंभया अँदेशा। खोजत काहूअंत न पाया ब्रह्मा बिष्णु महेशा ३ नाग फांस लीन्हे घटभीतर मूसि सकल जगखाई। ज्ञान खड्गबिन सब जगजूझै पकरि काहु नहिंपाई ४ आपुहि मूलफूलफुलवारी आपुहि चुनिचुनि खाई। कहैं कबीर तेई जन उबरे जेहिं गुरु लियो जगाई ५॥

संतो अचरज यकभोभाई। यहकहौं तोको पतिआई १
एकैपुरुष एकहै नारी ताकर करहु बिचारा।
एकै अण्ड सकल चौरासी भर्म भुला संसारा २

हे संतो शुद्धजीवो भाई एक बड़ो आश्चर्यभयो जो मैं वाको कहौं तौ कोपतिआय १ एकैपुरुषहै एकैनारीहै कहे वहीजीवात्मा पुरुषौहै नारिउहै ताको बिचारकरो वाकौनहै एकैअंडमाकहेएकही प्रणवमें उत्पन्न चौरासी लाखयोनि तामें परिकै यहजीव संसारकेभर्ममें भुलायरह्योहै अथवा एकही अंडकहेब्रह्माण्डहिमें२॥

एकै नारी जाल पसारा जगमें भया अँदेशा।
खोजत काहू अंत न पाया ब्रह्मा विष्णु महेशा ३

यहजीव शरीर धरयो तबएकैनारी जो वाणी सो नानाप्रकार की जोहै कल्पना सोई है जालताको पसारि देतभई तब जगमें नानाप्रकारको अँदेशा होतभयो कहे नानाप्रकार के मतनकरिकै

जगत्‌के कारणको खोजतभये परन्तु ब्रह्मा विष्णु महेश ये कोई अन्त न पावतभये थकिकै नेतिकहिदियो आत्माको नानाविचार कियो कि कौन कोहै ३ ॥

नागफांस लीन्हे घट भीतर मूसि सकल जग खाई ।
ज्ञान खड्‌ग विन सबजग जूझै पकरि काहु नहिंपाई४

सो ये कैसे अन्त पावै नागफांस कहे त्रिगुण की फांसीलिये घटके भीतर माया वनीरहै है सोई सब संसारको मूसिकै खाइ लेइहै मूसिकैखाइ जोकह्यो सो वैतौ नानामतनमें परे यहजानै हैं कि यही सत्य है माया जोहै सो परमपुरुषको जानिवो मूसि लियो कहे चोराइलियो सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको औ अपने आत्माकोजानिबो कि साहबकोहौं मैं औ मायादिकन को मिथ्यामानिवो यहजो ज्ञानखड्‌गहै ताकेविना सबजग जूझो जाइहै वह मायाको कोई पकरि नपायो अर्थात् यथार्थ मायाही कोई न जान्यो तब साहबको अपनो स्वरूप काजानै ४ ॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी आपुहि चुनि चुनि खाई ।
कहहि कबीर तेई जन उबरे ज्यहि गुरुलियो जगाई५

आपहि वह मायामूल अविद्याह्वै जगत् नानापदार्थ भईकहे कारण अविद्याभई औ आपही फूल फुलवारीकहे कार्य अविद्या ह्वैके जगत्‌के नानापदार्थभई औ आपही कालरूपह्वैके चुनिचुनि खाइहै सो कबीरजीकहैहैं स्वप्न व जोमाया तौनेतेजगाय साहब को बताइदियोहै जाको सद्‌गुरु तेईजन उबरैहैं अर्थात् जो साहबकोजानैहैं औ अपनेस्वरूपकोजानैहैं कि मैं साहब कोहौं ताको माया स्वप्नवत्‌है अथवा गुरुजे सबतेश्रेष्ठश्रीरामचन्द्रहैं तेईजिन को मोहनिशामें सोवत जगाइदियोहै अर्थात् हंसरूपदैके अपने पास बोलाइलियोहै तेई जन उबरैहैं कहे बचैहैं ५ ॥

इतिपांचवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथछठाशब्द ॥

संतो अचरजयकभोभारी। पुत्रधरलमहतारी १ पिताकेसंगहिभई बावरी कन्या रहलकुमारी। खसमहि छोंड़ि ससुरसँगगवनी सो किनलेहु विचारी २ भाईसंग सासुरी गवनी सासुसौतियादीन्हीं। ननँदभौज परपंच रच्योहै मोरनाम कहिलीन्हा ३ समधीके सँग नाहींआई सहजभई घरवारी। कहहिकबीर सुनो होसंतो पुरुष जन्मभोनारी ४ ॥

संतो अचरज यकभो भारी। पुत्र धरलमहतारी १
पिताके संगहि भई बावरी कन्या रहल कुमारी।
खसमहिछोंड़िससुरसँगगवनीसोकिनलेहुबिचारी २

हे सन्तो एक बड़ोआश्चर्य भयो पुत्र जो यह जीव है ताकी महतारी जो मायाहै सो धरतभई १ अरु पिता जोब्रह्महै ताके संग बावरी ह्वैजातभई कहे जारपुरुषबनावतभई अर्थात् माया सबलित ब्रह्मभयो औ कन्याजो बुद्धिहै सो पतिको निश्चयकहूं न करतभई विचारैकरत रहिगई कुँवारिहिरहतभई अर्थात् सब मतनमें खोजतभई परन्तु निश्चय न होतभई पहिले पिता जो ब्रह्महै ताको खसम बनायो पुनि तौने खसमको छोड़िकै ससुर जोहै मन कहे मनैको अनुभव ब्रह्महै ताकेसंग गवनतभई सो हे जीवो अपनेते काहे नहीं विचारिलेउहौ कि माया हमारे मनमें पैठिकै और औरमें बुद्धि निश्चयकरावै है २ ॥

भाई के सँग सासुर आई सासु सौतिया दीन्हा।
ननँद भौज परपंच रच्यो है मोरनाम कहिलीन्हा ३

प्रथम याको भयभई तब याविचारकियो कि द्वितीया द्वैभयं भवति ॥ तबहीं मायालगी याते भाई भयो मायाको भय सोई भाईके साथ नानामतवारे जेगुरुवालोग तिनकोजोमनहै सोई सासुरहै तहां आई औ तिनगुरुवनकी वाणी जोहै सोई सासुहै

काहेते ब्रह्मकीउत्पत्ति वाणीहोति है सो गुरुवनकी वाणीरूप जो मायाकी सासु ताकी सवति जो दिक्षारूप सो मायाको देतभई सो मायाते दैवयोग छूटिउजाय परन्तु दीक्षासवति ते नहीं छूटै है सो मायाकी सवति दीक्षा काहेतेभई माया तो ब्रह्मकीस्त्री है सो ताही ब्रह्म को दीक्षाहू लगावै है सो ज्ञान विद्यारूप है सो ब्रह्मके साथही भई ब्रह्मकी वहिनिभई मायाकी ननँद कहाई तौन अविद्या ब्रह्मको पतिबनायो सो भौजी आपभई सो ये दोऊ भौजी ननँदमिलिकै परपंचरच्यो है अरु जीवकहैहै मेरोनामकह दियो है कि जीवही सबकरैहै ३ ॥

समधी के सँग नाहीं आई सहज भई घरवारी ।
कहै कबीर सुनोहोसन्तो पुरुष जन्मभो नारी ४

मायाकी कन्या बुद्धिकहिआये सो बुद्धिकुँवारहिमें नानाजीवनको जारपति बनायो सबजीव साहबके अंशहैं ताते सबजीवनके बाप साहब ठहरे सो मायाके समधी भये तिनके घरवारी कहे आपही सब जीवनको विवाहलेतभई अर्थात् वशकर लेत भई सो कबीरजी कहैहैं । कि हे संतो जीव जो पुरुषहै सो माया के साथनारी ह्वैगयो ४ ॥

इति छठाशब्द समाप्तम ॥

अथ सातवां शब्द ॥

संतो कहौ तो को पतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १ लौकैरतन अवेधअमौलिकनहिं गाहकनहिंसांई । चिमिकिचिमिकि चमकैदृगदुहुँदिशिअरवरहा छरिआई २ आपहिगुरूकृपाकछु कीन्हो निर्गुण अलखलखाई । सहजसमाधि उनमुनीजागै सहजमिलै रघुराई ३ जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई मनमाणिकवेध्योहीरा । परमतत्त्व यह गुरु ते पायो कह उपदेश कबीरा ४ ॥

सन्तोकहौतोकोपतिआई । झूठाकहतसांचबनिआई १

हेसंतो झूठा जो ब्रह्महै ताको कहतकहत जीवन सांचमानि-माई वही ब्रह्मको सांच मानलियोहै अब जो मैं सांच साहबको बताऊंहौं तो को पतिआय अर्थात् कोई नहीं पतिआय है ब्रह्महीमें लगेहैं १ ॥

लौकेरतन अवेध अमोलिक नहिंगाहकनहिं सांई ॥
चिमिकिचिमिकिचमकैदृगदुहुंदिशिअरबरहाछाइ ॥ २

लौ लगनको कहैहैं सो वा ब्रह्ममाहीहौं या जोलौकहे लगन ताही ज्ञानको रतनकै अबेधित अमोलिकमानि जामेंगाहक औ साईं नहीं है अर्थात् दूसरातो हईनहीं है गाहक साईं कहां ते होय सो वही ज्ञानको ब्रह्ममानि लियोहै तौने ब्रह्म उनके दृग-नमें चमकिचमकि चमकैहै सर्बत्रदेखोपरै है जोकहोलोकप्रकाश ब्रह्महीदेखोपरैहै सोनहीं अरुजोयाहठहै कि सर्बत्रब्रह्महीहै याजो बरहाहै सो छरिआइरह्यो है सर्बत्र ब्रह्मही देखायहै जैसे बरहामें जलबढ़े सर्बत्र फैलिजाय है ऐसे अहंब्रह्मास्मि जो याज्ञान सो जब बढ़यो तबयाकोहठहीरूप ब्रह्मदेखो परैहै २ ॥

आपहिगुरूकृपाकछुकीन्होनिर्गुणअलखलखाई ।
सहजसमाधि उनमुनीजागे सहजमिलैरघुराई ३

सो गुरुजेहैं सतगुरु ते जब आपही कृपाकरैहैं तब निर्गुणजो ब्रह्महै ताको अलख लखावै हैं कि वे कुछबस्तुही नहींहैं अर्थात् अलखहैं धोखाहैं साहबकबमिलै जब सहज समाधिउनमुनी मु-द्राकरि जोसर्वत्रब्रह्मदेखैहै तौन उनमुनीरूप निद्राते जागै अर्थात् सहजही समाधिकै चित अचितरूप विग्रह या जगत् साहबकोहै यादेखैतौ सहजहीमें परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तेमिलैं ३ ॥

जहँजहँदेखौंतहँतहँसोई मनमाणिक बेध्योहीरा ।
परमतत्त्व यहगुरुते पायो कहउपदेश कबीरा ४

अवेधितअमोलिकआगेकहिआये ताको तौनेतिनेतिकहैहैं वामें

काहूको मनहीं नहीं वेध्यो अर्थात् धोखहीहै अबसाधुनको मन जो माणिकहै अनुराग पूर्वक लाले सो साहब जे हीरा हैं तिनमें वेध्यो है ऐसे जे साहब चितअचितरूप जहांजहां देखौहौ तहांतहां सोई है यह कबीरजी कहै हैं कि यह परमतत्त्वको उपदेश मैं गुरु ते पायो है ४ ॥ इति सातवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ आठवां शब्द ॥

सन्तौ आवैजायसोमाया । हैप्रतिपाल कालनहिंवाके नाकहुँ गया न आया १ क्यामकसूदमच्छकच्छहोना शंखासुरनसंहारा । अहैदयालुद्रोहनहिंवाके कहहुकौनकोमारा २ वेकर्त्तानबराह कहावैं धरणिधरैनहिंभारा।ईसबकामसहबकेनाहींझूँठकहैसंसारा ३ खम्भफारि जो बाहरहोई ताहिपतिजसबकोई । हिरणाकुशनख उदरविदारे सोनहिंकर्त्ताहोई ४ बावनरूपनबलिकोयांचे जोयांचै सोमाया । बिनाबिवेकसकलजग जहंडेमायाजगभरमाया५परशुरामक्षत्रीनहिंमाराईछलमायाकीन्हा । सतगुरुभक्तिभेदनहिंजानै जीवभमिथ्यादीन्हा ६ सिरजनहारनव्याहीसिता जलपपाणनहिं बंधा । वेरघुनाथएककैसुमिरेजोसुमिरैसोअंधा ७ गोपीग्वालगोकुलनहिंआयेकरतेकंसनमारा । हैमेहरबानसबनकोसाहब नहिं जीता नहिं हारा ८ वेकर्त्ता नहिंबौद्धकहावैं नहींअसुरकोमारा । ज्ञानहीनकर्त्तासबभरमे मायाजगसंहारा ९ वेकर्त्तानहिंभयेकलंकी नहीं कलिंगहिमारा । ईछलबलसबमायैकीन्हा यतिनसतिन सबटारा १० दशअवतारईश्वरीमाया कर्त्ताकैजिनपूजा । कहै कबीरसुनोहोसन्तौ उपजैखपैसोदूजा ११ ॥

अवतरण सबते गुरुश्रेष्ठ परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रको वर्णन करिआये तिनके द्वारमें नारायणादिक मत्स्यादिक रहे आवै हैं ते अमायिक हैं काहेते कि आवैजाय नहीं हैं तिनहींको परात्परब्रह्म करिकैवर्णतहैं तामेंप्रमाण ॥ पूर्णमदःपूर्णमिदंपूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्यपूर्णमादायपूर्णमेवावशिष्यते ॥ इतिश्रुतेः ॥ औ ईमायाते परे हैं औ बहुधा निरंजनादिक जे नारायणहैं जिनको पांचब्रह्ममें कहिआये हैं तेउनकीउपासनाकरिकै उनको आपनेतेअभेदमानिकै उनकी शक्तिको प्राप्तिह्वैकै जगत्केकार्य सबकरै हैं औ जब मत्स्यादिक अवतार लेइहैं तब जे साकेत मत्स्यादिक हैं तिनकी अभेद भावना करिकै उनते अवतारकी शक्तिपाइकै आपही मत्स्यादिक होइहैं ये सब साकेतमें जे नारायणादिक सबहैं तिनके उपासकहैं उपासनामें देवको औ अपनो अभेद मानिबो लिख्यो है ॥ देवोभूत्वादेवंयजेत् ॥ तेहिते उनकी शक्तिते ये सबअवतार लेइहैं जो कहो यामेंकहा प्रमाणहै कि येसब उनहींके उपासकहैं तौ रामनाम के साहबमुखअर्थ में मकारस्वतःसिद्धसानुनासिक है ताको जो है मात्रा तौनेमें साहबके जेसबपार्षदहैं तिनकोबर्णन करिआये हैं येसब नारायणादिक रामनामहीकी उपासनाकरै हैं सो जाकी जाकी उपासना कीनचाहै हैं ताकी ताकी उपासना रामनामही में ह्वैजायहै रामनामकी येसब उपासनाकरै हैं तामें प्रमाण ॥ नारायणस्वयम्भूश्च शिवश्चेन्द्रादयस्तथा। सनकाद्याश्च येणिन्द्रानारदाद्यामहर्षयः ॥ सिद्धाःशेषादयश्चैव लोमशाद्यामुनीश्वराः। लक्ष्म्यादिशक्तयःसर्वाःनित्यमुक्ताश्चसर्वदा॥मुमुक्षवश्च मुक्ताश्चऋषयश्चशुकादयः॥तत्प्रभावपरंमत्वामंत्रराजमुपासते ॥ इतिवशिष्ठसंहितायाम् ॥ जो कहो येसब रामनाममें साहब मुख अर्थ तौ जान्यो मायिक काहेभयो तौ बिना माया सबलित भये जगत्के कार्य नहीं ह्वैसकै हैं तेहिते ये सब माया सबलित ह्वैकै कार्यकरै हैं परन्तु जैसे इतर जीवनके जन्म मरणहोइहैं तैसे इनके नहीं होइहैं जब महाप्रलयभई तब सबजीव साहब के लोकप्रकाशमेंसमष्टिरूपरहैहैं जबउत्पत्तिभई तबफिरिकमैकरिकै उत्पत्ति होइहै औयेसबनारायणादिकनकी उत्पत्ति प्रलय नहीं होइहै काहेते कि ईश्वरहैं जब महाप्रलयभई तब जेसाकेतलोकमें नारायणादिकहैं ते इनके अंशी हैं उपास्यहैं तहां लीनह्वैकै रहेजाइहैं

उत्पत्ति समयमें समष्टिजीव व्यष्टिहोन चाहै हैं तब रामनाम में जगत्मुख अर्थको भावना करै हैं तब साकेतनिवासी जेनारायण हैं तिन्हैं तिनके अंशई सब पांच ब्रह्मरूपते प्रकटहोइहैं साकेतमें जे नारायणादिकहैं तेअमायिकहैं औ तिनके अंश नारायणादिक मत्स्यादिक अवतार लैकै आवैजायहैं ते माया सबलितै हैं सो ये सब मत्स्यादि अवतारनको मायिक कहिकै कबीरजी साहब को परत्व देखावै हैं कि साहब सबते भिन्नहैं॥

सन्तौ आवैजायसोमाया।

हैं प्रतिपाल कालनहिंवाके नहिं कहुँगया न आया १

हे सन्तौ आवैजायहै सो तो मायाको धर्म है जे साहबहैं परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तेसबको प्रतिपालहीभरकरै हैं कहेउद्धार-ई भरकरैहैं और काम नहीं करैहैं उनकेकाल नहीं है अर्थात् प्रलय आदिक नहीं होइहै अथवा जो कोई वेसाहब को जानै है ताको कालको भय छूटिजायहै वे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ना कहींगये हैं न आये हैं १॥

क्यामकसूदमच्छकच्छहोना शंखासुरनसँहारा।
अहै दयालु द्रोहनहिंवाके कहौकौनको मारा २
वेकर्त्ता न बराह कहावैं धरणिधरै नहिं भारा।
ईसबकाम सहबके नाहीं झूठ कहै संसारा ३

अरु वे उद्धारकर्त्ता परमपरपुरुप श्रीरामचन्द्रको क्या मक-सूद कहे क्यामक़सदहै अर्थात् क्याप्रयोजनहै मच्छ कच्छ होनेका वे शंखासुर को नहीं संहारयो है शंखासुर उपलक्षण याते जि-नको जिनको मारयो है अवतारते सब आइगये अरु सो दयालु हैं सबकी रक्षाकरै हैं उनके द्रोहनहीं है कहौ कौनको मारयो है २ अरु वे उद्धारकर्त्ता साहब बाराह नहीं भये औ न पृथ्वीको भारा धरयो सो जौन सबकोई कहै हैं कि ई सब काम साहबही के हैं

सो ये काम साहब के नहीं हैं यह संसार भूठई कहै है सो साहब को विना जाने कहै हैं ३ ॥

खम्भफारिजो बाहरहोई ताहिपतिज सबकोई।
हिरणकशिपुनखउदरबिदारे सोनहिंकर्त्ताहोई ४
वामनरूप न बलिको यांचे जो यांचे सो माया।
बिनाबिवेकसकलजगजहड़े मायाजगभरमाया ५

औ खम्भ फारिकै बाहर ह्वैकै नरसिंह रूपह्वै नखते हिरणकशिपुके उदर को बिदारयो है तौनेन व्यापक ब्रह्मको सबकोई पतियायहै सो वे उद्धार कर्त्ता परम पुरुष श्रीरामचन्द्र नहीं हैं यह सब माया कियो है ४ औ बामनरूप ह्वै वे साहब बलिको नहीं यांच्यो है मांगिबो पाइबो तो सब माया है सब जगत् के जीव बिना बिवेक जहड़े कहे भुलायगये हैं सब जीवनको माया भरमाइलियोहै ५ ॥

परशुरामक्षत्री नहिंमारा ईछलमायहि कीन्हा।
सतगुरुभक्तिभेदनहिंजानै जीवअमिथ्यादीन्हा ६

अरु वे उद्धार कर्त्ता परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र परशुराम ह्वै क्षत्रिनको नहीं मारयो है यह सब मायाही कियोहै सतगुरुकहे सैकरन जे गुरुवाहैं ते साहब के भक्तिकेभेदको जानैनहीं हैं जीव को ये जे नारायण हैं औ सब जेअवतारहैं तिनही को अमिथ्या कहे मिथ्या नहीं सांच कहिकै कि वे सांच साहब येई हैं तिनही की जीवनको दीक्षा देइहै सो मिथ्या है ६ ॥

सिरजनहारनब्याहीसीता जलपषाणनहिंबंधा।
वेरघुनाथ एककै सुमिरै जो सुमिरै सो अंधा ७

औ वे सिरजनहार कहे ताके सुरति दियो ते ब्रह्मा बिष्णु महेश आदिक अवतार लेइहैं औ जगत्की उत्पत्तिहोइहै सोसीता को नहीं बिवाह्यो औ सेतु नहीं बांध्यो सो वे निर्विकार उद्धार

कर्त्ता रघुनाथको औ ये सब अवतारनको एक करिकै सबकोई सुमिरैहैं सो जो एक करिकै सुमिरैहैं ते अंधेहैं काहेते कि वे तौ रघुनाथहैं रघु कहिये सब जीवको तिनके नाथहैं वेकाहेको काहू के मारनको अवतार लेइँगे वे निर्विकार औ ये मायासवलित ह्वैकै सबअवतार लेइहैं जो कोई आवैजायहै सो मायिकहै सो वे निर्विकार साहब औ सविकार ये सब अवतार एक कैसे होइँगे औ रघु जीवको कहैहैं तेरघुशब्दकै उत्पत्तिरंघतेलोकाल्लोकांतरं गच्छति रघवोजीवास्तेषांनाथः अर्थ लोकते और लोक जाइते जीव रघुहैं तिनके नाथ जे हैं तेई रघुनाथ हैं ७ ॥

गोपीग्वालगोकुलनहिंआये करतेकंसनमारा ।
हैमेहरबानसबनकोसाहब नाहिंजीतानहिंहारा ८

औ गोपी ग्वाल गोकुलमें कबहूं नहीं आये हैं वे उद्धारकर्त्ता साहब कंसको करतेनहींमारयो औ न मथुरागये काहेते कि ब्रह्म वैवर्त्तमेंलिखाहै ॥ वृन्दावनंपरित्यज्यपादमेकंनगच्छति॥ वेसाहब तो सबके ऊपर मेहरबानी करनवारे हैं वे न काहूसों जीतैहैं न हारै हैं न काहूको मारै हैं अर्थात् युद्धई नहीं कियो वेतौ रासई करत रहेहैं ८ ॥

वेकर्त्तानहिं बौद्ध कहावैं नहींअसुरकोमारा ।
ज्ञानहीनकर्त्तासबभरमे मायाजग संहारा ९
वेकर्त्तानहिंभयेकलंकी नहींकलिंगहिमारा ।
ईछलबलसबमायैकीन्हायतिनसतिनसबटारा १०

अरु बौद्धरूपह्वैकै दैत्यनको नास्तिक मतसिखै दैत्यनको संहार कराइ डारयो है सो सबमाया कियोहै वे मुक्तिकर्त्ता साहब नहींकियो काहेते कि वे मुक्तिकर्त्ता साहब देवको निन्दा करिकै इनको अज्ञानी कैसे करैंगे शोक ज्ञानहीन जेहैं ते भर्मै यहकहैहैं कि यह सब उद्धारकर्त्ता जोहै सोई सबकरैहै सो कर्त्ता नहींकरैहै

यहमाया सब जगत्को संहारकरै है ९ अरु वे उद्धारकर्त्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र कलंकी अवतार नहींलियो औ न कलिंग देशी जे म्लेच्छहैं तिनकोमारयो है यह छलबल सबमाये कियोहै यातिनको जोहै सत्यसबताको टारिदियो है अर्थात् यतीजेरहे संन्यासी गोरखादिक तिनकर सत्यजोहै साहबको जाननवारोमत तौनेको टारिदियो योगादिकनमें लगाइदियो १० ॥

दशअवतारईश्वरीमाया कर्त्ताकैजिनपूजा ।
कहहिकबीरसुनौहोसन्तौ उपजैखपैसोदूजा ११

नारायणै माया करिकै अवतार लेइहै ते सब ईश्वरीमाया है कहे ईश्वर रूपहीमायाहै तिनको जिन पूजाकहे रामचन्द्र मानिकै न पूजो वैसेपूजो तो पूजो ईश्वरमानिकै न पूजो सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतो जो उपजैहैं औखपैहैं सो साहबते दूजो पुरुषहैं वे उद्धारकर्त्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र साकेत ते कबहूं नहीं आवैजायहैं तामें प्रमाण ॥ पूर्णःपूर्णतमःश्रीमान्सच्चिदानन्दविग्रहः। अयोध्यांक्वापिसंत्यज्यसक्वाचिन्नैवगच्छति ॥ इतिवशिष्ठसंहितायाम् ॥ साकेतेनित्यमाधुर्य्यधाम्निस्वेराजतेसदा । शिवसंहितायाम् ॥ जो कहो इनहूको तौ कौन्यो कल्प में अवतारलिख्यो है सोई कबहूं आवैजाय नहीं है साकेतही में बनेरहे हैं जब कबहूं वाणयुद्धकी इच्छाचलैहै तब यह अयोध्या साकेतई प्रकटहोइहै अरु उहांके सब परिकार जसके तस प्रकटहोइहैं यह ब्रह्माण्डमें तहां जैसे साकेतमें बिहारकरैहैं तैसेबिहारकरैहैं याहीहेतुते ज्ञानी अज्ञानी जडचेतन कीटपतंगादिकोमुक्ति करिदियोसोश्रुतिमेंलिखै है ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः बिनाज्ञानमुक्ति नहींहोइहै सोजोवह साकेतकेशव न होतेतौमुक्तिकैसेहोते जोकहो यह ब्रह्माण्डवह साकेतईह्वैगयो तौ साकेतको आइबो तौ आयो तौ सुनौ वह साकेत औ यह अयोध्या एकई है इहां साकेत आवै जाय नहीं है जैसे साहब सर्वत्रपूर्णहैं तैसे साकेत तौ साहबके रूपईहै सोवहौ स-

र्वत्रपूर्ण है अयोध्याचपरंब्रह्म इत्यादिक प्रमाणते जब परमपर-
पुरुष श्रीरामचन्द्र को प्रकट विहार करनको होइहै तबप्रकटह्वै-
जाइहैं औ जब गुप्तविहार करनको होइहै तबगुप्तह्वैजाइ हैं तब
साकेत जोप्रकट औ गुप्तह्वै जाइहै कैसे जैसे श्रीकबीरजीको जब
प्रकट उपदेश करनकी इच्छाहोइहै तब प्रकटहोइ उपदेशकरै हैं
औ जबदेखैहैं औ जब गुप्तउपदेश करनहोइहै तबगुप्तउपदेश करै
हैं जाको उपदेशकरैहैं सोईजानै है वे साकेतनिवासी श्रीरामचंद्र
जैसे सर्वत्रपूर्ण हैं तैसे उनको लोकऊ सर्वत्रपूर्णहै जोकहो उनके
नामादिक तो अनिर्वचनीय हैं वे कैसे प्रकट वचन में आवैंगे
तो नारायण जे रामावतारलेइहैं तेईहैं तिनके नामादिक तिनते
उनके नामादिक व्यंजितहोइहैं सो पीछेलिखिआयेहैं जबउद्धार
कर्त्ता साहब प्रकटहोइ हैं तब जेदेखनवारे सुननवारे हंसरूप में
स्थितहैं तेई वहीरूपते देखैहैं सुनैहैं सच्चिदानन्दात्मको भगवान्
सच्चिदानन्दात्मिका अस्यव्यक्तिः यहश्रुतिकरिकै एकरूपता कहि
आयेहैं याहीते लोकहूको व्यापक कह्यो औ नारायण जो रामा-
वतारलै अशोकवाटिकामें लीलाकियो सो वर्णनकरि मन वचन
केपरे जे साहबहैं तिनके लीलाको व्यंजितकरैहैं सो व्यंजिततो
करैहैं परंतु मनवचनकेपरे जेसाहबहैं तिनकेनामरूप लीलाधाम
मनबचनकेपरे साकल्प करिकैव्यंजितऊ नहीं करिसकैहैं सो यह
बातजो कोई साहब करिकै हंसरूपपायेहैं सोसाहबके मनकरिकै
साहबको नामादिक जानैहै औ जपैहै औ साहबके दिये रूपकी
आंखीते साहबको देखैहै तामें वेदसारोपनिषद् को प्रमाण ३७
जनकोहवैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसृत्यपप्रच्छकोहवैमहान्पुरुषोयंज्ञा
त्वेहविमुक्तोभवतीति १ सहोवाचकौशल्योरघुनाथएवमहापुरुषः
तस्यनामरूपधामलीला मनोवचनाद्यविषयाः सपुनरुवाचेदृशं
कथमहंशक्नुयाम्विज्ञातुंज्ञापकाज्ञानादिति२सपुनःप्रतिवक्तिअथैते
श्लोकाभवंति ॥ विरजायाःपरेपारेलोकोवैकुण्ठसंज्ञितः ॥ तन्म
ध्येराजतेयोध्या सच्चिदानन्दरूपिणी ३ तत्रलोकेचतुर्बाहू रामना

रायणःप्रभुः॥ अयोध्यायांयदाचास्य अवतारोभवेदिह ४ तदास्ति राम नामेदमवताराविधौविभोः॥ तन्नाम्नोनामरहितस्याम्नातंनामतस्यहि ५ दशकंठवधाद्यादिलीलाविष्णोःप्रकीर्त्तितः॥ सकदाचित्कल्पेस्मिन्लोकेसाकेतसंज्ञिते ६ पुष्पयुद्धरघूत्तंसः करोतिसखिभिःसह ७ कस्मिन्कल्पेतुरामोसौ वाणजन्येच्छयांविभुः ॥ तैरेव सखिभिःसार्द्धमाविर्भूयरघूद्वहः ८ रावणादिबधेलीला यथाविष्णुः करोतिसः ॥ तथायमपितत्रैव करोतिविविधाः क्रियाः ९ क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीलाविधानतः ॥ लीलानिर्वचनीयत्वंततो भवति सूचितं १० किंचायोध्यापुरोनामसाकेतइतिसोच्यते ॥ इमामयोध्या माख्याय सायोध्यावर्ण्यतेपुनः ११ अनिर्वाच्यत्व मेतस्या व्यक्तमेवानुभूयते॥रामावतारमाधत्तेविष्णुःसाकेतसंज्ञिते १२ तद्रूपंवर्णयित्वानिर्वचनीयप्रभोः पुनः ॥ रूपमाख्यायते विद्भिर्महतःपुरुपस्यहि १३ इत्यथर्वणवेदेवेदसारोपनिषदि प्रथम खण्डे श्रीकबीरजीका यहीमतहैकि साकेतछोड़िकहूं नहींजायहै नित्यविहारीहै ११ ॥

इति आठवांशब्द समाप्तम् ॥

अथनवांशब्द ॥

संतौ बोले ते जगमारै । अनबोलेते कैसेबनिहै शब्दैकोइ न विचारै १ पहिले जन्म पूतको भयऊ बाप जनमियापाछे । बाप पूतकी एकैमाया ईअचरजको काछे २ उंदुर राजाटीकाबैठे बिषहरकरैखवासी । श्वानबापुरा धरनिठाकुनो बिल्लीघरमें दासी ३ कागज कारकारकुड आगे बैलकरै पटवारी । कहहि कबीरसुनो होसंतौ भैंसैन्याउ निवारी ४ ॥

संतौ बोले ते जगमारै ।

अनबोलेते कैसे बनिहै शब्दै कोइन बिचारै १

पहिले जन्म पूतकोभयऊ बाप जनमियापाछे ।

बापपूतकी एकैमाया ई अचरज को काछे २

हे संतौ जोबोलौहौ कहे जोमैं बताऊंहौं सोतो मानै नहीं है बोलेते जगमारैहै कहे शास्त्रार्थकरैहै औ जो न बोलौ तो बनेकैसे शब्दको कोई नहीं बिचारै १ अरु पहिले पूतजोजीव है ताको जन्म है लेइहै तबपिता जोहै जीवको अनुमान ब्रह्मताको जन्म होइहै पिताजीवको काहेते कह्यो कि जब शुद्धजीव एकतेअनेक ब्रह्मही द्वारभयोहै वहमाया सबलितब्रह्मपूत है औ जीव माया हीमें परयोहै दोनों माया सबलितहैं सो बापजोहै जीव औ पूत जोहै ब्रह्म तिनकी महतारी एकमायाही है अर्थात् यहीते अना-दिकालते दोनों प्रकटहैं यहीमें परेहैं सोतैं विचारु तौ यह अच-रजको काछेहै अर्थात् तैंही अपने अज्ञानते यह अचरजकाछे है औ नानारूप धरैहै २ ॥

उंदुर राजा टीकाबैठे बिषहर करै खवासी ।
श्वानबापुरा धरनिठाकुरा बिल्लीघरमेंदासी ३

उंदुर जोहै मूससोतौ राजाभयो टीकामें बैठ्यो औ बिषहर जोहै सर्प सो खवासीकरैहै औ श्वानबापुराजो है सोधरनिठाकु-राकहेवस्तुलैके ढांकिके धरैहै कहे भंडारी है औ बिल्ली घरमेंदा-सीहै सो खान वालिनिहै अर्थात् उंदुरकहे वह साहबको ज्ञान जाको दूरकै दियो है उंदुरमूसको संस्कृतमें कहैहैं सो उंदुर कहे मूसतो जीवहै सोशरीरको आपनो मानिलियोहै सोई राजाभयो अरु वाको खानवालो जोहै सर्पसो कालहै सो खवास भयोकहे क्षण पल घरी पहर वाको खातबीती तो होतजायहै सो खवास है कै यहकाल वाकी आयुर्दायको खातईजायहै औ नानाप्रकार की जो बिषयहैं तेईबीराहैं ताको खवावत जायहै अरु श्वानकहे वह श्वान भवाननन्द जोहै सोबापुरा जोजीव ताकोधरिकै ढांकि लियोहै कहे साहबको ज्ञान नहीं होनदेइहै औ बिल्ली जो है षट् दर्शननकी बाणी सोघरमें दासी है रही है कहे नानामतनमें लगावैहै साहबकीभक्तिरसजोहैसोईहै गोरसताकोखाइलेइहैं ३ ॥

कागज कार कारकुड आगे बैल करै पटवारी ।
कहहिकबीरसुनोहो सन्तो भैंसैन्याउ निवारी ४

कागजकारकहे लिखोकागजकारकुडजो बैलहैताको आगेधरोहै सोई बैल पटवारी करैहै सो कारो कागज कहे लिखो कागजजो गुरुवा लोगन की वनाई पोथी तिनको आगेधरिके बैलजे गुरुवा लोगनके चेलाहैं ते पटवारी करै हैं अर्थात् कायानगरीके बसैया जे मन बुद्धि चित्त अहंकार पृथ्वी अप तेज वायु आकाश दशौ इन्द्री तिनको विचारिके कि कौन काकेआधीनहै ज्ञानरूपीद्रव्य तहसील करैहै वा पटवारीकैकै द्रव्य राजाके इहां लेजाइहै या ज्ञानरूपी द्रव्य आत्मा में राख्यो आइ अर्थात् काया नगरी के बसैया सब जीवात्मैते चैतन्यहैं याते आत्मै मालिक है यह निश्चयकियो सो कबीरजी कहैहैं हेसन्तो तुम सुनो वहां भैंसा जो है सोई न्याउ निवारैहै इहां भैंसाकहे गुरुवालोग जोहैं सोआप चहलामें परेहैं औ चहलामें परोजो जीव ताहीको मालिकबतावै हैं और चेलाजेहैं तिनहूं को मायाके चहलामें डारैहैं ऐसो न्याउ निवारैहैं भाउ यहहै कि भैंसा यमकी असवारीहै सो यमही पुर को लैजाइगो तहांजब यमकेलट्ठा लगैंगे तब गुरुवाई निकसि आवैगी ४ ॥ इतिनवमशब्दसमाप्तम् ॥

अथ दशवां शब्द ॥

सन्तो राहदुनों हम डीठा । हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैंस्वाद सबनको मीठा १ हिन्दू व्रत एकादशि साधै दूधसिंघाड़ा सेती । अनको त्यागे मननहिं हटकै पार न करै सगोती २ तुरुक रोजा नमाज गुजारै बिसमिल बाँग पुकारै । उनकी भिश्तकहांते होइ है सांझै मुर्गी मारै ३ हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी दूनों घटसों त्यागी । वै हलाल वै भटका मारैं आगि दुनों घर लागी ४ हिन्दू

तुरुक कि एक राहहै सद्गुरु इहै बताई। कहहि कबीर सुनो हो संतो राम न कहेउ खोदाई ५॥

संतो राह दुनों हम डीठा।
हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानै स्वाद सबन को मीठा १

हे संतो हमदूनों की राह डीठा कहे देखी दूनोंकी एकई राह है सो हमारो हटको कोई नहीं मानैहै हम सबको समुझावतेहैं कि विषयनको छोड़िकै देखो तो दूनों की राह एकई है सो दूनों दूनको विषयनको स्वाद मीठो लग्योहै यहीके मिलनकी उपाय करैहैं साहब को नहीं खोजैहैं १॥

हिन्दू ब्रत एकादशि साधै दूध सिंघाड़ा सेती।
अनकोत्यागैमननहिंहटकै पारन करै सगोती २
तुरुक रोजा नमाजगुजारै बिसमिल बाँगपुकारै।
उनकी भिश्त कहांते होइहै सांझै मुर्गी मारै ३

हिन्दू जेहैं ते अन्नको त्यागिकै एकादशी व्रतसाधैहैं कहे उपासे रहैहैं औ फरहार करैहैं औ बिहानभये नानाप्रकारके व्यंजन बनाइकै सगे जेहैं गोती भाई तिनकोलैकै पारनकरैहैं औमनको नहीं हटकैहैं कहे दशौइन्द्री ग्यारहों मनको नहीं हटकैहैं अर्थात् यह एकादशी नहीं करैहैं अथवा जैसे सगोती में कहे सगाई में अर्थात् जैसे विवाहमें जाफतमें खायहैं तैसे पारन करैहैं २ औ मुसलमान रोजा रहैहैं औ नमाज गुजारैहैं औ बिसमिल्लाकोबांग दैकै पुकारैहैं औ सांझकोमुर्गीमारिकै पोलाव बनाइबनाइ खाय हैं सो कहोतो उनकी भिश्त कैसे होइगी ३॥

हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी दूनों घटसों त्यागी।
वे हलाल वे झटका मारें आगि दुनों घर लागी ४

हिन्दूकी दया तुरुककी मेहरहै जो हिन्दू दयाकरता तौ यम ते छूटत अरु जो मुसल्मान मेहर करता तौ यमते छूटत सो ये

दोऊ दया औ मेहरको आपने घटते त्यागि दियो है मुसलमान कहेहैं कि गलेकी रगसेभी अल्लाह नगीचहै औ घटघटमें मौजूदहै औ गला काटतईहैं सोगौसै ऐकगिला काटतेहैं औहिन्दूकहैहैं कि ब्रह्मसर्वत्र पूर्णहै औभ्फटका मारैहै कहे मूड़काटिडारैहैं सो दूनों घरमें आगिलगीहै यह अज्ञानरूपी आगि दूनोंकी बुद्धिको दाहे डारैहै ४ ॥

हिन्दू तुरुक कि एक राह है सतगुरु इहै बताई ।
कहहि कबीर सुनोहो संतो राम न कह्यो खोदाई ५

हिन्दू मुसल्मानकी एकै राहहै राम न कह्यो खोदाइ कह्यो रामकह्यो नामसब वही बादशाहकेहैं सो वह बादशाहको हिन्दू तुरुककी येती बड़ी साबाशी कब नीकिलगैगी अथवा हिन्दू तुरुक की एकराहहै कहे एकरामनाम लियेते उद्धार होइहै सो कर्मते निवृत ह्वैके न हिन्दू राम कहे न मुसल्मान खोदा कहै आपने आपने कर्ममें सब लगेहैं तेहिते माया कैसेछूटै अथवा न नारायणरामकह्यो कि तुमभ्फटकामारौ न खोदाइकह्योकि तुमहलाल करौ येदोऊ अपने अज्ञानते बनाइ लियोहै ५ ॥

इति दशवां शब्द समाप्तम् ॥

अथ ग्यारहवां शब्द ॥

संतो पांड़े निपुणकसाई । बकरा मारि भैंसाको धावै दिलमें दर्दनआई १ करि असनान तिलक करिबैठे विधिसोंदेविपुजाई । आतम राम पलकमो विनसे रुधिरकि नदी वहाई २ अतिपुनी तऊंचेकुल कहिये सभामाहँ अधिकाई । इनते दिक्षा सबकोइ मांगै हँसिआवै मोहिंभाई ३ पापकटनको कथासुनावै कर्मकरावै नीचा । बूड़त दोउ परसपर देखा गहेहाथ यमघीचा ४ गायबधै तेहि तुरुका कहिये उनते वैकाछोटा । कहहि कबीर सुनो हो संतो कलिके ब्राह्मण खोटा ५ ॥

संतो पांडे निपुण कसाई।
बकरामारि भैंसाको धावै दिलसें दर्द न आई १
करिअसनान तिलककरिबैठे विधिसोंदेविपुजाई।
आतमरामपलकमो विनसे रुधिरकि नदी बहाई २

हेसंतो पांडे निपुणकसाई हैं काहेतेकि कसाई अविधितेमारै है वह विधितेमारैहैं याते निपुणहै वोकराको मारिके भैंसाके बलदान दवेको धावैहै १ स्नान करिके रक्तचंदनके वडेवडे तिलकदैके बैठैहै औविधि सों देवीको पुजावैहै अरुयह कहै है अंतर्यामीसर्वत्रहै औवोकरा भैंसाको मूडकाटि डारैहै रुधिरकीनदीवहनलगैहै तबवह आतमरामजोहै जीवकहे आत्माजो है शरीरतेहि विषेहै आरामजाको सोविनसि जायहै कहे शरीरते जुदाह्वैजाय है जैसे दूधपानी विनासि जायहै मुरदाह्वैजायहै २ ॥

अति पुनीत ऊंचे कुल कहिये सभा माहँ अधिकाई।
इनते दिक्षा सब कोउ मांगै हँसि आवै मोहिं भाई ३

सो ऐसे ऐसेदुष्ट कसाइनको अतिपुनीत ऊंचे कुलके कहै हैं अरुसभामें उनहीकी अधिकाईहै कहे शास्त्रार्थ करिके सभामेंआपनिन अधिकाई राखैहै तेहिते सबकोई दिक्षामांगै हैं कि हमको दिक्षादै संसारते उबारिलेउ सोयह देखिकै मोको हँसिहँसिआवै है कि आपई नरकमें जाय है तो नरकते कैसे उबारिहै अर्थात तोहूंको वही नरकमें डारिदेइहै ३ ॥

पाप कटन को कथा सुनावै कर्म करावै नीचा।
बूड़त दोउ परस्पर देखा गहे हाथ यम घीचा ४

वोई गुरुवालोग पापकाटनको तो कथा सुनावैहैं रामायणादिक औवही कथामें वर्णनहै कि रघुनाथजी शिकार खेलैहैं सो गुरुवालोग कहैहैं कि तुमहूं शिकारखेलो यहनहीं जानैहैं कि रघुनाथजी त्रिजग योनि वालेन पर दया करी कि ई ज्ञानभक्तिवैरा-

ग्यकैसे करैंगे याते मारिकै मुक्तिकरिदेइ हैं इनको मारैंगे तोपाप तेहमई दोऊ नरकै जायँगे याहीते दोऊगुरू चेलाको परस्परनरकमें बूड़त देख्यो है तिनको नरकमें डारिबेको यमघींचही धरे हैं नरकमें डारिदेहिंगे तब नरकमें गुहमूत्र खाइगो औमारो जाइगो औ जो जीवनको मारिकै मांसखायो है तेईवाके मांसकोखांइगे औ अपने अपने सींगनते खुरनते मारैंगे याते मांसखायो है वै जीवतही मांस खांयगे इहांते जोजविन को वहमारयो तिनको क्षणइ मात्रको कलेशहै औ उहांवैजीव वाको बारबारमारैंगेमरणको क्लेश क्षणमेंहोयगो औ यातना शरीर लाखनबर्ष न छूटैगो या कथा गरुड़ पुराणादिक में प्रसिद्धहै ४ ॥

गाय बधै तेहि तुरुका कहिये उनते वैका छोटा।
कहहि कबीर सुनोहो संतो कलि के ब्राह्मण खोटा ५

जे गायको मारैहैं ते मुसल्मान कहावैहैं सो इनते वैकाछोट हैं तुरुक गायमारैहैं अरु वै भेड़ा भैंसामारैहैं आत्मातो सब एक हीहै सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतो कलिके ब्राह्मण बहुत खोट हैं काहेते कि जे शास्त्रको नहीं समुझैं तेतो मूढहीहैं वै खोटकर्म करोईचाहैं परन्तु जे शास्त्रको समुझैहैं तिनहूंको समुझाइकैखोट कर्ममें लगाइ देइहैं अपनी पाण्डित्यके बलते ब्राह्मण जो कह्यो ताको याअर्थहै सबको यही समुझावैहै कोकाको मारैहै सर्वत्रतो एकई ब्रह्महै औ कोई या समुझावैहै कि बलदानदै देवीको प्रसन्नकरो तुमको ब्रह्मज्ञानदै ब्रह्मबनाइ देइंगे ५ ॥

इति ग्यारहवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथ बारहवां शब्द ॥

संतो मतेमात जनरंगी। पीवतप्याला प्रेमसुधारस मतवाले सतसंगी १ अर्द्ध ऊर्ध्वलै भाठीरोपी ब्रह्म अगिनि उदगारी। मुंदे

मर्दनकर्मकटिकसमलसन्ततचुवैअगारी २ गोरखदत्तवशिष्ठव्यासं कवि नारदशुक मुनिजोरी। सभावैठिशम्भूसनकादिक तहँ फिरि अधरकटोरी ३ अम्बरीष औजागजनकजड़ शेषसहसमुखपाना। कहँलोंगनों अनंतकोटिलै अमहल महलदेवाना ४ ध्रुवप्रह्लाद बिभीषणमाते मातीशिवकीनारी। सगुण ब्रह्ममातेवृन्दावनअज हुँनछूटिखुमारी ५ सुरनरमुनि जेतेपीर औलिया जिनरे पिया तिनजाना। कहैकबीर गूँगेकोशक्कर क्योंकरकरै बखाना ६ ॥

सन्तो मतेमातजनरंगी ॥
पीवतप्याला प्रेमसुधारस मतवालेसतसंगी १

सन्तो मतेकहे सन्तनके जेमतहैं तिनमेंरंगीजेजनहैं तेईमात कहे मातिरहे हैं रंगच्छतीतिरगःरंगोऽस्यास्तिगुरुत्वेनेतिरंगरिकार बीजको जो कोई प्राप्त होइहै सो रगकहावै सो रकार बीजरा- मोपासकनके होइहै ते रामोपासक जाके गुरुहोइ सोकहावैरंगी अथवा सुरति कमल वैठे जे परमगुरुहैं तेरकार बीजको उच्चार करैहैं सो रकार बीजको जो कोई वहां जाइकै सुने सो रंगी है सोई रंगी सन्तनके मतमें मातै है औ कबीरऊ रकारई बीजको जपतरहेहैं सोवंशावलीमें लिख्यो है श्रीराजारामसिंहबावाकवी र जीते पूछ्यो कि आपका कौनसिद्धान्तहै तब कबीरजीकह्यो॥ राअक्षरघटरम्योकबीरा। निजघरमेरो साधुशरीरा ॥ सो पीछे लिखिआये हैं अरुसुधाकोमादकधर्म है सोश्रीरामचन्द्रकेप्रेमरूपी प्यालामेंभरचो जो है सुधारसरूपा भक्ति ताकोजेपानकरैहैं तिन के सत्संगीजे हैं तेऊमतवाले ह्वैजायहैं कहे परमसिद्धान्तवाला जोमतहै तेहितेयुक्तह्वैजाइहैं अथवा रसरूपा भक्तिको नशाचढ़ो रहै दिनराति अर्थात् रसआनन्दको कहे हैं सो आनन्दमें निमग्न रहै हैं तामें प्रमाण ॥ रसोवैसःरसंह्येवायंलब्ध्वानंदीभवति इति श्रुतेः॥ उनकी कहाचली है इहां सुधारसकोकह्यो ताकोहेतुयहहै कि जे सुधारसको पीते हैं तेई जननमरण छोड़िके अमर होइहैं

औरेनको जननमरण नहीं छूटैहै अरु वह रसरूपा भक्ति मधि उत्पति भयो है ताको रूपक करिके समुझावै हैं १ ॥

अर्द्धऊर्ध्वलै भाठीरोपी ब्रह्मअगिनि उदगारी ।
मूँदेमदनकर्मकटिकसमल सन्ततचुवैअगारी २

उहां समेटिकै कहिआये अबइहां रसरूपाभक्तिको मदको रूपक करिकै कहै हैं अर्द्धकहे नीचेकेलोक ऊर्ध्व कहे ऊँचे के लोक पर्य्यन्त जो सारासारको विचार सारकहे चितअचितरूप साहब को या जगतमानिबो औ असारकहे नानात्व जगतमानिबो या जो विचार सोई भाठी रोपतभये औ तेहितेभयो जोयथार्थज्ञान कि सब सच्चिदानन्द स्वरूपहै काहेते चितौ अचित साहबकोरूप है यह हेतुते सोई ब्रह्म अगिनि उदगारी कहे बारतभये महुवा नरमें धरैहै इहां मदन जो मनोज तौनै जो है शरीर नर अर्थात् वीर्य्यते शरीर होइहै सो अन्तःकर्णमें मूँदे जे साहब की अनेक प्रकारकी जो लीला तिनके जे ज्ञानध्यान तेई महुवादिकद्रव्यहैं तिन्हैं जो कर्मनकी बरोबरि मानिबो जो या भ्रम सोई जो कर्मरूप कसमल ताको काटिडारयो तब निश्चयात्मक बुद्धि जेपात्र तामें रसरूपाभक्ति रूप जो अगारी सोनिरन्तर चुवनलागी २॥

गोरखदत्तबशिष्ठ व्यासकबि नारद शुकमुनिजोरी ।
सभाबैठि शम्भू सनकादिक तहँफिरि अधरकटोरी ३

गोरख दत्तात्रेय बशिष्ठ व्यास कबि कहे शुक्र नारद शुकमुनि कहे शुक्राचार्य तेई सब जोरि जोरि इकट्ठाकरि धरतभये औ सभाके बैठेयाजेहैं शम्भु सनकादिक तहां रसरूपाभक्ति जोसुधारस तेहिकरिके भरी जोहै प्रेमरूपी कटोरी सो तिनके अधरहैं कहे मनकरिके न कोई धरिसकै न वचनकरिके कोई धरिसकैहै अर्थात् न मनमें आवै न वचनमें आवै वाके पानकरतमें छकि सबजाय हैं रसवाच्यमें नहीं आवै यह सर्वत्र ग्रन्थनमें प्रसिद्धहै ३ ॥

अम्बरीष औ याज्ञ जनकजड़ शेषसहसमुखपाना ।

कहँलों गनों अनन्तकोटिलै अमहलमहलदेवाना ४

अम्बरीप औ याज्ञवल्क्य औ जड़भरत औ शेष कहे संकर्षण औ सहसमुख कहे शेषनाग ते पानकरतभये सोकहांलों मैं गनों परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र के जे अमहलमहल अनन्त कोटि हैं ताहीमें लीनभये औ देवाना होतभये कहे मत्तहोतभये इहां अमहलमहल जोकह्यो सोऊ जे अयोध्याजीकेमहल हैं अमहलहैंकहे महल नहीं हैं अर्थात् प्राकृत पञ्चभौतिक नहीं हैं अरुमहल जोकह्यो ताते आनन्दरूप वे महल वर्त्तमान बनेहैं अमहलकह्यो याते निर्गुणधर्म आयो औ महलकह्यो याते सगुणधर्म आयो सगुणनिर्गुण में नहीं होयहै निर्गुण सगुणमें नहीं होयहै उनमें दूनोंधर्म बनेहैं ताते वे निर्गुण सगुणके परे विलक्षण महलमें हैं तिनमें जायके देवाने भये माया ब्रह्ममें जो देवानेरहे सो छोड़ि दिये अमहलमें देवानाह्वैबोई महलन में साहब की अनेक प्रकारकी लीलनको ध्यानकैकै हंसरूपमें स्थितह्वैके रसरूपाभक्ति पानकैकै छकिरहे रसरूपाभक्ति शांतशतकके तीसरे खण्डमें औ रामायणादिकमें हम लिखेनहै सो देखिलेहु ४ ॥

ध्रुवप्रह्लाद विभीषणमाते माती शिवकीनारी।
सगुणब्रह्ममातेवृन्दावन अजहुँ न छूटिखुमारी ५

औ ध्रुवप्रह्लाद विभीषण औ पार्वती मतिगई औ सगुण ब्रह्म जे साक्षात् नारायण श्रीकृष्णहैं तेऊ वृन्दावनमें मतिगये अबहूँ भरखुमारी नहीं छूटी की भाव यहहै कि जिनके शरीर छूटे तेतो साकेतहीमें जाय देवानेभये कहे प्रेममें छके औ जिन के शरीर बने हैं तिनहूँकी खुमारी नहीं छूटि कहे अबहूँ भर श्री रामचन्द्रहीकी उपासनाकरै हैं तामेंप्रमाण ॥ पूजितोनंदगोपाद्यैः श्रीकृष्णेनापिपूजितः। भद्रयामहिषीभिश्च पूजितोरघुपुंगवः ॥ यह वह ब्रह्मवैवर्त्त को प्रमाण है जौनेको प्रमाण सब आचार्य दियो है ५ ॥

सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया जिनरेपियातिनजाना।
कहैकबीरगूँगेको शक्कर क्यों करिकरै बखाना ६

औ सुरनरमुनि जेते पीर औलियाहैं तिनमें जे श्रीरामचन्द्र की उपासना कियो है तेई रसभरी प्रेमकटोरी पियो है औ तेई मनवचनके परे हैं जे साहब के नामरूप लीलाधाम तिनको जान्यो है सो जिनजान्यो है तिनको वर्णन करिबेको वह गूँगेको शक्करहै काहेते वह मन बचनके परे है जबवहीभांति उहोह्वैजाय तब वाको स्वाद पावै काहूसों वाको कोई बखान नहीं करिसकै है सो कबीरजी कहै हैं कि जो कोई कहै यह अर्थ नहीं है वह प्रेमको पियाला कबीरजीवब्रह्मको कहिआये हैं वहीको पीपीकै सब मतवारह्वैगये हैं सांच पदार्थ नहीं जान्यो तौ हम यह कहै हैं जिनको कबीरजी आगे बर्णन करिआये हैं तेई नहीं जान्यो तौ तुमहीं कैसे जान्यो जो कहो हम अपने गुरुवनके बताये जान्यो तो गुरुवनको कह्यो बाणीको कह्यो तो तुमहीं झूँठ कहौहो जो कहो पारिखकरिकेजान्यो तो पारिखकिये तौ मनबचनकेपरे औ निर्गुणसगुणके परे जे शुद्धजीवात्मा सदारघुनाथजी के निकटवर्त्ती तेऔर श्रीरामचन्द्र येईआवैहैं वेदशास्त्रमेंप्रमाणमिलैहैंतुमपारिख कहिके मनवचनकेपरे कौनपदार्थ राख्यो है जोकहोहमजीवात्मा को मानै हैं औ कोई ब्रह्मको मानै हैं तौ आत्मा औ ब्रह्म येहू नामहै वचनमें आयगयो औ तुम जो बिचारकरौहो सो मन में आयगयो जो कहो तुमहीं कैसे श्रीरामचन्द्रको मनबचनके परे कहौहौ वोऊ तो मन वचनमें आयजायहैं तो हम पूर्वलिखिआये हैं कि नारायण राम अवतार लेइहैं तिनके नामरूप लीलाधाम के वर्णन करिके वे जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको सपरिकर लक्षितकरै हैं वे मनवचनकेपरेहैं औ यहू आगे लिखिआये हैं कि ॥ ऐसी भांति जो मोकहँ ध्यावै। छठयेंमासदरशसोपावै॥ सो अपनी इन्द्री है आपै देखेपरे हैं जोकोई उनके प्रसन्नकरिबेको

उपायकरैहै सो साहिबैके जनाये जानैहै तामेंप्रमाण कबीर जी की साखी सागरकी चौपाई ॥ जानैसोजोमहींजनाऊं । बांहपकरिलोकैलैआऊं ॥ बीजकोमेंलिखीहै साखी ॥ बहुबंधनतेबांधियाएकविचाराजीव । कालछूटैआपनोजोनछुड़ावैपीव ॥ उनकोवर्णन कोई जीवनहीं करिसकै है तेहि ते जो पारिख हम कियो सोईसांचहै जोतुमपारिखकरौहौ सो झूठहै तुम श्रीकबीरजीको अर्थजानते नहींहो भ्रममें लगेहो अनामा उनहीं को नामहै अरु बोई हैं तामें प्रमाण ॥ अनामासोप्रसिद्धत्वाद् रूपोभूतवर्जनात् इतिवायुपुराणे ६ ॥ इतिबारहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ तेरहवां शब्द ॥

रामतेरीमायादुन्दिमचावै । गतिमतिवाकी समुझिपरै नहिं सुरनरमुनिहिंनचावै १ कासेमरकेशाखावढ़येफूलअनूपमवानी । केतिकचात्रिकलागिरहेहैंचाखतरुवाउड़ानी२ कहाखजूरबड़ाईतेरीफलकोइनहिंपावै । ग्रीषमऋतुजवआयतुलानीछायाकामनआवै ३ अपनाचतुरऔरकोसिखवैकामिनिकनकसयानी । कहैकवीरसुनोहोसंतो रामचरणरतिमानी ४ ॥

रामतेरीमायादुंदिमचावै ।
गतिमति वाकीसमुझिपरैनहिं सुरनरमुनिहिंनचावै १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेजीवो राममें जो तिहारीमाया जो कपट सो दुन्दिमचावैहै कैसीमायाहै कि जाकी गति मति नहीं समुझिपरै सुरनर मुनि जेहैं तिनहूंको नचावै अर्थात् उनहूं को लागिहै सो साहब को न जानिबो रूपकारण जगत्को आदिमंगलमें कहिआयेहैं १ ॥

कासेमरकेशाखावढ़ये फूलअनूपमवानी ।
केतिकचात्रिक लागिरहे हैं चाखतरुवाउड़ानी २

सोहेजीवो तुम द्वन्द्वमाया को त्यागौ साहबको जानो सं-

साररूप सेमरको वृक्षतामें नाना वासना नानादेवतनकी उपासनारूप शाखा वढ़ाये कहाहै जौनेवृक्षमें अनूपम कहे साहवके जाननेवारे विशेपक ज्ञानवारे जो नहींकह्यो ऐसी गुरुवनकीवाणी सोई फूलहै ताहीते भयो जो धोखा ब्रह्मकोज्ञान सोईफलहै तामें केतकौचात्रिकरूप जीवलागिरहेहैं इहां चात्रिकैकह्यो औरपक्षीनकह्यो सोचात्रिक पियासोरहैहै और इनहूंके मुक्तिकीचाह रहैहै पक्षीरस नहींपावै है इनमुक्तिनहींपावैहै चाखतमेंरुवाउड़ैहै पक्षीके जीभमें लपटिजायहै जभिहुकोरस सूखिजायहै इहां वा ज्ञानको जव अनुभव कियो तव गुरुवालोग वतायो कि तुमहीं ब्रह्महौ तुम्हारई जीवात्मा मालिकहै सवको राम सवको खाय लेयहै रामको भजो रामतौ मायिकहैसो जोकुछ उनकी श्रीरामचन्द्रमें वासनारही सोऊ छूटिगई यही गुरुवाहै पक्षी वा रस नहीं पावै है तव खेदहोइ है औ या वही ज्ञानमें दृढ़ता करिकै उड़त उड़त नरकहीमें गिरैहै नरकमें दुःखपावैहै २ ॥

कहाखजूरवड़ाईतेरी फलकोईनहिंपावै ।
ग्रीषमऋतुजवआयतुलानीछायाकामनआवै ३

अवधोखा ज्ञानवालेनको खजूरको दृष्टांतदैकेकहैहैं खजूरकी वड़ाईलै कहाकरै फलतो कोईपावतै नहींहै ग्रीपमऋतुमेंछाया काहूके काम नहीं आवै है वाके तरेहीरहै है आतप तपतै रहैहै ऐसे हेगुरुवालोगो तुम्हारी वड़ी वड़ाई कि मैं ही ब्रह्महौं मोते वड़ो कोई नहीं है आत्मै मालिकहै सो न कोई ब्रह्मैभयो नआत्मै मालिकभयो या फला कोई नहींपायो जोकोई तुम्हारेमत मेंआवै है सो जननमरणरूप ग्रीष्मताप नहींछूटैहै या तुम्हारो उपदेश रूप छाया काहूके काम नहींआवैहै ३ ॥

अपनाचतुरऔरकोसिखवै कामिनिकनकसयानी ।
कहैकवीर सुनोहो सन्तो रामचरण रतिमानी ४

गुरुवालोग कनक कामिनीके मिलिवेको आप चतुरह्वैरहेहैं कनक सुवर्ण कहावैहै सो आत्मा को सुवर्ण जोहै स्वस्वरूप सो मायारूपी कामिनीमें लपट्योहै तेहिते शुद्धनहींहै अथवा कनक जोहै सुवर्ण सोशुद्धहै औ सुवर्णके जेहैं भेद कुण्डलादिक भूषण तिनके भेद मिथ्याहैं ऐसे और सबको मिथ्यामानिके एकब्रह्म-हीको मानिबो औ कामिनीमें सयानी कहे ज्ञानकरिकै विचारैहै कि कामिनी माया हईनहीं है मिथ्याहै यह सयानी कहे ज्ञान आपऊ सिखैहै औ औरहूको सिखवैहै जननमरण होतईजायहै माया नहीं छूटैहै सो कबीरजीकहैहैं कि हेसंतोयाहीते मैं ये ब-खेड़नको छोड़िके परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके चर-णनमें रतिमान्योहै इहां संतनकोसाखीदैकै जोकह्यो ताकोहेतु यहहै कि संत समुझैंगे कि सांच कहैहैं कि झूठकहैहैं अथवा हे जीवो मेरो सिखापन सुनो श्रीरामचन्द्रके चरणमें रतिमानि के जैसे सब भयोहै नानामत कियोहै तैसे एकवार मेरोवचन सुनि रामचरणमें रतिमानिके संतहोउ व्यंग्ययहहै कि जो संतहोउगे तो जननमरणते रहितह्वैजाउगे औरीभांतिनछूटौगे अथवाअ-पना चतुर औरको सिखवै कहे अपनो चतुर नहींहै मायाही में परेहैं और और को कनक कामिनीमें सयानी कहे विचारकरावै है कि कनक कामिनीरूप मायाको विचारकै देख्यो या मिथ्या है सो जो आप चतुर नहीं भये कनककामिनी नहीं त्यागे तो उनके उपदेशमें कनककामिनी माया कब त्यागैंगे ४ ॥

इतितेरहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचौदहवांशब्द ॥

रामरासंशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यम लूटै १ ह्वैमसकीन कुलीनकहावै तुमयोगी संन्यासी । ज्ञानी गुणीशूर कविदाता ईमति काहुननासी २ स्मृति वेदपुराणपढ़ै सब अनु-

भवभावनदरशै। लोहहिरण्य होयधौंकैसे जोनहिं पारसपरशै ३ जियत न तरे मुयेकातरिहौ जियतै जोनतरै। गहिपरतीतिकीन जिन जासों सोईतहैंमरै ४ जोकछुकियो ज्ञानअज्ञाना सोईसमुझुसयाना। कहै कबीर तासोंका कहियेदेखत दृष्टिभुलाना ५॥

राम रा संशय गांठि नछूटै।
ताते पकरि पकरियमलूटै १
कै मसकीनकुलीन कहावे तुमयोगी संन्यासी।
ज्ञानीगुणीशूरकविदाता ईमति काहु न नासी २

रामराकहे रकार जिनको मराहै अर्थात् रकारबीजको जिनको अभावहै रामोपासक नहींहैं तिनकी संशयकी गांठिनहींछूटैहै तेहिते पकरिपकरिके यमलूटिलेइं हैं अर्थात् याकोमारिकै नरकमें डारिदेइंहैं फिरि फिरि शरीरपावैहै फिरि लूटिजायहै मारोजायहै १ मसकीन कहे गरीब फकीरहैकै कुलीन कहावैहै कहे भये तौ फकीर परन्तु कुलाभिमान नहींछूटैहै कहैहैं कि हमफलाने गद्दीके मुरीदहैं सोतुम योगीहौ संन्यासीहौ ज्ञानीहौ गुणीहौ शूरहौ कविहौ दाताहौ इत्यादिक जो भेदकीमतिहैं सो कोई न नाशकियो काहेते कि हेसंतो येपरम परपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंशहैं सो यह कोई नहीं जानै है औ यहजगत् चित अचितविग्रहकरिके साहबको रूप है भेदकी बुद्धि लगाइ राख्यो है २॥

स्मृतिवेदपुराण पढै सब अनुभव भाव नदरशै।
लोह हिरण्य होयधौं कैसे जोनहिं पारसपरशै३

स्मृति वेद पुराण सबै पढैहैं परन्तु परम पर पुरुष जेश्रीरामचन्द्रहैं सबके तात्पर्य तिनको अनुभव काहूकोनहींदरशैहै जो पारसको स्पर्शनहोय तौ लोह हिरण्य कहे सोनकैसेहोय नहोय तैसे स्मृति वेदपुराणनको तात्पर्यश्रीरामचन्द्रहैं तिनकेचरणको

जौलौंन परशै तौलौं मुक्तिनहीं होयहै पार्षद रूपता वाको प्राप्ति नहीं होयहै ३ ॥

जियत न तरे मुयेका तरिहौ जियतै जो न तरे ।
गहि परतीति कीन जिनजासों सोईतहें मरे ४
जोकछुकियोज्ञानअज्ञानासोईसमुभुसयाना ।
कहैकबीरतासोंकाकहिये देखतदृष्टि भुलाना ५

सो जियतमें जो न तुमतरोगे तौ मुयेकैसे तरोगेसो हेजीवो जियतै काहे नहीं तरिजाउहो जासों कहे जौने साहबसों जाके स्पर्शकिये जीव शुद्ध ह्वैजायहै तौने साहबसों जो कोईजहें साहबको मतगहिकै परतीति कहे विश्वासकीनहै सो जानतहै कहे संसारहीमें अमर ह्वैगयोहै ४ सो कबीरजी कहैहैं कि ये जीव ज्ञानकरै हैं कि अज्ञान करैहैं ताहीको सबकुछ मानिकै अपने को सयान मानैहैं तिनसों कहाकहिये जो अपनी दृष्टिते देखत देखत भुलायद्रियो स्मृति वेद पुराण चक्रवर्त्ती परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीको कहै हैं उनहींके भक्त हनुमान् विभीषणादिक अमर भयेहैं सो देखतैहौ औ यह नहींसमुझै हैं कि सबकेमालिक बादशाह श्रीरामचन्द्रहैं इनहींके छोड़ाये छूटैंगे औरके छोड़ाये न छूटैंगे ५ ॥ इतिचौदहवां शब्द समाप्तम् ॥

अथ पन्द्रहवांशब्द ॥

रामराचली विनावनमाहो । घरछोड़ेजातजोलाहो १

गजनौगज दशगज उनइसकी पुरिया एकतनाई । सातसूत नौगाड़बहत्तरि पाटलागु अधिकाई २ तापट तूलनगजन अमाई पैसन सेरअढ़ाई । तामें घटैबढ़ै रतिवोनहिं करकच कर घरहाई ३ नितउठि बैठ खसमसों बरबस तापर लागतिहाई । भीनीपुरिया काम न आवे जोलहा चलारिसाई ४ कहै कबीर सुनोहो संतो

जिन्हयहसृष्टि उपाई। छांड़िपसार रामभजु बौरे भवसागर कठिनाई ५ ॥

रामराचली बिनावनमाहो। घरछोड़े जातजोलाहो १

रामराकहेराजिनको मराहै अर्थात् रकार बीजकोजिनकेअभावहै साहबको नहीं जानें ऐसेजे समष्टिजीव तिनके इहां माजोहै कारणरूपा माया सोबिनावनको कहे बिनवावनकोचली अर्थात् जगत् बनवाइबेको चली इहांबिनबो न कह्यो बिनवाइबो कह्यो सोबिना चैतन्यब्रह्म औजीवके लपेटे याको बनायो नहीं बनै है काहेते कि यह जड़है अर्थात् ब्रह्मजीवको संयोग करिके बनवावनको चली ब्रह्मजीवके पाससों जोलाहा जो यह जीवहै सो घरको छोड़देयहै अर्थात् यहशुद्ध जीवात्मा आपनो जो घरहै साहबके लोकको प्रकाश जहांशुद्ध रहैहै तौनैघरको छांड़िकै माया के लपेटमें परिके आपने बंधनको आपने मनकरिके संसाररूपी पटको बनावैहै १ ॥

गजनौगजदशगजउनइसकीपुरियाएकतनाई।
सातसूत नौ गाड़बहत्तरि पाटलागु अधिकाई २

प्रथम एकगजकीकल्पनारूप पुरियातनावत भई प्रथमजीव वाणी प्रणवरूप एकगजकी पुरियाअनुमान ब्रह्मबनायो अर्थात् मनभयोपुनिनौ गजकीपुरियातनावतभई सोनवौव्याकरणबनावत भई अर्थात् नवौ व्याकरणमें शब्द ब्रह्मको बर्णन है सोशब्दं वनावतभई पुनि दशगजकी पुरियातनावतभई सो चारवेद औ छः शास्त्रई दशगजकी पुरिया तनभयो पुनिउनइसगजकी पुरिया तनावतभयो सो अठारहौ पुराण उनीसौं महाभारत ये उनइसगजकी पुरिया वनावतभयो २ पुनि सातसूत कहे सप्तावर्ण पृथ्वी अपतेज वायुआकाश अहंकार महत्तत्त्व अथवासातसौ सूत जाग्रत महाजाग्रत बीजजाग्रत स्वप्नजाग्रत स्वप्नऔसुषुप्ति येसात अज्ञान भूमिका बनावतभयो पुनिनवगाड़ कहे नवद्वार बनावत

भयो बहत्तर पाटकहे बहत्तर कोठा अथवा बहत्तर हजार नस बनावतभयो २ ॥

तापटतूल न गजन अमाई पैसनसेरअढ़ाई।
तामेंघटै बढ़ै रतिओनहिं करकच करघरहाई ३

तापटकहे तौन जोहैं शरीर संसाररूपी पट तामें जबअहंब्रह्म भ्रमरूप तूलरह्यो तबतो गजमें नहीं अमातरह्यो कहे अप्रमेय रह्योहै औ सेरकहे सिंहरूप रह्योहै संसारको नाशकै देनवारो रह्योहै सो संसारी ह्वैकै जैसे सूतपैसा को अढ़ाईसेर बिकाय है तैसे यहजीवात्मा बिषयरूप पैसाको चाहिकै अढ़ाई सेरह्वै गयो एकै पृथ्वीको बिषय सुखचाहैहैं एकै यज्ञादिक करिकै स्वर्गको बिषय सुख चाहैहैं आधेमुमुक्षू ह्वै के ईश्वरन के लोकको सुख चाहैहैं औब्रह्ममें लीनह्वैबो चाहैहैं इनमें पूरीविषय भोगनहीं है याते आधाकह्यो अहंब्रह्म तूलते नानाशरीर भ्रमरूप सूत निकस्यो एकते बहुत ह्वैगयो जोपट संसारमें बिनिगयो सो पट जो है संसार सो रत्तीभरनघटैहै न बढ़ैहै घरहाई जोहै जीवैकीनारी मायासो यहीजीवको कच आपने करमें करिलियोहै अर्थात् यह जीवकी चूँदीगहि लियोहै मायाको भोक्ताजीवहै यातेजीवहीकी स्त्री माया है ३ ॥

नितउठिबेठखसमसोंबरबशतापरलागुतिहाई।
भीनीपुरियाकामनआवै जोलहाचलारिसाई ४

खसम जो जीवहै तासोंनित उठिउठिकै बरवशकहे जबरदस्ती बेठकहे बेगारिलैयहै सोएकतो संसारमें मायातो बेगारिलेयहै दूसरो जोभागनते यह संसारउठो तो आत्मा को तिहाई लगी कहे त्रिकुटीमेंधोखा ब्रह्मको ध्यान लगायो जौनेमें बिनि जायहै तौन पुरिया कहावैहै सोजब भीजिजायहै तब नहीं काम आवैहै ऐसे यह संसारपुरियाहै नाना पदार्थ तेजोहैराग तेहिकरिकै जबशरीर भीज्यो तब यह संसारको असार जानिकै कहे सं-

सारकुछुकामको न जानिके जोलाहा जोहै जीव सोरिसायचल्यो धोखाब्रह्ममें लगतभयो सोऊ ब्रह्मतो ताहीको अनुभव है वहअनुभव ब्रह्ममें कछु न पावतभयो ४

कहैंकबीरसुनोहोसंतो जिनयहसृष्टिउपाई।
छांड़िपसाररामभजुबौरे भवसागरकठिनाई ५

सोकबीरजी कहैहैं किजामें तुमलग्यो है सोतो तिहारोईमन को अनुभवहै अरुयह संसारऊको तुम्हारोमनहीं रच्योहै सोजिन सृष्टिवाली उपाय कियोहै तेहिमायाब्रह्मते छांड़ि पसार परम पर पुरुष श्रीरामचन्द्र को भजन करु काहेते कि यह भवसागर परमकठिनहै उनहींके भजनकिये छूटैगो औरभांति न छूटैगो और तो सबयाही में परेहैं अथवा यहकठिन भवसागरमेंआयके श्रीरामचन्द्रही को भजन करि मनते छूटैगो ५॥ इति पन्द्रहवां शब्दसमाप्तम्॥

अथ सोरहवां शब्द॥

रामराझीझींजंतरबाजै। करचरणबिहूनाराजै १ करबिनबाजै श्रवणसुनै बिनश्रवणैश्रोतासोई। पाटनस्ववशसभाबिनुअवसर बूझौसुनिजनलोई २ इन्द्रीबिनुभोग स्वादजिह्वाबिनु अक्षयपिंडविहूना। जागतचोर मँदिरतहँमूसै खसमअक्षतघरसूना ३ बिजबिनअँकुर पेड़बिनुतरुवर बिनुफूलेफलफलिया। बांझकिकोखि पुत्रअवतरिया बिनपगतरुवरचढ़िया ४ मसिबिनुद्वाइतकलम बिनुकागद बिनुअक्षरसुधिहोई। सुधिबिनुसहज ज्ञान बिनज्ञाता कहैंकबीरजनसोई ५॥

पूर्वमायाको वर्णनकरिआये तौने मायाते छूटिके जौनेउपाय ते साहब को पावैहै सोउपाय कहैहैं॥

रामराझीझी जंतरबाजै।
करचरणबिहूनाराजै १

हे जीवराम कहे रकार तोको मराहै अर्थात् रकार बीजको
ो अभाव है याहीते तैं अपने को ब्रह्म मानिके संसारी ह्वैगयो
भी कहावै झिझिया जो कुवार शुक्ल चतुर्दशी अनेक छिद्र
ट्कीहोयहै ताके मध्यमें दीपवारिके धरै है सो झिझिया
ढढियाको कविसम्प्रदायहूमें है ॥ रंध्रजालमगह्वैकढै तियतन
दीपतिपुंज । झिझियाके सोघटभयो दिनहूमें वनकुंज । सारी
मूलामलसी फलकांति झरोखनकीझझरी झिझियासी सोझि-
झिया रूपनवदुवारको अथवा रोमरोममें छिद्रहैजामें वोईछिद्र-
नह्वै पसीनानिकसै है यहिप्रकारको झाँझी जोहै शरीर तौनैजंतर
बाजैहै कहे ताहीको यहसोहंशब्दहै काहेतेकि स्वासाकहैहैंसोनहीं
स्वासके कहेते करचरण विहून जो निराकार ब्रह्महै सो तेरे आगे
राजै कहे शोभित होन लग्यो अथवा आंखिन के आगे नाचन
लग्यो सर्वत्र ब्रह्महो देखिपरन लग्यो अथवा तैंहीं करचरण वि-
हून कहे निराकारं ब्रह्म ह्वैके नाचन लग्यो अथवा राजै कहे
शोभित भयो सो तुम तो शरीरते भिन्नहो जैसे ढढिया ते दीप
भिन्न रहै है वह सोहं शब्द तो शरीर को है वाको कहे तुम काहे
धोखामें परेहौ तुम निर्गुण सगुणके परे जो है साहब ताके हौ
तिनमें लगौ निर्गुण सगुणके परे कैसे साहवहैं सो कहै हैं १ ॥

करबिनुबाजै श्रवणसुनैबिन श्रवणैश्रोता सोई ।
पाटनस्वबश सभाबिनुअवसर बूझैमुनिजनलोई २

साहब के लोकके जे बाजाहैं तेविनकरबाजैं हैं काहेतेकि वहां
के जे बाजाहैं ते पंचभौतिक नहीं हैं औउहांके जेवासी हैं तिनके
शरीर पंचभौतिक नहींहैं अर्थात् मनवचनके परेहौ औ प्राकृत
जेहैं प्रकृति सम्बन्धीपदार्थ साकार औ अप्राकृत जो हैं निराकार
ब्रह्मलोक प्रकाश ताहूते विलक्षणहै करविना कह्यो याते सा-
कारौ नहीं है औ बाजैहै याते निराकारौ नहीं है औसोईश्रोता
जे हैं लोकवासी तेश्रवणते सुनै हैं औ श्रवण नहीं हैं याते सा-

कारौ नहीं है औ श्रवणते सुनै है याते निराकारौ नहीं है माया ब्रह्म जीव को जो अरुझा लग्यो है सो जोजीव साहबको स्मरण करै ताके पाटन कहे पटाइलीबेको साहब स्वबशहैं अथवा नौकर जाको राखै हैं ताको पट्टा लिखि देइहैं सो पाटा कहावै है सो इहां पाटन बहुवचनहै सो जेजीव उनके शरणजाय हैं तिन को पाटन के लिखिदीबे में अपनायलीबे में स्वबशहैं तामें प्रमाण ॥ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतम्मम ॥ औ बिना अवसर कहे बिना काल उनकी सभा लागी रहै है वहां कालकी गति नहीं है औ बाजन सदा बाजै हैं अर्थात् सदा रास उहां होतारहै है सो हेमनन शील मुनि लोगो तुम उनहीं को समुझौ औ उनहींको मननकरो वहधोखा ब्रह्मै के मनन कीन्हेते तुम्हारो जनन मरण न छूटेगो २ ॥

इन्द्रिबिनुभोग स्वाद जिह्वा बिनु अक्षय पिण्डबिहूना ।
जागत चोर मँदिर तहँ मूसै खसम अछत घर सूना ३

तुम वह साहबको कैसे समुझौ इन्द्रियबिना ह्वैकै साहब के लोकको जो है भोग सुखहै ताको लेउ औ बिना जिह्वाह्वैकै अनिर्वचनीय जो राम नामहै ताको स्वादलेउ औ पिण्ड बिहूना कहे पांचौशरीरते बिहीनह्वैकै कहे पांचौ शरीरनको छोड़िके हंस स्वरूपमें स्थितह्वैकै अक्षयकहे अक्षयह्वैजाउ तुम्हारेअन्तःकरण रूपी घरको चोर जो है धोखा ब्रह्म सो मूसेलेय है अर्थात् साहब को ज्ञान चोरायेलेयहै तुमहीं अहंब्रह्म बुद्धि कराये देयहै काहे ते कि खसम जेहैं साहब ते अछत बने हैं औ तुम अपनो हृदय घरसून करि राख्यो है साहब को नहीं राख्यो अर्थात् साहब को नहीं जान्यो ३ ॥

बिजबिनुअँकुरपेड़बिनुतरुवर बिनुफूले फलफलिया ।
बांझकिकोखिपुत्रअवतरिया बिनुपगतरुवरचढ़िया ४

इहां काकु अर्थहै बीज विना कहूँ अंकुर होयहै औ पेड़ बिना कहे बिना जर कहूँ तरुवरहोय है औविना फूल कहूँ फलहोयहै अरु वांझके कोखिमें कहूँ पुत्रहोइहै औ विनापगकोईतरुवरमें चढ़ैहै सो बीज तौ वह ब्रह्मकोकहौहौ सोतो शून्यहै कोई पदार्थनहीं है अंकुर कैसेभयो कहे कैसे माया सवलित ब्रह्मभयो औपेड़जरि मायाको कहौ सोतो मिथ्याहै संसार तरुवरकैसेभयो औज्ञानरूपजोफूलहै ताहूको तो सूला ज्ञान कहौहौ सोऊ मिथ्याहै कहोतो मुक्तिरूपी फल कैसे भरयो औ मनको तौ जड़ कहौहौ ताको अनुभव प्रबोधरूपी पुत्र कैसे भयो औ आत्माको तौ अकर्त्ता कहौहौ मन बुद्धिचित्तते भिन्नहै सो बिना पांव संसार वृक्षको चढ़िके कैसे चैतन्याकाशको पहुँच्यो ४ ॥

मसिबिनुद्वाइतकलमबिनुकाजग विनु अक्षरसुधिहोई।
सुधि बिनुसहज ज्ञान बिनु ज्ञाता कहैंकबीर जनसोई ५

बिना दुआइति मसि कैसे रहैगी अर्थात् मनको तो मिथ्या कहौहौ मनको अनुभव कैसेरहैगो वह मिथ्यई होयगो औ विना कागजकलमकहा करैगी अर्थात् देहेन्द्रियादि अंतःकरणतो मिथ्यै कहौहौ ज्ञान केहिके आधारहोयगो जहां बुद्धिरूपी कलमते लिखौगे निश्चय करौगे औ जो यह पाठ होय विन अक्षर सुधिहोइ तौ यह अर्थ है कि जो एक आत्माहीको सत्यमानोगे तो साहेब को बिना अक्षरकहे बिना अनादिमाने सुधिकहे सुरति तुमको कैसे होयगी औ कौनसुरति देयगो औ सुधिविन कहे जो सुधि न भई तो सहजकहे सोहंसो कैसे होयगो तेहिते विनाज्ञाताको ज्ञानकरुकहे भवैते अपने को ज्ञाता मानिरहे हैं कि मैं अपनोविचार करत करत औ सबको निषेध करत करत जो पदार्थ रहि जायहै ताहीको मानिलेउँगो कि यहीतत्त्व है सो यह भ्रमछांड़े तेरे जानेते साहब न जानिपरैंगे साहब मनवचन के परे हैं सो जौन बिना ज्ञाताको ज्ञान कौनहै जो साहब देयहैं काहेतेकि वह

ज्ञान काहूको नहीं जानो है जब साहब आपनोरूप देयहैं तबवह रूपते जानिपरै साहबही के रूपको जानोपरै है वाकोज्ञाताकोई नहीं है सो ज्ञानकरु अर्थात् रकारधुनि श्रवणरूपसाधनकरु तब साहबई तोको हंसस्वरूपदैकै आपनेनामरूप लीलाधामको स्फुरित करायदेयँगे तौने हंसस्वरूप की आंखीते श्रवणते साहब को देखु औ साहबके गुणसुनु सो कबीरजी कहै हैं कि यहितरह ते जाके बिना ज्ञाताकोज्ञानहै सोई मेरोजनहै अर्थात् जौनेलोक में हमारी स्थितिहै तौनेही लोकको वहजनहै बिनाज्ञाताकोज्ञान कौन कहावै है जो साहब देयहैं तामें प्रमाण॥ तेषांसततयुक्तानां भजतांप्रीतिपूर्वकम्। ददामिबुद्धियोगंतं येनमामुपयांतिते॥ इति गीतायाम् ५॥ इति सोलहवांशब्दसमाप्तम्॥

अथ सत्रहवांशब्द॥

रामगाइऔरेनसमुझावै हरिजानेबिन बिकलफिरै १ जामुख वेदगायत्रीउचरै तासुवचनसंसारतरै। जाकेपांव जगतउठिलागै सोब्राह्मणजिउवद्धकरै २ अपनाऊँचनीचकरभोजन घीणकर्मकरि उदरभरै। ग्रहणअमावस ढुकिढुकिमांगै करदीपकलियेकूपपरै ३ एकादशिव्रितौनहिंजानै भूतप्रेतहठिहृदयधरै। तजिकपूरगांठीबिष बांधे ज्ञानगमायेमुगुधफिरै ४ छींजैशाहुचोरप्रतिपालै संतजननकी कूटकरै। कहैकबीरजिह्वाकेलंपट यहिविधिप्राणीनरकपरै ५॥

रामगाइऔरेनसमुझावै हरिजानेबिनबिकलफिरै १
जामुखवेद गायत्री उचरै तासु वचन संसार तरै।
जाकेपाँव जगतउठिलागै सोब्राह्मण जिववद्धकरै २

श्रीरामचन्द्रकोगावैहैं औऔरेनको समुझावै हैं औसबके कलेश हरनवारेजेसाहबहैं तिनको नहीं जानै कि येई क्लेशहरिहैं हरि येई हैं सो या नानादेवता नानाउपासना खोजत बिकल फिरैहैं १

अरु जाकेमुखते वेदगायत्री जो वचनहैं सो उचरैहै वहीको ता-
त्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्रहैं तिन्हेंजानि संसारतरैहैं ताकोअर्थ जा-
निके कि वेदगायत्री तात्पर्यार्थ है ते श्रीरामचन्द्रहिको कहैहैं तामें
प्रमाण ॥ सर्ववेदाःसाघोपाङ्गच सर्ववर्णाःस्वराअपि । समात्रा-
स्तुविसर्गाश्चसानुस्वाराःपदानिच । गुणसांद्रेमहाविष्णौमहाता-
त्पर्य्यगौरवात् इतिमहाभारते ॥ जे ब्रह्मादिकमें विष्णुहैं तेविष्णु
हैं औ महाविष्णु श्रीरामचन्द्रही कहावैहैं तिनको तो नहीं जानै
हैं वेदगायत्री पढ़ैहैं औ वहीमुखते हिंसा शिष्यनते प्रतिपादन
करैहैं समुझावैं हैं औ आपही हिंसाकरै हैं तिनहींने पांयसव ज-
गत् उठिलागै हैं अरु वाहीको कहा सब सुनैहैं २ ॥

अपना ऊंचनीचघरभोजन घीणकर्मकरिउदरभरै ।
ग्रहणअमावसढुकिढुकिमांगै करदीपकलिये कूपपरै ३

आपतौ जातिमें ऊंचहैं परन्तु नीचकेघर भोजनकरैहैं औजौन
कर्म अपनेको उचितनहींहैं तौन घिनहा कर्मकैकै पेटभरैहैं औ
ग्रहणमें अमावसमें ढुकिढुकिमांगै हैं कि यहकुदान आननलै-
जाय हमैंलेइँ औ रामनाममुँहते कहै हैं सो नामरूपी दीपक
लीन्हे भ्रमकूपमें परैहैं ३ ॥

एकादशीव्रतौनहिंजानै भूतप्रेतहठिहृदयधरै ।
तजिकपूरगांठी विषबांधै ज्ञानगमायेमुगुधफिरै ४

औ एकादशीव्रत उपलक्षणैहै अर्थात् साढ़ेसट्ठाइस जेव्रतहैं
चौबीस एकादशी औ रामनौमी कृष्णाष्टमी वामनद्वादशी नर-
सिंह चतुर्दशी आधाअनन्त येजे वैष्णवीव्रतहैं तिनको नहींजानै
हैं अर्थात् वैष्णवी उपासनानहीं करैं औ मुँहते रामरामकहै हैं
औ भूतप्रेत यक्षिणी आदिजे उपासना हैं तिनको करै हैं तामें
प्रमाण ॥ अन्तःशैवावाहिश्शाक्ताः सभामध्येचवैष्णवाः । नाना
रूपधराकौला विचरंतिमहीतले ॥ सोरामराम जो कपूरहै ताको

छोड़िकै नानापाखण्ड मत जो विषयहै ताको धारणकीन्हे ज्ञान गमायके मूर्खचारौं ओर फिरैहैं ४ ॥

छीजैशाहुचोरप्रतिपाले सन्तजननकी कूटकरै ।
कहैंकबीरजिह्वाकेलम्पट यहिविधिप्राणीनरकपरै ५

तेहिते शाहुजो आत्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको अंश सदाकोदास या जीवको स्वरूपहैं सोजेहैं ते छीजैहैं अर्थात् वह ज्ञान वाको भूलिजायहै गुरुवनके बताये जे नानापाखण्डमततेई चोरहैं तिनको प्रतिपाल कियो कहे संगकियो तेईज्ञानको चोरायलेयहैं औजे साहबके ज्ञानके बतैया जेसन्तहैं तिनहींकी कूट करैहैं कि ये मुड़ियनको मत वेदशास्त्रके बहिरैहैं सो कबीरजी कहैहैं ऐसे जिह्वाके लम्पट प्राणी हैं ते नरकहीमें परै हैं ५ ॥

इति सत्रहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ अठारहवांशब्द ॥

रामगुणन्यारो न्यारोन्यारो । अबुझालोग कहांलौं बूझैंबूझनहार बिचारो १ केतेरामचन्द्र तपसीसों जिनयह जगविटमाया। केतेकान्हभये मुरलीधर तिनभी अंत न पाया २ मत्स्य कच्छवाराहस्वरूपी वामन नामधराया । केतेबौद्धभये निकलंकी तिन भी अंत न पाया ३ केतिकसिद्ध साधक संन्यासी जिन बनबास बसाया । केतेमुनिजन गोरखकहिये तिनभी अंत न पाया ४ जाकीगति ब्रह्मैनहिं पाई शिवसनकादिक हारे । ताकेगुण नरकैसे पैहौ कहै कबीर पुकारे ५ ॥

रामगुणन्यारो न्यारो न्यारो ।
अबुझा लोग कहांलौं बूझैं बूझनहार बिचारो १

परम पुरुषपर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकेगुण न्यारेन्यारे हैं इहां तीनवारजो कह्यो ताते या आयो कि साहबके गुणमायाके

गुणतेजीवात्माके गुणतेब्रह्मके गुणतेन्यारेहैं कौनरीतिसे न्यारेहैं कि मायाके गुणनाशवान्हैं विचारकिये मिथ्याहैं औ साहबके गुणनित्यहैं सांचहैं औ जीवात्माके गुण अणुहैं औ साहबके गुण विभुहैं औ ब्रह्मनिर्गुणत्व गुणब्रह्म में है औ साहब निर्गुण सगुण के परेहै सो याप्रमाण पीछे लिखिआयेहैं ॥ अपाणिपादोजवनो गृहीता इत्यादि औ ब्रह्मसम्बन्धी अनुभवानन्दजीवको होइहै औ साहब अनुभवातीतहैं याते साहबके गुणसबते न्यारेहैं सोवावात अबुझालोग कहांलौं बूझैं कोई बूझनहारतो विचारतेजाउ १ ॥

केतेरामचंद्रतपसीसों जिनयहजगविटमाया ।
केतेकान्हभयेमुरलीधर तिनभी अंत न पाया २

केतेन्यो रामचन्द्रहैं कौन रामचन्द्र जेतपस्वी ब्रह्महैं तिनसों जगत् बिटमाया कहे बनायोहै अर्थात् जेनारायण रामावतारले इहैं सो ब्रह्माते कैसे जगबनवायो सो कथा पुराणनमें प्रसिद्धहै कि कमलमें ब्रह्माभयेतब आकाशवाणी भई तपतप तबतपस्या कियो तब नारायण प्रकटभये ते ब्रह्माते कह्यो कि जगत् बनाओ तब बनावतभये नारायण जे रामावतार लेइहैं तामें प्रमाण ॥ यदास्वपार्षदौजातौराक्षसप्रवरौप्रिये । तदानारायणःसाक्षाद्रामरूपेणजायते ॥ प्रतापीराघवसखा भ्रातावैसइरावणः । राघवेणतदासाक्षात्साकेतादवतीर्यते ॥ ते नारायण अन्त न पायो तेनारायण रामचन्द्र क्षीरशायीश्वेतद्वीपनिवासी बहुतहैं जिनकेगुणको अंत कोईनहीं पावैहैं अरु जिनके गुण सबके गुणते न्यारे हैं ते श्रीरामचंद्र एकई हैं औ केतेकान्ह मुरलीधरभये तिनभी अन्त नहीं पायो काहेते कि उनके अनन्त गुणहैं २ ॥

मत्स्यकच्छवाराहस्वरूपी वामननामधराया ।
केतेबौद्धभये निकलंकी तिनभीअंतनपाया ३
केतेकसिद्धसाधकसंन्यासी जिन्हबनवासबसाया ।
केतेमुनिजन गोरखकहिये तिनभी अंतनपाया ४

गाई १० औवह लोककोवर्णन वेदसारार्थ जोसदा शिवसंहिता है ताहूमेंहै श्रीसौमित्रिरुवाच ॥ महर्लोकः क्षितेरूर्ध्वमेककोटिप्र माणतः । कोटिद्वयेनविख्यात जनलोकंव्यवस्थितः १ चतुष्कोटि प्रमाणंतु तपोलोकोविराजितः । उपरिष्टात्ततःसत्यमष्टकोटिप्रमा णतः २ आयुःप्रव्यासकौमारंकोटिषोड़शसंभवम् । तदूर्ध्वोपरिसं ख्यातमुमालोकंसुनिष्ठितं ३ शिवलोकंतदूर्ध्वंतु प्रकृत्याचसमाग तं । विश्वस्यपुरतोवृत्तिः शिवस्यपुरतोबहिः ४ एतस्माद्बहिरावृ त्तिःसप्तावरणसंज्ञकाःतदूर्ध्वंसर्वतत्त्वानांकार्यकारणमानिनां५नि लयंपरमंदिव्यंमहावैष्णवसंज्ञकं । शुद्धस्फटिकसंकाशंनित्यस्वच्छ महोदयं ६ निरामयंनिराधारंनिरंबुधिसमाकुलम् । भासमानंस्वव पुशावयस्येश्चविज्रंभितं ७ मणिस्तंभसहस्रैस्तु निर्मितंभवनोत्त- मम् । वज्रवैडूर्य्यमाणिक्यग्रथितंरत्नदीपकं ८ हेमप्रासादमावृत्य तरवःकामजातयः । रत्नकुंडैरसंख्यात पुरुषैर्मलयवासिभिः ९ स्त्रीरत्नैःपरमाह्लादैःसंगीतध्वनिमोदितैः । स्तुतंत्रसंवितंरम्यर- त्नतोरणमंडितं १० कारुण्यरूपंतन्नीरंगंगायस्माद्विनिःसृता । अ नंतयोजनोच्छ्रायमनंतयोजनायतम् ११ यत्रशेतेमहाविष्णुर्भगवा न्जगदीश्वरःसहस्रमूर्द्धाविश्वात्मा सहस्राक्षःसहस्रपात् १२ य- न्निमेषाज्जगत्सर्वंलयीभूतंव्यवस्थितम् । इन्द्रकोटिसहस्राणांब्रह्म णांचसहस्रशः १३ उद्भवंतिविनश्यंति कालज्ञानविडंबनैः । यदं- शेनसमुद्भूताब्रह्मविष्णुमहेश्वराः १४ कार्य्यकारणसंपन्ना गुणत्र- यविभावकाः । यत्रभावर्ततेविश्वं यत्रैवचप्रलीयते १५ तद्वदापरमं धाममदीयंपूर्वसूचितम् । एतद्गुह्यसमाख्यानंददातुर्वांछितंहिनः १६ तदूर्ध्वन्तुपरंदिव्यं सत्यमन्यद्व्यवस्थितम् । न्यासिनांयोगि नांस्थानं भगवद्भावितात्मनां १७ महाशंभुर्मोदतेत्रसर्वशक्तिसम- न्वितः । तदूर्ध्वंतुस्वयंभातंगोलोकंप्रकृतेःपरम् १८ अरुसहस्रशी- र्षापुरुषजोलिख्योहै तहैं शुद्धजीव संमिटेरहैहैंवे समष्टी हैं ताके रोमरोममें अनन्तकोटि ब्रह्माण्डहैं तहैंते अनेक ब्रह्माण्ड उत्पत्ति होइहैं औतहैं महाप्रलयमें लीन होइहैं औ दूसरे सत्यलोकमेंजो

महाशंभुको वर्णन कियोसो परमगुरुको रूपहै तामेंप्रमाण ॥ त्वं-
देशंभुजगद्गुरुं औ गुरुसोंऔ साहबसों अभेद तामेंप्रमाण है ॥
आचार्यमांविजानीयान्नावमन्यत्कर्हिचित् इतिभागवते ॥ औम-
हाशंभुसों औ महाविष्णुसों अभेदहै तामें प्रमाणशिवस्यश्रीवि-
ष्णोर्यइहि गुणनामादिसकलंधिया भिन्नंपश्येत्सखलुहरिनामा
हितकरः इतिस्कंदपुराणे औ नारायण जे वर्णन करिआये तेऊ
श्रीरामचन्द्रईके रूपहैं तामेंप्रमाणसदाशिवसंहितायां ॥ वासुदेवो
घनीभूततनुतेजःमहाशिवः ॥ औ गोलोक में श्रीकृष्णरूपते रघु-
नाथजी बिहारकरैहैं औ गोलोकके मध्य साकेतमें रामरूपतेरघु-
नाथजी विहारकरैहैं तामें प्रमाण सदाशिवसंहिताके विस्तारते
बर्णन करिआये कि पश्चिमद्वार वृन्दावनहै उत्तरद्वार जनकपुर
है पूर्वद्वार आनन्दवनहै दक्षिणद्वारचित्रकूटहै ताकेआगे यहलोक
है तेहिते इहां प्रयोजनमात्र लिख्योहै तेषांमध्येपुरंदिव्यं साकेत
मितिसंज्ञकं इति ॥ औ साकेत ऊपर कछुनहीं है औ साकेतऔ
अयोध्यासत्यासत्य लोक इत्यादिकनामसब वहलोकके पर्याय
हैं तामेंप्रमाणसाकेतान्नपरंकिंचित्तदेवहिपरात्परम् ॥ औ गोलो-
कजे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तेईश्रीरामचन्द्रईकेमहत् ॥ सीतारामात्मकं
युग्मंप्राविशन्नतिपूर्वकं १ श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजीसों कह्यो
कि वृन्दावनको बिहारकरिये तबरघुनाथजी कह्यो जब तुमक-
ह्यो तैंएक दूसरा विहार स्थल बनाइये तब हमवृन्दावन बना-
योराधिका तुमभईकृष्णहमभये सोविहार करतेभये सो हमार-
ई तुम्हार रूप राधाकृष्णहै या कहिकै आकर्षण करिकै वृन्दावन
बोलाइलियो राधाकृष्ण आइगये तब राधिकाजी जानकीजीमें
लीनभई श्रीकृष्णचन्द्ररामचन्द्रमें लीनभयेअरुपुनिविहार कियो
जब बिहार करिचुके तबजानकी रघुनाथते निकसिकै वृन्दा-
वन समेत राधाकृष्ण चलेगये गोलोककोसो यहकथा शुकसंहि-
तामेंहै ताको एकश्लोक लिख्योहै औ विस्तारसे देखि लीजियो
तेई श्रीकृष्णके नखको प्रकाशब्रह्महै वही प्रकाशको मुसल्मान

लामकानकहेहैं औजे दशमुकाम रेखतामें करिआये औदशवोई मुकाम सदाशिवसंहिता में वर्णन करिआये तिनमेंपांच मुकाम मुसल्माननके कहेहैं औ पांचमुकाम छोडिदेइहैं तिनको उनहींमें गतार्थ मानिलेइहैं मुल्माननमें वोई पांच मुकामके दुइनाम हैं नासूतको आलम अजसामकहे शरीरधारी याते यहलोककेसव आइगये औ मलकूत को आलम मिसाल फिरिस्तनके दुनिया देवलोक औ जवरूतको आलम अर्थात् कहे पृथ्वी अप तेज वायु तत्त्वरूपहे और लाहूतको आलमकवे कहे नूर अर्थात् श्रीकृष्णको मुख्यप्रकाशजोहै ब्रह्म वहीको कही लोकप्रकाश लिख्योहै औ हाहूतको मुकाम महम्मदीकहे जहांभर महम्मद पहुंचैहैं श्रीकृष्णके लोक अव इनके मंत्रऊ लिखेहैं। जिकिरिना सूतलाईला हइलाहूजिकिरमलकूतइल्लिलाहूजिकिरजवरूतअल्लाः अल्ला जिकिरलाहूतअल्लाहजिकिरहाहूतहूंहूं॥ सोइनकोरातिदिनपांचहजार वारकरै जब पांचहजारहोय तबध्यान करै औ ध्यान में गड़ैऔआपकोभूलैफिरिजहांनकोभूलैपुनिजिकिरिकहेमंत्रकोभूलै तबक्रमते मजकूरको पहुंचै अर्थात् अल्लाहीजे श्रीकृष्णचंद्र हंस स्वरूपदेइँतामें स्थितह्वैकै जिनको प्रकाशनिराकारजोहै ऐसे जेश्रीकृष्णहैं तिनके पासहोत उनके वताये मनवचनके परेजेखुद खामिंद सबके वादशाह जे श्रीरामचंद्रहैं तिनके पासजाताहै सो यहै मत महम्मदजे साहवके वेहैं तिनको साहबभेजा तव जेसाहब के पास पहुंचनवारे रहे तिनको महम्मद भेद वताइ दियो सो विरले कोई कोई यहभेदजानैहैं तेसाहवके पासपहुंचैहैं अवयाको क्रम वतावैहैं जौनीभांति साहवके पासपहुंचै तामें प्रमाण॥ परीानपीरसाहवकेपासपहुंचेएसेजेहैं सलोलके मालिक पनाह अता॥तिनकोकवित्त॥ देहनसूतसुरैमलकूतऔजीवजवूतकीरूहवखाने। अरवीमेंनिराकारकहैजेहिलाहुतैमानिकैमंजिलठाने॥ आगेहाहूतलाहूतहैजादुतिखुदखामिंदजाहूतमेंजाने।सोईश्रीरामपनाहसवैजगनाहपनाहअतायहगानै १ दोहा॥ तजैकर्मणासूलहि

निरखैतबमलकूत। पुनिजबरूतौछोडिकेदृष्टिपरेलाहूत २ इन चारोंतजिभागेहापनाहआताहाहूत। तहांनमेरन बीछुरैजातनतहँ यमदूत ३ औ जुलजलालअव्वल एकराम मुसल्मानों के कहेहैं किताबनमें प्रसिद्धहै साहब बुजुर्गीका साहब बखशीशका अर्थात् वह सबते बुजुर्गीकहे बड़ाहै उससेबड़ा कोईनहीं है औ वही गुनाहकाबकसने वालोहै औरे के छोड़ाये नछूटैगो जब श्रीरामचंद्र जीवको छोड़ावेंगे तबहींछूटैगो औखोदाकेसौनामहैं निन्नानबे सगुणनाम हैं औमुक्तिकोदेनवारो निर्गुणअल्लाह नामही है वही है वहीखुदखामिंदकानामहै तौनैबात वेदशास्त्रमें सिद्धान्तकियो है कोई कोई जे साहब के पहुंचेहैं ते वेग्रंथ जानैहैं सो लिख्यो है कि और देवतनके नामते अधिक और सबनाम भगवान्केहैं औ भगवानके सबनामते अधिक रामनामहै सो महादेवजी पार्वती जीते कह्योहै ॥ सहस्रनामतातुल्यंरामनामवरानने। सप्तकोटि महामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः॥एकएवपरोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयं। विष्णोरेकैकनामापि सर्ववेदाधिकंमतं। तादृगंनामसहस्रेणराम नामसमस्मृतं ॥इतिपाद्मे॥ औ गोसाईंजीहूलिख्योहै रामसकल नामनते अधिका ॥ सोयही रामनामते अल्लाह नामानिकस्यो रामनामकेमकारको रकारभये आगेकापीछे आया तबअर भया सो अर राकेपीछे आया तबअररामभयोरलके अभेदसे अल्लाह भयो व्याकरण वर्णविकारवर्णकार वर्णविपर्यय पृषोदरादिपाठसे सिद्धशब्दको साधनके वास्तेप्रसिद्धहै औ जो सदा शिवसंहिता में दशमुकाम लिखि आये हैं औ पहिले रेखतामें लिखि आये हैं सो कबीरजी पुनिखुदखामिंदको दूसरे रेखता में वहीबात लिख्योहै॥ जुलमतनासूत मलकूतमें फिरिस्ते नूर जल्लाल जब रूतमेजी। लाहूतमें नूरजम्माल पहिंचानियेहक्क मक्कानहाहूतमेजी ॥वका वाहूतसाहूत मुर्सिदवारहै जोरव्वराहूमेजी। कहत कब्बीर अबिगात आहूतमें खुदखामिन्द जाहूतमे जी १ सोवे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके गुणसबते

न्यारे हैं औ उनको धाम सबते परेहै वाकोकोई अंतनहीं पायोसो तिनके गुण है जीवो तुम कैसे पावोगे ५॥

इतिअठारहवांशब्दसमाप्तम्॥

अथ उन्नीसवांशब्द॥

एतत रामजपोहोप्राणी तुम बूझोअकथ कहानी। जाकोभाव होतहरि ऊपर जागतरैनि बिहानी १ डाइनि डारे सोनहाडोरे सिंहरहे वनघेरे। पांचकुटुंब मिलि जूझनलागे बाजनबाजघनेरे २ रोहुमृगा संशय बन हांकै पारथबाना मेलै। सायरजरैं सकल बनडाहै मक्षअहेराखेलै ३ कहै कबीरसुनौहो संतो जो यह पद निरधारै। जोयहिपदको गायबिचारैआपतरै अरुतारै ४॥

एतत राम जपोहो प्राणी तुमबूझौ अकथ कहानी।
जाको भावहोत हरि ऊपर जागत रैनि बिहानी १

एतत कहे ईंजे निर्गुण सगुणके परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जपो कैसे जपो कि अकथ कहानी कहे मनबचनके परे जोहै रामनाम सो बूझ अर्थात् रामनाममें साहबमुख अर्थबूझि- कैजपो श्रीरघुनाथजीके ऊपर जाको भावहोयहै ताको यहसंसार रूपी जोहै निशा बिहानई ह्वैजायहै सोवतते जागिउठैहै तातेयह ध्वनितहोयहै जाको रघुनाथजीके ऊपर भाव नहींहै ताको यह संसाररूपी निशाबनी रहैहै बिहान नहीं होयहै जागैनहींहै कहेज्ञा- न नहींहोयहै भ्रमरूपी निशामें सोवतैरहैहै यहिसंसारमें जीवकैसे घेरे रहतेहैं सोकहैहैं १॥

डाइनि डारे सोनहाडोरे सिंहरहे बनघेरे।
पांचकुटुंबमिलिजूझनलागेबाजनबाजघनेरे २

डाइनि जेहैं गुरुवालोग छालाके डारनेवाली जे वाकेकानमें अपनीविद्या डारिदियो इहांगुरुवालोग डाइनि हैं जेसिंहकोमंत्र तेबांधि देयहैं वा वनत्यागि और वननहीं जायहै औसोनहाजोहै

सो हंहंस मंत्र तौने मोडोराबांध्यो अर्थात् यह कह्यो कितहीं ब्रह्म है और कहां खोजै है तैं वाहै वा तैं है यहमंत्रको अर्थ बतायो सो सिंह जो है जीव या सामर्थ है सो उनही वाणीरूप बनमें घेरिरह्यो कहे बँधिरह्यो तब पांचौ जेज्ञानेन्द्री हैं पांचौ जेकर्मेन्द्री हैं अथवा पांचौ जे प्राणहैं प्राण अपान समान उदान व्यान तेई कुटुम्बहैं तिनमें मिलिकै जूझैलाग पांच कुटुम्ब सिंहके पंचआनन जब सिंहको मारनजायहै तब झुनका बाजावजावै है तैसे इहां गुरुवा लोग अनहद सुननकी युक्ति बतावन लगे सो दशौ अनहदकी धुनि सुननलग्यो तेई बाजाहैं २ ॥

रोहुमृगा संशय बन हांकै पारथबाना मेलै ।
सायरजरै सकलबनडाहै मच्छअहेराखेलै ३

रोह कौन कहावै कि जो कमरीमें आगीवारतजायहै झुनका बजावत जायहै तामें मृगा मोहिजायहैं सो वाही की छाया में पीछे धनुषबाणकी वांसकी वन्दूकादि आयुधलिये खड़ो रहै है शिकारी सोई मारै है यहीरोह है सो मृगराज जो है जीव ताको गुरुवालोग जब योगाभ्यासकैकै धोखा ब्रह्मकोप्रकाश बतायो तामें रहिगयो कहे मोहिगयो जो कहौ हांकि कौन लायो तौ संशयरूप हँकवैयाहै जैसे आगबिरत देखिकै वा बाजा सुनिकै टेममें मोहि कै मृगमृगराज जायहै या कैसो बाजावाजै है या कैसी टेमहै या संशयजोहै ज्ञानमिलनकीचाह सोवाकोहांकिलैआयो ऐसे गुरुवा लोगनकी जोबताई वाणीबनहै जौनअनहदसुनिवेकी युक्तिबतायो तौन अनहदकी धुनिसुनिकै औ जौन ज्योतिवतायो सोऊ योगा-भ्यासकरिकै ज्योतिरूपब्रह्मदेखिकै जीव या संशयकैकै निकटजाय है औ या विचारै है कि या ज्योतिरूप ब्रह्ममहींहौं कि मोतेभिन्नहै तबशिकारी जैसे ढुकोरहै है ऐसोमूलाज्ञानरूप शिकारी अहंब्रह्मा-स्मि वृत्तिरूपवाणमारि वाजीवको अनुभव करायदेयँ किमहींब्रह्म हौं वाके जीवत्वको नाशकैदेयहै यहीमारिबो है औजैसेबाणलागे

मृगराजको अंतष्करण जरउठैहै अधिककोपैहै बनमें जोईआगे वृक्षपरैहै तौनेपर चोटकरैहै जोमारनवालेको देखैहै तो वाहू को धरिखायहै ऐसे जब आपनेको ब्रह्ममान्यो तब सायर जो संसारहै सो जरैहै अर्थात् संसार याको मिथ्याजानि परैहै औ बन डाहे है कहे वा दशामें वाणीरूपबन सोऊ भूलिजायहै ऐसे बधिक मारयो बधिकको वाघमारयो बधिकको जबमारिकै दोऊगलिकै नदी में मिल्यो तब मछरी खायो अथवा मरिकै दोऊ बहे रहे कीड़ापरे जब बाढ़को जलआयो तब मछरी खायो ऐसे ब्रह्महुमें लीनह्वै अठई अवस्थाको प्राप्तभये तब न जीवत्वरह्यो न मूलाज्ञानरह्यो ऐसेहूभये तथापि साहबको बिनाजाने मच्छ जोकाल है सो खायलेइहै फिरि संसारमेंपरैहै तामेंप्रमाण ॥ येन्येरविंदाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः । आरुह्यकृच्छ्रेण परम्पदन्ततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥ इतिभागवते ॥ कबीरजीकोप्रमाण ॥ कोटिकरमकटपलमें जोराचैयकनाम । अनेक जन्म जो पुण्यकरै नहीं नाम बिनु धाम ३ ॥

कहैकबीरसुनोहोसन्तो जोयहपद निरधारै ।
जोयहिपदकोगाइविचारै आपुतरैअरुतारै ४

सो कबीरजी कहैहैं कि हेसन्तो जो यह पदको निरधारै कहे सारासार विचारकरै औ जौन ब्रह्मपद कहिआये तौने को गाइ विचारै कहे माया विचारै सो आपु तरिहि और आनहूको तारैहै अर्थात् साहबको वा जानै औ औरहूको जनाइदेइ ४ ॥

इति उन्नीसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ बीसवां शब्द ॥

कोइरामरसिक रसपियहुगे । पियहुगेसुखजियहुगे १ फलअमृतै बीजनाहिंबोकला शुकपक्षीरसखाई । चुवैनबुन्द अंगनाहिंभीजै दासभँवरसँगलाई २ निगमरसाल चारिफललागे तामेंतीनि

समाई । एकहै दूरिचहै सबकोई यतनयतन कोइपाई ३ गयउ वसन्त ग्रीष्मऋतुआई वहुरिनतरुवरआवै । कहेकबीर स्वामी सुखसागर राममगनह्वैपावै ४ ॥

कोइरामरसिक रसपियहुगे । पियहुगे सुख जियहुगे १ फल अमृतै बीज नहिं बोकला शुकपक्षी रसखाई । चुवै न बुन्द अंग नहिं भीजै दास भँवरसँग लाई २

हेजीवौ कोई तुम रामरसिकनते रामरस पिऔगे अथवा राम रसिकह्वैकै रामरस पिऔगे जो रामरसिकनते रामरस पिऔगे तबहीं सुखते जिऔगे कहे जन्ममरणते छूटोगे अरुआनंदरूप होउगे १ वह रामरस कैसो है अमृतको फलहै कहे वाके खायेते जन्म मरण नहीं होइहै औ तौने फलमें बीज बोकला नहीं है अर्थात् सगुण निर्गुणरूप बीज बोकला नहीं है औ न मीठोफल होइहै ताही फलमें सुवा चोंच चलावै है यह लोकमें प्रसिद्ध है यहां शुकाचार्य रामरसको मुक्तह्वै आस्वादन कियो है ताते यह व्यंजितभयो कि रामरसते ब्रह्मानंदकमिहीहैं अर्थात् श्रीमद्भागवत मेंहै॥ वन्देमहापुरुषतेचरणारविंदम् ॥ ऐसोकहि शुकाचार्य परम-परपुरुष श्रीरामचन्द्रहीकेचरणनकीवंदनाकियो है औश्रीरघुनंदन ही के शरणगये हैं यह वर्णन श्रीमद्भागवतही में है ॥ तन्नाकपा-लवसुपालकिरीटयुष्टं पादाम्बुजंरघुपतेःशरणम्प्रपद्ये ॥ इतिभाग-वते ॥ औ श्रीरामचन्द्रहीको परतत्त्वतातपर्यते वर्णन कियो है सो कोई बिरला सन्तजन याकोअर्थ जानै है औ जो यहपाठहोइ फल अंकुतै बीज नहिं बोकला तौ यह अर्थ है कि फलकी अंकृतिकहे आकृति तो है परन्तु बीजबोकला जे निर्गुण सगुण हैं ते इनमें नहीं आवै हैं इनते भिन्नहै सो रामरसरूपी फलहै तो रसरूपई है परन्तु वाको रसबुन्दहू नहीं चुवै है अर्थात् अंत कबहूँ नहींहोइ है अनादि अनन्तहै औ काहूके पांचौशरीर के अंग नहीं भीजे हैं अर्थात् कोई पांच शरीरते भिन्न नहीं होइहै जब पार्षदरूप रामो-

पासक तेई भँवर हैं ते वाकेसंग लगे रहै हैं अर्थात् रामरस पान करतई रहै हैं २॥

निगमरसाल चारिफललागे तामें तीनिसमाई।
यकहैदूरि चहै सबकोई यतनयतनकोइपाई ३

सो कबीरजी कहैहैं कि निगम जोहै रसालकहे आमकोवृक्षतामें चारिफल लागे हैं अर्थ धर्म काम मोक्ष तिनमें तीनि फलत हैं समात हैं कहे नष्ट ह्वैजाइहैं अर्थात् तीनिऊँ अनित्य हैं औ एक जो है मोक्ष सोतो बहुत दूरिहै यत्नही यत्नकरत कोई बिरला पावै है अर्थात् निगम तौ रसालहै रसमयहै तात्पर्य वृत्तिकरके साहबईको बतावै है सो वह तो कोई जानै नहीं है यह कहैहै कि चारिफल लागे हैं ३॥

गयउबसन्त ग्रीष्मऋतुआई बहुरिनतरुवरआवै।
कहै कबीरस्वामी सुखसागर राममगनह्वै पावै ४

अरु जोकोई निगमरूपी वृक्षको मोक्षरूपी फलपायोहैवाको पायोहै ताकोवसंतऋतुजाइरहैहै ग्रीष्मऋतुह्वैजाइहैकहेआत्मा को स्वस्वरूप भूलिगयो सुखकोआस्वादन न रहिगयो कहनलग्यो कि मैंहीब्रह्महौं ग्रीष्मऋतुमें प्रकाशबढ़ै है सोयहो प्रकाशमेंसमा-इगयो सोफेरि जोचाहै कि रामोपासनारूप ब्रह्मकी भक्तिरूप छा-या मिलै तौ नहीं मिलै श्रीकबीरजीकहैहैं कि सुखसागरस्वामीजे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके रामनामरसमें जब मग्नहोइ है तबहीं पावै है जीवकोस्वरूप॥ आत्मदास्यंहरेस्स्वाम्यंस्वभावं चसदास्मर॥ औ शुकाचार्य या फलको चाखिनहै तामेंप्रमाण॥ निगमकल्पतरोर्गलितंफलंशुकमुखादमृतद्रवसंयुतं। पिबतभागव तंरसमालयंमुहुरहोरसिकाभुविभावुकाः ५॥ इतिभागवते ४॥

इति बीसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथ इक्कीसवां शब्द ॥

रामनरमसिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहै अभागा १ कोइ तीरथकोइमुण्डितकेशा । पाखंडभर्म मंत्रउपदेशा २ विद्यावेदपढ़ि करहंकारा । अंतकालमुखफांकैछारा ३ दुखितसुखितसबकुटुंब जेंवइबे । मरनबेरयकसरदुखपइबे ४ कहकबीरयहकलिहैखोटी । जोरहकरवानिकसलटोटी ५ ॥

रामनरमासिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहैअभागा १

सबको दंडछोड़ाय देनवारे जेसबतेपरे परमपुरुष श्रीरामचंद्र हैं तिनमें जोतैंनहीं रमै है सो तोकोगुरुवा लोगनको कौन दंड चवावलगाहै यहतोसब यहींकेसाथी हैं साहबके भुलायदेनवारेहैं जेउपदेश करनवारे गुरुवनकेकहे मायाब्रह्म आत्माको ज्ञानरूपी दंडचवावमें जोते परेहैं सोहे अभागा जबतैंमरिजैहै तबवेगुरुवा तोको न बचासकेंगे तबक्याकरोगे १ ॥

कोइतीरथ कोइमुंडितकेशा । पाखंडभर्मसंत्रउपदेशा २

तीर्थनमें जाइकै कोई चहौहौ किबिनाज्ञानही मुक्तिह्वैजाइहै औकोई मूड़मुड़ायकैवेषबनाइकै संन्यासी ह्वैकै औ अपनेआत्माहीको मालिक मानिकै चाहौहौ कि मुक्तिह्वैजायँ औकोईनास्तिकादिकनके जेनानापाखंड मतहैं तिनमें लागिकै जानौकि मुक्ति ह्वै गये औ कोई भ्रमजो धोखाब्रह्महै तामें लागिकै आपनेकोब्रह्म मानिकै जानौहौ कि हममुक्तिह्वैगये औकोई और और देवतनके मंत्रउपदेश पायकै जानौहौ कि हममुक्तिह्वैगये २ ॥

विद्या वेदपढ़िकर हंकारा । अंतकालमुख फांकैछारा ३

अरुकोई वेदबाह्य जे नाना विद्या अपनेअपनेगुरुवनकी भाषा तिनको पढ़िकै औकोई वेद पढ़िकै वेदमें शास्त्र औ चौंसठकलादिक सबआइगये अहंकारकरोहौ कि हममुक्तिह्वैगये सोमुक्तितो जिनको वेद तात्पर्य करिकै ऐसेजे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनकेबिनाजाने न होइगी होयगो कहाकिजबअंतकालतेरोहोइ-

गो तब यहो मुखमेंछार फांकैगो औ पुनिजब पुण्यक्षीण होइगो तब लोक आवोगे तबहूं मरबै करोगे छारईफांकोगे ३ ॥

दुखितसुखितसबकुटुंबजेंवइबे।मरनबेरयकसरदुखपइबे४

दुःखसुखमें सबकुटुम्बनको जेंवावैहै तेमरणसमय कोईकाम नहीं आवैहैं तैं अकेलही दुःखपावैहै परन्तु सहायतेरी कोईनहीं करिसकैहै ४ ॥

कहकबीरयहकलिहैखोटी। जोरहकरवानिकसलटोटी ५

कलिनाम झगड़ाकोहै सोकबीरजी कहैहैं यहमायाब्रह्मकोभ्क-गड़ा बहुत खोट है अथवा यह कलिकाल अतिखोटहै जो वस्तु करवामेंरहैहै सोईटोंटीतेनिकसैहै तैसेजोकर्मयहजीवकरैहै सोई दुःखसुख वह जन्मभोगकरैहै अरुनाना देवतनकी उपासनाअब करैहै ताहीकी वासना बनीरहैहै तेहितेपुनिवोई देवतनमें लागै है अरुजो ब्रह्मविचार अबकरैहै सोईब्रह्मविचार पुनि जन्मलैकैक-रैहै अर्थात् बिना परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रके जाने जन्ममरण नहीं छूटैहै जोवासना अंतष्करणमेंबनीरहैहै सोईपुनिहोयहै ५॥

इति इक्कीसवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथबाईसवां शब्द ॥

अवधू छोड़ो मन विस्तारा। सोपदगहहु जाहिते सद्गतिपर-ब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद हरिहजरत तबना-हीं। आदम ब्रह्म नहीं तब होते नहीं धूप नहिंछाहीं २ असी सहस पैगंबर नाहींसहस अठासी मूनी। चन्द्रसूर्य तारागणनाहीं मच्छकच्छ नहिंदूनी ३ वेद किताब स्मृति नाहिं संयम नहीं य-मन परसाहीं। बांगनेवाज कलिमा नहिंहोते रामोनहीं खोदाही ४ आदि अंतमन मध्य न होते आतश पवन न पानी। लखचौ-रासी जीवजन्तु नहिं साखी शब्द न बानी ५ कहै कबीरसुनोहो

अवधू आगे करहु विचारा । पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे किरतमकि-
नउपचारा ६ ॥

अवधू छोड़ो मनविस्तारा । सोपदगहहु जाहितेसद्ग-
ति परब्रह्मते न्यारा १ नहींमहादेवनहींमहम्मद हरिहज-
रत तबनाहीं । आदमब्रह्म नहींतबहोते नहींधूपनाहिंछा-
हीं २ असीसहस पैगंबर नाहीं सहसअठासीमूनी । चन्द्र
सूर्यतारागण नाहीं मच्छ कच्छनहिंदूनी ३ वेदकिताब
स्मृति नहिं संयम नहीं यमन परसाही । बांगनेवाजक-
लिमा नहिंहोते रामोनहीं खोदाही ४ आदिअंतमनम-
ध्यनहोते आतश पवन न पानी । लखचौरासी जीव
जंतु नहिं साखीशब्द न बानी ५ कहैंकबीरसुनोहोअव
धूआगे करहु बिचारा । पूरणब्रह्मकहांते प्रकटे किरतम
किनउपचारा ६ ॥

हे अवधू जीवौ तुम्हारे तो वधू कहेस्त्री नहीं है अर्थात् तुमतौ
मायाते भिन्नहौ जेतनो तुम देखोहौ सुनोहौ ताको मायामें
मिलिकै तुम्हारेमनही बिस्ताराकियोहै सोयहमनको विस्तारछो-
ड़िदेउ अरु जिनते सद्गति कहे समीचीन गतिहै मन वचन के
परे धोखा ब्रह्मके पार ऐसो जोलोकःप्रकाश ताहूते न्यारे ऐसे
साकेत निवासी परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके पदगहौ क-
बीरजी कहैहैं किहेजीवौ विचार तो करौ जोजो बात यह पदमें
स्पष्ट वर्णन करिगये तेयेकोऊ तब नहीं रहे अरु वासों भिन्नजो
तुमकहौहौ कि पूर्णब्रह्महै कहे सर्वत्र ब्रह्महीहै वासों भिन्न दूसरो
नहींहै सो यह धोखा कहांते प्रगट भयोहै औ किरितम जो मा-
याहै ताको किन उपचार कहे किन आरोपण कियो अर्थात् यह
शुद्ध समष्टि जीवको मनहीं किरितम जो मायाहै ताको आरो-
पण कियोहै औ मनहीं वह ब्रह्मको अनुमान कियो है ताहीको

कियो राम खोदाय आदिजे मन बचनमें आवैहैं जे वर्णन करि आयेहैं तेई विस्तारहैं सोपूरब मंगलमें औ प्रथम रमैनीमें बर्णन करिआयेहैं औ यहां रामको औ हरिको जो कहैहैं सो नारायण जे रामावतार लेइहैं तिनको कहैहैं नहीं यमन परसाही कहे चौ-दहौ यमनके परे जे निरंजनहैं तिनहूंकी साही नहीं रही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको नहीं कहैहैं काहेते कि वेतौ मनबचनके परेहैं सो पूरबलिखि आयेहैं सोबांचि लेहुगे सोजब मनको त्या-गो तब परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिहारो स्वरूपदेइँ तामेंप्रमाण॥ मुक्तस्यविग्रहोलाभः॥ यह श्रुति तौने स्वरूपते साहबको अनि-र्वचनीय रामनाम नामादिक तुमको स्फुरित होइँगे तामेंप्रमाण वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेशईश्वरः। तस्यनामादिकंसर्वं रामनाम्नाप्रकाश्यते॥ इतिमहारामायणे ६॥

इतिबाईसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथ तेईसवां शब्द॥

अवधू कुदरतिकी गतिन्यारी। रंकनिवाजकरै वहराजा भूप-तिकरैभिखारी १ येतेलवँगहि फलनहिंलागै चंदनफूलनफूलै। मच्छशिकारी रमैजंगलमें सिंहसमुद्रहिंफूलै २ रेड़ारूखभयाम-लयागिरि चहुँदिशिफूटीबासा। तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्डमें देखै अंधतमासा ३ पंगुलमेरुसुमेरुउलंघै त्रिभुवनमुक्ताडोलै। गूंगाज्ञा-नविज्ञान प्रकाशै अनहदबाणी बोलै ४ बांधिअकाश पतालपठावे शेषस्वरगपरराजै। कहै कबीर रामहैंराजा जोकछुकरैं सोछाजै५॥

जोपूर्व यह कहिआये कि रामौनहीं खोदाइउ नहींहैं जिनते समीचीन गतिहोइहै तिनके पदगहौ ते कौन पुरुष हैं तिनकी सामर्थ्य कहिकै खोलिकै बतावैहैं॥

अवधू कुदरति की गति न्यारी॥
रंकनिवाजकरैवहराजा भूपतिकरैभिखारी १

येतेलवँगाहिफलनहिंलागे चंदनफूलनफूले ।
मच्छशिकारीरमैजंगलमेंसिंहसमुद्रहिभूले २

हे अवधजीवो परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकीकुद-रति कहे सामर्थ्यकी गतिन्यारी है सुग्रीव जे पुत्रकलत्रते हीन भिखारीनाईं वनवन पहाड़ पहाड़ वागत रहे तिनको निवाजिकै राजा वनाइदियो औ सवराजन के जीतनवारे जेक्षत्री तिनको मारिकै पृथ्वी भूसुरन दैडारेउ नारायण के दशौ अवतार ऐसे परशुराम तिनको भिखारी करिदियो १ लवंगमें फलनहीं लागै सोउलागै चंदनमें फूलनहीं फूलै सोऊ फूलैहै जाकी सामर्थ्यते सो वाल्मीकीय में लिख्योहै जब श्रीरघुनाथजीअयोध्याजीआवैहैं तब जे वृक्षफलै फूलैवाले नहीं रहे सूखेरहे तेऊफल फूलिआये हैं औ मच्छजो मत्स्योदरी सो शिकारीजो शंतनु ताकेसाथ भय तेरमनलगी सिंहसामर्थ्यको कहैहैं सो समर्थ जे वड़ेवड़े दानव थलके रहैया ते समुद्रमें वसेजाय २ ॥

रेड़ारूखभयामलयागिरि चहुंदिशिफूटीवासा ।
तीनिलोक ब्रह्मांडखंडमें देखैअंधतमासा ३

रेड़ा रूखजेहैंसवरी वारार निषादादिक जिनको वेदकाअधि-कार नहीं रह्यो तेऊ चंदनह्वै गये उनकी वास चारिउदिशा फूटी कहे उनकोयश सवकोई गावैहै चंदन औरौ वृक्षको चंदनकरै है ऐसे औरहूको साधुन वनावनवारे ये सब भये तामें प्रमाण ॥ नजन्मनूनंमहतोनसौभगं नवाङ्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः । तैर्य-द्विसृष्टानपिनोवनौकसश्चकारसख्येवतलक्ष्मणाग्रजः इतिभा-गवते ॥ औ आंधरजेहै धृतराष्ट्र तिनकोकृष्णचन्द्र ब्रह्माण्ड भरेको तमाशा जिनकी सामर्थ्यते शरीरहीमें देखायदियो नारायण औ कृष्णचंद्र साहवकी सामर्थ्यते करैहैं तामेंप्रमाण ॥ यस्यप्रसादा-द्देवेशममसामर्थ्यमीदृशं संहरामिक्षणादेव त्रैलोक्यंसचराचरम्॥ धातासृजतिभूतानि विष्णुर्द्धारयतेजगत् । इतिसारस्वततंत्रे॥

कृष्णचंद्रको अवतार विष्णुहीते होइहै सोपुराणनमें प्रसिद्धहै३॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै त्रिभुवनमुक्ताडोलै ।
गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रकाशै अनहदबाणीबोलै ४

औ जिनके अघटित घटना सामर्थ्यते पंगुजेहैं मरुणते पृथ्वी केकीला जेहैं सुमेरु कुमेरु तिनको रोज उलंघैहैं नाकैहैं अथवा पंगुजोहैं राहु जाकेशिरै भरहै गोड़ हाथनहींहै सोसुमेरु कुमेरुका नाकतरहैहै औ मुक्तजेहैं नारद शुक कवीर आदिक जे संसारते मुक्तह्वैके मनादिकनको छोड़िकै साहबके पासगयेहैं औ यह शास्त्रमें लिखैहै कि उहांके गयेपुनि नहीं आवैहै परन्तु तेऊसाहवकी सामर्थ्यते त्रिभुवनमें डोलैहैं संसारबाधा नहीं करिसकै है औ जब शुकाचार्य निकसेहैं तबव्यास पछुआनजात रहेहैं तबगूंगे जेवृक्षहैं तेऊ व्यासको समुझायोहै औमध्वाचार्य जब भिक्षाटन को निकसे तब शिष्यनके पढ़ाइबेको बरदाको कह्यो तबबरदा शिष्यनको पढ़ायो है औ जे साहवकी सामर्थ्यते ऐसी सामर्थ्य उनके दासनकेह्वैगई कि वोई अनहद बाणीको बोलै हैं जाकीहद्द नहीं है ४॥

बांधि अकाश पताल पठावै शेषस्वरग परराजै ।
कहै कबीर रामहै राजा जोकुछु करै सो छाजै ५

औ आकाश जोहै आकाशवत्ब्रह्म तौनेको जो मानैहै किवह ब्रह्ममैंहींहौं ताकोसाहब अपनोज्ञानकराइकै धोखाज्ञानको बांधि कैपतालमें पठैदेइहै अर्थात् जेहिजीवको मूलाज्ञान निर्मूलकैकरि देयहै जैसे लोकमें या वात कहैहैं कि या खनिकै गाड़देव ऐसे गाड़दियो फिरि वा अज्ञान को अंकुर नहीं होयहै औ शेष कहे भगवत् शेषजोहै जीवसो जेसाहवकी सामार्थ्यते स्वर्गादिकन के परे जोहै साहवको लोक तहांराजैहैं स्वर्गपदको अर्थ जो दुःखते भिन्न स्थानहोयहै सो कहावै स्वर्गऔजोलोक प्रकाश ब्रह्म ताहूते परे जो साहव तहांराजैहै दुःखरहितस्थानको स्वर्ग कहैहैं तामें

प्रमाण ॥ यन्नदुःखेनसम्भिन्नं नचग्रस्तमनन्तरं । अभिलापोपनीतंच तत्पदंस्वःपदास्पदम् ॥ इति ॥ सो कबीरजी कहै हैं कि यह अघटित घटना सामर्थ्य परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं वेराजाहैं वे जो कुछ करैं सोसबछाजै है चाहे रंककोराजाकरैं चाहेराजाको रंककरैं चाहे लौंगमें फललगावैं चाहे चन्दनमें फल फुलाय देयँ चाहे मछरीको वनमें रमावैं चाहे सिंहको समुद्रमें रमावैं चाहे रेंडारूखको चंदनकरैं चाहेअंधाको तीनिउलोकदेखायदेयँ चाहेपंगुको सुमेरु कुमेरु नँघाय देयँ चाहे गूँगाको ज्ञान कहवायदेयँ चाहे आकाशकोबांधिके पतालपठावैं चाहे पातालवासी जेशेपतिनको स्वर्गपररारवैंयासामर्थ्यउनमेंहैश्रीरामचन्द्रतौराजाहैंतामेंप्रमाण॥ राजाधिराजस्सर्वेषां रामएवनसंशयः ॥ औ उनहींकी भयते सूर्य चन्द्रमा अवसरमें उयेहैं औमृत्यु जबसमयआवै है तबखायहैतामें प्रमाण ॥ यद्भयाद्वातिवातोयं सूर्यस्तपतियद्भयात् । वर्षतींद्रोदहत्यग्निर्मृत्युश्चरितपञ्चमः ॥ इतिश्रीमद्भागवते ५ ॥

इति तेईसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ चौबीसवां शब्द ॥

अबधूसोयोगी गुरुमेरा । जोईपदकाकरै निवेरा १ तरुवरएक मूलबिनठाढ़ो विनफूलेफललागा । शाखापत्रकछूनहिंवाके अष्ट गगनमुखजागा २ पौविनुपत्र करहविनुतुम्बा विनुजिह्वागुणगावै । गावनहारके रूप न रेखा सतगुरु होइ लखावै ३ पक्षी खोज मीनको मारग कहेकबीर दोउभारी । अपरमपार पारपुरुषोत्तम मूरतिकी बलिहारी ४ ॥

अवधूसोयोगी गुरुमेरा । जोई पदकोकरै निवेरा १
तरुवर एकमूल बिनठाढ़ो बिन फूलै फललागा ।
शाखा पत्र कछू नहिं वाके अष्टगगनमुख जागा २

वधूजाके न होइ सो अवधू कहावै सो हे अवधूजीवो जो यह

पदके अर्थको निवेराकरिके जानै सोयोगीगुरुकहे श्रेष्ठहै औ मेरा है कहे मैं वाको आपनो मानौहौं १ एकजोतरुवर है सोबिनामूल ठाढ़ोहै अरु वामें बिनाफूल फललागो है सो यहां तरुवरमनहै सोजड़है अरु आत्मा चैतन्यहै शुद्धहै जो कहिये आत्मा उत्पत्तिहै सो जो आत्मा उत्पत्तिहोतो तौ आत्माचैतन्यहै मानोहोतो ताते आत्माते नहीं उत्पत्तिभयो यह आपई आत्माते प्रकाशभयो जो विचारै तौ वाकोमूल भगवत्‌अज्ञान सतनहींहै बिनामूल ठाढ़ो भयो है अरु बिना फूलैफललागो है कहे जगत्‌उत्पादक क्रियामन नहीं कियो मिथ्या संकल्पमात्रते जगद्रूप फललागवई भयोअरु वाके शाखापत्र कछू नहीं है अर्थात् अंगनहीं है चित्तबुद्धिअहंकार येऊ मिथ्याहैं निराकारहैं अरु यह मनैके मुखते आठो गगन जागतभये सातसप्तावर्णके आकाश अथवा चैतन्याकाश २ ॥

पौबिनपत्रकरहबिनतुम्बा बिनु जिह्वागुणगावै ।
गावनहारके रूप न रेखा सतगुरुहोइ लखावै ३

अब श्रीकबीरजी जीवात्माको वृक्षरूप ह्वैके बर्णन करै हैं पौबिनु कहे आत्माको जगत्‌को अंकुर नहीं है मनके संयोगते दुःख सुखरूप पत्र दुइलागवेई कियो औ करहू जोकर्म है सो नहींरह्यो आत्मामें जगत्‌रूप तुम्बा लागवेई कियो यह जीवात्माकी दशा काहेतेभई कि बिनु जिह्वा जोहै निराकार ब्रह्मताके जेगुणहैं देशकालवस्तु परिच्छेदते शून्यत्व सो आपनेमें लगावनलग्यो येगुण मोहींमें हैं मेरोस्वरूप यही है सोजो या आपनेको ब्रह्ममान्यो तौ आत्माके ब्रह्मकेरूपको रेख नहीं है काहेतेयाकोदेशबनो हैं समष्टि जीवलोक प्रकाशमें रहै है औ कालबन्यो है जौनेकालमें समष्टिते व्यष्टिहोय है औ या देशकालवस्तुपरिच्छेदते सहितहैकाहेते अणु है भगवद्दासाहै तामें प्रमाण ॥ वालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पित स्यच । भागोजीवःसविज्ञेयः सचानन्त्यायकल्पते ॥ इतिश्रुतिः ॥ अंशोनानाव्यपदेशात्‌ ३ ॥

पक्षीखोजमीनकोमारग कहेकबीरदोउभारी ।
अपरमपारपारपुरुषोत्तम मूरतिकीबलिहारी ४

ताते मीनकीनाईं संसारते उलटीगति चलिकै पक्षीजो हंस स्वरूप आपनो ताको खोज कबीरजीकहैहैं येदोऊ भारीहैंसंसारते उलटी गतिहोइबो यहभारीहै आपनो हंसरूपपाइबो यहूभारी है सो संसारतेउलटीगतिकरि हंसरूपपाइकै परमपर जोआत्मारूप पार्षदरूप ताहूते उत्तम जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनकी बलिहारी जाय भाव यहहै तब तेरो जनन मरण छूटैगो ४ ॥

इति चौबिसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ पच्चीसवां शब्द ॥

अवधू बोत तुराबलराता । नाचैबाजन बाजबराता १ मौरके माथेदूलहदीन्हो अकथाजोरिकहाता । मड़येकेचारनसमधीदीन्हो पुत्र बिवाहलमाता २ दुलहिनिलीपि चौकबैठाये निरभयपदपरभाता । भातहिं उलटि बरातहि खायो भली बनी कुशलाता ३ पाणिग्रहणभयेभवमण्डौ सुखमनिसुरतिसमाता । कहैकबीरसुनो हो सन्तो बूझो पण्डित ज्ञाता ४ ॥

अवधूबोततुराबलराता । नाचैबाजनबाजबराता १

हेजीवौ आपतौ अवधूरहेहौ कहे आपके वधूजोहै मायासोनहीं रही है परन्तु रौरे अब वह तत्त्वमेंराते हैं अथवा हेअवधूयहशरीर को राजाहै जीव सो अबयहतत्त्वमें राताहै कौनतत्त्वमें राताहै सो कहैहैं जहांबाजननाचै है बरातबाजै है सोइहां शरीरबाजनहै सो नाचैहैकहे जागृत अवस्थामें स्थूलस्वप्नअवस्थामें सूक्ष्मऔसुषुप्ति में कारण तुरियामें महाकारण येई नाचै हैं तिनको जब इकट्ठा कियो अर्थात् एकाग्र मन कियो उन मुनी मुद्रा आदिक साधन करिकै तब पच्चीसौ जेतत्त्वहैं तेईबरातहैं तेईबाजै हैं कहेतिनको जो संघट्टहोतोहै इन्द्रिनमें तिनते जो ध्वनि निकसै है तेई दशौ

अनहदकी ध्वनि सुनिपरती हैं तामेंप्रमाण ॥ उठतशब्दघनघोर शंखध्वनि अतिघना । तत्त्वोंकी झनकार बजतझीनीझना १ ॥

मौरके माथे दूलह दीन्हो अकथाजोरकहाता ।
मड़येकेचारन समधीदीन्हो पुत्रबिवाहलमाता २

नाभिमें चक्रहै तामें नागिनीको बासहै चक्रके द्वारमें मूड़दिये परीहै आत्मा नीचेहै सो वह आत्मा दूलहहै ताही की नागिनी मौरह्वैरही है सो जब पांचहजार कुम्भक कियो तबनागिनीजागी सो ऊपरको चढ़ी तबचक्रको द्वारखुलिगयो तबआत्मा तो दूलह है सो चढ़िकै मौरजो नागिनी है ताके माथेपर गैबगुफामें बैठयो जाइ औ बरातनमें जो नहीं कहिबेलायक झूँठीबात सो गारीमें कहै हैं इहां शरीरमें ब्रह्मह्वैजैबो अकथहै कहिबेलायक नहीं है सो कहै हैं कि हम ब्रह्मह्वैगये औ मड़येके चारनको नेग समधी देइहै इहां मड़येके चारनके नेगनमें समधीही दीन्हो है मायाको पिता जो मनहै सो एकसमधी है औमनके समधी साहब हैं काहेते कि यह जीव भगवद्वात्सल्यकोपात्रहै जब यहआत्मा बिषयनमें रह्यो है तब बेजाने कबहूँ कहतहू सुनतरह्यो जबते ब्रह्मांड मड़वामें गयो तबते कबीरजी यहकूट करै हैं कि मड़ये के चारन मेंसमधीको दैराख्योहै कहेसमधी जो साहब ताकोकहिबोसुनिबो मिटिगयो सो जानै तो यहहै कि हम मायाते छूटिगये पैनागिनी को जै बुन्दसुधा देइहै तै बर्ष वहां समाधिलागैहै सो नागिनीही वहां गहिराखै है सो पुत्र जो जीवहै सोमाता जोमाया है ज्योति रूप आदिशक्ति ताको बिवाहि लेयहै कहे वाहीके संगज्योति में लीनह्वैके वहां रहै है २ ॥

दुलहिनि लीपि चौक बैठाये निर्भय पद परभाता ।
भातहिंउलटिबरातहिखायो भलीबनीकुशलाता ३

चौकलीपिकै दुलिहिन बैठावैहैं यहां दुलहिन जोहैमाया जो जगतरूप करिकै नानारूपहै ताको लीपिकै एककरिडारयो कहे

एक ब्रह्महो मानत भयो ताके ऊपर चौकबैठायो कहे चौक देत भयो अर्थात् अंतष्करणावच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमातृ चैतन्य कहावैहै वृत्यवच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमाण चैतन्यकहावैहै विषयावच्छिन्न चैतन्य प्रमेय चैतन्य कहावैहै स्फूर्त्य व च्छिन्नचैतन्य फूल चैतन्य कहावै है सो ये चारों चैतन्यको चौकवैठायो कहे चौक पूरयोअर्थात् चारो चैतन्यको एक करिकै स्थिताकियो विवाह होतहोत भिनसार होइजायहै तब यहमन भयोकि हम निर्भय पदको पहुंचिगये प्रभातह्वैगयो मोहरात्री व्यतीतह्वैगई नागिनी को जोअमृत सरोवर में अमृतपिआवैहै सोईभातहै सो नागिनी जब अमृतपियो तब वहैभात बरात जो आगेवर्णन करिआये पांच तत्त्व पचीसप्रकृति ताकोखाइलियो अर्थात् कुछ सुधि नरहगई सो कबीरजी कहैहैं कि भली कुशलातबनीहै कि तबतो कुछसुधिहू रही अबकछू सुधिनहीं रहिगई ३ ॥

पाणिग्रहणभये भवमंड्यो सुषुमनि सुरति समाता ।
कहैं कबीरसुनो हो संतो बूझोपंडित ज्ञाता ४

वहांमंडवपरेपर पाणिग्रहणहोयहै इहांपाणिग्रहणभयेपर भव मंड्यो अर्थात् जबपाणिग्रहणमायाकोह्वै चुक्यो कहेनागिनीको जबसुधा पिआइचुक्यो तब जैमुहँ नागिनीको पानीदियो एक मुंहदियोतौमहीना भरेकी समाधिलगी औ दुइमुंहदियो तौ तीन महीनाकीसमाधिलगी औ चारिमुंहदियोतौछःमहीनाकी समाधि लगी औपांचमुंह दियोतौ वर्षदिनकी औछः मुंहदियो तौ तीन वर्षकी औ सातमुंहदियो तौ बारहवर्षकी समाधिलगी और जो हजारनवर्ष समाधि लगावाचाहै तौ और मुंहदेय सो जब नागिनीकोसुधापिआयो तब जैमुंहदियोतेतनेनदिन भरसुषुमनिसुरति समाता अर्थात् सुषुम्णामें जीवकी सुरति समाइहै पुनि जब समाधि उतरी तबफिर भवमंड्यो कहे संसारीभयो अर्थात् पुनि ब्रह्मांडमंड्यो कि शरीरकी सुधि भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे

संतो हेज्ञातापंडितौ तुम सुनौ तौ बूझौ तौवे कहांमुक्तिभये नहीं भये फेरि तौ संसारहीमें उलटि आवेहैं ४ ॥

इतिपचीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथछब्बीसवांशब्द ॥

कोइविरला दोस्तहमारा भाईरेवहुतका कहिये । गाठनभजन सवारै सोइ ज्योंराम रखै त्यों रहिये १ आसन पवन योग श्रुति संयम ज्योतिपपढ़िवैलाना । छौदर्शन पाखंड छानवेयेकल काहु न जाना २ आलम दुनी सकल फिरि आये कलि जीवहि नहिं आना । ताही करिकै जगत उठावै मनमें मननसमाना ३ कहै कबीर योगी औ जंगम फीकी उनकी आसा । रामैरामरटै ज्यों चातृक निश्चय भगति निवासा ४ ॥

कोइ विरला दोस्त हमारा भाईरे वहुतकाकहिये । गाठन भजनसवारैसोइ ज्योंरामरखै त्योंरहिये १

कबीरजीकहैहैं कि हेभाइउ जीवौ औरऔर वहुत मतवारे तौ वहुतजीव हैं तिनको कहा कहिये रामोपासकहमारो दोस्त जैसे हम गाठ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहेहैं ऐसे ऐसे वह गाठ भजन करिकै रामचन्द्र को देखै रहै औ जैसे हमको राम राखै है तैसेही रहै हैं ऐसे वहू रहै क्षणभरि न भूलै ऐसा कोई विरला है १ ॥

आसन पवन योगश्रुति संयमज्योतिषपढ़ि वैलाना । छौदर्शन पाखंड छानवे येकल काहु नजाना २

अववहुत मतवारे जे वहुतहैं तिनकोकहैहैं कोई आसन दृढ़ करैहै कोई पवनसाधैहै कोई योग करैहै कोई वेद पढ़ैहै कोई संयम करैहै कोई वृत करैहै कोई ज्योतिष पढ़ै है सो ये सब वैकलाइगये जो वैकल होइहै सो झूठको सांचजानै है औ सांच को झूठमानैहै सो छःदर्शन छानवे पाखंडवारे जेयेसवहैं एकल

कहे एक स्वामी सबके परमपुरुप श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो अथवा एकलकहे जौनेकरतेमें उपासनाकरोहौं सोकोई नहीं जानैहै २ ॥

आलमदुनीसकलफिरिआये कलिजीवहिनाहिं आना।
ताही करिकै जगत उठावै मन में मनन समाना ३

आलम कहे सबजीव दुनिया में फिरि आये गुरुवा लोगनके यहां याकल जौनेकरते मैं उपासना श्रीरामचन्द्रकी करौहौं सो आपने जियमें न आनतभये जाते संसारछूटिजाय साहब मिलैं जेनानामतआगेकहिआये ताहीकरिकैजगत्कोउठावैहै कि जगत् उठिजाय मरिहिजाइ सो यह जगत् तो मन रूपही है सो उनके मनमेंमनरूप जगत् न समान्यो अर्थात् उनकोमिथ्याकियो नकरिगयो अथवा धोखा ब्रह्म ताको मन कहे विचार उनके मनमें समाइ रह्योहै ताहीकरिकै जगत् को उठावैहै कि जगत न रहिजाइ सोऊ न उठ्यो ३ ॥

कहैकबीर योगी औ जंगम फीकी उनकी आसा।
रामैनाम रटै ज्यों चातक निश्चय भक्तिनिवासा ४

सो कबीरजी कहैहैं कि योगीजंगमनकी सबकीआशा फीकी है काहेते धोखा ब्रह्मकेज्ञानते संसार मिथ्या नहींहोइहै जीवनके ब्रह्महोवेकी आशा फीकीहै सो जोरामनाम निशिवासरलेबहै औ जैसे चातक एक स्वातीही की आशाकरै है तैसे परम पुरुपपर श्रीरामचन्द्रकीआशाकरैहै ताहीकेहृदयमेंउनकीभक्तिकोनिश्चय कै निवासहोइहै भक्तिरसरूपहै यातेइनकी आशासरिसहै अर्थात् सफलै है औ सोई संसारसागर ते उबरै है सो आगे रमैनी में कहिआये हैं ॥ कहैकबीर तेऊबरे जोनिशिवासर नामहिलेव ४ ॥

इति छब्बीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ सत्ताईसवां शब्द ॥

भाई अद्भुतरूप अनूपकथाहै कहौंतोको पतिआई । जहँजहँ देखों तहँतहँ सोई सबघटरह्यो समाई १ लछि बिनु सुख दरिद्र बिनु दुखहै नींद बिना सुखसोवै । जसबिनु ज्योति रूप बिनु आशिक रतन बिहूनारोवै २ भ्रम बिनुज्ञान मनैबिनु निरखे रूप बिना बहुरूपा । थितिबिनुसुरति रहस बिनु आनँद ऐसो चरित अनूपा ३ कहै कबीर जगतबिनु माणिक देखोचित अनुमानी । परिहरि लाभै लोभकुटुंबसब भजहु न शारँग पानी ४ ॥

भाई अद्भुत रूपअनूप कथाहै कहौंतोकोपतिआई । जहँजहँ देखों तहँ तहँ सोई सबघटरह्यो समाई १

जातिकरिकै सबजीव एकहीहै तातेजीवनको भाईकह्यो कि हे भाईजीवो वेजेहैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको अद्भुतरूपहै अरु वहिरूपकीअनूपकथाहै सोमैं जोवाकोदृष्टान्तदैकै समुझाऊँहौंकि वाकोरंग दूर्वादलकीनाईं है अरसी कुसुमकीनाईं नील कमलकी नाईं तौ येईसबमेंभेदपरै एकएककीतरह नहीं है वहतोमनबचन के परेहै ऐसेनामरूप लीलाधामसबहै वाकोतौकैसेसमुझाऊँकाहे ते जो मैं वाको समुझाइकै कहौं तौ कैसेकहौं औजोकहबऊकरौं तौ कोई पतिआय कैसे सोयहितरहको जो याको रूपहै सो जहां जहां देखोहौं तहां तहां वहैरूप देखायहै काहेते कि सबघटमें स- मायरह्योहै यहांसबघटमें समान्यो जो कह्यो ताते चितहूअचितहू में समाइरह्यो है यह आयो जोव्यंगपदार्थ है जीवब्रह्ममायाकाल कर्म स्वभाव ताहीको सबदेखै है औ जो व्यापक पदार्थ है ताको कोई नहीं देखै है जोचितहू अचितमें जोकहो वही धोखाब्रह्मको तुमहूँ कहतेहौ जो सर्वत्रफैलिरह्योहै तौवाको कोई नहीं कहते हैं काहेते कि अद्वैत वादीकहै हैं कि सब पदार्थ वही ब्रह्महो है वाते भिन्न दूसरोपदार्थ नहीं है औहमकहै हैं कि सबपदार्थ चितअचित रूपते व्याप्यहै औ हमारो साहब सर्वत्र व्यापक है सो जाको

विश्वासहोइ ताको वे साहब साकेतनिवासी परमपुरुषश्रीराम-
चन्द्र सहजहीप्रकटह्वैजायहैं सो जो मैं कहौंहौं ताको नहीं प्रतीत
करै हैं जितजो है जीव औ ब्रह्म ताहूमें श्रीरामचन्द्र व्यापक हैं
तामें प्रमाण ओंयोवैश्रीरामचन्द्रस्यभगवान्द्वैतपरमानन्दात्मायः
परम्ब्रह्मेतिरामतापिन्याम् ॥ जीवहूमें व्यापकहैं तामें प्रमाण ॥
यआत्मनितिष्ठन्यमात्मानं वेदयस्यात्माशरीरमिति ॥ मायादिक
सब में व्यापक हैं तामें प्रमाण ॥ यस्यभासासर्वमिदंविभाती-
तिश्रुतिः १ ॥

लछिबिनुसुखदरिद्रबिनुदुखहै नींदबिनासुखसोवै ।
जसबिनुज्योतिरूपबिनुआशिक रतनबिहूनारोवै २

कैसो साहब सर्वत्रपूर्ण है सो बतावैहैं लछिबिनु सुखकहै जो
पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं होइहै तामें सुख नहीं होइहै देखो तो नहीं
परै है साहबपै जो कोई स्मरणकरै है सर्वत्र ताको सुखहोय है
साहबको कौनौ बातको दरिद्र नहीं है जो चाहै सो करिडारै स-
मर्थ हैं परन्तु नानाजीवनको अज्ञानमेंपरेदेखिकै साहिबौकोयही
दुःखहै कि मेरे अंश जीव मायामें परिकै नरक स्वर्ग जाय हैं
काहेते यहदुःखहै कि साहब अतिदयालुहैं तामेंप्रमाण ॥ तावत्ति-
ष्ठन्तिदुःखीवयावद्दुःखन्ननाशयेत्। सुखीकृत्यपराभक्तान्स्वयम्प-
श्चात्सुखीभवेत् इति ॥ ध्वनि यहहै कि साहब दयालुहैं ते स-
र्वत्र पूर्ण हैं यह बिचारिकै कि जीव मोको जहैं स्मरणकरै मैंतहैं
उबारिलेउँ फिरि कैसो साहबहै कि मोह निद्रा नहीं है सदाजगे
है अपने भक्तनकी रक्षाकरिबेको ऐसेहूसाहबके सन्मुख जोजीव
नहीं होइहैं तिनकी ओर सदा सुखमय साहब सोवै है अर्थात्
कबहूँ नहीं देखैहै फिरकैसोसाहबहै जाकीज्योति जोब्रह्महै अर्थात्
जाको लोकप्रकाश जो है ब्रह्म सो बिनाकौनौ कथै है वा कौनौ
लीलेकियोअकथहै ऐसेसाहबकेबिनारूपमें आशिकभयेसाहबको
ज्ञानरत्न बिहीना जीव संसारमें जननमरण पाइपाइ रोवै है २ ॥

भ्रम विनु ज्ञानमनै विनु निरखै रूप बिनाबहुरूपा ।
थितिविनुसुरतिरहसविनुआनँद ऐसोचरितअनूपा ३
कहै कबीर जगतबिनुमाणिक देखौचितअनुमानी ।
परिहरिलाभै लोभ कुटुँबसब भजहुनशारँगपानी ४

फिर कैसोहै साहब भ्रमविनाहै अर्थात् कबहूँ माया सबलित ह्वैके जगत्मेंही उत्पत्तिकियो सदाज्ञानगुणसदाज्ञानस्वरूपहैतौने साहबकोमानै बिननिरखेकहे मनबिनाह्वैकै हंसस्वरूपपाइकै तैं देखै कैसेहैं साहब कि चितअचित जेरूपहैं तेहिबिनाहैं अर्थात् ये स्पर्श नहीं करिसकै हैं औचितअचितकेशरीरिह्वैबहुतरूपौ हैं सब उन्हींके रूपहैं फिरि कैसे हैं जबसाहब सुरतिदीनहै तबजीवनकी स्थितिभई है औ सुरति नहीं है साहबकी स्थितिवालोकमें बनी है औ आनन्द जो मनवचनमें आवै है सोनहींहै वहां आनन्दबनो है ऐसे साहब के अनूप चरितहैं अर्थात् जोरहस कहिआये सोऊ मनवचनकेपरेहै ३ सोकबीरजीकहैहैं कि जो चित्तमें अनुमानकरि देखौ तौ यावत् उपासना औ ज्ञान तुमकरोहौ जगत्मुक्तिरूप माणिक काहूते न मिलैगी ऐसी मुक्तिके लाभको लोभ त्यागिकै औ सब कुटुम्बजे गुरुवालोग तिनको त्यागिकै शारँगपानी कहे धनुषकोलीन्हे साहब तिनको काहेनहीं भजौहौ अर्थात्भजौ ४ ॥

इति सत्ताईसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ अट्ठाईसवां शब्द ॥

भाईरेगैयाएकबिरंचिदियोहैभारअभरभोभाई । नौनारीकोपानिपियतिहै तृषा तऊ न वुताई १ कोठाबहत्तरिऔलौलाये बज्र केवांरलगाई । खुँटागाड़िडोरीदृढ़बांधो तेहिवोतोरिपराई २ चारि वृक्षछौशाखावाके पत्रअठारहभाई । एतिकलैगैयागमकीन्होगैया अतिहरहाई ३ईसातौअवरणहैंसातौनौऔ चौदहभाई । एतिकगैये खाइबढ़ायो गैयातौ न अघाई ४ खूँटामेरातीहै गैया श्वेतसींगहैं

भाई। अवरण वरण कछू नहिं वाके भक्ष अभक्षो खाई ५ ब्रह्मा विष्णु खोज कै आये शिवसनकादिक भाई। सिद्ध अनंत वाहि खोज परे हैं गैया किनहुँ न पाई ६ कहै कबीर सुनोहो संतो जो यापद अरथाई। जो यापदको गाइ बिचरिहै आगे ह्वै तरिजाई ७॥

भाई रे गैया एकविरञ्चि दियोहै भार अभरभोभाई।
नौ नारीको पानि पियति है तृषा तऊ न बुताई १

हे भाई जीवौ एकबाणीरूप गैया तुमहीं सबको बिरंचिजे ब्रह्मा हैं ते दियो है सो गैयाको जो तात्पर्यदूधहै ताकोतुम न पायो गैया को भारा अभरह्वै गयो तुम्हारो सँभारो न सँभारि गयो अर्थात्जो जो बाणीमें विधिनिषेधलिखैहै सोतुम्हारो कियो एकौ नहीं ह्वैसकै है सो ये मायिकविधि निषेधतो तुम्हारेकिये ह्वै नहींसकैहै वाणीजो तात्पर्य वृत्तिते बतावैहै सो तो अमायिकहै कैसे जानौगे वह गैया कैसीहै सो बतावैहैं नौ कहे नवो जे व्याकरणहैं तिनकी जो नारी कहे राहहै तिनकर जो शब्दरूपी जलहै ताको पियै है अर्थात् वोहीके पेटते वेदशास्त्र सब निकसैहैं औ वहीके पेटमेंहैं ते शास्त्र वेद वोही नवो व्याकरण के शब्दरूपी जलते शोधे जायहैं अर्थात् वहीबाणी में जल समाइहै परन्त तृषा तबहूं नहीं बुझाइहै कहे वोही नवौव्याकरण करिकै शोधै है शास्त्रार्थ करतही जायहै बोध नहीं होइहै कि शुद्धह्वै गयो पुनि प्रणीतन में आर्ष कहिदेयहै १॥

कोठा बहत्तरि औ लौलाये बज्रकेवार लगाई।
खूंटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो तेहिवो तोरिपराई २

पतंजलि शास्त्रवाले वही गायत्री गैयाको बांधन चह्यो बहत्तरिउ कोठाते लौ लगाइकै कहे श्वास खैंचिकै खेचरी मुद्राकरिघेटी टीके ऊपर वज्र कपाट जो लग्योहै ताको जीभते टारयो तब वहां अमृत श्रवो तब नागिनी उठी श्वासाके साथ ऊपरको चढ़ी ताके साथ आत्मौ खूंटा जो ब्रह्मांडहै ब्रह्मज्योति तहां पहुँच्यो जाइ सो ज्योतिरूप ब्रह्मखूंटाहै तामें प्रणागिनी जो गैया है ताको बांध्यो

तेहिवो तोरि पराई कहे जब समाधि उतरी तब फिरि जस को तस संसारी है गयो नागिनी शक्ति उतरि आई पुनि जीवनको संसार में डारि दियो २ ॥

चारि वृक्ष छौ शाखा वाके पत्र अठारहभाई।
एतिकलै गैया गमकीन्हो गैया तउ न अघाई ३

पतंजलि शास्त्र में योगक्रियाहै सो कायाते होयहै ताते अलग कह्यो अब सब मेटि कै कहैहैं चारि वेदजेहैं तेई वृक्ष हैं औ छइउ शास्त्र जेहैं तेई शाखाहैं अठारहौ पुराण पत्र हैं सो एकलैकहे यहां लगे गैयागमनकै जातभई कहे प्रवेश कै जातभई सो गैया बड़ी हरहाईहै अर्थात् जहां जहां आरोप कियो तौन तौन वह खाय लियो अर्थात् जौन जौन आरोप कियोहै तौन वाके पेटते बाहर नहीं है भीतरही है ३ ॥

ई सातौ अवरणहैं सातौ नौ औ चौदह भाई।
एतिकगैया खायबढ़ायो गैयातउ न अघाई ४

ई सातौ जे कहिआये छःचक्र औ सातौ सहस्रार जहां ब्रह्म ज्योतिमें जीवको मिलावैहै अरुसातौ आवरण जेहैं पृथ्वी अपतेज वायु आकाश अहंकार महत्तत्त्व अथवा सातौ बार काल अरु नौ खंडजेहैं अरु चौदहौ भुवन जेहैं सोई सबनको गैया खाइकै बढ़ाइ डारयो तऊ न अघात भई अर्थात् सबबाणीमय ठहरे ४ ॥

खूंटामें राती है गैया श्वेत सींगहैं भाई।
अवरण बरण कछू नहिं वाके भक्षअभक्षौ खाई ५
ब्रह्माविष्णुखोज कै आये शिव सनकादिक भाई।
सिद्ध अनन्त वहिखोज परेहैं गैया किनहुँ न पाई ६

सोवह गैया खूंटा जो धोखा ब्रह्महै तामें रातीहै अर्थात् ब्रह्म मायासवलितहै अरु वहि गैया के सींगश्वेत हैं कहे सतोगुणी हैं सोई ब्रह्म में बांधिराहै औ अवरण कहे असत औबरणकहे सत ई

वाके कोई नहीं हैं अर्थात् सत् असत्ते विलक्षणहै अथवा अवरण कहे नहीं है वरणजाके ऐसो निरक्षर ब्रह्मनाम रूपादिक नहीं है जाके औ वरणकहे अक्षर ब्रह्म जीव ई दोनों नहीं हैं वाके अर्थात् ईदोनों तेविलक्षणहै औ भक्ष अभक्षौ खाइहै कहे जो कर्म करावन लायक है सोकरावै है औ जो कर्म करावनलायक नहीं है सोऊ करावै है अर्थात् विद्या रूपते शुभकर्म औ अविद्यारूपते अशुभकर्म करावैहै सो वाको शिवसनकादिक ब्रह्मा विष्णु महेश अनंत सिद्ध खोजमरे पै गैया कोउन खोजें पायो कि सत्है कि असत्है तात्पर्यऊ न जाने ६ ॥

कहै कबीर सुनोहो संतौ जो यापद अरथाई ।
जोयापद को गाइबिचरिहै आगे ह्वै तरि जाई ७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेसंतो सुनौ जोयह पदकोअर्थ है कहे अर्थ विचरिहै औ जौन पद हम वर्णन करिआये सब ब्रह्माण्ड सप्तावरण आदिदैकै जेपदहैं कहे स्थान तिनको जो कोई गाइक है मायाको रूपही बिचारैगो कि यहां भरतो मायाही है सोमाया के आगे ह्वै कै साहबको लोक विचारैगो सोई तरैगो ७॥

इति अट्ठाईसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथउन्तीसवांशब्द ॥

भाईरेनयन रसिकजोजागै । परब्रह्म अविगत अविनाशी कैसे हुकैमनलागै १ अमलीलोग खुमारीतृष्णा कतहुंसँतोप न पावै । कामक्रोध दोनों मतवाले माया भरिभरिप्यावै २ ब्रह्मकलारच-ढाइनिभाठी लैइंद्रीरसचाखै । सँगहिपोचहै ज्ञानपुकारै चतुरहो-इसोनाखै ३ संकटशोच पोचयाकालिमों बहुतकव्याधि शरीरा । जहँधीर गँभीर अतिनिर्मल तहँउठि मिलहुकबीरा ४ ॥

यहां मायाकेपरे जे साहवहैं तिनको वतावैहैं ॥

भाईरेनयनरसिकजोजागै ।

परब्रह्म अविगतअविनाशी कैसेकै मनलागै १

हेभाइउ नयन रसिकजोहै संसारी चर्म चक्षुते भिन्नभिन्नदेखि विषयरस लेनवारो सो जो जागै कहे मुमुक्षूहोइ तौ ब्रह्मके पार औ अविगत कहे विगत नहीं सर्वत्र पूर्ण औ अविनाशी कहे जाकोनाश कबहूं नहीं होइहै ऐसे जे परमपर पुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें कैसेकै मनलागै जो कैसेहुकै पाठहोय तौ यह अर्थ है जो कैसेहुकै मन लगवो करै तौ बीचमें बहुत अवरोधहैं १ ॥

अमली लोग खुमारीतृष्णा कतहुँसँतोषनपावै।
कामक्रोध दोनोंमतवाले माया भरिभरिप्यावै २

सबलोग अमलीहैं विषय छांड़यो पै तृष्णाकी खुमारी लगी है अरु कहूं संतोषको नहीं पावैहै फिरि काम मत जो कोकशास्त्रादिक क्रोधमत जो मुद्राराक्षसादि ग्रन्थनमें प्रतिपाद्य जेमतहैं तेई प्यालाहैं तिनको कामक्रोध रूप जो मद सो माया भरिभरि उनको पियावैहै २ ॥

ब्रह्मकलार चढ़ाइनि भाठी लैइन्द्री रसचाखै।
सँगहिपोचहोइज्ञानपुकारै चतुर होइसोनाखै ३

प्रथम तो काम क्रोधादिकनते जागन नहीं पावैहै जो कदाचित् जाग्यो तौ ब्रह्म जो कलारहै जे अहंब्रह्म बुद्धि करैहैं गुरुवा लोग ते भाठी चढ़ाइन ज्ञान सिखवैलगे कि तुहीं ब्रह्महै ताहीमें इन्द्रिनको लैकरिकै अहंब्रह्मास्मिको रसचाखन लग्यो अर्थात् ब्रह्मानंदको अनुभव करनलग्यो जो मदपियैहै ताको ज्ञान भूलि जाय है यहै कहैहै कि महीं मालिकहौं सो जो गुरुवालोगन को संगकियो ब्रह्मानंद पानकियो सो मैं साहबकोहौं यहअक्ष भूलि गई वही गुरुवा लोगनको ज्ञानदियो पुकारन लग्यो कि महीं ब्रह्महौं जो चतुराहोय सो विघ्ननको नाकि जाइहै ३ ॥

संकटशोचपोचयाकलिमों बहुतकव्याधिशरीरा।

जहँबाँधीरगँभीरअति निर्मलतहँउठिमिलहुकबीरा ४

पोचकहे अज्ञानी जेजीवहैं तिनको यहि कलिमें कहे माया ब्रह्मके झगड़ामें बहुतसंकट शोच औ व्याधिशरीर कोहै सोजहां अति धीरहै कहे चलायमाननहींहै निश्चलपद है औ गंभीर कहे गहिरहै औ निर्मल कहे मायाब्रह्मकोलेश नहींहै सोहेकबीर कायाके वीरजीवो मायाब्रह्मके तुम परे हौ तहांते उठिकै कहे माया ब्रह्मके विघ्ननते निकसिकै साहबको मिलौतबहीं तिहारो जनन मरण छूटैगो ४॥

इतिउन्तीसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथतीसवांशब्द॥

भाईरे दुइजगदीश कहांतेआये कहुकौने भरमाया। अल्ला रामकरीमकेशव हरि हजरतनाम धराया १ गहना एककनक तेगहना तामें भावनदूजा। कहनसुननको दुइकरिथापे यकनेवा-जयकपूजा २ वहीमहादेव वहीमहम्मद ब्रह्मा आदम कहिये। कोइहिंदूकोइ तुरुककहावै एकजिमींपररहिये ३ वेदकिताबपढ़ैं वेकुतुबा वेमोलनावेपांड़े। बिगतविगतकै नामधरायो यकमाटी केभांड़े ४ कहैकबीरवे दूनौंभूले रामहिं किनहुंनपाया। वेखसि-यावेगायकटावैं बादैजन्म गँवाया ५॥

अबयहां यहवर्णन करैहैं कि दूसरो जगदीश नहींहै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तेई जगदीशहैं॥

भाईरेदुइ जगदीश कहांते आये कहुकौने भरमाया। अल्लाराम करीमकेशव हरिहजरत नाम धराया १ गहना एक कनकते गहना तामें भाव न दूजा। कहन सुननको दुइकरिथापे यकनेवाज यकपूजा २

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेभाइउ दुइजगदीश कहांते आये तो-

को कौने भरमायो है अल्लाराम करीमकेशव हरिहजरत ये तौ सब नाम भेद हैं कहत तो एकही कोहैं १ जैसे एक गहना को सुवर्णते गहना कहे गहिलेइ कहे सुवर्ण विचारिलेइ तामें भाव दूजानहींहै वह सुवर्णहै जैसे कोई चूड़ा कोई बिजायठ इत्यादिकनाम कहेहैं परन्तुहैसुवर्णही तैसे कहिबे सुनिबे को दुइकरि थाप्योहै यकनेवाज यकपूजा परन्तुहै सब साहबकी बंदगीही परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहीको सेवै हैं २॥

वहीमहादेव वहीमहम्मद ब्रह्माआदमकहिये।
कोइहिंदूकोइतुरुककहावै एकजिमींपररहिये ३

वोही परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रको महादेव औ महम्मद औ ब्रह्मा औ आदम सबकहिये कहे कहतभये कोई रामकहिकै कोई अल्लाह कहिकै कुरानमें लिखै है कि सबनामनमें अल्लाहनाम ऊपरहै औ यहां वेदपुराण में लिखैहै कि सब नामनमें रामनामऊपरहै तामेंप्रमाण॥ सर्वेषामपिमन्त्राणांराममंत्रंफलाधिकम्इति। सहस्रनामतातुल्यंरामनामवरानने॥ याते सब के मालिक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीजगदीशहैं दूसरो जगदीशनहीं है उनहींके अल्लाहनामको सब नामनतेपरे महम्मद कुरान में लिख्योहै औउनहींनामको महादेवने तन्त्रमें लिख्योहै औब्रह्मा वेदमें कहतभये आदम कितावमें कहतभये अरु इहांतो एक जे परमपुरुषश्रीरामचन्द्रहैं तिनहींके जिमींमें कहे जगत् में रहत भये नामके भेदते कोई हिन्दू कोई मुसल्मान कहावैहै ३॥

वेद किताव पढ़ैं वेकुतुवा वे मोलना वे पांड़े।
विगत विगतकै नामधरायो यकमाटीकेभांड़े ४

जिनके पोथी जमा होयहैं ते कहावें कुतुबावे वेदपुराण जमा कैकै पढ़ैहैं वे किताव जमाकैकै पढ़ैहैं वे पण्डित कहावैहैंवेमोलना कहावैहैं वेद पढ़िकै पंडित किताव पढ़िकै मोलना कहावैं विगत

विगत कहे जुदा जुदा नाम धरायलेतेभये हैं एकई माटीकेभांड़े कहैहैं सब पंचभौतिकहीहैं ४ ॥

कहकबीर वे दूनों भूले रामहिं किनहुं न पाया ।
वेखसिया वेगायकटावैं बादैजन्म गँवाया ५

श्रीकबीरजीकहैहैं कि हिंदूतो बोकरामारिके मुसलमानगाय मारिके नानाप्रकारके वादविवादकरिके अथवा बादै कहे वृथाही दोऊभूलिके जन्मगँवाइदियो परमपुरुष परजे श्रीरामचन्द्र तिनको न पावतभये हिन्द तुरुकके खुदखाविंद एकई है कोई बिरले जानैहैं ते वहां पहुँचैहैं तामेंप्रमाण ॥ छोड़ि नासूतमलकूत जवरूत लाहूत हाहूत बाजी । और साहूत राहूत इहांडारि दकूदिआहूत जाहूतजाजी ॥ जायजाहूतमें खुदखाविंद जहँवही मकानसाकेत साजी । कहै कब्बीरह्वां भिस्त दोजख थकेवेद कीताबकाहूत काजी ५ ॥

इतितीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथइकतीसवांशब्द ॥

हंसासंशय छूरी कुहिया । गैयापियैबछरुवै दुहिया १ घरघर सावजखेलैअहेरा पारथ वोटालेई । पानीमाहिं तलफिगैभूभुरि धूरि हिलोरादेई २ धरती बरसै बादलभीगै भीटभया पैराऊ । हंसउड़ाने तालसुखाने चहलेबीधापाऊ ३ जौलगिकरडोलैपग चलई तौलागि आशनकीजै । कह कबीर जेहि चलत न दीखै तासुबचन का लीजै ४ ॥

हंसासंशयछूरीकुहिया । गैयापियैबछरुवैदुहिया १
घरघर सावज खेलैअहेरा पारथ वोटालेई ।
पानीमाहिंतलफिगै भूभुरि धूरिहिलोरादेई २

कबीरजी कहैहैं कि हेहंसा संशयरूप छूरीते मारिगयो तोको उलटो ज्ञानह्वैगयो बछरुवा जोहै तैसो तेरोस्वरूप ज्ञानरूप जो

दूध ताको गैया जो माया सो दुहिकैपीलियो १ सावज जो या मनहै सोघरघरमें कहे शरीर शरीरमें शिकारखेलैहै पारथ कहे शिकारी जो तैंसोबोटालेइहै अर्थात् नानाउपासना नानाज्ञान करत फिरै है पैमन ताको नहीं छोड़ै है साउज ते नहीं बचै है वाणीरूप जोहैपानी नानाशास्त्र तौनेमें भूभुरिजो सूर्यनकेतापते तपितभूमिहोयहै सो भूभुरिकहावैहै ऐसेसंसारतापते तपितजो तेराअंतष्करणसोतलाफिगयोअर्थात् अधिक अधिकशंकाहोतभई तिनते अधिकतप्तभयो शीतलनभयो काहेते कि धूरि जो सूखा ब्रह्मज्ञान सो हिलोरा देनलग्योकहे शास्त्रनमेंवही धोखा ब्रह्महो देखपरनलग्यो शास्त्रनकोतात्पर्य जे साहबतिनको नजान्यो२ ॥

धरती बरसै बादल भीजै भीटभया पैराऊ ।
हंसउड़ाने ताल सुखाने चहले बीधापाऊ ३

बुद्धिजोहै सोधरतीहै काहेते सब मतनकोआधार यहीहै बाणीरूप पानीवरसैहै कहे नानामतनको निश्चयकैकै प्रकटकरैहै अरु यह वाणी जीवही तेप्रथम निकसीहै सोजीव बादलहै सो भीजैकहे वोई मतनको ग्रहणकियो यहलोकोक्तिहै कि फलाने फलानेमें भीजिरहेहैं कहे आसक्तह्वैरहेहैं भीट चारयोवेदहैंमर्यादा ते पैराउ ह्वैगये कहे उनकीथाह कोईनपावतभयो अर्थात्तात्पर्यकरिकै जोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रको बर्णनकरैहै सो कोई न पावतभयो तालसूखे हंसउड़ैहै यहांहंसउड़े तालसूखेहैं जब हंस उड़ोकहे यहजीवनिकसिगयो तब तालजोशरीरहै सोसूखिगयो तब वासनाजेहैं तेईचहलाहैं तिनमें पांउ बँधिरह्यो जैसे तलाउ जबसूखेउ औपुनिचौमासेमें जबजलबरस्यो तबजसकोतसह्वैगयो तैसे वासनामें पांउ फँसिरह्योहै दूसरशरीर जबपायो तब फिर वही शरीरमें तलाउमें हंसजीव बूड़न उतरानलग्योहै सो भाव यहकि उड़नकोतोकरैहै शरीर तालते अंतैनहींजाइसकैहै कोई योनिमेंरहै ३ ॥

जौलगि करडोलै पगचलई तौलगि आशनकीजै ।
कहकबीर जेहिचलत न दीखै तासुबचन कालीजै ४

जबलगपाँउ चलैहै करडोलैहै कहे शरीरबनोहै तबलगि गुरुवालोगन की आश न करिये जो आशकरैगो तो याहीभांति बँधि रहैगो सो कबीरजी कहै हैं जे गुरुवालोग नानापदार्थनमें आश लगाइदेइहैं तिनहींते नहींचलत बनैहै तौ तिनकोकह्यो वचन कैसे लीजिये कहेकैसे मानिये अर्थात् उनकेयहां न जाइये काहेते कि वे साहबको भुलाइकै औरेमें लगाइदेइंगे संसारही में फँसो रहैगो यामें धुनियहहै कि जे संसारतेछूटेहैं रामोपासकहैं तिनहीं को बचन मानिये तिनहींके यहां जाइये ४ ॥

इति इकतीसवां शब्द समाप्तम् ॥

अथ बत्तीसवां शब्द ॥

हंसाहो चित चेतु सवेरा । इन्हपरपंच करल बहुतेरा १ पाखंड रूप रच्यो इन्हतिरगुण यहिपाखंडभूल संसारा । घरकोखसमबधिक भोराजा परजाकाधौं करै विचारा २ भक्ति न जानैभक्त कहावै तजि अमृतविष कैलियसारा । आगेबड़े ऐसही भूले तिनहुंन मानलकहा हमारा ३ कहल हमारागांठी बांधो निशिवासर हिहोहुहुशियारा । येकलिके गुरु बडपरपंचीडारि ठगोरी सबजग मारा ४ वेदकिताब दोय फंदपसारा तेफंदेपर आपबिचारा । कह कबीरते हंस न बिछुड़े जेहिमें मिल्यो छोड़ावनहारा ५ ॥

हंसाहो चितचेतु सबेरा । इन्ह परपंच करल बहुतेरा १
पाखंडरूपरच्योइन्हतिरगुण तेहिपाखंडभूल संसारा ।
घरको खसम बधिकभोराजापरजाकाधौंकरैबिचारा २

हे हंसा जीवौ सबेरेते कहे तबहींते चित्तमेंचेतकरौ सबेरेते कह्यो ताको भावयहहै कि जब काल नियराइ आवैगो तब कछू

न करत बनैगो तिहारे फांसिबेको यहमाया बहुत परपंच कियो है १ पहिले पाखंडरूप जो वह धोखाब्रह्म है ताको रच्यो तामें मिलिकै तिरगुण जेसतरजतमहैं तिनको तिहारेफांसिबेको प्रकट कियो सो तीनोंगुणाभिमानी जे तीनोंदेवताहैं अरु पाखंडरूप जो धोखाब्रह्म है तामें सब भूलिगये घरको खसम जब स्त्रीको बधिक कहे दुःखदेन लाग्यो मारनलाग्यो तबस्त्री कहाकरै तैसे जो राजा प्रजाको बधिक कहे मारनलाग्यो दुःखदेनलाग्यो तब बिचारेप्रजा कहा करैं सो यह मनतो सबको मालिक ह्वै रह्योहै सो यही जो सबकोदुःख देनलाग्यो तौ जीव कहाकरै २ ॥

भक्ति न जानै भक्तकहावैतजिअमृत बिषकैलियसारा। आगेबड़े ऐसेही भूले तिनहुं न मानल कहाहमारा ३

भक्तिकोतो जानै नहींहैं भक्त कहावैहैं अमृत जो है परमपर पुरुष श्रीरामचंद्रकी भक्ति ताको छोडिकै बिषजो है और और की भक्ति ताको सारमानिलियो है सो आगे जे बड़ेबड़े ह्वैगये हैं तेऊ ऐसेही भूलिगये हमारो कह्यो नहीं मान्यो साहबकी भक्ति छोड़िकै और औरकी भक्ति करिके संसारही में परतभये ३ ॥

कहलहमारागांठीबांधोनिशिबासरहिहोहुशियारा। येकलिकेगुरुबड़परपंची डारिठगौरीसबजगमारा ४

सो हमारो कहो गांठीबांधो जो अबहूंहमारो कह्यो न मानौगे साहबकी भक्ति न करौगे तौ संसारहीमें परौगे कलियुगके जेगुरुवाहैं ते बड़े परपंचीहैं सब जगका ठगौरी कहे ठगिकै परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी भक्तिको छोड़ाइकै और और मतनमें डारिदेइहैं सो निशिबासर हुशियाररहो अर्थात् निशिबासर रामनामको स्मरण करतरहो साहबको जानतरहो गुरुवालोगन को कहा न मानो ४ ॥

वेदकिताब दोयफंदपसारा तेफंदेपर आपबिचारा।

कहकबीरतेहंसनबिछुरे जेहिमेंमिलोछोड़ावनहारा ५

वोई जे गुरुवालोगहैं ते आइ ये वेदकिताब को फंदा पसारि कैनानामत में करतभये सो वहीफंदमें आपपरतभये औ औरहू को वही फंदमें डारिकै नानामतमें लगायदेतेभये वेदकिताबको तात्पर्य्य न जानतभये सो कबीरजी कहैहैं कि जौने जीवको सैं फंदते छोड़ावनहार मिल्योहौं औ परमपुरुष में लगाइदियो ते आजलौंनहीं बिछुरे न बिछुरैंगे सोतुमहू पारिख करिकै मेरोकहो मानिकै हेहंसजीवौ तुमहू फंद छोड़ि परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें लगौ ५॥ इतिबत्तीसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ तेंतीसवांशब्द ॥

हंसाप्यारे सरवरतेजेजाय । जेहिसरवर बिच मोतिया चुनते बहुबिधि केलिकराय १ सुखेताल पुरइनि जलछोड़े कमलगयो कुंभिलाइ । कहकबीर जोअबकी बिछुरै बहुरिमिलै कबआइ २॥

हंसाप्यारेसरवरतेजेजाय ।
जेहिसरवर बिच मोतियाचुनतेबहुबिधिकेलिकराय १
सुखेताल पुरइनि जलछोड़े कमलगयोकुंभिलाइ ।
कहकबीरजो अबकी बिछुरैबहुरिमिलैकबआइ २

हेप्यारे हंस सरवर जोशरीरहै ताते जेजाय कहे जिनकेशरीर छूटिजाइहैं जौने सरवर शरीरको प्राप्तहोइकै मोतिया चुनैहैंकहे ज्ञानयोगादिक साधन करिकै मुक्तिकी चाहकरैहैं औ बहुविधिकी केलिकरैहैं जो त्याजे पाठहोय तौ या अर्थहै हे हंसाजीव प्यारो जो सरवर शरीर ताको त्यागे जायहै जौन सरवर शरीरमें नाना देवतनकी उपासनारूप मोतीचुने नानाविषयनको भोग कीन्हे सो छोड़ेजायहै १ सोशरीररूपीताल जबसूख्यो कहे रोगकरिकै ग्रस्तभयो तबपुरइनि जलछोड़िदियो अर्थात् वहज्ञानबुद्धि तुम्हारे

न रहिगयो अरु अनुभव जोतुमकरतरह्यो सोईकमलहै सोकुंभिलाइगयो अर्थात् भूलिगयो सो कबीरजी कहैहैं कि यहि तरहते जो अबकी बिछुरे कहेशरीर छूटिजाय तबपुनिकबै ऐसो शरीर पावैगो चौरासीलाख योनि भटकैगो तब फेरि कबहूं जैसे तैसे मिलैगो शरीरछूटे ज्ञान योगादिक साधन भूलिजायहैं तेहि ते मानुपशरीर पायकै साहबको जानै वह शरीरहू छूटे नहींभूलैहै काहेते कि साहबही आपनो ज्ञानदेइहै औ हंसस्वरूप देइहै २॥

इतितेंतीसवां शब्दसमाप्तम्॥

अथचौंतीसवां शब्द॥

हरिजन हंसदशा लियेडोलैं। निर्मल नामचुनीचुनि बोलैं १ मुक्ताहललिये चोंचलोभावै। मौनरहै की हरिगुणगावै २ मान सरोवर तटकेबासी। रामचरणचित अन्त उदासी ३ कागकुबुद्धि निकट नाहिंआवै। प्रतिदिन हंसादर्शन पावै ४ नीर क्षीरको करै निवेरा। कहैकबीर सोई जनमेरा ५॥

जे साहबको नहीं जानैहैं तिनको कहिआये अब जे साहबको जानैहैं तिनकी दशाकहैहैं॥

हरिजनहंसदशालियेडोलैं।निर्मलनामचुनीचुनिबोलैं १

हरिजे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रहैं तिनके जेजनहैं ते हंसदशा जोहै शुद्धजीव पार्षदरूपता तौनीदशाके लिये सर्बत्रडोलैहैं कहे फिरैहैं यहांहरि जोकह्यो ताकोहेतु यहहै कि अपने भक्तनकी सिगरीबाधाहरै सोहरि कहावैहै सो परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र उनकी सिगरी बाधा हरिलेइहैं तब तिनके जन सुखपूर्वकसंसारमें फिरैहैंउनको संसार स्पर्श नहीं करैहै अरु जोनाम माया सबलितहै तिनको छोड़िदेइहै औ निर्मल जो नामराम नामहै मन वचनकेपरे अमायिक ताको चुनिचुनि कहे साहबमुखअर्थ ग्रहणकरिके औ संसारमुख अर्थ छोड़िके बोलैहै कहे रामनाम

उच्चारण करै है यहां मनबचन के परे जोनामहै ताको कैसेबोलै है ऐसो जोकहो तो ये हंसदशालियेडोलैहै कहेजब शुद्धजीवरहिजाय है तब साहब अपनी इन्द्री देइहै तिनते तौने नामको बोलै है जैसे सूमा जरि जाय है तब वाकी ऐंठनभर रहिजाइहै तैसे यह शरीरकी आकृतिमात्र रहिजाइहै वहपार्षदही शरीरमें स्थितरहैहै जबशुद्ध शरीर ह्वै जाइ है तब आपनो पार्षदरूप पावैहै यह आगे लिखि आये हैं १ ॥

मुक्ताहललियेचोंचलोभावै। मौनरहैकी हरिगुणगावै २

हंस मुक्ताहल चोंचमें लिये बच्चनको लोभावै है जौन बच्चा मांगै है ताके मुँहमें डारिदेइहै ऐसे साधुन के मुख में पांचमुक्तिहैं सामीप्य सारूप्य सायुज्य सालोक्य सार्ष्टि तिनते जीवको लोभावै है कहे सबयह जानै है कि इनहींकी दई दै जाइहै जो जौन मुक्तिकी चाह करिकै उनके समीपजाइ है ताको श्री रामनाम के उपदेश करिकै तौनभाव बताइकै मुक्ति देइ हैं औ आप मौनही रहै हैं कि साहब के गुणगाइकै छके रहै हैं २ ॥

मानसरोवर तटकेवासी। रामचरणचितअंतउदासी ३

औ हंस जेहैं ते मानसरोवरके तट के वासी हैं अरुवेसाधू कैसे हैं कि मनरूपी जो सरोवरहै ताके तट के वासीहैं कहे मनते भिन्न ह्वैरहे हैं जामें हंसकी दशाहै साहबकी दीन ऐसो जो चित्मात्र आपनो स्वरूपहै ताकोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहींकेचरणन में लगाइराखैहैं अरुअंतउदासीकहे जोवहधोखाब्रह्ममेंअहंब्रह्मास्मि मानिकै आत्माको अंतह्वैजाइहै आपै ब्रह्ममानिलेइहै वह जोहै आत्माके अंतह्वैबेको मतधोखा तेहिते उदासीकहे उदास ह्वैरहे हैं अथवा अन्त जो है संसार ताते उदास रहै हैं ३ ॥

कागकुबुद्धिनिकटनहिंआवै। प्रतिदिन हंसादर्शनपावै ४
नीर क्षीरको करै निबेरा। कह कबीर सोई जन मेरा ५

तिनके निकट कागरूपी जो कुबुद्धि यहअज्ञानसो निकटनहीं

आवैहै तौ और मतकैतेआवै सो कबीरजी कहैहैं कि यहभांतिजो चलैहै सो हंसशुद्धजीव प्रतिदिन श्री रामचन्द्र को दर्शन पावत रहैहै सर्वत्र साहबको देखतरहै है ४ जैसे हंसनीर क्षीरको निवेरा करै हैं तैसे हंसजे साधुहैं ते असारजो है नाना उपासना नाना ज्ञान तामें अमीसी जो वेद शास्त्र पुराणादिकनमें साहबकी उपासना ताकोग्रहणकरै हैं और सबअसार को छोड़िदेयहैं सो कबीर जी कहैहैं कि सोईजन मेरोहै अर्थात् जे रामोपासकहैं तेईकबीर पंथीहैं और सब पाखंडीहैं जौने स्वरूपमें हंसदशाहै तौनेस्वरूपमें साहबके स्फूर्तिकराय नामजपैहैं तामेंप्रमाण ॥ मालाजपौं न कर जपौं जिह्वा जपौंनराम । मेरासाईं हरिजपै मैंपावोंबिश्राम ५॥

इति चौंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥

अथ पैंतीसवां शब्द ॥

हरिमोरपविमैंरामकीबहुरिया।राममोरबड़ा मैंतनकीलहुरिया १
हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया । हरिकोनामलैकातलबहुरिया २
छः मास ताग वर्ष दिन कुकुरी । लोगबोले भलकातल बपुरी ३
कहै कबीर सूत भलकाता । रहँटा न होय मुक्ति को दाता ४ ॥

हरिमोरपीवमैंरामकीबहुरिया।राममोरबड़ा मैंतनकी लहुरिया १

मोरपीवहरिहैं पीवकहे वे मोको पियारहैं मैं उनकोऊ पियार हौं अरुमैं परमपुरुषपर श्री रामचन्द्र की बहुरिया कहे नारिहौं यहांनारी कह्यो सो यह जीव साहबकी चितशक्तिहै तामें प्रमाण कबीरजीके आदि टकसार ग्रन्थको ॥ आतमशक्तिसुबशोहै नारी। अमरपुरुषजेहिरचीधमारी १ औदूसरो प्रमाणशायरबीजकको ॥ दुलहिनिगाऊमङ्गलचार । हमरेघरआयेरामभतार ॥ तनरतिकरि मैंमन रतिकरिहौं पांचौतत्त्वबराती । रामदेवमोरे व्याहन ऐहैं मैं यौवनमद माती । सरिर सरोवर वेदी करिहौं ब्रह्मा वेद उचारा। रामदेवसंगभांवरिलैहौं धनिधनिभागहमारा।। सुरतैंतीसौकौतुक

आये मुनिवर सहस अठाशी। कहकबीर हम व्याहचलेहैं पुरुष एक अविनाशी२ अरु श्रीरघुनाथजी मोरवड़ेहैं अरुमैं तनकलि-हुरियाहौंकहे उनकेशरीर सर्वत्रव्यापकविभुहैं औ मैं अणुहौंतामें प्रमाण अणुमात्रोप्ययंजीवःस्वदेहंव्याप्यतिष्ठति। इतिस्मृतिः१ ॥

हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया। हरिकोनामलेकातलवहुरिया २

अरु हरिजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं ते मोर रहँटाकहे चित अचितरूपतेजगत्वोईहैं अरुमैंरतनपिउरियाहौं यहजगत्जीवही केवास्तेवन्योहै तामेंप्रमाण ॥ जीवसूतद्वैकै लपटिरहैहैं मैं रतन की पिउरियाहौं ताते मैंनहींलपटौहौंहरिजे श्रीरामचन्द्रहैं तिन कोनाम लैकै बहुरियाकहेउलटिकै मैं कात्यो अर्थात् जगत्कोज-गद्रूप करिकैनहींदेख्यो जगत्को चित् अचित्रूपकरिकै देख्योहै रामनाममें बहुरिकै साहब मुखअर्थदेख्यो जगत्मुखअर्थनहींग्र-हणकियो २ ॥

छःमासतागवर्षदिनकुकुरी। लोगकहलभलकातलवपुरी ३

छःमहीनामें एकतागकात्यो छःमहीनामें एकताग और का-त्यो तब बर्षदिनमा एककुकुरी भै दोनों ताग मिलायकै अर्थात् छःमहीना में आपनो स्वरूप समुझ्यो कि मैं साहबकी नारी हौं औ छःमहीनामें मैंसाहबको स्वरूपसमुझ्यो वर्षदिनमें साहबको मिल्यो सो मैं तो इतनीदेर करिकैमिल्यो साहब तो हजूरही रहैं ताहू में लोग कहैहैं किवपुरी भलकात्यो जो अनंत कोटिजन्म ते नहींजानै है सो साहबको वपुआपनो वपुवर्षैदिनामें समुझ्यो३ ॥

कहैकबीरसूतभलकाता। रहँटानहोय मुक्तिको दाता ४

श्रीकबीरजीकहैहैंकिजौनेरहँटाजगत्तेसूतभलकात्योहैकतवै-या कबीरजीको बिबेकहै सोरहँटा न होय यह मुक्तिको दाता है काहे ते कि जब शुद्धआत्मा रह्योहै याकोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं न तिनको ज्ञानरह्यो औ न संसारको ज्ञानरह्यो यहशुद्धरूप भरो रह्योहै तामेंप्रमाण ॥ नित्यःसर्वगतस्स्थाणु रचलोयंसनातनः ॥ इतिगीतायाम् ॥ जवयह याकेमनभयो तव संसारको कार्योहै

औ संसारमें परिकै दुःख सुख भोग कियो है औ जब पूरा गुरु मिल्योहै तब परमपुरुष जेश्रीरामचन्द्र हैं तिनकोपाइकैसंसारते छूटिगयोहै औ पुनिसंसारमें नहीं आयो सो कबीरजी कहैहैं कि यह रहँटा कहे संसार न होय मुक्तिको दाताहै जो संसार बुद्धि करिकै देखैहै सो संसारमें रहैहै औजो संसारको साहबकोचित् अचित्रूप करिकै देखै है ताकोमुक्तिही देइहैं यासंसारैमें आये मुक्ति भयोहै ४ ॥ इतिपैंतीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथछत्तीसवांशब्द ॥

हरिठग जगत ठगौरीलाई। हरिवियोग कस जियहुरेभाई १ कोकाको पुरुष कौनकाकी नारी । अकथकथायमजालपसारी २ कोकाकोपुत्र कौनकाकोबापा । कोरेमरै कोसहै संतापा ३ ठगि ठगिमूल सबनकोलीन्हा । रामठगौरी बिरलैचीन्हा ४ कहकबीर ठगसो मनमाना । गईठगौरीठग पहिचाना ५ ॥

हरिठग जगतठगौरी लाई। हरिवियोगकस जियहुरेभाई १

हरिठग कहे हरिरूप द्रव्यके चोरावनहारे गुरुवालोगतेजगत् में ठगौरी लगाइकै कहे उपदेश करिकै जीवको ठगि लेइहैं और और में लगाइकै सो हेजीवोहरिके वियोगते तुमकैसेजिओहौ १ ॥

कोकाकोपुरुष कौनकाकीनारी । अकथकथा यमजाल पसारी २
कोकाको पुत्रकौन काकोबापा । कोरे मरै को सहै संतापा ३

यहसंसारमें जबसांचेसाहबको भूल्यो तबकोकाको पुरुषहैको किसकी नारीहै अकथकथा कहे कहिबेलायक नहीं है काहेते कि जिनकी उपासनाकरैहैं आपन स्वामीमानैहैं तिनके स्वामीकब- हूंहोयहै वोईयाकीनारिहोयहै दासहोइहै कबहुंस्त्री पुरुष होयहै पुरुष स्त्रीहोयहै सोयायमकहे दोउविद्याअविद्याके जालपसारचो

है २ कोकाकोपुत्रहै कोकाकोबापहै कोमरैहै कोसंतापसहैहैतुमको तो सुखैसुखहै तुमहीं साहबहौ तुमहींभोगीहो ३ ॥

ठगिठगिमूलसबनकोलीन्हा॥ रामठगौरीबिरलैचीन्हा ४
कहकबीरठगसोमनमाना । गईठगौरी ठगपहिंचाना ५

सोयह समुझाइ समुझाइ सब गुरुवालोग मूलजोहै साहब को ज्ञानसो ठगिलेतभये औजो यहपाठहोइ ठगिठगि सूड सबनको लीन्हा तौयह अर्थ है किसबजगको ठगिठगि मूड़िलियोकहे चेलाकरिलियोहै सोयहठगौरी जो रामकैपरी है कि रामको ज्ञान सबजीवनको गुरुवालोग ठगलेयहैं जैसे कोई रुपयाकोकपड़ा को घोड़ाको ठगैहै तैसे गुरुवालोग रामकोठगैहैं तामेंप्रमाण शास्त्रं सुबुध्वातत्वेनकेचिद्वादवलाज्जनाः । कामद्वेषाभिभूतत्वा दहंकारवशंगताः ॥ याथातथ्यंचविज्ञायशास्त्राणांशास्त्रदस्यवः । ब्रह्मस्तेनानिरंरंभादंभमोहवशानुगाः ४ सोकबीरजी कहै हैं कि तुम्हारो मनठगहै जे गुरुवालोग तिनहीं सो मान्योहै ते तुमको ठगिलीन्हेंहैं सोजब तुमठगकोपहिचानिलेउगे कि ये ठगहैं तब तुम्हारी ठगौरी जातरहैगी ५ ॥ इतिछत्तीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

---o---

अथसैंतीसवांशब्द ॥

हरिठगठगतसकलजगडोला । गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १ बालापनके मीतहमारे । हमैं छोंड़िकहँ चले सकारे २ तुम अस पुरुषहौं नारितुम्हारी । तुम्हरिचाल पाहनहुंतेभारी ३ माटिकि देह पवनकोशरीरा । हरिठगठगतसोडरलकबीरा ४ ॥

हरिठगठगतसकलजगडोला । गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १

जीवकहैहैं कि हरिको ठगजो गुरुवाहै सोठगहारी करिकै सब जीवन को ठगतकहे हरिते विमुख करत जगडोलाकहे संसार में फिरैहै अरु जब गवनकरनलगे यमघेरालियो तब मोसों मुखहूते न बोले कि एतेदिन जौने जौनेमें लगेरहे ब्रह्ममें अथवा जीवा-

रमामें ते न बचायो यह खबरिकहि समुझाय न दियो कि हम को धोखाह्वैगयो तुमहूं धोखामें नपरौ १ ॥

बालापनके मीतहमारे । हमैंछोड़ि कहँ चले सकारे २
तुमअसपुरुषहौंनारितुम्हारी।तुम्हरिचालपाहनहुँतेभारी३

सोतुम बालापनके हमारेमीतहा जब भररह्यो जियो तबभर हमको धोखाहीमें लगायेरहे अब हमैं छोड़िकै सकारेकहे हमहीं ते आगे कहां जाहुगे काहेते कि तुमतो काहूको रक्षकमान्यो नहीं वही धोखामें लगेरहे आपही को मालिक माने रहे अब तुम्हारी रक्षा कौनकरै सोजब तुम्हारी कोई न कियो यमलैहीगये तौ जौन ज्ञान हमको दियोहै तौनेते हमारी रक्षाकौन करैगो २तुम ऐसो हमारे पुरुषहै तुम्हारी हम नारीहैं काहेते कि बीजमंत्र हम को उपदेशदियो है सो तुम्हारी चाल पाहनौतेभारीहै कहे पाहनौ तेजड़ है तेहितेसाहबको भुलाइदियो ३ ॥

माटिकिदेहपवनकोशरीरा।हरिठगठगतसोडरलकबीरा४

माटीकी यह देहहै सो स्थूल शरीर नाशमानहै औ पवनको शरीर सूक्ष्म शरीरहै सोमनोमय चंचलहै ज्ञानभये वहौनाशमा-नहै तामें स्थित जेकबीर कहे कायाके बीरजीवहैं ते हरिजे परम पुरुष श्रीरामचन्द्रहैं सबकेकलेशहरनवारे तिनकोठग जेगुरुवालो-गहैं तिनके ठगतमें कहेरक्षकको छपायदेतमें जीवडरै है किहमा-रीरक्षा अबकौनकरैगोवहब्रह्मतो धोखई है वातोगुरुवनहींकी रक्षा नहींकियो औ तेई मालिक होतो तौमायाके वश कैसे होतेऔ यमकैसेधरि लैजाते ४ ॥ इतिसैंतीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअड़तीसवांशब्द ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगन्दा । जहँजहँगयेअपनपौखोये तेहिफ-न्देबहुफंदा १ योगीकहैयोगहै नीको द्वितिया औरनभाई। चुण्डित मुण्डितमौन जटाधरि तिनहुंकहांसिधिपाई २ज्ञानीगुणी शूरकबि

दाता ये जोकहहिं बड़हमहीं। जहँसे उपजे तहँहिंसमाने छूटिगये सब तबहीं ३ बायेंदहिने तजोबिकारै निजुकै हरिपदगहिया। कहकबिरगूंगेगुरखाया पूंछे सों काकहिया ४॥

या पदमें जे जीवनको गुरुवालोगनको उपदेश लग्योहै तिनको कहैहैं औ गुरुवालोगनको कहैहैं ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगंदा।
जहँजहँगयेअपनपौखोये तेहिफंदेबहुफंदा १

मलीनवुद्धि जाकी होयहै ताको गंदाकहैहैं सोगंदा जोयहजीव है सो बिना जाने भर्मते बिगरि जातभयो तातेचिन्मात्र हरिको अंशजो यहजीव ताकीनीचवुद्धि होइगई जहांगयो तहांतहांअपनपौ कहे मैं सांचे साहबकोहौं यहज्ञान खोयकै तौने फंदामें परिकै तौने मतमें लगिकै वहुत फंदा जे चौरासीलाख योनिहैं तिनमें भटकत भये १ ॥

योगीकहैंयोगहैनीको द्वितियाऔरनभाई।
चुंडितमुंडितमौनजटाधरितिनहुंकहांसिधिपाई २
ज्ञानीगुणीशूरकबिदातायेजोकहहिंबड़हमहीं।
जहँसेउपजेतहँहिंसमानेछूटिगयेसबतबहीं ३

जिनको जिनको यहपदमें कहिआयेतेते आपने मतकोसिद्धांतकरत भये कि हमारही मत सिद्धांतहै परन्तुरक्षकके विनाजाने जहां ते उपजे तहैं पुनि समाइ जातभये अर्थात् जागर्भते आये तौनेही गर्भमें पुनिगये जननमरण नहीं छूटैहै जब दूसरअवतार लियो तब जौने जौने मतमें आगे सिद्धांत करिराख्यो तें तेमत सब छूटिगये अथवा जहांते उपजे कहे जौने लोकप्रकाशते उपजेहैं तहैंसमाने महाप्रलयमें तबसब बिसरिगयो २।३॥

बायेंदहिनेतजो बिकारै निजुकैहरिपदगहिया।
कहकबीरगूंगेगुरखाया पूंछेसोंका कहिया ४

सो मंत्रशास्त्रमें जे वाममार्ग दक्षिण मार्गहैं तेदोऊ विकारई हैं तिनको दुनहुनको छोड़िदेउ औ हरिजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं निहारे रक्षा करनवारे तिनके पदको निजुकैकहे आपन मानिकै गहौ अथवा निजुकै कहे विशेषिकै तिनके पदको गहौ जोकहौ उनको बताइदेउ वे कैसेहैं तौवेतौमन वचनके परेहैं उनकोकोई कैसे बताइसकै जो उनको जान्योहै ताको गूंगेकैसो गुरभयो है कछू कहिनहिंसकैहै इसारहिते बतावैहै वेदशास्त्रको तात्पर्यकरिकै जो सज्जनलोग साहबकोसमुझावैहैं सोतात्पर्यवृत्तिहीकरिकै बतावैहैं ऐसे तुमहूं जो भजनकरौगे तौतुमहूं उनको जानिलेउगे कि ऐसेहैं ४ ॥

इति अड़तीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ उनतालीसवांशब्द ॥

ऐसे हरिसों जगतलरतुहै । पंडुरकतहूं गरुड़धरतुहै १ मूस बिलारी कैसेहेतू । जम्बुककरके हरिसोंखेतू २ अचरजयक देखा संसारा । सोनहाखेदकुंजरअसवारा ३ कहकबीरसुनोसंतोभाई । यहसंधीकोइ विरलैपाई ४ ॥

ऐसेहरिसोंजगतलरतुहै । पंडुरकतहूंगरुड़धरतुहै १

जैसे पूर्व कहिआये ऐसेरक्षक हरिसों जगतलरतुहै कहेबिरोध करतुहै औ जे उनकेभक्त उनको बतावैहैं तिनके मतको खंडन करैहै सोहेमूढ़ पंडुरकहे पनिहापियरसर्प कहूं गरुड़कोधरतुहै जो डुंडुभ पाठहोय ते डुंडुभ पनिहासर्पका नामहै सो रामोपासना गरुड़है सो और मतजेसर्पहैं तिनको कहां खंडनकीनहोइहै वही सबको खंडन करनवारीहै जो वाको रामोपासनाको मतअच्छी तरहते जानो होइहै १ ॥

मूस बिलारी कैसे हेतू । जंबुक करके हरिसों खेतू २

सो हेजीवो तुम्हारो ज्ञानतौ मूसहै औगुरुवालोगनको ज्ञान

खिलारीहै जे और और मतमें लगावैहैं तुमको और और मतमें लगाइकैखाइलेइंगे तिनसों तुमसों कैसे हेतुभयो जंबुकजोसियार सो केहरिजो सिंहहै तासोंखेतकरैहै कहेलरैहै सो जंबुक अज्ञानहै सो सिंह जो तुम्हारोजीव सो लरैहै वह सिंहजीवकैसोहै अज्ञान को नाशकैदेनवारोहै अर्थात् जब आत्माको ज्ञानहोइहै तबअज्ञान नाश ह्वै जाइ है २ ॥

अचरजयकदेखासंसारा । सोनहाखेदकुंजरअसवारा ३
कहकबीरसुनो संतोभाई । यहसंधीकोइ बिरलेपाई ४

सो हम यह बड़ो आश्चर्यदेख्योहै सोनहा जो कूकुर सो कुंजर के असवारको खेदैहै सो नानामतवारे जेहैं तेईकुत्त हैं ते कांउँ कांउँ कहे शास्त्रार्थकरिकै कुंजरके असवारजेहैं रामोपासनाकेसाधक तिनको खेदैहैं कहे उनसों वे कल नहीं पावैहैं यहां कुंजरमन है ताको परम पुरुष श्रीरामचन्द्र लगाइदियेहैं औ आपअसवार हैं ३ सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे संतो भाई तुम सुनो मनते भिन्नह्वैकै साहबके मिलबेकी जोहै संधि भेद ताको कोई बिरला पायेहै अर्थात् जब भरमनबनोरहैहै तबभर वाको भूलिबेकीसंधि बनीही रहैहै मनते भिन्नह्वैकै वाके भजन करिबेको उपाय कोई बिरला जानैहै ४ ॥

इतिउनतालीसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथचालीसवांशब्द ॥

पंडितवाद वदौसोझूठा । रामकेकहे जगतगतिपावै खांडकहे मुखमीठा १ पावककहे पावजोदाहै जलकहेतृषा बुझाई । भोजन कहेभूखजोभाजै तौदुनियां तरिजाई २ नरकेसंग सुवाहरिबोलै हरिप्रतापनाहिंजानै।जोकबहूंउड़िजाय जंगलकोतौहरिसुरतिनआनै ३ बिनुदेखेबिनु अरसपरसबिनु नामलियेकाहोई । धनकेकहेध निकजोहोतो निर्धनरहतनकोई४सांचीप्रीति बिषयमायासों हरि

भक्तनकीहांसी । कहकबीरयकरामभजेबिनुबांधेयमपुरजासी ५ ॥

पंडितबादबदौसोझूठा ॥
रामकेकहेजगतगतिपावैखांड़कहेमुखमीठा १

सो हे पंडितौ जो बादबदौहौ सोझूठाहै काहेते कि पंडित तो वह कहावैहै जाके सारासार विचारिणी बुद्धिहोइहै सोसारासार विचारिणी बुद्धि तो तिहारेहै नहीं पंडित भरकहावोहौ काहेते कि सारशब्दको झूठाकहौहौ यह बाद बदिकै रामके कहेते जो गतिपावतो तौ खांड़ोकहे मुखमीठ ह्वै जातो १ ॥

पावककहेपावजोदाहै जलकहेतृषाबुझाई ।
भोजनकहेभूखजोभाजै तौदुनियांतरिजाई २
नरकेसंगसुवाहरिबोलै हरिप्रतापनहिंजानै ।
जोकबहूंउड़िजायजंगलको तौहरिसुरतिनआनै ३

जो पावकके कहे दाहपावतो तो जीभ जरिजाती औ जलके कहे तृषाबुझाइजाती औ भोजनके कहेते भूख भाजिजाती तौ रामके कहते दुनियौं तरिजाती २ नरके पढ़ाये सुवा राम राम कहैहै औ श्रीरामचन्द्रको प्रताप नहीं जानैहै काहेते कि जब कबहूं जंगलमें उड़िजायहै तब रामकीसुरति नहीं करैहै ऐसे जो तुम राम नाम कहि हरिकोप्रताप जाना चाहौगे तो कैसे जानौगे ३ ॥

बिनुदेखेबिनुअरसपरसबिनु नामलिये काहोई ।
धनकेकहेधनिकजोहोतो निर्धनरहतनकोई ४

बिना देखे बिना स्पर्शकिये नामलिये कहाहोइहै अर्थात् जो कोई दूरहोइ औ देखै न स्पर्श न होइ औ जो वाको नामलेइ तौ काजानिलेइहै नहीं जानैहै धनके कहेते कोई धनिक ह्वै जातो तो निर्धनी कोई न होतो ऐसे नामलिये जो मुक्ति होत तौ सब मुक्तैहोइजात सो हेपंडितौ तुम ऐसे असंगत दृष्टांतदैकै यहबाद बदौहौ सो झूठाहै काहेते कि रामनाम तौ मन बचनके परेहै औ

ये सब मन वचनमें आवैहैं औ वह राम नाम साहब के दिये तें स्फुरित होइहै यहै रामनामजपेते औयेसबअनित्यह्वैजाइहैं ४॥

सांचीप्रीतिविषयमायासों हरिभक्तनकीहांसी।
कहकबीरयकरासभजेबिनु बांधेयमपुरजासी ५

सो कबीरजी कहै हैं कि हे नास्तिक पण्डितो विषय मायासों सांचीप्रीति करौहौ औ ऐसेऐसे कुवाद बदिकै हरिभक्तनकी हांसी करौहौ नामरूप लीला धामको खण्डन करिकै सो एकजे परम पुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके नामके बिना भजन किये बांधे मोगरन की मार सहत यमपुरहीको जाहुगे जे परम पुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनते बिमुखहैं ते सब लोकनमा निन्दित हैं तामें प्रमाण॥यश्चरामंनपश्यन्तुयंचरामोनपश्यति॥ निंदितस्सर्वलोकेषुस्वात्माप्येनंविगर्हते ५॥

इतिचालीसवांशब्दसमाप्तम्॥

———o———

अथइकतालीसवांशब्द॥

पण्डितदेखौमनमोजानी।कहुधौंछूतिकहांतेउपजी तबहिंछूतितुममानी १ नादेबिन्दुरुधिरयकसंगै घटहीमेंघटसज्जै। अष्टकमलकी पुहुमीआई यह छुतिकहां उपज्जै २ लखचौरासी बहुत बासना सो सब सरिभोमाटी। एकैपाटसकल बैठारे सींचि लेतधौं काटी ३ छूतिहिजेंवनछूतिहिअचवन छूतिहिजगउपजाया। कह कबीरते छूति बिवर्जित जाके संग न माया ४॥

पण्डितदेखौमनमोजानी।
कहुधौंछूतिकहांतेउपजी तबहिंछूतितुममानी १

हे पण्डित तुम मनमें जानिकै कहे बिचारिकै देखौतो औकहो तौ यह छूति कहांतेउपजी है जोछूतितुमअपनेमनमेंमान्योहै १॥

नादेबिन्दुरुधिरयकसंगै घटहीमेंघटसज्जै।

अष्टकमलकीपुहुमीआई यहछूतिकहांउपज्जै २

नाद ते पवन बिन्दुते वीर्य्य रुधिरके संगते घटही में घटसजैहै बुद्बुदाहोइहै सो अष्टदलको कमलहै तामें भटकिके लरिकाहोइ है सो पुहुमीपरै है सो लरिकौके वाही भांतिको अष्टदल कमलहोइ है तौने अष्टदल कमल के दलदलमें वाको मन फिरतरहै है ताते तैसे नानाकर्म में लगि कै नाना स्वभाव वाके होइ हैं और जहां जहांकी वासना करिकै मरै है तौनी तौनी योनिमें प्राप्तहोइ है एकै जीव वासननकरिकैसर्वत्रहोइहैं यहछूतिकहांते उपजैहै २ ॥

लखचौरासीबहुलबासना सोसबसरिभोमाटी ।
एकै पाट सकल बैठारे सींचलेत धौं काटी ३

यह जीव बहुत वासननमें परिकै चौरासी लाख योनिन में भटकै है शरीर सरिकै माटीही ह्वै जायहै एकैपाटमें कहे जगत् में नाना वासना करिकै माया सबको बैठावतभई कहे शरीर धारी सबको करतभई अरु ये शरीर सबमाटिही आइँ ओमाटी में मिलि जायँगे औ जीव सबके एकही है औ एकहीपाटमें बैठे हैं सो वे जलको सींचिकै छूति काटि लेतहैं का जलसींचे छूति मिटि जात है नहीं मिटै ३ ॥

छूतिहिजेंवनछूतिहिअचवन छूतिहिजगउपजाया ।
कहकबीर ते छूति बिबर्जित जाकेसङ्ग न माया ४

सो वही छूति जो है वासना सो जब उठी तब जेंवन कियो और वही वासना उठी तबअँचयो और कहांलौं कहैं वहीवासना ते जगत् उपज्योहै सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जाके संग माया नहीं है सोईवासनारूपी छूतिते बिवर्जितहै सो हे पण्डितमाया को जो तुम छोड्यो नहीं छूति तिहारे भीतर घुसी है ऊपर के छूति माने कहा होइ वही छूतिकियो है वासनै ते चित्त की वृत्ति

उठैहै तब यह मानैहै कि हम ब्राह्मणहैं क्षत्रीहैं वैश्यहैं शूद्रहैं ४ ॥

इति इकतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥

अथब्यालीसवांशब्द ॥

पंडित शोधिकहहु समुझाई । जाते आवागमन नशाई ॥ अर्थ धर्म औ काम मोक्ष फल कौनदिशा बसभाई १ उत्तरदक्षिण पूरब पश्चिम स्वर्ग पतालके माहे । बिन गोपाल ठौरनहिंकतहूं नरकजात धौं काहे २ अनजानेको नरकस्वर्गहै हरि जानेकोनाहीं । जेहिडरको सबलोग डरतहैं सो डर हमरे नाहीं ३ पाप पुण्य की शंकानाहीं स्वर्ग नरक नहिं जाहीं । कहै कबीर सुनोहो संतो जहँ पद तहां समाहीं ४ ॥

ते वासना मायाके योगते होइहैं सो माया जौनी प्रकार ते छूटैहै सो उपाय कहैहैं अरु आचारको वहां खंडन करि आये सो अब जौनी दशामें आचार नहीं है सो कहैहैं ॥

पण्डितशोधिकहहुसमुझाई । जातेआवागमननशाई ॥
अर्थधर्मऔकाममोक्षफल कौनदिशाबसभाई १
उत्तरदक्षिणपूरबपश्चिम स्वर्गपतालकेमाहे ।
बिनगोपालठौरनहिंकतहूं नरकजातधौंकाहे २

हे पंडित तुमतो सारासारको विचार करौहौ सो तुम शोधिकै मोसों समुझाय कहो जाते यह जीवात्माको आवागमन नशाइ अर्थ धर्म काम मोक्ष ये फल कौनीदिशामें रहैहैं १ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम स्वर्ग पाताल यहांसर्वत्र मेंढूंढ़ि डारयों परन्तु बिना गोपाल कहूं ठौर न देख्यों गोपाल कहे गो जो इन्द्री जड़ मनादिक तिनके चैतन्यकरनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहींको सर्वत्र देखतभयो विषय इन्द्रिनते देवतासनते मन जीव ते जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रते चैतन्यहै सो जीव उनकोचित्त शरीर अरु मायाकाल कर्म स्वभाव उनको अचित शरीरहै तेहिते

बिना गोपाल कहूं ठौर नहीं है जीव नरक स्वर्ग जाइहै सो अब बतावै हैं २ ॥

अनजाने को नरक स्वर्ग है हरि जाने को नाहीं ।
जेहिडरको सब लोग डरतहैं सोडरहमरेनाहीं ३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि अनजानेको नरकस्वर्गहै कहेजो कोई हरिको नहीं जानै है ताको न स्वर्ग है न नरकहै औजोकोई हरि को सर्वत्र जानै है ताको न नरक है न स्वर्गहै जौन डरको सब लोग डरायँहैं मायाब्रह्म नरक स्वर्गादिकनको तौन डर उनको नहीं है काहेते वे तो सर्वत्र साहबैको देखै हैं ३ ॥

पापपुण्यकीशङ्कानाहीं स्वर्गनरकनहिंजाहीं ।
कहैकबीरसुनोहोसंतो जहँ पद तहां समाहीं ४

औ न उनको पाप पुण्यकी शंकाहै काहेते कि जो कोई बद्ध होइ सो न मुक्त होइ तेहिते न वे बद्धहीहैं न मुक्तही हैं तामें प्रमाण श्री भागवते ॥ बद्धो मुक्तइतिव्याख्या गुणतोमेनवस्तुतः। गुणस्यमायामूलत्वान्नमेमोक्षोनबंधनम् ॥ हमतो सर्वत्रसाहबही को देखैंहैं वे नरक स्वर्गको नहीं जाइहैं सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतो सुनो ऐसी भावना जे नर करैहैं ते नर जहां पद तहां समाहीं कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के अंशहैं सो तिनहींके स्थान में जाइ हैं ४ ॥

इतिबयालीसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ तेंतालीसवां शब्द ॥

पंडित मिथ्याकरौ बिचारा । ना ह्वां सृष्टि न सिरजनहारा १ थूल स्थूल पवन नहिं पावक रवि शशि धरणि न नीरा । ज्योति स्वरूपी कालन उहँवां बचन न आहि शरीरा २ कर्म धर्म कछुवो नाहिं उहँवां ना कछु मंत्र न पूजा । संयम सहित भावनहिं एकौ सो तो एक न दूजा ३ गोरख राम एकौ नहिं उहँवां ना ह्वां भेद

विचारा । हरि हर ब्रह्म नहीं शिव शक्ती तिरथौ नहीं अचारा ४ माय वाप गुरु जाके नाहीं सोदूजा कि अकेला । कह कबीर जो अवकी समुझै सोई गुरू हम चेला ५ ॥

पंडितमिथ्याकरोबिचारानाखांसृष्टिनसिरजनहारा १ थूलस्थूलपवननहिंपावकरबिशशिधरणिननीरा । ज्योतिस्वरूपीकालनउहँवां बचननआहिशरीरा २ कर्मधर्मकछुवोनाहिं उहँवां नाकछुमंत्रनपूजा । संयम सहितभावनहिंएकौ सोतो एक न दूजा ३ गोरखराम एकौ नाहिं उहवां नाह्वांभेदबिचारा । हरिहरब्रह्मनहींशिवशक्ती तिरथौ नहींअचारा ४ मायबाप गुरुजाकेनाहीं सोदूजाकिअकेला । कहकबीरजोअबकीसमुझै सोईगुरूहमचेला ५ ॥

हेपंडित तुमतौ वह ब्रह्मको मिथ्यै बिचार करोहो जोयहपदमें बर्णन करिआये सो वहमें एकउनहींहै वह तो धोखही है सो कबीरजी कहैहैं कि सो वह आत्माते दूसरहै कि अकेल वहब्रह्महै जो अबकी समुझै कहे यह ज्ञानभयेपर समुझै कि मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकोहौं वहब्रह्म धोखाहै सोई गुरूहै मैंचेलाहौं काहेते कि मोहिं तो धोखई नहीं भयोहै जो आपनेको ब्रह्ममानिकै औ साहबको समुझैहै औ वाकोधोखा मानिलेइ सोमेरोगुरूहै औमैं वाको चेलाहौं अर्थात् सोईमोसों अधिकहै काहेते कि वह धोखामेंपरिकै निकस्योहै यहप्रशंसाकियो ५ ॥

इति तेंतालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचवालीसवांशब्द ॥

बूझहुपंडितकरहुबिचारी पुरुषअहैकिनारी १ ब्राह्मणकेघर ब्राह्मणीहोती योगीकेघरचेली॥कलिमापढ़िपढ़िभईतुरुकिनीकलि

मेंरहैअकेली २ बरनाहिंवरैव्याहनाहिंकरई पुत्रजन्महोनिहारी। कारेमूंडेयकनहिंछांड़ै अवहूं आदिकुवांरी ३ मायिकनरहैजाइ नससुरे साईं संगनसोवै। कहकबीरवेयुगयुगजीवैं जातिपांति कुलखोवै ४ ॥

यह मायाही सब जगत्के जीवनको भरमायोहै सोकहैहैं॥

बूझहुपंडित करहुबिचारी पुरुषअहैकीनारी १
ब्राह्मण केरे ब्रह्मणीहोती योगीकेघरचेली।
कलिमापढ़िपढ़िभईतुरुकिनीकलिमेंरहैअकेली २

सोहेपंडित तुमबूझौ औ विचारिकै कामकरो यहमाया पुरुष रूपहै कि नारीरूपहै यहमाया सबको लपेटिलियो है १ विद्या माया ब्राह्मणके तो ब्राह्मणीह्वैकै बैठीहै ब्राह्मणकहैहैं कि हमब्रह्म को जानैहैं ॥ ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः अरुघरमें ब्राह्मणी बैठायेरहै हैं वाको स्त्रीकोभाव करैहैं बेटीसों बेटीकोभाव बहिनीसों भगिनीको भावमानैहैं सो कहोतो ब्रह्मभाव कबभयो जोकहो जिनके स्त्रीनहींहै तिनकोतो ब्रह्मभाव ठीकहै तौउनकेब्रह्मज्ञानपनीरूप ब्राह्मणीकी गरूरीबनी हैं संयोगिनके तो चेलीह्वै बैठीहै औ योगिनके योगीरूपह्वै बैठीहै योगी महामुद्रा साधन करिकै बीर्यकी उलटी गति कैदेइहैं सो जबवृद्धभये तब षोडश कन्या एकघरमें रातिभरि राखिकै संभोग करिकै उनकोबीर्यलिंग द्वारते खैंचिकै ऊपरमें चढ़ाइ लेइहैं तब आप तरुण ह्वै जाइहैं वे षोड़शौकन्या मरिजाइहैं येतो बड़ो अनर्थकरैहैंजे प्राणायाम करिकै प्राणचढ़ाइ लैजाइहैं तिनके कुंडलिनी ह्वैबैठीहैं औमुसल्माननके जब विवाह होइहै तब निगाहसों निगाह पढ़िकै कलिमापढ़िकै तुरुकिनी होइहै औ मुसल्मान होइहै सो ये उपलक्षणहैं अर्थात् ब्राह्मणमें स्त्रीके साथ कर्मरूपह्वैकै औ योगिनके दशमुद्रा रूपह्वैकै औमुसल्माननमें निगाह कलमा आदिदैकै सरारूपह्वैकै अकेलीमायही रहतभई साहबके कामयेएको नहींहैं २ ॥

वरनहिंवरैव्याहनहिंकरई पुत्रजन्महोनिहारी।
कारेमूड़ेएकनहिंछांड़ै अवहूं आदि कुंवारी ३

वरकहे श्रेष्ठजेहैं साहबके जाननवारे भक्त तिनकोनहींवर्यो अर्थात् उनको स्पर्श विद्या अविद्या येदोनोंको नहीं है अरुखसम ब्रह्महै सो व्याह नहीं करैहै काहेतेकि धोखाकी भँवरी नहीं परै औमायाको पुत्र जगत्है जाको गर्भधारण करैहै सोकारेकहे जिनके शिखाहै हिंदूलोग औमूड़ेकहे जिनके शिखानहीं है मुसल्मान लोग तिनको एकऊ नहीं छोड़्यो अवहूं भर वह आदिकहे आद्या जो मायाहै सो कुंवारीही वनीहै अर्थात् हिंदू मुसल्मान को आपही वशकैलियेहै इनके वश नहींभई ३॥

मायिकनरहैजाइनससुरेसांईसंगनसोवै।
कहकवीरवेयुगयुगजीवैं जातिपाँतिकुलखोवै ४

अरुमायिक जोहैशुद्धआत्माजाकेउत्पत्तिभईहैमायातहांतोरहत हिनहींहै वहांतो जीवके साहबको अज्ञानरूप कारणमात्ररह्योहै औससुरजोहै लोकप्रकाश ब्रह्म जहां जीवमान्योहै किब्रह्ममैंहींहौं सोधोखाहै तहांनहीं जाइहै औ वही सांईकहे पतिहै काहेते कि वहीमाया सवलित होइहै तव जगत्होइहै ताकेसंगनहीं सोवैहै काहेते किवहतो धोखईहै औ वहमाया धोखाहै जोकछुवस्तुहोइ तव न वाके संगसोवै श्रीकवीरजीकहैहैं कि सव जगत्को माया लपेटिलियोहै जेजीव साहब औ साहबकी जाति आपको मानैहैं औ अपनी जातिपांति कुलखोवैहैं सोई मायाते वचेहैं औयुग युगजियैहैं और सवकोमाया खाइहीलियो है अर्थात् उनहीं को जननमरण नहीं होयहै ४॥

इति चवालीसवांशब्द समाप्तम्॥

अथ पैंतालीसवां शब्द॥

कौनमुवाकहुपंडितजना। सोसमुझायकहौमोहिंसना १ मृये

ब्रह्मा।विष्णुमहेशा। पार्वतीसुतमुयेगणेशा२मूयेचन्द्रमुयेरबिकेता । मुयेहनुमतजिन्हबांधीसेता ३ मूयेकृष्ण मुयेकरतारा । यकनमुवा जो सिरजनहारा ४ कहैकबीरमुवानाहिंसोई । जाकोआवागमन न होई ५ ॥

कौनमुवाकहुपंडितजना । सोसमुझायकहौमोहिंसना १
मूयेब्रह्मा विष्णु महेशा । पार्बतीसुत मुये गणेशा २
मूये चन्द्र मुये रबिकेता । मुयेहनुमतजिन्हबांधी सेता३
मूयेकृष्ण मुये करतारा । यकनमुवाजोसिरजनहारा ४
कहैकबीर मुवानाहिं सोई । जाकोआवागमन न होई ५

जिनको जिनको यापदमें बर्णनकरिआये तेतेसब महाप्रलय में लीन होइहैं एककहे सम अधिकते रहितजो साहब नहींमुवा औ सिरजनहार जो समष्टिजीव सोनहीं मुवाहै अर्थात् सोरहि जायहै और कौननहीं मुवा तिनको कबीरजी बतावैहैं जीवतो मरैनहींहै शरीरही मरैहै सोजेजेदेवतनको मुवा कहिआये तेजौन रूपते साहबके समीपरहै हैं सो स्वरूप उनको नहीं मुवै है पार्षद शरीरते बनेरहै हैं यहां अपने अंशनते जगत् कार्यकरै है सो पूर्व लिखिआयेहैं ५ ॥

इति पैंतालीसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ छियालीसवां शब्द ॥

पंडितअचरजयकबड़होई । यकमरमुयेअन्ननहिंखाई यकमर सीझरसोई १ करिअसनानतिलककरिबैठे नौगुणकांधजनेऊ । हांड़हिाड़हाड़थारीमुखअबषटकर्मबनेऊ २ धरमकथैजहँजीवबधै तहँअकरमकरमेरेभाई । जोतोहरेको ब्राह्मणकहिये तौकेहिकहिय कसाई ३ कहैकबीरसुनोहोसंतोभरमभूलिदुनिआई । अपरमपार पारपुरुषोत्तम यहगतिविरलैपाई ४ ॥

अब जे षट्कर्मी पंडितलोग बलिदानकरिकै मासखाइ हैं तिनकों कहैहैं ॥

पंडितअचरजयकबड़होई ।
यकमरमुये अन्ननहिंखाई यकमर सीभर सोई १
करिअसनान तिलककरि बैठे नौगुण कांधजनेऊ ।
हांड़ी हाड़ हाड़ थारी मुख अब षटकर्म बनेऊ २

हे पंडित एक बड़ो आश्चर्यहोइहै एक मरैहै ताके मरते कोई अन्न नहीं खायहै अरुवाके छुयेते अशुद्धह्वैजाइहै अरु एक जीवको मारिलैआवैहैं तौनेमुर्दाको रसोईमें सिझवैहैं १ औनौगुणकोजनेऊकांधेमेंडारिकै स्नानकरिकै बड़ोबेदना ऐसो तिलकदैकै बैठेहैं सो कबीरजी कूटकरै हैं कि अब षट्कर्म बनिपरयो कि हाड़ है थारीमेंहाड़है मुखमेंहाड़है वही षट्कर्म ब्राह्मणकेये हैं पढ़ै पढ़ावै दानदेइलेइ यज्ञकरै यज्ञकरावै इहां ये षट्कर्म करै हैं एकक हड़ियादूजेहाड़ तीजेथारी चौथेहाड़ पांचौ मुख छठोंहाड़ अब ये षट्कर्म बनिपरयो २ ॥

धरम कथै जहँ जीव बधै तहँ अकरम करमेरे भाई ।
जोतोहरे को ब्राह्मणकहिये तौकेहि कहिय कसाई ३
कहैं कबीर सुनोहो संतो भरम भूलि दुनिआई ।
अपरमपार पार पुरुषोत्तम यहगति बिरलेपाई ४

जहां धर्मकोकथैहै कि या यज्ञहै देवपूजन पितरश्राद्धहै याधर्म है तहैं जीवनको मारैहै सो हे भाइउ जोकरिबेलायक कर्म नहींहै सोऊकरैहैं ऐसेज तुम्हारेकर्महैं तिनको तो ब्राह्मण कहैंगे ब्रह्मके जनैया कहैंगे कसाई काको कहैंगे ३ श्रीकबीरजी कहैंहैं कि ऐसे भ्रममें दुनियाँ भूलिरहीहै अपरम कहे परम नहीं ऐसी जो माया है ताते परब्रह्महै ताहूते पारपुरुष समष्टिजीवहैं जाके अनुभवते ब्रह्मभयोहै ताहूते उत्तम श्रीरामचन्द्रहैं काहेते कि वे विभु सर्वज्ञहैं

औजीव अणुमत्पज्ञहै ते श्रीरामचन्द्रकी जो यहगतिहै ज्ञानसोको-ई विरलै पाईहै अर्थात् कोई विरलाजान्योहै कि सबते परं साह-वई है उनते सम औ अधिककोई नहींहै तामेंप्रमाण ॥ सकारण कारणकारणाधिपोनचास्यकश्चिज्जनितानचाधिपः। नतस्यकार्यं करणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते ॥ इतिश्वेताश्वतरो पनिषदि॥ समोनविद्यतेतस्यविशिष्टः कुतएवतु इतिवाल्मीकीये । औकबीरौजीको प्रमाण ॥ साहवकहिये एकको दूजाकहोनजाइ । दूजासाहवजोकहैं बादविडंवनआइ ॥ जननमरणतेरहितहै मेरा साहबसोय । मैं बलिहारीपीउकी जिनसिरजासबकोय ४ ॥

इति छियालीसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ सैंतालिसवां शब्द ॥

पंडितवूझिपियो तुमपानी । जामाटीकेघरमेंबैठे तामेंसृष्टिस-मानी १ छपनकोटियादवजहँबिनशे मुनिजनसहसअठासी । प रगपरगपैगम्बरगाड़ेतेसरिमाटीमासी २ मत्स्यकच्छघरियारबि-यानेरुधिरनीरजलभरिया । नदियानीरनरकबहिआवै पशुमानुष सबसरिया ३ हाड़झरीझरिगूदगलीगलि दूधकहांतेआवै। सोतुम पाँड़े जेंवनबैठे मटिअहिछूतिलगावै ४ वेदकितावछोड़िदिहुपांड़े ईसबमनकेकर्मा। कहैकबीरसुनोहोपांड़े ई सबतुम्हरे धर्मा ५ ॥

जे दंभकरिकै बड़ो आचार करैहैं जिनको चिदअचिद साहब को रूपहै यहवुद्धि नहीं है ॥

पंडितवूझिपियोतुमपानी ।
जामाटीके घरमें बैठे तामें सृष्टि समानी १
छपनकोटि यादवजहँबिनशे मुनिजन सहसअठासी ।
परग परग पैगंवर गाड़ेते सरिमाटी मासी २

सो हे पंडित ज्ञानतो तिहारेहैनहीं आचारकरौहो सोतुमकहां को पानी पियौहो भला वूझिकै कहे बिचारिकै तौपानीपिऔजो-

ने माटीके घरमें अर्थात् पृथ्वी में तुम बैठेहो तौने में सब सृष्टि समाइ रही है १ औ जौनीपृथ्वीमें छप्पनकोटियादव औ अठासीहजार मुनिये उपलक्षणहैं अर्थात् सबजीवनके शरीरवहीमाटी में मिलि मिलिकै सरिगये अरुपरगपरगमें पैगम्बरगाड़ेहैं तेसबसरि कै माटी ह्वैरहे हैं तेहिते माटी मासी है कहे मांसमें मिलिरहीहै औ माटी मासीकहे मधुकैटभके मांसकी आइ २ ॥

मत्स्यकच्छघरियारवियाने रुधिरनीरजलभरिया ।
नदियानीर नरक बहिआवै पशु मानुष सब सरिया ३
हाड़ झरीझरिगूदगली गलि दूध कहां ते आवै ।
सो तुम पांड़े जेंवन बैठे मटिअहि छूति लगावै ४

अरु नदियाके जलमें मत्स्य कच्छ घरियार वियाने कहेहांयहैं औ रुधिर नीरमल इत्यादिक वही नदियाके जलमें मिलिजाइ हैं औ पशु मानुष जे सरिजाइहैं तेवही पानीपियोहौ औ आचार करोहो ३ दूधो हाड़ते झरिझरि गूदते गलिगलिकै लोहू भयो वही लोहूते दूध भयो ताहीको लैकै हे पण्डित तुम जेंवन बैठौ हौ औ माटी जो मांसहै ताको छूतिलगावोहौ कि मांस बड़ो अपवित्र है याको जे खाइहैं ते बड़ा निषिद्धकर्म करैहैं सो कहो तो वह दूध मांस ते कैसे भिन्न है ४ ॥

बेद किताब छोड़ि दिहु पांड़े ई सब मनके कर्मा ।
कहै कबीर सुनोहो पांड़े ई सब तुम्हरे धर्मा ५

सो हेपांड़े शुद्धअशुद्ध तो वेद किताबते जानेजाइहैं ते वेद किताबको तुमछोड़िदियो ये जे सब कहिआये जे तुम धर्म करोहौते तौ सब तुम्हारे मनके कर्म हैं आपने मनहीते ये सब तुम बनाइ लियो है इनते तुम न निवहौगे श्रीकबीरजी काकुकैहैं कि हेपांड़े बिचारिकैदेखौयेसबतुम्हारेधर्महैं अर्थात् नहींहै तुमतौ साहबकेहौ अथवा कबीरजी कहैहैं एते सबकर्म करोहौ आपने मनके

बनाये औ वे किताबौके कहेते ये सब तुम्हारे धर्म कहे तुम्हारे शरीरैमाहैं तेहिते शरीरते भिन्नह्वैकै आपने स्वरूपको जानौगे तब आपने सांचे कर्मन को जानौगे यह व्यंग्य है ५ ॥

इति सैंतालीसवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ अड़तालीसवां शब्द ॥

पण्डितदेखोहृदयविचारी।कौनपुरुषकोनारी १ सहजसमाना घटघटबोलैवाकोचरितअनूपा । वाकोनामकहाकहिलीजैनावहबरणनरूपा २ तैंमैं काहकरै नरबौरेक्यातेराक्या मेरा। रामखोदाय शक्तिशिवएकैकहुधौंकाहिनिबेरा ३ वेदपुराणकुरानकितेवा नाना भांतिबखानी । हिन्दूतुरुकजैनिऔयोगीएकलकाहुनजानी ४ छः दरशनमें जो परवाना तासुनाममनमाना । कहकबीरहमहीं हैं बौरे ई सबखलकसयाना ५ ॥

पण्डितदेखो हृदयविचारी । कौन पुरुषको नारी १
सहजसमाना घटघट बोलै वाको चरित अनूपा ।
वाको नाम कहा कहि लीजै ना वह बरणन रूपा २

हे पण्डिततुमतौ सारासारकोबिचारकरौहौ हृदयमेंबिचारिकै देखौ तो कौन पुरुष है कौन नारी है वह आत्मातो न पुरुष न नारीहै १ जोकहो घटघटमें सहजजीव ब्रह्मसमाइ रह्यो है वाको चरित्र अनूपहै सोई हमारो स्वरूपहै तोवाको नाम कहा कहि लीजै वाको तो न वर्ण है न रूप है वहतो धोखाहै २ ॥

तैं मैं काह करै नर बौरे क्या तेरा क्या मेरा ।
रामखोदायशक्तिशिवएकै कहुधौंकाहिनिबेरा ३

औ जो तैं मैं कहौहौ कि तैं मैं आह्यो मैंतैंआह्योएकही ब्रह्मतो हैतैंमैंकहाकरैहै बिचारिदेखुतौक्यातेराहै क्यामेराहै सबसाहब का

तौहै जो तैं साहब होइ तब न तेरा होइ रामखोदाय औ शक्ति शिवजेहैं तिनमें कहुयौं तैं काको निबेरा कियो है कि एकयह जगत्को मालिकहै औ वही मैं हौं अर्थात् इनकी सामर्थ्य तो मैं एकऊ नहीं देखिपरैहै ताते इनमें तैं कोई नहीं है ३ ॥

वेदपुराणकुरान कितेबा नाना भांति बखानी।
हिन्दू तुरुकजैनिऔयोगीएकलकाहुनजानी ४

वही साहबको नानानाम लैके कहै हैं सो वेद पुराण कुरान किताबमें वही साहबको सबते परे नानाभांतिते नाना नामलैके वर्णन कियो है यही हेतु ते हिन्दू तुरुक जैनियोगी एकल कहे एक नाम करिकै कोई नहीं जान्यो कि एक यही सिद्धांतहै यही सबको मालिकहै अथवा एकल कहे जौने करते जौने उपाय ते मैं मनवचन के परे साहबको जान्योहै सो कोईनहीं जान्यो ४ ॥

छःदरशन में जे परवाना तासुनाम मन माना।
कहकबीर हमहीहैंबौरे ई सब खलकसयाना ५

छइउ दर्शनमें अरु जेते सब हिन्दू तुरुक आदि वर्णन करि आये तिनसब में जौने धोखा ब्रह्म को प्रमाण परै है तौने ही को नाम सबके मनमें मानैहै कहत तौमन वचनके परेहैं परन्तुकोई ब्रह्म कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कोई जीवात्मा कहिकै वाहीको सब मानैहैं सो कबीरजी कहैहैं कि सब खलक सयाना है काहे ते कि कहते तो यह बात हैं कि वहतो मनवचनमें आवतै नहीं है औ जे मनवचन में आवै हैं तिनहीं में फिरि लागै है तातेहमहीं बौरहाहैं जो ऐसो कहै हैं कि साहब आपहीते कृपा करिकै अनिर्वचनीय रामनाम स्फुरित करिदेइहैं ताही के मिलनको उपाय बतावै हैं यह काकु करै हैं ५ ॥

इति अडतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥

अथ उनचासवां शब्द ॥

बुझबुझ परिडतपदनिर्वाना । सांझपरेकहँवांबसभाना १ नीच ऊँचपरवतठेलानभीत । बिनगायनतहँवांउठगीत २ ओसनप्यास मँदिरनहिंजहँवां । सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३ नितैअमावसनित संक्रांति । नितनितनवग्रहबैठेपांति ४ मैं तोहिं पूछौं परिडत जना । हृदयाग्रहणलागु केहिघना ५ कहकबीरयतनौनाहिंजान। कौनशब्दगुरुलागाकान ६ ॥

अबयोगिनकोकहैहैं ॥

बुझबुझपंडितपदनिरबाना । सांझपरेकहँवांबसभाना १
नीचऊँचपर्वतठेलानभीत । बिनगायनतहँवांउठगीत २

हे पंडित तुम वह निर्बाणपदको बूझोतो जो त्रिकुटीमें ध्यान लगाइकै भानु कहे सूर्य देखौहौ सो सूर्य सांझपरे कहे जब शरीर छूटिगयो तब कहां बसैहै १ नीचेते ऊंचेकोकहे कुंडलिनीतेगैबगुफामें जब आत्माजाइहै तौनेपर्वतमें न ठेलाहै न भीतिहै औबिना गायन तहँवां गीतउठैहै कहे अनहदकी ध्वनि सुनिपरैहै २ ॥

ओसनप्यासमँदिरनहिंजहँवां। सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३

ओस जो वहांपरैहै कहे अमृत जो वहांझरैहै ताकोपानकरिकै नप्यासह्वैजाइहै कहे पियास नहींलगैहै अर्थात् ओसन पियास नहींजाइहै जो मानिराखेहैं कि अमृतपीकै हम अमरह्वैजाइँगे सो अमर न होउगे औ जो गैबगुफा पर्वतमें घरमानिराखेहैं सो वहां तेरोमन्दिरकहे घरनहींहैअर्थात् वहांतोशून्यहै तहांसहस्रदलमेंधेनु दुहावैहैं कहेधेनुजोहै गायत्री ताको अर्थ जो है वहदूध ज्ञानस्वरूप ब्रह्मताको विचारकरैहैं आपनेको ब्रह्ममानैहैं जब शरीर सरिजाइहै तब गैबगुफौ जरिजाइहै औ फिरि शरीर धारणकरै हैं ३ ॥

नितैअमावसनितसंक्रांति । नितनितनवग्रहबैठेपांति ४

औ तहां नित अमावस रहैहै चन्द्रमा सूर्यनके ओटह्वैजाइ सो अमावस कहावैहै सो यहांते आत्माजाइकै ब्रह्मज्योतिमें लीनह्वै

जाइहै ताते नित अमावस रहैहै औ फिरि जब समाधि उतरी तब शंकामें परिगयो वही वाको नित संक्रांति है औनित नवग्रह पांति जोहैं दुवार जामें ऐसो जोहै ग्रह शरीर तौने की पांति बैठे है कहे इतना योग साधैहै तऊ शरीरधारण करिबो नहींछूटैहै ४॥

मैंतोहिंपूछौंपंडितजना । हृदयाग्रहणलागुक्यहिखना ५
कहकबीरइतनौनहिंजान । कौनशब्दगुरुलागाकान ६

हेपंडित तुमसों हमपूछैहैं कि जबसमाधि उतरि आवैहै तब फिरि माया तुमको ग्रहण करिलेइहै औ निर्वाणपद कहतहीहो सो निर्वाणपद जो जाते तौ कैसे उलटि आवते औ कैसे नाना शरीर पावते सोदेखतेहो बूझते नहीं हो यह अज्ञानरूपी राहुते तुम्हारे ज्ञानरूपी चन्द्रमाको कवग्रहणकियो ५ श्रीकबीरजीकहैहैं कि इतनौ नहीं जानतेहौ कि शरीरके साधन यह ज्ञान कियेते शरीर मिलैगो कि छूटैगो अर्थात् शरीरके साधन कियेते शरीरही मिलैगो तेरेकानमें लागिकै गुरुवालोग कौनसो हंसशब्दको उपदेशकियोहै जाते परमपुरुषश्रीरामचन्द्रको भूलिगये ६ ॥

इतिउनचासवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपचासवांशब्द ॥

बुझबुझपंडितबिरवा न होई । अधवस पुरुपअधावसजोई १ बिरवा एक सकल संसाला । स्वर्गशीश जरगयल पताला २ बारह पखुरी चौबिस पाता । घनबरोह लागी चहुँवाता ३ फलैनफुलै वाकिहै बानी । रैनिदिवस बिकारचुवपानी ४ कहकबीर कछु अछलो न जहिया । हरिबिरवाप्रतिपालत तहिया ५ ॥

बुझबुझपंडितबिरवानहोई। अधवसपुरुषअधावसजोई१
बिरवाएकसकलसंसाला। स्वर्गशीशजरगयलपताला२

हेपंडित यहसंसाररूपीवृक्षको जो तैं बूझिराखेहै कहेमानिराखो

हैतें बूझतौ जितने विचारहोइहैं तिनको यहमिथ्याहीहै हरिकेचि-
दचिद् रूप ते सत्य है यहसंसारवृक्ष आधा पुरुषहै आधा प्रकृति
है अर्थात् चितपुरुष जीव औ अचित मायादिक इनहीते संपूर्ण
जगत्है १ पुनिकैसोहै संसाररूपी बिरवा याको स्वर्गशिश कहे
ब्रह्मांडको जो खपराहै सो शिशहै अरु याकीजरपातालमेंगईहै २॥

वारह पखुरीचौविसपाता । घनवरोहलागीचहुँघाता ३
फलैनफुलैवाकिहैवानी । रैनिदिवसबिकारचुवपानी ४

औ वारह महीना जेहैं ते बारैपंखुरी हैं अर्थात्काल औचौबिस
तत्त्व वाके चौबिस पातहैं औघनकहे नानाकर्मन की बासनातेई
घनवरोह चारों ओर लगीहैं ३ या संसाररूपी वृक्ष साहबकोज्ञान
रूप फल नहींफूलै औ साहबको भक्तिरूप फल नहींलगैहै या
संसारके बाहर भयेतेहोयहै औरातिदिनबिकाररूपपानीचुवैहै ४ ॥

कहकवीरकछुअछलो नजहिया । हरिबिरवाप्रतिपालततहिया ५

सो कवीरजी कहैहैं कि जहां हरिपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र जाके
अंतःकरणमें भागवतधर्मरूपीबिरवनकीबाग प्रतिपालैं हैं तिनको
यह संसाररूपी बिरवा अच्छोनहींहै व्यंग यहहै कि मालीजोहो-
इहै सो कांटावाला पेड़ानिष्काम अलगकैदेइहै यहां हरि संसाररू-
पी बिरवा अलग कैदेइ है भागवत धर्मरूप बिरवा श्रीकबीरजी
रेखता में कह्यो ॥ धर्मकीवागफुलवारि फूलिरही शीलसंतोष
वहुतकसोहाई । भक्तिकाफूलकोउसंतमाथेधरै ज्ञानमतभेदसत-
गुरुलखाई । विवेकबिच्चारसोइवागदेखनचलेप्रेमफलपाइटोरैच-
खाई । पराहै स्वादजब और भावैनहीं तजैगाप्राणकीवहवई ५ ॥

इति पचासवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ इक्यावनवां शब्द ॥

बुझबुझपंडितमनचितलाय । कबहिंभरलबहैकवहिंसुखाय १

खनउवैखनडुवैखनअवगाह। रतननमिलैपावनहिंथाह २नदिया नाहिंसरसवहैनीर। मच्छनमरैकेवटरहैतीर ३ कहकबीरयहमन काधोखा। वैठारहैचलाचहचोखा ४॥

वुझवुझपंडितमनचितलाय।कबहिंभरलवहे कवहिंसुखाय१

हे पंडित सारासारके विचारकरनवाले ततोबिवेकी कहावैहैं चित्तलगाइकै यहमनको बूझतौ कबहूं भरलकहे कबहूं तो तैंआपनेको मानिलेइहै कि मैंहीं ब्रह्महौं आनंदते भरिजायहै औ कबहूं वहज्ञान वहिजायहै तबसुखाइजाइहै अर्थात् वह आनंद नहीं रहिजाइहै १॥

खनउवैखनडुवैखनअवगाह।रतननमिलैपावनहिंथाह २ नदियानाहिंसरसवहैनीर। मच्छन मरै केवट रहैतीर ३

तब क्षणमें संसारते मनऊवि उठैहै कहे बैराग्य ह्वै आवैहै औ क्षणमें वही मनरूपी नदीहिलै है बूड़िजाय है अर्थात् संसार के विषयमें बूड़ि जायहै औ क्षणमें अवगाहहै कहे नानामतमें बिचार करै है कि संसार छूटिजाय सो मनरूपी नदीकीथाह नहीं पावैहै तेहिते रत्नजो है स्वस्वरूप सो नहीं मिलै है बिचारही करत रहिजायहै २ सो मनरूपी नदिया हैनहीं जो तैंबिचारकरै तू तो मनके बाहरहै परंतु सरसनीर संकल्पबनैहै अब मच्छको मारनवालो केवट ज्ञान तीर में बनै है परंतु काम क्रोधादिक मच्छ तेरे मारे नहीं मरैहैं ३॥

कहकबीरयहमनकाधोखा। वैठारहै चलाचहचोखा ४

सो कबीरजीकह हैं कि नानामतमेंपरिकै संसारछूटिवेकोनहीं उपाय करौहौ औ चोखकहे नीकेचला चाहौ परंतु हौ वैठे कहे साहबके मिलिवे को उपाय ये एकऊ नहींहैं काहेते कि पश्चिम कोग्राम नगीचऊ होइ औ तहांजाइवो चाहै औ जसजस पूर्वको मेहनत करिकै मंजिलकरै तौ तस तस दूरिही परतु जाइहै यह

संसार मनको धोखा मिथ्याहै सो मनतेभिन्नह्वैकै साहबमेंलगै तबहींसाहब मिलैंगे ४ ॥

इति इक्यावनवांशब्दसमाप्तम् ॥

———o———

अथ बावनवां शब्द ॥

बूझिलीजैब्रह्मज्ञानी।घोरिघोरिवर्षावरषावैपरियाबुंदनपानी १ चींटीकेपगहस्तबांधेछेरीबीगैखायो। उदधिमाहँतेनिकसिछांछरी चौड़ेगेहकरायो २ मेढुकसर्पंरहैइकसंगै बिल्लीश्वानबियाही। नितउठिसिंहसियारसोंजूझै अदभुतकथोनजाही ३ संशयमिरगातन बनघेरेपारथवानामेलै।सायरजरैसकलबनडाहैमच्छअहेराखेलै ४ कहकबीरयह अद्भुतज्ञाना कोयहिज्ञानाहिबूझै। बिनुपंखैउड़िजाहिअकाशै जीवहि मरण न सूझै ५ ॥

बूझिलीजैब्रह्मज्ञानी।

घोरिघोरिबरषाबरषावै परियाबुंदनपानी १

हे ब्रह्मज्ञानी आप बूझिये तौ घोरिघोरि कहेनयेनये ग्रन्थनको बनाइकै कहे माया ब्रह्मजीव एकैमें मिलाइडारयो कि एकहीब्रह्महै वही बाणी शिष्यनके श्रवणमें बर्षा ऐसो बर्षावोहौ परन्तु तुम्हारे बानीरूप पानीको बुंदहू न उनके परयो अर्थात् तनकऊ ज्ञान न भयो वे ब्रह्म कबहूं न भयो सो तुम्हारो यह हवाल ह्वै रह्योहै १ ॥

चींटीकेपगहस्तीबांधे छेरीबीगैखायो।

उदधिमाहँतेनिकसिछांछरी चौड़ेगेहकरायो २

चींटी कहिये वुद्धिको काहेते कि सूक्ष्म होइ है कुशाग्रवर्त्ती शास्त्रमें कहैहैं ताके पाइमें मतंगरूप जोमनहै ताको बांधिदियो मनवड़ा है औ दुर्वारमतहै याते हाथीकह्यो तब छेरी जोहैमाया सोबीगाजोहै जीव ताकोखाइलियो जीवको बीगा काहेते कह्यो किजोजीव आपने स्वरूपको जानैतौ छेरीजोहै मायाताकोनाशकै

देइ सो छेरी मायही बीगाजीवको आपने पेटमें डारिलियो अस छेरी मायाको कहै हैं तामेंप्रमाण ॥ अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां इत्यादि सोलोकप्रकाश जो उदधि तहांतेनिकरिकै चौडीछांछरी जो संसार तामें मच्छरूप जीव घर मायाते वनवायो अर्थात् संसारी ह्वैगयो २ ॥

मेढुक सर्परहै इकसंगै बिल्ली श्वान बियाही ।
नितउठिसिंहसियारसोंजूझै अदभुतकथोनजाही ३

वह कैसोसंसारहै जहां मेढुकजीव औ सर्पकाल एकैसंगरहै हैं नाना शरीरनको कालखातजाइहै पुनिपुनिशरीरहोतजाइहैअरु बिल्ली जो है मानसीवृत्ति सो श्वान भवानन्द ताको बिवाहीगई अर्थात् वाहीमेंलगिगईवृत्तिको बिल्लीकाहेतेकह्यो कि बिल्लीजहां गोरसदेखै है तहैंजाइहै औयहवृत्तिजोहै सोऊजहैंरसजोहैसुखसो देखै है तहैंजाइहै सोश्वान भवानन्दमें वहुतसुखदेख्यो यातेवाही को बिवाहीगई तब नित उठिकै सिंह जोज्ञान सोसियार अज्ञानते मारोजाइहै जोकह्योज्ञान तोअज्ञानको नाशकरनवारो है अज्ञान ते ज्ञान कैसे नाश होइहै सो वह जो ब्रह्मज्ञान कियो कि हम ब्रह्महैं सो अद्भुतहै कहिवेलायक नहीं है नेतिकहैहै अर्थात् कोई जीव ब्रह्म नहीं भयो यह कौनेहू शास्त्र पुराणमें नहीं कह्यो कि फलानो जीव ब्रह्मह्वैगयो याहीते मूलाज्ञान में ठहराये हैं ३ ॥

संशय मिरगा तन बन घेरे पारथ बाना मेलै ।
सायरजरै सकल बनडाहै मच्छ अहेरा खेलै ४

येई दुइतुक अधिकलेजानेपरै हैं परन्तु पोथीमें लिखोलख्यो अर्थ करिदिया सो शरीर वनको संशय जो मिरगाहै सो घेरे है औ पारथजेहैं गुरुवालोग तेसंशयरूपी मृगाकेमारिवेको बाण जो है नानाप्रकारको उपदेशरूप बाणी ताकोमेलै हैं सो उनको बाणीन ते संशय तो नहीं दूरि होइहै कहाहै सो कहै हैं सायर जो है विवेकसागर सो जरिजाइहै औ नाना शरीर जेवनहैं ते लायदेइहैं

अर्थात् गुरुवनकी वाणी सुनिसुनिकै शिष्यलोग जब और और जीवनको उपदेश कियो तब उनको सबको साहबको विवेक जरिझरिगयो औरेऔरेमें लगिगये विवेककरिकै साहब को ज्ञान जो ह्वैबेको रहै सो न भयो तब संसार समुद्रमें मच्छ जो है काल सो अहेर खेलै है अर्थात् जीवनको खाइहै ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना को यहि ज्ञानहि बूझै ।
विनु पंखै उड़िजाहि अकाशै जीवहि मरण न सूझै ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह संसार अद्भुतहै औ ब्रह्म अद्भुतहै इन दूनोंको ज्ञान जिनको है कि येधोखाहै ऐसोकोहै अर्थात्कोई नहींहै परन्तुजोकोई विरलाबूझनवारोहोइ औमनमायायेदोनों धोखाहैं इनहीं तहैं उड़ै हैं नाना पदार्थनको स्मरणहोइहै नाना योनिपावै हैं संसारमें तिनको छोड़ि एकपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र हीको ह्वैरहै तौ ब्रह्म जो है आकाश ताते उड़िकहे निकसिकै साहबकेयहां पहुँचैजाइ जो कहो बिनापखना कैसे उड़िजाइ सो यहां उपासना दुइप्रकारकी हैं एक बांदर कैसो बच्चा भजनकरै है कि बांदरको बच्चा अपनी माताको आपही धरेरहै है सो यहजीव नानाप्रकारके शास्त्रादिकनते विचारकरिकै औ असांचमतखंडन करिकै आपही अपने साहबको धरेरहै है भ्रममें नहीं परै है औ दूसरी उपासना बिलारीके बच्चाकीसी है बिलारीको बच्चा और सबकी आशा तोरे माताकी आशा किये रहै है सो वह बिलारी अपनेबच्चाको जहां सुपासदेखै है तहां आपहीउठाइलैजाइहै तैसे यह जीव वेद शास्त्रको छोंड़िकै न काहूकेमतके खण्डनकरिबेकी सामर्थ्य है न अपने मतके मण्डनकरिबेकी सामर्थ्य है साहबको जानै है कि मैं साहबकाहों दूसरोमत सुनतही नहीं है सोजबसब पक्षकोछोड़िकै साहबकोह्वैरह्यो तबयाकोसाहबहीहंसस्वरूपदैकै अपनेलोकको उठाइलैजाइहै ५ ॥ इतिबावनवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ तिरपनवांशब्द ॥

गुरुमुख॥ वहबिरवाचीन्हैजोकोई।जरामरणरहितैतनहोई १ बिरवा एकसकलसंसारा। पेड़एकफूटलतिनडारा २ मध्यकेडारचारि फललागा। शाखापत्रगनतकोवागा ३ वेलिएकत्रिभुवन लपटानी। बांधेतेछूटिहिनहिंपानी ४ कहकवीरहमजातपुकारा। पण्डितहोय सोकरैबिचारा ५॥

वहबिरवाचीन्है जोकोई। जरामरण रहितै तनहोई १

जो बिरवाको आगे वर्णनकरै हैं ताको जो कोई चीन्है औ असार मानि लेइ औ सार जो साहबहैं तिनको जानै सोपार्षद स्वरूप ह्वैजाइ औ जन्म मरणते रहितह्वैजाइ १॥

बिरवा एक सकल संसारा। पेड़एकफूटलतिनडारा २
मध्यकेडारचारिफललागा। शाखापत्रगनतकोवागा ३

सो एकबिरवा सब संसार है तौने बिरवाको पेड़कहे मूल बिराट् पुरुष है तौनेमें ब्रह्मा विष्णु महेश तीनिडार फूटयोहै २ सोमध्यकी डार जे विष्णुहैं तिनमें अर्थ धर्म काम मोक्ष येचारि फल लागतभये चारिफलके देवैया विष्णुहैं सो जो कोई विष्णु का उपासकहोइ सो चारों फलको पावै है डारन जो डरैया कहे हैं ते शाखा कहावै हैं सो ब्रह्मा विष्णु महेश जे तीनि डारै हैं तिनते नानादेव नानामत भये तेई शाखा हैं तिनको गनत बागाहै अर्थात् उनको अन्त कोई नहीं पायो औ सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी जे नानावासना होतभई तेई पत्र हैं ३॥

वेलिएक त्रिभुवनलपटानी। बाँधेतेछूटिहि नहिंपानी ४
कहकबीरहमजातपुकारा। पंडितहोयसोकरै बिचारा ५

वृक्षमें वेलि लपटै है सो यह संसाररूपी वृक्षमें आशारूपी बेलि लपटिगई है तामेंबँधिकै प्राणी छूटै नहीं है ४ साहबकहै हैं कि हे कबीर कहेजीव तोको संसारजातमें हमपुकाराहै रामनाम

को सो पंडित होइ तौ विचार करिलेइ अर्थात् असार जो राम नाममें जगत्मुख अर्थ ताको छांड़ि राममें सार जोमैं ताकोजानिके रामनाम जपिकै मेरेपास आवै ५ ॥

इति तिरपनवांशब्दसमाप्तम् ॥

—c—

अथ चौवनवांशब्द ॥

साईंकेसँगसासुरआई । संगनसूती स्वादनमानिगयोयौबनसपनेकिनाई १ जनाचारि मिलि लगन शोचाईजनापाँच मिलिमंडपछाई । सखी सहेली मंगलगावैं दुखसुख माथे हरदि चढ़ाई २ नानारूप परीमनभांवरि गांठीजोरिभईपतिआई । अरधेदैदैचली सुवासिनि चौकहिरांडभई सँगसाईं ३ भयोबिवाहचलीबिनदूलह बाटजान समधीसमुझाई । कहकबीर हमगौनेजैबै तरबकंत लैतूरबजाई ४ ॥

यह जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्र की शक्तिहै सो जौनी भाँतिते याको आपने स्वरूप को ज्ञान रह्यो है औ फिरि भयो है सो लिखै हैं ॥

साईंकेसँगसासुरआई ।
संगनसूतीस्वादनमानीगयोयौबनसपनेकीनाई १

परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके लोकको प्रकाश जो ब्रह्महै ताको साईं मानिकै ताहीसंग सासुर जो यहसंसारहै तहाँआई सासुर संसारकाहेते ठहरयो कि अहंब्रह्म बुद्धि संसारहीमेंहोइहै जब संसारकेबहिरेरहै है तबतोयाको सुधिही नहीं रहै है जब महाप्रलय ह्वैजाइहै तब सत् जो है साहब के लोकको प्रकाश ब्रह्मताहीमें सब रहै हैं जब उत्पत्तिका समयभयो सरतिपायो तब आपनेको लोकप्रकाश ब्रह्ममान्यो तब मनभयो मनते इच्छाभई तब यह ब्रह्मकहै हैं कि मैं जीवात्मामें प्रवेशकरिकै नामरूप करिकैहौं सो जीवात्मामें प्रवेशकरिकै नामरूप जीवात्माके करतभयो याहीते

याको साईं मानिकै चित शक्ति जीव सासुर जोसंसार तहां आवत भयो सो वह ब्रह्मको खसम मानि लेवो धोखाहै काहेते कि वह तौ निराकारहै सो वाके संग न सोवत भई न स्वाद पावत भई नानारूप धरत भई तेई यौवनहैं जेलपने के नाईं जातभये सो जौनी भांति चितशक्ति जीव साईंके संग ससुरेमें आई सो लिखैहै अपने को ब्रह्ममान्यो तब संसार की उत्पत्ति भई तामें प्रमाण कबीरजीके शब्द मंगलको ॥ सोउत्पत्तिबीजहै शून्यप्रलयकरठाउँ । तनछूटेवहजाइहौ अकहवसायो गाउँ १ ॥

जनाचारिमिलिलगनशोचाईजनापांचमिलिमंडपछाई ।
सखीसहेली मंगलगावें दुखसुखमाथे हरदिचढ़ाई २

जनाचार कहे मन बुद्धि चित्त अहंकार येजेअंतष्करण चतुष्टय हैं तेई मिलिकै लग्न शोचावतभे अर्थात् जीवको शरीरकी लग्न लगावतभे औ जनापांच कहे पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश ये पांचों तत्त्व मिलिकै मंडप छावत भये शरीर बनावत भये औ सखी सहेली जेहैं पांचकर्मेन्द्री ते मंगल गावैहैं गाइबो कहाहै कि रूप रस गंध स्पर्श शब्द ये विषयको लेनलगे और नानाप्रकार की जे पुण्य पापकी वृत्तिहैं तेई कुवांरी कन्या हैं सो नानाप्रकार के पुण्य पाप कराइकै दुःख सुख की हरदी जीवरूप दुलहिनि के माथे चढ़ावै हैं २ ॥

नानारूपपरी मनभाँवरि गांठिजोरिभई पतिआईं ।
अरघै दैदैचलीसुवासिनि चौकहिरांडभईं संगसाईं ३

औ नानारूप कहे नानाभांति की जे वासना हैं तिनहीं की याके मनमें भांवरि परिगईहै औ चित अचित की गांठी परिगई ताहीते ब्रह्मको पतिआइकहे पतिआइ गईहै अर्थात्ब्रह्मको पति मानि लियोहै कि वह ब्रह्महीं हौं हेतु यहहै कि जब विवाह ह्वै जाइहै तबस्त्री अर्द्धांगी ह्वै जाइहै औ सुवासिनि वे कहावैहैं जे या

कुलकी कन्याअनत विवाहीरहैहैं सो जबसंसारमेंजीव ब्रह्मफांस में फँसिगयो तब सुवासिनिजेहैं साहबके जनैया जिनको ब्रह्मसों विवाहनहींभयो तेअरघ देकै कहे उपदेश करिकै वाकोलैचले सो यद्यपि याको चौकाबनोहीहै लड़येकेतर बैठीहीहै अर्थात यद्यपि संसारमें शरीरधारणकियेहै परंतु तहैं रांड़ ह्वैगई ब्रह्मकोपतिमानि राख्योहै सोविचारमरिगयो अर्थात् वाकोधोखासमुझिलियो इहां रांड़ह्वैबो कहिआये औ सांच साईंको संगबनेहै यहजो कह्यो सो साहब सर्वत्र बनैहै वह अहंब्रह्मको विचार मिटिगयो ३ ॥

भयोविवाहचलीबिनदूलह बाटजातसमधी समुझाई ।
कहकबीर हमगौने जैबे तरबकंतलै तूर बजाई ४

सोइसतरहते बिवाहभयो कहेइसतरहते संसारीभयो औ पुनि विन दूलह चलतभई कहे अहंब्रह्म बुद्धि न रहिगई मुक्तिह्वै के चितशक्ति जीव साहबके पास जाइबे की गैललियो सो वह बाट जातमें समधीजोहै शुद्ध समष्टि जीव सो याको समुझावतभयो कि जैसे हम शुद्धहैं तैसे तुमहूं शुद्धहो अर्थात् जब जीव साहबके लोक प्रकाशको बेधिकै साहबके लोकको चल्यो तब यहसमुझत भयो कि जैसे येशुद्धरहे हैं तैसे हमहूं शुद्धरहेहैं यह बीचहीमें धो-खाभयोहै उनको देखिकै यहज्ञानभयो यही उनको समुझाइबोहै यही समुझिबो है सो कबीर जो है कायाकोबीर जीव सो कहै है कि मनवचनके परे जोसाहबके ऊपर दूसरोसाहबनहीं है जासों हमारो विवाह ह्वैबोको नहीं है वह हमारो सदाको कंतहै तहां हम गवनै जाइहैं अर्थात तहांको हमगवनकरैंगे अरुवाही कंतको लैकै कहेपाइकै तरिजाब औरे कंतकोलैकै न तरैंगे औतहैं परम मुक्तिरूपी तरबजावेंगे अर्थात् और ईश्वरनमें लागे औ आपनेको ब्रह्म माने मुक्तिरूपी तूर न बाजैगो अर्थात् संसार औसबउपास-ना औ ब्रह्महृवै जाइबो ये सब तूरिकै साहबके पास जाइकै अर्था-त् डंकादैकै जाइगो ४ ॥ इति चौवनवांशब्द समाप्तम् ॥

अथ पचपनवां शब्द ॥

नलकोढाढस देखोआई। कछुकअकथकथाहैभाई १ सिंहशार्दूल यकहर जोतिनि सीकसबोइनिधाना। बनकी भुलइया चाखुर फेरै छागरभयेकिसाना २ कागा कपरा धोवन लागे बकुलाकिररे दांता। माछीमूड़ मुड़ावनलागी हमहूं जाव बराता ३ छेरीबाघहि व्याह होतहै मंगलगावैगाई। बनकेरोझधै दाइज दीन्होगोह लोकंदै जाई ४ कहै कबीरसुनोहोसंतो जोयहपद अर्थावै। सोई पंडित सोई ज्ञाता सोई भक्तकहावै ५ ॥

जिनकोसतगुरु मिले तिनको याभांतिउद्धारह्वैगयो औ जिनको सतगुरुनहीं मिले जे सतगुरुको नहींमान्यो तिनकोगुरुवा लोग और और मतमें लगाइदेइहैं वे साहबको नहीं जानेहैं सो कबीरजी कहैहैं ॥

नलको ढाढ़स देखो आई। कछुक अकथ कथाहै भाई १

साहब कहते हैं कि हेभाई हेसन्तौ ढाढ़सदेखो यहजीवमेरो अंशहै सो मोको नहीं जानै है और औरमें लागिकै खराबहोइहै नानादुःख सहै है मोको जानिकै दुःख नहीं त्यागकरै है बड़ो ढाढ़सी है सो हेभाइउ ढाढ़सकरिकै जौनेकेलिये जामें यहलागै है सो ब्रह्म अकथकथाहै कहिबेलायक नहीं है वह ब्रह्मविचारझूंठा है वहां कछु प्राप्ति नहीं है सो अकथकथा कहै हैं १ ॥

सिंहशार्दुल यकहरजोतिनि सीकस बोइनि धाना। बनकी भुलइया चाखुरफेरै छागरभये किसाना २

यहां सिंहजोहै जीव शार्दूलजोहै मन येई दोऊबैलहैं कर्मजोहै सोई हरसंसार सीकस भूमिहै कहै ऊसर भूमिहै अजा कहावैहै माया सोई छेरी ताको पति बोकराहै सोछागर कहावै तेईमाया में लपटे किसान गुरुवालोग सो जोतिकै उपदेशरूप धानबोवत भये औतौनेन बानावकेजेभुलइया कहै भुलावनहारे पण्डिततेई

चाखुर फेरैं कहे निरावैहैं अर्थात् ताते वृत्ति करिकै वेद जोसाहब को बतावैहै ताको अर्थफेरिडारैहै २ ॥

काागा कपरा धोवन लागे बकुला किररें दांता ।
माछीमूड़ मुड़ावन लागीं हमहूँजाब बराता ३

नाना पाखंड मतमें परेऐसे जेहैं मलिन पाखंडीजीवतेई काग हैं ते कपरा धोवनलगे कहे सबको उपदेश करै हैं किहमारे मत में आवो तौ हम तुम्हारो अंतष्करण शुद्धकारिदेइँ औरूपकपक्षमें जब बरात जाइहै तब सबुनी करिकैलोगजाइहैं ताते यहां सबुनी करिबो लिख्यो अरु जिनके अंतष्करणरूपी धोवनको वेउपदेशकियो तेई बकुलाभये कहे ऊपरते तो वेष बनाये चन्दनटोपी दिये हैं औअंतष्करण मलीनहै बिषयमें चित्तलगाये रहैहैं जहां कोई संतमत कहनलगैहै ताको खण्डन करिडारैहैं दांत किररै हैं कहे कोप करैहैं जैसे बकुला ऊपरते तोस्वच्छहै औ नदीके तीर मछरी खाइबेको बैठै है भीतर वासना मलीन भरी है हंस आवैहै तिनको डेरवायकैबैठन नहींदेइहै दांतकिररैहै तैसेबरात जबचलै है तब कारिंदा कामकाजी सपेद कपरा पहिरि दांत किररै हैं कि यह कामकरो वह कामकरो कहांबैठेहो यह रिस करैहैं औ माछी कहे जो माया ते क्षीणह्वैवेको बिचारकरै हैं तेमाछी कहवावै हैं अर्थात् मुमुक्षू ते नानामतकेजे गुरुवालोगहैं तिनके यहांमूड़ मुड़ावैहैं कि हमहूं बरातजाब कहे हमहूं मुक्तिहोब सोवहां मुक्ति तो पायो नामहि पर रूपी मीठी वाणीमें परिकै आपनेको ब्रह्म मानतभये देहितेस्वस्वरूपको ज्ञान न रहिगयो मायामें फँसगये औरूपक पक्षमें दुलहाके संगतीजेहैं ते बार बनवावै हैं ३ ॥

छेरी बाघहि ब्याह होत हैं मंगल गावै गाई ।
बनके रोझधै दाइज दीन्हो गोहलोकंदैजाई ४

अब ब्याहको रूपक कहै हैं गुरुवालोग जेहैं तेई पुरोहित हैं उपदेश करनवार ते छेरीजोहै मायाताकोऔबाघजोहै जीवताको

ब्याहहोतहै अर्थात् जीवको मायामें डारिदेइहै औछेरी जो है मायाताको वाघजोहै जीवसो खाइलेनवारोहै अर्थात् जो जीव आपने स्वरूपको जानै तौ मायाकोनाश करिदेइ अरु तहांगायरूपी जो गायत्री है सोमंगलगावै है अर्थात्सब जीवको कर्त्तव्य गायत्री गावै है वेदगायत्रीते कह्योहै औबनकहे वाणीको रोझ जो है प्रणव ताको दाइज दीन्हो यहांरोझको प्रणव काहेते कह्यो कि रोझगवै कहावैहैं काहेते कि गोकीसदृश होइहै सो गैयाजो है गायत्री ताके सदृश प्रणवही है अर्थात् वह गायत्री प्रणवहीते निकसी है प्रणव ब्रह्महै ताकोदाइजदीन्हो कहे ब्रह्ममेंहींहौं यहप्रणवको अर्थ समुझाइ दीन्हो कन्याकेसाथ जो डोलहाई जाइहैं तेलोकंदी कहावै हैं सो यह लोकोक्तिहै मिथिलाकैती कहै हैं सोगोहजोहै सोलोकंदेंजाइहै कहेडोलाकेसाथजाइहै वहांगोहकहे गो जो इन्द्रीहैं जब जीव मायामें लपटै तब भौर चंचल ह्वै जाइ है नानाशरीररूप डोलामें चढ़ाजीव ताही के साथ साथ जाय है ४ ॥

कहै कबीर सुनोहो संतौ जो यह पद अर्थावै ।
सोई पण्डित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावै ५

सो कबीरजी कहै हैं कि यह साहबको कह्यो जो यह पद है ताको हे संतौ तुम सुनौ इसपद में जे भ्रम वर्णनकियो तिनको छोडिकै यह पद को अर्थ सांचजो साहब ताको जानै असांचको छोड़ै सोई पण्डित है सोई ज्ञाता है सोई भक्त है ५ ॥

इति पचपनवां शब्द समाप्तम् ॥

श्री कबीरजी साहब की उक्तिमें कहैहैं गुरुमुख ॥

अथ छप्पनवां शब्द ॥

नलकोनहिंपरतीति हमारी । झूठे बनिज कियो झूठेसनपूंजी सबैमिलिहारी १ षट्दर्शन मिलिपन्थचलायो तिरदेवा अधिका-

री। राजादेश बड़ोपरपञ्ची रइअतरहत उजारी २ इत ते उत औ उत ते इतरहु यमकी सांट सँवारी। ज्यों कपिडोर बांधि वाजीगर अपने खुशी परारी ३ यहै पेठ उतपत्ति प्रलयको बिषया सबै विकारी। जैसे श्वान अपावन राजी त्यों लागी संसारी ४ कहकबीर यह अद्भुत ज्ञाना मानो वचन हमारो। अजहूं लेहु छोड़ाय काल सों जो घट सुरति सँभारो ५॥

नर को नहिं परतीति हमारी।
झूठे बनिज कियो झूठे सन पूजी सबै मिलिहारी १

सबते गुरु परम पर पुरुषपर श्री रामचन्द्र कहैहैं कि, नरको हमारी परतीतिनहींहै सबलोग झूठेसों झूठबिनिजकरतभयेकहे झूठे ब्रह्ममें जे लगावैहैं ऐसे जे गुरुवा लोग हैं सौदागर तिनसों झूठी बनिज करतभये कहे झूठेब्रह्ममें लगावैं हैं ऐसे जे गुरुवा लोगहैं सौदागर तिनसों झूठी बनिज करतभये अर्थात् जो वे उपदेश कियो कि तुमहीं ब्रह्महौ सो झूठाहै तासों बनिज करिकै पूजी सबहारिगयो कहे आपनी आत्माको ज्ञान भूलिगयो कौन ज्ञान भूलिगये कि यह आत्मातो मेरो सदाको दास है बद्धहू में मुक्तहूमें है तामें प्रमाण॥ दासभूताःस्वतः सर्वेह्यात्मानः परमात्मनः। नान्यथालक्षणन्तेषांबंधेमोक्षेतथैवच॥ इतिपद्मपुराणे॥ जो कहौ भुलवाइ कौन दियो १॥

षट दर्शन मिलि पन्थ चलायो तिरदेवा अधिकारी।
राजा देश बड़ो परपञ्ची रइअत रहत उजारी २

औ षटदर्शन जेहैं ते मिलिकै नानापन्थ चलावतभयो कोई योगी ह्वैकै योगधारण करनलग्यो औकोई अनुभव कथिकैशून्य ज्ञानपन्थ चलायो अरु कोई नाना प्रकारके कर्म करने लगे औ कोई नाना उपासना करनेलाग्यो औ कोई मैं ब्रह्महौं यहकहने लग्यो औ कोई कर्त्ता न्याराहै यहकहने लग्यो औ कोई मतछोड़िकै आत्मामें स्थितभयो या ब्रह्माण्डमें ब्रह्माविष्णुमहेश अधि-

कारी हैं ते सब मतनके अधिष्ठाताहैं या हेतुते सतरजतम ते कोई नहीं छूट्यो औ ओई राजा जेहैं ब्रह्मा विष्णु महेश औ उनको देश जोहै सतरजतम सो बड़ो परपंची है याहीते रइअत जे सबजीव हैं तिनके अन्तष्करण उजारि रहेहैं सोर जो है भक्ति सोरे जो है ज्ञानसो उनको अन्तष्करणमें नहीं होन पावे है २ ॥

इततेउतरहुउततेइतरहु यमकीसांटसँवारी।
ज्योंकपिडोरबांधिबाजीगरअपनेखुशीपरारी ३

तेहिते इतउत कहे कहूं स्वर्ग जाइहै कहूं नरक जाइहै कहूं आपने उपास्यदेवतनके लोकजाइ फिरि इहां आयकै उन्हीं की उपासना करे है औ पुनि जब उपासना भूले तब पुनि पाप करिकै नरकजाइहैं तिनकेवास्ते यमकीसांट सँवारी कहे यमके दण्ड ते नहीं बचैहै जौने कपि कहे वाँदरको बाजीगर अपनी डोरीते बांधे है औ वहवाँदर बाजीगर के वश ह्वै गयो तब अपनी खुशीते वाके बन्धन में परो रहैहै नानानाच नाचैहै प्रथमचित शक्तिमें जगत्को कारणरूप बनोरह्यो ताते याही भांति सबजीव माया ब्रह्मके वश ह्वैगये तब वहीं बंधनमें अपनी खुशीतेपरे रहे हैं वही ब्रह्मको ज्ञान करै हैं मोको नहीं जानै हैं ३ ॥

यहैपेठउत्पत्तिप्रलयको विषयासबैबिकारी।
जैसेश्वानअपावन राजी त्यों लागीसंसारी ४

यहै मायाब्रह्म उत्पत्ति प्रलयको पेठहै अरु संसारमें जे संपूर्ण विषयहैं तेई विकारहैं याते मोहिं ते व्यतिरिक्त जे पदार्थ संसार में ज्ञान योग वैराग्यभक्ति आदि जे हैं ते सब विषयहैं या हेतु ते कि जामें जामें मन लगै है ते सबमनकी विषयहैं ते सब बिकारई हैं औ जोयहै पेठ उत्पत्ति प्रलयको सौदा सबैविकारी ऐसो पाठ होइ तौ यह अर्थ पेठ नाउँ हाटको यह देश भाषाहै सो अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनके उत्पत्ति प्रलय को माया ब्रह्म दोनों तरफकी पेठ कहे बाजार हैं सो यह जगत् शहरहै विषयरूपी सौदा जो है

ताके संसारी जीव लगनवारेहैं सो जैसे श्वान कुत्तासों अपावन जो हाड़है ताको चाटैहै तब वोहीके दांतते लोहू निकसैहै सो हाड़ में लगैहै सोऊ चाटतै जायहै वही में राजीरहैहै तैसे यह आत्मा अपने भ्रममेंपराहै वहीको भ्रम नानाविषयमें सुखरूप देखीपरैहै सो विषय तो जड़है विषयमें सुख नहीं है यहीको सुख विषयन में जाइरहैहै आपने सुख विषयमें पावैहै अरु मानै यहहै याही को सुख विषयन में जाइरहैहै आपनो सुख विषयमें पावैहै अरु मानैहै कि मैं विषयको सुखपाऊं हौं अरु वह ब्रह्मको अनुभव कियो तहां वाके आत्मै को सुख मिलैहै जानै यहहै कि मोको ब्रह्मानन्द भयोहै काहेते कि जब भर अहंब्रह्म बुद्धि रहैहै तबभर तो मूलाज्ञान ठहराइहै जब सबको निराकरण ह्वै गयो एक आत्माही को ज्ञान रहिगयो सो ब्रह्मानंद रूप होइहै तेहिते यह ब्रह्मानन्द आत्माहीको आनन्दहै सो जैसे श्वान आपनेही लोहू के स्वादते हाड़को चाटैहै तैसे यहौ आपनो सुख विषयब्रह्ममें पाइकै भूलि रह्यो संसारी ज्ञान याके लगि रह्योहै ४॥

कहकबीरयहअद्भुतज्ञाना मानोबचनहमारो।
अजहूंलेहुंछोड़ायकालसों जोघटसुरतिसँभारो ५

सो हे कबीर कायाके वीर जीवो हमतुमसों यह अद्भुतज्ञान कहैहैं हमारो वचन मानो जो अपने घटमें सुरति सँभारो औ वह सुरति मोमें लगावो तौ अबहूं कहे माया ब्रह्ममेंतुम परेहौ ताहूपर तुमको कालते छोड़ायलेउं अथवा अजहूं को भाव यह है कि काल की डाढ़ में तुम परचुके हौ सो कालते तुमको छोड़ाइ लेउँगो ५॥

इतिछप्पनवांशब्दसमाप्तम्॥

अथ सत्तावनवां शब्द॥

नाहरिभजै न आदतछूटी। शब्दैसमुझिसुधारतनाहीं अँधरेभये

हियोकीफूटी १ पानीमाहँपपानकीरेखा ठोंकतउठैभभूका। सह-सवड़ानितहीजलढारै फिरिसूखेकासूका २ सेतेसेतेसंतसंगभो शयनवढ़ीअधिकाई । जोसन्निपातरोगिअहिमारै सोसाधुनसिधि पाई ३ अनहदकहतकहतजगविनशे अनहदसृष्टिसमानी । निकट पयानायमपुरधावै वोलहिएकहिबानी ४ सतगुरुमिलेवहुतसुख लहियासतगुरुशब्दसुधारै । कहकवीरसोसदासुखारी जोयहिपद हि विचारै ५ ॥

नाहरिभजैनआदतछूटी ।
शब्दैसमुझिसुधारतनाहीं अँधरेभयेहियोकीफूटी १

नातैं हरि भजैहै अरु नातेरी आवागमनकी आदतकहेस्वभा-वछूटयो यह अर्थसाहबके कहे शब्दको सुनिकै औ विचारिकैजो आपनोनहीं सुधारैहै सोकाहे नहीं सुधारै है काहेतेकि साहवकह-तई जाइहै कि जो मो को अवहूं जीव जानै तौ कालते छोड़ाय लेउँ ताते आंधरभये हियोकी तिहारी फूटिगई कहे यहै आदत करत करत वृद्धावस्थापहुंची इंद्रियन जवावदियो तामेंप्रमाण॥ नेहगयेनैनागये गयेदांतओकान। प्राणछरीदारहिगयेतेऊकहत हैं जान ॥ अवहूं तौजानौभजन करिकैछूटिजाउ १ ॥

पानीमाहँ पषानकीरेखा ठोंकत उठैभभूका ।
सहसघड़ानितहीजलढारै फिरिसूखेकासूका २

हेजीवौतुमवड़ेजड़हौ जैसेपानीमेंपाषाणकी रेखाकहे छोटीश-वेती पथरी डारिराखै तौऔरभभूका आगीकी उठनलगैहै चकम-कमें ठोंकेते तैसै जसजस साधु लोग उपदेश करत जाइहैं तस तस साहवको भजनतौ नहीं करोहौ और कामक्रोध आदिक जे आगीहैं ते तुमको जोर करत जाइहैं अर्थात् जव उपदेश करन लगैहै तब अधिक रिसकरन लगौहौ जैसे पाषाणमें नित हजारन घड़ा जलडारै पैपाषाण भीतरसूखे रहैहै तैसे केतऊज्ञान उपदेश करै परन्तु हेजीवौ तुमजड़के जड़ही वनेरहौहौ २ ॥

सेतेसेते सेत अंगभो शयनबढ़ी अधिकाई।
जोसन्निपातरोगिअहिमारैसोसाधुनसिधिपाई ३

सेतसेतजोब्रह्महै तामेंलगेलगे तुमभीतरबाहरसपेदह्वैगये अर्थात्वुढ्ढायगयेऊपरौकेरोमाबुढ्ढायगये ब्रह्ममें सोवत सोवततोको आपनोस्वरूपभूलिगयो तब शयनमेंकहे सोवनमें अधिकाई बढ़ी कहे अधिक सोवनलगे अर्थात् समाधिकरनलगे अपनीआत्माको ज्ञान औसाहबको ज्ञान औ जगत्भूलिगयो पिशाचवत् मूकवत् जड़वत् उन्मत्तवत् बालवत् तेरीदशा ह्वैगईसोई लक्षणसन्निपातमें होइहैसो तोको सन्निपातभयोहै सन्निपातरोगि याको मारैहै औ उनकोआत्माको ज्ञानभूलिजाइहै ब्रह्मह्वैबो साधुलोग सिद्धि पाईहैं कि हम सिद्धहैं यह मानि लेइहौ आत्माकोब्रह्मह्वैबो असिद्धहै सो आगेकहैहैं सीते सीते पाठहोइतौज्ञानकरतकरत कि संसारतापहमारोछूटिजाइ शीतअंगह्वैगये कहेसन्निपातकी अधिकाईतुम्हारे अंगमें बढ़िआई अर्थात् सन्निपात में खबरि देहकी भूलिजाइहै औ रोगियनको मारैहै सोई साधुलोग सिद्धिपाई है कि हमको देहकी खबरि भूलिगई हम सिद्धह्वैगये ३॥

अनहदकहतकहतजगबिनशे अनहदसृष्टिसमानी।
निकट पयाना यमपुरधावै बोलहि एकैबानी ४

वहजोब्रह्महै ताकी हदनहींहै ताको अनहद कहतकहत कहे नेतिनेति कहतकहत संसार बिनशिगयो अनहद जोब्रह्महै तामें सृष्टिके सबलोग समाइगये औ सृष्टिमें वह अनहद ब्रह्म समाइ गयो सोमानत तोयहहै कि सब ब्रह्महीमें समाइहै कहे ब्रह्मैह्वै जाइहै परन्तु निकट पयाना यमपुरही को धाइबो है अर्थात्आपनेको ब्रह्ममानिकै ब्रह्मनहीं होइहै यमपुरहीको चलेजाइहैं तेऊएकही बाणिबोलैहैं कि एक ब्रह्मही है दूसरानहीं है तामें धुनि यहहै कि अरेमूढ़ एकतो ब्रह्महै नरकै कौनजायहै ४॥

सतगुरुमिले बहुतसुख लहिया सतगुरुशब्दसुधारै।

कह कबीरसोसदा सुखारी जो यहिपदहि विचारै ५

हेजीवौ तुमको सतगुरु मिलैतौ वेरामनामरूपी पदमें साहबमुख अर्थ वताइदेइँ तौनेको जोतुम विचारौ तौवहुत सुखपावौ श्रीकबीरजी कहैहैं जे शब्दनको अनर्थअर्थ वताइकै गुरुवालोगन बिगारिडारयोहै तेशब्द सतगुरु सुधारैहैं काहेते अनर्थअर्थ खंडन करिकै वे वेदशास्त्रादिकनके शब्दके तात्पर्यार्थ छोड़ाइकै साहब मुख अर्थ बताइदेइहैं सो जो वा शब्द जोरामनाम ताको जगत् मुख अर्थ बताइ देइ है सो जो कोई रामनामरूपी पदमें साहब मुख अर्थ बिचारै सो सदा सुखी रहै है ५ ॥

इति सत्तावनवां शब्द समाप्तम् ॥

अथ अट्ठावनवां शब्द ॥

नरहरलागीदवविकार विनईंधनमिलनबुझावनहारा। मैंजानो तोहींतेव्यापैजरतसकलसंसारा १ पानीमाहँअगिनिकोअंकुरमिलनबुझावनपानी। एकनजरैजरैनौनारियुक्तिनकाहूजानी २ शहरजरैपहरूसुखसोवैकहैकुशलघरमेरा। कुरियाजरैवस्तुनिजउवरै विकलरामरँगतेरा ३ कुविजापुरुपगलेयकलागीपूजिनमनकी साधा। करतविचारजन्मगोखोंसाईतनरहलअसाधा ४ जानि बूझिजोकपटकरतहै तेहिअसमन्दनकोई। कहकबीरसवनारि रामकी मोतेऔरनकोई ५ ॥

नरहरलागीदवबिकारविन. ईंधन मिलनबुझावनहारा।
मैं जानों तोहीं ते व्यापै जरत सकल संसारा १

हे नरहर दवलागी कहे तेरे स्वरूपकी हरनवारी मायारूपी दवारि लागी है तैं कैसाहै विकारविन तौ मायातोको काहे को लगी है तौ विना ईंधनको बुझावनवारो तोकोनहीं मिल्यो जो तोको समुझाइदेइ कि तैंविन विकारको है जो मिलाहैसोनाना उपासना नानामत रूप ईंधनडारनवारा मिलाहैसाहबकोज्ञान

रूप जजडारै मायारूप दवारि कैसे बुझाय सो मैं जानौं हौं या मायारूपी दवारि तोहींते उत्पन्न भै अर्थात् मायादिक तोही ते भये ताहीमें सब संसार जरो जाइहै १ ॥

पानीमाहँअगिनिको अंकुर मिलनबुझावनपानी।
एक न जरै जरै नौ नारी युक्तिन काहू जानी २

सो वह मायारूपी अग्निको अंकुर पानी में है कहे नाना वेद शास्त्रादिक वाणी मेंहैं ते वेद शास्त्रादिकन के अर्थको बदलि के साहबको छिपाइकै मायारूपी अग्निको प्रकटकियो औतोकोऔरे औरेमें लगाइ दियो अर्थात् वे सबमतनको फल ब्रह्म ह्वै जाइबो बताइ दियो वह अग्निके बुझावनको वेद शास्त्रादिकन को जो सांच अर्थहै जल सो नहीं मिलैहै अथवा जेवेद शास्त्रादिकन के सांचअर्थ मुनिजनलोग बनाइगयेहैं बशिष्ठ संहिता शुकसंहिता हनुमत्संहिता अगस्त्यसंहिता सदाशिव संहिता सुन्दरीतंत्रादिक ग्रन्थ औ वेद शिरोपनिषद विश्वम्भरोपनिषदादिक सांचे मत के कहनवारे तेजलनहीं मिलैहै सोजब वह आगि लगी तब अद्वैत करि कै बहुत समुझावै है परन्तु एकवह आत्मा नहीं जरै औ साहब में जे नवधा भक्तिहैं तेनवनारी हैं ते जरै हैं सो यह युक्ति कोई नहीं जान्यो कि आत्मा ब्रह्म नहींहोइहै औ साहबकोजानै तौ वे नवधा भक्ति न जरैं २ ॥

शहर जरै पहरू सुखसोवै कहै कुशल घर मेरा।
कुरिया जरै वस्तु निज उबरैविकल राम रँगतेरा ३

औ शहरकहे साहब के मिलिवे के जेते ज्ञानहैं जीवात्मा के ते जरेजाइहैं औ पहरू जो आत्मा सो सुखसों सोवैहै कहेसाहब के बतावनवारे सन्तनहीं ढुरैहै जे आपने वाणीरूप जलसोंमाया ब्रह्मरूपी आगी बतावै सोवते रहैहै औ यह कहैहै कि मैं सच्चिदानन्दहौं सो मेरोघर जो है सच्चिदानन्द सो कुशलहै यहनहीं जानै है कि येसब तो जरिहीगये सो मैं हूं जरिजाउँगो एकमाया ब्रह्म

रूपी आगिही रहिजाइगी वही आगिमें तेरी कुरिया जोहै स्वस्व-
रूप ज्ञानकी सोऊ जरिजायगी अर्थात् जब ब्रह्माग्नि में सुषुप्ति
होयगी तबमैं सच्चिदानन्द रूपहौं यह ज्ञान न रहिजाइगो याही
ते तैंविकलहै सोयह करु जाते तेरी वस्तु जोहै साहबमें नवधा
भक्ति सो उबरै और और रंगमें लागिबो तेरो रंग नहीं है श्रीराम-
चन्द्रके रंगमेंरँगै यही तेरो रंगहै ३ ॥

कुबिजापुरुषगले यकलागी पूजिनमनकी साधा।
करत बिचार जन्मगो खीसा ईतन रहल असाधा ४

कुबिजापुरुषकहे अंगभंग पुरुष जोवह ब्रह्महै नपुंसकताको
एकमानिकै कि एकब्रह्महीहै ताकेगलेमें हैसाहबकी जीवरूपाश-
क्ति तैं लागी सोजैसे नपुंसक पुरुषके संग स्त्रीकी साधनहींपूजै
है तैसेवह ब्रह्ममें लगे तुम्हारी साध नहीं पूजैहै कहेवामें आनंद
नहीं मिलैहै वही ब्रह्मको विचारकरत जन्मखीसकहे वृथाजाइ
है तनकहे यहमनुष्य शरीर पाइकै असाधरहैहै कहेसाहब के मि-
लनको सुखनहीं पावैहै ४ ॥

जानिबूझिजो कपट करतहै तेहिअसमंद न कोई।
कहकबीर सबनारि रामकी मोते और न कोई ५

सो जानिबूझिकै जेलोग कपट करैहैंकहे वह धोखा ब्रह्म में
लगैहैं तिन ऐसो मंदकहे मूढ़ कोई नहींहै सो कबीरजीकहैहैं कि
जहांभर चितशक्ति जीवहैं तेसब श्रीरामचन्द्रकी नारिहैं सोमैं
जानौहौं याते मोते औरपुरुष साहबहै सोजेपरमपुरुषश्रीरामचन्द्र
को छोड़ि और पुरुष करैहैं तेछिनारिहैं सो जो छिनारिहैं तिनके
ऊपर संसाररूपीमार परोईचाहै तामें व्यंग्य यहहै कि जेपरम
पुरुष श्रीरामचन्द्रको पतिमानैहैं तेईमाया ब्रह्माग्निते बचैहैं ५

इति अट्ठावनवांशब्द समाप्तम् ॥

अथउनसठवांशब्द ॥

मायामहाठगिनिहमजानी। तिरगुणफांसलियेकरडोलेबोलै मधुरीवानी १ केशवकेकमला ह्वैबैठी शिवके भवनभवानी। पंडा केमूरति ह्वैबैठी तीरथमेंभइपानी २ योगीके योगिनि ह्वैबैठी राजाकेघररानी।काहूके हीराह्वैबैठी काहूके कौड़ीकानी ३ भक्तन के भक्तिनि ह्वैबैठीब्रह्माके ब्रह्मानी। कहैकबीर सुनोहो संतो यह सबअकथकहानी ४ ॥

मायामहाठगिनिहमजानी।
तिरगुणफांसलिये करडोलै बोलैमधुरीवानी १
केशवकेकमला ह्वैबैठी शिवके भवन भवानी।
पंडाकेमूरति ह्वै बैठी तीरथमें भइपानी २
योगी के योगिनि ह्वै बैठी राजाके घररानी।
काहू के हीराह्वै बैठी काहूके कौड़ी कानी ३
भक्तनके भक्तिनि ह्वैबैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहैकबीर सुनोहो संतो यहसबअकथकहानी ४

माया महाठगिनिहै हमजानी यहमायामाधुरीवानी बोलिकै त्रिगुण फांसते सब जीवनको बांधिलियो औ सबके घरमें नाना रूप करिकै बैठीहै केशवके कमलाह्वैके बैठी है औ शिवकेभवन भवानी ह्वैकै बैठीहै औ पंडाके मूरति ह्वैबैठी है औ तीरथमें पानी ह्वैरहीहै औ योगीके घरमें योगिनि ह्वैबैठीहै औ राजाके रानीह्वैबैठीहै औ काहूके हीराह्वैबैठीहै औ काहूके कानीकौड़ी ह्वै बैठीहै औ ब्रह्माके ब्रह्मानी ह्वै बैठीहै सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतो सुनो यहसबमायाको चरित्र अकथकहानी कहांलों वर्णन करैं यह माया सत असतते विलक्षणहै कहिवेलायक नहींहै अरु याको अंत नहींहै ४ ॥ इति उनसठवांशब्द समाप्तम् ॥

———०———

अथ साठवां शब्द ॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतनहरिलीन्हा १ जीवनऐसोसपनाजैसो जीवनसपनसमाना । शब्दगुरूउपदेशदियो तैं छांड्योपरमनिधाना २ ज्योतिहिदेखिपतंगहूलसे पशुनहिंपेखै आगी । कामक्रोधनलमुगुधपरेहैं कनककामिनीलागी ३ सय्यद शेख किताबनीरखै पण्डितशास्त्र विचारै । सतगुरुकेउपदेशविना तुम जानिकैजीवहिमारै ४ करौविचारविकारपरिहरौ तरततारनै सोई । कहकबीर भगवन्तभजनकरु द्वितिया औरनकोई ५ ॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतनहरिलीन्हा १

पूर्वजोवर्णन करिआये सोमायाजीवको मोहितकरतभई सांचमें असांचकी बुद्धिहोयहै मोहकोलक्षण सोयहआत्मा तोशरीरनते भिन्न सांचहै ताको शरीरकी बुद्धिभई कि शरीरमैंहौं मनादिक मेरे हैं यह असांचबुद्धिभई याहीतेमायामेंपरिगयो तब याको माया मोहते मोहित करिकै परमपुरुपपर श्रीरामचन्द्रहैंतिनैंको ज्ञानरतनजोरहै कि मैं उनको अंशहौं वे वड़ेरतनहैं मैंकनीहौं अल्पज्ञहौं परन्तु जाति उनहींकीहौं वेविभु आनंदहैं जैसे उनमें मनादिकनहीं हैं तैसेमैंजोउनको जानौं तौ महूं मनादिकनहींहौं यह जीवको ज्ञान रत्नमाया हरिलीन्हो १ ॥

जीवनऐसोसपनाजैसो जीवन सपनसमाना ।
शब्दगुरूउपदेशदियोतैंछांड्योपरमनिधाना २

यहजीवन ऐसोहै स्वप्नहै यह शरीरते दूसरे शरीरमेंगयो तब यह शरीरस्वप्नह्वैगयो औवहजीव स्वप्नजे सम्पूर्ण शरीरहैंतिनमें नहीं समान्यो वह शरीरते भिन्नहै काहेते मरिबो जीबो शरीर को धर्महै सो अपने स्वरूपको नहींजानैहै स्वप्न समानजे शरीर हैं तिनको सांच मानिलियोहै गुरूकहे सबतेगुरुपरमपुरुप परजे श्रीरामचन्द्रहैं ते शब्दजो रामनाम ताको उपदेशदियो कि तैंमेरो है सोमेरेपास आउ सो तौने शब्द में परमनिधान कहे तिनकै

रहिवेकोपात्र जो साहब सुख अर्थ है ताको शब्द छोड़िदियो औ संसारसुख अर्थ करिकै संसारीह्वैगयो २ ॥

ज्योतिहिदेखि पतङ्गहुलसै पशुनहिंपेखै आगी।
कामक्रोध नलमुगुधपरे हैं कनककामिनीलागी ३

जैसे दीपककी ज्योतिको देखिकै पतंग हूलसैकहे ज्योतिमें मिलिवेको जायहै परन्तुवहै पशुजो है अज्ञानीपतंग सोनहीं देखै है कि या आगी है यामें जरिजैहैं सोवही धसिकै जरिजायहै तैसे काम क्रोधादिकनमें जीव मुगुधपरे हैं या नहीं जानै हैं कि यामें जरिजायँगे ३ ॥

सय्यद शेख किताबनीरखै पण्डितशास्त्रबिचारै।
सतगुरुके उपदेशबिना तुमजानिकैजीवहिमारै ४

सो हे सय्यद शेखौ तुम किताब देखिकै नानाकर्मकरौहौ औ हे पण्डितौ तुम नाना शास्त्र पुराणपढ़िकै सुनिकैनानाकर्मकरौ हौ सतगुरुको उपदेश तौतुम लियोन असतगुरुन के पासजाइ जाइ उनहींको उपदेश पाइकै जानि जानिकै तुमअपनेजीवको मारौहौ कहे जनन मरण रूप दुःख देउहौ साहबके जाननवारे जेहैं तिनके पास नहीं जाउहौ जे साहबको बताइदेइँ औजन्म मरण तुम्हारो छूटि जाइ जानिकै आपनी आत्माकौ मारोहौतामें प्रमाण ॥ नृदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभं प्लवंसुकल्पंगुरुकर्णधारम्। मयानुकूलेननभस्वतेरितंपुमान्भवाब्धिंतनरेत्सआत्महा ॥ इति श्रीभागवते ४ ॥

करौविचारविकार परिहरौ तरनतारनैसोई।
कहकबीरभगवंतभजनकरु द्वितियाऔरनकोई ५

सो विचार करौ औ सम्पूर्ण जेविकार तिनको परिहरौ कहे छोड़ौ तरण तारण एक पुरुष पर श्रीरामचन्द्रही हैं श्रीकबीरजी कहैहैं कि तिनहीं को भजन करु उनते औ दूसरो तेरोछोड़ावन

वारो नहींहै इहां तरण तारण दुइकह्यो सो तरण जोहै मुक्तिह्वैवे की इच्छा ताते तारणवारोकोई नहींहै वोईहैं वहीमुक्तिकी इच्छा करिकै कोई ब्रह्मज्ञान कोई आत्मज्ञान कोई दहरोपासनादिक नाना उपासना करिकै तरनको चाहैहैं परन्तु कोई तरैनहीं हैं जब तरनकीचाह छूटिजाइहै तब मुक्तिहोइहै सोयह तरनकी इच्छाते एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही तारिदेइ हैं अर्थात् उनहींकीदीन मुक्ति दैजाइहै और की मुक्तिनहीं दीनिदेजाइहै जबभर तरनकी इच्छा होइहै तबभर मुक्तिनहीं होइहै तामें प्रमाण॥भुक्तिमुक्तिस्पृहायावत्पिशाचीहृदिवर्तते। तावद्भक्तिसुखस्यात्र कथमभ्युदयोभवेत् ॥ इतिभक्तिरसामृतसिंधौ ५ ॥

इतिसाठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथइकसठवांशब्द ॥

मरिहौरे तनकालैकरिहौ। प्राणछुटे बाहर लैधरिहौ १ कायबिगुरचनअनवनिबाटी। कोइजारै कोइ गाड़े माटी २ हिंदूलैजारै तुरुकलैगाड़े। ईपरपंच दुनौघर छाड़ै ३ कर्मफांस यमजालपसारा। ज्यों धीमर मछरीगहिमारा ४ रामबिनानल ह्वैहौकैसा। बाटमांझ गोबरौरा जैसा ५ कहकबीर पाछे पछितैहौ। याघरसोंजब वा घर जैहौ ६ ॥

मरिहौंरेतन कालैकरिहौ। प्राणछुटेबाहरलैधरिहौ १
कायबिगुरचनअनवनिबाटी। कोइजारैकोइगाड़े माटी २

हेजीवो तुममरिहौ तौ फिर तनलेहौ तौनेकोलैकै काकरिहौ का यातनतेकियोहै कावातनते करिहौ जबप्राण छूटैगो तब वाहू शरीरको लैकै बाहरै धरोगे १ सोया काया जोहै ताको बिगुरचन कहेछूटैमें भानिभानिबाटिहै काहेते कोईतो या कायाको जारैहै औ कोई माटीमें गाड़ैहै सो जो गाड़ैहै औ जारै है तिनको भव कहैहैं २ ॥

हिंदूलैजारै तुरुकलैगाड़ै । ई परपंचदुनौ घरछाड़ै ३
कर्मफांसयमजालपसारा। ज्योंधीमरमछरीगहिमारा ४
रामबिनानरकैहोकैसा । बाटमांभगोबरौरा जैसा ५

सो हिंदूजेहैं तेतोजारैहैं औतुरुकजेहैं तेगाड़ैहैं सोईदूनौ घरमैं जोपरपंचहै ताको तूछाड़ै ३ संसारमें यमराजकर्मफांसरूपीजाल पसारिराख्योहै जाही शरीरमें जीवजायहै तहैं मारिडारैहैं जैसे धीमर जौने डावरमें मछरीजायहै तौनेहीडावरते खैंचिकैमारिडारैहै तव शरीरकी नानाबाटिहोइहै भस्महोयहै कीराहोइहै विष्ठा होयजाय है ४ सो हे जीवो बिना साहबके जाने तुमकैसे होउगे बाटमें जैसे गोवरौरा जोई धावैजाय सोई कचरि देइहै मरिजायहै ५ ॥

कहकबीर पाछे पछितैहो । याघरसों जबवाघरजैहो ६

सोकबीरजी कहैहैं कि जब याघरसों वाघरजाउगे अर्थात् जब यह शरीर ते दूसरो शरीरधरौगे गर्भबासहोइगो तब पछिताउगे गर्भवास में साहब की सुधिहोइ है सोजब गर्भबासको क्लेश होइगो तब कहौगे कि हे साहब अबकीबार जो छुड़ावो तो फिर न ऐसेकाम करैंगे सोगर्भस्तुति श्रीमद्भागवतादिकनमें प्रसिद्धहै तेहिते यह व्यंगहै कि परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रकोजानो ६ ॥

इतिइकसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथबासठवांशब्द ॥

माईमैं दूनौकुल उजियारी । बारह खसम नैहरे खायो सोरहखायोससुरारी १ सासुननँदि मिलि पटियाबांधल भसुरापरलो गारी । जारों मांगमैंतासु नारिकी सरिवर रचल हमारी २ जना पांच कोखियामें राखौं औराखौं दुइचारी । पार परोसिनिकरों कलेवा संगहिबुधिमहतारी ३ सहजे वपुरी सेज बिछायो सूतल पाउँ पसारी । आउँ न जाउँ मरों ना जीवौं साहबमेटयोगारी ४

एकनाम मैं निजके गहिल्यो तौछूटल संसारी । एकनाममेंबांदिकै लेखौ कहै कबीरपुकारी ५ ॥

माई मैं दूनों कुल उजियारी ।
बारह खसम नैहरे खायो सोरह खायो ससुरारी १

चितशक्ति कहै है कि हेमाई कहे हेमाया मैं दुनोंकुलउजियार करनवारीहौं कहे मोहींते जीवकुल उजियारहै जीवछःप्रकारमुक्ति मुमुक्षु विषयविद्ध नित्यवद्ध नित्यमुक्त औ ब्रह्मकुल उजियार है सब ईश्वर ब्रह्मकुलहीमें हैं याते ब्रह्मकुल कह्यो मही अनुभव करौहौं तब ब्रह्महोइ है औ मही सब जीवकी चैतन्यताहौं सो बारह खसमको नैहरमें खायो ते बारहखसम कौनहैं तिनकोकहैंहैं अष्टप्रधान जेहैं काली कौशिकी विष्णु शिव ब्रह्मा सूर्य गणेश भैरव औ नवौं परमपुरुष जिनके ई आठौप्रधान कहे मन्त्री हैं इनको महातंत्रमेंबर्णनहै औपांचब्रह्मआदिमंगलमेंवर्णनकरिआयेहैं तिनमें रेफरूपा जो है सो मंत्ररूपहै औपराशक्तिहै ताको शक्तिमान में अन्तरभावहै औ शब्द ब्रह्म प्रणवरूप है सो उपास्य देवता नहीं है विचारकरिवे लायकै तेहिते पांच ब्रह्म में तीनि ब्रह्म उपासना करिबे लायकहैं सो अष्टप्रधान औनवौं परमपुरुष औ तीनिब्रह्म मिलाइकै बारह उपास्य भये तेई खसमभये तिनको शुद्ध समष्टि जो है सोई नैहरहै जहांते व्यष्टिहोइहै सो जहां समष्टि व्यष्टि भयो है तहां मैं इनको खाइलियो है कहे पेटमें डारिलियोहै मोहिंते भिन्ननहीं है औ जबमैं अहंब्रह्म बुद्धिकरिकै ब्रह्म में लग्यो वहीको खसममान्यो तब षोडश कलात्मक जो है जीव ताको खाइलियो कहे पेटमें डारिलियो १ ॥

सासुननँदि मिलि पटिया बांधल भसुरापरलोगारी ।
जारों मांग मैं तासुनारिकी सरिवररचल हमारी २

सासु जो है जगत्सुखसुरति ताके औमनके संयोगते ब्रह्मको अनुभव होइहै तेहिते वह सुरति ब्रह्मकीमहतारी है औननँदि जो

है विद्यामाया काहेते कि पहिले जब विद्यामाया उत्पत्ति होइहै औ जब ब्रह्मको अनुभव होइहै सो सासु जो है जगत्मुख सुरति औ ननँदि जो है विद्या सो ये दूनौको संसाररूपी खटियाके पटिया जे हैं उत्पत्ति प्रलय तिनमें बांध्यो औ भसुर जेठको मिथिलामें कहै हैं सो भसुरजो है ब्रह्मते जेठविज्ञान काहेते कि विज्ञान पहिले ह्वैलेइहै तब ब्रह्मको अनुभव होइहै याते ब्रह्मते विज्ञान जेठहै सो मोको गारीपरयो कहे मैंतो साहबकी चितशक्ति हौं सो मोको ब्रह्ममें लगाइदियो यही मोकोगारीपरी सो जगत् कारणरूपा जो वह मायारूपी नारिहै तौनेकी मैं मँगुवाजारौंहौं तौ आप जड़ औ चितशुद्ध जीवको गहिकै हमारी सरिवररच्यो है कहे जीवनको जड़को जड़कैदियो अर्थात् साहबकोज्ञानभुलाइ दियो तेहिते जगत्मुख ह्वैकै चैतन्यमानै है कि हम ब्रह्म हैं औ आपको कर्त्ता भोगता मानै है सोशुद्ध जीवको मिलिकै कारण रूपा साहब की अज्ञानरूप मायाही मानै है मायाही को खराब कियो शुद्धजीव है ताकी मैं मँगुवाजारौं २ ॥

जनापांचकोखियामेंराखौं औराखौंदुइचारी ।
पारपरोसिनिकरौंकलेवा संगहिबुधिमहतारी ३

वही मायाको मिलिकै जना पांच जेपांचौ इन्द्री हैं औपांचौ तत्त्वहैं औ पांचौ शरीर हैं तिनकोकोखिमें राखौहौं औ दुइ जे निःर्गुण सगुणहैं औचारिजेअंतःकर्ण चतुष्टयहैं मनबुद्धिचित्तअहंकार तिनको कोखिमें राखौंहौं औ पार जो है ब्रह्म अथवा मोक्ष ताके परोसीकहे बतवैयाजे हैं गुरुवालोग तिनकोमैं कलेवाकरौंहौं कहे उनको मत खण्डनकरौंहौं शुद्धबुद्धि जो महतारी है मेरी ताको संगह्वैकै अर्थात् शुद्धबुद्धि जब मोकोहोइहै तब उनको सबमिथ्या मानिलेउहौं एक साहबै की ह्वैरहौंहौं ३ ॥

सहजैबपुरीसेजबिछायो सूतलपाउँपसारी ।
आउँ न जाउँ मरौंनाजीवौं साहबमेट्योगारी ४

अब हेभाई तोको मैंछोड्यो मैंवपुरी गरीविनिहौं मेरे निकट न आउ अबमैं सहज सेजबिछायोकहे सहजसमाधिमें साहबको कियो अरु पाउंपसारिकै सोऊंहौं कहे मोको तेरीभयनहीं है यह जगत्मोको बिसरिगयो चित शक्तिमात्र रहिगई औ ब्रह्ममें मैंलगिरहिउँ नानाउपासना में लगिरही तिनकी मैंनहींहौं यहगारी मोको परीरही सो साहब मेरीगारीमिटयोकहे अपनो हंसस्वरूप मोकोदियो तौने स्वरूपतें अपनो रूप देखायो सो साहब की मैं रहौं सो साहबकी मैं ह्वैगई न आउँहौं न जाउँहौं जो कहौ मेरी गारी साहब कैसे मिटायो ४ ॥

एकनाममैं निजकैगहिल्यो तौछूटलसंसारी।
एकनाममैंबदिकैलेखौ कहैकबीरपुकारी ५

औ एक राम नाम को निजकै कहे आपनकरिकैगहिलीन्ह्यो कि यही उद्धार कर्त्ताहै और सब नरकही डारनवारे हैं तब यह संसार छूटिगयो यह हेतुते कबीरजी कहैहैं कि मैं बदिकै लेखौहौं कहे पाउँ रोपिकै मानौहौं कि यहीएक राम नामको जोविश्वास करिकै बिचारकरिकै जपैगो तौ संसारते छूटिहीजाइगो सोयह सबलोग सुनतजाउ मैं पुकारिकै कहौहौं तामें प्रमाण ॥ राम न जपौकहांभोमन्दा। रामबिनायममेलैफंदा ॥ सुतदाराकोकिया पसारा। अंतकेबेरभयेबटपारा॥ मायाऊपरमायामाड़ी। साथन चलैखोखरीहाड़ी ॥ जपौरामजोजियतउबारै। ठाढ़ीबांहकबीर पुकारै ५ ॥ इतिबासठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ तिरसठवांशब्द ॥

मैंकासोंकहौंकोसुनैकोपतिआय। फुलवाकेछुवतभवँरमरिजाय १ गगनमँडलबिचफुलयकफूला। तरभोडारउपरभोमूला २ जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ। बिनडारबिनापातफूलयकहोइ ३ फुलभलफुललमालिनभलगूंथल।फुलवाबिनाशिगयलभवँरानिग

सत्त ४ कहकबीरसुनोसंतोभाई। पंडितजनफुलरहेलुभाई ५॥

मैंकासोंकहौंकोसुनैकोपतिआय। फुलवाके छुवतभवंरमरिजाय १

कबीरजी कहैहैं कि मैं जासों कहौहौं सोतो सुनतई नहीं है औ जो सुन्यो तौ शंका कियो ताको समाधान करिदियो असांच निकारिडारयो सांचेको स्थापित कियो सो यद्यपि वाको जवाब नहीं चलैहै तऊ यह कहैहै कि यह जोलहाको कह्यो वेद शास्त्र को सार अर्थ विचार कैसे होइगो तातेंकोई मोको पतिआयनहीं है येतो सब धोखामें अटकेहैं मैं कासों कहौं को सुनै कौन बात कहौहौं कि वह धोखाब्रह्म आकाशको फूलहै ताके छुवत में भवँर जोहै तिहारो जीवात्मा सो मरिजायहै कहे तुम नहीं रहिजाउहौ वह धोखा ब्रह्मई रहिजाइहै वाके आगेकी बात तुमकैसे जानौगे याते तुम परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको जानो वे जब अपनी इंद्री देइँगे तब वह ब्रह्मके ऊपर की बात जानि परैगी जौन हंसशरीरी देइहै सोयाके नित्य स्वरूपहै सो नित्यस्वरूपना पाइकै ब्रह्ममायाके परे मन वचन के परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जानै है सो मेरो कह्यो कोई नहीं मानै है वही धोखामेंलगे है जोधोखाते जगत् होइहै कैसो होइहै कि १॥

गगनमँडलबिचफुलयकफूला। तरभोडारउपरभोमूला २

गगनमंडल कहे लोकप्रकाश चैतन्याकाशमें एक फूलफूलत भयो कहे वह ब्रह्ममाया सबलित होतभयो अर्थात् आकाशफूल को मिथ्याकहैहैं सो वह मिथ्याही फूलभ्रमतेफूलतभयो जीवको भ्रमभयो ताके अनुमानते प्रकट ह्वैजातभयो सो मूलतो वह ब्रह्महै सो ऊपर भयो औ तरे वाकीडारैं फूटतभईं चौदहौ लोक संसार रूप वृक्ष तयारभयो २॥

जोतियेनबोइयेसिंचियेनसोइ। बिनडारविनापातफूलयकहोइ ३

फुलभलफुललमालिनिभलगूंथल।
फुलवाबिनाशिगयोभवँरनिरासल ४

वह न जोतिगयो न वोइगयो औ न सींचिगयो विना डार पातहै ऐसो विरवा चैतन्याकाश जो लोकप्रकाशहै तामें धोखा ब्रह्मरूप फल फूल्यो ताहीते संसाररूप विरवा तैयार भयो ३ तब मालिनि जो मायाहै सो भल गूंथत भई कहे फूल ब्रह्मको त्रिगुणात्मिका नानावाणीसों खूब वर्णन करिकै वहांको आरोप करत भई तब यहजीव सबछोड़िकै वही ब्रह्ममें नानावाणी सुनिकै लग्यो सो जब वहां कुछ न पायो वह धोखहीह्वै गयो तब भवँर जोजीव सो निराशह्वैगयो ४ ॥

कहहिंकबीरसुनोसंतोभाई । पण्डितजनफूलरहेलोभाई ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेसंतो भाइउ सुनो वही ब्रह्मफूल में पण्डित जनजेहैं ते लोभाय रहे हैं यहविचारनहीं करैहैं किजगत् को तोहम मिथ्यई कहैहैं औ वही ब्रह्मते जगत्की उत्पत्तिकहैहैं सांचते सांच भूंठतेभूंठा होइहै सो वह ब्रह्मरूप फूल जो सांचो होतो तौ वासोंभूंठा जगत् कैसे उत्पत्ति होतो औ वही ब्रह्मको निराकार अकर्त्ता निर्द्धर्मिक कहौहौ कहो तो वह ब्रह्म को जान्यो कौन अरु वाको निर्वस्तु कहौहौ कि वह कुछु वस्तुनहीं है देशकाल बस्तुपरिछेदते शून्यहै कहोतो वह धोखई रहिगयो कि कुछुवस्तुरहिगयोसो तिहारेहि वातमें वहधोखा जान्योपरैहै कि कुछुनहींहै शून्यहै तेहिते परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रमें लागौ जाते माया ब्रह्मके पारह्वै उनहींके पासपहुंचौजाइ औ आवागमन ते रहितह्वैजाउ ५ ॥

इति तिरसठवां शब्द समाप्तम् ॥

अथ चौंसठवां शब्द ॥

जोलहाबीनेहुहोहरिनामा जाकेसुरनरमुनिधरैंध्याना । ताना तनैको भउठालीन्हेचर्खीचारिहु वेदासरखूटीयकरामनरायणपूरणकामहिमाना १ भवसागरयककठवतकीन्हो तामेंमाड़ीसानीमा

डीकोतनमाड़िरहोहै माड़ोबिरलाजाना। त्रिभुवननाथजोमंजन लागे इयाममुररियादीना चांदसूर्यदुइगोड़ाकीन्हो मांझदीपकिय ताना२ पाईकरिकैभरनालीन्हो वेबांधैकोरामा वेयेभरितिहुंलोकै बांधै कोइनरहैउबाना। तीनलोकयककरिगहकीन्होदिगमगकीन्होतानै आदिपुरुष बैठावनबैठे कबिराज्योतिसमाना ३॥

श्रीकबीरजी रामानंदके शिष्यहैं सोअपनी संप्रदायबतावैहैं॥

जोलहाबीनेहुहोहरिनामा जाकेसुरनरमुनिधरैंध्याना। तानातनैकोअउठालीन्हे चर्खीचारिहुवेदा सरखूटी यक रामनरायण पूरणकामहिमाना १॥

श्रीकबीरजीकहैहैं कि जोलहाजो मैंहौं सोहरिके नामकोबिनौ हौंवे हरिकैसेहैं कि जिनको सुरनर मुनिध्यानधरैहैं कौनी तरह ते बिनौहौं सो उपाय कहौहौं कोरिनके यहां ताना तनिबेको अउठाते नापिलेइहैं औ इहां अउठाजो शरीरहै ताको साढ़ेतीनि हाथको नापिलियो अथवा अंगुष्ठमात्र लिंगशरीरहैसो मनोमयहै ताकोमैं हरिनाम बिनिवेको धारणकियोहै नहीं तौ मैंमनके परे रह्योहैं औ कोरिनके इहांचर्खी ते सूतखैंचिकै कैंड़ाकरि लेइ हैं औइहां चारोवेदजेहैं तेईचर्खी हैं तिनके तात्पर्यते आत्माकोस्वरूपकीतै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रकोहै यहसूत जीवात्माको निकास्यो औ कोरिनके इहांसर औ खूटीते तानाको पूरैहैं अरुइहां श्री इहांबैष्णवहै रूपकेमंत्र पावैहै रघुनाथजीको षडक्षर औरनारायणको द्व्यक्षर औ अष्टाक्षरसो सर खूटीराम औ नारायणयेद्वै नामहैं एकनामको सरबनायो एकनामको खूटीबनायो इनहीं को नामलिये हरिनामरूपी कपरा बिनिवेको मैं अधिकारी भयो यह मैं मान्यो कि मैं पूरिदेहौं रामनाम दुइ खूंटी हैं नारायण नाम सरहै १॥

भवसागरयककठवतकीन्हो तामेंमाड़ीसानी माड़ीकोतनमाड़िरहोहै माड़ोबिरलाजाना। त्रिभुवननाथजो

मञ्जनलागे श्याममुररियादीना चांदसूर्य्यदुइगोड़ाकीन्हो मांझदीपकियताना २ ॥

कोरिनके इहां माड़ी लानी जाइहै तबएककठौतामें धरेहैं सो इहांभवसागर कठौताहै औ चारोंशरीर माड़ीहैं तामें जीव सूत सनोहै इहांसाधन अवस्थामें चारयो शरीरमें वहनामकोभावना करिकै जो जपिबोहै मुमुक्षु दशामें सोईसानिबोहै सो नाम उच्चारणकी विधि कोई बिरलाजानै है सो रामानुजाचार्य आपने राम मंत्रार्थ में लिख्योहै यह नाम स्मरणकोशरीर धारणकियोसोजब नामस्मरण न कियो सोई शरीररूपी माड़ी याके माड़िरह्यो है कहे लपटिरही है औ कोरिनके जब वाको मांजैहैं तबमाड़ी सम ह्वैजाइहै औ मैल छूटिजाइहैऔइहां त्रिभुवननाथ जो मनहै सो रेचक कुंभक पूरक जे कूचाहैं तिनमें मांजनलग्यो कहे नाम को जपनलग्यो औजीवको माड़ी जोहै चारयो शरीर तिनको समकै दियो कहेएककरिदियो औ कोरिनके मांजतमें जबतागाटूटिजाइ है तौनेको सुररिकै जोरिदेइहै सो सुररिया कहावैहै इहां नामके स्मरणमें जब बीचपरै है तब कहीं श्याम कहीं गोपाल कहीं कृष्ण इत्यादिक नाम लैकै धागा जोरिदेइहै औ कोरिनके दुइगोड़ाकहे दुइ घोरिया के बीच में ताना तनै हैं औ इहां चांद सूर्य जे इड़ा पिंगला तिनके बीचमें दीपजो सुषुम्णानाड़ीहै ताको तानाकियो ताना वाको काहेते कह्यो कि वह साहबके लोकते लै मूलाधार चक्र लौं रश्मिरूप तनी है जीवही सुषुम्णा नाड़ी ह्वै भक्तनको जी उतरै चढ़ै है २ ॥

पाईकरिकैभरनालीन्हो बैबांधैकोरामा बैचेभरितिहुंलोकैबांधे कोइनरहैउबाना । तीनलोकय्ककरिगहकीन्होदिगमगकीन्होताने आदिपुरुषबैठावनबैठे कबिरा ज्योतिसमाना ३ ॥

कोरिनके इहां पाई साफ करिवेको कहैहैं औ कमठिनके बीच ते सूत निकासिलेइहै सो भरना कहावैहै सो इहां चारयो शरीर माढ़ी मांजिकै कहे चारयो शरीर छोड़ायकै जीवको साफकरिकै कहेसूक्ष्म विचारते जीवको स्वरूप निकस्यो कि रामही को औरे को नहींहै औ कोरिन के राछकी जोकमठी ताके छिद्रह्वै सबसूत को निकासिलेइहै औ दुइसूत बांधिदेइहै सोवेकहावैहैं औ तीनि फेरी करिकै सूतको गांसिदेइहै सो तिलोक कहावैहै औ उबान वह कहावै है जो बाहर सूत रहिजाइ है सो उबान न रहिगयो सो इहां दूनों कुंभकमें राम जे दुइबर्णहैं रकार मकारतिनको बां-धिदियो बहिरे जब श्वास जाइहै तब जहांते थँभि कै लौटै है सो कुम्भक कहावै है तहांरकारजपैहै तब सूर्यके प्रकाशकोभावना करै है औ जबभीतर श्वास जाइहै औ थँभिकै लौटै है तहांमकारजपै है तब चन्द्रमाकोप्रकाशकोभावनाकरै है सोजौन साधारणश्वास चलैहै नासिकाते बारहआंगुर भीतरजायहै बारहआंगुरबाहरजा-यहै जहांजहांते थँभिथँभिकै लौटै है तहां रकार मकारको जपिकै वे आंगुरनको घटाइबूझै दूनोंकुम्भकनको घटावनलगै इसतरहते वेजोहैं श्वासताकेबांधतमें जबश्वासके क्रमते घटाइकै तिहुंलोकै बांधै कहे त्रिकुटी में बांधिदेइ अर्थात् एकआंगुर भीतरजानपावै न एकआंगुरबाहर जानपावै औ एकआंगुरबीचमें राखै सो यहितरह ते जो कोईकरैहैं सोई उबाननहीं रहैहैं कहेसंकल्पविकल्प मिटि जाइहैजपकरतमेंकाहेको ऊबैगो ताको रामनामहितिनोंलोकदेख परैहैवोते बाहरनहींदेखपरैहै जहांकोरीबीननकोबैठै है सोकरिगह कहावैहै जबकपराबीनिचुकै तबतहांतीनिवरी करिकै कपरा धरि देइहै औ ताना को दिगमग कहे जहां तहां डारि देइहै इहां तीनि लोकमें फैली जो जीवकी वृत्तिहै ताकोजहांअपने स्वरूपमें आ-त्माकी स्थितिहै तहां कैवल्यमेंराख्यो तीनिआंगुरश्वासाकरिकैजो स्मरणकरतरह्यो सोमन पवनकोएकघरकैदियो तबसंकल्प बिक-ल्पसब मिटिगयो यह तानाशरीरमें तन्योरह्योताकोदिगमग कियो

कहे पृथ्वीको अंश पृथ्वीमें जलकोअंश जलमें तेजकोअंश तेजमें वायुको अंश वायुमें आकाशकोअंश आकाशमेंमिलाइदियो येपंच भये औ मनकोबुद्धिमें बुद्धिकोचित्तमें चित्तकोअहंकारमें अहंकार को जीवात्मामें मिलाइदियो ये पांचभये येसब ताना दशोदिशा में फैलाइदियो तबयाको सुधिभूलिगई एकजीवात्माभररहिगयो औ जब कपरातय्यारह्वैजाइहै तबकोरीकेयहां मालिकको पयादा आवै है तब पयादाकेसाथ मालिककेयहां कपरा कोरी लैजाइ है औ यहां आदिपुरुष जे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रहैं तेबैठावनदेइ हैं कहे याको हंसस्वरूप देइहैं सोई पयादाहै ताकेसाथह्वैकै कहे तामें स्थितह्वैकै कबीर जो मैंहौं सोवहजो है कैवल्यरूप तातेछूटि कै पार्षदरूपपाइकै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रके लोकको प्रकाश रूप जो है ब्रह्म तौनेज्योतिमें समाइकै कहे वाकोभेद परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रकेधामकोगयो भावयहहै जैसे कोरी थानमालिक के नजरकैदेइहै तैसे अपने आत्माको शुद्धकरिकै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको अरपिदीन्ह्योजाइ ज्योतिभेदिकै साहबमेंसमाइ गयो तामेंप्रमाण ॥ तज्ज्योतिर्भेदनेसक्तारसिकाहरिवेदिनः इति॥ औ श्रीकबीरहूजीकोप्रमाण ॥ जैसे मायामनरमै तैसेरामरमाय । तारामण्डलभेदिकै तबैअमरपुरजाय २ ॥

इतिचौंसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ पैंसठवांशब्द ॥

योगियाफिरिगयो नगरमँझारी । जायसमानपांच जहँनारी १
गयेदेशान्तर कोइ न बतावै । योगिया गुफा बहुरि नहिं आवै २
जरिगोकंथ ध्वजागोटूटी । भजिगोदण्ड खपरगोफूटी ३ कहकबीर
यह कलिहै खोटी । जोरहकरवा निकसल टोंटी ४ ॥

योगियाफिरिगयोनगरमँझारी । जायसमान पांचजहँनारी १

जौने ब्रह्माण्डमें पांचनारी जेबयारिहैं नागकूर्म ककल देवदत्त

धनंजय ई जिनमें समाइहैं ऐसे प्राण अपान व्यान उदान समान ते जामें समाइगये हैं तौन जो है नगरब्रह्माण्ड ताकेमांझते योगिया जोहै योगी सो फिरिजाइहै कहे फिरिफिरि ब्रह्मांडको प्राण चढ़ाइलैजाइहै १॥

गयेदेशांतरकोइनबतावै।योगियाबहुरिगुफानाहिंआवै २
जरिगोकंथध्वजागोटूटी । भजिगोदण्डखपरगोफूटी ३

जब वह योगी शरीर छोड़्यो तब कोई नहीं बतावैहै कि कौने देशान्तरको गयो कौनेलोकको गयो काहेते कि कौन्यो लोकको तौ मानतै नहीं है तेहिते यही शरीर पुनि पावैहै तब वहयोगकी सुधिबिसरिजाइहै पुनि नहीं गुफामें आवै है कहे पुनि नहींप्राण चढ़ावतबनैहै २ कंथजोहै शरीररूपीगुदरी सोजरिगयो तबध्वजा जोहै पवन तौनेकी धाराटूटिगई तबमेरुदण्ड भजितह्वैगयो कहे टूटिगयो औ खप्पर जो है ब्रह्माण्डकी खपरी सो फूटिगई ३॥

कहकबीरयहकलिहैखोटी।जोरहकरवानिकसलटोंटी ४

श्रीकबीरजीकहैहैं कि यहकलिबड़ोखोटोहै अथवा यहकलि जो है झगरा सो बड़ो खोटहै यहकोई नहीं बिचारैहै कि जबशरीरही नहीं गयो तबब्रह्माण्ड कहाँरहिगयो जहाँब्रह्मांडमेंलीनह्वैकैबनो रह्यो सोयहबातऐसीहै कि जे ब्रह्मांडमें प्राण चढ़ावैहैं तिनकेजब शरीर छूटिजायहैं तबउनके गैबगुफा सबजरिजायँहैं तबगैबगुफा रूपी करवामें जो प्राणचढ़ोरहैहै सो जब दूसरशरीरधर्‍यो तब नासिकाजोहै टोंटी तहांते वहै पवन निकसैहै वही बासना लगी रहैहै तेहिते फिरि गुरुसों पूछिकै अभ्यास करनलगैहै ४ ॥

इतिपैंसठवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथ छांछठवांशब्द ॥

योगिया कि नगरी बसै मतिकोइ । जोरेबसैसोयोगियाहोइ १
वह योगियाको उलटाज्ञाना । काराचोला नाहीं म्याना २ प्रक-

टसो कंथागुप्ताधारी। तामें मूलसजीवनि भारी ३ वायोगियाकी युगुतिजो बूझै। रामरमैसोत्रिभुवनसूझै ४ अमृतवेलीक्षणक्षण पीवै। कहकबीरसो युगयुगजीवै ५॥

योगियाकिनगरीवसैमतिकोइ।जोरेवसैसोयोगियाहोइ १

योगियां जोहै योगी ताकी नगरीजोहै ब्रह्मांड गैवगुफा तहां कोई न वसौ अर्थात् हठयोगकोई न करो काहेतेकि जोकोईवह नगरीमें वसैहै अर्थात् हठयोग करैहै सोयोगियै होइहै कहे फिरि फिरि वही वासनाकरिकैयोगिया होइहै योगसाधै है जन्म मरण नहीं छूटै है १॥

वहयोगियाकोउलटाज्ञाना। काराचोलानाहीं स्याना २

सोवह योगी को उलटाज्ञानहै कहे उलटे पवन चढ़ावैहै अर्थात् याशरीरको वेदांतशास्त्रमें निषेधकरैहैं कि यहीशरीरते आत्मा भिन्नहै तौनेही शरीरको योगी प्रधानमानैहैं कि यहीशरीरते मुक्त ह्वैजायँगे सो इनको चोलाजोहैमन जौनेते शरीर पावैहैऔमनै गैवगुफामें समाइजाइहै नानाप्रकारकेजे कुत्सितकर्महैं तिनतेम-लीनह्वैरह्योहै याते ताको काराकह्यो औस्याना छोटाको फारसी में कहैहैं सोवह मनछोटानहींहै वड़ोहै सबसंसार अरुचारोंशरीर मनमें भराहै २॥

प्रकट सो कंथा गुप्ताधारी। तामेंसूलसजीवनिभारी ३

अरु जोवहुत योगकरिकै ब्रह्मांड में प्राणचढ़ाइकै प्राणकोगुप्त कियोहै सो प्रकटैहै तेवेयोगीकंथाजोहै शरीरताकोधारणकियेरहै हैं वहुत दिनजियैहैं ताको हेतुयहहै किमूलसजीवनिअमृतहैसोभारी कहेवहुतहै सोचुवतरहैहै जैसे संजीवनी औषधि महाप्रलयभये नहीं रहिजाइहै सोयाको वह जियावैहै सोऊनहीं रहिजायहैतैसे जो कोई मूड़काटिडारयो अथवा कोई शरीरको खाइलियो तब न वहअमृत रहिजाइ न वे रहिजाइँ ३॥

वायोगियाकीयुगुतिजोबूझै। रामरमैसोत्रिभुवनसूझै ४

अमृतवेलीक्षणक्षणपीवै । कहकवीर सोयुगयुगजीवै ५

सोयेजोहैं योगीते युगुतिकरिकैजियैहैं आखिरमें इनको जन्म मरणनहीं छूटैहै सो यायोगियाको हठयोग छोड़िकै जो कोई वा योगीकीयुगुतिबूझै जे राजयोग करनवारेहैं सो रामरमै तबवाको त्रिभुवनमें रामई सूझिपरै ४ अरु श्रीकबीरजी कहैहैं कि अमृत वेलिजोहै रामनाम ताको क्षणक्षण में पिये कहे श्वास श्वासमें रामनाम स्मरण करै है सोई हनुमान् बिभीषणादिकके तरह युग युग जियै है औ जनन मरण ते रहित ह्वै जाइ है ५ ॥

इतिछांछठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसरसठवांशब्द ॥

जोपैबीजरूपभगवाना । तौपण्डितकाबूझौआना १ कहँमन कहांबुद्धिओंकारा । रजसततमगुणतीनिप्रकारा २ विषअमृतफल फलैअनेका । बहुधावेदकहेतरबेका ३ कहकबीरतेमैं का जानो । कोधौंछूटलकोअरुझानो ४ ॥

जो आगे कहि आये कि जो कोई रामनाम लेइहै सोई जननमरण ते रहितहोइहै सो कहै हैं ॥

जोपैबीजरूपभगवाना । तौपंडितकाबूझौआना १
कहँमनकहांबुद्धिओंकारा।रजसततमगुणतीनिप्रकारा २

जीवजोहै रामनाम सोभगवान्है जननमरण छोड़ाइ देवेको तौहेपंडित तुम आनआन जगत्कारण ब्रह्म ईश्वर प्रकृतिपुरुष कालशब्द परमाणु इत्यादिक काहे खोजत फिरौहौ यह नामही जगत्मुख अर्थ करि जगत्कारणहै १ सो रामनामै जो सबको बीज ठहरयो तो मन को बुद्धिको प्रणवको कारण कहां रह्यो एते सत रज तमजे गुणहैं तिनके तीनितीनि प्रकारह्वैकै जगत् कियोहै प्रथममन बुद्धि ओंकार कहां रहे कोई नहीं रहे भावयह है कि प्रथम साहब ते सुरतिपाय कै रामनाम को जगत् मुख

अर्थ करिकै जीव समष्टि ते व्यष्टि ह्वैकै संसारी भयोहै तबहीं ये सब भयेहैं २ ॥

विषअमृतफलफूलअनेका बहुधावेदकहैतरबेका ३

कोई सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी उपासनाते विष अमृत अनेक फल फलत भये कहे नाना दुःख सुख जीव पावत भये कोई वे देवतन की उपासनाकरिकै उनके लोक जाइकै सुख पायो औ कोई विषय आदिक करिकै दुःख पायो येई वे गुणन में फलफलेहैं सो सबकेफल स्तुति बहुधा वेदतरिबेको लिख्यो है ॥ शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिता । शीतलेत्वंजगद्धात्री शीतलायैनमोनमः इत्यादिकसब ३ ॥

कहकबीरतेमैंकाजानो । कोधौंछूटलकोअरुझानो ४

सोकबीरजी कहैहैं कि वेद तो फल स्तुतिमें तरिबे को कहैहैं कछू सांच नहीं कहैहैं ये सब जीव आपनी आपनी उपासना में लगे कहैहैं कि हम मुक्त ह्वै जाइँगे सो सब उपासना सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये तीन गुणमयहैं सो मैं कहाजानों को बद्धहै को छूटहै तुमहीं विचार करिलेउ कि हमारी उपासना मायाके भीतरहै कि मायाके बहिरेहै अर्थात् यह वेदमें यह देखायो कि सबको मूल रकार बीजहै जो सबको परमकारणहै सबते पर है सो याही राम नामको जो कोई साहबमुख अर्थ करिकै जपैगो सोई परमपुरुष परश्रीरामचन्द्रकेपास जाइगोऔरनहींतरैहैं ४ ॥

इतिसरसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ अड़सठवांशब्द ॥

जोचरखाजरिजायबढ़ैयानामरै। मैंकातौंसूतहजारचरुखलानाजरै १ बाबाव्याहकरायदे अच्छावरहितकाह । अच्छावरजोनामिलै तुमहींमोहिंबिवाह २ प्रथमैनगरपहूंचतै परिगोशोकसँताप । एकअचंभोहौंदेखावेटीव्याहैबाप ३ समधीकेघरलमधीआयाआये

वहूकेभाय। गोडचल्हौनेदैरहेचरखादियोडहाय४देवलोकमरिजा-
हिंगे एकनमरैवढ़ाय। यहमनरंजनकारनेचरखादियोदृढ़ाय ५ कह
कबीरसंतौसुनो चरखालखैनकोइ । जाकोचरखालखिपरोआ-
वागमननहोइ ६ ॥

नानाउपासनामेंलगे जीव संसारते नहींछूटैहैं सोकाहेतेनहीं
छूटे हैं सो कहै हैं ॥

जो चरखा जरिजाय वढ़ैयानामरै ।
मैंकातौं सूतहजार चरुखलानाजरै १
बाबाव्याहकराय दे अच्छावरहितकाह ।
अच्छावरजोनामिलैतुमहींमोहिंबिवाह २

यह स्थूल शरीर चरखाहै सो जरिजायहै कहेछूटिजायहै औ
वढ़ैया जो मनहै सोनहीं मरैहै वह चरखा शरीर गढ़ि लेइ है कहे
बनाइलेइहै सोजीव कहैहैं कि मैंहजारसूत कातौहौं कहेकर्मछूट-
नेकेलिये वहुत उपायकरौहौं वहुत उपासना बहुतज्ञान इनहीं
शरीरनते करौहौं परन्तुचरुखला जे चारयोशरीरहैं तेनहींजरैहैं १
जीवगुरुवनके इहां जाइकै कहैहै कि हे वावा गुरू जी अच्छावर
हितकरनवारो तोहै तासों व्याहकरायदेउ अर्थात् हितकरनवारो
जो अच्छादेवताकी उपासना कराइदेउ अरुआछोदेवता जोतुम्हैं
न मिलै कहे मुक्ति करि देनवारो देवता जो तुम्हैं न मिलै तौ
तुमहीं मोको बिवाहौ कहेज्ञान उपदेशकरिकै अपनोमेरो जोभेद
है ताको मेटवाइदेउ २ ॥

प्रथमैनगरपहूंचतैपरिगोशोकसँताप ।
एकअचंभोहोंदेखा बेटीव्याहै बाप ३

प्रथम साधनवतायो गुरुवालोग कि ईश्वरकी उपासनाकरौ
जामें अभेद ज्ञानहोयसो प्रथमनगर पहुंचतैकहे जवगुरुवादेवता
की उपासना वताइदियो ताही प्रथमही शोक संताप परिगयो

कहे तौने देव देवताको विरहभयो सो जरन लग्यो अरु दूसरो ज्ञान उपदेश जो मांग्यो तामें बड़ोआइचर्यभयो कि बेटी बापको बिवाह्यो जब उन उपदेशकियो कि तुमहीं ब्रह्महौ तुमहीं सर्वत्र पूर्णहौ सो जीवतौ कबहूँ ब्रह्महोतई नहीं है सो ब्रह्म तो न भयो औ न वामें ब्रह्मकेलक्षण आयभयोकहा कि आपनेकोब्रह्ममानि कर्म धर्म सब छोड़िदियो सो ज्ञान अज्ञान जीवहीकोहोइहै सो माया जीवहीते भई है सोई बेटी है सो बाप जीवको बिवाहि लियो कहे बांधि लियो ३॥

समधीकेघरलमधीआयो आयोबहूकोभाइ।
गोड़चुल्हौने देरहे चरखा दियो डढाइ ४

जीवको व्याहीमाया जो होइहै सो मनते होइहै सोमनससुर भयो अरु शुद्धते अशुद्धभयो सो अशुद्ध जीवको बाप शुद्ध जीव ठहरयो सोई समधी ठहरयो तौनेजीवके घरमें लमधी जोहै मन को भाई चित्त सो आयो नाना स्मरण देवायो तबहूँ जो मायाहै ताकोभाई कालआयो चूल्हाजोहै तामें दुइपल्ला होइहैं सो पुण्य पाप जेहैं तेदूनों पल्लाहैंतौने चूल्हामें गोड़दैकै चरखाजो शरीरहै तिनको डढाइदीन्हयो कहे लाइदियो काहूको पुण्यकरायकै काहू को पापकरायकै शरीर खाइलीन्हयो ४॥

देवलोकमरिजाहिंगे एकनमरैबढ़ाय।
यहमनरंजनकारनेचरखादियोदढ़ाय ५
कहकबीरसंतोसुनौचरखालखैनकोइ।
जाकोचरखालखिपरोआवागमननहोइ ६

देवलोकको नरलोकको सबको काल खाइलेइहै यह बढ़ैया जोमनहै सोनहीं मारोमरैहै औ जबवह चरखाटूटैहै तबबढ़ैहैब-नाइदेइहै ऐसे वह बढ़ई जोमन सोकीलके रंजनकरिबेको शरीर रूपी चरखाको दृढ़करतजाइहै नानाशरीरकालको खवावतजाय

है ५ श्रीकबीरजीकहैहैं कि चरखा जेचारयो शरीर हैं तिनकोकोई नहीं लखे है जाकोचारयो शरीर लखिपरयो अरुपांचौशरीर कैवल्यमें प्राप्तभयो कहे केवल चिन्मात्र रहिगयो तबवहचरखाको गढ़ैया जो मनहै तेहिते जीव भिन्नह्वैगयो तब छठवोंअंश स्वरूप साहब देइहै तामेंस्थितह्वैके साहबके लोककोजाइहै आवागमन नहीं होइहै ६ ॥ इतिअरसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथउनहत्तरवांशब्द ॥

यंत्रीयंत्रअनूपमबाजै। वाकेअष्टगगनमुखगाजै १ तूहीगाजै तूहीबाजैतुहीलियेकरडोलै। एकशब्दमेंरागछत्तिसौअनहदबाणी बोलै २ मुखकोनालश्रवणकेतुम्बा सतगुरुसाजबनाया। जिह्वा तारनासिकाचरही मायामोमलगाया ३ गगनमँडलमाभाउजियारा उलटाफेरलगाया। कहकबीरजनभयेबिबेकी जिनयंत्रीमन लाया ४ ॥

यंत्रीयंत्रअनूपमबाजै। वाकेअष्टगगनमुखगाजै १

यंत्रीजोहै जीव ताको यंत्रजो शरीरहै सो अनूपम बीनबाजै है बीनमें सातस्वर बाजैहैं अरु आठवों जीवके तारमेंटीपकोस्वर बाजैहै औइहांयह शरीरमें सातचक्रहैं सहस्रारलों तिनके बीचबीचकोजोहै आकाश येसात गगनभये अरु आठवों सहस्रारकेऊपर को जो आकाश तामें सुरपति कमलमेंबैठो जोगुरुनाम बतावैहै सोवह आठवों गगनमें जाइकैगाज्यो कहे रामनाम सुनिकै लेन लग्यो सो इहांसुषुम्णा जोनाड़ी सोईतारहै मूलाधार चक्रसुरति कमल येईतुम्बाहैं १ ॥

तूहीगाजैतूहीबाजैतुहीलियेकरडोलै। एकशब्दमेंरागछत्तिसौअनहदबाणीबोलै २

सो यावीणाको तुहीगाजै कहेसुरति कमलमें तुही नामलेइ है औ तुही बाजै कहे तुहीसुरति बोलेहै औतुही सुरतिकोलैकै

डोलैहै कहतुही सुषुम्णाह्वै चढ़िजाइहै अर्थात् शरीरको मालिक तुहीहै औ वीणामें छत्तिसराग बोलैहै औ इहां एकशब्दजोहैराम नामतामें चौंतिसवर्ण औ पैंतीसौनाद औ छत्तिसोंविंदुई सबहै विंदुते आकारादिक स्वर आइगये वही अनहदहै कहेवहांको हद नहींहै तौने रामनामरूपी वाणी सुरति कमलमें गुरुबोलैहै सो तहीं जपैहै या अन्तरवीणा बतायो सो जानु अबबाहरको वीणा बतावैहैं २ ॥

मुखको नाल श्रवणके तुम्बा सतगुरुसाज बनाया ।
जिह्वातार नासिका चरही माया मोमल गाया ३

वीणाके बिचमें डांडीहै यहांमुखै नालडांडीहै वीणामेंदुइतुम्बा लगेहैं यहांदूनों जेश्रवणहैं तेईतुम्बाहैं वीणाको स्वरमिलावैहैं औ यहां सद्गुरुजेहैं तेसाज बनाइ जीवनको उपदेशकरै हैं औ वही वीणामें तारलागैहै अरु यहां जीभजोहै सोईतारहै औ वीणा में चरही कहे सारलागैहै औ यहांनासिका चरही कहे सारहै सारमें मोमजमायाजाइहै यहांमायाजोहै गुरूकीकृपा माया दम्भे कृपा यांच ॥ सोई मोमजमायो जैसे वीणामें जौनस्वर बजावै तौन बाजैहै तैसे सुरति कमलते गुरू जोरामनामको उपदेश किया सोई जीभतेजपैहै ३ ॥

गगनमँडलमाभाउजियारा उलटाफेरलगाया ।
कहकबीरजनभयेविवेकी जिनयन्त्रीमनलाया ४

वीणा जब सुरते बाजैहै तबसब रागनको उजियाराह्वै जाइ है औ आछो लगैहै सबराग जानिजाइहैं औ दूसरे पक्षमें जीव को उलटो ज्ञानजगत् मुखह्वैगयो तैं ब्रह्ममुख ह्वैगयो तेब्रौंआ- त्मामुख ह्वैगयो तैं कि महींब्रह्महों ताको नानाशब्दमें समुझाइ कै भठयें गगनमें जीवको साहब मुख करतभये तबजीवको ज्ञान ह्वैगयो सब धोखा छोड़िकै साहबमें लग्यो जगत् मुखरह्यो सो उलटारह्यो ताको सीधेमें गुरुबाल्लोग फेरिल्तेभाये औ लगायोपा-

ठहोइ तौ साहबमें लगावत भये श्रीकबीरजी कहेहैं कि यंत्रीजोहै बीणकार उस्ताद तौने ते जोबीन बजावै मनलगाय सीखेहै तौ वाको सुरनको रागनको वे व्यौरा आइजाइ हैं ऐसे सुरतिकमल में बैठेजेहैं परमगुरु जेरामनामको उपदेशकरैहैं तिनसोंजो कोई यंत्री जीवात्मा मनलगावै है सो बिबेकी होइहै कहे जगत् को असांच जानिकै सांच साहबमें लगिजाइहै ४ ॥

इतिउनहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसत्तरवांशब्द ॥

गुरुमुख ॥ चातृककहा पुकारैदूरी । सोजलजगतरहाभरपूरी १
जेहि जलनाद बिन्दुका भेदा । षटकर्म सहित उपान्यो वेदा २
जेहिजल जीव सीवका बासा । जोजलधरणिअमर परकासा ३
जेहिजल उपजे सकलशरीरा । सो जल भेदन जानकबीरा ४ ॥

चातृककहा पुकारैदूरी । सोजलजगतरहा भरपूरी १
जेहिजलनादबिन्दुकाभेदा । षट्कर्मसहितउपान्योवेदा २

सबते गुरु परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रकहैहैं कि हे चातृकदूरि दूरितें कहापुकारैहै कि पियासोहौं पियासोहौं जौन स्वाती को जलतैं चाहैहै जाते पियास बंदह्वैजाइहैं सो रामनामरूपीजल स्वातीको मुख्य मुक्तिको साधन जगत्में पूरिरह्योहै तैं कहांऔर ओर मुक्तिके साधनको खोजत फिरैहै १ औ जौने रामनामरूपी जलमें नादबिंदुको भेदहै अपने षट्मात्रनते वेदको उपान्योकहे उत्पत्ति कियोहै २ ॥

जेहिजलजीवसीवकाबासा । सोजलधरणिअमरपरकासा ३
जेहिजलउपजेसकलशरीरा । सोजलभेदनजानकबीरा ४

जौने रामनामरूपी जलमें जीवजेहैं सीवजे नानाईश्वर तिन को बासहै औ सोई रामनामरूपी जब धरणिमें जो कोई जपै ताको अमरकरैहै याप्रकाशकहे जाहिरहै अथवा वा भवनीमेंनाश-

माननहींहोइहै या जाहिरहै तैं पियासो काहे मरै है ३ जेहि राम नामरूपी जलते सकलशरीर उपजै है अर्थात् संसारमुख अर्थते अनंत ब्रह्मा उपजे हैं रामनामरूपी जलकोभेद कबीर कहेकाचा के बीर जेजीवहैं तेनहीं जानै हैं अर्थात् जोरामनाम मोकोबतावै है सो जो विचारकरै तौ चिदविग्रहकरिकै सर्वत्र मही देखोपरौ तौ मेरीभक्ति जलपानकरिकै मुक्तिह्वैजाइ हैं औ संसार ताप बुताइजाइहै ४ ॥ इतिसत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथइकहत्तरवांशब्द ॥

जसमासु नलकी तसमासु पशुकी रुधिररुधिर यकसाराजी। पशुकीमासुभखै सबकोई नलहि न भखै सियाराजी १ ब्रह्म कुलाल मेदनीभरिया उपजिविनशि कितगइयाजी। मासमछरिया जोपैखैया जो खेतनिमें बोइयाजी २ माटीको करदेई देवा जीव काटिकाटि देइयाजी। जोतेरा है सांचादेवा खेतचरत हिन लेइयाजी ३ कहै कबीर सुनोहोसंतो रामनाम नितलैयाजी। जो कछुकियो जिह्वाके स्वारथ बदल परारादैयाजी ४ ॥

जसमासुनलकी तसमासुपशुकी रुधिररुधिर यकसाराजी। पशुकोमासु भखै सबकोई नलहि न भखैसियाराजी १

जसनरकी मासुहोइहै तसपशुकी मासुहोइ है अरु रुधिरभी एक तरह होइ है परंतु पशुकेमासुकेमासुको जे भक्षणकरै हैं ते सियारईहैं सो वे मनुष्यते औ सियारते यतनै भेदहै कि सियार मनुष्यको मांसखाइहै अरु नरपशुकीमांसखाइहैं मनुष्यकोमांस पशुनहीं खाइहै सो कहैहैं कि रुधिर मांस तो सब एकई तरहहै नरकी मांस काहेनहीं खाइहैं १ ॥

ब्रह्मकुलालमेदिनीभरियाउपजिविनाशिकितगइयाजी। मासुमछरिया जोपैखैया जोखेतनि में बोइयाजी २

जौनेतेसबपृथ्वी जगत्भयोहै ऐसो जो है ब्रह्माकुलाल जो कुम्हार औसर्वत्रजगत्में भरेरहा अर्थात् सबवस्तुब्रह्मईरह्यो तौयह सबपृथ्वी उपजी औ विनशिकै कहांगई सोएकब्रह्महीसर्वमानिकै जो मासुमछरी खाउ कि सबतो एकई है जो मनचलैगो सो करैगे नरक स्वर्ग कर्म सबमिथ्याहै ऐसो जो मानौगे तौ जोखेतमें बोवनकोहोइहै सो तुम मुर्दे पशुकी मासकीमासु खाउहौ अरु वे तुम्हारे जीतही यमपुरमें मांसखाइँगे जो कहाहम देवताकोबलि चढ़ाइकै खाइहैं तौनेपर कहे हैं २ ॥

माटीको करिदेईदेवा जीवकाटिकटि देइयाजी ।
जोतेराहैसांचादेवा खेतचरतकिनलेइयाजी ३

माटीको तौ देवता बनावोहौ उसकेआगे जीवकाटिकाटिकै राखौहौ यहकैसीगाफिली तुमकोघेरी है जोमाटीकोदेवतासांचहै तो जब वोकरी खेतमेंचरती है तब तुम्हारादेवता काहेनहींखाता क्यादेवताको किसीकाडरहै भावयहहै कितुम काहेको हत्यारीलेतेहो अंगुरिआयदेउ जोसांच होइगो तौ खाइगो तेहिते तुम्हारो देवता मिथ्याहै खेतमेंचरत वोकरीको न खाइसकैगो ३ ॥

कहैकबीर सुनोहो संतो रामनाम नित लैयाजी ।
जोकछुकियो जिह्वाके स्वारथबदलपरारादैयाजी ४

सोकबीरजी कहैहैं कि जिनके जिनके गलाको तुम काटतेहौ तेसब तुम्हारो नरकमें गलाकाटेंगे तेहिते रामनामको नितलेउ भावयहहै जब नामापराधछोड़ि रामनामलेउगे औफिरिपातकन करौगेतबहीं तुम्हारे पातकजाइँगे तामेंप्रमाण ॥ हरिर्हरतिपापानि दुष्टचित्तैरपिस्मृतः । यदृच्छयापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावकः ॥ रामेतिरामभद्रेति रामचन्द्रेतिवास्मरन् । नरोनलिप्यतेपापैर्भुक्तिं मुक्तिंचविंदति ॥ दशनामापराधमेंप्रमाण ॥ सतांनिंदानाम्नःपरममपराधंवितनुते यतःख्यातिंजातंकथमिहसहेद्विलनमदः । शिवस्यश्रीविष्णोर्यइहगुणनामादिसकलं धियाभिन्नंपश्येत्सखलुहरि

नामाहितकरः ॥ गुरोरवज्ञाश्रुतिशास्त्रनिन्दनंतथार्थवादोहरिनाम
कल्पनं । नाम्नोवलाद्यस्यहिपापवुद्धिर्नविद्यतेतस्ययमैर्हिविश्युति
ति: ॥ श्रुत्वापिनाममाहात्म्यंयःप्रीतिरहितोधमः । अहंममारिप
रमोनाम्निसोप्यपराधकृत् ४ ॥ इतिइकहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथवहत्तरवांशब्द ॥

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो । दशौद्वार नरकैमें बूड़े तू गंधीको
वेठा १ फूटेनैन हृदयनाहिं सूझै मतिएकोनहिंजानी । कामक्रोध
तृष्णाकेमारे बूड़िमुये विनपानी २ जारेदेह भसमह्वै जाई गाड़े
माटीखाई । शूकरश्वान कागके भोजन तनकी यहैवड़ाई ३ चेति
नदेखुमुगुध नरवौरे तूतेकाल नदूरी । कोटिन यतन करैवहुतेरेत-
नकि अवस्थाधूरी ४ वालूके घरवामें वैठे चेततनाहिं अयाना ।
कहकवीर यकराम भजे विन बूड़े वहुतसयाना ५ ॥

चलहुकाटेढ़ोटेढ़ोटेढ़ो।दशौद्वारनरकैमेंबूड़ेतूगंधीकोवेठा१

तीनवार टेढ़ोटेढ़ोटेढ़ो जोकह्योसो ज्ञानकांड कर्मकांडउपास-
नाकांडये तीनों मार्ग अथवा सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणीयेतीनों
कर्मते टेढ़हैं सो येमार्गमें कहाचलौहौ दशौद्वारजे दशौइन्द्रीहैं ते
नरकहीमें लगीहैं कहे विषयनही में लगीहैं सोतेरे विषयकी ग-
न्धिलगीहै ताते तैं गन्धीहै सो तोहीं ऐसेगन्धीको मायावेठिलि-
यो कहे तेरो ज्ञान छोड़ाइलियो अरु जो वेड़ो पाठहोइ तौ यह
अर्थ कि तोहीं ऐसे गंधीको जाके दशौद्वार नरकहीमेंबूड़ेहैं ताको
वेड़ो नहीं है जातेसंसारसागर उतरिजाइ अथवा गन्ध जगत्जो है
गन्धी शरीर ताको तैंवेड़ोकहे आधारकहाह्वैरहे है टेढ़ोटेढ़ोचाल
चलिकै यहांकहां तेरोपारकियो होइगो संसारसागरते न होइगो
वूड़िही जाइगो १ ॥

फूटेनैन हृदय नाहिं सूझै मतिएको नहिं जानी ।
काम क्रोध तृष्णाकेमारे वूड़िमुये विन पानी २

जारे देह भसम ह्वैजाई गाड़ेमाटी खाई ।
शूकरश्वानकागकेभोजन तनकी यहैबड़ाई ३
चेति न देखु मुगुध नरबौरे तूतेकालनदूरी ।
कोटिन यतनकरैबहुतेरे तनकिअवस्थाधूरी ४

भरु ये पदनको अर्थस्पष्टहै इनमें यही बर्णन करैहैं कि मायाकी फौजें तोको लूटिलियो अथवा शरीररूपी बेड़ोतेरोचलायो न चल्यो संसार सागर कामादिक तोको वोरिदियो कालदूरिनहीं है आखिर मरही जाहुगे तनकी अवस्था धूरिहीहै आखिर धूरिही में मिलिजाइगो ४ ॥

बालूके घरवामें बैठे चेतत नाहिंअयाना ।
कहकबीरयकरामभजेबिन बूड़ेबहुतसयाना ५

श्रीकबीर जी कहैहैं कि यही शरीररूप बालूके घरमें बैठिकै अरेमूढ़ चेतत नहींहै परमपुरुष परश्रीरामचन्द्रको भजननहींकरैहै न जाने यह शरीर कब गिरि जाइ कहे छूटिजाइ सो विषय छोड़ि वेगही भजनकरु वे समर्थ तोको छोड़ाइ लेइँगे साहब के भजन विना बहुत सयान बहुत मतनमेंलगिकै बूड़िगयेहैं अर्थात् मायाते छोड़ाय लीबे में समर्थ साहबही हैं और कोई न छोड़ाय सकैगो तेहिते परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रकोभजनकरुवेतोको संसारते छोड़ायही देइँगे ५ ॥ इतिबहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतिहत्तरवांशब्द ॥

फिरहुका फूलेफूले । जो दशमास उरध मुखभूले सोदिन काहेकभूले १ ज्योंमाखी स्वादैलहिबिहरै शोचिशोचिधनकीन्हा । त्योंहींपीछे लेहुलेहुकरभूतरहनि कछुदीन्हा २ देहरीलौंबरनारि संगहै आगेसंगसहेला । मृतुकथान सँगदियोखटोला फिरि पुनि हंसअकेला ३ जारेदेहभसमह्वैजाई गाड़ेमाटीखाई । काचेकुम्भ

उदक जोभरियातनकैइहैवड़ाई ४ रामनरमातिमोहसें माते परयो कालवशकूवा।कहकबीरनल आपुबँधायो ज्योंनलनी भ्रमसूवा५॥

फिरहुकाफूलेफूले।जोदसमासउरधमुखझूलेसो दिनकाहेकभूले१

औरे औरे मतनमें लगिकै कहा फूलेफूले फिरौहौ कि हमहीं मालिक हैं हमहीं मुकहैं दशमहीना उर्ध्व मुख गर्भ में झूलत रहे तहां कह्यो कि हे साहब मैं तिहारो भजन करौंगो मोको छोड़ावो सोदिन काहेको भूलिगये अब काहे भजननहीं करौहो निकसतहीं कहांकहां करनलग्यो जोकहो जब हम गर्भमें रहे तब हमको साहबै दयालुता करिकै सुरति लगायो अब काहे दयालुता करिकै सुरति नहीं लगावै हैं सोहम कहाकरैं हमको साहबई भुलाई दियो अरेमूढ़ साहबतो गोहरावत जाइहै सब शास्त्र वेदके तात्पर्य करिकै बीजकमें कि जो मोको जानि भजनकरु तो मैं तेरो उद्धार करौंगो सोगर्भ वासमें जो तैं भजन करिबेको कौलकियो सो भजन नकियो भुलाय दियो तामें प्रमाण कबीरजीको मुक्तिलीला ग्रन्थ को ॥ गर्भ बासमें रह्यो कह्यो मैं भजिहौंतोहीं। निशिदिनसुमिरौं नामकष्टसे काढौमोहीं ॥ यतनाकियो करार काढ़िगुरु बाहर कीना। भूलिगयोनिजनाम भयोमायाआधीना ॥ सो साहब को कौन दोषहै तुहीं कौलते चूकिगयो साहबको भजननकियो १ ॥

ज्योंमाखीस्वादैलहिविहरै शोचिशोचिधनकीन्हा।
त्योंहीं पीछे लेहुलेहुकर भूतरहनि कछुदीन्हा २

जैसे माखी फूलन के रसके स्वादको पाईकै विहारकरै है औ ताहीके सहतको धन जोरिजोरिकै धरैहै तैसे तुमहूंविषयभोगकरिकै धन जोरि जोरि धरौहौ सो जैसे कोलआइकै मछहनकोलाइकै सहतको लैजाइकै आपुसमें बांटिलेइहै तैसे तोहीं पछिकहे जब तुमन रहिजाउगे तब तिहारे धनको स्त्री पुत्रादिक लेहुलेहु करिकै बांटिलेइँगे अरु तुमको भूतकीरहनि कहे दशदिन भूत कहैंगे मरघटामें बैठावेंगे २ ॥

देहरी लौंवरनारि संगहै आगे संगसहेला ।
मृतुकथानसँगदियोखटोलाफिरिपुनि हंसअकेला ३
जारेदेह भसम ह्वैजाई गाड़े माटीखाई ।
काचेकुंभ उदक जो भरिया तनकै इहैबड़ाई ४

ये चारोतुकनको अर्थ स्पष्टै है ४ ॥

रामनरमसि मोहमें माते पर्योकालबशकूवा ।
कहकबीरनलआपुबँधायो ज्योंनलनीभ्रमसूवा ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीवमोहमें मातेराममें नहीं रमैहै कालके वश ह्वैकै संसार कूपमें परयोहै याते बार बार तेरोजनम मरणहोइहै सो तौ अपनेही भ्रमते नानादुख सहैहै जैसे नलिनी को सुवा अपनेही चंगुलते धरि लियो छोड़ै नहींहै मारो जाइहै तैसे तंहू नानामतनमें लगिकै अरुबिपयनमें लगिकै आपहीतेयह संसारमें परिकै बँधिगयो संसारको धरेहै भाव यहहै संसार तोको बांधे नहीं है तैंछोड़ि काहेनहीं देइ है अरु जेहि साहबको तैं है जहां एकऊ दुःख नहीं है तिनमें काहे नहीं लगै है ५ ॥

इतितिहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ चौहत्तरवांशब्द ॥

योगियाऐसोंहैबदकरणी । जाकेगगनअकाश न धरणी १ हाथनवाकेपाउँनवाकेरूपनवाकेरेखा । बिनाहाटहटवाईलावै करैबयाईलेखा २ कर्मनवाकेधर्मनवाके योगनवाकेयुगती । सींगीपत्र कछुवनहिंवाककाहेकमांगैभुगुती ३ तैंमोहिंजानामैंतोहिंजाना मैं तोहिंमाहसमाना । उतपतिप्रलयएकनहिंहोती तबकहुकौनको ध्याना ४ योगियाएकआनिकियठाढ़ोरामरहाभरिपूरी । औषधि मूलकछुवनहिंवाकोरामसजीवनमूरी ५ नटवतबाजीपेखनीपेखै बाजीगरकीबाजी । कहैकबीरसुनोंहोसन्तोभाईसोराजबिराजी ६॥

योगियारेसोहैंबदकरणी। जाकेगगनअकाशनधरणी१
हाथनवाके पाउँन वाके रूपन वाके रेखा।
बिना हाट हटवाईलावे करैवयाई लेखा २

योगियाकहै संयोगियाको ब्रह्मसंयोग करिकै जगत् करैहै याते योगिया माया सबलित ब्रह्महै सो वह योगियाकी बदकरणी है कहे निषिद्ध करणीहै जौने चैतन्याकाशमें अहंब्रह्मास्मि बुद्धिकरै है तौने चैतन्याकाश मेरे लोकको प्रकाशहै तहां आकाश धरणी एको नहीं है १ वह चैतन्याकाश को जो मानि लियो है कि सो मही हौं ऐसा जो समष्टि जीव चैतन्यब्रह्मरूप सोवाके न हाथहै न पाउँ है न वाके रूप रेखाहै जहांजीव नानाकर्मकरैहै अरुवही कर्मनको फलपावैहै जहां यही लेनदेन ह्वैरह्योहै सो जोहै जगत हाट वाकेनहींहै कहे देशकालवस्तु परिच्छेद तेशून्यहै औहटवाई लगोतैहै कहे मायासबलित ह्वैकै जगत् करतैहै अरु बया और को अनाज और औरको नापिदेइहै अरु ब्रह्मजोहैबया सोमाया सबलित ह्वैकै ईश्वररूपते जीवनके किये जेकर्मकेफलहैं ते जीवन को देइहै २॥

कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाकेयुगुती।
सींगीपत्र कछुव नहिं वाके काहेक मांगै मुगुती ३

अरुवह ब्रह्मको न कर्म है न धर्महै और न वाकेयोग युगुती है औ सींगीजो योगी लोग बजावैहैं सोवाके नहीं है औ योगी तुम्बा लिये रहैहैं अरु वाके पात्र नहींहै सो कबीरजी कहैहैं कि वह ब्रह्मतौ न योग करै न वेष बनावै सिद्धांत में तो कछू वई नहींहै सो हेयोगिउ ज्ञानिउ वेष बनाइकैजो कहौहौ कि हमहीं ब्रह्महैं तौ मुक्ति कहे ऐश्वर्य काहे मांगौ हौ कि हमहीं जगत् के मालिक औ ब्रह्मह्वैजाइँ हेगुरू हमको वह युगुति बताइदेउ औ जो मुक्ति पाठ होइ तौ तुम पहिलेहीते मुक्तिबने रहे गुरुवालोगनते काहेमुक्तिमांगौहौ कि जामें हम मुक्तिह्वै जाइँ सो युगुति

बनाइदेउ जोकहो हम आपने भ्रम निवृत्ति करिबेको हम मुक्ति को ज्ञान मांगहैं तौ अरे मूढ़ौ वहब्रह्मके तो कुछ हई नहींहै वह निर्लेपहै वहब्रह्म जोतुम होते तोअज्ञानईतुम्हारे कैसेहोतो ३ ॥

तैं मोहिं जाना मैं तोहिं जाना मैं तोहिं माह समाना।
उतपति प्रलय एकनहिंहोती तब कहु कौनकोध्याना ४

श्रीकबीरजीकहैहैं कि हेजीव ज्ञानजो तैंमानिलियोहै कि केते उपासनाकरै हैं कि मैं ईश्वरहौं ईश्वरमें समानहौं ईश्वर मोहीं में समानहै तौ उत्पति प्रलय जब कुछुनहींहै तबतोबताउकौन को ध्यानहै अर्थात् काहूको ध्यान नहीं करत रह्यो भाव यह है कि तबजो ब्रह्महोते तौ संसारी काहे होते ४ ॥

योगिया एकआनि किय ठाढ़ो राम रहा भरि पूरी।
औषधिमूल कछुव नाहिं वाके राम सजीवनि मूरी ५

सोतैंहीं यह योगिया माया सबलित ब्रह्मको अनुभवकरिकै धोखा ब्रह्महीको साहबमानि ठाढ़कै लीन्ह्योहै फिरि कैसोहै ना कुछु औषधिहै नावाकेमूलहै ताको मानैहैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रहैं सजीवनिमूरि सर्वत्र पूर्ण ह्वैरहहैं ताको नहीं जानैहैं सजीवनमूरि याते कह्यो औ नाना ईश्वर जीवत्व मिटायदेनवारे हैं औसाहब जीवनको जियायदेनवारेहैं अर्थात् रूपदेनवारेहैं ५॥

नटवत बाजी पेखनी पेखै बाजीगर की बाजी।
कहैं कबीर सुनोहो संतो भई सो राजबिराजी ६

जोन तू धोखा ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण मानैहै सो तेरी यह पेखनी नटवत् बाजी पेखनीहै अर्थात्झूठहै बाजीगरकी बाजीहै अर्थात् सांच असांच देखावै असांच सांच देखावै है सोकबीरजी कहै हैं कि हे संतौसुनौ उनको राजबिराजीह्वैगई कहे सर्वत्र पूर्णसत्य सेनाहुमैहैं ते उनकोनहीं जानि परैहैं वही धोखा ब्रह्म में लगै हैं

असत्यही सर्वत्र देखैं हैं मनमाया की राज्य ह्वै रही है साहब को राज्य नहीं है ६ इतिचौहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपचहत्तरवांशब्द ॥

ऐसो भर्म विगुरचिनभारी। वेद किताब दीन औ दोजखको पुरुषाको नारी १ माटीको घट साजबनाया नादेविंद समाना। घटबिनशे क्यानाम धरहुगे अहमकखोजभुलाना २ एकैहाड़ त्वचामलमुत्रा रुधिरगूदयकमुद्रा। एकविंदुतेसृष्टिरच्यो है कोब्राह्मण को शुद्रा ३ रजगुणब्रह्मातमगुणशंकर सतोगुणी हरिसोई। कहैं कबीर राम रमिरहिया हिन्दू तुरुक न कोई ४ ॥

ऐसोभर्मविगुरचिनभारी।
वेदकिताबदीनऔदोजखकोपुरुषाकोनारी १

ऐसोकहे यहतरहते जैसो आगेकहै हैं तैसो चिन्मात्रजीवको विगुरचिनकहे बिगारिवो भर्मते बहुतभारीहैं काहेतेकि भर्मते दु-बिधा कहिकै वहसार पदार्थ को न जान्यो हिंदूमुसल्मान दोऊ बिगरिगये हिन्दू वेदकी राहते नानामत बनाय लेतभये औ मु-सल्मान किताबनकी शरालैकै नानामत दूसरो दीनको खड़ा करतभये हिन्दू नरक स्वर्ग मुसल्मान बिहिश्त दोज़ख कहतभये जो वेद किताबके तात्पर्यते देखौ तौ न कोई पुरुष जानिपरै न नारी जानिपरै सो जब पुरुषही नारीको भेद नहीं है तौ हिन्दू मुसल्मान कैसे भेद भयो १ ॥

माटीकोघटसाजबनाया नादेविंदसमाना।
घटबिनशेक्यानामधरहुगेअहमकखोजभुलाना २
एकैहाड़त्वचामलमुत्रा रुधिरगूदयकमुद्रा।
एक विंदुते सृष्टिरच्योहै को ब्राह्मण को शुद्रा ३

नाभीके तरे जो दशआंगुरकी ज्योति है औ तौनेमें जब प्राण

वायुको संयोग होइहै तबनाद उठैहै तामें विंदुसमाइगयो तब माटीको घट यहपिंडभयो ताहीकोनामधरावैहै जबयाको घटविनशिगयो कहे शरीर छूटिगयो तबयाको क्या नाम धरौगे अर्थात् नामरूपयाके सबमिथ्याहैं अहमकजो है जीवसोनामरूपके खोज में भुलाइगयो ये सब जीवात्मा के नामरूप नहीं हैं २ सो एकै हाड़ादिकनते औ एकैबिन्दुतेकहे वीर्यते सकलसृष्टिभई है काको हिन्दूकहैं काकोमुसल्मानकहैं काकोब्राह्मणकहैं काकोशूद्रकहैं शरीरमें यहीसाजु सबके हैं अरु वेदमें कर्म किताब में शरायही ते नानाभेदलगै हैं जो बिचारिकैदेखो तौ नामरूपहीको भेदलगिरह्यो है आत्मातो सबको चितहीहै औ मासु चाम सबके पंचभौतिकही है अब जे गुणाभिमानी हैं तिनको कहै हैं ३ ॥

रजगुणब्रह्मतमोगुणशङ्कर सतोगुणीहरिसोई ।
कहैकबीररामरमिरहियाहिन्दूतुरुकनकोई ४

वहीनामरूप के भेदते ब्रह्मारजोगुणी शंकरतमोगुणी बिष्णु सतोगुणी भये औ वही नामके भेदते मुसल्मानमें इनहींको अज्ञाजील मैकाईल इज्राईल कबीरजी कहैहैं कि येतो सबनाम रूपके भेदहैं इनको सबको आत्मा एकई है तिनमें अंतर्य्यामी रूपते मनबचनके परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रई रमिरहेहैं जो कहो रामनामौ तौ नाममें आवैहै तौ रामको नाम मनबचन में नहीं आवैहै आपही स्फुरितहोइ है तेहिते नामत्व नहीं है अरु श्रीरामचन्द्र निर्गुण सगुणके परे हैं तिनको जानै औ जो आत्मा नामरूपते भिन्नहै न हिन्दूहै न तुरुकहै तामें येई राम रमिरहे हैं या हेतु ते सबकोआत्मा इनहींकोदासहै तेहिते इनहींकोजोजानै सोई मुक्तहोइहै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र निर्गुणसगुणके परे हैं तिनहींको रामनाम जाने मुक्तिहोइहै तामेंप्रमाण ॥ रामकेनामते पिंडब्रह्माण्डसब रामकानामसुनिभर्ममानो । निर्गुणनिराकारके पारपरब्रह्महै तासुकानामरंकारजानो । विष्णुपूजाकरैध्यानशंकर

धरैं भनेंसुविरंचिवहुविविधवानी । कहैकबीरकोइपारपावैनहीं रामकानामअकहकहानी ४ इतिपचहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ छिहत्तरवांशब्द ॥

अपनपौआपुहीविसरो । जैसेशोनहाकांचमँदिलमेंभर्मतभूंकिमरो १ ज्योंकेहरिवपुनिरखिकूपजलप्रतिमादेखिपरो । ऐसेहिमदगजफटिकाशिलापरदशनानिआनिअरो २ मर्कटसुठीस्वादनाविहुरेघरघरनटतफिरौ।कहकवीरललनीकेसुवनातोहिंकवनेपकरो ३ ॥

अपनपौ आपुही विसरो ।
जैसेशोनहा कांचमँदिलमेंभर्मतभूंकिमरो १
ज्योंकेहरिवपुनिरखिकूपजलप्रतिमादेखिपरो ।
ऐसेहिमदगजफटिकाशिलापरदशनानिआनिअरो २

अपनपौ कहे आपने जे परम पुरुषपर श्रीरामचंद्रहैं तिनको आपही ते यह जीव विसरिगयो जैसेकूकुर कांचके मंदिरमें आपनो रूप देखि देखि भर्मते भूँकि भूँकि मरैहै १ अरु जैसे केहरि कूपकेजलमें अपनी प्रतिमादेखिकै कूदिपरैहै अरु ऐसेही प्रतिविंब देखि स्फटिक शिलामें हाथी दांत टोरिडारैहै २ ॥

मर्कटसुठीस्वादनाविहुरैघरघरनटतफिरो ।
कहकवीरललनीकेसुवनातोहिंकवनेपकरो ३

अरु जैसे मर्कट सूठीमें जो है दाना ताके स्वादके लिये फँसि गये बाजीगरके साथ नाचत वागैहै सो कवीरजी कहैहैं कि जैसे इनकेसवके भ्रमहोइहै तैसे हे जीव तैंहीं सवकल्पना करिलियो है भपनी कल्पनाते तोहीं को भ्रम होइहै नाना उपासना नाना ठाकुर खोजतफिरैहैं विचारिकै देख तोजबतेरे कल्पना नहींरही तवते शुद्ध रहैहै जैसे सुवा ललनीको पकरि लेइहै तैसे तैंहीं ये सब कल्पना करिकै कल्पनामें वँधोहै जैसे सुवा ललनीको जो

छोड़िदेइ तौ वृक्षमेंपहुँचै जाइ तैसे तैंहू जो कल्पनाको छोड़िदेइ तौ तोको कौनपकरयाहै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रके पासपहुँचे जाइ जबसब कल्पना छोड़िशुद्ध ह्वैजाइ है तब साहब अपनो विग्रहदेइहै तामें स्थितह्वै साहबके लोककोजाइहै तामेंप्रमाण॥ आदत्तेहरिहस्तेनहरिपादेनगच्छति इतिस्मृतिः । अरुश्रीकबीरजू जीको मंगलप्रमाण ॥ चलोसखीबैकुण्ठबिष्णुमायाजहां । चारिउमुक्तिनिदानपरमपदलेतहां ॥ आगेशुन्यस्वरूपअलखनहिंलखिपरै । तत्त्वनिरञ्जनजान भरमजनिचितधरै ॥ आगेहै भगवन्त तोअक्षरनाउँहै । तौनमिटावैकोटिबनावैठाउँहै ॥ आगेसिंधुबेलंदमहागहिरोजहां । कोनैयालैजायउतारैकोतहां ॥ करअजयाकी नावतोसुरतिउतारिहै । लेइहौंअज्जरनाउँतोहंसउबारिहै ॥ पार उतरपुरुषोत्तमपरख्योजानहै । तहँवाधामअखण्ड तोपदनिर्बान है ॥ तहँनाहिंचाहतमुक्तितोपदडारैफिरै । सुरतसनेहीहंसनिरन्तर उच्चरै ॥ बारहमासबसंतअमरलीलाजहां ।कहैंकबीरबिचारिअटलह्वैरहुतहां ३ इतिछिहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसतहत्तरवांशब्द ॥

आपनआशकियेबहुतेरा। काहुनमर्मपावहरिकेरा१इन्द्रीकहां करै विश्राम। सोकहँगयेजोकहतेराम २ सोकहँगयेहोतअज्ञान । होयमृतकवहिपदहिसमान ३ रामानंदरामरसछाके। कहकबीर हमकहिकहिथाके ४ ॥

आपन आशाकिये बहुतेरा । काहुनमर्म पावहरिकेरा १

आपने स्वरूपके चीन्हिबेकी बहुतेरा कहे बहुत आशकियेकि हमारो आत्मै सबकोमालिकहै यहीकेजानेते हम मुक्तिह्वैजाइंगे परन्तु मुक्ति न भये अरु हरिजेपरमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र सबके कलेश हारनवारेहैं तिनको मर्मनपायो अर्थात् उनको कोई न चीन्ह्यो १ ॥

इंद्री कहांकरैंविश्राम । सोकहँगयेजोकहतेराम २

अरु यह कोई नहीं विचारकरै है कि इन्द्री कहांविश्रामकरैहै काहेते कि इन्द्रीकेजेदेवताहैं तिनतेसमेत इन्द्री तो मनतेचैतन्य है औ मन जीवात्माते चैतन्यहै औ जीवात्मा परम पुरुषपर श्रीरामचन्द्रके प्रकाशते चैतन्यहै सो जेआपने स्वरूपको विचार करै हैं कि महींरामहों तेवेरामभरकहांगये अर्थात् नहींगये ब्रह्ममें समानरहे अरु एकएकतेचैतन्यहै तामें श्रीगोसाईंतुलसीदासको प्रमाण ॥ विषयकरनसुरजीवसमेता । सकलएकतेएकसचेता ॥ सबकरपरमप्रकाशकजोई । रामअनादिअवधपतिसोई ॥ जगत प्रकाशप्रकाशकरामू । मायाधीशज्ञानगुणधामू २ ॥

सोकहँगये होतअज्ञान । होयमृतक यहिपदहिसमान ३
रामानन्दरामरसछाके । कहकबीरहमकहिकहि थाके ४

जीवब्रह्ममें समान रह्यो शुद्ध रह्यो जब मनकी उत्पत्ति भई अज्ञानभयो सो कहांगयो अर्थात् तब मृतकह्वैकै अपने स्वरूपको भुलायकै यहिपदहिकहे यहिसंसारमें समान ३ श्रीकबीरजीकहे हैं कि हमचारोंयुगमें कहिकहिथकिगये कि रामानंदजेहैं तेईराम के रसमेंछके हैं अरु तेईपरमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रके धामकोगयेहैं और कोई नहीं परम मुक्तिपाई है तुमहूँरामानंद होतजाउ अर्थात् तुमहूँ रामहींते आनंद मानतजाउ यह हम चारोंयुगमें सब को समुझायो परन्तु कोई हमारोकह्यो न मान्यो राममें आनंद कोई न मान्यो सब वही माया ब्रह्ममें लागिकै संसारी होतभयो ४ ॥

इतिसतहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअठहत्तरवांशब्द ॥

अबहमजानाहो हरिबाजीकोखेल । डंकबजायदेखायतमाशा बहुरिसोलेतसकेल १ हरिबाजीसुरनरमुनिजहँडे मायाचेटकलाया । घरमेंडारिसबनभरमाया हृदयाज्ञाननआया २ बाजीझूँठ

बाजीगरसांचा साधुनकीमतिऐसी । कहकबीर जिनजैसीसमुझी ताकीगतिभइतैसी ३ ॥

अब हम जाना होहरि बाजी को खेल ।
डङ्कबजाय देखायतमाशा बहुरिसोलेतसकेल १

हे हरि हे साहब संसाररूप बाजीकेखेलकोहेतु अबहमजान्यो अब जो कह्यो तामेंधुनियहहै कि तबयहविचाररहे कि साहब तो दयालुहै शुद्धजीवको संसाररचि अशुद्ध काहेकरदिये यहशंका रही सो अब जबछूटी तब साहबकोहेतुजान्यो साहब जो सुरति दियो सो आपनेपासलिवाय सुखलिये डंकाबजायकहे रामनाम शब्द सुनायकै तमाशा देखाय कहे जगत् मुख अर्थ द्वार संसार तमाशा देखायकै बहुरि सो लेत सकेलकहे जोकोई जीव साहब के सन्मुख भयो ताको साहबमुख अर्थ बताइकै चितअचितरूप विग्रह जगत् देखायकै संसार सकेलिलेय है अर्थात् संसार देखि नहीं परै १ ॥

हरिबाजी सुर नर मुनि जहँडे माया चेटकलाया ।
घरमेंडारि सबनभरमाया हृदयाज्ञान न आया २
बाजी झूँठ बाजीगर सांचा साधुनकी मति ऐसी ।
कहकबीर जिनजैसी समुझी ताकीगतिभइतैसी ३

हरि जे साहब तिनकी बाजी जो संसार तामें साहबको हेतु न जानिकै सुरनरमुनि जेहैं ते रामनामको संसारमुख अर्थकरिकै मायाके चेटकमें जहँडिगये अर्थात् भूलिगये सोमाया इनकोघर जोसंसार तामेंडारिकै भरमायदियो हृदयमें ज्ञाननहोतभयो तौन हमजान्यो साहबसुरतिदियो तैंअपनेपास बोलावैको सो या जीव आपहीते संसार बाजीरचि भूलिगयो २ बाजी जोसंसार सो झूँठ बाजीगर जो जीव सो सांचहै सो साधुनकीमति तो ऐसीहै और जे सबहैं बद्धजीव ते जैसे समुझिनिहै ताकी तैसीहीगति भई

है सो गतिहू सब अनित्यहै ३ ॥ इतिअठहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथउन्नासीवांशब्द ॥

कहोहोअम्बरकासोंलागा। चेतनहारेचेतुसुभागा १ अम्बर मध्येदीसैतारा। यकचेतैदुजेचेतवनहारा २ जेहिखोजैसोउहवां नाहीं। सोतोआहिअमरपदमाहीं ३ कहकबीरपदबूझैसोई। मुख हृदयाजाकेयकहोई ४ ॥

कहोहो अम्बर कासोंलागा। चेतनहारे चेतुसुभागा १
अम्बर मध्ये दीसै तारा। यक चेतै दुजे चेतवनहारा २

तैंतोसुभागाहै साहबकोहै तैंकाहे मनमाया ब्रह्ममें लगिकै अभागाह्वैरहैहैचेतकरनवारेतैंचेततोकरु अंबरजोहैलोकप्रकाश रूप ब्रह्म सो कहांलागाहै अर्थात् वहकाको प्रकाशहै वहसाहबके लोकको प्रकाशहै चेत तो करु १ वह अम्बर जो है लोकप्रकाश ब्रह्म तामें तारादेखाइहैकहे जबतैं उहांअहंब्रह्म बुद्धिकरै है तबहीं जगत्रूप तारा उत्पत्तिहोइहै तौनेही जगत् में एक गुरूहोइ है सो चेतावै है अरु एक शिष्यहोइहै सो चेतकरै है २ ॥

जेहिखोजैसोउहवांनाहीं। सोतोआहिअमरपदमाहीं ३
कहकबीर पदबूझै सोई। मुखहृदया जाके यकहोई ४

सो जेहि आपने स्वरूपको तैं खोजै है कि मैंआपनेस्वरूपको जानिकैमुक्तिह्वैजाउँसोउहां वागुरुवनकोज्ञानमेंनहीं है औ न वह लोकप्रकाशमें है काहेते कि जेजे देवतनमें वेलगावै हैं तेई अमर नहीं हैं तौ तोको कहां मुक्तिकरैंगे अरु महाप्रलयमें जब लोक प्रकाशमें लीनहोइहै तबउहौंते उत्पत्ति होइहै तेहिते उहौंगये अमर नहीं होइहै तेहिते यहआयो कि तैंतोअमरनहींहोइहैतेहिते यह आयो कि तैंतो अमरपदमेंहै साहबको अंशहै साहबको जानिले तौ अमरह्वैजाइ ३ श्रीकबीरजीकहैहैं कि यह अमरपद अ-

पनोस्वरूप कोईनिरलाबूझै है कौन जाकेसम अधिकनहीं है ऐसो जो है एक रामनाम सोजाकेमुख हृदयमें होइहैसोईबूझै है ४ ॥

इतिउन्नासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअस्सीवांशब्द ॥

बन्देकरिलेआपनिबेरा । आपुजियतलखुआपठवरकरुमुयेकहां घरतेरा १ यहि अवसर नहिं चेतोप्राणी अन्तकोईनहिंतेरा । कहै कबीर सुनोहो सन्तौ कठिन कालको घेरा २ ॥

बन्देकरिले आपनिबेरा ॥

आपुजियत लखु आप ठवर करु मुये कहां घरतेरा १

यहि अवसर नहिं चेतौ प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा ।

कहै कबीर सुनोहो संतौ कठिन काल को घेरा २

हेबन्दे अपनेमें तो निबेराकरिले अपनेजियत अपनाठौरतौकरु सुयेते तेराघरकहां है अर्थात् जोसत्असत्कर्मकरैगो सोसबनरक स्वर्गादिकनमें भोगकरैगो तेतो कर्मकेघरहैं तेरे घर नहीं हैं औ जो ज्ञानकरिकै आपनेको ब्रह्ममानिकै ब्रह्मप्रकाशमेंह्वैकै शुद्धजीवनके रहैगो सो ब्रह्महोनातौधोखाहै जब फेरि उत्पत्तिसमयहोइगो तब माया धरिलैआवैगी पुनि संसारीह्वैजाइगो अरु और और देवतन की उपासनाकरिकै उनके लोकजाइ जो तेऊतेरेघर नहीं हैं जब मायाधरिलैआवैगी तबसंसारीह्वैजाइगो जबमरैगो औरघरनमें जाइगो तब विचार करनेकी सुधि न रहिजाइगी तेहिते जीतही आपनोघर विचारु तेरोघरवहहै जहांकेगये फिरि न आवै सोतैं साहबकोअंशहै सोसाहबकेपास घरकरुकहे ठौरकरु जातेफिरि न संसारमें आवै १ सो कबीरजी कहे हैं कि हेप्राणिउ यहिअवसरमें कहे मनुष्य शरीरमें जो साहबको नहीं जानौहौ तौ हेसंतौसुनौ तुमको अन्तकालमें यहकठिन जो कालकोघेराहै ताते कौनबचा-

वैगो अर्थात् जहांजहां जाहुगे तहांतहांते कालतोको खाइ लेइगो साहबवचावनवारेखड़ेहैंताकोप्रमाण आगेलिखिहीआयेहैं ॥अजहूंलेहुंछँड़ाइकालसोंजोघटसुरतिसँभारै।सोसाहबकोजानिकैसाहबकेपासजायजननमरनछूटिजाइ२॥इतिअस्सीवांशब्दसमाप्तम्॥

अथइक्यासीवांशब्द ॥

तूतोररामसाकीभांतिहौसंतउधारनचूनरी१ वालमीकिवनवोइयाचूनिलियाशुकदेव। कर्मवेनौराह्वैरह्योसुतकातैजयदेव२ तीन लोकतानातनोब्रह्माविष्णुमहेश । नामलेतमुनिहारिया सुरपति सकलनरेश३ बिनजिह्वागुणगाइयाबिनवस्तीकागेह॥सूनेघरका पाहुनातासोंलावैनेह ४ चारिवेदकैंडाकियो निरंकारकियराक्ष । बिनैकबीराचूनरी पहिरैंहरिकेदाक्ष ५ ॥

तू तोर राम साकी भांति हौ संत उधारन चूनरी १

जोतुम मनमाया ब्रह्ममें लगिरह्योहै सोतुम इनके नहींहौ तुमतोर राममाकभांतिहौ अर्थात् रामजोमैंहौं तिनकी भांतिहौ जैसे मैंबिष्णुचैतन्यहौं तैसे तुम अनुचैतन्यहौ मेरेअंशहौ सोमेरो जो रामनामहै ताको उधारन नामकचूनरी कबीरसंतसेरोवनायोहै यही रकारबीज मों मकारहूहै यहिहेतुते साहब रकारहीको कहैहैं अर्थात् जबरामनाममें जपौगे तब यहजानिजाहुगे कि मकार मेरोस्वरूपहै रकार साहबको स्वरूपहै औकबीर संतअसार जोहै जगत्सुख अर्थ ताको त्यागिकै सारजो है साहबसुख अर्थ ताको ग्रहणकरिकै चूनरीबनाई है सोकहैहैं १ ॥

वालमीकिवनबोइया चूनिलियाशुकदेव ।
कर्म बेनौरा ह्वै रह्यो सुत कातै जयदेव २

माटीकोहै बहुताछिद्रहैं याते शरीर बल्मीककहै वेमौरिहै तामें जोरहै सो वालमीकि कहावै सो वाल्मीकि आत्मा है सो वाणी

रूपी जो बनकहे कपासहै ताको बोवतभयो अर्थात् वहीकेइच्छा शक्तिभईहै औ शुचशोकेधातुहै तेहिते शुकशब्दहोइहै ताको जो देवहोइ सो शुकदेव कहावैहै सो शोच मनकेहोइहै अर्थात् संकल्प विकल्प मनकेहोइ है सो शुकदेव मन है सो आत्माते जो वाणीरूपी कपासकेढेढाकोअनुसारभयो ताकोचुनिलियो अर्थात् वाणीमनैते निकसीहै अरु जयकरिकै क्रीड़ाकरै अथवा जयविषय क्रीड़ाकरै सो जयदेवकहावै सो सबकोजीतिलियो है अज्ञान सो मूलाज्ञानजयदेवहै तौनेमेंकर्मबेनौराह्वैरहयोहै विद्याअविद्यामाया सोईसूतहै जाको मूलाज्ञान जो अहंब्रह्मबुद्धितौनहै जाकेऐसोजो जीव जयदेव सो कातै है अर्थात् अहंब्रह्मबुद्धि जबसमष्टि जीव कियोहैतवहीं मनकीउत्पतिभई कर्मभयोहै संसारप्रकटभयो २ ॥

तीन लोक ताना तनो ब्रह्मा बिष्णु महेश ।
नामलेतमुनिहारिया सुरपतिसकलनरेश ३

तीनलोक जोहै सोईतानातन्योहै ताको तीनिखूंटाहैं रजोगुण ब्रह्मा मृत्युलोकके सतोगुण विष्णु आकाशके तमोगुण महेशपातालके अरुअनेक जेनामहैं अनेक जेमतहैं अनेक जेज्ञानहैंवेदमें सोई कपरा तयारभयो तिनको नामलेत मुनि औ इंद्र औ सब राजा हारिगये वही ब्रह्मरूपी कपराके गठियामें कसेराहिगये वासोंनिकसिकै मुक्ति न पावतभये अर्थात् मोको न जानतभये ३ ॥

विनाजिह्वा गुण गाइया बिन बस्तीका गेह ।
सूने घर का पाहुना तासों लावै नेह ४

कहतकाभये कि विनाजिह्वा जोगुणगावैहै कहेअजपाजोहैसोहं तौने अजपाकोसाथ गाइकैकहे जपिजपिकै विनवस्तीको गेह जोहै ब्रह्मभूठा तौने कपराके गठियाके भीतर बँधिजातभये कहे यहमानतभये कि हमहीं ब्रह्महैं सो वहघरतो देशकाल वस्तु परिच्छेदते सूनहै सो जैसे सूनेघरमेंपाहुनाजाय औ कुछुनपावैतैसे

जीव उहांकुछु न पावतभयो येतोरामनामको जगत्मुखअर्थ करि सब यहरूपराविनो अरु श्री कबीरजी साहब मुख अर्थकरि कौन रूपरा बिनैहैं सो कहै हैं ४ ॥

चारिवेदकैंड़ाकियोनिरङ्कारकियराक्ष ।
बिनैकबीराचूनरी पहिरैं हरिकेदाक्ष ५

चारिवेदको कैंड़ाकरिकै औनिरंकारको राक्षबनाइकै वहीनिरंकारकेभितरते निकासिलैजाइकै अर्थात् प्रकाशरूपब्रह्मकौनको प्रकाशहै तबयहविचारघोसाहब के लोककोप्रकाशहै लोककौनको है यहीविचारकरिबो ब्रह्मते वेदको तात्पर्य निकसिबो है सो चारिउवेदको कैंड़ाकरिकैब्रह्मजोहै राक्षतौनेतेवेदकोतात्पर्यनिकासि रामनामकी चूनरी श्रीकबीरजीकहैहैं कि मैं बिनौहौं ताकोहरिके जानिबेमें दाक्षकहेदक्षजे कोई बिरलेदासहैं तेपहिरैहैं अर्थात्राम नामजपिके साहबकोजानैहैं यहपदमें बाल्मीकिको शुकदेव को जयदेवकोजोअर्थहमकियोहै सोईअर्थहै काहेते कि जे ईवाल्मीकि शुकदेव जयदेवकोअर्थकरैहैं तिनको यहज्ञाननहींरह्यो कि तीनि लोकजबतानातनिगयेहैंब्रह्माविष्णुमहेशखूंटाभये हैं तबबाल्मीकि शुकदेव जयदेव नहींरहेहैं ५ ॥ इतिइक्यासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथबयासीवांशब्द ॥

तुमयहिविधिसमुझौलोई।गोरीमुखमन्दिरवजोई १ एकसगुण षटचक्रहिबेधै बिनुवृषकोल्हूमांजै । ब्रह्मैपकरिअग्निमेंहोमै मक्ष गगनचढ़िगाजै २ नितैअमावसनितैग्रहणहोइ राहुग्रासनितदीजै । सुरभीभक्षणकरैवेदमुख घनवरसैतनछीजै ३ पुहुमिकपानी अंबर भरिया यहअचरजकाकीजै । त्रिकुटीकुंडलमाधिमंदिर बाजैऔघट अंबरभीजै ४ कहैकबीरसुनोहोसंतो योगिनसिद्धिपियारी । सदा रहै सुख संयम अपने वसुधा आदि कुंवारी ५ ॥

तुमयहिबिधिसमुझौलोई गोरीमुखमन्दिरबजोई १
एकसगुण षटचक्रहिबेधै बिनुवृष कोल्हू मांजै ।
ब्रह्मैपकरि अग्निमेंहोमै मक्षगगनचढ़ि गाजै २

वहलोई जो है लपटकहे ज्योतिसो ब्रह्माण्डमेंहैताकोयहिबिधिते तुमसमुझौ अथवालोईकहे हेलोगौ तुमयहिबिधिते समुझौ गोरीजोहै कुंडलिनीशक्ति नागिनी ताहीके मुख शरीररूपीमन्दिर कहे मृदंग अथवा मन्दिर कहे घरबाजैहै अर्थात् परावाणी उहैंते निकसैहै सोई पश्यंतीते मध्यमाआइ बैखरीमें प्रकटहोइहै षटचक्रको बेधिकैकुण्डलिनीशक्ति नागिनीजायहै ताकेसाथत्रिगुणते युक्त जो एकसगुणजीव है सो जायहै सोवाकीबिधि आगे लिखि आयेहैं सोवृषभतो उहांनहीं चलैहै औ कोल्हू जो कुंडलिनीशक्ति सोमांजैकहे देहमांजिकैउठैहै सोपांचहजारकुम्भककियो तबश्वासनते तपितहोइहै अथवा खेचरीते सुधा बिंदु वाके ऊपर परयो ताकी शीतलतापाइकै उठैहै सो ब्रह्मांड में जाइकै अर्थात् जेतने रोज समाधि लगायो तेतने दिनरही ताकेसाथ जीवहू गयो सो कहेहैं कि ब्रह्माण्डजो रजोगुणहै ताको योगानिमेंहोमिदियो सो रजोगुणजरयो तौ तमोगुणजरैहै अरुमक्ष जो जीवहै सोनाभीके जलमें रह्यो तहां ते चलिकै गगन जो ब्रह्माण्ड है तहां गाजै है कहे यह कहै है कि मही मालिकहौं २ ॥

नितैअमावसनितैग्रहणहोयराहुग्रासनितदीजै ।
सुरभीभक्षणकरैवेदमुखघनबरसैतनछीजै ३
पुहुमिकपानीअम्बरभरियायहअचरजकोकीजै ।
त्रिकुटीकुंडलमधिमन्दिरबाजैऔघटअंबरभीजै ४

खेचरीकी दृष्टितीनहै तामें एकपूर्णिमाहै कहे सर्वत्रपूर्णदेखैहै औ ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदाहै औ अंतरदृष्टि अमावसहै सो जबअंतर खेचरीचढ़ी औ कालपूतरी आकाशमेंवेधीकहे ऊर्ध्वदृष्टिप्रतिपदा

में वेधी तब अंधकार अविद्या ग्रहण है के चैतन्यको छाड लियो अर्थात् प्रथम अंधकार देखो परो और कछु न देखि परयो पुनि बिजली ऐसी चमकी तब तारागण वीर्य है ताकी गति मालूम भई तब प्रथम सूर्यमंडल पुनि चंद्रमंडल देखो परयो सो वही ज्योतिमें लीनरहै हैं समाधि लगीरहै हैं जब समाधि उतरी तब जीवको अमावस भई तममें परयोआइ तब सूर्य प्रकाश देखतरह्यो ताको मायारूपीराहु ग्रसिलियो अथवा जबनागिनिको सुधा पिआवै है तब बहुत दिनकी समाधि लगैहै अब जौन पुरुष रोज समाधि लगावैहै औ उतारै है सोकहै हैं जब समाधि चढ़ाय लैगयो तब याको अमावस ह्वै गयो पुनि तममें परयोऔनित्यग्रहणहोइहै वे चंद्रमा औ सूर्य दुइनाड़ी हैं तिनको सुषुम्णारूपीराहु ग्रास देइ है अर्थात् ग्रसन करावै है वही सुषुम्णामें लीनकैदेइ है जब समाधिलगी तब सुरभी जो है गायत्री मायाकुंडलिनी शक्ति सो वेदमुख वाणी भक्षण कैलियो अर्थात् वाणी रहितह्वैगयो औ तन छीजै है कहे दूबर ह्वैजाइ है सो घन बरसै है कहे सुधाबरसै है याते वनोरहैहै पुहुमीका पानी जब अंबर में भरनलगैहै कहेनीचे को वीर्य ब्रह्मांडमें चढ़ावन लगै है तब शीशे की सराई बनाइ के लिंगद्वारमें डारैहै पानी खैंचैहै जबराहसाफ ह्वैजाइहै तबपवनके साथवीर्यचढ़ै है तबपवन वीर्यकेसाथ जीवात्माचढ़िजाइहैत्रिकुटी में त्रिवेणीको स्नानकरिकै दशौअनहद सुननलाग्यो तामेंमंदिर कहे मृदंगौ हैं सोबाजैहै औघटतेकहे बङ्कनालकी राहते जबजीवात्माजाइहै तब अम्बर जो है गैबगुफाको आकाशसोभीजैहै अर्थात् उहां वीर्य पहुंचि जाइहै सोयह आश्चर्यका कीजै ४ ॥

कहैकबीरसुनोहोसंतो योगिनसिद्धिपियारी ।
सदारहैसुखसंयमअपने बसुधाआदिकुंवारी ५.

सो कबीरजी कहै हैं कि हेसंतो यह तरहकी जो सिद्धि है सो योगिनको पियारि है सोप्रथमतो सिद्धिही नहीं होइहै जोगुनाक्षर

न्यायतेसदासुखसंयममें रहै औसिद्धिभई समाधिलगी तातेफेरि वैसही योगी भये अथवा पुहुमी पति भये योग करि कै हम यह शरीरके मालिकह्वैगये मनादिक हमारे वश ह्वैगये परंतुजबयह शरीर छूटिजाइ है और शरीर होइहै तबवह सुधिसब भूलिजाइहै अरु जब पुहुमी पति भयो आपनेकोराजा मानिलियो सोजबमरि गयो तबपुहुमी आनहीकी ह्वैजाइहै पृथ्वीकुमारिहीरहिजाइहै५॥

इतिबयासीवांशब्दसमाप्तम्॥

अथतिरासीवांशब्द॥

भूलावेअहमकनादाना। तुमहरदमरामहिंनाजाना १ बरबस आनिकैगायपछारागलाकाटिजिउआपलिया। जीताजिवमुरदाकरिडारै तिसकोकहतहलालकिया २ जाहिमासुकोपाककहतहैं ताकीउतपतिसुनुभाई। रजबीरजसोंमासुउपानी मासुनपाकजोतुम खाई ३ अपनोदोषकहतनाहिंअहमक कहतहमारेबड़ेनकिया। उसकीखूनतुम्हारीगर्दन जिनतुमकोउपदेशदिया ४ स्याहीगईस फेदीआई दिलसफेदअजहूंनहुआ। रोजानेवाजबांगक्याकीजैहुजरे भीतरवैठिमुआ ५ पंडितवेदपुराणपढ़ैओमोलनापढ़ैसोकुररानी। कहकबीरवेनरकगयेजिन हरदमरामहिंनाजाना ६॥

भूला वे अहमकनादाना। तुमहरदम रामहिंनाजाना १
बरबसआनिकैगायपछारा गलाकाटिजिउआपलिया।
जीताजिवमुरदाकरिडारै तिसकोकहतहलालकिया २
जाहि मासुको पाक कहतहैं ताकी उतपति सुनुभाई।
रज बीरजसों मासु उपानी मासु न पाक जो तुम खाई ३
अपनोदोषकहतनाहिंअहमक कहतहमारे बड़ेन किया।
उसकी खून तुम्हारी गर्दन जिन तुमको उपदेशदिया४
स्याही गई सफेदी आई दिल सफेद अजहूं न हुआ।

रोजा नेवाज बांग क्याकीजै हुजरे भीतर बैठि मुआ ५
पंडित वेद पुराण पढ़ै औ मोलना पढ़ै सो कुरराना ।
कहकबीर वेनरकगये जिन हरदम रामहिं ना जाना ६
यह पदको अर्थ स्पष्टईहै अंतकेतुकको अर्थ करैहैं सब समेटिकै जेहरदम कहे हरसाइत श्वास श्वासमें रामको नहीं जानते हैं ते नादान कहे वेवकूफ भूले अथवा हरदम कहे हरएकके दम कहे प्राणमें अंतर्यामीरूपते व्यापक परम पुरुपपर श्रीरामचन्द्रको जे वेवकूफ नहीं जानतेहैं ते मोलना पंडित भूलिगये जो वे आपने हजुरामें बैठिकै रोजा नेवाज किया औ कुरान किताव पढ़ा औजो पंडित अपने घरकी कोठरीमें एकांत बैठिकै बहुत वेद शास्त्र को पढ़ा तौकाकिया आखिर नरकही में गये भावयह है कि काहूको न सुन्यो कि बिना रामको जाने मुक्त ह्वै गये ६ ॥

इतितिरासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचौरासीवांशब्द ॥

काजीतुमकौनकिताबबखाना । झंखतवकतरह्योनिशिवासर मतिएकौनाहिंजाना१ शक्तिनमानेसुनतिकरतहौमैनबदौंगाभाई । जो खोदायतुवसुनति करति तौ आपुकाटिकिनआई २ सुनति कराय तुरुकजोहोना औरत कीकाकहिये । अर्द्धशरीरिनारिवखानै ताते हिंदूरहिये ३ घालिजनेऊब्राह्मणहोना मेहरीकोक्यापहिराया । वो तौजन्मकिशूद्रिनिपरुसा सो तुमपांडेक्योंखाया ४ हिंदू तुरुककहांते आया किनयहराहचलाई । दिलमेंखोजखोजुदिलही में भिश्तकहां किनपाई ५ कहैकबीरसुनोहोसंतो जोरकरतुहौ भारी । कबिरन ओटरामकीपकरी अंतचलापछिहारी ६ ॥

काजी तुम कौन किताब बखाना ।
झंखत बकतरह्यो निशिवासर मतिएकौ नाहिंजाना १

हेकाजी तुमकौन किताबको बखानतरहौहौ निशिबासर वही किताबको बकत रहौहौ अरु वाहीमें भंखतकहे शंकाकरतरहौहौ सो कुरानकिताब तात्पर्यते जो एक साहबको वर्णनकरैहै ताको जो तुम्हारीमति न जानतभई तौ तुम कुरान किताबकी एकऊ वस्तु न जानतभये १ ॥

शक्ति न मानेसुनति करतहौ मैं न बदौंगा भाई।
जोखोदाय तुव सुनति करति तौ आपुकाटि किनआई २
घालि जनेऊ ब्राह्मण होना मेहरीको क्यापहिराया।
वोतौजन्म कि शूद्रिनिपरुसा सोतुम पांड़ेक्यों खाया ३

सुनतिकिये जो मानतेहौ कि हम मुसल्मान हैं औ यानहीं मानतेहौ कि शक्ति जोमाया सोईकरैहै सोहेभाई मैं नबदौंगा जो खोदाय तेरीसुनति करतो तौ पेटहीते कटी आउती २ सो हेपं-डित आपनीआत्माको साहबकी शक्ति न मान्यो अरु ब्रह्मसाहब को न जान्यो जनेऊ पहिरिकैतुमतो ब्राह्मणभये औ अपनीमेहरी को कहापहिरायोहै जाते वह ब्राह्मणीभई सो तिहारीस्त्रीतो जन्म की शूद्रिनिहै सो परुसैहै औ हेपांड़े तुमखाउहौ ताते तुमकैसे ब्राह्मणभये ब्राह्मण तौ ब्रह्मजानेते कहावैहै ३ ॥

हिन्दू तुरुक कहांते आया किन यह राह चलाई।
दिलमें खोज खोजु दिलहीमें भिश्तकहां किन पाई ४

आत्मातो एकईहै हिंदू तुरुक ये शरीरके भेदहैं यह शरीरकहां ते आयोहै औ यहराह कौन चलायोहै अर्थात् बीचैतेआयेहैं बी-चैतेजायँगे सो दिलमें तुमखोजौ उसका खोज दिलहीमें है औ कौन भिश्तपायोहै अर्थात् खोदायका बंदा जो तिहारो जीवात्मा है जो हिंदू तुरुकमें एकईहै सो तिहारे दिलहीहै उसकोजानो तौ जानिपरै उसकेमिलनको खोजकहे राह वही आत्माहै जब आपने स्वरूपको जानोगे तब वाको पावोगे ४ ॥

कहै कबीर सुनोहो सन्तौ जोर करतु है भारी।
कबिरन ओट रामकी पकरी अन्तचला पचिहारी ५

कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तौ सुनौ यहजीव आपने छूटि जाइबे को बड़ोजोर करैहै कहे बहुत उपायकरैहैं नानामतनकरिकै तेकबीर कायाकेबीरजे जीवहैं ते औरऔर मतनमेंलगिकै रामअल्लाह के ओटकै ओर पकरतभये कहे और २ जेमतहैं ते राम अल्लाह के ओटकै देनवारे हैं तिनको पकरिकै अथवा कबीर जे जीवहैंते रामकीओट न पकरतभये अर्थात् आपने जीवात्माको साहबको बंदा न जानतभये राम अल्लाहको बिसरिगये तातेअंतमेंपचिकै कहे मरिकै अरु वेमतनते हारिकै चलेगये जो यह मानिराख्योतें कि हमको स्वर्ग बिहिश्तहोइ हम ब्रह्महोयँगे सो एकऊ न भये जो नकर्म करिराख्यो तैसोईकर्म नरकस्वर्गनमें भोगकरनलग्यो ५॥

इतिचौरासीवांशब्दसमाप्तम्॥

अथपचासीवांशब्द॥

भूलालोगकहैघरमेरा। जाघरवामेंफूलाडोलैसोघरनाहींतेरा१ हाथीघोड़ाबैलवाहनोसंग्रहकियोघनेरा। बस्तीमेंसेदियोखदेरीजं गलकियोबसेरा२ गांठीबांधीखरचनपठयोबहुरिकियोनहिंफेरा।बी बीबाहरहरममहलमेंबीचमियांकोडेरा३ नौमनसूतअरुझिनहिंसु रझैजन्मजन्मअरुझेरा।कहैकबीरसुनोहोसंतौयहपदकरोनिबेरा४

भूलालोगकहैघरमेरा।जाघरवामेंफूलाडोलै सोघरनाहींतेरा १

साहबको पार्षदरूपजोहै हंसस्वरूप आपनो सांच शरीरताको भूलेलोग कहैहैं कि यह मिथ्या जो स्थूलशरीर सो हमाराहै सो जाघर स्थूलशरीरमें तैं फूला डोलैहै मेरोशरीरहै सोतेरा घरकहे शरीर नहीं है १॥

हाथीघोड़ाबैलवाहनो संग्रहकियोघनेरा।

वस्तीमेंसेदियोखदेरीजंगलकियोवसेरा २
गांठीबांधीखरचनपठयोवहुरिकियोनहिंफेरा।
वीवीवाहररहरममहलमेंवीचमियांकोडेरा ३

वहुत हाथी घोड़े वैल इत्यादिक वाहन को संग्रह कियो परन्तु जव तैं शरीररूपी वस्तीते खदेरिजाइगो कहे शरीरछूटिजाइगो तव जंगलमें कहीं पीपर के तर भूतह्वै कै वसेर कहे बास करैगो अरु वह शरीरहूको वाहर खदेरिलै श्मशानमें जारिदेइँगे तववह हाथी घोड़े औरहकिे ह्वैजाइँगे २ गांठी बांधि धरचो अरु खर्च न पठयो कहे पुण्य न कियो जो वह लोकमें मिलिकै वहुरिकैफेरा न कियो कहे यह शरीरमें नहींपावैहै सो वीवीजोहै साहवकीदई सुरति सो वाहरहै कहे संसारमुख ह्वैरहीहै औहरमकहेलौंड़ी जो है माया सो महलमें है कहे सब शरीरनमें है ताके बीचमेंमियां जो है जीव ताको डेराहै ताको वह माया घेरे है ३॥

नौमनसूतअरुझिनहिंसुरझैजन्मजन्मअरुझेरा।
कहैकवीरसुनोहोसंतो यहपदकरोनिवेरा ४

सो नौमनकहे नित्यही नवीन जो मनहै अर्थात् मनके दिये नाना शरीर होयहैं सो नानाकर्म नानामत जेसूतहैं तिनमें अरुझिकै सुरझै नहींहै सो कवीरजी कहैहैं कि हेसन्तो यहपदको निवेराकरो कहे पांचों शरीरमें अरुझो जोहै मन ताते भिन्नहोउ तौ तुम शरीरनते भिन्नह्वैजाउ ४॥

इतिपचासीवांशब्दसमाप्तम्॥

अथछियासीवांशब्द॥

कविरातेरोघरकँदलामें याजगरहतभुलाना। गुरुकीकहीकरत नाहिंकोईअमहलमहलदेवाना १ सकलब्रह्ममेंहंसकवीराकागनचोंच पसारा।मनमतकर्मधरैसवदेहीनादविंदुबिस्तारा २ सकलकवीरा वोलैवानीपानीमेंघरछाया। लूटिअनन्तहोतिघटभीतरघटकामर्म

नपाया ३ कामिनिरूपीसकलकबीरामृगाचरिंदाहोई । बड़बड़ज्ञानीमुनिवरथाकेपकरिसकैनहिंकोई ४ ब्रह्मावरुणकुबेरपुरंदरपीपाप्रहलदचाखा॥हिरणाकुशनखउदरविदारातिनहुंककालनराखा ५ गोरखऐसोदत्तादिगम्बर नामदेवजैदेवदासा । उनकीखबरि कहत नहिंकोईकहांकियेहैंवासा ६ चौपरखेलहोतवटभीतरजन्मकेपासाढारा । दमदमकीकोइखबरिनजानै करिनसकैनिरवारा ७ चारि दिशामहिमंडरचोहै रूमसामविचदिल्ली। ताऊपरकछुअजवतमाशा मारैहैंयमकिल्ली ८ सबअवतारजासुमहिमंडलअनतखड़ोकर जोरे । अद्भुतअगमअथाहरचोहैईसबशोभातोरे ९ सकलकबीरा बोलैबीरा अजहूंहोहुशियारा । कहकबीरगुरुसिकिलीदर्पण हर दमकरोपुकारा १० ॥

कबिरातेरोघर कँदलामें या जगरहतभुलाना ।
गुरुकीकही करतनहिं कोई अमहलमहलदेवाना १

कबीरजी कहैहैं कि हे कबिरा कायाके वीर जीव तेरो घर तो कँदलामें है कहे आनंदको कंदकहे सारांश जोहै साहबकोधाम तहां है तेरो घर या जगत्में नहींहै तैं नाहक भुलान रहैहै यहां गुरुकहे सबते श्रेष्ठ जे परम पुरुषपरश्रीरामचन्द्र कहैहैं कि अबहूं जोमोको जानो तौ मैंकालते छोड़ाइलेउँ तिनकोकह्यो कोईनमानिकैअरु आनंदको कंद उनकोधामछोड़िकै अमहलमहलकहे जोकछुवस्तु नहीं है ऐसो जो है धोखा ब्रह्म तामें अरु कोई मायाके प्रपंचमें देवाना ह्वैरह्यो है १ ॥

सकलब्रह्ममेंहंसकबीराकागनचोंचपसारा ।
मनमतकर्मधरैसबदेहीनादबिन्दुबिस्तारा २

हे हंस कबीर कायाकेवीर जीवते साहबको ब्रह्महीं कहैहैं तिनको कहिबो कागन कैसी चोंचको पसारिबोहै जैसेकागनकेआगे जोदूधभात औ आमिष धरिदेउ तौ दूध भात न खाय आमिषही खाय तैसे साहब पुकारतई जायहैं कि तुम मेरेपास आवो मैं

तुमको हंसरूपदेउँ ताको छोड़िकै जीव मायाब्रह्मकेधोखामेंलग्यो फागई होइहै नानाकर्मके वासननते शरीरछूटतमें जहांजहां मन को मत होइहै कहे जहां जहां मनजाइहै तहां तहां सब देहधरैहै नादविंदुके विस्तारते सो नादविंदुको विस्तार लिखिआये हैं २॥

सकलकबीराबोलैबानी पानीमोंघरछाया ।

लूटिअनन्तहोतिघटभीतर घटकामर्मनपाया ३

अरु ज्ञानी जेसबजीवहैं ते यहबाणीबोलैहैं कि यहशरीरपानीको घर छायाहै कहे पानीको बुल्लाहै न जानो कब बिनशिजायकहे छूटिजाय सो मुखते तो यहकहै है अरु घटकहे शरीरके भीतर अनन्तकहे बिनाअन्तको जोहै साहब ताकी लूटि होइजाइहै ताको नहीं देखैहै यहआत्मा साहबकोहै ताको भुलाइकै और और मतनमें लगाइ देइ है वाको मर्म नहीं पावै है ३ ॥

कामिनिरूपीसकलकबीरामृगाचरिंदाहोई ।

बड़बड़ज्ञानीमुनिवरथाकेपकरिसकैनाहिंकोई ४

सब कबीर जीवनके शरीर कामिनिरूपीहै कहे मृगीरूपी है तामें जोचलै सो चरिंदा कहावैहैसो चरिंदाकहे चलनवारोजो है मन सो मृगाहै जबयह जीवात्माको यमदूत एकपुतरा देखावै हैं तबवह पुतरामें मनोमय जो लिंगशरीर है सो जातरहैहै अरु वही के साथ जीव प्रवेश करिजाइहै तब यमराज नानाकर्म भोगकरावै हैं जौने शरीर में मनलोभ्यो मरत में वाको स्मरणभयो सोई शरीर कर्म भोगकरिकै धारणकियो सो मारि तो यहभांतिते जायहै वह मन्त्रको औ आत्मा के स्वरूप को कोई न पकरिपायो अर्थात् कोई न जान्यो ४ ॥

ब्रह्माबरुणकुबेरपुरंदर पीपाप्रह्लदचाखा ।

हिरणाकुशनखउदरविदारातिनहुंककालनराखा ५

गोरखऐसोदत्तादिगम्बरनामदेवजयदेवदासा ।

उनकीखबरिकहतनाहिंकोईकहांकियेहैंवासा ६ ॥

ये चारि तुकनमें जिनको कहिआयेहैं तिनको कालजबखाइ लियोहै कहे इनके शरीर जब छूटिगयेहैं तब ये कहांवासकियोहै यहकोई खबरि न जानतभयो लोजहांगयेहैं अरु जहांकेगये नहीं आवैहैं तौनेलोकको मूढजीव न जानतभये इहां नरसिंहोजीको लिख्यो तामें धुनि यहहै कि उपासक आपने आपने उपास्यनके साथ साहबहीके लोकजाइहैं उपास्य उपासक दोऊ जहां परम मुक्त अवस्था में जायँ सो वह साहबके लोकको ये बद्धविषयी जीव कैसे जानैं ६ ॥

चौपरखेलहोतघटभीतरजन्मकेपांसाढारा।
दमदमकीकोइखबरिनजानैकरिनसकौनिरुवारा ७

मन बुद्धि चित्त अहंकार ये अंतःकरण चतुष्टयहैं सोईचौपरि है ताको खेल घटकेभीतर ह्वैरह्योहै इनहीं के योगते नानाजन्म होइहैं सोई पांसाढारिबोहै सोदमदमकहे आपने श्वासश्वासकी खबरि तो कोई जानैनहींहै कि आवत जातमें रकारमकार विना जपे कब अंतःकरण शुद्धह्वैसकैहै अरुको निरुवार करिसकैहै अर्थात् कोई निरुवार नहीं करिसकै है अर्थात् या नहींजानैहै कि हमारो जीवात्मा कहाजपै है रकारमकार जीवात्मा सदाजपैहै तामें प्रमाण रकारेणबहिर्याति मकारेणविशेत्पुनः। रामरामेति वैमंत्रं जीवोजपतिसर्वदा ७ ॥

चारिदिशामहिमंडरचोहैरूमसामबिचडिल्ली।
ताऊपरकुछअजबतमाशा मारेहैयमकिल्ली ८

महिमंडल जोहै शरीर तामेंनाभि हृदय कंठत्रिकुटी येचारि दिशा रचतभये अरु रूमकहे सहस्रदल कमल है अरुसामसुरति कमलहै तौनेसुरति कमलके बीचमें डिल्लीहै परंतु गुरूकोस्थान तास्थानकेऊपर अजब तमाशाहै सो कौनयोगी प्राणचढ़ाइकेस-हस्रदल कमललों जाइ है कोई परमयोगी प्राणचढ़ाइके सुरति

कमललों जाइहै परमपुरुष स्थानके ऊपर जहां अजबतमाशाहै तहां कोई नहीं जाइसकैहै काहेतेकि यमकिल्लीमारेहै कहे दश-वांद्वार बंदकियेहै अजबतमाशा वह कैसेदेखै सो कहैहैं कि यह ब्रह्मरंध्रते साकेतलोक जाकोकहैहैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको धाम वही साकेत लोकको दशवां स्थान फकीरलोग जाहूतकहैहैं तहांलों ब्रह्मज्योतिकी डोरिलगीहै वहीडोरीको मकतारकहैहैंसो वह मक तार सुषुण्णामें लगोहै जबपरम गुरुरामनाम बताइहै तब वही सुषुम्णाह्वैकै मकतारकी डोरीह्वैकै साहब के लोकजाय है तहां अजबतमाशा कौनहै कि उहांके त्रिगुण गुल्मलता देखे तो पंचभौतिकसेपरेहै पैपंचभौतिक नहींहै आनंदरूपहै ८॥

सबअवतारजासुमहिमंडलअनँतखड़ाकरजोरे।
अद्भुतअगमअथाहरचोहैईसबशोभातोरे ९

सकल अवतार औ ईश्वर अनंत जिनके आगेकरजोड़े खड़ेहैं वहसाहबलोक कैसोहै अद्भुतहै कहे आश्चर्यहै बचनमें नहींआवै है औ अगमहै कहे उहां काहूकी गमनहीं है औ अथाहहै कोई वर्णनकरिकै थाहनहींपायो कि यतनेहै सो हेजीव यह सबशोभा तोरे साहबकीहै तेरे देखिबे योग्य है काहेते कि साहबौ द्विभुजहैं औ तैहू द्विभुजहै और तो सब ईश्वर अवतार कोई अष्टभुज कोई चतुर्भुज मत्स्य कूर्म इत्यादिक हैं अथवा साहब के लोक में जे ईश्वर अवतार आदिकहैं तेसब अपनी शोभाकोमंडलतोरेहैं अ-र्थात् उनकीशोभा साहबकी शोभाते मंददेखिपरैहै ९॥

सकलकबीराबोलैबीरा अजहूं होहुशियारा।
कहकबीरगुरुसिकिलीदर्पणहरदमकरोपुकारा १०

हे सब कबीरौ कायाके वीर जीवौ वही वीरालेउ अर्थात्परम पुरुष पर जे श्रीरामचंद्रहैं तिनको बीरालेउ अजहूं हुशियारहोउ जे मतनमें गुरुवालोग समुझाइ समुझाइ लगाइ दियेहैं तिनम-तन में जब भर तुम्हरे रहौगे तबभरतुम्हारो जन्म मरणनछूटैगो

ताते मतनको छोड़िदे सुरति कमलमें जेपरमगुरुहैं ते सिकिली-
गरहैं तुम्हारे अंतःकरणसाफकरिबेको तेरामबतावें हैं सो वाराम-
नाम सुनिकै हरदम पुकारकरो तब साहबके इहां पहुँचो अरुसब
अवतार ईश्वर उनके द्वारे हाथ जोरे खड़े हैं तामें प्रमाण शिवसं-
हितामें हनुमान्जी प्रति अगस्त्यजी कहै हैं ॥ आसीनंतमयोध्या
यांसहस्रस्तम्भमंडिते। मंडपेरत्नसंज्ञेच जानक्यासहराघवम् ॥ म-
त्स्यःकूर्मकिरिर्नैकोनारसिंहोप्यनेकधा। वैकुंठोपिहयग्रीवोहरिः के
शववामनौ ॥ यज्ञोनारायणोधर्मपुत्रोनरवरोपिच। देवकीनन्दनः
कृष्णोवासुदेवोबलोपिच ॥ पृश्णिगर्भोमधून्माथीगोविंदोमाधवोपि
च। वासुदेवोपरोनंतःसंकर्षणइरापतिः ॥ प्रद्युम्नोप्यनुरुद्धश्चव्यू
हास्सर्वेपिसर्वदा। रामंसदोपतिष्ठन्तेरामदेहाव्यवस्थिताः ॥एतै
रन्यैश्चसंसेव्योरामोनाममहेश्वरः। तेषामैश्वर्यदातृत्वात्तन्मूल
त्वान्निरीश्वरः ॥ इन्द्रनामासइन्द्राणांपतिस्सांक्षीगतिःप्रभुः। वि
ष्णुस्स्वयंसविष्णूनांपतिर्वेदांतकृद्विभुः ॥ ब्रह्मासब्रह्मणांकर्त्ताप्रजा
पतिपतिर्गतिः। रुद्राणांसपतीरुद्रोरुद्रकोटिनियामकः ॥ चन्द्रा
दित्यसहस्राणिरुद्रकोटिशतानिच। अवतारसहस्राणिशक्तिकोटि
शतानिच ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणिदुर्गाकोटिशतानिच। महा भैर
वकालादिकोट्यर्बुदशतानिच ॥ गंधर्वाणांसहस्राणिदेवकोटिशता
निच। सभांयस्यनिषेवंतेसश्रीरामइतीरितः ॥ इति ॥ श्री
कबीरहू जीको प्रमाण ॥ जहँसतगुरुखेलैंऋतुबसन्त। तहँपरम
पुरुषसबसाधुसन्त॥वहतीनलोकतेभिन्नराज। तहँअनहदधुनिच-
हुँपासबाज। दीपकबरैजहँनिराधार। बिरलाजनकोईपावपार ॥
जहँकोटिकृष्णजोरेदुहाथ। जहँकोटिविष्णुनावैंसुमाथ ॥ जहँको-
टिनब्रह्मापढ़पुरान।जहँकोटिमहादेवधरैंध्यान॥ जहँकोटिनसरस्व-
तिकरैंराग। जहँकोटिइन्द्रगावनेलाग ॥ जहँगणगंधर्वमुनिगानिन
जाहिं। सोतहँवांपरगटआपुआहिं ॥ तहँचोवाचन्दनअरुअबीर।
तहँपुहुपवासभरिअतिगँभीर। जहँसुरतिसुरंगसुगन्धलीन। सब
वहीलोकमेंबासुकीन ॥ मैंअजरदीपपहुँच्योसुजाइ। तहँअजरपुरु-

पकेदरशपाइ॥ सोकहकबीरहृदयालगाइ। यहनरकउधारननाम जाइ १०॥ इतिछियासीवांशब्दसमाप्तम्॥

अथसत्तासीवांशब्द॥

कबिरातेरोघरकंदलमें मनैअहेराखेलै। बपुवारीआनंदमीगारुचीरुचीशरमेलै १ चेततरावलपावनखंडासहजहिमूलैबांधै। ध्यानधनुपधरिज्ञानवानवनयोगसारशरसाधै २ षट्चक्रवेधिकमलवेध्योजवजाइउज्यारिकीन्हा। कामक्रोधअरुलोभमोहये हांकिसाउजनदीन्हा ३ गगनमध्यरोंक्योसोद्वाराजहांदिवसनाहिंराती। दासकबीरजायसोपहुंच्योसबबिछुरेसंगसँघाती ४॥

कबिरा तेरोघर कन्दलमें मनै अहेराखेलै।
बपुवारीआनन्द मीगा रुची रुची शरमेलै १

कबीरजीकहैहैं कि हे कबीर कहे कायाके बीरजीव तेरोघरकंदलामेंहै कहे आनन्दको कन्दकहे सारजो साहबकोधामहै तहांहै जोकहो संसार कैसेभयो तौतेरोबपुशिकारी बपुरी जो है नाना शरीरतेई वारीहैं शिकारी जहांहांकैहै सो वारी कहावै है तहां जाइकै विषयानन्द ब्रह्मानन्दजेहैं मृगाको शिकार खेलैहैं कोई विषयानन्द रूपमृगामें वृत्तिशरमारि भोगकरैहैं कोई शिकारीमन ब्रह्मानन्दरूप मृगाको वृत्तिशरमारि भोगकरैहैं १॥

चेतत रावल पावनखण्डा सहजहि मूलैबांधै।
ध्यानधनुष धरिज्ञान बानबन योगसारशरसाधै २
षट्चक्रबेधिकमल बेध्यो जबजायउज्यारीकीन्हा।
कामक्रोधअरुलोभमोहये हांकिसाउजनदीन्हा ३

जोशिकार खेलबो कैसे छूटैया मनकोतौ रावल कहे सबके राजा ताकेपावन कहे पायनको चेतकरत कहे स्मरण करत अथवा पावन कहे पवित्रह्वैकै खण्डकहे नपुंसक ब्रह्मतद्रूप जोजीव

सो सहज समाधि लगाइकै मूलबंध करै यहै ध्यान जोहै धनुप तौने को धरिकै साहबमें आत्मा को लगाय दीवो जो वाणयही योगसार रूप शरसाधै २ सोई योग बतावैहैं जे हठ योग करै हैं ते कुंडलिनी उठायकै छइउ चक्र वेधै हैं यहां कुछ कुंडलिनी उठाइवेको प्रयोजन नहीं है वहजो ब्रह्मज्योतिकारकी मूलाधार चक्रतेलै ब्रह्मांड है साकेत में लगी है सो छइउचक्रको वेधिकै लगीहै सुषुम्णा नारी ह्वैकै ताज्योतिरूपीडोरी में गुरूजो युगुति बतावैहै तौने युगुतिते सुरतिकेसाथ जबजीव को साजि दियो तबछइउचक्र को आपही वह ज्योतिवेधैहै सो वह ज्योतिकेभीतर ह्वैकै षट्चक्र वेधिकै सहस्त्रदल कमलको वेध्यो तबउहांउजियारी देख्योजाइ ब्रह्मप्रकाशकी तबकाम क्रोध लोभ मोह मदमत्सरई जे सावजहैं तिनको हांकिदीन्ह्यो कहे दूरिकैदीन्ह्यो ३ ॥

गगनमध्य रोंक्यो सो द्वारा जहां दिवसनहिंराती।
दासकबीरजायसोपहुंच्यो सबबिछुरेसंगसँघाती ४

जहां सुरति कमलमें परमगुरु रकारमकारकहैहैं औदशौद्वार बंदहै तहां नदिवसहै न रातिहै वह प्रकाशरूप ब्रह्मईहै सो उहां परमगुरुते रामनाम सुनिकै वही नाम ते दशवों द्वार खोलिकै वही डोरीह्वैकै दासजो कबीरजीवहैं सो परमपुरुपपर श्रीरामचन्द्र के लोकको पहुंचे जाइहैं तब संगकेसंघातीजेहैं चारिउशरीर अरुप्रकाशरूप ब्रह्मजोहै कैवल्य शरीर ताहूको बिछोहह्वैजाइहै अथवा कबीरजी कहैहैं कि मैं जोहौं साहबको दास सो अनि-र्वचनीयपार्षद शरीरजोहै हंसशरीर ताको पाइकै वोहीडोरीब्रह्म-ज्योति ह्वैकै अनिर्वचनीय जोहै साहब को धाम तहांपहुंच्योजाइ तहां हेजीवो तुमहूं पहुंचौ यहभ्रममें काहे परेहौ तुमतौ साहब के आनंदकन्द धामकेहौ साहब के दास ताते रहित औ जौन तुममानौहौ सो तुमनहींहौ ४ ॥ इतिसत्तासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअट्ठासीवांशब्द ॥

गुरुमुख ॥ सावजनहोइ भाईसावजनहोइ। वाकीमांसुभखै सबकोइ १ सावजएक सकलसंसारा अविगतिवाकीबाता। पेट फारिजो देखियेरेभाई आहिकरेजनआता २ ऐसीवाकीमांसुरेभाईपलपलमांसु विकाई। हाड़गोड़लै घूरपँवारै आगिधुवां नहिं खाई ३ शिर औसींगकछूनहिंवाकेपूंछकहांवहपाई। सबपंडित मिलि धन्धे परिया कबिर बनौरीगाई ४ ॥

सावजनहोइभाईसावजनहोइ।वाकीमांसुभखैसबकोइ १

साहबकहैहैं कि जेहि शब्दब्रह्ममें तुमलगेहौ औतुमकोवही भुलायदियो सोसावजन होइ तौनेशब्दको तात्पर्य्य तुमनहीं बूझो वहीके मांसको तुमसव भक्षौहौ कहैवाणी सबकहौहौ औवही मांस सबजगतहै ताहीको भक्षौहौ कहे भोग करोहौ अरुवाको तात्पर्य्य सत्यपदार्थ जो मैंहौं ताको नहीं जानौहौ संपूर्णवाणी को बिस्तार असत्यहै मैंहीं सत्यहौं १ ॥

सावजएक सकलसंसारा अविगतिवाकी बाता। पेटफारि जो देखियेरेभाई आहि करेजनआता २

सोवाकोपेटफारिकै जोदेखिये अर्थात् जो वाकोविचारिकैदेखिये तापर्य्यतेतो जोतुम बिचारकरिराख्योहै किशब्द ब्रह्मकेअर्थ को सारांशकरेजनिर्गुण ब्रह्महै सोनहींहै वेदतो तात्पर्य्यते मोको वर्णन करैहै अरु त्रिगुणमाया आंतहै सो वाकी बात अविगतिहै कहे अव्यक्तहै काहूके जानिवेयोग्यनहींहै जो मोको जानैहै सोई वह सावजको जानैहै २ ॥

ऐसी वाकी मांसुरे भाई पलपल मांसु बिकाई। हाड़ गोड़लै घूर पँवारै आगि धुवां नहिं खाई ३

पलकाकहावैहै सोवहशब्दब्रह्मकी मांसुजोहैवाणी सोहेभाइउऐसीहै कि पलपलकहे टकाटकाकोबिकाइहै अर्थात् कोबिकाइहै तामेंप्रमाण॥ कबीरजीकोचौरासीअंगकीसाखी ॥ गली गली

गुरुवाफिरैदिक्षाहमरीलेहु । कीवूडौ कीऊवरौ टकापरदनीदेहु ॥ थोरेथोरे अक्षरकेमंत्र गुरुवालोगदेइहैं औ शिष्यनसोंधन लेइहैं अरु केवलशब्दब्रह्मै ते मुक्तिनहीं होइहै तामेंप्रमाण ॥ शब्दब्रह्मणिनिष्णातोननिष्णायात्परेयदि।अमस्तस्यअमफलह्यधेनुमिवरक्षतइतिभागवते ॥ सोजबवे गुरुवामंत्रदियो तबवाणीकोजोहाड़गोड़रहै ज्ञानकांड कर्मकांड ताकोवूरपँवारिदियो कहेज्ञानकांडी कर्मकांडी घूरहैं तहांफेंकिदियो उपासनाकांडीवहमंत्रदैकै उपासनामें लगाइदियो तहां मंत्रदियो सोउन न जप्यो जातेज्ञानाग्नि उत्पन्नहोइ अरुभ्रमजरै औधुवांजेहैं कल्मष तेनिकसिजायँ सोवाणीरूपी वहमांसु ज्ञानाग्नितेे पकाइनहींगई अर्थात् वह मंत्रको अर्थनजान्यो औ न अभ्यासकियो वहअज्ञानरूपीधुवां गुँगुआतैरह्यो निर्धूमनभई ३ ॥

शिर औ सींग कछुनहिं वाके पूंछकहांवहपाई ।
सबपंडितमिलि धन्धे परिया कबिरबनौरीगाई ४

औ शिरजेहैं नित्यशब्द औ कार्यशब्दतेवाके नहीं हैं औ चारि जे सींगहैं नामधातु उपसर्ग निपात ते वाके नहींहैं काहेते कि वाको अनिर्बचनीय कहैहैं तौ पूंछ जोहै ब्रह्मह्वैजैबो मोक्ष ताको कहांपावैगो अर्थात् जहांभर वचनैमें आवैहै सो सब मिथ्याहै जो कहो मोक्षऊको रहिजाइबो न कह्योतौ रहिकागयो तौ शब्दतो तात्पर्य्य करिकै वर्णनकरैहैं कि निर्गुण सगुणकेपरे परमपुरुषजो मैं ताको सदाको अंशयहजीवहै यह जो विचारकरै कि मैं उनको हौं तो बद्धहीनहींहै मुक्तकाहेतेहोइ मुक्तहीबनोहो बद्धमुक्ततो कथनमात्रहै तामेंप्रमाण ॥ अज्ञानसंज्ञौभवबंधमोक्षौ द्वौनामनान्यौस्तऋतज्ञभावात्।अजस्रचिन्त्यात्मनिकेवलेपरेविचार्य्यमाणेतरणाविवाहनी इतिभागवते ॥ अरु तात्पर्य्यकरिकै शब्द यह मोहींको वर्णनकरैहै सो भागवतादिकनमें प्रसिद्धसुनैहै तऊ मूढ़नहीं मानैहै ॥शब्दब्रह्मपरब्रह्ममभोभेशाश्वतीतनू ॥ अपनेअपने अर्थ

बनाइकै गाइरहेहैं मोको नहींजानैहैं सबपण्डित धन्धेमेंपरिरहेहैं नानामत बनाइरहेहैं तिनकी बनौरीको कबीरजेहैं जीव उनके सबशिष्यते गावैहैं अर्थात् अपने अपने आचार्यनके मतमें आरूढ़ह्वैकै जो और कोईकहै है तौ लड़ैहैं अरु पारिखकरिकै सबवेदनको तात्पर्य जोमैंहौं ताकोनहींजानैहैं शब्दब्रह्म तात्पर्यकरिकै परमपुरुषपरजो मैंहौंताहीको वर्णनकरेहैं ४ ॥

इतिअट्ठासीवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथनवासीवांशब्द ॥

सुभागे केहिकारणलोभ लागे रतन जन्मखोये । पूरबजन्म भूमिकेकारण बजिकाहेकोबोये १ पानीसेजिनपिंडैसाजे अगिनिहि कुंडरहाया । दशौमासमाताकेगर्भकढ़िबहुरिलागिलीमाया २ बालकसेपुनिवृद्धहुआहै होनीरहीसोहोये । जबयमऐहैं बांधिलैजैहैं नयनभरीभरिरोये ३ जीवनकैजिनआशाराख्योकालगहेहैश्वासा । बाजीहै संसारकबीरा चितचेतिढारोपासा ४ ॥

सुभागे केहिकारण लोभलागे रतनजन्म खोये ।
पूरबजन्म भूमिके कारण बीजकाहे को बोये १
पानीसेजिन पिंडै साजे अगिनिहि कुंडरहाया ।
दशौमासमाताके गर्भकाढ़ि बहुरिलागिलीमाया २
बालकसे पुनि वृद्धहुआ है होनीरही सो होये ।
जब यमऐहैं बांधिलै जैहैं नयनभरीभरिरोये ३
जीवनकै जिनआशा राख्यो काल गहेहैश्वासा ।
बाजीहै संसारकबीरा चितचेति ढारोपासा ४

हे सुभागे जीव तैंतोमेरोहै यह संसारमें जोतैं लोभकियो सो कौने कारणकियो काहेते कि आपने दुःखपाइबेको कोई उपाइ नहींकरैहै जैसे मनादिक करिकै संसारमें परिगयो तैसे जो मेरो

स्मरणकरतो मैं हंसस्वरूपदेत्यों तामेंस्थितहै कै मेरेधामको पहुं-
चते सोतें रत्न जोहै यहमानुपजन्म ताको धोइडारचो पूरुवजन्म
के भूमिकाके कारणकहे पूर्वजन्ममें जैसे कर्मकरिराखेहैं तैसे सुख
दुःख यहजन्मपावैहै अरुजो यहजन्मकरैहै सो वहजन्ममें दुःख
सुखपावैगो सो आंखिन तो देखिलिये थोई सुखदुःखकेकारणरूप
वीजतैं काहेकोबोये और सवपदनको अर्थ स्पष्टहैहै ४ ॥

इतिनवासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथनब्बेशब्द ॥

गुरुमुख ॥ संतमहन्तोसुमिरौसोई । जोकालफांससोंबाचाहो
ई १ दत्तात्रेयमर्मनहिंजाना मिथ्यास्वादभुलाना। सलिलामथिकै
घृतकोकाढ्योताहिसमाधिसमाना २ गोरखपवनरखैनहिंजाना
योगयुक्तिअनुमाना।ऋद्धि सिद्धिसंयम वहुतेरापारब्रह्मनहिंजाना
३ वशिष्ठशिष्ठविद्यासंपूरणरामऐसेशिखशाखा।जाहिरामकोकरता
कहिये तिनहुंककालनराखा ४ हिन्दूकहैहमैंलैजरवै तुरुककहै
मोरपीर। दूनौआयदनिमों झगरैं देखैं हंसकवीर ५ ॥

आगेके पद में कहिआये कि काल श्वासागहेहै सोचेति पांसा
ढारोकहे बिचारि बिचारि कामकरो सोईबिचारवतावैहै ॥

संतमहंतौसुमिरौसोई । जोकालफांससोंवाचाहोई १

साहव कहैहैं कि हेसंतमहंतौ ताको सुमिरणकरो जो काल
फांसते वचोहोइ १ ॥

दत्तात्रेयमर्मनहिंजाना मिथ्यास्वादभुलाना ।
सलिलामथिकैघृतकोकाढ्यो ताहि समाधिसमाना २

जो कहो दत्तात्रेय आपने को ब्रह्ममानिकै ब्रह्महीह्वैगये तेते
वाके मर्मको कहे ज्ञानको जान्योहै सो प्रथम दत्तात्रेयऊनहींजा-
न्यो काहेते कि वहतो धोखा मिथ्याहै सोतेऊमिथ्या स्वादमें भु-
लाइ गये यह न बिचारयो कि जौन विचार करतकरत रहिजाय

है सो मेरोस्वरूप परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रकोदासहैजबवेबिग्रह देइहैं आपनो तबउनकेपास जाइहै सो यह तो न जान्योपानीको मथिकै घृत काढ्यो वहीधोखा ब्रह्मकी समाधिमें समाइरह्यो सो कहूँ पानिहूते घृत निकसै है उनके हाथ धोखई लग्यो २ ॥

गोरखपवन रखैनहिंजाना योगयुक्तिअनुमाना ।
ऋद्धिसिद्धिसंयम बहुतेरा पारब्रह्मनहिंजाना ३
वशिष्ठशिष्ठ बिद्यासंपूरणरामऐसे शिखशाखा ।
जाहिरामको करताकहिये तिनहुँकोकालनराखा ४

अरु योग युक्तिको अनुमानकरिकै गोरखपवनराखै नहीं जान्यो कहे प्राण चढ़ावै नहीं जान्यो काहेते कि ऋद्धिसिद्धि संयममें लगिगये ब्रह्मके पार जे साहब हैं तिनको न जान्यो ३ औवशिष्ठ जेहैं सम्पूर्णविद्यामेंश्रेष्ठ तिनकेराम ऐसेकहे श्रीरामचंद्रहीकेबरोबर रघुवंशी जिनमें शिष्य शाखाभये तिनहूँको काल नहींराख्यो अर्थात् यह शरीर उनहूँको न रह्यो औ राजनमें जिनको रामको कर्त्ता कहे हैं कि श्रीरामचन्द्रको जे उत्पत्ति कियो है ऐसे दशरथौ को काल न राख्यो इहां गोरखआदिक योगी दत्तात्रेयादिक ज्ञानी वशिष्ठ आदिक ब्रह्मर्षि ई सबते श्रेष्ठहैं याते संयोगी ज्ञानी ब्रह्मर्षि पृथ्वीके आइगये औ दशरथ महाराजको श्रीरामचन्द्रके बिछोह होत प्राण छूटिगयो सोयेसब राजर्षिते श्रेष्ठहैं ताते दशरथ महाराजके कहे सब राजर्षि पृथ्वीकेआयगये तिनहूँको काल न राखत भयो अर्थात् शरीरधारी कोई नहीं रहिजाइहै कोई योगकरि जो जियो तो ब्रह्माके दिनभर जियो महाप्रलयमें जब ब्रह्माकोनाश ह्वैजाइहै तब ब्रह्माण्डई नहीं रहै है और कोई कैसे रहै सो हंस समाधिलैके मिलतहै ४ ॥

हिंदूकहै हमैंलैजरबै तुरुककहै मोर पीर ।
दूनौंआइ दीनमों झगरैं देखै हंस कबीर ५

जाको हंसस्वरूप साहब देइहै सो हंसस्वरूपमें स्थितह्वैकै साहबके पास जाइहै सोसाहब कहै हैं कि जोमोको जानै तौमेंहंस स्वरूप देउँ तामें स्थितह्वैकै मेरेपासआवै सो मोको तोजानैनहीं है हिंदू कहैहैं कि हमवह ज्ञानाग्निकैकै सबकर्म जारिदेइंगेब्रह्म ह्वै जाइँगे औ मुसल्मान कहैहैं कि पिरान जाहिर जोमक्काहै तहांहमारोपीरहै हमारे खाविन्दहैं ते हमारे कर्म सब जारि देइंगे फिरि दोनौं आइ दीनमें झगरैहैं वे कहैहैं कि तुम्हारा खोदाय झूठाहै वे कहैहैं कि तुम्हारा ईश्वर झूठाहै सो जीवात्मा तौ मेरो बंदाहैसो आपने स्वरूपको जानिकै मोको जानै नहींहैं आपने आपने अनुमानकरिआपनेआपने खाविंद बनाइलियेहैं तिनकोझगरादेखता कौन है जो सबके ऊपर होइहै सो साहब कहै हैं कि जिनको मैं हंसस्वरूपदियोहै मेरेपास पहुंचैहैं ते सबके ऊँचेह्वैकै उनकोझगरा देखतेहैं औहंसतेहैं कि सांच साहबतो एकई है ताको जानै नहींहैं आपुसमें झगरते हैं ५॥

इतिनव्वेशब्दसमाप्तम्॥

अथइक्यानवेशब्द॥

जोदेखासोदुखियादेखातनधरिसुखीनदेखा॥उदयअस्तकीबात कहतहौंताकरकरहुबिबेखा १ बाटेबाटेसबकोइदुखियाक्यागिरही बैरागी॥शुकाचार्यदुखहीकेकारणगर्भैमायात्यागी २ जोगीदुखियाजंगमदुखियातापसकोदुखदूना।आशातृष्णासबघटव्यापैकोईमहल नहिंसूना३सांचकहौंतोसबजगखीझैझूठकहोनहिंजाई।कहकबीर तेईभेदुखियाजिनयहराहचलाई ४॥

जोदेखासोदुखियादेखा तनधरि सुखीन देखा।
उदयअस्तकी बातकहतहौं ताकरकरहु बिबेखा १

जाकोसंसारमेंदेखैहैं ताकोसबको दुखियेदेखै तनधरिकैसुखिया काहूकोनहींदेखा काहेते कि गर्भतेजोजीव निकस्यो तोमाया

लपटिजातीहै सोउदयअस्तकहे सबसंसारकीबातकहौहौं अरुता-
करतुमविवेककरतजाउ १ ॥

बाटेबाटे सबकोइ दुखिया क्यागिरही बैरागी।
शुकाचार्य दुखहीके कारण गर्भै मायात्यागी २

आपनेआपने बाटमेंकहे आपनेआपनेमतमें सबकोदुखियादे-
खते हैं क्या गिरही क्या बैरागी अर्थात् त्रिगुणकेमतमें सबपरेहैं
मायाको दुखकोईनहींछोड़ैहै जो जेतो पायोहै सोवहीको सांच
मानिकै सांचपदार्थ को नहीं जानैहै दुखही के कारण शुकाचार्य
गर्भैमेंमायाको त्यागिदियो शुकाचार्य गर्भैमें बारहबर्षकेह्वैगयेसो
गर्भते न निकसैंकहैं कि जोहम निकसैंगे तो हमको माया लगि
जायगी तब ब्रह्मादिक देवता सबजुरेआय न निकसे तबभगवान
आइकह्यो कि बरदाकेसींगमें सरसोंधारिदेइ जबभरसरसों सींगमें
रहैहै यतनेकालभरमायाहमखैंचे लेइहैं निकसिआवोसोशुकाचार्य
निकसे नारासहित बनकोचलेगये साहबकोमिलेजाइ २ ॥

योगी दुखिया जंगम दुखिया तापसको दुखदूना।
आशा तृष्णा सबघट ब्यापै कोई महलनाहिंसूना३
सांचकहौं तोसबजग खीझै झूठकहो नहिंजाई।
कहकबीर तेईभे दुखिया जिनयह राह चलाई ४

योगीजंगम सबदुखियाहैं अरुतापसको तो दूनदुखहै काहेते
किआशा तृष्णासबकेघटमें ब्यापैहै कोईमहलसूननहींहै काहूको
हृदयआशातृष्णाते सूननहींहै सबके हृदयमें आशा तृष्णाब्यापि
रहीहै ३ श्रीकबीरजीकहैहैं कि अपनेअपनेमतमें जीवलगैहैं सांच
मानिकै जो सांचको हमकहैहैं कि सांच जे परमपुरुषपरश्रीराम-
चन्द्र हैं तिनमेंलगो जिनको तुमजानि राख्योहै ते असांचहैं तो
खीझैहैं औ मोसों झूठ कह्यो नहीं जाइहै सो जेजे गुरुवा लोग

आपनीआपनी मतकीराह चलाईहैंते दुखियाह्वैगयेहैंतौजिनको वे शिष्य बनायोहै तेदुखियाकाहेनहोइँ ४ ॥

इतिइक्यानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथबानबेशब्द ॥

गुरुमुख ॥ तामनकोचीन्हौरेभाई । तनछूटेमनकहांसमाई १ सनकसनंदनजयदेवनामा । अंबरीपप्रह्लादसुदामा २ भक्तसही मनउनहुंनजाना । भक्तिहेतुमनउनहुंनज्ञाना ३ भरथरिगोरखगोपीचंदा । तासनमिलिमिलिकियोअनंदा ४ जामनकोकोइजाननभेवा । तामनमगनभयेशुकदेवा ५ एकलनिरंजनसकलशरीरा । तामेंभ्रमिभ्रमिरहलकबीरा ६ ॥

जो कहिआये कि नानाउपासनाकरि सांचसाहबको न जान्यो सो इहांकहैहैं ॥

तामनको चीन्हौरे भाई । तन छूटे मन कहां समाई १ सनकसनंदनजयदेवनामा । अम्बरीषप्रह्लादसुदामा २ भक्तसहीमनउनहुंनजाना । भक्तिहेतुमनउनहुंनज्ञाना ३

जामनते नाना उपासनाभई तामनको हेभाईचीन्हौयहमनको केभयोहै अर्थात् जौनेमनते नानाउपासनाठाढ़ेकैलियोहै सो मनतो तुमहींतेभयोहै सो यह विचारतो करोजब सबशरीरछूटिजाइहै तबमन कहां समाइहै अर्थात् तुमहींमें समाइ जाइ है सो मनके मालिकतो तुमहौ मनैते जो नानाउपासना ठाढ़केलियो है तेतुम्हारी उपासना सांचकैसे होइगी १ सनकसनंदनसनत्कुमारनामदेवजयदेव अंबरीप प्रह्लादसुदामायेसब भक्तसहीहैंसंसारते छूटेहैं परन्तुमनको वोऊनजान्यो जो मनको जानते तो मनतेभिन्नह्वैकै मनवचनकेपरे जोमेरो रामनामहैताहीकोजपते औरे औरेकी भक्तिको कारणजोहै मन तेहि करिकै उनहूंकोमेरो

प्रथमज्ञान न होतभयो फेरिजब औरेऔरेउपासननमेंकुछनदेख्यो तब साहबकहैहैं कि मोमेंलगे काहेतेकि वहमन आपैतेहोइहै अरु वहजीवात्माके परेमैंहौं काहेते कि यहमन आत्मैते होइहै अरु वहजीवात्माके परेमैंहौंकाहेतेकि मेरोअंशहै अरुध्यानादिज्ञानादिक सबमनतेअनुमान करैहैं तातेज्ञानको अनुभव ब्रह्म औ ध्यान को अनुभव उपास्य देवता ये मनकेभीतर होवईचाहैं औमनआत्माकोहै ताते मनमें आत्माको स्वरूप कैसे आइसकै वहतोमनते परे है सोजब मनको छोड़ैहै तब चिन्मात्र रहि जाइहै यातेमन वचनके परे आत्मा होवईचहै अरु जबमैं हंसस्वरूप देउहौं तामें स्थितह्वैकैमेरेपासआवतेकल्पनाकरिकै नानारूपमें न लगते ३॥

भरथरिगोरखगोपीचंदा । तामनमिलिमिलि कियोअनंदा ४
जामनकोकोइजाननभेवा । तामनमगनभयेशुकदेवा ५

भरथरी गोरख गोपीचंद जेहैं तेवही मनहीमें मिलिकै आनंद कियो अर्थात् जौने ब्रह्ममें मिलिकै आनंदकियोसोब्रह्ममनहींको अनुभवहै ४ सो जौने मनको अनुभव ब्रह्महोइहै अरु वह ब्रह्म उपास्यकनमें अर्थ आपनी नानाईश्वर स्वरूप कल्पनाकरैहैतौने मनकोभेद कोई नहींजान्यो तौने मनके मगनमेंकहेराहमें शुकदेवनाभये गर्भहीते मायाको त्यागिदियो औ सनकसनकादिक प्रह्लादादिक बहुत श्रमकरिकै फेरि फेरि समुझ्योहै सो साहब कहैहै कि मोकोजानिकै मेरेपास आये इहां रामोपासक शुकदेव को छूटिगये जोकह्योतो रामोपासक सबआइगये ५ ॥

एकलनिरंजनसकलशरीरा । तामेंभ्रमिभ्रमि रहलकबीरा ६

एकजोहै निरंजनब्रह्म सर्वव्यापी तिनहींको नानाशरीर नारायणादिकमहेशादिरूपहै तिनहींमें सिगरे कबीर कायाके बीर भ्रमि भ्रमिरहतभये कहे उनहींकी उपासनाकरतभये अपनोरूप औ मेरोरूप न जानतभये अरु ब्रह्म नानारूप कल्पनाकरिलियो है तामेंप्रमाण ॥ उपासकानांकार्यार्थंब्रह्मणोरूप कल्पना ॥ या

को अर्थ मेरेसर्वसिद्धांतमें है औरामोपासक शुकदेवकोकहिआयेहैं सो शुकाचार्यई मुक्तह्वैगयेहैं तामेंप्रमाण ॥ शुकोमुक्तोवामदेवो वा इतिश्रुतेः औरामोपासकरहेहैं तामेंप्रमाण ॥ पादांबुजंरघुपतेः शरणंप्रपद्ये इतिभागवते ॥ औकवीरऊजीको प्रमाण ॥आदिनाम शुकदेवजोपावा । पूर्वजन्मके कर्ममिटावा ६ ॥

इतिबानवेशब्दसमाप्तम् ॥

अथतिरानवेशब्द ॥

बाबूऐसो है संसारतिहारोयेकलिहैव्यवहारा । कोअवअनखसहै प्रतिदिनकोनाहिंनरहनिहमारा १ सुमृतिसुभावसवैकोइजानैहृदयातत्त्वनबूझै । निरजिवआगेसरजिवथापैलोचनकछुवनसूझै २ तजिअमृतविषकाहेकोअचवै गांठीबांधोखोटा । चोरनकोदियपाट सिंहासनशाहुकोकीन्होओटा ३ कहकवीरझूठोमिलिझूठाठगहीठगव्यवहारा । तीनिलोकभरिपूरिरहोहै नाहींहैपतियारा ४ ॥

बाबूऐसोहै संसार तिहारो ये कलिहै व्यवहारा ।
कोअबअनखसहैप्रतिदिनको नाहिंनरहनिहमारा १

बाबूकहे हेजीवो तिहारो यहसंसार ऐसोहै कि एकजो है मन ताहीकेलिये यह संसारको व्यवहारहै अरु वहीके छोड़ेते संसार छूटिजाइहै तामेंप्रमाण ॥ मनएवमनुष्याणां कारणंबंधमोक्षयोः । तामें कबीरको प्रमाण ॥ मुक्तिनहींआकाशमें मुक्तिनहींपाताल । जबमनकीमनसामिटै तबहींमुक्तिविशाल ॥ सो यह मनकी प्रतिदिनकी अनख कौनसहै अर्थात् अणु जोजीवहै ताको प्रतिदिन खाइलेइहै कहे अपनेमें मिलाइलेइहै सोरोज़रोज़को वाकेस्वरूप को भुलाइबो कौनसहै यह मनहमारे रहनिमाफिक नहीं है यह जड़ हम चैतन्य याते हम कैसे मिलेंगे १ ॥

सुमृतिसुभाव सवैकोइजानै हृदयातत्त्वनबूझै ।

निरजिवआगे सरजिवथापै लोचनकछुवनसूझै २

सो यहितरहते मनको स्वभाव सुमृति जेस्मृतिहैं तामें वर्णन है सो सबैकोई जानै है परन्तु हृदयमें जो मनकोतत्त्वकहेस्वरूप है ताको कोई नहीं बूझै है कि हम यह मनते भिन्नहैं निर्जीवजोमन है ताके आगे सजीव जो है आत्मा ताको राखिदेइहै कहे मिलाइ देइहै आंधरनको यह नहीं सूझिपरै है कि चितजीवको जड़नमें मिलाइ जड़ काहेकरै हैं औ आत्मादेहको एकही मानै हैं २ ॥

तजिअमृत विष काहेको अचवै गांठीबांधो खोटा ।
चोरनकोदियपाटसिंहासन शाहुको कीन्हो ओटा ३

अमृत जो है आपने आत्माकोस्वरूप ताको छोड़िके विष जो है मन तामेंलगिकै नानापदार्थनमें लागिबोतो है ताकोकाहेते अँचवै हैं कि गांठीमें खोट जो मनहै ताकोबांधै है सो काहे सो काहे बांधै है मनतेभिन्न नहीं ह्वैजाइहै आत्माके स्वरूपको भुलायकै मनमेंलगाइदेनवारे औसाहबको भुलाइदेनवारे औसंसारमेंडारि देनवारे ऐसे जे गुरुवालोगहैं तिनको पाट सिंहासन देइहै कहे उनको गुरूकरै है औ शाहु जे साधुजनहैं मनते छोडायदेनवारे जे साहबको बताइ देइँ आत्माको स्वरूप जनाइकै तिनकोओट कीन्हे है कहे उनको दर्शनई नहीं लेइहै ३ ॥

कहकबीर झूठेमिलिझूठा ठगहीठगव्यवहारा ।
तीनिलोक भरिपूरिरहोहै नाहीं है पतियारा ४

सो कबीरजी कहैहैं कि ऐसे जेलोगहैं ते झूठा जो मनको अनुभव ब्रह्महै तामें मिलिकै झूठेह्वैरहे हैं ठगैठगको व्यवहारह्वै रह्यो है सो तीनलोकमें वही भरिपूरि रह्यो है सोपतिआइबे लायक नहीं है जो ठगमेंलगैहै सोठगहीह्वैजाइहैजोकहोतीनलोकमें तौ साधुहूहैं पतिआइबेलायक कोई न रह्यो यहकैसे तौ कबीरजी कहै हैं कि साधुजन तीनिलोकके बाहरई हैं वे तीनलोकके भीतर

नहीं हैं काहे ते कि तीनिलोक मनको पसाराहै अरु ये मन ते भिन्नहैं ४ ॥ इतितिरानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथचौरानबेशब्द ॥

कहौनिरंजनकवनीबानी। हाथपांयमुखश्रवणनजिह्वाकाकहि जपहुहोप्रानी १ ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये ज्योतिकौन सहिदानी। ज्योतिहिज्योतिज्योतिदैमारै तबकहँज्योतिसमानी २ चारिवेदब्रह्मानिजकहियातिनहुँनयागतिजानी। कहैकबीर सुनो होसंतो बूझहुपण्डितज्ञानी ३ ॥

जो कहौ मनहीं ते यह संसार है औ जब मनते छूटैगो तब ब्रह्महीं ह्वै जाइगो तामें श्री कबीरजी कहै हैं ॥

कहौनिरञ्जनकवनीबानी।

हाथपांयमुख श्रवणन जिह्वा काकहि जपहु होप्रानी १
ज्योतिहिज्योतिज्योतिजो कहिये ज्योतिकौनसहिदानी।
ज्योतिहिज्योतिज्योतिदैमारै तबकहँ ज्योतिसमानी २

कहौतो निरंजन ब्रह्मको कौनीबाणी ते कहौहौ वाकोतौ मन बचनकेपरे कहौहौ तामेंप्रमाण॥यतोवाचोनिवर्ततेअप्राप्यमनसा सह इतिश्रुतेः ॥ अरुवाको तो बिनानामरूप को कहौहौ वाको कैसे जपौहौ औ कैसेध्यानकरौहौ १ जोकहो वह प्रकाशरूप ब्रह्म है सो प्रकाशको ध्यानकरैहै प्रकाशमें अपने आत्माको मिलाइदेइ है ब्रह्महमहीं ह्वैजाइ हैं सो ज्योतिस्वरूप जो ब्रह्महै तामें अपने आत्माकी ज्योति ज्योतिकै कहे मिलाइ कै जो कहिये वहज्योति कौन सहिदानी रहिजाइहै अर्थात् जबतत्त्वपदार्थ मिथ्यामानत मानत एकप्रकाशरूप ब्रह्ममान्यो ताकोमान्यो कि वहब्रह्महमहीं ब्रह्महैं सो जबभर यह मानेरह्यो कि वहब्रह्महमहीं हैं तब भरतो तिहारो अनुभव रहैहै औजब अनुभवऊ मिटिगयो तबतुमहींरहि जाउहौ तब वह ब्रह्मकी कौन सहिदानी रहिजाइ है अर्थात् कछु

नहीं रहिजायहै तुमहीं रहिजाउहौ यहीप्रकार जबब्रह्म ज्योति आत्माकी ज्योति मिलायकै वहिज्योतिको दै मारयोकहे छोड़यो अर्थात् सबको निराकर्ण कै कैवल्य शरीरमें प्राप्तिभयो अरुवहूको छोड्यो तबआत्माकीज्योति कहांसमाइहै सोकहै हैं जीवके मुक्त भयेपर परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हंसस्वरूप देइहैं तामें टिकिकै साहबकी सेवा जीवकरै है यहज्ञानतो जीवजानै नहीं है वही ब्रह्म प्रकाश को जानिराख्योहै किहमैंहीं ब्रह्महैं सोजबमनकोनिराकर्णह्वैगयो तबब्रह्महूको ह्वै जायहै तब आत्मैरहिजाय है याते मनै को अनुभव ब्रह्महै सो जौने हंस स्वरूप में वा ज्योति समाइहै ताको बिचार करो २ ॥

चारिवेदब्रह्मानिजकहियातिनहुँनयागतिजानी ।
कहैकबीरसुनोहोसंतौबूझहुपण्डितज्ञानी ३

ब्रह्मा चारिवेदकह्यो तिनमेंयहकह्यो कि मुक्तभयेपर बिग्रहको लाभहोयहै ॥ मुक्तस्यविग्रहोलाभः ॥ इत्यादिकश्रुति आंखही कह्यो तऊन जान्यो काहेते जोजानते तौ जगत्की उत्पत्ति न करते हंसस्वरूपमेंटिकिकै साहबके लोकको चले जाते सोकबीरजीकहै हैं कि हे संतोसुनो जाकेसारासारविचारिणी बुद्धिहोय सोपण्डित कहावै सोई पंडितहै सो हे ज्ञानिउ जिनसम्पूर्ण असारको छोड़िकै सारजे साहबहैं तिनको ग्रहण कैलियो ऐसेजे पण्डितहैंतिनसों बूझो वहगतिवोई बूझैहैं तबहीं तिहारो धोखाब्रह्म छूटैगो ३ ॥

इतिचौरानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथपञ्चानबेशब्द ॥

कोअसकरै नगरकोतवलिया। मासुफैलायगीध रखवरिया १ मूसभोनावमँजरिकँड़हरिया। सोवैदादुरसर्पपहरिया२बैलबियाय गायभैवांझा। बछवैदुहियातिनतिनसांझा ३ नितउठिसिंहस्यार सों जूझै। कबिरकपदजनबिरलाबूझै ४ ॥

कोअसकरैनगरकोतवलिया।मासुफैलायगीधरखवरिया १
मूसभोनावमँजारिकँड़ँवरिया । सोवैदादुरसर्पपहरिया २
बैलवियायगायभैवांझा। वछवैदुहियातिनतिनसांझा ३
नितउठिसिंहस्यारसोंजूझै।कबिरकपदजनविरलाबूझै ४

साहव कहैहैं या संसाररूपी नगरकी कोतवाली कोकरै जौने नगरमें शरीररूपी मांस फैलाहै गीध जोनिरजन काल सोरखवार है औजहां जीवको स्वरूप ज्ञानजो मूसरूप नाव ताके बिलार कड़हरियाहै कहे गुरुवालोग औ दादुर जोजीवहै सो सोवैहै प्राणजो सर्प सोपहरीहैं पैई नानाशरीरमें लैजाइहैं औ गायजो गायत्रीसो आपने तात्पर्य छपायराख्यो सो वांझभई औ वैलजो शब्द ब्रह्म सो वियायहै कहे नानाग्रन्थ रूप वछवाभये तेईवछवाको तीनि तीनि सांझदुहैहैं अर्थात् रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी सववाही को दुहै हैं कहे पढ़ै सुनै हैं औ सिंह जो विवेक है सो सियार जो कुमति तासों रोजही जूझैहै सो कवीर जोहै जीव ताको पदजोहै मेरोधाम ताको कोई विरला वूझैहै जेमेरेधामको वूझैहैं ते संसार ते छूटिजायहैं ३ ॥ इतिपंचानवेशब्दसमाप्तम् ॥

अथछानवेशब्द ॥

काकहिरोवोगेवहुतेरा ।वहुतकगयेफिरे नहिंफेरा १ हमरीवात वतैंनसँभारा । वातगर्भकीतैंनविचारा २ अवतैंरोयाक्यातैंपाया । केहिकारणतैंमोहिंरोवाया ३ कहैकवीरसुनोनरलोई । कालकेवश हिपरौमतिकोई ४ ॥

काकहिरोवहुगेवहुतेरा । वहुतकगये फिरेनहिंफेरा १
हमरीवातवतैंनसँभारा । वातगर्भकी तैंन विचारा २
अवतैंरोयाक्यातैंपाया । केहिकारणतैंमोहिंरोवाया ३
कहैकवीरसुनोनरलोई । कालकेवशहिपरौमतिकोई ४

का कहिके रोवौहौ वहुत तरहते कि ये हमारे भाईहैं ईवापहैं

ईपुत्रहैं बहुत यही तरहते गयेहैं फेरिनहीं फेरेफिरे हैं १ सो जब जबहमको तेरो दुःखदेखिकै करुणाभई हमारो वा तोको उपदेश दियो सोतू न सँभारे जो करारकिये तैं कि मैं भजनकरौंगो सोन विचारे साहबको भजन न कियो अबतैं गर्भमें जायजाय संसारमें आयआयकै रोवैहै कहे दुःखपावे है सो क्यातैंपाये अब हमकोतैं काहे रोवावैहै तेरोदुःखदेखिकै मोको दुःखहोयहै सोकबीरजीकहे हैं कि हेनरलोगो साहबको जानौगे तबहीं कालते बचौगे सोसाहबको भुलायकै काहे कालके वशपरौहौ संसार दुःखपावोहौ ४॥

इतिछानवेशब्दसमाप्तम् ॥

अथसत्तानबेशब्द ॥

अल्लहरामजीवतेरीनाईं । जनपरमेहरहोहुतुमसाईं १ क्यामूडीभूमिहिशिरनाये ॥ क्याजलदेहनहाये । खूनकरैमसकीनकहावै गुणकोरहैछिपाये २ क्याभोउज्जूमज्जनकीन्हे क्यामसजिदाशिर नाये । हृदयाकपटनेवाजगुजारे कहाभोमक्काजाये ३ हिंदूएकादशि चौविसरोजा मुसलमतीसबनाये । ग्यारहमासकहौकिनटारौ ये केहिमाहँसमाये ४ पूरुबदिशिमेंहरिकोवासा पश्चिमअल्लहमुकामा । दिलमेंखोजदिलैमेंदेखो यहैकरीमारामा ५ जोखोदायमसजिदमेंवसतुहै औरमुलुककेहिकेरा । तीरथमूरतिरामनिवासी दुइ महँकिनहुंनहेरा ६ वेदकितावकीनकिनभूठा भूठाजोनबिचारै । सबघटमाहँएककरिलेखैभेदूजाकरिमारै ७ जेतेऔरतमर्दउपानेसो सबरूपतुम्हारा । कबिरपोंगडाअलहरामका सोगुरुपीरहमारा ८ ॥

अल्लहरामजीवतेरीनाईं । जनपरमेहरहोहुतुमसाईं १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे श्रीरामचन्द्र कोई तुमको अल्लाह कहैहै कोई रामकहै है हिंदू मुसलमान दोउनमें शरीरभेद है जीव तो एकईहै सबमें विभु चैतन्य तुमहौ अरु चैतन्यजीव हैज्योति तुम्हारीहै हिंदू मुसलमानको आत्मा तुम्हारीहै तुमदूनोंके साईंहौ ताते तुम्हारेजनजेहिंदतुरुकदोऊहैंतिनकेऊपरमेहरवानगीकरौ१॥

क्यामूड़ीभूमिहिशिरनायेक्याजलदेहनहाये।
खूनकरेमसकीनकहावे गुणकोरहेछिपाये २

कबीरजी कहैहैं कि हिंदूतुरुक तुमको विसराइके और और विचारकरैहैं या चित्तमें नदीजै मेहर करिये काहेते कि तुरुकमूड़ी भूमि जो गोर तामें शिरनावैहै औहिंदू बहुतजलसोंनहायहै याते काहभयो आपको तो जनवैन कियो औ जीवनके गरकाटैहै ऐसो खूनकरै तौनखूनतौ छिपावैहै आपतेजे सर्वत्रपूर्णहैं तिनकोनहीं जानैहै औ मसकीनजो फकीर सो कहावैहै याते कहाभयो २ ॥

क्याभोउज्जूमज्जनकीन्हेका मसजिदशिरनाये।
हृदया कपटनेवाज गुजारे कहाभो मक्काजाये ३
हिन्दूएकादशिचौबिसरोजामुसलिमतीसबनाये।
ग्यारहमासकहौ किनटारो येकेहिमाहँ समाये ४

हिन्दूबहुतप्रकारके मज्जन करैहैं औ तुरुक उज्जू जोकुल्ला मुखारी करिकै हृदयमें कपटसहित नेवाज गुजारयो मसजिदमें माथनवायोमक्कागयो याते काहभयो आपकोतो जनवैन कियो ३ हिन्दूतो चौबिस एकादशी रहे औ तुरुक तीसरोजारहे याते काह भयो काहेते यातौजनवैनकियो कि और दिन ये काहेमें समायँगे ईसबदिन साहिबै के हैं ग्यारहमासई काकेहैं ४ ॥

पूरुबदिशिमेंहरिकोवासापश्चिमअल्लहमुकामा।
दिलमेंखोज दिलै में देखो यहै करीमा रामा ५
जोखोदायमसजिदमेंबसतुहै औरमुलुककेहिकेरा।
तीरथमूरति रामनिवासी दुइमें किनहुं न हेरा ६

हिंदूकहैहैं कि पूरुब औ उत्तरके कोनेमें सुमेरुहै ताहीमें वैकुंठ है वहैंते सूर्यउदय होइहै तहैं हरिको वासहै ताही ओर पूजा ध्या- न करैहैं औ पश्चिमकैति मक्काहै तहां अल्लाहको बास है ताही ओर मुसलमान नेवाज गुजारैहैं सो याते काहभयो आपने दिलमें

खोज कैके तौ देखवै न कियो कि करीमजे खोदाय राम जेराम चंद्र ते दिलहीमें हैं हिंदूतुरुक दोउनमें बोई हैं येतो शरीरमाय साहव एकईहै या नजानै तौ काहभयो ५ मुसलमान लोग या मानैहैं खोदाय मसजिदमें वसतुहै औ रामचंद्र मूर्त्ति औ तीर्थ में वसैहैं याते काहभयो काहेते दुइमें या वात कोई न बिचारेकि और मुल्कमें को वसैहैं सर्वत्रसाहिवही पूर्ण है आपने आपने पक्षमें लगेहैं ६ ॥

वेदकिताबकीन्हकिन झूठा झूठाजो न विचारै।
सबघट एकएककरिलेखै भयदूजाकरिमारै ७

वेदवाले किताबको झूठाकहैहैं किताबवाले वेदको झूठाकहै हैं सोयाकहा झूठाहै इनको को झूठा करिसकैहै झूठावही है जोइनको नहीं विचारै है किवेद किताबको यहीसिद्धांतहै साहबसर्बत्र पूर्णहै हिन्दूकेयाहै किसबनाम साहिबहीकेहैं ॥ सर्वाणिनामानियमाविशंति इतिश्रुतिः ॥ औ मुसल्मान के जामैजमीसिफात जामै जमीअसमात यह कलामुल्ला के किताबमें लिखैहै सोघटघटमें चित्त स्वरूप जीव एकहीहै सबके साहब रामचन्द्रहीहैं तिनको एककरि लेखै भरदूसरेते होयहैं ताको मारै सो याती बिचारबै न कियो तौ काह भयो ७ ॥

जेते औरत मर्दउपाने सोसबरूप तुम्हारा।
कबिरपोंगड़ाअलहरामकोसोगुरुपीरहमारा ८

सो कबीरजी कहैहैं कि जेते औरत और मर्द उपानेकहे उपजे हैं तेसबतुम्हारे रूपहैं काहेते कि चित्जो तुम्हारो बिग्रहहै ताही ते जगतहै औ कबिर कहे कायाकेबीर जे जीवहैं ते हे अल्लाह राम तिहारे जीवन के पोंगड़ाहैं अर्थात् तुमहीं घटघटमें बोलत हौ तुमको जानिवेको इनके कुदरति नहीं है चाहौ तुमउपदेशकरि आपनेमें लगावो चाहौ गुरुपीर द्वाराउपदेशकरि आपनेमें लगावो इनको वश नहींहै तामें प्रमाण ॥ यथादारुमयीयोषिन्नृत्यते

कुहकेक्षया । एवमीश्वरतंत्रोयमीहतेसुखदुःखयोः ॥ चौपाई ॥ उमादारुयोषितकीनाई । सबैनचावतरामगोसाई ८ ॥

इतिसत्तानवेशब्दसमाप्तम् ॥

अथअट्ठानवेशब्द ॥

आवोवेआवोमुझेहरिकोनाम । औरसकलतजुकौनेकाम १ कहँतबआदमकहँतबहवा । कहँतबपीरपैगम्बरहुवा २ कहँतब जिमीकहांअसमाना । कहँतबवेदकिताबकुराना ३ जिनदुनियामें रचीमसीद । झूठेरोजाझूठीईद ४ सांचएकअल्लाकोनाम । ताकोनयनयकरौसलाम ५ कहुधौंभिश्तकहांतेआई । किसकेकहे तुमछुरीचलाई ६ करताकिरतिम बाजीलाई । हिन्दुतुरुकदुइराहचलाई ७ कहँतबदिवसकहांतबराती । तहँतबकिरतिमकीउतपाती ८ नाहिंवाकेजातिनहींवाकेपांती । कहकवीरवाकेदिवसनराती ९ ॥

आवोवेआवोमुझेहरिकोनाम।औरसकलतजुकौनेकाम १
कहँतबआदमकहँतबहवा । कहँतबपीरपैगंबरहुवा २
कहँतबजिमीकहांअसमाना। कहँतबवेदकिताबकुराना ३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जौने नाममें सबनाम हैं तौन जोमन बचनकेपरे हरिकोनामहै सोहेजीव ताको तैंविचारकरु किमोको आवै और सब वस्तु झूठे छोड़िदे कौने कामकेहैं जबवहनाम रह्योहै आदिमें तब कुछनहीं रह्यो १ ये जे कहिआये तेकहांरहेहैं अर्थात् कोई नहीं रहे २ । ३ ॥

जिनदुनियांमें रची मसीद । झूठे रोजा झूठी ईद ४
सांचएकअल्लाको नाम । ताकेनयनयकरो सलाम ५
कहुधौंभिश्तकहांते आई। किसकेकहे तुमछुरी चलाई ६

अरु जीव जिनसंसारमें मसीद जो मसजिद शरीर रच्योहै ते कर्तारौ नहींरहे ४ सांचएकमन वचनकेपरे अल्लाकोनामहैताको

नय नयकै सलाम करो और सबझूँठाहै जिसके बनाये भिश्त भई है तेऊ वहीनामते प्रकटभये हैं तुम किसकेकहे जीवमारतेहौ ईसबझूठे हैं ५ । ६ ॥

करताकिरतिमबाजीलाई । हिंदुतुरुकदुइराह चलाई ७
कहँतबदिवसकहांतबराती । कहतबकिरतिमकीउतपाती ८
नहिंवाकेजातिनहींवाकेपांती । कहैकबीर वाकेदिवसनराती ९

सो कर्ताकै कृत्तिम जोमायाहै सोबाजी लगायकै दुइराह चलाई है ७ जब प्रथम साहब सुरतिदियो है तब कहांदिनरह्यो है कहां रातिरही कहां कृत्रिम जो माया ताकीउत्पत्तिरही है न वाके कछुजातिहै जो कहिये वा ब्रह्ममें है मायामें है सत्‌चित्‌है तौ वा एकऊमें नहीं है न जातिहै वाके एकईसाहबहैं दुइचारि साहब नहीं हैं न वाके दिवसहै न रातिहै कहै न ज्ञानहै न अज्ञानहै ताते साहब को सांचनाम जपौ ८ । ९ ॥

इतिअट्ठानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथनिन्नानबेशब्द ॥

अब कहँचल्यो अकेले मीता । उठिकिनकरहु घरहुकीचिंता १ खरिखांडघृतपिंडसमारा । सोतनलैबाहरकैडारा २ जेहिशिररचिरचिबांध्योपागा । सोशिर रतन बिडारहिं कागा ३ हाड़जरैं जैसे लकड़ीभूरी । केशजरैं जस तृणकै कूरी ४ आवतसंग न जातको साथी । काहभयो दलसाजेहाथी ५ मायाकोरसलेइनपाया । अन्तरयमबिलारह्वैधाया ६ कहकबीरनलअजहुँनजागा । यमको मोगरामधिशिरलागा ७ ॥

अबकहँचल्योअकेलेमीता।उठिकिनकरहुघरहुकीचिंता १
खीर खांड़घृत पिंडसमारा । सो तनलै बाहरकै डारा २
जेहिशिररचिरचिबांध्योपागा । सोशिररतनबिडारहिंकागा ३
हाड़जरैंजैसे लकरी भूरी । केशजरैं जसतृणकै कूरी ४

आवतसंग न जातकोसाथी। काहभयोदलसाजेहाथी ५
मायाको रसलेइन पाया। अन्तरयमबिलारके धाया ६
कहकबीरनलअजहुंनजागा।यमकोमोगरामधिशिरलागा ७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीवौ जैसो यापदमें कहिआयेहैं तैसो तिहारोहवाल ह्वै रह्योहै जोतुम परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र को न जानौगे तौ तिहारे शिरमें यमको मोगदरलगैगो ७॥

इतिनिन्नानवेशब्दसमाप्तम्॥

अथसौशब्द॥

देखौलोगौ हरिकी सगाई। मायधरैपुतधिय सँगजाई १ सासुननँदिमिलिअदलचलाई। मादरियागृहबेटीजाई २ हमबहनोइ राममोर सारा। हमहिंबापहरिपुत्रहमारा ३ कहैकबीरहरीके बूता। रामरमैतेंकुकुरीकेपूता ४॥

देखौलोगौहरिकीसगाई। मायधरैपुतधियसँगजाई १

हेजीवोसब संसारकी सगाई न देखो दुःखके हरैया जेहरिहैं तिनकी सगाईदेखो अर्थात् साहबमेंलागोतो वेसंसारदुःखदूरिकरिदेइँगे जोसंसारमें लागोगे तोमाईजोमाया सोतुमको धरैगीतुमजीवो वामायाके पुत्रह्वै रह्योहै समष्टिते व्यष्टिजीव मायाही करैहैयाते मायाकोमायकह्योहै अब जीवके बुद्धिउत्पन्न होयहै याते जीवकीधीकहे कन्याहै सोतैं बुद्धिके संग बिगरिगयो औरऔर में बुद्धि निश्चय कराइनरकमें डारिदियो १॥

सासुननँदिमिलिअदलचलाई।मादरियागृहबेटीजाई २

बुद्धिकर्मकीवासनाते उत्पत्तिहोयहै जौनेप्रकारकीवासनाहोय हैतैसी बुद्धिहोइहैसोवासना जीवकीसासुहै औजीवकी सुरतियहिनीहैकाहेते कि वही सुरतिपाइकै जीव चैतन्यभयोहै संसारी भयोहैऔवह सुरतिजब साहबसुख होइगी तबसाहबको पावैगो

सोयेई जेहैं बुद्धिकीसारु ननँदिहैं तेई अदलजोहैं हुकुम सोचलाइ के शुद्धसमष्टि जीवको संसारमें डारिदेइहैं सोकैसेडारिदेइहैं सो कहेहैं जौनबांदरको नटनचावैहैं सोमादरियाकहावै सोमनहैता- कीबेटीजोहै इच्छासो उत्पत्तिभई तबजीवसंसारमें परयो २ ॥

हमबहनोइ राममोरसारा। हमहिंबाप हरिपुत्रहमारा ३
कहै कबीर हरीके बूता। राम रमै तें कुकुरीके पूता ४

हेजीवतें यहविचारु कि यामें परिकै हमबहनोयहैं अर्थात् ब- हनवारे हैं सो वही जायँगे अरु हमारे सारकहे सारांश रामैहैं औ हमारे बापरामैहैं औ पुत्र रामैहैं तामेंप्रमाण॥ रामोमातामत्पि- तारामचन्द्रःस्वामीरामोमत्सखारामचंद्रः। सर्वस्वंमेरामचन्द्रोद- यालुर्नान्यंजानेनैवजानेनजाने ॥ तामेंकबीरजीकोप्रमाण ॥ राम हमारे बापहैं रामहमारेभ्रात। रामहमारीजातिहैंरामहमारीपां- त ॥ सो यह बिचारिकै श्रीकबीरजी कहै हैं कि हरिके बूता कहे हरिनके बूतते अर्थात् अपने बलते नहीं कुकुरी जोमायाहै ताके पतौ जीवो सर्वनात रामैसों मानिकै रामैमेंरमो अर्थात् जबतुम साहबके होउगे तब साहब हंसस्वरूपदैकै तुमको अपने धामको बोलाइलेइंगे ४॥ इतिसर्वाशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैएकशब्द ॥

देखिदेखिजियअचरजहोई। यहपदबूझैबिरलाकोई १ धरती उलटि अकाशहिजाई। चींटीकेमुखहस्तिसमाई २ बिनपवनेजहँ पर्वतउड़ै। जीवजंतुसबबिरछाबुड़ै ३ सूखेसरवरउठैहिलोल। बिनु जलचकवाकरैकलोल ४ बैठापण्डितपढ़ैपुरान। बिनदेखेकाकरैब- खान ५ कहकबीरजोपदकोजान। सोईसंतसदापरमान ६ ॥

देखिदेखिजियअचरजहोई। यहपदबूझैबिरलाकोई १
धरतीउलटिअकाशहिजाई। चींटीकेमुखहस्तिसमाई २

श्रीकबीरजी कहैहैं किमैंतो स्पष्टई कहौहौं पै यहपद जो साकेतलोक ताको कोई बिरला बूझैहै सो यह देखिदेखि मोकोबड़ो आश्चर्य होइ है १ जब महाप्रलय होयहै तब धरती उलटिकै आकाशको जातरहैहै कहे पृथ्वी जलमें जल तेजमें तेज वायुमें वायु आकाशमें समाइजाइहै अरुवहौजोहै आकाश सोअहङ्कारमें समाइ है अरु अहङ्कार महत्तत्त्वमें समाइ है सो महत्तत्त्व मनहै काहेते कि यह सब बिस्तार मनहींकोहै सोमहत्तत्त्व जोहै आदि कारण मन हाथी सो भगवत आपना रूप जोहै जगत्कीमूलशक्ति सूक्ष्म चींटी ताके मुखमें समाइहै २ ॥

बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ैं । जीवजंतु सबबिरछा बुड़ें ३

सो वह साहबके अज्ञानरूपा मूल प्रकृति लोक प्रकाशमें जो समष्टि जीवहैं तहांसमानी रहै है पृथ्वी आदिकतो समाइगयेहैं उहां पवननहींहै परंतु वह चैतन्याकाशकहे ब्रह्मरूपी आकाशमें अनन्तकोटि ब्रह्मांड जेपर्वतहैंते उड़तई रहैहैं अरु वही सरवरमें जीवजन्तु ते सहित जे संसार रूपी वृक्षहैं ते बूड़े हैं अर्थात् वही ब्रह्ममें सब संसारकी लय होयहै ३ ॥

सूखेसरवरउठैहिलोल । बिनुजलचकवाकरै कलोल ४
बैठापंडित पढ़ै पुरान । बिन देखे काकरै बखान ५

वहब्रह्मतोसूखासरोवरहै अर्थात् सो ब्रह्मनहींहौं यहमानिबो मिथ्याहै लोकप्रकाश ब्रह्म सत्य है तौने के प्रकाश की हिलोर उठैहै तहां बाणीरूपी जल तो है नहीं औ चकवा जे जीवहैं ते कलोलकरैहैं कहे वहैंते पुनि बाणीको उत्पत्ति करिकै संसारी ह्वै जाइहैं ४ पंडित जेहैंते बैठे पुरानपढ़ैहैं अरु उत्पत्ति प्रलय को सब बखानकरै हैं यह तो नहीं समुझै हैं कि वह तो बिन देखे काहे कहे शून्य है जो हम ज्ञान उपदेश करिकै वह ब्रह्ममेंलगावेंगे तौ भगवत् अज्ञानरूपी कारणशक्ति तौ उहां बनिहीहै माया फेरि न धरि लैआवैगी ५ ॥

कहकबीरजोपदकोजान । सोईसंतसदापरमान ६

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो कोई यहपदकोकहै जौनेकोप्रकाश यहब्रह्महै ऐसो जो साकेतहै तौने पदको कहे स्थानको जोजानै तौ प्रमाण संत वहीहै औ जेहिको प्रकाश या ब्रह्महै तौनेधाममें जायकै पुनि नहीं लौटि आवै है तासंप्रमाण। नतद्भासयतेसूर्योन शशांकोनपावकः। यद्गत्वाननिवर्त्तंतेतद्धामपरमंमम॥तामेंकबी-रऊजीकोप्रमाण॥कालहिजीतिहन्सलैजाहीं। अबिचलदेशपुरुष-जहंआहीं॥तहांजायसुखहोइअपारा॥बहुरिनआवैयहिंसंसारा ६ ॥

इतिएकसैएकशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैदोशब्द ॥

होदारीकिलैदेउँतोहिंगारी। तुमसमुझुसुपंथबिचारी १ घरको नाहजोअपना। तिनहूंसोंभेटनसपना २ ब्राह्मणऔक्षत्रीबानी। सोतिनहूंकहलनमानी ३ योगीऔजंगमजेते। वेआपुगयेहैंतेते ४ कहैकबीरयकयोगी। तुमभ्रमभ्रिमीभोभोगी ५ ॥

होदारीकिलैदेउंतोहिंगारी । तुमसमुझसुपंथबिचारी १ घरहूको नाह जो अपना । तिनहूंसोंभेट न सपना २ ब्राह्मण औ क्षत्री बानी । सो तिनहूं कहलनमानी ३

हो दारी कहे बांदीकी बच्ची जीवशक्ति तोको गारीदेइहौं तैं यह मायाकी बच्चीहैकै मायाहीमें लगिरहीहै सो यहमायादारी है जो सबको दरिडारै सोदारीकहावैहै सोतोको दरेडारैहै यहीके येपेटते निकसे यहीमें लगे यहकुपंथहै सोतैं सुपंथ बिचारु१ घर के नाहजे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र अपनाहै तासों सपनेहूंनहीं भेटकरैहै तौ योग ज्ञान उपासनादिकनमें जो नाहवर्णन कियेहैं तेतो जारहैं जो तोको मिलिबोकरैंगे दशादिनको तौ फेरि छाड़ि देइँगे २ जो हमारो कहो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य न मान्यो जिनको वेदको अधिकारहै ते वेदको तात्पर्यपरमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको नजान्यो तौ शूद्र अंत्यजनकी कहवई कहाकरैं ३ ॥

योगी औ जंगमजेते । वे आपु गये हैं तेते ४
कहकबीरयक योगी । तुमभ्रमीभ्रमीभोभोगी ५

योगी जंगम जेतेहैं तेवही धोखाब्रह्म में लगिकै आपनेआपने पौखोइदियो४ श्री कबीरजी कहैहैं कितुमएककेयोगीभयो किहम आत्माको एकजोब्रह्महै तामें संयोग करिदेइहैं कहेमिलाइदेइ हैं सो यहनहीं बिचारकरतेहौ किएकवही ब्रह्मजो जीवहोतो तौ वासोंभिन्नकाकाहेहोतोऔरतुमकोमिलाइवेकोकाहेपरतोजोकहौ यह ब्रह्महीको मायाते भ्रमभयोहै तबनानारूप देखनलग्यो है तौ तुमहीं ब्रह्मको ज्ञानमय कहौहौसत्यंज्ञानमनंत इत्यादि तौ वाको भ्रमही कैसेभयो अरुजो मायामें एती सामर्थ्यहै कि तुमको फोरिकै नानारूप करिदियो है तौ जबतुम मिलिहू जाउगे तब तुम को फेरि फोरि कै संसारमें न डारि देइगो का जनन मरण न छूटैगो ताते तुम फेरि फेरि यह भव भ्रममें भ्रमिभ्रमि कै भोगी होउगे अर्थात् जब वह ब्रह्ममें लगौगे फेरि फेरि संसारही में परौगे ५ ॥ इतिएकसैदोशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैतीनशब्द ॥

लोगो तुमहीं मति के भोरा । ज्यों पानी पानी में मिलिगो त्यों ढुरि मिल्यहुकबीरा १ ज्यों मैथिल को सच्चावास । त्योंहि मरणहोइ मगहरपास २ मगहरमरै मरननहिं पावै । अंतैमरैतो रामलजावै ३ मगहरमरै सो गदहाहोई । भलपरतीति रामसों खोई ४ क्या काशी क्या ऊसर मगहर हृदय राम वसमोरा । जो काशी तन तजै कबीरा रामैकौन निहोरा ५ ॥

लोगोतुमहींमतिकेभोरा ।
ज्योंपानीपानीमेंमिलिगो त्योंढुरिमिल्यहुकबीरा १

हेलोगो तुमबड़े मतिकेभोरहौ कहेडराकुलहौकाहेते जोमेंएतो उपदेश पशुको करत्यों तौपशुकोज्ञान ह्वै जातो तुमपशुहू ते अ-

थिकहौ जैसे पानी में पानी मिलिजाइहै ऐसे कबीरजीकहैहैं कि तुमहू दुरि कै मिलौ कहे हंस स्वरूपमें प्राप्तहोउ औ साहब के पासजाउ जोकहो पानी में पानी मिले एकही ह्वै जाइ है तो एक नहींह्वैजाइहै काहेते कि लोटाभरेजलमें चुरुवाभरिजल नाइदेइँ तो बाढ़िग्रावै है जो वहीजलहोतो तौ बढ़तो कैसे जोकहोसमुद्रमें तौ नहींबढ़ै तौसमुद्रौमें गंगादिकनदी जुदीही रहतीहैं देखबे को मिलीहैं परन्तु उनको पारिख मेघ जानै हैं वहां ते मीठैजल लैकै वर्षै हैं पुनि जब श्री रामचन्द्र समुद्रपरकोपे तब समुद्रआयो है सबनदी चमरछत्र लीन्हे जुदी जुदी आईहैं औ अबहूं जहाजवारे जे जानै हैं ते मीठाजल समुद्रको पाइ जाइहैं सो हे कबीरौ कायाकेवीर जीवौ तुमहूं हंसस्वरूप में स्थितह्वै साहब के लोकमें प्रवेशकरि साहव को मिलोजाइ १ ॥

ज्योंमैथिलकोसच्चावास । त्योंहिमरणहोयमगहरपास २
मगहर मरै मरण नहिं पावै । अंतैमरैतो रामलजावै ३
मगहरमरै सो गदहाहोई । भलपरतीति रामसोंखोई ४

जो श्री रामचन्द्रको जानै तौ जैसे मैथिलकहे मिथिला पुर में मरे मुक्ति होइहै तैसे मगहरमें मरे मुक्तिहोइहै २ जो मगहरमें मरैतो मरणनहीं पावैहै यह सबकोई कहै हैं कि मगहरमें मरे मुक्ति नहीं होइहै अरुजो अंतेमरै तो श्री रघुनाथ जीको लजावै कि तीर्थकी ओट लैकै मरयो ३ सो जाकी श्री रामचन्द्र में परतीति नहींहोयहै सो मगहरमें मरे गदहै होइ है ४ ॥

क्याकाशीक्याऊसरमगहर हृदयरामवसमोरा ।
जोकाशीतनतजै कवीरा रामै कौन निहोरा ५

जोहृदयमें श्रीरामचन्द्र वासकियेहैं तो क्या श्रीकाशी है क्या ऊसरहै क्यामगहरहै जहँमरै तहँमुक्ति ह्वैजाइ तौ श्रीकबीरजी कहै हैं किश्रीरामचन्द्रको कौन निहोरा तेहितेमैं श्रीरामचन्द्रकोनिहोरा करिकै मगहरमेंही शरीरछोड़्यो मोको मगहरबाधानकियो

तोहिते हेजीवो तुमहूं परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को हृदय में धरौगे औरामनाम जपौगे तौ तुमहूं को कुछुबाधान रहेगी जहें मरौगे तहें मुक्तह्वैजाउगे ताते और सबधोखा छोड़िकै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको स्मरणकरौ मैंअजमाइकै कहौंहौं जोकहौंअपने शरीरछोड़िवेकी कथा श्रीकबीरजी अपने ग्रन्थमें लिखैहैं यह असम्भव बातहै तौ मगहरमें जो श्रीकबीरजी शरीरछोड़यो तौ आपनीरामोपासकता देखाइबेकी मैंमगहरमें शरीरछोड़ौंहौं कैसे यममोको गदहाकरैंगे औ कैसेमैं मुक्तनहोउँगो सो मगहरमें मैं शरीर छोड़यो यमको कियो कछुनभयो मगहरमें शरीर छोड़ि मथुरामें जायरतनाकंदुइनिको उपदेशकियोहै पुनिबहुतदिन प्रकटरहे हैं यातेयहदेखायोकि नित्यवृन्दाबनकेरासमें देख्योजाइहै जहां सबमुक्तह्वैकैजाइहैं परममुक्तह्वै नित्य वृन्दैबनके रास में जायहैंतामेंप्रमाण शुकाचार्य मुक्तह्वैगये हैं तिनसों श्रीकृष्णचंद्रकी उक्ति॥सचोवाचप्रियारूपंलब्धवंतंशुकंहरिः। त्वंमेप्रियतमाभद्रेसदातिष्ठममांतिके॥इतिपद्मपुराणे॥ सो सबकथा आपहीधर्मदासते निर्भयज्ञानमेंआपनेहीमुखकमलतेकह्योहै सो स्पष्टई है ५॥

इतिएकसैतीनशब्दसमाप्तम्॥

अथएकसैचारशब्द॥

कैसेकैतरोनाथकैसेकैतरो अबबहुकुटिलभरो १ कैसीतेरीसेवा पूजाकैसोतेरोध्यान। ऊपरउजरदेखोबकअनुमान २ भावतो भुवंग देखो अतिबिविचारी। सुरतिसचानदेखोमतितौमँजारी ३ अति तोबिरोधीदेखोअतिरेदेवाना। छौदरशनदेखोभेपलपटाना ४ कहै कबीरसुनोनलवंदा। डाइनिडिंभपरेसबफंदा ५॥

अब गोरखनाथ के मतके जे नाथ कहावैहैं जे आपने इष्टदेवता को नाथ कहैहैं तिनकोकहै हैं कैसेहैं वे कि आप काल ते नाथे गये अरु औरऊको कालतेनथावैहैं जिनको अपनेअपनेमतमें लैआवै

हैं तेऊकालते नाथेजायंगे अर्थात्नाथैसोनाथकहावै अथवा नाथो जाइसोनाथकहावै ॥

कैसेकैतरोनाथकैसेकैतरोअवबहुकुटिलभरो १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हेनाथ तुमकैसे मुक्तहोउगेगोरखनाथ रहे तेतोयोगऊकरतरहे अबतो योगको नामई रहिगयो मुद्रापहिरिलियो भेषबनाइलियो कपरा रँगिकै अरु नानाप्रकारके मंत्रते भैरवभूत को वशिकैकै सिद्धि देखावन लगे लोगनको ठगनलगे कोई महन्त बनिबैठे कोईराजकाजकरनलगे कोई राजाकेगुरूह्वै बैठे सो अबतुम बहुत कुटिलतातेभरेहौ १ ॥

कैसीतेरीसेवापूजाकैसोतेरोध्यान । ऊपरउजरदेखोवकअनुमान २

तिहारिसेवापूजा ध्यानकरिबोकैसोहै कि ऊपरते तोयहजानिपरैहै बड़ेपूजेरीहैं बड़ेध्यानीहैं बड़ेयोगीहैं औ भीतर कपटतेभरे हैं जैसे बकऊपर ते उजल रहैहै औ भीतर कुटिलई ते भरेमछरी धरनको ताके रहैहै तैसे भीतर वासना भरीहै काहूको धनपावै तौ लैलेइ काहूके खरिकाको देखै तौमूड़िलेइ काहूराजाकोठगि जागापावै तौलैलेइ जातेहमारी महंतीचलै २ ॥

भावतोभुवंगदेखोअतिबिबिचारी ।
सुरतिसचानदेखोमतितोमँजारी ३

भावकरिकै तौभुवंग है जाकोसांपधरैहै ताको विषचढै है मरिजायहै तैसेजो इनकोसंगकरैहै ताहूकेइनके मतको विष चढ़िजाइहैइनकेमतनमें चल्यो सो मारोपरयो अरुवेबड़े बिबिचारी होत हैं शास्त्रके मततेजोकर्महैं ताकोछोड़ाइहीदेइहैं अरुपरमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको जानते नहीं हैं जाते उद्धारह्वैजाइ सो कर्मकांडी तो भला कछू स्वर्गको सुखपाइ कै संसारमें परैहैं येसीधे नरकही को चलेजाइहैं सो इनकी सुरति सचान ह्वै रहीहै जैसे सचान खोजत फिरै है कि जोकोन्यो जीवकोपाऊंतौधरिलेउँ अरु उनकी मतिजो है दुर्मति सो मंजारी ह्वै रहीहै तैसे मंजारी खोजत फिरै

है कि जो काहू मूसको पाऊं तौ धरिलेउँ तैसे येऊ खोजत वागे हैं कि काहूकोपावैं तौ चेलाकरिलेइँ औ धनलैलेइँ जैसेआप नरकमें जाय हैं तैसे चेलोंको नरकमें डारे हैं ३ ॥

अतितौविरोधीदेखोअतिरेदेवाना । छौदर्शनदेखोभेपलपटाना ४
कहैकबीरसुनौनरबंदा । डाइनिडिंभपरेसबफंदा ५ ॥

योगी जङ्गम सेवरा संन्यासी दरवेशब्राह्मण तिनसों अतिवि-रोध करैहैं अरु अपने मतमें अति देवाने ह्वैरहेहैं अर्थात् वहीपाखंड मतको सबते अधिकमानै हैं सो याहीभांति छइउदर्शनमें देखैहैं किभेष सबमें लपटान्योहै कुछ सारपदार्थनहींजानै हैं भेप बनाइ लियो योगी जङ्गम सेवरादिक कहावनलगे ४ श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेनर तैंतो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको वंदा है सो उनकोतो येषट्दर्शनवारे जानैनहींहैं आपने आपने मतमें डिंभकिये हैं कि हमारई मत ठीकहै और मत झूठे हैं ५ ॥

इतिएकसैचारशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैपाँचशब्द ॥

यहभ्रमभूत सकलजगखाया । जिनजिनपूजातिनजहडाया १ अंडनपिंडप्राणनहिंदेहा । काटिकाटिजियकेतिकयेहा २ बकरीमुर्गीकीन्होछेहा । अगिलजन्मउन्हअवसरलेहा ३ कहैकबीरसुनोनर लोई । भुतवाके पूजेभुतवैहोई ४ ॥

यहभ्रमभूतसकलजगखाया । जिननजिनपूजातिनजहडाया १
अंडनपिंडप्राणनहिंदेहा । काटि काटि जियकेतिकयेहा २
बकरीमुर्गीकीन्होछेहा । अगिलजन्मउन्हअवसरलेहा ३
कहैकबीरसुनोनरलोई । भुतवाके पूजेभुतवैहोई ४

दुलहादेव भैरव भवानी ग्रामदेवता ईसब भ्रमहैं ईसबजगत् को खायेलेइहैं जिनजिन इनकोपूजाहै तिनको तिनकोजहडाइ-

बोकहे वहकालदेइहै १ येईदेयतिनकेनाअंडहै नापिंडहै इनको अनेकजीव काटिकाटिदियो सोकाहजानिकै दियो तुमकोबैकला-इ डारेंगे फल नादेइँगे २ वकरीमुर्गी दैकै जोतुमइनको पूजाकी-न्हीं सोई आगिलेजन्म तुम्हारो गरकाटैंगे ३ सोश्रीकबीरजी कहै हैं हेलोगो तुमसुनौ ये भूतनको जोतुम पूजौगे तौ तुमहूं भूतहोउ-गे भूतके पूजेते भूतहोइहै तामेंप्रमाण ॥ यांतिदेवव्रतादेवान्पितॄन् यांतिपितृव्रताः । भूतानियांतिभूतेज्या यांतिमद्याजिनोपिमाम् इतिगीतायाम् ४ ॥ इतिएकसैपांचशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैछःशब्द ॥

भवँरउड़ेवकबैठेआय ।रैनिगई दिवसौचलिजाय १ हलहलकां-पैवालाजीव । नाजानैकाकरिहै पीव २ कच्चेबासनटिकैनपानी । उड़िगेहंसकायकुम्हिलानी ३ कागउड़ावतभुजापिरानी ।कहकबी-रयहकथासिरानी ४ ॥

भवँरउड़ेवकबैठेआय । रैनिगईदिवसौचलिजाय १

हलहलकांपै वालाजीव । नाजानैकाकरिहैपीव २

यहजगत्‌मेंयहदशाह्वैगई कि भवँर जे हैं रसिक संतजेपरमपु-रुष पर श्रीरामचंद्रके प्रेममेंछकेरहेहैं तेउड़िगये कहे उठिगये अरु वकजेहैं गुरुवालोग ते बैठे आय जैसे वकुला मछरी खायहै तैसे ठगिठगिकै जीवको स्वस्वरूप खाइलेइहैकहेभुलाइदेइहै वहीब्रह्म मेंलगाइकै १ सोयहजीव तौ बालास्त्रीकहे परमपुरुष श्रीरामच-न्द्रकी चित्‌शक्तिहै सोब्रह्मधोखामें लगिकैहलहलकांपैहै अर्थात्‌मैं आपने स्वामीको भुलाइकै धोखाब्रह्ममें लग्यो सो हाथ न लग्यो सोनाजानौं खफाह्वैकै मेरे पीउकहे स्वामी अब कहाकरैंगे २ ॥

कच्चेबासनटिकैनपानी । उड़िगोहंसकायकुम्हिलानी ३

कागउड़ावतभुजापिरानी । कहकबीरयहकथासिरानी ४

सो उमिरितो वह ब्रह्ममें व्यतीतकै दियो औ हाथकुछनलग्यो तब यह विचारयो कि मैं अपने स्वामी जे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनमें लगौं सो जैसे कच्चेबासन में पानीधरिदेइ तौ वासनकच्चा विगसिजायहै तैसेयह शरीरतोरहैनहीं है जब हंसउड़िगयो शरीर कुम्हिलाइगयो कहेछूटिगयो भावयहहै तब पछितावई हाथरहि जाइहै ३ श्रीकबीरजीकहै हैं कि जैसे नारी अपने पतिके आइबेको भुजाते कागउड़ावै है जब पति नहीं आवैहै तब भुजाको पिराचई रहिजाइहै तैसे ब्रह्महैवेके लिये उमिरि बिताइदियो अहंब्रह्म अहं ब्रह्म करत करत वहसब कथा सिराइगई कहे जब जबब्रह्मभये उनकोब्रह्मनमिल्यो तबमेहनतई हाथरहिजाइहै जैसे बूसकेकांड़े कुछु हाथ नहीं लगे है मेहनतई हाथ रहिजाइहै तैसे इनकोविना परमपुरुष श्रीरामचंद्रके जानेब्रह्म ह्वैजाइबोबूसई कैसो कांड़िवो है उहां कुछु हाथ नहीं लगैहै तामेंप्रमाण ॥ श्रेयःस्तुतिर्भक्तिमुदस्य तेविभोक्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्धये ॥ तेषामसौ क्लेशलएवशिष्य तेनान्ययथास्थूलतुषावघातिनाम् १ इतिभागवते ४ ॥

इतिएकसैछःशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैसातशब्द ॥

खसमविनतेलीकेवैलभयो। वैठतनाहिंसाधुकीसंगतिनाधेजन्म गयो १ वहिबहिमरैपचैनिजस्वारथयमकेदण्डसह्यो। धनदारासुत राजकाजहितमाथेभारगह्यो २ खसमहिंछोड़िविषयरँगमातेपापके बीजवयो। झूंठमुक्तिनलआशजिवनकी प्रेतकोजूंठखयो ३ लख चौरासीजीवयोनिमेंसायरजातवह्यो। कहैकवीरसुनौहोसंतौश्वान किपूंछगह्यो ४ ॥

खसमबिनतेलीकोवैलभयो ।

वैठतनाहिंसाधुकीसंगतिनाधेजन्मगयो १

वहिबहिमरैपचैनिजस्वारथयमकेदंडसह्यो ।

धनदारासुतराजकाजहितमाथेभारगह्यो २

श्रीकबीरजी जीवको उपदेश करैहैं हे जीव तेरे मालिक जेरा-मचंद्र हैं तिनहीं बिना तैं तेलीको बैलभयो जे साधु तेरोस्वरूप बताइदेइँ ऐसेसाधुनकीसंगतिमें कबौंनहीं बैठे तेलीकेबैलकीनाईं नाधे नाधे जन्म व्यतीतभयो जन्सतैमरतरह्यो १ जबकांधेजुवां नाधि जायहै तब निज तेलीके निमित्त ढोइ ढोइ मरै है जोनारेंगै तौ तेली डंडा मारै है तैसे यह जीव धन दारा सुत राज काजके हित नानाकर्म करै है इंद्री सुख लिये बहि बहिकहे नानाकर्मन को भारा ढोइ ढोइकै पचैहै अरु अंतमें यमदंड मारैहैं सोसहौहौ याही रीति जन्म जन्म यमदंड सहौहौ २ ॥

खसमहिंछोड़िबिषयरँगमातेपापकेबीजबयो ।
झूठमुक्तिनलआशजिवनकीप्रेतकोजूंठखयो ३

खसम जे साहब तिनको त्यागि बिषय रंगमें मात्यो औ पा-पको बीज बोवत भयो अर्थात् जो नारी आपने खसमको छोड़ि और पुरुषमें लगैहै तौ वाको बड़ो पापहोय है सोतैं खसमको छो-ड़िकै नानादेवतनकी उपासना में लगिजातभयो मतिगयो सोतैं महापाप के बीजबोयो औ नरन को ज्यावनवारी जो मुक्ति की जो हमको उपास्य देवता प्राप्त होयँगे तौ हमजीतेरहैंगे हमारो जनन मरण न होयगो सो वह मुक्तिझूठी है जौने शरीरते उनके लोकको जायगो सो तन नाश ह्वैजाइगो जबफेरि सृष्टिसमयहो-इगो तब वोई देवनके साथ फिरि आवगो जनन मरण न छूटैगो सो ऐसी झूठी मुक्तिके वास्ते तैं प्रेतनको जूंठखाय है कहे भैरव भूत आदिकन के बलिदान खाय है उनके दिये तपौना शराव पियै है ३ ॥

लखचौरासीजीवयोनिमें सायरजातवह्यो ।
कहैकबीरसुनौहोसंतौ श्वानकिपूंछगह्यो ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे संतौजीवौसुनौ तुमपरमपुरुष पर जे

तेतुम्हारे रक्षक संसारसागरते पारकैदेनवारेजहाज छाड़ि श्वान जेहैं ई सब क्षुद्रदेवता तिनकी पूंछगहे चौरासीलक्ष योनि समुद्र संसारमें वहोजायहै सो श्वानकी पूंछगहेते कैसे संसार समुद्रतेपार जाउगे ४ इतिएकसैसातशब्दसमाप्तम् ॥

—o—

अथएकसैआठशब्द ॥

अबहमभयलबहिरजलमीना। पुरुवजन्मतपका मदकीना १ तबमैंअक्षलोमनवैरागी। तजलोकुटुम्ब रामरटलागी २ तजलो काशीभैमतिभोरी। प्राणनाथकहुकागतिमोरी ३ हमहिंकुसेवक तुमहिंअयाना। दुइमहँदोपकाहिभगवाना ४ हमचलिगैलतुम्हारे शरणा। कतहुँनदेखोहरिकोचरणा ५ हमचलिगैलतुम्हारेपासा। दासकबीरभलकैलनिरासा ६ ॥

अबहमभयलबहिरजलमीना। पुरुवजन्मतपकामदकीना१

तबमैंअक्षलोमनवैरागी। तजलोकुटुम्बरामरटलागी २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब मैंसाहबके पासगयो तबयह विनती कियो कि तबतो संसार के जलके मीन रहे अब जबते हम संसारके बहिरे तिहारे प्रेमजलके मीनभये प्रथम हम पूर्वजन्ममें पंचांगोपासना तपस्या बहुतकरी पुनि जब जन्मलियो तब हम को पूर्वजन्म की सुधि बनीरही वह तपस्या को मदकहे अहङ्कार हमको बहुतरहै सो वह तपस्याके प्रभावते १ तब हमको अच्छो मनमें वैराग्यरहै रघुनाथजीमें भक्ति भई तब कुटुम्बको छोड़िकै रामराम रटलगावतभयो २ ॥

तजलोकाशीभैमतिभोरी। प्राणनाथकहुकागतिमोरी ३

तब प्राणनाथमैं काशीको छोड़िदियो औ मेरीमति भोरीभई कहे पूर्वजन्म केतपकेमदतेनिर्गुणारसरूपाभक्तिमोको न होतभई केवल ज्ञानैकरिकै रामनामकी रटनिलगाइकैविचरतभयोकिमिलिहीजायँगे तबहेप्राणनाथ मेरी कहां गतिहोतभई सोकहौहो३॥

हमचलिगेलतुम्हारेशरणा। कतहुँनदेखोहरिजीकोचरणा४
हमहिंकुसेवकतुमहिंअयाना। दुइमहँदोषकाहिभगवाना ५

हमतुम्हारे शरण तो चलिगये कहेतुम्हारे नाममेंरट लगावत भयो पै तुम्हारे चरणन को न देखत भयो अर्थात् दर्शन न पायो ४ सोहेभगवन् पट्ऐश्वर्य संपन्न धौंहमहीं कुसेवकरहे जो तिहारो दर्शन न पायो धौंतुमहीं अयानरहे हमको न जानतरहे जो हमको नहींमिले दुइमें काकोदोषहै ५ ॥

हमचलिगेलतुम्हारेपासा। दासकबीरभलकैलनिरासा६

अबदासकबीर जोमैंहौं ताको भलीभांतिते जब निराश करि दियो कि कौनिउभांतिकी जब आश न रहिगई न ज्ञानकरिकै न योगकरिकै न भक्ति करिकै केवलसुधारसरूपा निर्गुणाभक्ति जब मोकोदियो तबहमतुम्हारे पासचलिआये यातेकबीरजी यादेखा-योकिजबसबबातते निराशह्वैजायहैं तबसाहबकेपासजाइहैं ६ ॥

इतिएकसैआठशब्दसमाप्तम् ॥

—o—

अथएकसैनवशब्द ॥

लोगबोलैंदुरिगयेकबीरा। यामतकोइकोइजानैंधीरा १ दशरथसुततिहुंलोकहिंजाना। रामनामकोमर्मैआना२ जेहिजियजानि पराजसलेखा। रजुको कहै उरगजोपेखा ३ यद्यपिफलउत्तम गुणजाना। हरिहित्यागिमनमुक्तिनमाना ४ हरिअधारजसमीनहिं नीरा। औरयतनकछुकहहिंकबीरा ५ ॥

लोगबोलैंदुरिगयेकबीरा। यामतकोइकोइजानैंधीरा १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि सबलोग बोलैहैं कि कबीर बहुत दूरि गये बहुत पहुँचेहैं सो यामत कोई कोई जेधीरेधीरे साधनमें क्रियनमें समुझनेमेंअभ्यासकरैहैं सोजानैहैं कौनमतसोआगेकहै हैं१॥

दशरथसुततिहुंलोकहिंजाना। रामनामकोमर्मैआना २

सो दशरथ सुतकोतौतिनोंलोक जानै है पै रामनामकोमर्म कोऊ कोऊ जानै है अर्थात् कबहूं दशरथ सुत कबहूं नारायणकहूं व्यापक ब्रह्महीं अवतार लेइ हैं नित्य साकेतबिहारी परम पुरुष पर जे श्रीरामचंद्रहैं जिनके नामते ब्रह्मईश्वरवेदशास्त्रसब निकसै हैं तौने रामनामको तौ मर्म आनहै २ ॥

जेहिजियजानिपराजसलेखा। रजुकोकहैउरगकोपेखा ३

यद्यपिफलउत्तमगुणजाना। हरिहित्यागिमनमुक्तिनमाना ४

जाको यह राम नाम जैसो जानिपर्यो है सो तैसेलेख्योहै कोई रघुनाथ जी को दशरथके पुत्र मानै है कोई नारायण को अवतार मानै है कोई ब्रह्मको अवतार मानैहै तिनहीं को नाम रामनाम मानैहै सो जैसेरसरीको उरग कहैहैं बिना समुझे ऐसे रामनाम जो साहबकोहै सोभ्रम छोड़िकै विचारै तौ साहिबैको बोधकरैहैं ३ सो यद्यपि उत्तमगुण जानेके फल होयहै कि विष्णुलोक प्राप्तभये परंतु परमपुरुष परजे श्रीरामचंद्र तिनकेप्राप्त भये बिना हम मुक्ति नहीं मानै हैं ४ ॥

हरिअधारजसमीनहिनीरा। औरयतनकछुकहैकबीरा ५

सो जैसे मीनको आधार अंबुहै बिनाजल मीन नहीं रहिसकै है तैसे श्रीरामचंद्र सबके आधारहैं सो तिनहींको जोआधारमानै तौ जैसे मीन सर्बत्रजलही देखैहै द्विभुजरूप श्रीरामचंद्रकोसर्वत्र देखै औ उनहींमें रहै तौ श्रीकबीरजीकहै हैं कि और यतन सब थोरई है तामें प्रमाण श्रीगोसाईंजी को ॥ दोहा ॥ सोअनन्यअस जाहिकेमतिनटरैहनुमंत।मैंसेवकसचराचररूपराशिभगवंत१तामें प्रमाणकबीरजीको॥नैननआगेख्यालघनेरा।अरधउरधविचलगन लगीहै क्यासंध्याक्यारैनिसबेरा॥ जेहिकारनजगभरमतडोलैसो साहबघटलियाबसेरा।पूरिरह्योअसमानधरणिमेंजितदेखोतितसा हबमेरा। तसबीएकदियामेरेसाहबकहकबीरदिलहीबिचफेरा५॥

इतिएकसैनवशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसौदशशब्द ॥

अपनोकर्मनमेटोजाई । कर्मकलिखामिटैधौंकैसेंजोयुगकोटि सिराई १ गुरुवशिष्ठ मिलिलगनशोधाई सूर्यमंत्रयकदीन्हा । जो सीतारघुनाथविआही पलयकसंचनकीन्हा २ नारदमुनिकोबदन छपायोकीन्ह्योकपिसोरूपा । शिशुपालहुकेभुजाउपारेआपुनबोध स्वरूपा ३ तीनिलोककेकरताकहिये वालिवध्योबरियाई । एक समयऐसीवनिआईउनहूंअवसरपाई ४पार्वतीकोबांझनकहियेई-शनकहियभिखारी।कहैकबीरकरताकीबातैंकर्मकीबातनिनारी५ ॥

अपनोकर्मनमेटोजाई । कर्मकालिखामिटैधौंकैसेजोयुग कोटिसिराई १ गुरुबशिष्ठमिलिलगनशोधाई सूर्यमंत्र यकदीन्हा । जोसीतारघुनाथबिआहीपलयकसंचनकी-न्हा २ नारदमुनिकोबदनछपायो कीन्ह्योकपिसोरूपा । शिशुपालहुकेभुजाउपारेआपुनबोधस्वरूपा ३ तीनिलो-ककेकरताकहिये वालिवध्योबरियाई । एकसमयऐसीब निआईउनहूंअवसरपाई ४ पार्वतीकोबांझनकहियेईश नकहियभिखारी । कहकबीरकरताकीबातैं कर्मकीबात निनारी ५ ॥

श्रीमन्नारायण वैकुण्ठते केतन्यो अवतारलियो तेऊ कर्मकी मर्यादा राखिवोई कियो सो जे साहब उत्पत्ति पालन संहारकरै हैं तेतो कर्मकीमर्यादा राखिवोई कियो और की कहांगतिहै सो विना परमपुरुपपर श्रीरामचंद्रके नामलिये कर्मकी गति काहूकी मेटीनहीं मेटिजाइहै श्रीरामनामते कर्मकीगतिमिटिजाइहै सा-हव मेटिदेइहैं तामें दोऊप्रमाण ॥ रामनाममणिविषयव्यालके । मेटतकठिनकुअंकभालके१ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज । अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुच इतिगीतायां ॥ सकृदेव प्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ।अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम॥

इतिरामायणे ॥ औ कवीरऊजीकोप्रमाण ॥ पहिलेबुराकमाइकै बांधीविषकैमोट। कोटिकर्ममिटपलकमें आवैहरिकीओट ॥ और यापदको अर्थ स्पष्टहै ५ इतिएकसैदशशब्दसमाप्तम् ॥

—o—

अथएकसैग्यारहशब्द ॥

है कोई पंडित गुरुज्ञानी उलटि वेदकोबूझै। पानीमें पावक जरै अंधेआँखीसूझै १ गैयातोनाहरकोखायो हरिनाखायोचीता। कागालगरैफादिकै बटेरनबाजजीता २ मूसातोमंजारैखायो स्यारै खायोश्वाना। आदिके उपदेशजानै तासुवेसैवाना ३ एकै तो दादुरसोखायोपांचौजेभूवंगा। कहैकवीरपुकारिकैहैंदोऊयकसंगा ४ ॥

हैकोईगुरुज्ञानीपंडितउलटिवेदकोबूझै।
पानी में पावक जरै अंधे आंखी सूझै १

ऐसो गुरुज्ञानी पंडित कोई नहीं है जो उलटिकै वेदकोअर्थ बूझै अर्थात् गायत्रीते वेदभयो है प्रणवते गायत्रीभई है प्रणव राम नामते उत्पत्ति भयेहै सो कहै हैं पानी जो है वानी तामें पावकवरै है कहे ब्रह्माग्नि वीज रामनामहै सो सर्वत्र पूर्णहै सो अंधे के आंखी में कैसे सूझै उलटिकै वेदको बूझै तौ जानै कि सबको मूल रामनामई है १ ॥

गैयातोनाहरकोखायोहरिनाखायोचीता।
कागालगरै फादिकै बटेरन बाज चीता २

गैया जो गायत्री तौनेके नानाअर्थ करि कहीं सूर्यमें लगावै है कहीं ब्रह्ममें लगावैहै सोई अर्थजोगैया सोसांच गायत्रीको तात्पर्यार्थसाहव तिनकोज्ञान जोनाहरताको खायलियो औ हरिना जो अद्वैतज्ञानको हरिनहीहै प्रणवको अर्थकियो कि जीवनहीं है एक ब्रह्महीहै सोमैंहौं या जोहरिना सोसाहवको ज्ञान जो चीताताको खायलियो चीता साहवके ज्ञानको काहेतेकह्यो कि जवसाहवको ज्ञानहोइहै तव अद्वैत ज्ञाननहीं रहिजाइहै औ काग जो अज्ञान

सो साहबको ज्ञान जो लगरशिकारी पक्षी कागा को खानवारो ताको कागा खाय लियो औ असत् शास्त्रके अनेक प्रकारके जे अर्थ तेई हैं बटेरते सतशास्त्र जेसाहबके बतावनवारे तेई हैं बाजताको जीतिलियो अर्थात् तामसी जेहैं ते तामस शास्त्रको प्रचारकरि सतशास्त्रको लोप करिदियो २ ॥

मूसातोमंजारैखायोस्यारैखायोश्वाना।
आदिकोउपदेशजानैतासुबेसैबाना ३
एकैतोदादुरसो खायोपांचौजेभूवंगा।
कहैकबीरपुकारिकै हैंदोऊयकसंगा ४

मूसा जोहै वितुंडावाद सो साहबको उपदेश जोमंजार ताको खायलियो औ स्यारजोमाया सो जीवके स्वरूप ज्ञानतेजो होइ है श्वान भवानन्द सोईहै श्वानताको खाइलियो सो कबीरजी कहैहैं जो कोई आदिको उपदेश जो है रामनामजानै ताही को बेसवानाहै और सब पाखण्डईहै ३ एकहीदादुर जोमन सोदादुर के खायलेनवारो पांच भुवंग जे रति नेष्ठाभाव प्रेमरसते ताको खाइलियो सोई एकएकके बिरोधी रहे तिनको खायलीन्हें सो कबीरजी कहैहैं जीव साहब एकैसंगकेहैं आपने स्वरूपको नसमुझ्यो या न विचार्यो कि मैं साहबकोहौं ताते संसारी ह्वैगयो है जो साहब मुखअर्थ विचारतो तौ एकही संगकोहै ४ ॥

इतिएकसैग्यारहशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैबारहशब्द ॥

झगराएकबढ़ो जियजान । जो निरुवारै सो निरवान १ ब्रह्म बड़ाकीजहँतेआया । वेदबड़ाकीजिनउपजाया २ इहमनबड़ाकी जेहि मनमाना । रामबड़ाकी रामहिंजाना ३ भ्रमिभ्रमिकबिरा फिरैउदास । तीर्थबड़ाकीतीर्थकदास ४ ॥

झगराएक बढ़ोजियजान। जोनिरुवारै सोनिरवान १
ब्रह्मबड़ाकीजहँतेआया। वेदबड़ाकी जिनउपजाया २
इहमनबड़ाकीजेहिमनमाना॥ रामबड़ाकीरामहिंजाना ३
भ्रमिभ्रमिकबिराफिरैउदास। तीर्थबड़ाकीतीर्थकदास ४

हेजीवौ यह झगड़ा बढ़ोहै ताको विचारकरो जोकोईयहझगड़ा निरुवारै सोई निर्वाणकहे मुक्तहै सो कहैहैं भलाजौनब्रह्मजीव आपने मनते अनुभव करिलियोहै सोबड़ाहै कि जहांतेजविआयोहै लोकप्रकाश तेसोवड़ोहै सोब्रह्म बड़ानहीं है वा लोकःप्रकाश बड़ाहै जहांतेजीवआयोहै औ जौने वेदकी आज्ञाते नानाईश्वरमानिलियोहै सो बड़ाहै कि रामनाम तेवेदउपजाहै सोवड़ाहै अर्थात् रामनाम बड़ाहै जातेवेदभयोहै औमन बड़ाहै कि जाकोमनआपनेते बड़ा मान्यो है सो बड़ाहै अर्थात् जोमन वचनके परेहै सोई बड़ोहै जाकोमनमान्योहै औ श्रीरामचन्द्रकाहूकोउपदेश करैंनहीं आवैं श्रीरामचन्द्रके जाननवारे रामको बतायके जीवनको उपदेश कै उद्धारकेदेइहैं यातेरामदास बड़ेहैं औ तीर्थबड़ो कि जे तीर्थको बिधि सहित न्हाइहैं तेबड़े अर्थात् जे तीर्थकेदासबनेहैं तेबड़ेहैं सोहे काया के बीरो जीवौ भ्रमि भ्रमि काहे को उदास फिरौ हौ या बात को विचारौ ४ ॥

इतिएकसौबारहशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसौतेरहशब्द ॥

झूठेजानि पतिआहुहो सुनसंत सुजाना। घटहीमें ठगपूरहैमति खोउअपाना १ झूठेका मंडानहै धरती असमाना। दशौदिशा जेहि फंदहै जिउघेरेआना २ योगयज्ञ जपसंयमा तीरथव्रतदाना। नवधावेदकितावहै झूठेकावाना ३ काहूकोशब्दैफुरैकाहूकरमाती। मानबड़ाईलैरहैं हिंदू तुरुक दुजाती ४ बातकथैं असमानकी मुद्दति

नियरानी। बहुत खुदीदिल राखतेबूड़े बिनपानी ५ कहैं कबीर कासों कहौं सिगरोजगअंधा। सांचे सों भाजे फिरैंभूठे सोंबंधा ६॥

भूठेजनिपतिआहुहोसुनसंतसुजाना। घटहींमेंठग पूरहैमतिखोउअयाना १ भूठेकामंडानहै धरतीअसमाना॥ दशौंदिशाजेहिफंदहै जिउघेरेआना २ योगयज्ञ जपसंयमा तीरथव्रतदाना। नवधावेदकिताबहै भूठेका वाना ३ काहूकोशब्दैफुरैकाहूकरमाती। मानबड़ाईलै रहैंहिन्दूतुरुकदुजाती ४॥

हेसंतसुजान जो तुम सुजानहोउ तौ वा भूठेसों न पतिआहु मेरीबातसुनौ वहठगजोहै तिहारो अनुभव धोखाब्रह्मसो तेरेघटही मेंहै धोखामें परिआपनो स्वरूपजोसाहबको दासताको मतिखोउ १ धरतीमें कहेनीचेके लोकनमें औ आसमानमें कहेऊपरकेलोकनमें वही भूठे ब्रह्मका मंडानहै औ दशौंदिशाजेहैं छःशास्त्रऔ चारिवेद तिनमें वहीको फंदहै वहीके फंदते इनकोजो है यथार्थअर्थ सो कोई नहीं जानै है जीउको आनिकै घेरिलियोहै अर्थात् शास्त्रन वेदनमें अर्थ वदलिवदलि वहीभूठे ब्रह्मको उपदेशकैकैगुरुवालोग भुलाइदियोहै सबमें वहीधोखही ब्रह्मदेखावैहै २ योगयज्ञ जपसंयम तीर्थव्रतदान नवधा सगुणभक्ति औवेदकिताब इनसबमें भूठेकहे वही धोखाब्रह्मका वाना कहे विरदावली गुरुवालोग सबकी मनावैहैं कि यासाधनकीन्हे अंतष्करण शुद्धहोयहै तबब्रह्म को प्राप्तहोइहै ३ औ काहूको शब्दैफुरै है कहेवेद शास्त्र किताव कुरानपढ़िकै उनको अर्थ वदलि वदलिकै शास्त्रार्थकरिकै औरको हरावैहै उनहीको हिंदू तुरुक दूनों जाति मानबड़ाईकरैहैं औ वोई मान बड़ाई लैरहैहैं पंडित मौलवीलोग औकोई जेबैरागीहैं संन्यासीहैं फकीर हैं औलियाहैं तेकाहूको बेटालियो काहूको जागा दियो कहूं जलमेंहीठिगयो कहूं आकाशते उड़ि गये कहूं दश पांच

वर्ष कोठरी चुनाइकै आयेकहूं भूतभविष्यवर्त्तमान जानि लियो इत्यादिक नानाप्रकारकी करामात देखाइकै हिंदूतुरुकदूनोंदीनन सों मानवड़ाई लैके रहे हैं ४ ॥

बातकथैअसमानकी मुद्दतिनियरानी ।
बहुतखुदीदिलराखते बूड़ेबिनपानी ५

औपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र अल्लाह साकेतजाहूतके रहनवारे तिनकोतोजानैं नहीं हैं आसमानजोहै शून्यधोखाब्रह्मतौनेकीबातै कथैहैं कि हमहीं ब्रह्महैं औ हमहीं बेचूनबचिगूनबेसुबा बेनिमून हैं औ उनके जिन्दगीकी मुद्दति नियरेही है केतनौ यहैकथतकथतमरिगयेकेतो मरैंगे केतो मरेजायहैंयहनहीं विचारैहैं किजोखुदा होते ब्रह्महोते तौ मरिकैसे जातेसो बहुत खुदी दिलमें राखते हैं कि खुदाखाविंद हमहीं हैं औ जोबहुत खुबीपाठ होइ तौ यहअर्थ कि हमहीं सबते खूबकहे अच्छेहैं पैबिनापानी भूरहीमें बूड़िगये अर्थात् मरिहीगये वहजो ब्रह्मखुदाको ज्ञानकियो कि हमहीं हैं सो ज्ञानझूरही ठहरयो वामेंकुछु रसनठहरयो मरतमें वहरक्षातनकउनकियो जोकहो जे साहब खुदाकोजानै हैं तेकबजियेहैं तेऊतो मरिहीजायहैं तो तुमहीं रामायणमें सुने होउगे किजेतेभर प्रजाहैं जेतेभर भालु बांदरहैं तिनको श्रीरामचन्द्र सदेह आपने धामको लैगये औ श्रीहनुमान्जीको विभीषणको छोड़िगयेतेअब लों बनेहैं औ काकभुशुण्डि नारदअगस्त्य वसिष्ठजी रामोपासक हैं ते अबलों बनेहैं जोकहो अबकेतो रामभक्त को मरतदेखैहैंतौजे साधनमें हैं औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको नीकी भांति नहींजानै हैं औश्रीरामचन्द्रकी प्राप्तिनहीं भई तेशरीर छोड़िकै वहलोकको क्रमतेजाइहैं शरीरछोड़िकै फिरि अवतार लेइ हैं पुनि ज्ञानहोइ है तब जाइहैं औजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अच्छी भांतिजानि लियो है औतहांको प्राप्त होइगये हैं तिन को शरीर छोड़िबो ऐसो कि यहां गुप्त ह्वै गये पुनि कहूं प्रगटह्वै के उपदेश करिकैजी वनको तारयो वेसाहबको प्राप्तई हैं जब चाहै हैं तब साहबकेरहै

हैं जब चाहैं हैं तब प्रगटह्वैकै जीवनको उपदेश करिकै तारैहैंसो श्रीकबीरजी प्रगटई देखाइदियो कि काशीमें शरीरछोड़्योमथुरा मेंउपदेशकियो औ चारिउयुगउपदेशकरतई हैं औ मुसल्माननके अली शरीर छोड़्यो पुनि लौटिकै आयकै संदूकमें आपनीलास राखिकै ऊंटमें लादिकै लैगये सो द्वैपहारके बीचह्वै निकसे जाइ सोवहींमें भटकाइदियो सो अबलों वह संदूक अटकी है सो इन को चोलाछांड़िबोयहिभांति कोहै जैसे सांप केचुरिछांड़िदेइहैं ५॥

कहैंकबीरकासोंकहोंसकलौजगअंधा।
सांचेसोंभाजेफिरैंभूंठेसोंबंधा ६

सोकबीरजी कहैहैं किमैंकासोंकहों सिगरो संसार आंधरह्वै रह्योहै सांचेजे परमपुरुष श्रीरामचंद्र सर्वत्र पूर्णहैं तिनसों भागो फिरैहै उनको नहींदेखैहै औ भूंठा जोहै धोखा ब्रह्मताहीमें बंधि रह्यो है औ यथार्थ अर्थ में चारयो वेद छइउशास्त्र तात्पर्य कैकै परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वर्णन करै हैं सो मैं आपने सर्व सि-द्धांतमें स्पष्टकरिकै लिखिदियो है ६ ॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर
श्रीसीतारामचंद्रकृपापात्राधिकारिविश्वनाथ
सिंहजूदेवकृततिलकशब्दसमाप्तम् ॥

इति ॥

———०———

श्रीगणेशायनमः ॥

अथकहरालिख्यते ॥

—— ० ——

सहज ध्यान रहु सहज ध्यानरहु गुरुके बचन समाईहो । मेलो सिष्टचराचित राखो रहो दृष्टिलौलाईहो १ जो खुटकार वेगिन-हिंलागो हृदय निवारहु कोऊहो । मुक्तिकी डोरि गांठिजनिखैंचो तव बांझीबडरोहूहो २ मनुवेकहो रहै मन मारे खीझुवो खीझि न बोलैहो । मनुवोमीत मिताइ नछोड़ै कवहूं गांठि नखोलैहो ३ भूलौभोग मुक्तिजनि भूलौ योग युक्ति तन साधोहो । जोयहि भांतिकरहु मतवारी तामतके चितवांधोहो ४ नाहितौ ठाकुरहै अतिदारुण करिहै चालु कुचालीहो । बांधिमारिडारिसवलेहैं छूटीसव मतवालीहो ५ जबहीं सामतआइ पहूंचे पीठिसांट भल टूटैहो । ठाढ़ेलोग कुटुम्ब सवदेखै कहे काहुकिन छूटैहो ६ एक तो अनिष्ट पाउंपरि बिनवै बिनती किये नमानैहो । अनचिन्ह रहे कियोनचिन्हारी सोकैसे पहिंचानैहो ७ लेइ वोलाय वात नहिं पूछै केवटगर्भतनवोलैहो । जेकरि गांठिसवल कछुनाहीं निराधार ह्वै डोलैहो ८ जिन्हसम युक्तिअगमनके राखिन धरणि मांझघर डेहरिहो । जेकरे हाथपाउं कछुनाहीं धरणिलाग तनसे हरिहो ९ पेलनाअछत पेलिचलु बौरे तीरतीर कहटोवहुहो । उथले रहो परौजनि गहिरे मति हाथैकै खोवहुहो १० तरकै घाम उपरकैभूभुरि छांह कतहूं नाहिं पावहुहो । ऐसोजानिपसी-जहु सीजहु कसन छतरिया छावहुहो ११ जोकछुखेलकियोसो कीयोवहुरिखेल कसहोईहो । सासु ननँद दोउदेतउलाटन रह-हुलाज मुखगोईहो १२ गुरुभोढीलगोनभोलचपच कहानमानेहु मोराहो । ताजी तुरुकीकवहुं न साजेहु चढ़योकाठके घोराहो

ताल झांझ भलबाजत आवै कहरासबकोइ नाचैहो । जेहि रँग दुलहा ब्याहन आये तेहिरँग दुलहिनि राचैहो १४ नौकाअछत खेवै नहिं जान्योकैसे लागहु तीराहो । कहैकबीर रामरस माते जोलहादास कबीराहो १५ ॥

सहजध्यानरहु सहजध्यानरहु गुरुके बचन समाईहो । मेलीसिष्ट चराचित राखौ रहौ दृष्टि लौलाईहो १ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हेजीव तैं गुरुकेबचनमें समाइकै सहज ध्यान तैंकरु गुरुके बचन जो आगे लिखिआयेहैं किसुरतिकमलमें गुरूबैठे रकार मकार जपैहैं तामें समाइजाइ अर्थात्‌दल दलमें बाढ़िकै इक्कीसहजार छासै श्वासजे चलै हैं तिनमें तेतने रामनामजपै कौनी रीतिते जपै तामें प्रमाण ॥ श्रीकबीरजीको पद शतौयोग अध्यातमसोई । एकै ब्रह्मसकल घटब्यापै द्वितिया और न कोई ॥ प्रथमकमल जहँ ज्ञान चारिदलदेव गणेशकोबासा । रिधि सिधि जाकीशक्ति उपासीजपते होत प्रकासा ॥ षट दलकमल ब्रह्मकोवासा सावित्री सँगसेवा । षटसहस्र जहंजाप जपतहैं इंद्रसहितसब देवा ॥ अष्टकमलजहँ हरिसंग लक्ष्मीतीजो सेवक पवना । षटसहस्रजहंजापजपतहैं मिटिगो आवागवना ॥ द्वादश कमलमें शिवको बासा गिरिजाशक्तीसारँग । षटसहस्र जहँजाप जपतहैंज्ञान सुरतिलैपारँग ॥ षोडशकमलमेंजीव को जीवको बासा शक्तिअविद्याजानै । एकसहसजहँजापजपतहैं ऐसाभेदबखानै ॥ भवँर गुफा जहँ दुइ दल कमला परमहंसकर बासा । एकसहस जाकेजापजपतहैं करमभरमकोनासा ॥ सहस कमल में झिलमिलदशो आपुइ बसत अपारा । ज्योतिस्वरूप सकलजग ब्यापी अक्षयपुरुष है प्यारा ॥ सुरतिकमल परसत गुरुबोलै सहजजाप जपसोई । छासै इकइस सहसहि जपिलेबूझै अजपाकोई ॥ यहीज्ञानको कोईबूझै भेदअगोचर भाई । जो बूझैसोमनकापेखै कहकबीरसमुझाई १ औ यही राम नाम मन

वचनकेपरहै सोआगेकहिआयेहैं औरसवमनके भितरहै यही राम नामसबकेऊपरहै ताहीमेंमतौ तबहींपारैजाउगे औमेलौसिष्टकहे सिष्टजो संसार ताकोमेलिदेउ कहेछोड़िदेउ औचराचितराखोकहे सहजसमाधि आगेकहिआये हैं ताकोचरचितराखौ कहेवहीजानतरह्यो अथवा वाहीमें आपने चितकोचराकहे चलतराखौ दल दलमेंचलतरहै औ वहीमें आपने दृष्टिकी लौलगायराखौ कहेज्ञानदृष्टिते साहबको रूप देखतरहौ औ ऊपरकी दृष्टिको नासाग्रमें लगायराखौ सो सांसके निकसतमें रकार के पैठतमें मकारको निशिदिन जपतरहो सुरति याही में लगायराखौ या जीवसदाको श्रीरामचन्द्रहीकोहै सदासांससांसप्रति रामनामकोजपत रहैहैं ता मेंप्रमाण॥ रकारेणवहिर्यातिमकारेणविशत्पुनः।रामरामेतिवैमंत्रं जीवोजपतिसर्वदा॥ रकारकरिकैअग्निकोपवनकोसंयोगहोइहैततहांतेनादउठैहै अरुअकारकरिकै शब्दहोइहै औमकारकरिकैवाक्य होइहै यहमें सुरति लगाइराखै यहीपरम अजपाहै तामेंप्रमाण॥ रकाराज्जायतेवायू रकाराच्छब्दउच्यते। वाकूतत्त्वंचमकारेणरामएवेतिवैश्रुतिः॥ दूसरोकबीरकोपद॥ जागुरेजिवजागुरे अब क्यासोवजियजागुरे। चोरनकोडरवहुतरहतहै उठिउठिपहरेलागुरे। ररौकरिखोलुमसोकरभीतर ज्ञानरतनकरिखागुरे। ऐसेजो अजरायलमारै मस्तकीआवैभागुरे। ऐसीजागनिजोकोइजागै ता हरिदेइसोहागुरे। कहकवीरजागोईचहिये क्यागिरही वैरागुरे २ सो याजीव आपनो स्वरूप भूलिगयो १॥

जोखुटकारवेगिनाहिंलागौ हृदयनेवारहुकोहूहो।
मुक्तिकिडोरिगांठिजनिखैंचौ तबबाँस्कीवड़रोहूहो २

औ हृदयते काम क्रोधादिकनको निवारणकीन्ह्यो संयम नेमादिक करिकै औ मनमायाके खूट करनवारे ऐसे जे साहबतिन में वेगिजो न लग्यो मुक्तिकीडोरिकी गांठिकहे चितआचितकी गां-

ठि जनिखैंचौ कहे न छोरयो तौरोहजो मोहहै सो तुमको बांभी कहे फँदायलेइहै २ ॥

मनुवैकहौरहैमनमारेखिझुवाखीझिनबोलैहो ।
मनुवोमीतमिताईनछोड़ैकबहूंगांठिनखोलैहो ३

जाके मनमीत होय सो मनुवा कहावैहै कैसे जैसे जाके धन होइ है सो धनिका कहावै है जाके धननहीं होयहै सो निर्द्धनिया कहावैहै सोमन जीवतेभयोहै ताते मनुवाजो जीवहै ताकोकहौ आपनो मनमारेरहै खिझुवाजो काम क्रोधादिक मनके खिझावनवारे तिनकी ओर सपनहूं नाहेरै हेसंतलोगो या बातकी यतन करो काहेते मनुवा जो जीवहै मनमीतकी मिताई न छोडैगो औ कबहूं जडचेतनकी गांठि न खोलैगो ताते साहबकोजानौ जाते मनकी मिताई जीवछांडै ३ ॥

भूलौभोगमुक्तिजनिभूलौ योगयुक्तितनसाधौहो ।
जोयहिभांतिकरहुमतवारीतामतकेचितबांधौहो ४

सोहेसाधोजीवनतेकहो कि नानाविषयके जेभोगहैं ताकोभुलाइदेउ औ मुक्तिको जनिभूलौ औ जोसहजसमाधि रूप योगप्रथम तुकमें कहिआयेहैं ताकी युक्ति तनमें साधौ कहे करौ औनाना मतमें परिकै यहिभांति की मतवारी जोकरौहो कि आत्मैमालिक है हमहीं ब्रह्म हैं याही मनमें चितको बांधौहो सो न बांधौ जो बांधैगे तौ ऐसो होयगो सोकहैहैं ४ ॥

नहिंतोठाकुरहैअतिदारुणकरिहैचालकुचालीहो ।
बांधिमारिडारिसबलेहै छूटीसबमतवालीहो ५

तौ तिहारे शरीरको ठाकुर जोमनहै सो अतिदारुणहै औ याकी नीचगतिहै सोतिहारी चालकुचाली कैदेइगो कहे विषयनमें लगायकै संसारही ओरलगाय देयगो तौने संसारमें जबतैंमरैगो तबतोको यमदूत बांधिकै पनाहिनसोंमारिकै डारिलेइगो कहे जो

जो तैं कर्म करै है सोसबनरकनमें भुगताइ लेइगो तबसबमत-
वाली तेरीछूटि जाइगी ५ ॥

तबहींसामतआइपहूंचे पीठिसांटभलटूटैहो ।
ठाढ़ेलोगकुटुम्बसबदेखैकहेकाहुकिनछूटैहो ६

जब यमराजके सामतजे दूत तेजब पहूंचैंगे तबसांटसोंभल
पीटैंगे मारत मारत केतनौ सांट टूटि जायँगे औ कुटुम्बके लोग
सबठाढ़े देखैंगे सोहेमूढ़ तैं यानहीं विचारैहै किसबछूटैकोपुकारै
है काहूके कहे काहे नहीं छूटैहैं जेगुरुवालोग बताय कुमार्ग में
लगायोहै ते यमदूतनसे काहे नहीं छड़ाइ लेइहैं ६ ॥

यकतोअनिष्टपांयपरिबिनवैबिनतीकियेनमानैहो ।
अनचिन्हरहेकियोनचिन्हारीसोकैसेपहिचानैहो ७

एकजे साहबहैं सबके रक्षक तिनते ये अनिष्टरहे कहेउनको
इष्टन मानतरहे औ वहांयमदूतनसों पांयपरिपरि बिनवैहै सबदे-
वतनते बिनवैहै वे बिनतीहू कियेनहींमानैहैंकाहेते कि दयाहीन
हैं औसाहबजे दयालु छड़ावनवारे तिनसों अनचिन्हार रहे चि-
न्हारी न कियो सो कैसे अब पहिचानै भावयहहै कि जो अजहूं
स्मरणकरोतौसाहब छड़ायहीलेइगो ७ ॥

लेइबुलायबातनहिंपूछैकेवटगर्वतनबोलैहो ।
जेकरीगांठिसबलकछुनाहींनिराधारह्वैडोलैहो ८

औ केवट जेगुरुवालोगहैं तेतबतो गर्वकहे अहंकार तनमेंकैके
तुमको बोलाय आपनेमतमें बोलाय लीन्हेनि अब जब यमदूत
मारनलगेतबतुमको बातनहींपूंछैहैं गुरुवालोगसोजाकेसबलकहे
खर्च राम नामरह्यो सोपार भयो औ जाके राम नाम सबलकछु
नहीं रह्योसो निराधार कहे रक्षक रहित यमपुरमें डोलैहै अथवा
निराधार जो ब्रह्म ताहीमें डोलैहै ८ ॥

जिनसमयुक्तिअगमनकैराखिनघरणिमांझधरेउहरिहो ।

जेकरेहाथपाउँकछुनाहीं धरनलागुतनसेहरिहो ९

जौनेस्त्री पुत्रादिकनते आगे न नानायुक्ति कैकै पालन कियो है तौन घरणि कहे स्त्री शरीर छूटे डेहरी भरिजायहै आगे नहीं जायहै सम जो पाठहोय तौ जिनका अपने सम वनाय राखिन तौनस्त्री डेहरीलौं पहुंचाई धुनिते या आयो किपुत्र चितालौंजा-यहै सो जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं कहे जेकरे हाथपाउँ नहीं है ऐसो जो जीवात्मा ताको जव यमदूत धरनलागु तव तन में सेहरि ह्वैआवैहै तनविकलह्वैजाइहै वेकोऊ नहीं सहायकरैहैं ताते साहवको जानौ जोकहो यमदूतै कैसे धरैंगेतौलिंग शरीरते ९ ॥

पेलनाअक्षतपेलिचलुबौरेतीरतीरकाटोवहुहो ।
उथलेरहौपरौजानिगहिरेमतिहाथेकैखेवहुहो १०

सो कवीरजी कहैहैं कि पेलना जो रामनाम सो अक्षतबनैहै ताको संसार समुद्रमें पेलिकै हेजीव संसारसमुद्र उतारिजातीर तीरकहे नानामतनको का टोवत फिरै है उथले में रहौ अर्थात साहव को ज्ञान कीन्हेरहौ गहिर जो धोखा ब्रह्म कठिन तामें न जाउ वहांगये तुम्हार हाथहुको जीवत्व सो जातरहैगो ताते तुम न खोवौ उथले कहे साहव ज्ञान जानौ १० ॥

तरकैघामउपरकैभूभुरि छांहकतहुंनाहिंपावहुहो ।
ऐसोजानिपसीजहुसीजहुकसनछतरियाछावहुहो ११

तरको घाम कहे नानाकर्म जे नीकौ नागा कियो ताकी जो ताप संसारमें ऊपरकी भूभुरिकहे नरकमेंगये तौवहीं तपैहै स्वर्ग में गये तौ गिरनकी भय वनी है काहूको अधिक ऐश्वर्य देख्यो तो ईर्षा वनी रहैहै कि ऐसोकर्म हम न किये येदोऊ तापमेंसा-हवको ज्ञानरूप छांह कतहूं नहीं पावैहै ऐसो तुम जानतैहौपै वहीमें पसीजो हौ कहे श्रम करौहौ पसीना चलैहै औ छीजौहौ साहवकी ज्ञानरूप छतरिया काहेनहीं छावहुहौ ११ ॥

जोकछुखेलकिओसोकीयोवहुरिखेलकसहोइहो ।

सासुननँददोउदेतउलाटनरहहुलाजमुखगोईहो १२

जोकछु खेल कियो कहे जोकछु कर्म कियो सोई भोग कियो अथवा जौन खेल मायाब्रह्मको साथकरिकै कियो सोईफल भोग कियो सो विना रामनाम लीन्हे इनको छोड़िकै फेर खेल कियो चाहौ मुक्तवाला सोकैसे होइगो सासुजोहै मूलप्रकृति औननँदि जोहै विद्या माया सो ये दूनों तुमको उलाटनकहे उलटिकै जवाब देइहैं कि विद्या माया करिकै मुमुक्षुह्वै मुक्तिकीइच्छा करत रह्यो सोअबहम तुमहीं को लपेटि लियो तुम हमको त्यागतरह्यो है अब नहीं छूटि सकौहौ याजवाब सुनि तुमलाजिकै मुखगोइ रहौहौ लाचारह्वै छूटि नहीं सकौहौ १२ ॥

गुरुभोढीलगोनभोलचपच कहानमानहुमोराहो।
ताजीतुरकीकबहुंनसाजेहु चढ़ेनकाठकेघोराहो १३

जोगुरुवालोग तुमको उपदेशकियो तेगुरु ढील ह्वैगये काहेते कि जौन जौन उपासनाकी गोन तुम्हारे ऊपर लादि दियो तेते देवता लचपच ह्वैगये कहेउनके छुड़ायेते नाछूटे संसारमें परेजाय देवता के फुरते न उत फुर होइहै जब देवतै न फुरे तब गुरुवा ढील परिगयो सो कबीर जी कहैहैं कि जो मैं कहतरह्यो सो तुम नामान्यो कि रकार मकार जपौ याहीते छूटौगे ताजी तुरकीजो रकार मकार ताको कबहूं न साज्यो कहेकबहूं रामनाम नालियो जो साहबके पास लैजाय काठको घोराजोहै मनजड़ तामें चढ्यो सो कूदिकै संसार गाड़में डारिदियो जो ताजी तुरकी रामनाम तामेंचढ़त्यो तौ तुमको कूदिकै साहबके पास पहुंचावतो १३ ॥

तालझांझभलबाजतआवै कहरासबकोइनाचैहो।
जेहिरँगदुलहाव्याहनआये तेहिरँगदुलहिनिराचैहो १४

गुरुवालोगन की ओठ झांझहै औ जीभ तालदेइहै वहीब्रह्महीमें तालदेयहै कहे नानावाणी करिकै नानामतन करिकै वही ब्रह्ममें चुवावैहै अथवा जाको जौनउपासना बतावै है ताकोतौन

इष्ट देवताहै ताहीको ब्रह्म कहैहैं ताहीको सबकुछ कहै हैं उहै ता-लको मानदेइहैं अर्थात् सब शास्त्रको अर्थ वाहीमें पर्यवसानकरै है और गुरुवनमें लगिकै सुखवाचकजो कतौनहरागयो कहेपरम पुरुष श्री रामचन्द्रको भूलिगये संसार में सबजीव दुखियाह्वै नाचनलगे कोईरजोगुणी उपासनामें राचतभये कोई तमोगुणी उपासनामें राचतभये कोई सतोगुणी उपासनामें राचतभये जेहिरंग दुलहा जेउपासनावारेजीव व्याहनआये कहे गुरुवालोग जौनरंग में लगायो तेहि रंगमें दुलहिनि बुद्धि रचतभई १४ ॥

नौकाअक्षतखेवैनहिंजान्यो कैसेहुलागहुतीराहो ।
कहैकबीररामरसमाते जोलहादासकबीराहो १५

अक्षत नौका जो रामनामहै ताको खेवै न जान्यो कहे जौने विधिते संसार सागरते पारकैदेइहै सोविधि राम नाम जपिबेकी नाजान्यो सो कैसेसंसारसागरते पारह्वैकै तीरलागौगेसो श्रीकबीरजी कहैहैं किजोलहाकहे जो कोई रामरस लहाहै अर्थात् रामरसपाय मातोहै सोई संसार सागरको पार पायोहै सोईकायाको बीर जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको दासभयोहै जो मातेपाठहोय तौयाअर्थ है किकबीरजी कहैहैं किजातिकोमैं जोलहा सोराम के रसमें मातेते मैं दासकबीर कहवावनलग्यो पार्षदरूप जोहंस स्वरूपयाही शरीरमें पायगयो संसारको पारह्वैगयो परमपुरुषश्री रामचन्द्रको दासह्वैगये तुम ब्राह्मणादिक जोरामरस में मतौगे तौकैसे संसारसागरते नापारहोउगे पारहीह्वैजाउगे कबीरजीरामरसमें मतिकै बचिगयो तामें प्रमाण ॥ सायरबीजकको ॥ हमन मरैंमरिहैसंसारा । हमकोमिलाजियावनहारा ॥ अबनामरोमोर मनमाना । तेईमुवाजिनरामनजाना ॥ साकतमरैसंतजनजीवै । भरिभरिरामरसायनपीवै १५ ॥

इतिपहिलाकहरासमाप्तम् ॥

अथदूसराकहरा॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिकहृदयाबंदिनिवारोहो १ अटपट कुम्हराकरैकुम्हरियाचमरागाउनबाचैहो। नितउठिकोरियाबेटभरतुहै छिपियाआंगननाचैहो २ नितउठिनौवानावचढ़तहै वरही बेरावारिउहो। राउरकीकछुखवरिनजान्योकैसेझगरनिवारिउहो ३ एकगांवमेंपांचतरुणिबसैंतिनमेंजेठजेठानिहो। आपनआपनझगर पसारिनि प्रियसोंप्रीतिनशानिहो ४ भैंसिनमाहँरहतनितबकुला तकुलाताकिनलिन्हाहो । गाइनमाहँबसेउनहिंकबहूं कैसेकैपद चीन्हाहो ५ पथिकापंथबूझिनहिंलीन्हिोमूढ़हिमूढ़गवाराहो। घाट छोड़िकसऔघटरेंगहु कैसेलगवेहुपाराहो ६ जतइतकेधनहेरिनि ललइचकोदइतकेमनदोराहो। दुइचकरीजिनदरनपसारिहु तव पैहौठिकठोराहो ७ प्रेमवानएकसतगुरुदीन्ह्यो गाढ़ोतीरकमानाहो। दासकबीरकियोयहकहरा महरामाहिंसमानाहो ८ ॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिकहृदयाबंदिनिवारोहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेजीव तैंतो माणिकहै माणिकलाल होयहैं सो तैं कहां संसारमें अनुराग करिकै लालह्वैरहे साहब में अनुरागकरि लालहोइ गुरुवालोगनकीबाणीतैं मतिसुनुमतिसुनु आपनेहृदयकी जो संसाररूपीबंदि ताको निवारु १ ॥

अटपटकुम्हराकरैकुम्हरिया चमरागाउनबाचैहो।
नितउठिकोरियाबेटभरतुहैछिपियाआंगननाचैहो २

काहेते कि अटपट कुम्हरा जोयामनहै सो कुम्हरियाकरैहैकहे नानाशरीररचैहै जैसे कुम्हार नानाबासन बनावैहै ऐसेयामन नानाशरीर रचैहै सो शरीर जो गाउँहै तौन चमरा कालकेमारे नहींबचैहै मन रचतजाइहै शरीर कालखातजाइ औ कोरियाजे मुनिलोगहैं सत रज तम ग्रन्थप्रवर्तनवारे ते बेट भरतिहैं कहेबनावत जाइहैं तेई ग्रन्थनकोलैकै छिपिया जे गुरुवालोगहैं तेआं-

गन आंगननाचैहैं अर्थात् चेलाहेरतफिरै हैं नानामतमेंसीकै नाना मतमें लगावतफिरैहैं २ ॥

नितउठिनौवानावचढ़तहै बरहीबेराबारिउहो।
राउरकीकछुखबरिनजान्यो कैसेकैझगरनिवारिउहो ३

नौवा जो संन्यासी जौन आपनो मूड़ मुड़ावैहै आनौ को मूड़ि कै चेला बनाइलेइहै सो वेषमात्र जोनावतामेंचढ़िकै संसारसमुद्र पारहोवाचाहैहै औ नाना देवतन प्रतिपाद्यजेग्रंथ तेईहैं बरही कहे बोझा ताही को बेरा रचिबारी जे नानाउपासना वारेहैं तेसंसार समुद्रको पारहोवा चाहैहैं राउरजो परमपुरुष पर श्रीरामचंद्रको घरताको जानतई नहीं या झगरा कैसे कै निवारण होइ साहब ते तो चिन्हारिनि नहीं है कबहूं माया पकरि लेइहै कबहूं ब्रह्म पकरि लेइहै कबहूं मन पकरि लेइहै इत्यादिक जेईपावै हैं तेई धरि लेइहैं सो कैसे कै झगड़ा निवारणहोइ ३ ॥

एकग्राममेंपांचतरुणिबसैं तिनमेंजेठजेठानीहो।
आपनआपनझगरपसारिनि प्रियसोंप्रीतिनशानीहो ४

एकगाउँ जो यासंसारतामें पांचतरुणिजेज्ञानेंद्रीतेबसैहैं ज्ञानेंद्रीते कर्मेन्द्रिउ आइगईं तिनमें जेठमन जेठानी मायाहै सोई दशौइंद्री आपनआपन झगरकहे अपनेअपने विषयओर मनको खैंचतभईं सो मनकेअधीनहै जीव सोऊ वहीकत चलोगयो परम-पुरुष पर जे श्रीरामचंद्र प्रीतम हैं तिनसों प्रीतिनशाइगई ४ ॥

भैंसिनमाहँरहतानितबकुलातकुलाताकिनलीन्हाहो।
गाइनमाहँबसेहुनहिंकबहूंकैसेकैपदचीन्हाहो ५

सोभैंसी जे दशोइंद्रीहैं तिनमेंबकुला जोमन सोरहैहै जैसे भैं-सी जबजलमेंपरैहैं तब बकुला वाकेऊपरबैठरहैहै जोमछरी भैंसि-नके किलनीखावेको आईसो बकुलाखायलीनो ऐसीइन्द्री जब विषयओर चली तब मनहीं भोगकरै है इंद्रीद्वारा ताते मनको बकुला कह्योहै सो हेजीव तैंतो तकुलाहैकहे ताकनवारोहै काहे

न ताकिलीन्हा औ साहब के गावनवारे जे संत तिन गाइन में कबहूं बस बैन कियो परम पुरुष पर श्री रामचन्द्र को पद कैसे कै चीन्हो ५ ॥

पथिकापंथबूझिनहिंलीन्हो मूढ़हिमूढ़गवांराहो ।
घाटछोड़िकसऔघटरेंगहुकैसेकैलगिहौपाराहो ६

साहब जे श्रीरामचन्द्र तिनके पंथके चलनवारे जे पंथीसंत-जन तिनसों तौपंथ बूझि न लीन्हेउ मूढ़ जे गुरुवालोग तिनकी वाणीमें परिकै मूढ़ह्वैगयो गवांर ह्वैगयो सो साहबके पहुँचबेको जो घाट ताको छोड़ि औघट जो मायाब्रह्म तामें चलौहौ सो कैसेकै पारलागौगे ६ ॥

जतइतकेधनहेरिनिललइचकोदइतकेमनदौराहो ।
दुइचकरीजिनदरनपसारेहुतहँपैहहुठिकठौराहो ७

जतइतके कहे जिनके जतवा चलै है सो जतइत कहावै है सो धोखा ब्रह्म है जो सबको दरि डारै है सबको मिथ्यै मानै है तहां ललइच जे लालची हैं ते धन जो मुक्ति ताको हेरिनि सो उहौं न पाइन तब कोदइत जे गुरुवालोग जिनके नाना उपासना रूपको दौराजाय है तिनके इहांगये कि इहां मुक्तिधन मिलैगो सो कबीर जी कहै हैं कि जतइत के तो धनको ठिकानै न लग्यो तौ कोदइत जे माटीके दुइ चकरी बनाइ दरनापसारे हैं तहां ठीकठौर पैहौ अर्थात् न पैहो साहब को जानौगे तबहीं ठिकान लागैगो ७ ॥

प्रेमबाणयकसतगुरुदीन्हो गाढ़ोखैंचिकमानाहो ।
दासकबीरकियोयाकहरामहरासाहिंसमानाहो ८

श्री कबीरजी कहैहैं कि हेजीवो तुमयामें पार न जाउगे जब ऐसो करौ तब पारै जाउगे प्रेमको तो बाण करु औसतगुरु जब ज्ञान दीन्होहै ताको कमान करि गाढ़ोखैंचि साहबरूपजोनिशा-

ना है तामें प्रेमबाण मारु अर्थात् प्रेम लगाउ हे साहब को सदा को दास कायाकेबीर जीव या कहरा में संसार को कहर है सो कहाकियोहै महरामाहिं समानाकहे जेसाहबके महरमी हैं तेही में समाय अर्थात् उनहींको सत्संग करु काहूगाढो खैंचि कमाना यहपाठ है अथवा हे कबीर कायाके बीरजीव मनमाया ब्रह्मके दास ह्वै यह संसारतें किये सोकहराकहे कहर करनवारो है सो तें आपनो रूपतौ विचारु कहांमाया दासह्वै रहै है तैं महराकहे मायाके हरनवारे जेहैं साध तेही माहिं समाना कहे तैं तिनके बरोबर है जो तैं आपने स्वस्वरूपको जानै है ८ ॥

इतिदूसराकहरासमाप्तम् ॥

—०—

अथतीसराकहरा ॥

रामनामको सेवहुवीरा दूरिनहींदुरिआशाहो। और देवका पूजहुबौरेईसबझूठीआशाहो १ उपरके उजरे कहभोबौरे भीतर अजहूं कारोहो। तनकोवृद्धकहाभोबौरे ईमन अजहूं बारोहो २ मुखकेदांतगयेकाबौरे अंदरदांतलोहेकेहो। फिरि फिरि चनाचवाटविषयके काम क्रोध मदलोभेहो ३ तनकीशक्ति सकल घटि गयऊ मनहिंदिलासादूनीहो। कहैकबीर सुनोहोसंतो सकल सयानपऊनीहो ४ ॥

रामनामकोसेवहुबीरा दूरिनहींदुरिआशाहो।
औरदेवकापूजहुबौरे ईसबझूठीआशाहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे कायाके बीरौ जीवो रामनाम को सेवनकरो रामनाम दूरिनहीं है तुम्हारी आशादूरिहै और देवको हेबौरेका पूजहुहौ इनकी आशा सब झूठी है १ ॥

उपरकेउजरेकहभोबौरेभीतरअजहूंकारोहो।
तनकोवृद्धकहाभोबौरेयामनअजहूंबारोहो २

मुखकेदांत गयेकाबौरेअंदरदांतलोहेकेहो ।
फिरिफिरिचनाचबाउविषयकेकामक्रोधमदलोभेहो ३

हे बौरे जो ऊपर बहुत ऊजरबनेरह्यो बहुत आचारकियो तौ कहाभयो भीतर तो अजहूंकारियैहो औतनकी बड़ीवृद्धतामान्यो तौ हेबौरे कहाभयो मनतो अजहूंबारो कहे लरिकवा बनाहै वही चालचलैहै २ औ मुख के दांत गिरिगये तौ हेबौरे कहाभयो अंतःकरणके जे विषयके चना चाबनवारे ऐसे लोहेके दांततो गावे न भये काम क्रोध मद लोभ बनेनहैं मिटबै न भये ३ ॥

तनकीशक्तिसकलघटिगयऊमनहिंदिलासादूनीहो ।
कहैकबीर सुनोहो संतौ सकलसयानपऊनीहो ४

हे बौरे तनकी सकलकहे रूप विषय करनवाली सामर्थ्य घटिगई औ संगी मरिगये पै दिलकी दिलासा जो तृष्णा सोतो घटिबै न भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे संतो तुमसुनो या सब जीवनकी सयानपऊनी है अर्थात् तुच्छ है विना रामनाम के जाने जननमरन न छूटैहै तामें प्रमाण कबीरजीका ॥ जोतैंरसनारामनकहिहै । उपजतविनशत भरमतरहिहै ॥ जसदेखीतरुवरकीछाया । प्राणगये कहुकाकी माया ॥ जीवतकछु न कियेपरमाना । मुयेसर्मकहुकाकरजाना ॥ अंतकालसुखकोउनसोवैं । राजारंकदोऊमिलिरोवैं ॥ हंससरोवरकमलशरीरा । रामरसायन पिवैकबीरा ४ ॥

इतितीसराकहरासमाप्तम् ॥

—— ० ——

अथचौथाकहरा ॥

मोहन मेरोरामनाम मैंरामहिको बनिजाराहो । रामनामको करौंबनिजमैंहरिमोराहटवाराहो १ सहसनामकोकरौंपसारा दिनदिनहोतसवाईहो । कानतराजूसेरतिनपौवा ढहकिनढोलबजा·

ईहो २ सेरपसेरीपूराकरिले पासंगकतहुंनजाईहो । कहैकबीरसु-
नोहोसंतो जोरिचलेजहडाईहो ३ ॥

ओढ़नमेरोरामनाममैंरामहिंकोबनिजाराहो ।
रामनामकोकरौंबनिजमैंहरिमोराहटवाराहो १

श्रीकबीरजी कहैंहैं कि पाखंडीलोग जेहैं ते कहैंहैं कि हमारो
ओढन रामनामही है अर्थात् रामनामहीके ओढरते ठगिलेहि हैं
परमतत्त्व जोरामनामहै तौनेके ठगिबेको ओढरवनाये हैं काहेन
मारेपरें कौनी तरहते कि बड़े बड़े टीका दैलिये मालाजपै हैं न
रामनाम को तत्त्वजानैं न अर्थजानैं न जपैके विधिजानैं न ना-
मापराधदश जानैं औ या कहै हैं कि हमरामनामको बनिजारा
हैं औ रामनामकी वनिजकरै हैं औ हरिजेहैं तेई हमारे हटवारे
हैं कहे दलालहैं अर्थात् हमउनहीं केद्वारा सबरामनामको सौदा
लेहिहैं उनकी प्रेरणाते हम मन्त्रदेइ हैं जो वाके भागमें होयगो
सो होयगो हमारो पैसा धोतीतो हाथको न जायगो जोकोई कहै
है कि शिष्य परीक्षाकैलेउ तो या कहै हैं कि कहांको बखेड़ा ल-
गायो है हम मंत्रदैदियो वह जोचाहै सोकरै मुक्तिहोइजाइगो १॥

सहसनामकोकियेपसारादिनदिनहोतसवाईहो ।
कानतराजूसेरतिनपौवाडहकिनढोलबजाईहो २

औ या कहै हैं कि एकनामकेलीन्हेते सर्वकर्म छूटिजाइ हैं हम
तो हजारन नामको पसाराकरै हैं कहे हजारन नाम लेइहैं कर्म
कहां रहैंगे सब छूटिजायँगे हमारे सुकर्म दिन दिन सवाईबढैंगे
सो दोऊ गुरुचेलनको ऐसो हवालहै चेलनके कानजेहैं तेईफेर-
हातराजुवाहैं औ तीनपावको सेरहै अर्थात् त्रिगुणात्मक मन है
सो मनवचन के परे जो रामनाम सो गुरुवालोग तौलि दियो
अर्थात् मंत्रदियो डहकिनढोलवजाई कहे चेलालोग चारिउओर
कहिआये कि हम मंत्र लियेहै कै डहकाइगये ढोलवजाइ २ ॥

सेरपसेरीपूराकरिलैपासँघकतहुँनजाईहो।
कहैकबीरसुनोहोसंतोजोरिचलेजहडाईहो ३
गुरुवनके उपदेशतेसेरजोहै मनपसेरीजोहै ब्रह्मज्ञान सोपूराक रिलै अर्थात् सर्वत्रब्रह्मको पूर्णमानै परन्तु पसंघा जो मूलाज्ञान सो कतहूं न जायगो वाहीमें परिकै अन्तकालमें जहडायके कहे डहकाय चले जायँगे ३ इतिचौथाकहरासमाप्तम् ॥

अथपांचवांकहरा ॥

रामनामभजुरामनामभजु चेतिदेखुमनमाहींहो। लक्षकरोरि जोरिधनगाड़ेचले डोलावतबाहींहो १ दाऊदादाऔपरपाजाउइ-गोड़ भुइँभांड़ेहो।अँधरेभयेहियोकीफूटी तिनकाहेसबछांड़ेहो २ ईसंसारअसारकोधन्धाअंतकालकोइनाहींहो। उपजतबिनशत बारनलागै ज्योंबादरकीछाहींहो ३ नातागोताकुलकुटुम्बसब तिनकी कवनिबड़ाईहो। कहकबीरयकरामभजेबिन बूड़ी सब चतुराईहो ४ ॥

रामनामभजुरामनामभजुचेतिदेखुमनमाहींहो।
लक्षकरोरिजोरिधनगाड़ेचलेडोलावतबाहींहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे मूढ़ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको राम नामताको भजुभजुभजु सेवा धातुहै सो याही रामनामको सेवा करु रामनाम मन वचनके परेहैं सो आगे लिखि आयेहैं आपने मनमें चेतिकहे बिचारिकै देखु तो लाखन करोरिन धन जोरिके गाड़ि गाड़ि धरयो जब मरण लाग्यो यमदूत लै जान लगे तब बाहीं डोलावत चलौहो कि वे धन हमारे नहीं हैं १ ॥

दाऊदादाऔपरपाजा उइगाड़ेभुइँभांड़ेहो।
अँधरेभयेहियोकीफूटी तिनकाहेसबछांड़ेहो २

जोकहो वा जन्मकब देख्योहै तो तेरे दाऊ दादा औपरपाजा वे भुइँ में केतो भांड़ गाड़िगाड़ि मरिगये हैं उनहीं के साथ कबै धन गयो है सो तैं आंधरे ह्वैगये तेरेहियोकी फूटिगई हैं जैसे सब धन छोड़िके वे चले गयेहैं धनको मालिक तुहीं भयो ऐसे तुहूं धन छोड़िके चलो जायगो तेरो धन औरहीको होयगो तेरे हाथ कछु न लगैगो २ ॥

यासंसारअसारकोधंधाअंतकालकोइनाहींहो ।
उपजतविनशतवारनलागैज्योंबादरकीछाहींहो ३

या संसार असार कहे झूठहीको धंधाहै अंतकालमें कोईआपनो नहींहै जो कहो कि हम जावही न करैंगे बनेहीरहैंगे तो शरीरके उपजत विनशतमें वार नहीं लगै है जैसे बादर की छाहीं भई औ पुनि मिटिगई ३ ॥

नातागोताकुलकुटुम्बसबतिनकीकवनिबड़ाईहो ।
कहकबीरयकरामभजेबिनबूड़ीसबचतुराईहो ४

बड़े गोतके भये बड़ेकुलके भये बड़ीबड़ी जातिके नात भये तिनकी कौन बड़ाई है ये तो सब शरीरही के हैं जब तेरो शरीर छूटि जायगो तब तेरो शरीरहीं कोई न छुवैगो ताते ये सबनात गोत जबभरशरीर बनो है तबहीं भरेके हैंशरीर छूटे ये सब छूटि जाइ हैं इनकी कौन बड़ाई है सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि एकजे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं तिनके राम नामके भजे कहे सेवा किये बिन सब चतुराई तिहारी बूड़िजायगी नरकहीको जाउगो जेजे आपनी आपनी कल्पना ते नानाउपासनाकैलियेहो तिनते चाहोहो कि हमारी मुक्ति ह्वैजायगी ते एकहू काम न आवैगोतामें प्रमाण श्रीगोसाईं जी को पद॥ रामकहत चलुरामकहतचलु राम कहतचलुभाईरे । नाहिंतोभवबेगारिमेंपरिहौपुनिछूटबअतिकठिनाईरे । बांसपुरानासाजुसबअटखटसरलत्रिकोणखटोलारे ।

हमहिंदिहलकरिकुटिलकरम चँदमंदमोलविनडोलारे।विषमकहा रमारमदमातेचलैनपायवटोरेरे। मंदवेलंदअभेरादलकनिपाईदुख भकभोरेरे। कांटकुरायलपेटनलोटन ठामहिंठामवभाऊरे। जस जसचलियदूरिनिजततसतसवांसनभेंटलकाऊरे। मारगअगमसंग नहिंसंबलनामगामकरभूलारे। तुलसिदासभवआसहरहुअवहो हुरामअनुकूलारे १ रामकहतचलुरामकहतचलुरामकहतचलु भाईरे ॥ अवगोसाईंजी जविन को उपदेशकरैहैं इहांराम कहतचलु तीनवारकह्यो सो मुक्त मुमुक्षु विषयी तीनों जीवन को कहैहैं सो गोसाईंजी अपनीरामायणमेंकह्योहै चौ० ॥ वि- षयीसाधकसिद्धसयाने। त्रिविधजीवजगवेदबखाने ॥ रामस- नेहसरसमनजासू। साधुसभावडआदरतासू ॥ सिद्धविरक्तमहा- मुनियोगी। नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी ॥ याते यह कि रामविना मुक्तहुनकी गति नहीं है अरु भाई जो कह्यो सो जीवके नातेकहै हैं कि हम सब यतीहैं अरु यहां एकवचन कहै हैं सो प्रति जीव सो पृथक् कहै हैं कि हे भैया या दुःखमार्ग त्यागिदेउ यामें दुःख पावोगे ताते राम कहतेचलो ॥ नाहिंतोभववेगारिमेंपरिहौ पुनि छूटब अतिकठिनाईरे ॥ नहीं तो भव जो संसारहै ताके वेगारिमें परोगे वेगारिपरिबो कहाहै जाते संसारते कबहूं न उद्धार होइ ऐसेकर्ममाया तुमको धरिकै करावैगी जोशरीररूप डोलाको गु- मानकियेहोहु कि डोलाचढ़ि वेगारि न परैंगे तोधरनवारो सम- र्थहै डोला में चढ़ेहू धरि लेइगो तब कठिन ह्वैजायगो जैसे फिरङ्गी म्याना पालकिनवालेको वेगारि पकरै है तव कोई कहे हैं कि येतो वड़े आदमी हैं इनको सड़क खोदाना चाहिये तब अंगरेजलोग कहै हैं कि हमारे इहांदस्तूरहै म्याना चढ़ेजाइ वही में फरुहा कुदारी धरेजाइ सो पालकिउ चढ़े वेगारि धरिजाइ है औ डोलहूतिहारो जर्जरहै सो कहैहैं ॥ वांसपुरानसाजुसबअट- खट सरलतिकोनखटोलारे। हमहिं दिहलकरि कुटिलकरमचँद मंदमोलविनडोलारे ॥ प्रारब्ध जो है सोई पुरान वाँस है काहे

ते कि संचित तो प्रारब्धमें है तेहिते महापुरान है औ सबसाज अटखट कह्यो सोआठ औखटकहे चौदह साजहैं शरीररूपी डोलाकी सो कहै हैं त्वचारुधिर मांस अस्थि मेद मज्जाशुक्रकेशरोम नस नख दंत मल मूत्र सो त्वचा डोलाकोवोहार है रुधिर वोहार को रंग औमांस वोहारकी तुई है औ अस्थिडोलाको काठहै औमेद मज्जाडोलाको तकिया बिछौनाहै औ नस रसरी है औ नखलोहे की पतुरी है औ दांत खीला है औ मलमूत्र लघुतहै औ घुनको कीरा है काहे ते कि कीरनहूमें पानी होयहै अथवा साजु सब अटखट जो यह पाठ होइ तौ पुरजा पुरजा जोरै हैं यही अर्थहै औ सरल जो कह्यो सो सरोहैकहे रोगनते ग्रसितहै औ तिकोन खटोला जो कह्यो डोलामें सो शरीर की तीन अवस्थाहैं जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति याहीमें परोरहैहै सोई तिकोन खटोलाहै अथवा वालापन युवापन वृद्धापन ईतीनौंपन तिकोन खटोलाहैं शरीर रूपी डोलामें सो ऐसो डोला कुटिल करमचँद कहे कुटिलकलंकी करम करिकै कहे बनायकै हम सबको दीन्होहै औ ऐसो निबल डोलाहै औ मंदमोल बिन जो कह्यो सो और को मांस भोजनहूमें काम आवै है यह मानुष शरीरको मांस बेचवेहू ते कोऊ नहीं लेइ याते मन्द मोल कहे थोरहू मोल विनाहै सो ऐसो डोलामें चढ़िकै हे भैया या संसारमार्गमें न चलौगे तो कलंकी करमको दियो है डोला तुमहूंको कलंक लागिजाइगो यह जर्जर डोलाजो संसार मार्गमें टूटैगो तौ फँसिजाउगे फिर न निकसौगे जो नाम सड़कचलौगे तौ यासड़क रामघाटही लगीहै डोलाटूट्योदिव्यरूप त आंखीमूंदेहू चलेजाउगे अथवा दिव्यरूपते विमान चढ़ि चले जाउगे कैसोहै डोला सोकहैहैं॥ विषमकहारमारमदमाते चलहिंनपायबटोरेरे। मंदबिलंदअभेराद्लकानि पाईदुखझकझोरेरे॥ विषमकहे कहार जेहिको पांचौ इंद्री सोएकतौ समनहींहै दूसरे स्वभावहीते विषमहै तीसरे मार मदमातेहैं सो मतवारे के पांय समनहीं परे हैं चलत में पांय वगरिजाइ हैं पांयबगरिबे

कहे रूप रस गंध स्पर्श शब्द इनमें जाय रहे है फिरि मार्ग कैसो है मंदकहे नीचहै विलंदकहे ऊंचहै अर्थात् कहूं अपमानते दीन ह्वैजाइ है अपनेको नीच मानैहै कहूं मानते अपने को बडोऊंच मानैहै औ कहूं अभेरा कहे धक्का लगिजाय है धक्का कहाहै कहूं पुत्र मरिगयो भाई मरिगयो चोर चोराय लियो सो या लोकमें लोगकहैहैं कि हमको वडो धक्कालगो दलकनि कहाहै कि विषय सुखदेत में अच्छो लगै है जबवामें परयो तब विषय दलदलमें फँसिजाय है औ पाई दुख झकझोरे कहे डोलामें झकझोरालगै है सो इन्द्रीरूप कहार गिरै हैं कहूं उठै हैं ताते विकलताई झकझोराका दुखपाइतहैं कांटकुरायलपेटनलोटन ठामहिठाँवँबझाऊरे । जसजसचलियदूरिनिजतसतस बासनभेटलकाऊरे ॥ कहीं कांटहैं कहे सुन्दर रूपहै सो नयनरूपी कहारनके छेदिजाय हैं तव गिरिजाय हैं कहे आशक्त ह्वै जाय हैं औ कुरायसजल होइहै सोरसहै तामें रसनारूप कहार बूडिजायहै औ लपेटनफूलीलताहै तेई गन्धहैं तामें नासिकारूप कहार लपटिकै गिरिपरैहै लोटनलोकमें सर्पकोकहैहैं सोस्पर्शहै त्वचारूपकहारनको डसिडारैहै कामिनी के एक अंग छुवतमें सर्वांग कामविष चढ़ि जाय है याते स्पर्शको लोटनसर्प कह्यो है औ ठांवहिं ठांव बझाऊ कहे मोहरूप शिकारी सो नाना विषयकीकथा औ नाना भूत यक्षनादिक सेवनते सिद्धिकी प्राप्त तिनकी कथा औ नाना तासममत तिनकीकथा सोशब्दरूप वागुरि ठामहिठांवलगाय राख्योहै तामें श्रवणरूप कहार अरुझिकै डोला डारिदेइहै फिरि संसारमग कैसोहै ज्योंज्यों संसारपथमें चलियतुहै त्यों त्यों दूरि रामपुर परतोजायहै भैया रामपुरकी गैलनहीं है और राहहै फिरि कैसोहै यामें बासनहीं है अर्थात् कलनहींरहैहै कर्मकरतई जाइहै शांतह्वैकै कोईनहींटिक्यो ॥ मारग अगमसंगनाहिंसम्वलनामग्राम करभूलारे। तुलसिदासभवत्रासहरहु अवहोहुरामअनुकूलारे ॥ सो याप्रकार यहमार्गहै संसार सोईपृथ्वीहै तामें विषयके हेतु नाना

यतन करिबो अरु राजस तामस शास्त्रमार्ग तदनुसारकर्मकरिबो सोई चलिबोहै ताकोगोसाईंजीकहैहैंकि अगमहैकहे चलिबेमुआफ़िक़ नहींहै औ नाममार्ग में संतनको संगहै तेरामपुरको विघ्न नासिकै पहुंचाइ देइहैं यहां कैसोहै संगनहिं संबल कहे सम्यक् है वलजेहिके ऐसे संत संगमें नहीं है अथवा नाना मार्ग में तो सात्विक श्रद्धा कलेवा मिलैहै या मार्गमें श्रद्धारूप कलेवा नहीं मिलैहै सो गोसाईंजी अपनी रामायण में लिख्यो है जे श्रद्धा संवलरहित इत्यादिक औजागाउंको तुमको जानोहै ताकोनामही भूलि गयोहै भूला जो कह्यो सो गर्भमें सुधि होय है फिरि भूलि जायहै याते भूलाकह्योहै अथवा जीवनाम ग्रामकरभूलाहै नाना देवतनकोनाम लेइहै औ तिनहीं के धाम जाइवेकी इच्छा करै है सोतेरोतेनामनते भवबन्धना छूटै है न ते धामनमें गये तेरो जननमरण त्रास छूटैगो सो अबगोसाईं जी कहैहैं कि हेभैयाअब अपने अपने जीवन पै दायाकरि संसारकी त्रासहरो अब काहेते कह्यो कि अनेकजन्म भटकि के अनेक शरीर पाइकै मनुष्य को शरीरपायोहै सो अवहूं नाममार्गचलो याते अब कह्योहै औहोहु रामअनुकूला जोकह्योसोउपक्रममें नाममार्गबतायोताकोचलिकै उपसंहार में होहु राम अनुकूला कह्यो सोएक उपलक्षण है छः प्रकारकी शरणागतीको सूचन कियोहै उपक्रममें नाममार्गबतायो उपसंहारमें शरणागती बतायो सोई श्रीगोसाईं जी कहै हैं कि हे भैया रघुनाथजीको नामजपो औशरणजाउ याहीमें उबारहै औरमें नहीं है षटविधि शरणागतको लक्षण ॥ अनुकूलस्य संकल्पः प्रतिकूलस्यवर्जनम् ॥ रक्षिष्यतीतिविश्वासो गोप्तृत्ववरणंतथा ॥ आत्मनिक्षेपकार्पण्यषड्विधाशरणागतिः ४ ॥

इतिपांचवांकहरासमाप्तम् ॥

———०———

अथ छठवांकहरा॥

रामनामविनु रामनामविनु मिथ्याजन्म गँवाईहो १ सेमरसेइ सुवाजोजहड़े ऊनपरेपछितांईहो। जैसे मदिपगांठिअर्थैदे घरहु की अकिलगँवाईहो २ स्वादेउदरभरतधौंकैसे ओसैप्यासनजाइ हो। द्रव्यक हीन कौन पुरुषारथ मनहींमाहँ तवाईहो ३ गांठी रतनमर्मनहिंजानेहु पारखलीन्हिछोरीहो। कहकवीर यहअवसर वीते रतननमिलैवहोरीहो ४॥

रामनामविनु रामनामविनु मिथ्याजनमगँवाईहो १

उपासक जे हैं ते पंचागोपासना करिकै औ कापालिकादिक मतवारे देवतनकी उपासनाकरिकै नास्तिसरवई मोक्षमानिकै व्याकरणी शब्दज्ञान करिकै ज्योतिषी कालःज्ञानकरिकै सांख्य वाले प्रकृतिपुरुषः ज्ञान करिकै पूर्वमीमांसा वारे कर्महीं करिकै नैयायिक दुःखध्वंसही करिकै औ कणाद वाले नौगुण ध्वंसही करिकै औशंकरवेदान्त वाले ब्रह्मज्ञानही करिके इत्यादिक मुक्त होब मानेहैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनहीं विना औतिनके रामनाम विना मिथ्यै जन्म गँवाइदियो १॥

सेमरसेइ सुवाजो जहड़े ऊनपरे पछिताईहो। जैसेमदिपगांठिअर्थैदे घरहुकीअकिलगँवाईहो २

जैसे सेमरके फलको सुवासेयो चोंचचलायो जववामें धुवा- निकस्यो तव भोजनते ऊनकहे खालीपर्यो भोजन न पायो तव पछितायकै कहे जहड़िकै भोजन डहकायकै चल्यो ऐसे जीव नानामतन में परिकै मुक्ति चाह्यो जव मुक्ति न पायो तव मुक्ति डहकाइकै संसारमें पर्यो औ जैसे मदिपकहे मतवार गांठीको द्रव्यदैकै मद पियो घरौकी अकिल गँवायदियो तैसे गुरुवा लो- गनको गांठिकी द्रव्यदैकै मंत्रलैकै औरे औरे मतन में लगिगये घरौकी अकिल गँवाइदियो कहे साहवको सदाको दासहै जीव सो अपने स्वरूपको भूलिगयो २॥

स्वादेउदर भरतधों कैसे ओसेप्यास न जाईहो ।
द्रव्यकहीनकौनपुरुषारथ मनहींमाहँतवाईहो ३

जौनेमतमें स्वादपायो सो तौनेही मतमेंलग्यो सो ओसतेकहूं पियास बुझाइहै ओसपरो सो ओसको जलको स्वादमुखमेंआयो सो कहा स्वादते पेटभरैहै नहींभरैहै तैसे जीव नानामतमेंलग्यो नानासाधन करनलग्यो औ वे देवतनके लोक न गयो अथवाब्रह्म ज्ञान सिद्धभयो अथवा आत्मज्ञान सिद्धभयो इत्यादिक सवसिद्धि भयो किंचित् सुखपायो तेतो ओसकोचाटिबोहै कहा मुक्ति होइ है नहीं होयहै औ द्रव्यका हीन जो पुरुषारथ है सो कौन पुरु-षारथहै मनमें बहुताविचार करैहै कि वाको दशहजार देउं वाको पांचहजार देउं जब द्रव्यकी सुधिआई सो द्रव्यतो हई नहीं है तब मनैमें तवाई होयहै कि हायकाकरौं ऐसे नानामतनमें लगे पाछे पछिताउहोयहै अंतकालमें मैं कहाकियो साहबमें न लाग्यो जाते मुक्तिहोती ३ ॥

गांठीरतन मर्मनहिंजानेहु पारसलीन्ही छोरीहो ।
कहकबीर यहअवसरबीते रतननमिलैबहोरीहो ४

या जीव सदाको साहबको अंशहै सो या रतन तुम्हारेगांठीमें है ताको यहरामनामते पारिखकरिकै छोरिलेउ साहबकेगुणजीवो मेंहैं वेबृहतचैतन्यहैं याअणुचैतन्यहै वेघनरसरूपहैं यालघुरसरूप है ऐसो जो शुद्ध आपनो रूपजानै तौ रतनतेरे गांठिमेंहै ताकोमर्म तुमरामनाम विनानहींजान्यो कि वा साहबकोहै मनमाया ब्रह्म को नहींहै काहेते कि गुरुवालोग तिहारीपारख छोरिलियो और और तिहारो साहब बनाइदियो सो कबीरजीकहैहैं कि जो ऐसो मनुष्य शरीरमें साहबको ज्ञान न भयो कि मैं साहबकोहौं तौया अवसर बीतिगये कहे या शरीर छूटिगये फेरिरतन जो है आपने स्वरूपको ज्ञान कि मैं साहबको अंशहौं सो पुनि न मिलैगो औ साहबको ज्ञानकै देनवारो रामनाम न मिलैगो औ आगे जे कहि

भाये पंचागोपासनावारे कापालिकादिक मतवारे व्याकरणी सांख्यमीमांसा वारे नैयायिक कणादवारे शंकर वेदांती नास्तिक मतवारे जो या कहै हैं कि हमारे मत में काहे मुक्ति नहीं होत है सोकहै हैं पंचागोपासना तौसगुणहै सोसत रज तम येगुणमाया केहैं सोमायाते माया नहीं छूटै है या असंभवहै औ कापालिकादिक व्याकरणादि भैरवको मानै हैं सो वेद विरुद्धहै ईमुक्तिदाता कोई नहींहैं तामें प्रमाण ॥ मुक्तिदाताच सर्वेषां रामएवनसंशयः ॥ औवैयाकरणशब्द ब्रह्मते मुक्तिमानै हैं सोकेवल शब्द ब्रह्मकेजाने मुक्ति नहीं होयहै जवशब्द ब्रह्मको जानिकै परब्रह्मकोजाने तव मुक्तिहोइहैतामेंप्रमाण ॥ शब्दब्रह्मणि निष्णातोननिष्णायात्परेयदि । श्रमस्तस्यश्रमफलो ह्यधेनु मिवरक्षतः ॥ औ ज्योतिषीकाल ज्ञानते मुक्तिमानैंहैं सो कालहूके कालजे श्रीरामचंद्र हैं तिनके विनाजाने मुक्ति नहीं होय है तामें प्रमाण ॥ यःकालकालोगुणसर्ववेत्ता ॥ औ सांख्यवारे प्रकृति पुरुषते मुक्तिमानै हैं सो पुरुषोत्तमश्रीरामचन्द्रहैं तिनके विनाजाने मुक्तिनहीं होयहैतामें प्रमाण ॥ वन्देमहापुरुषतेचरणारविंदम् ॥ औपूर्वमीमांसावारे कर्म तेमुक्तिमानैंहैं सो कर्मते मुक्ति नहीं होय है कर्म त्यागे ते मुक्ति होयहै तामें प्रमाण ॥ नकर्मणानप्रजयाधनेनत्यागे नैके अमृतत्वमानशुःश्रुतेः ॥ औ नैयायिक ईश्वर श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण ॥ तमीश्वराणांपरमंमहेश्वरं ॥ औकणादवारेनौगुणध्वंस मुक्तिमानैंहैं सोनौगुणध्वंसही मुक्तिनहीं होयहै नौगुण ध्वंस भये उपरांत जव भक्ति होयहै तव मुक्ति होय है तामें प्रमाण ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचति न कांछति । समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिं लभतेपरां ॥ औ शंकर वेदांती ब्रह्म ज्ञान करिके मुक्तिमाने हैं सोजीवब्रह्मकंधी होतही नहीं है तामेंप्रमाण ॥ सत्यआत्मासत्योजीवःसत्यंभिदःसत्यंभिदः ॥ औनास्तिक चारि प्रकार के हैं सौगत १ विज्ञानवादी २ सौत्रांत्रिक ३ चार्वाक ४ सोसौगतनामके आत्माक्षणिक नाशमान मानैंहैं जैसेघट सोआस्तिक मतते

विरुद्धहै काहेते कि आत्माको नित्यमानैहै १ विज्ञानवादी पदार्थ मात्रका ज्ञान स्वरूप मानैहै सो आस्तिक मतमें बाधकहै काहेते कि जोक्षणिक ज्ञानके बाहर दूसरपदार्थ नहीं मानैहै तौज्ञानाश्रय आत्माके हित रातेहोइ २ औ सौत्रांत्रिक गुणरूप आत्मामानै है कौन गुण सुख विशेषगुण सोआस्तिक मतते विरुद्ध है काहे ते आस्तिक सुखरूप सुखाश्रय आत्माको मानै है ३ औ चार्वाक शरीरैको आत्मामानैहै काहेते प्रत्यक्षहै सोआस्तिक मतते विरुद्धहै काहेते शरीरते अभिन्न आत्माको मानैहै याहीरीति उदयनाचार्य बौधाधिकार ग्रन्थमें बहुत नास्तिकनको खंडन कियो है ४ औ कछु हमहूं कहै हैं औ सौगतजो आत्माको क्षणिक नाशमान मानैंगे औ चार्वाक जो शरीरको आत्मामानैंगे तो जोक्षणिकनाशमान आत्माहोत तौ भूतकैसेहोत याते सौगत निराकर्णभयोऔ जो शरीरैआत्मा होयगो तौमुर्दा कैसेहोइगो शरीर काटिहू डारै चैतन्यरहैगो औ विज्ञानवादी जो आत्माको ज्ञानस्वरूप मानैगो तौ अज्ञान कैसेहोयगो औ सौत्रांत्रिक सुख गुणस्वरूप आत्मा मानैहै तौ गुणतो विनागुणी रहतई नहीं है सोगुणीकोहै जोकहो घरहनको अथवा जिनको गुणमानैहै जीवात्माकोतौगुणगुणीको समवायहै गुणगुणीको छोडिकै नहीं रहैहै सो जीव जो अज्ञानी भयो सो जाकोगुणहै जीव सोऊ अज्ञानभयो जो चार्वाककालैकै प्रत्यक्ष मानैहै गुणगुणीको नहींमानै है वेदशास्त्रको कहोमिथ्या मानौहौ सोग्रहणशास्त्रमें लिखैहै सो परतहीह सो बेदको कहो कैसे मिथ्यामानै तुम्हारे शास्त्रमें लिखैहै कि पृथ्वी नीचेको चली जाइहै सोजोपृथ्वी चलीजाती तौ पाथर फेंकेते फेरि कैसेपृथ्वी में मिलतो काहेसे कि पाथरहलुकहै विलंब पूर्वक आवाचाही पृथ्वीगरूहै जल्दी जावाचाही ताते तुम्हरे ग्रन्थ झूठे हैं वेदशास्त्र सांचेहैं सो श्रीरामचन्द्र विना तुममिथ्या जन्म गमाइदियो ४ ॥

इति छठवां कहरासमाप्तम् ॥

——०——

अथसातवांकहरा ॥

रहहुसंभारेरामबिचारेकहतअहोंजोपुकारेहो १ मूड़मुड़ायफूलि कैबैठेमुद्रापहिरिमजूसाहो । ताहिउपरकछुछारलपेटे भितरभि तरघरमूसाहो २ गाउँबसतहैगर्वभारती मामकामहंकाराहो । मोहिनि जहांतहां लैजैहै नाहिंपतिरहै तुम्हाराहो ३ मांझसँझरि याबसैजोजानै जनह्वैहैसोथीराहो । निर्भयगुरुकिनगरियातहवां सुख सोवैदासकबीरहो ४ ॥

रहहुसँभारेरामविचारे कहतअहोंजोपुकारेहो १
मूड़मुड़ाय फूलिकैबैठे मुद्रापहिरि मजूसाहो ।
ताहिउपरकछुछारलपेटेभितरभितरघरमूसाहो २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि पुकारे कहौ हौं कि श्रीरामनामको विचारत हे जीवौ यहमनको सँभारे रहो अनत न जानपावैमें पुकारे कहौहौं अनतजायगो तौ मारो जायगो १ ऊपरते मूड़ मुड़ायकै कानेमें मुद्रापाहिरिकै अंगमें छारलपेटिकै मजूसाकहे गुफामें बैठे औ प्राण चढ़ाइकै माननलगे कि हमहीब्रह्म हैं सो ऊपर तेतो बहुत रंगनकियो पैभीतर भीतर उनको घरमूसिगयो कहे साहबको भूलिगये २ ॥

गाउँबसतहै गर्बभारती मामकामहंकाराहो ।
मोहिनिजहांतहांलैजैहैनहिंपतिरहैतुम्हाराहो ३

यह शरीररूपी जो गाउँ है तामें गर्व को जोभाराहै सो थिर भयो कहेयहमान्यो कि यह शरीर मेरोहै तबमामजो है ममता औकामादिकजेहैं अहंकारतेहिते भरिगयो सो श्रीकबीरजीकहैहैं कि मोहनिजो है मोहिलेनवारी मायासो जहां रहै है तहैं तोकोये सब कामादिक लैजैहै जो यह मानिराख्योहै कि प्राण चढ़ाइकै ब्रह्मांडमें लैगये मायाते भिन्नह्वैगये सो यापति तिहारी न रहैगी जब समाधिते जीव उतरैगो तब पुनि मायामें परिजाउगे ३ ॥

मांझमँझरिया वसै जोजानै जनह्वैहै सो थीराहो।
निर्भयगुरुकिनगरियातहँवांसुखसोवैदासकबीराहो ४

सो मांझजोहै माया काहेते कि जीव साहबके बीचमें माया को आवर्णहै तौनेके मँझरियामें जो जनवसै जानैहै कि मायाके बीचमें वसोहै औ माया वाको ग्रहण नहीं करिसकैहै जैसे जल मेंकमलजलनहीं स्पर्श करिसकैहै काहेतेसाहबको जानैहै सहज समाधि लगाये है तेई जन थिर रहै हैं अथवा साहब औ जीव के मांझ कहे विचवादक रामनाम तौनै मँझरिया कहे ज़ामिन है साहबके पास पहुंचाइवे को तौने रामनाम में जो कोई वसै जानै है कि मकार रूप मैं हौं रकाररूप साहबहै मैं सदा को दास हौं औराम नाम सर्वत्र पूर्ण है ऐसो जो कोई जानै सोथिर रहैहै तामें प्रमाण गोसाईंकी चौपाई ॥ अगुणसगुणाबिचनामसु साखी। उभयप्रबोधकचतुरदुभाखी॥ फिरिप्रमाणश्लोक॥रकारश्शेषलोकश्चअकारोमर्त्यसंभवः। मकारश्शून्यलोकश्चत्रयोलोकानिरामयाः॥ तामेंप्रमाण कबीरजीका॥ क्यानांगेक्याबांधे चाम। जोनहिंचीन्है आतमराम॥ नांगेफिरैयोगजोहोई। बनको मृगा मुकुतिगोकोई॥ मूड़मुड़ायेजोसिधिहोई। मूड़ीभेड़िमुक्ति क्योंनहोई॥विदराखेजोखेलहिभाई। खुसरैकौनपरमगतिपाई॥ पढ़ेगुनेउपजैहंकारा। अधधरबूड़ेवारनपारा॥ कहैकबीरसुनोरे भाई। रामनामविनकिनसिधिपाई॥ औ थिरह्वैकै गुरुकहेसबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रके नगरकहे साकेतमें कबीर जेजीव तेउनकेदास ह्वै तहांसुखसोंसोवैहैं वहां और देवके उपासनावारे अहंब्रह्मास्मि वारे जे हैं ते नहींजाइसकैहैं वेमायाहीमें रहआवैहैं ४॥

इतिसातवांकहरासमाप्तम्॥

अथआठवांकहरा॥

क्षेमकुशल औसहीसलामत कहहुकौन कोदीन्हाहो। आवत

जातदुनौंविधिलूटै सरबसंगहरिलीन्हाहो १ सुरनरमुनिजेतेपीर औलिया मीरापैदा कीन्हाहो । कहँलौंगिनैं अनंतकोटिलै सकल पयानादीन्हाहो २ पानीपवनअकाशजाहिगो चन्द्र जाहिगो सूरा हो । वहभी जाहिगोयह भी जाहिगो परतकाहुको न पूराहो ३ कुशलै कहतकहत जगबिनशै कुशलकालकीफांसीहो । कहकबीर सब दुनिया बिनशल रहलरामअविनाशीहो ४ ॥

क्षेमकुशलऔसहीसलामत कहहुकौनकोदीन्हाहो ।
आवतजातदुनौंविधिलूटै सरबसंगहरिलीन्हाहो १

श्रीकबीरजी कहै हैं क्षेमकहे कल्याण स्वरूप सदा रहै औ कुशलकहे सबबातमें कुशलहोय अर्थात् सर्वज्ञ होय औ सही सलामत कहे जेहिके सहीते जीव सलामत ह्वैजाय अर्थात् जेहिके अपनाय लीन्हेते जीवको जनन मरण छूटिजाय ऐसे जे अपने गुणहैं ते साहब कौने जीवको अपने बिनाजाने दीन्ह है अर्थात् काहूका नहीं दीन ऐसे जे साहब हैं सरब संग कहे सब के अंतर्यामी तिनको याकाल जीवको आवतकहे जनन औजात कहे मरन दूनौ बिधिमें लूट्यो अर्थात् जबआयो तबगर्भको ज्ञान नाश कैदियो औ जब जाइगो तबवहीको नाशह्वैगयो साहबते चिन्हारी नाकरनदियो १ ॥

सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया मीरापैदाकीन्हाहो ।
कहँलौंगिनैंअनंतकोटिलै सकलपयानादीन्हाहो २

औसुरनर मुनिजेहैं औ पीरजे हैं औ औलियाजेहैं औ मीर जे पादशाहहैं तिनको पैदाकरतभयो और कहांलों गिनैं अनन्त कोटि जीवनको पैदाकरि पयाना कराइदेतभयो २ ॥

पानीपवन अकाशजाहिगो चन्द्रजाहिगोसूराहो ।

वहभीजाहिगोयहभीजाहिगो परतकाहुकोनपूराहो ३
कुशलैकहत कहतजगविनशै कुशलकालकीफांसीहो।
कहकबीरसबदुनियाविनशल रहलरामअविनाशीहो ४

पानी औ पवन औ आकाश औ चन्द्रमा औ सूराकहेसूर्य औ यहभीकहे यह जगत् औ वहभी कहे ब्रह्मसो येसबचलेजायँगे सबको काल खाय लियोहै काहूकी पूरनहीं परीहै ३ सो कुशलै कहत कहतकहे कुशलै मानेमानेजग सब मरिगयो कुशलकोई न रहे कुशलकालकी फांसीहै जाकी फांसीमें सबपरेहैं सोकबीर-जी कहैहैं कि सब दुनिया विनशि जायहै जो राम करिकै जन्म विनाशीहै सोईरहिगे अर्थात् रामके दासई अविनाशी हैं इनका नाश नहीं होयहै सो या वाल्मीकिरामायणमें प्रसिद्धहै अंगद हनुमान् आदिकन को नाशनहीं भयोहै ४॥

इतिआठवांकहरासमाप्तम्॥

अथनवांकहरा॥

ऐसनदेहनिरापनबौरे मुये छुवैनहिंकोईहो। डंडक डोरवा तोरि लैआइनि जो कोटिकधन होईहो १ उरधश्वासा उपंग्जग तरासा हंकराइनि परिवाराहो। जो कोईआवै बेगिचलावै पल यक रहननहाराहो २ चन्दनचूरचूतुर सबलेपैं गलगजमुक्ताहा-राहो। चौंचनगीध मुयेतनलूटैं जंबुक वोदर फाराहो ३ कहैक-वीर सुनोहो संतौ ज्ञानहीन मतिहीनाहो। यकयक दिनयह गतिसबहीकी कहारावका दीनाहो ४॥

ऐसनदेहनिरापनबौरे मुयेछुवैनहिंकोईहो।
डंडकडोरवातोरिलैआइनिजोकोटिकधनहोईहो १
उरधश्वासाउपंग्जगतरासाहंकाराइनिपरिवाराहो।

जोकोईआवै वेगिचलावै पलयकरहनन हाराहो २
चंदनचूर चतुरसबलेपैं गल गजमुक्ता हाराहो ।
चोंचनगीध मुयेतनलूटै जंबुक वोदर फाराहो ३
कहैं कबीरसुनोहोसंतो ज्ञानहीन मतिहीनाहो ।
यकयकदिनयहगतिसबहीकीकहाराबकादीनाहो ४

ऐसीदेहनिरानपनीहै कहे अपनी नहीं है औ सबअर्थ प्रगटई है श्रीकबीरजी कहै हैं कि जेमतितेहीनमूर्ख परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके ज्ञानतेहीनरहैं तिनके शरीरकी दशा ऐसे एकदिनसबकी है चाहै रंकहोइ चाहैराउहोइहै ४ ॥

इतिनवांकहरासमाप्तम् ॥

—o—

अथदशवां कहरा ॥

हौं सबहिनमें हौंनाहीं मोहिं बिलगविलग बिलगाई हो । ओढ़नमेरे एक पिछौरा लोगबोलहिं यकताईहो १ एक निरंतर अंतरनाहीं ज्यों घट जल शशिझाईहो । यक समान कोइसमुझतनाहीं जरामरण भ्रमजाईहो २ रैनिदिवस में तहँवोंनाहीं नारि पुरुष समताईहो । नामैंबालक नामैंबूढ़ो नामोरे चेलिकाईहो ३ तिरबिधरहौं सबनमें बरतों नाममोर रमराईहो । पठयेनजाउँ आनेनहिं आऊं सहजरहौं दुनिआईहो ४ जोलहा तान बाननहिं जानै फाटबिनैदशठाईहो । गुरुप्रताप जिनजैसोभाख्यो जिनबिरले सुधिपाईहो ५ अनंतकोटि मनहीरा वेध्यो फिटकी मोलन आईहो । सुरनर मुनिवाकेखोजपरेहैंकिछुकिछुकबिरनपाईहो ६॥

हौंसबहिनमें हौंनाहीं मोहिं बिलगबिलगबिलगाईहो ।
ओढ़न मेरेएकपिछौरा लोगबोलहिं यकताईहो १

गुरुमुख ॥ मैंसबमेंहौं औसब न होउँ ऐसेमोको बिलगबिलग

कहे जुदाजुदाविलगाइकै वेदकह्यो इहांदुइवारविलगबिलगकह्यो सो एक तो चितकहे जीवब्रह्मईश्वर अचितकहेमायाकालकर्मसुभावपृथ्वीआदिक मायाकेकार्यसव सोयेदोहुनमें अंतर्यामीरूपते व्यापकहौ सोजीवब्रह्म ईश्वरचिततत्त्वमें मैं व्यापकहौं तामें प्रमाण॥ विष्णवायुत्तमदेहेषु प्रविष्टोदेवताभवत्। मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितोभजतिदेवता इतिश्रुतिः॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः सर्वव्यापीसर्वभूतांतरात्माइतिश्रुतिः॥ ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहमितिगीतायाम् अचितैमेंव्यापकहैतामेंप्रमाण ॥ विष्टभ्याहमिदंकृत्स्न मेकांशेन स्थितोजगत् इतिगीतायाम् ॥ सोचितअचितदोऊव्याप्यपदार्थ हैं व्यापक मैंहौं सो चितअचितरूप पिछौरा दुइछोरिया मेरोओढ़न है सर्वत्रमहींहौं सोवेदकोतात्पर्य न जानिकै लोगएकताई बोलेहैं कि एकई ब्रह्महै पिछौराओढ़ै याको एकहीकहे हैं दूसरानहीं कहै हैं लोगजो एकताई कहैहैं सो कौनीतरहते कहे हैं सोकहै हैं १ ॥

एकनिरंतर अंतरनाहीं ज्योंघटजल शशिझाईहो।
यकसमानकोइसमुझतनाहींजरामरणभ्रमजाईहो २

वहीब्रह्मनिरंतर एक सर्वत्र है यालोगबोलैहैं सो कहा अंतर नहीं है अर्थात् अंतरहे कैसे जैसेजलभरेघटनमें शशिकी छायावामें व्याप्यव्यापक बनो है सो एकजो मैं सो समान कहे सबमें समव्यापकहौं ताकोकोई व्याप्यव्यापक कोई नहीं समुझैहै तौ कहा उनको जरामरण भ्रमजाइ है अर्थात् नहीं जाइहै सो अंतर्यामी रूपते व्यापक साहबकहिचुके अब निजरूपते जहांरहे हैं तहांकी बातकहै है २ ॥

रैनिदिवस मैंतहँवांनाहीं नारिपुरुषसमताईहो।
नामैं बालक नामैं बूढ़ो नामोरे चेलिकाईहो ३

जहांमैंरहौहौं तहां न रातिहै न दिनहै औ सवनारीरूपहैं जो पुरुषहूजाइहै सो नारिनरूपतेरासमेंप्राप्तहोइहै पुरुषमहींहौं औ

समताई है जैसे सच्चिदानन्दरूपहौं ऐसे ओऊ सच्चिदानंदरूपहैं मैं न बालकहौं न बूढ़हौं सदाकिशोररूपबनोरहौहौं औनमोरेचोलिकाई कहेकोऊ वहउपदेश्यनहीं है अर्थात् अज्ञानीकोऊनहीं है सब मेरे रूपको जानैहैं उहांरातिदिननहींहै तामेंप्रमाण॥ नतद्भासयते सूर्योनशशांकोनपावकः। यद्गत्वाननिवर्ततेतद्धामपरमंमम ३॥

तिरविधरहौंसबनमें बरतों नाममोररमराईहो।
पठयेनजाउँआनेनहिंआऊंसहजरहौंदुनिआईहो ४

तिरविधरहौं कहेजीव ब्रह्म ईश्वरनमें जो अंतर्यामी रूपते रहौहौं औ सबनमें बरतौं कहे माया काल कर्म सुभाव इनमें जो अंतर्यामी रूपते रहौहौं सो इनमें जो रमनवारो अंतर्यामी मेरो रूपब्रह्म ताहूको मैंराईहौं सोपठये नहीं जाउँहौं न आनेते आऊँहौं अर्थात् जोकहूंनहोउँ तौ नाआने आऊं पठयेजाउं सर्वत्रै तौहौं सो यही रीतिते सहजही यादुनियामें अंतर्यामीके अंतर्यामी रूपते पूर्णहौं ४॥

जोलहातानबान नहिंजानै फाटबिनैदशठाईहो।
गुरुप्रतापजिनजैसोभाष्योजनबिरलेसुधिपाईहो ५

जोलहाजेहैं जीव ते तानबाननहींजानैं अर्थात् वा हंसस्वरूप पोसाक बनैनहींजानैं जो पहिरिके मेरे समीपआवै फाटबिनै दशठाईं कहे दशहैं छिद्र जिनमें ऐसो जो शरीर ताहीको बिनैहै कहे नानामतनमें परिकै वही कर्मकरै है जामें अनेक जन्मशरीर धारण करतजायहै जो कहो कोऊ जानतही नहीं है तौ गुरुके प्रतापते जो कोऊ मेरोरूपभाष्योहै जैसो सोतौ कोईबिरलाजन सुधिपायो है अर्थात् जाको सतगुरुमिल्यो है सोई पायो है ५॥

अनंतकोटिसननहीराबेध्यो फिटकी मोलनआईहो।
सुरनरमुनिवाकेखोजपरेहैंकिछुकिछुकबिरनपाईहो ६

अनंतकोटि जे जीवहीरा हैं तिनमें मनवेध्योहै सो या हीरा रूपजीवको फिटिकिरिउकोमोल न रहिगयो सो सुरजेहैं मुनिजेहैं नरजेहैं तेवही अपने स्वरूपको खोजैहैं सोकिछुकिछु कहे थोरहूते थोर जीवपाइनहैं और कोई नहींपायो जे आपनोरूप मेरो रूप गुरुप्रताप जानि शरीरको बिनैया मनकोत्यागयोहै तेई पायो है अथवा किछुकिछुकबिरनपाई कहेसाकल्यकरिकै हमारो भेदतो कोई जानतही नहीं है जे अपनोरूप मेरोरूप जानत जे जीव ते किछु किछुभेदपायो है ६ ॥

इतिदशवांकहरासमाप्तम् ॥

अथग्यारहवांकहरा ॥

ननँदी तौविषमसोहागिनि तैंनिदले संसारागे । आवत देखि एकसँगसूती तैंअरुखसमहमारागे १ मोरेबापकिदोयमेहरिया मैं अरुमोरजेठानीगे । जबहम ऐलिरसिकके जगमें तबहिंबात जग जानीगे २ माईमोर मुवलपिताकेसंगहि सरराचि मुवलसंघातागे । अपनोमुई औरलै मुवली लोगकुटुम्बसँगसाथागे ३ जौलौं सांस रहै घटभीतर तौलगकुशल परैहैगे । कहकबीरजब श्वास निसरिगै मंदिरअनलजरैहैगे ४ ॥

ननँदीगेतौविषसोहागिनि तैंनिदलेसंसारागे ।
आवतदेखिएकसँगसूतीतैंअरुखसमहसारागे १

कबीरजी जीवनपर दयाकैकै ज्ञानशक्तिते कहै हैं कि मगहमें मिथिलादेशमें परस्परस्त्रीलोग बतातीहैं आदरकैकै तबगेसंबोधन देती हैं सोयापदमें गेसंबोधनहै अथवागेबिगरे जीवको कहैहैं हे गये जीवसो कबीरजी जीवजो चित-शक्तिसाहबकीस्त्री सो ज्ञान-शक्तिजो साहबकीबहिनी तासोंकहैहै ननँदी यातेकहैहै किप्रथम साहबको ज्ञानप्रगटहोयहै पछिसाहब प्रगटहोयहै सो साहबकी

वहिनीभई सो चितशक्ति जीवकहैहैं कि तेहमतेसबजीवहैं तिन परतें विषम ह्वैगई औ पतिकी सुहागिनि ह्वैगई कैसीहैं तें कि निद‍लेसंसाराकहे तैंतो संसारको निदरनहै हमपरविषम ह्वैगईहै काहू को ज्ञानकरि साहबको मिलायदियो काहूको ज्ञानहरि संसारी करिदियो गेजाकहैहै सोसाहबको पतिमानि वाको ननँदिमानि गारीदै कहैहै कीन्हीतें कहा कि समष्टितें व्यष्टिकरैवाली ऐसी मायाको आवतदेखिकै हमारखसमजो साहबहैं तिनकेसंगसूती जाइतैं अपने भाईको पतिबनाये तें अर्थात् साहब को ज्ञान काहू जीवके न रहिगयो साहबको ज्ञानसाहिबै को रहिगयो १ ॥

मोरेबापकीदोयमेहरिया मैंअरुमोरजेठानीगे ।
जबहमऐलिरसिककेजगमेंतबहिंवातजगजानीगे २

सोजौने धोखाब्रह्मकोमानि हम संसारीभये हैं सोजोहमारो बापहै धोखाब्रह्म ताकेदोय मेहरियाहैं जीवचितशक्तिकहैहैंकि एक मैं औएक मोरजेठानी जौन साहब अज्ञानमूलःप्रकृति धोखाब्रह्मतेजेठ समष्टिकरहीहै सो तब कारणरूपा है अब कार्यरूपाभई अर्थात् चितशक्ति जीवकहैहै कि वहीमायामें परिकै अहंब्रह्मास्मि हमसब मानतभये जोकहो तुमयावात कसकै जान्यो तौ जबहम ऐलिरसिकके जगमें कहे जबहमरसिक जेसाहब तिनके लोकमें आये तबहम या वात जान्यो कि अहंब्रह्मास्मि हममाने न रहेओ संसारमें परिबेहीकियो साहबकोज्ञान हमारेनहींभयो सो साहब यालोकके मालिकजेहैं तेईहैं जिनकेजाने संसार छूटैहै ब्रह्मसाहब नहीं है २ ॥

माईमोरमुवलपिताकेसंगहिसररचिमुवलसँघातीगे ।
अपनोमुई औरलैं मुवली लोगकुटुंब सँगसाथीगे ३

सो पिताजो हमारोधोखाब्रह्म जौनेके द्वारा हम व्यष्टिभये सो

जब मिट्यो तबमोरमाई जो मूलःप्रकृति सोसरकहै चिंतावशीकार वैरागराचिकै पिताकेसाथ वाहूसती ह्वैगई अर्थात् जबधोखा ब्रह्म मिट्यो तब रामा अज्ञानरूपी माया सोऊ छूटिगई साहब को ज्ञान ह्वैगयो सो अपना मरी और जेतने नाता मानिराख्यो लोग कुटुम्ब तिनहूं को साथही लैजातभई अर्थात् अहंब्रह्म छोड़िदियो जगत्‌के नाते छोड़िदियो एक साहबको जानिलियो उनहींको नाता मानलियो सो हे ज्ञानशक्ति जब तूया मोको जनायो तब मैं जान्यो ३ ॥

जौलौं मांसअहै घटभीतर तौलौं कुशल परैहैंगे।
कहकवीरजबश्वासनिसरिगेमंदिरअनलजरैहैंगे ४

सो जबलौं श्वास है तबलौं कुशल है तूकाहे बिषम ह्वैगई जबलौंश्वासहै तबलौं इनके आइकै साहबको प्राप्तिकरायकै इन को दुःख छुड़ाइ देउ श्वास निसरि गयेपर यम धरि लैजाइँगे अनेक योनिमैं भट करत वागैंगे शरीर जरिजाइगो सो हे ज्ञान शक्ति तब तू न आयसकौंगी तेहिते ईजीवनपर तुम आयसक्ती हौ साहबको ज्ञान ह्वैसकै है ४ ॥

इतिग्यारहवांकहरासमाप्तम् ॥

अथबारहवांकहरा ॥

यामाया रघुनाथकी बौरीखेलनचली अहेराहो । चतुरचिकनिया चुनिचुनिमारै काहून राखैनेराहो १ मौनीवीर दिगम्बरमारे ध्यानधरंते योगीहो । जंगलमेंके जंगममारे माया किनहुनभोगीहो २ वेदपढ़ंता पांडेमारे पूजाकरंते स्वामीहो । अर्थ बिचारे पंडितमारे बांध्यो सकल लगामीहो ३ शृंगीऋषि बनभीतरमारे शिरब्रह्माके फोरीहो । नाथमछंदरचलेपीठदै सिंहलहूमैंबोरीहो ४ साकठके घर कर्त्ताधर्त्ता हरिभक्तनकी चेरीहो । कहै कबीर सुनोहो संतो ज्यों आवै त्यों फेरीहो ५ ॥

यामाया रघुनाथकीबौरी खेलनचलीअहेराहो । च-
तुरचिकनियाचुनिचुनिमारेकाहूनराखैनेराहो १ मोनी
वीरदिगम्वरमारे ध्यानधरंतेयोगीहो । जंगलमेंके जं-
गममारे मायाकिनहुंन भोगीहो २ वेदपढ़ंता पांड़े
मारे पूजाकरते स्वामीहो । अर्थ विचारे पंडितमारे
बांध्योसकल लगामीहो ३ शृंगीऋषि वनभीतर मारे
शिर ब्रह्माके फोरीहो । नाथमछंदरचले पीठदै सिंहल-
हूमें बोरीहो ४ साकठकेघर कर्त्ताधर्त्ता हरिभक्तनकी
चेरीहो । कहैकबीरसुनोहोसंतोज्योंआवैत्योंफेरीहो ५ ॥

ज्ञानशक्ति कबीर को जवाबदियो मैं कहा करौं मोको कोई
जीवन के उदयहोन नहीं देइहै मायासबको बांधि लियाहै सो
कबीरजी जीवनसोंकहैहैं यहमायाछुइ जान न पावै जबहीं आवै
तबहीं यासोंमुंहफेरिलेउ तबहीं बचौगे या सब कोबांधिलियोहै
तुमहूंको बांधिलेइगी औ इहांरघुनाथकी बौरी जो माया कह्यो
सो रघुहै जीव ताकेनाथ जेश्रीरामचंद्र तिनकी या मायाहै सो
जीवनको धरि धरिकै शिकार खेलैहै सो जब अपने नाथको या
जीवजानैजिनकी या मायाहै तबतबयामायाते छूटैगोअपनेबल
ते जीव न छूटि सकैगो अथवा या माया रघुनाथ की बौरीहै रघु-
नाथ की बौरी कहे रघुनाथ को न जानिबो यहै याको स्वरूप
है ५ ॥ इतिबारहवांकहरा समाप्तम् ॥

इतिकहरासम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथवसन्तलिख्यते ॥

जहँ बारहि मास वसंत होय । परमारथ बूझैबिरलकोय १ जहँवेर्षे अग्निअखंडधार । बन हरियरभो अट्ठारभार २ पनिया अन्दर तेहिधरे न कोय । वह पवनगहे कशमलनधोय ३ बिनु तरुवर जहँफूलो अकास । शिव औ विरंचितहँ लेहिं बास ४ सनकादिक भूले भवँरभोय । तहँलखचौरासी जीवजोय ५ तोहिंजो सतगुरु सतसो लखाव । तुमतासु न छाड़हु चरण भाव ६ वह अमरलोक फललगे चाय । यहकह कबीर बूझैसो खाय ७ ॥

जहँवारहिमासवसंतहोय । परमारथबूझैबिरलकोय १
जहँवर्षेअग्निअखंडधार । बनहरियरभोअट्ठारभार २

जाकेकहे जौने साहबके लोकमें बरहौमास वसंतवनो रहैहै सो या परमार्थ कोईविरलाबूझैहै सोवा रूपकातिशयोक्ति अलंकार करिकहैहैं १ औबसंत ऋतुमें सूर्यते अग्नि वर्षै है अखंडधार वनजोहै अठारह भार वनस्पती सो हरियर होतजाइ हैं औसाहबके लोकमें कोटिन सूर्यको प्रकाशहै परंतु सबको ताप हरिलेन वारोहैवहांके सबवनसंतानक आदिकहरियररहैहैं २ ॥

पनियाअंदरतेहिधरेनकोयावहपवनगहेकशमलनधोय **३**
विनुतरुवरजहँफूलोअकास । शिवऔविरंचितहंलेहिंवास **४**

औवसंतऋतुमें वृक्षनके अंदरनमें कोईपानी नहींधरैहै चन्द्र जोहै सो अमृतकोश्रवैहै ताहीको गहे पवन वृक्षनके कश्मलन को धोयडारे है औसाहबको लोक कैसोहै कि पनियाअंदरकहे वा

रसरूपहै ताकोकोईनहीं जानैहै वहीरसरूप लोकको स्मरणपव-नहै ताके गहे कहे कियेते कश्मल जेपापहैं तेधोयजातहैं अथवा कामादि जे कश्मलहैं तेधोयजातहैं ३ औ वसंत ऋतुमें जहां तरुवर नहींहैं ऐसो जो आकाश सोऊ पुहुपनके परागनकरिके फूलो देखो परैहै कैसोहै आकाश जहांशिवविरंचि वासलेहिहैं अर्थात् वासकीन्हेहैं सुगंधित ह्वैरह्योहै औ साहबहि को लोकके-साहै कि जेहिका प्रकाश बिना चैतन्याकाश तरुवरै जगत्रूप फूलफूलेहै शिवविरंचिआदिक वासलेहिहैं ४ ॥

सनकादिकभूलेभवँरभोय । तहँलखचौरासीजीवजोय ५

वसंतऋतुमें चौरासीलाख योनि जीवनकी कौनगनती सन-कादिक जे मुनिहैं तेऊ पुष्पमकरंदमें भोयकै भवँरकी नाईं भूलि जाहिहैं औ साहब को लोकप्रकाशब्रह्म कैसाहै किसनक सनन्दन सनत्कुमार जाके भवँरमें भोयकै कहे परिकैभूले हैं चौरासीलाख योनि जीवनकी कौनगनतीहै ५ ॥

तोहिंजोसतगुरुसतकैलखाव।तुमतासुनछाड़हुचरणभाव ६

वहअमरलोकफललगेचाय । यहकहकबीरबूझैसोखाय ७

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि ऐसो जो साहबको लोक जहां बरहों मास बसंत बनोरहै है तौन जो सतगुरु कहे साहबकेबता-यदेनेवारे तोको सत्यकै लखायो होय तातुम ताके चरण को भाव न छाड़ौ भावयहहै कि वा लोकके मालिक जो साहबहैं तिनहूंको बताय देइँगे ६ वह अमरलोक कैसाहै कि जहां चारिउ फल अर्थ धर्म काम मोक्ष आनंदै के फल लगेहैं सो है जीवो या बात जोकोई बूझैहै सोई खायहै साहबके धाममें बरहों मासब-संतरहै है तामेंप्रमाण कबीरकी साखी ज्ञानसागरकी ॥ सदाबसंत होततेहिठाऊं । संशय रहित अमरपुरगाऊं ॥ जहँवां रोग शोक

नहिंहोई । सदाअनन्द करै सबकोई ॥ चन्द्र सूर्य देवसनहिंराती। बरण भेद नहिं जाति अजाती ॥ तहँवां जरामरण नहिं होई । क्रीड़ा विनोद करै सबकोई ॥ पुहुप विमान सदाउजियारा । अमृत भोजन करै अहारा ॥ काया सुन्दरको परवाना । उदितभये जिमिषोड़शभाना ॥ येता एक हंस उजियारा । शोभित चिकुर उदयजनुतारा ॥ विमलवास जहँवां पौढ़ाही । योजन चारयान जोजाही ॥ श्वेतमनोहर छत्रशिरछाजा॥बूझिनपरैरंकअरुराजा ॥ नहिंतहँनरक स्वर्गकी खानी । अमृतबचन बोलै भल बानी ॥ असमुखहमरे घरनमहँ कहैं कबीर बुझाय । सत्य शब्दको जानै अस्थिर बैठैआय ७ ॥ इतिपहिलाबसन्तसमाप्तम् ॥

अथदूसराबसंत ॥

रसना पढ़िभूले श्रीबसंत । पुनिजाइ परिहौतुमयमकेअंत १
जो मेरु दण्ड परडंक दीन्ह । सोअष्टकमल परजारि दीन्ह २
तबब्रह्मअग्नि कीन्हो प्रकास । तहँ अर्द्ध उर्ध्व वहती बतास ३
तहँ नवनारी परिमल सो गाव । मिलि सखी पांचतहँदेखन जाव ४ जहँ अनहद वाजारहलपूर । तहँ पुरुषवहत्तरिखेलैंधूर ५
तैं मयादेखि कसरहसि भूलि । जस बनस्पती वनरहलफूलि ६
यह कहतकबीर ये हरिके दास । फगुवामांगै बैकुंठवास ७

रसनापढ़िभूलेश्रीबसंत।पुनिजाइपरिहौतुमयमकेअंत १

श्रीबसंत कहे ऐश्वर्यरूप जोबसंत ताको रसना में पढ़िकै मनवचन के परेजो साहबके लोकको वसंत ताको तुम भूलिगयो रसनामें पढ़ि जोकह्यो तामें धुनियहहै कि औरै देवतनकी उपासनामें बड़ो ऐश्वर्य प्राप्तिहोइहै यहपोथिनमें पढ़ि पढ़ि भुलाइगयो वाहूको जोभै भरेते कह्यो कछुप्राप्ति नहीं भै सो तुम फेरि यमके अंतकहे संसारमें परिहौ अोजो लेहू पाठहोय तौ रसनामें

श्रीवसंतकोपढ़िलेहु नहींतोपुनियमकेअंतकहे फंदमें परिहौ १॥

जौमेरुदंडपरडंकदीन्ह। सोअष्टकमलपर जारिदीन्ह २

औ जो या गुमानकरो कि हम योगवारेहैं हम यमकेअंतमें नपरेंगे सो जोतुम मेरुदंड में प्राणखैंचिकै मेरुदंडपर डंकादीन्ह्यो औ अष्ट जोहैं आठोंकमल मूलाधार विशुद्ध मनिपूरक स्वाधिष्ठान अनहद आज्ञाचक्र सहस्रारचक्र अठयें सुरति कमल जहां परम पुरुषहै तामें पहुंचिकै जारिदीन्ह अर्थात् योगोंकी खबरि भूलिगई २॥

तहँब्रह्मअग्निकीन्होप्रकास। तहँअर्द्धउर्ध्वबहतीबताम ३

तहँनवनारीपरिमलसोगाव। मिलिसखीपांचतहंदेखनजाव ४

सो वाज्योतिमें लीन भयो जीव तहैं ब्रह्मअग्नि प्रकाशकरत भई औ बतास जो अर्द्धउरध श्वास सो वहै वहतमें अर्थात् वहिरे नआवतभैश्वासवहैंरहतभै याभांति जीवतखतमें बैठिमालिकभयो गांवकारा बसंत देखै है ३ सो यहां परिमल कहे गंधकागांव है शरीरमें पृथ्वीतत्त्व अधिकहै सो गंध का गांव शरीरहै तौनेमें नौनारीहैं कहे नौ राहहैं तहांपांचौ जे ज्ञानेन्द्रीहैं तेई सखीदेखन जायहैं अर्थात् वहै लीन ह्वैगई है ४॥

तहँअनहदबाजारहलपूर। तहँपुरुषवहत्तरिखेलैंधूर ५

तैंमयादेखिकसरहसिभूलि। जसवनस्पतीवनरहलफूल ६

बसंतमें वाजा बजैहै सो अनहद वाजा जहां पूरिरह्योहै तहां बहत्तरि पुरुषजे बहत्तरिकोठाहैं ते धूरि खेलैंहैं अर्थात् चैतन्यता नरहिगै ५ सो वसंतमें बनस्पती फूले हैं ऐसेयामायाफूलिरहीहै तामें समाधि उतरे फिरि काहे भूले अथवाजैसे बनस्पतीफूलेहैं ऐसेगैबगुफामें सुधापीकै नागिनी फूलीहै तामेंतैंकाहेभूलिरहेहैं कहा वामायाकेबहिरेहैसमाधिनागिनिहीकेअधारतोसमाधिउहै६॥

यहकहकबीर येहरिकेदास। फगुवामांगं वैकुंठबास ७

सोया हठयोग करिकै जानै किमैं मुक्तिहोउँगो तौ यासमाधि में मायाहीते नहीं छूट्यो मुक्ति कहां होइगी तातेश्रीकबीरजीकहैहैं कि हेजीवात्मा हरिके दासतैं बैकुंठबासको फगुवामांगै अर्थात् फगुहार फगुवा खेलाइकै फगुवामांगैहै सोतैं हठयोग कियो ताको फल फगुवाराजयोग मांगुजाते वैकुंठवासहोइ ७ ॥

इतिदूसराबसंतसमाप्तम् ॥

अथतीसराबसंत ॥

मैंआयउँमेहतरमिलनतोहिं । अबऋतुबसंतपहिराउमोहिं १ हैलंबीपुरियापाइछीन । तेहिसूतपुरानाखुंटातीन २ शरलागैसै तीनिसाठि । तहँकसनबहत्तरिलागगांठि ३ खुरखुरखुरखुरचलै नारि । वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४ सोकरिगहमेंदुइचलहिं गोड़ । ऊपरनचनीनचिकरैकोड़ ५ हैंपांचपचीसौदशहुद्वार । सखी पांचतहांराचीधमार ६ बेरंगबिरंगीपहिरैंचीर । धरिहरि के चरण गावैकबीर ७ ॥

मैंआयउँमेहतरमिलनतोहिं।अबऋतुबसंतपहिराउमोहिं १
हैलंबीपुरिया पाइछीन । तेहिसूतपुरानाखुंटातीन २

जीवकहै हैं मेहकही बड़ेको औ जो बड़ाते बड़ाहोइ ताको मेहतरकहै हैं फ़ारसीमें सोईश्वरनते ब्रह्मते जो बड़े श्रीरामचन्द्रहैं तिनसों जीवकहैहै कि मैं तुमको मिलनआयोहौं सो जौनेलोक में सदाबसंतरहैहै सो मोको पहिरायो अर्थात्मेरोप्रवेशकराइदीजे तानारूप जोमेरेशरीरकोवसंततातेछड़ाइये १ सोलम्बीपुरिया कौनकहावैजोतानातनैहैपूरैहै सोमैं बासननिकरिकै बहुतलम्बाहै रह्योंहौंकहे बासननिकरिकै मैंसंसारमेंफैलिरह्योहौं औपाईवाकहा

वैहै जोताना साफकरैहै सोयाआत्माको साफ करिबोबहुतभीन कहै जबकोई विरलेसंतामिलैं तब आत्माशुद्धहोइ काहेतेकि यह सूतजीव पुरान कहे अनादिकालते तीन खूंटाजोहैं सत रजतम तामें बँधोहै २ ॥

शरलागैसैतीनिसाठि । तहँकसनिबहत्तरिलागगांठि ३
खुरखुरखुरखुरचलैनारि । वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४

पाईमें शरलागैहै सो शरीरमें तीनिसैसाठि हाड़हैं तेईशर हैं बहत्तरिजेकोठाहैं तिनमें बहत्तरिहजार नसनकीगांठि एकएककोठनमें लागहैं तेई कसनीहैं ३ औविनतमें जौनबीचह्वैचलावैहै सो नारिकहावैहै सो या शरीरमें नाड़ीजोहै सो खुरखुरखुरखुर चलैहै औ जोलाहिनिजोहै बुद्धिसो पलथीमारिकै बैठीहै अर्थात् देहहीमें निश्चय करिकैबैठीहै ४ ॥

सोकरिगहमेंदुइचलहिंगोड़।ऊपरनचनीनचिकरैकोड़ ५

सोयह तरहको जो शरीर है सो करिगह है जहां जोलाहिनि बैठैहै धमारि महलमेंहोयहै सोशरीरैमहलहै सोकरिगहमेंजोलाहिनदोऊ अंगूठाचलावैहै ऊपरतानामें नचनीकोड़करैहैकहेनाचैहै इहां शरीररूपी करिगह में बुद्धिरूपी जोलाहिनि बैठिकै कहूं शुभकर्ममें निश्चयकरैहै कहूं अशुभकर्ममें निश्चयकरैहै यहीदोऊ अंगूठाको लचाइबोहै औ वृत्तिबुद्धिकी कहूंशुभमें कहूं अशुभ में जायहै यहीनचनीहै सोनाचैहै औ धमारिपक्षमें नाचतमें नचनी को गोड़चलैहै ऊपरकोड़ करैहै कहेभावबतावैहै ५ ॥

हैंपांचपचीसौदशहुद्वार । सखीपांचतहँराचीधमार ६

औपांचजेहैं अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश औपचीसौ जेतत्त्व हैं जीवमाया महत्तत्त्व अहंकार शब्द रूप रस गन्ध

स्पर्श दशौइंद्री एकमन पंचभूतई औताहीमें दशौद्वार ऐसेशरीर में पांचसखीजेहैं पंचप्राणतेधमारि रचतभईऔताना पक्षमेंपांच पचीस तत्त्वकेकहेसवकोरीके साजु आइगे औधरिकहे सबअपने अपने धमारमेंलगिगे केड़ावारे माड़ीवारे पुरियावारे करिगहवारे तानासाफकरैवारे औधमारि पक्षमें पांचसखी धमारि रचैहैं दुइ एकवार कियो एकदेखैयाभो ६ ॥

वेरंगविरंगीपहिरेंचीर । धरिहरिकेचरणगावैकबीर ७

पांचो जे सखीहैं पांचतत्त्वनकारंगविरंगचीरपहिरैं स्वरोदय में लिखे है श्वास तत्त्वनके रंग जुदेजुदे देखे परैहैं औ कोरी के घरके अनेक रंगकेचीर पहिरैहैं औ धमारि पक्षमें केशरि कस्तूरी करिकै गुलाल भोड़र करिकै चीर रंगबेरंग होयहैं तेपहिरै हैं सो यहितरहकी धमारि यासंसारमेंहै ताते हरिको चरण धरिकै कबीर गावैहैं कहैहैं याधमारिको प्रथम याकहिआयेहैं जौनेलोक में सदावसंतहै तहांप्रवेश करावो औइहां धमारि कहैहैं तात्पर्य यह कि याशरीरको तानावाना जननमरण में परिरह्यो है या धमारि तुमको देखायो जो रीझेहोहु तो मैं यहफगुवायहीमांगौं हौं कि जहां सदाबसंतहै वालोकमें प्रवेश करावो औ न रीझ्यो होहु तौतुम हरिहौ या तानावीना धमारि हरिलेउ या कहो कि ऐसी धमारि तैं न रचु कबीर कहैहैं कि हेजीव हरिके चरणधरि ऐसी विनयकरु७ ॥ इतितीसराबसंतसमाप्तम् ॥

अथचौथावसन्त ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि । मोहिंऐसितरुणिकहुकौननारि १ येदांतगयेमोरपानखात । औकेशगयलमोरगँगनहात २ औ नयनगयलमोरकजलदेत । अरुवैसगयलपरपुरुषलेत ३ औजान पुरुषवामोरअहार । मैंअनजानेकोकरशृंगार ४ कहकबीरबुढ़िया अनँदगाय । । पूतभतारहिबैठिखाय ५ ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि । मोहिंगेमितत्तरुणिकहुकौनिनारि १ ॥

बुढ़िया जो मायाहै सो हँसिकै कहैहै कि मैंनित्यही बारी हौं माया अनादिहै याते बुढ़ियाकह्यो है तामें प्रमाण ॥ अजामेकां लोहित इत्यादि औ हँसिकै कह्यो याते या आयोकि साधनकरिकै छोटे छोटे या कहै हैं कि हमको मायाजीर्ण ह्वै गई है अर्थात् अब छूटिजाइहै मैं नित्यही बारीहौं सबके कार्य रूपते उत्पन्न होतरहौंहौं औ मोहिंअसतरुणि कौनिनारिहै जो सबजीवन संग करौंहौं औ बुढाउँ कबौंनहीं हौं १ ॥

दांतगयेमोरपानखात । औकेशगयलमोरगँगनहात २

औ दांतगये पानखात जो कह्यो सोपानजोहै वेद ताकोतात्पर्य जो जानैहै यहीखावहै सोवेद तात्पर्यार्थ जानेते कामादिक जे मेरे दांतहैं जिनते जीव सज्जननको ज्ञानखाय लेइहै तेदांत मेरे जातरहे काम क्रोधादिक मायाके दांतहैं तामेंप्रमाण ॥ रत्नयोग ग्रंथकबीर को ॥ कामक्रोधलोभमोहमाया । इनदांतनसों सबजग खाया ॥ औ साहबको जो कथाचरित्ररूप गंगातामें जो नहायहै अर्थात् सुनैहै सो कुमति रूपकेश मेरेजातरहे हैं २ ॥

औनयनगयलमोरकजरदेत।अरुबैसगयलपरपुरुषलेत ३

साहबको ज्ञानरूप कज्जल जो कोई दियो तो मेरे नयनजो निरंजनहैं सोजात रहेहैं अर्थात् चैतन्यके योगकरिकै मायादेखै है औ नयनको निरंजन कहै हैं तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ नयन निरंजन जानि भरमसें मतपरै ॥ औ बैसजो मोरहै सो पर पुरुष जे श्रीरामचंद्र हैं तिनको लेत अपने वशकै बैसमोर जातरहै हैं अर्थात् चारिउ शरीर मोरनहीं रहते ३ ॥

औजानपुरुषवामोरअहार । मैंअनजानेकोकरशृंगार ४

औ ज्ञानपुरुषवा कहे जो याकहै है कि हमब्रह्मको ज

हमहीं ब्रह्म हैं तेतो हमार अहारही हैं आपने आत्मैको भूलिगये औ अज्ञान जे हैं तिनको शृंगारै किये हैं नानाविषदैकै लोभाय लेउहीं अर्थात् ज्ञानौ अज्ञानको विद्या अविद्या रूपीते बशकरि लियोहै धुनि याहै जिनको साहब आपनो हंसरूप दियोहै तेई बचेहैं याउपसंहार कियो ४ ॥

कहकबीरबुढ़िअनंदगाय । पूतभतारहिबैठिखाय ५

सो श्रीकबीरजीकहैहैं कि बुढ़िया जो मायाहै सो जैसोयापद कहिआये तैसो आनंदसों गावैहै वेद शास्त्रादिकन में बाणीरूपते सबजीव सुनैहैं परन्तु या नहीं जानैहैं कि जीव औ ब्रह्म मायाके भितरैहै पूत जो जीव है औ भतार जो ब्रह्महै ताको बैठि खाय है अर्थात् जबजीव संसारीभयो तबसंसारमें डारिकैखायो जबब्रह्म में लीनभयो औ सृष्टिसमयआयो तब वा ब्रह्मज्ञानहू नहीं रहि जाइहै ब्रह्महूको खायो ५ इतिचौथाबसंतसमाप्तम् ॥

———०———

अथपांचवांबसंत ॥

तुमबूझहु पण्डितकौननारि । कोइनाहिं बिआहलरहकुमारि १
यहिसबदेवनमिलिहरिहिदीन्ह । तेहिचारिहुयुगहरिसंगलीन्ह २
यहप्रथमरहि पद्मिनिरूपआय । हैसांपिनि सबजग खेदिखाय ३
यावरयुवतीवेवारनाह । अति तेजतियाहै रैनिताह ४ कहकबीर सब जगपियारि । मबअपनेवलकवैरहलमारि ५ ॥

तुमबूझहुपंडितकौननारि। कोइनाहिंबिआहलरहकुमारि १
यहिसबदेवनमिलिहरिहिदीन्ह । तेहिचारिहुयुगहरिसंगलीन्ह २

श्रीकबीरजीकहैहैं कि हे पण्डिततुमबूझौतौ या शङ्खिनी हस्तिनी चित्रिनी पद्मिनी चारि प्रकारकी नारिनमें कौननारिहै यामाया अर्थात् एकौकेलक्षण नहीं मिलत एकौकेलक्षण जोमि-

लते तौ कुमारि न रहती बिआहिजाती याहीते अबतक कुमारि है १ जब समुद्र मथिगयो लक्ष्मी कढ़ी सो सब देवनिमिलि हरि को देतभये सो हरि चारिहुयुग संगही राखतभये २ ॥

यहप्रथमहिपद्मिनिरूपआय। हैसांपिनिसबजगखेदिखाय ३
यावरयुवती वेवारनाह। अति तेजतियाहै रैनिताह ४

प्रथम तोब्रह्म जेहैंविष्णु तिनके नाभिमें कमलिनीहैसोलक्ष्मी रूपहै सो आय अब धनरूप सांपिनिह्वै संसारको खेदि खायहै ३ यामाया वर युवतीहै कहेश्रेष्ठहै वारजे लरिका ब्रह्मा विष्णु महेश तेई याके नाह हैं औ ताहकहे तौन जो संसाररूपी रैनिहै तौने में अति तेजहै ४ ॥

कहकबीरसबजगपियारि। यहअपनेबलकवैरहलमारि ५

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि यामाया सब जगत्‌को पियारिहै आपन बालकजे जीव तिनको मारिरही है अर्थात् सब जीवनको बांधे है जनन मरन करावैहै ५ ॥

इतिपांचवांवसन्तसमाप्तम् ॥

अथछठवांवसन्त ॥

माईमोरमनुषहै अतिसुजान। धन्धाकुटिकुटि करैबिहान १ बड़ेभोरउठिअँगनबहार। बड़ीखांचलै गोवरडार २ बासी भात मनुषलैखाय। बड़घैलालै पानीजाय ३ अपनेसैंयांबांधीपाट। लैरेबेंचौहाटैहाट ४ कहकबीरयेहरिकेकाज। जोइयाकेढिंगर कोन है लाज ५ ॥

माईमोरमनुषहैअतिसुजान।धन्धाकुटिकुटिकरैबिहान १
बड़े भोर उठि अँगनबहार। बड़ी खांचलै गोवरडार २
बासीभात मनुषलै खाय। बड़ घैला लै पानी जाय ४
अपने सैंयां बांधी पाट। लैरे बेंचौ हाटै हाट २

कहकबीर येहरिकेकाज । जोइयाकेढिंगर कौनहैलाज ५

जीवशक्ति कहैहै कि हे माई माया मोर मनुष जो मन सोब- ड़ा सुजानहै धंधा जो बाल पौगंड किशोर ताहीको कूटिकूटिकहे कैकै बिहानकहे देहान्त कैदेइहै सुजान यातेंकह्योकिमोको नहीं जानदेइहै आपही जानैहै बड़ेभोर कहे जबदूसरभयो तब आंगन वहार कहे गर्भवासमें ज्ञान दियो अन्तःकरण साफ कियो यही वहारवो है औ बड़ीखांच जो प्रसूतवायु तौनेते गर्भरूप गोबर टारयो अर्थात् बाहर निकारयो औ बासीभात जो पूर्वकर्म ताको दुःख सुख आपही भोगैहै औ घैला जो बुद्धिहै ताकोलैकै गुरुवन के इहां नानाबानी रूप पानी ताको लेनजाय है अर्थात् बुद्धिते निश्चयकरैहै ऐसो मोर सैंयांहै ताको पाट जो ज्ञान तामें बांधे पाऊं तौ हाटहाटमें बेंचौं अर्थात् साधुनको संग करिकै अपनो औ याको सम्बन्ध छोड़ायदेउं सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि जोइया जो जीव तौनेको ढिंगरा जो मन सो हरिजे श्रीरामचन्द्र तिनको काज में जो नहीं लागै तौ याको कौन लाजहै धुनि याहै जो साहबमें लगै तौ यहू शुद्धहोइजाय ५ ॥

इतिछठवांबसन्तसमाप्तम् ॥

———०———

अथसातवांबसन्त ॥

घरहीमेंबाबुलबढ़ीरारि । अँगउठिउठिलागैचपलनारि १ वह बड़ीएकजेहिपांचहाथ । तेहिपचहुँनकेपच्चीससाथ २ पच्चीसबता- वेंऔरऔर । वेऔरबतावैकइठौर ३ सोअंतरमध्येअंतलेइ । झक- झेलिझुलावेजीवदेह ४ सवआपनआपनचहैंभोग। कहुकैसेपरिहै कुशलयोग ५ वीवेकविचारनकरैकोइ । सवखलकतमाशादेखिलो इ ६ मुखफारिहँसैंसवरावरंक । तेहिधरेनपैहौएकअंक ७ नियरे बतावेंखोजैंदूरि । वहचहुंदिशिवागुरिरहलपूरि ८ हैलक्षअहेरीएक

जीउ। तातेपुकारैंपीउपीउ ९ अबकीवारैंजोहोयचुकाव। ताकी कबीरकहपूरिदाव १० ॥

घरहीमेंबाबुलबढ़ीरारि। अँगउठिउठिलागैचपलनारि १ वहबड़ीएकजेहिपांचहाथ। तेहिपचहुँनकेपच्चीससाथ २

हेबाबूजीव तुम्हारेघटहीमेंकहे शरीरहीमेंरारिबढ़ीहै काहेते कि हमेशाउठिउठि चपलनारि जो माया सोतेरेपीछेलगी है १ तामें वह एकसबतेबडीकाया जाकेपांच हाथकहे पांचतत्वहैं पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पुनि एक एक तत्वनकेसाथ पांचपांच प्रकृतिहैं असकैकैपचीस प्रकृतिहैं सो कहेहैं मन बुद्धि चित्त अहंकार चौथ पांचोंअन्तःकरणजामें चारयोरहेहैं येसबनिराकारहैं ऐसेआकाशके साथहै औप्राण अपान समान व्यानउदानये कर्मकरावैहैं एतेवायु केसाथहैं औ आंखी कान नाक जिह्वा त्वचा येऊविषयकोप्रकाश करैहैं एतेअग्निकेसाथहैं औ शब्द स्पर्शरूप रसगंध सो येऊ पांचौ तृप्तिकर्ताहैं एते जलपंचकहैं जलकेसाथहैं औ हाथपांव मुख गुदा लिंगयेऊ आधारभूतहैं एतेपृथ्वीकेसाथहैं यहीरीति पचहुँनतत्वन के साथ पचीसौ प्रकृतिहैं २ ॥

पच्चीसबतावैंऔरऔर। वेऔरबतावैंकईठौर ३

सोये पच्चीसौ प्रकृति जेहैं ते और और अपने विषयकोबतावैं हैं सो कहैहैं अंतःकरणको विषय निर्विकल्प मन व विषय संकल्प विकल्प चित्तको विषयवासना बुद्धि को विषय निश्चय अहंकारको विषय करतूति प्राणको विषयचलब अपानको विषय छोड़ब समानको विषयबैठब उदानको विषयउठब व्यानको विषय पौढ़ब कानको विषय सुनब आंखोंको विषयरूप नाकको विषय सूंघबो जीभको विषय बोलिबो त्वचा को विषय स्पर्श शब्दको विषय रागरस स्पर्श को विषय कोमलत्व कठिनत्व शीतलत्व उष्णत्व रूपकोविषय सुंदरत्व रसकोविषयस्वाद गंधको

विषय सुबास इनको वेपचीसौ प्रकृतिबतावै हैं ईसब कईठौर और बतावे हैं कहे चौरासीलक्षयोनि जीवको बतावैहैं ३॥

सोअंतरमध्येअन्तलेइ। झकझोलिझुलाउबजीवदेइ ४
सबआपनआपनचहैंभोग। कहकैसेपरिहैकुशलयोग ५
बीबेकबिचारनकरैकोइ। सबखलकतमाशालखैसोइ ६

सोयेविषय कैसेहैं कि अंतरमें अंतलेइहैं कहे गड़िजातेहैं झक झोलिकैकहे जोरावरी झुलाउबजोआवागमनहै सोजीवकोदेइहै ४ सोयेसब आपन आपन भोगचाह्यो तबजीवके कुशलकोयोगकैसे परै अर्थात् कैसे कल्याणपावै ५ सोये बंधनको बिबेककहे बिचार कोईनहीं करैहै कि क्यासांचहै क्याझूठ है सब खलककहे सब संसारकेलोग बाणी विषयनको तमाशा देखैहैं औ वहीमें अरुझि रहेहैं ६॥

मुखफारिहँसैसबरावरंक। तेहिधरननपैहौएकअंक ७
नियरेबतावैंखोजैंदूरि। वहचहुंदिशिबागुरिरहलपूरि ८
हे लक्ष अहेरी एक जीउ। ताते पुकारै पीउ पीउ ९

सोवही विषयमेंपरिकै मुखफारिकै रावरंकसबहँसैंहैं या दुखदाईहै विषय या अंक कोऊनहीं धरनपावै है तेहिको ७ सो वेद शास्त्र पुराण साहबको तौ नियरेही बतावै हैं औ दूरिखोजै हैं काहेते कि मायारूप बागुरि सर्बत्र पूरिरही है ८ सो येतो सब शिकारी हैं औलक्षकहे निशानएकजीवही है ताते हे जीव तैं पीउपीउपुकारै तबहीं तेरोबचाउहै ९॥

अबकीबारैजोहोयचुकाव। ताकीकबीरकहपूरिदाव १०

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि अबकीबारजो मानुष शरीरमें चुकाव होयगो औसाहबको न जानैगो तौ ताकी पूरिदाव है काहेते कि अबकीबारके चूकेफेरि ठिकाना न लगैगो चौरासीलाख योनिन

में भटकैगो फेरि जो भागन शरीरपावैगो तबपुनि नानामतनमें लगिकै चौरासीलाख योनिमेंभटकैगो उद्धार न होइगो तातेसब- किवार जो समुझै औ साहबको जानै तौ तेरो पूरोदांवपरै तामें प्रमाण कबीरजीकीसाखी॥ लखचौरासीभटकिकै पौमें अटको आय॥ अबकीपौजोनापरै तौ फिरि चौरासी जाय १०॥

इतिसातवांवसन्तसमाप्तम्॥

अथआठवांवसंत॥
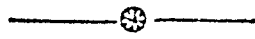
करपल्लवकेबलखेलैनारि। पंडितजोहोयसोलेइविचारि १ क- परानहिंपहिरैरहैउघारि। निरजीवैसोधनअतिपियारि २ उलटी पलटीबाजैसोतार। काहुहिमारैकाहुहिउबार ३ कहकबीरदासन केदास। काहुहिसुखदेकाहुहिउदास ४॥

करपल्लवकेबलखेलैनारि।पंडितजोहोयसोलेइविचारि १

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि नारिजो मायासो पल्लव जो राम नाम सोकरमेंलैकै वाहीकेबल खेलैहै जब प्रथम यह जगत्की उत्पत्तिभई तब रामनामलैकै वाणी निकसी है तामें प्रमाण॥ रामनामलैउचरीबाणी॥ ताहीजगतमुखअर्थमें चारिउ वेद ईश्वर ब्रह्म सबसंसार निकसेहैं तामें प्रमाणसायरको॥रामनामके दोई अक्षर चारिउवेद कहानी॥सोतौनेहीके बलते सबसंसार बांधिलि- योहै सो जोकोई पंडितहोइ सोविचारिकै लैलेइ जगत्मुखसाहब मुख यामें दोऊअर्थहै सो साहबमुख अर्थ रामनाममें लेइ जगत् मुखअर्थ केवल मायाखेलैहै ताको छोड़िदेइ १॥

कपरानहिंपहिरैरहउघारि।निरजीवैसोधनअतिपियारि २ उलटीपलटीबाजैसोतार । काहुहिमारैकाहुहिउबार ३

सो वा नारि माया कैसी है कि कपरा नहीं पहिरै उघारही

रहैहै अर्थात् वहमाया सबकोमूंदेहै वाको मूंदनवारो कोई नहीं है जो कहो वाको ब्रह्म मूंदहोइगो तो निर्जीव जो ब्रह्म सो धन जो माया ताको अति पियारहै अर्थात् वाहूको सबलित कियेहै २ औ पुनिकैसी है कि उलटी पलटीतारबाजैहै कहे काहूकोअविद्या में डारिकै नरकदेइ है औ काहूको विद्यारूपते स्वर्गसत्यलोकादि देइ है ३ ॥

कहकबीरदासनकेदास। काहूसुखदैकाहूउदास ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि दासनके दासकहे ब्रह्मादिक जे माया के दास दास तिनहूंके दास जीव तुम्हारीमाया कैसे छूटे वेब्रह्मादिकै मायातेनहीं छूटे यामाया कैसी है काहूको तोसुखदहै काहू कैति उदासहै कहे उनको स्पर्श नहीं करिसकैहै अर्थात् जे साहब को जानैहैं तिनकी कैति उदासहै तिनहींके दास तुमहूंहोउ तब उबार होइगो माया ब्रह्मजीवके परे श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण ॥ रामएवपरंब्रह्मरामएवपरंतपः। रामएवपरंतत्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकं ॥ इतिश्रुतेः ४ ॥

इतिआठवांबसंतसमाप्तम् ॥

अथनवांबसंत ॥

ऐसो दुर्लभजातशरीर। रामनामभजुलागैतीर १ गयेबेणुबलिगे हैं कंस। दुर्योधनगयेबूड़ेबंस २ पृथुगयेपृथ्वीकेराव। बिक्रमगयेरहे नहिंकाव ३ छौचकवैमंडलीकेभार। अजहूंहोनलदेखुबिचारि ४ हनुमतकश्यपजनकोवार। ईसबरोंकेयमकेधार ५ गोपीचन्द भलकीन्होयोग। रावणमरिगोकरतैभोग ६ जातदेखुअससबके जाम। कहकबीरभजुरामैनाम ७ ॥

ऐसोदुर्लभजातशरीर। रामनामभजुलागैतीर १
गये बेणुबलिगेहैं कंस। दुर्योधनगये बूड़ेबंस २

पृथु गये पृथ्वी के राव। विक्रम गये रहे नहिंकाव ३
छौचकवैमंडलीके झार। अजहूंहो नल देखुविचार ४
हनुमत कश्यप जनकौबार। ई सब रोंके यमके धार ५
गोपीचँदभल कीन्होंयोग। रावणमरिगो करतैभोग ६
जात देखु अस सबकेजाम। कहकबीर भजुरामैनाम ७

चौरासीलाखयोनिनमें भटकतभटकत यहशरीरपायो दुर्लभ सोवृथाही जायहै सोरामनामको भजुले वाकरुजातेतीरलगैवेणु वलि कंस दुर्योधन पृथु विक्रम ये छवो चक्रवर्ती भूमिमंडलकेते शरीर छोड़िकै जातभये सोनर अजहूं विचारिकै तूदेखु औ हनुमतकश्यप अदिति जनककहे ब्रह्मा बारकहे सनकादिकतेये अबलौं रामनाम कहि यमको धाररोके हैं अर्थात् जे उनके मतमें जाय रामनाम कहैहैं ते संसारतेछूटिही जायहैं उनपै यमको बल नहीं चलैहै औ गोपीचन्द योगीरहे रावण भोगीरह्यो पै रामनाम नहीं भजे ते दोऊ मरिगये सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि याही भांति सबके जामाजे शरीर तेजात देखैहैं ताते रामनामभजु भजसेवायांधातुहै ताते तहूंरामनामकी सेवाकरु तबहीं संसारसमुद्र के तीरलगैगो नहीं तो बहिजायगो रामनामके जपैया नहीं मरैहैं तामेंप्रमाण कबीरजीकोपद ॥ हमनमरेंमरिहैसंसारा। हम कोमिलाजियावनवारा॥ अबनामरौंमोरमनमाना। सोइमुवा जिनरामनजाना। साकतमरैसंतजनजीवै। भरिभरिरामरसायनपीवै॥ हरिमरिहैंतौहमहूमरिहैं। हरिनमरैंहमकाहेकोमरिहैं॥ कहकबीरमनमनहिंमिलावा। अमरभयेसुखसागरपावा ७॥

इतिनवाँवसंतसमाप्तम्॥

अथदशवांवसंत ॥

सवहीमदमातेकोइनजाग। सोसँगहिचोरघरमूसनलाग १ योगीमदमातेयोगध्यान। पंडितमदमातेपढ़िपुरान २ तपसीमदमातेतपकेभेव। संन्यासीमातेकरिहमेव ३ मोलनामदमातेपढ़िसोसाफ। काजीमदमातेकैनिसाफ ४ शुकदेवमतेऊधोअकूर। हनुमतमदमातेलियेलँगूर ५ संसारमत्योमायाकेधार। राजामदमातेकरिहँकार ६ शिवमातिरहेहरिचरणसेव। कलिमातेनामदेवजयदेव ७ वहसत्यसत्यकहसुम्रितवेद। जसरावणमारेघरकेभेद ८ यहचंचलमनकेअधमकाम। सोकहकवीरभजुरामनाम ९॥

सवहीमदमातेकोइनजाग। सोसँगहिचोरघरमूसनलाग १ योगीमदमातेयोगध्यान। पंडितमदमातेपढ़िपुरान २ तपसीमदमातेतपकेभेव। संन्यासीमातेकरिहमेव ३ मोलनामदमातेपढ़िसोसाफ। काजीमदमातेकैनिसाफ ४ शुकदेवमतेऊधोअकूर। हनुमतमदमातेलियेलँगूर ५ संसारमत्योमायाकेधार। राजामदमातेकरिहँकार ६ शिवमातिरहेहरिचरणसेव। कलिमातेनामदेवजयदेव ७ वहसत्यसत्यकहसुम्रितवेद। जसरावणमारेघरकेभेद ८ यहचंचलमनकेअधमकाम। सोकहकवीरभजुरामनाम ९

यहपदको समेटिकै अर्थ करैहै यहसंसारमें सबकोई मदमें मातभयो जगतकोई न भयो सो जिनको जिनको यह पदमें गनायआये तेतेप्रथम जैसे रावणघरके भेदतेमारेगयो तैसेमनके भेदते मारेगये परन्तु इनसबमें जे रामनामको जप्यो तेई छूटैहैं हनुमदादि शुकादिजे कहिआये यह मनके तो अधम काम हैं जे रामनामको नहीं जाने ते संसारहीमेंपरे तातेतैंहूंरामनामको भजुतवहीं तेरोउबार होइगो औरीभांति संसारहीमेंपरेरहैगो औ

संसारसागरकोपारकरनवारो एकरामनामहीहै तामें प्रमाण ॥ माधवदुखदारुणसहिनजाइ । मेरीचपलबुद्धितातिकाबसाइ ॥ तन मनभीतर वसमदनचोर । तवज्ञानरतनहरिलीनमोर ॥ हौं मैं अनाथप्रभुकहौंकाहि । अनेक बिगूंचेमैंकोआहि ॥ औसनकसनंदनशिवशुकादि । आपुनकमलापतिभोब्रह्मादि ॥ योगीयंगमयति जटाधारि । अपनेअवसरसबगयेहारि ॥ सोकहकबीरकरिसंतसात । अभिअंतर हरिसों करहुबात ॥ मनज्ञानजानकरिकरिविचार । श्रीरामनामभजुहोउपार ९ इतिदशवांबसंतसमाप्तम् ॥

अथग्यारहवांबसंत ॥

शिवकाशी कैसीभै तुम्हारि । अजहूंहो शिवदेखहुविचारि १ चोवा अरु चन्दनअगर पान । सबघरघरअस्मृतिहोइपुरान २ बहु बिधि भवननमें लगें भोग । असनगरकोलाहलकरतलोग ३ बहु विधि परजानिर्भयहैतोर । तेहिकारण चितहै ढीठ मोर ४ हमरे बालककरयहैज्ञान । तोहींहरिको समुझवैआन ५ जगजोजेहिसों मन रहललाय । सोजिवकेमरेकहुकहँसमाय ६ तहँजोकछुजाकर होयअकाज । हैताहिदोष नहिंसाहबलाज ७ तब हर हर्षित सो कहल भेव । जहँहमहीहैं तहँदुसरकेव ८ तुमदिनाचारि मनधरहु धीर । पुनि जसदेखहु तस कहकबीर ९ ॥

शिवकाशीकैसीभैतुम्हारि । अजहूंहोशिवदेखहुविचारि १
चोवाअरुचन्दनअगरपान । सबघरघरअस्मृतिहोइपुरान २
बहुबिधिभवननमेंलगेंभोग । असनगरकोलाहलकरतलोग ३
बहुबिधिपरजानिर्भयहैंतोर । तेहिकारणचितहैढीठमोर ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जब मैं बालापनमें साधन करतरह्यों है तबहींदेवतनको दर्शनहोतरह्योहैसोमैंमहादेवजीते पूंछ्योकि

यह काशी तुम्हारी कैसी भईहै अजहूं तो बिचारि देखो तुम्हारी काशी में चन्दन चोवा अगर लगावै हैं पान खायहैं घरघरस्मृति पुराण होइहैं विविधभांतिके मेवा पकवान भोग लगावै हैं यही रीति ते नगरमें कोलाहललोग करिरहेहैं ऐसे परजा तुम्हारे नि-र्भय होइरहेहै तौनेकारणते मोरौचितढीठ होइगयोहै ४॥

हमरेबालककोयहैज्ञान। तोहींहरिकोसमुझवैआन ५
जगजोजेहिसोंमनरहललाय। सोजिवकेमरेकहुकहसमाय ६

सो हम जे सबबालकहैं तिनकर यहै ज्ञानहै तुम जे हो महादेव औ हरिजेहैं श्रीरामचन्द्र तिनकोतो समुझवै काशीवाले आनहैं काहते किवेदद्वार यह कहते हैं कि जबसंसारछूटैहै ज्ञान होइहै तब मुक्ति होइहै येसब जो काशी में मरैहैं सोमुक्ति ह्वैजाइ हैं भोग करै हैं सो यहवेदद्वारा कहोहौ की कहे बिलक्षण समुझ वैहै ५ जगत्में जो जौनेमें मनलगावैहै सो शरीरछूटे कहो क हां समायहै अर्थात् जाही में मनलगावैहै ताहीमें समायहै यह वेदमें लिखैहै ॥ अंतेयामतिःसागतिः॥ सो हम तुमसों पूछै हैं कि विषयमें मनलगाये मरे जेकाशीकेलोग कहांजायहैं ६॥

तहँजोकछुजाकरहोइअकाज। हैताहिदोषसाहबनलाज ७
हरहर्षितकैतबकहलभेव। जहँहमहींहैंतहँदुसरकेव ८
तुमादिनाचारमनधरहुधीर। पुनिजसदेखहुतसकहकबीर ९

सो जाकर अकाज होइहै ताहीको दोषहै काहेते वाके कर्महीते अकाज होयहै साहब जोआपहैंश्रीरामचन्द्रतिनको कौनलाज है जो आप काशी के जीवन मुक्ति देइहैं सो कौनेहेतुते कहांऔर संसारी जीव आपका न होइ काशी आपका है ७ तब हर्षितह्वैके हरमोसे भेदबतायो कि जहांहमहैं तहां दूसरकोहै काशीमेंऔसब संसारमें जहांहमहैं अर्थात्हमकोजेजानैहैं तेकेकर्मऔकालईकैसे

जोरकैसकैं काहेते किजवहमब्रह्मते रामनाम पायोहै तबजान्यो है ताहीते मुक्ति करैहैंरामनामको उपदेश करि श्रीरघुनाथजीको ज्ञानदेइहै वाको तबमुक्तिहोइहै सोकाशीहूमें रामनामदेमुक्तिकरै है औरहू देशमेंरामनाम पाइकै मुक्तिह्वैजाइहै ८सोदिन चारतुम मनमें धीर धरौगुनि जसदेख्यो तस हे कबीर तुमकह्यो अर्थात् जैसे हम रामनाम दैकै जीवनको उद्धार करतेहैं तैसे तुमहूं करौगे तब तसदेखोगे किरामनामते कैसो विषयी होइ पै उद्धारई होइजाइहैऔकाशीमेंरामनामहीते मुक्तिहोइ है महादेवदेइहै तामें प्रमाण ॥ पेईंपेईंश्रवणपुटकेरामनामाभिरामध्येयंध्येयंमनसि सततंतारकंब्रह्मरूपं। जल्पंजल्पंप्रकृतिविकृतौ प्राणिनांकर्णमूले वीथ्यांवीथ्यांमतिजनः कोपिकाशीनिवासी ९ इतिस्कांदे ॥

इतिग्यारहवांबसन्तसमाप्तम् ॥

अथबारहवांबसंत॥

हमरे कहल करनहिंपतियार। आपु बूड़े नल सलिलधार १ अंधा कहै अंध पतिआय। जस बिश्वाके लगनै जाय २ सो तो कहियेअतिहिअबूझ। खसम ठाढ़ ढिग नाहीं सूझ ३ आपनआपन चाहहिं मान। झुठपरपंच सांच कै जान ४ झूठाकबहुं करौ नहिं काज। मैं तोहिंबरजौं सुनु निरलाज ५ छांड़हुपाखंडमानहु बात। नहिंतौपरिहौयमकेहाथ ६ कहकबीर नलचलै नसोझ। भटकिमुये जस बन के रोझ ७ ॥

हमरेकहलकरनहिंपतियार। आपुबूड़ेनलसलिलधार १ अंधाकहैअंधपतिआय । जसबिश्वा के लगनेजाय २ सोतोकहियेअतिहिअबूझ। खसमठाढ़ढिगनाहींसूझ३

श्री कबीरजी कहैहैं कि हमरे कहे ये जीवकोई नहीं पतिआ-

यहैं साहब मेंकोई नहीं लगतेहैं आप सुखीबानी रूप सलिलमें बूड़ेजाते हैं बानी को पानी आगे कहिआयेहैं १ आंधर जे गुरुवा लोगहैं ते नानामतन को बतावैहैं आँधर जे जीवते ग्रहण करैहैं साहब को नहीं जानैहैं जैसे वेश्या की लगन व नानापुरुषतेरमैं है एककोजानतिही नहींहै ऐसे नाना उपासना मानैहैं सोसाहब को मानतहीनहीं हैं २ सो ते जीवन को हम अतिही अबूझक-हैहैं काहेते कि श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामी रूपते ढिगहीमेंहैं तिनको नहीं सूझैहै ३ ॥

आपनआपनचाहहिंमान । झुंठपरपंसचांचकरिजान ४
झूठाकबहुंकरौनाहिंकाज । मैंतोहिंबरजौंसुनुनिरलाज ५
छांड़हुपाखँडमानहुबात । नहिंतोपरिहौ यमके हाथ ६

आपन आपन मानजोहै बड़ाई सिद्धता तौनेको चाहैहैं झूठ परपंच जो धोखा ब्रह्मआत्मै मालिकहैं याको सांचमानै हैं ४ सो जो तैं या झूठो विचार करिराखैहै कि हमहीं ब्रह्महैं आत्मा मालिकहै सो येझूठे काज तैं नकरु हे निर्लज्जजीव केतो जन्म मारो गयो है पुनिवहैकाम करै है सो मैं तोकोबरजौंहौं तू याकामन करु साहब को जानु ५ सो मेरी बात तू मानु पाखंड को छोड़िदे नहींतो यम जेहैं तिनके हाथ कहे गड़वा में परिहौ यमदूतडाढ़ी पकरिकै डारिदेयँगे ६ ॥

कहकबीरनलचलेनसोझ । भटकिमुयेजसबनकेरोझ ७

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे नल सोझकहे सूधो अन्तर्यामी जे साहब समीप तिनको नजान्यो दूरिहैं जेनानाउपासना तिन में बनके रोझकी नाईं भटकिकै मरिगये अर्थात् रोझ औघटबाग तोहै शिकारी सो भेंटभई मारोगयो ऐसे नाना उपासनाकरत रह्यो यमदूत डाढ़ी पकरि नरकमें डारिदियो तामें प्रमाण ॥ दोहा

हिस्साव तवज्वावकादेहुगेपकरिफिरिस्तलैजायडाढ़ी॥मौसाहिबै के जानेसेछूटैगो तामेंप्रमाण कवीरजीकोपद ॥ चेतनदेकैरेजगधंधा॥रामनामको मरमनजानै मायाकेरसमंधा॥जनमत तवहिंकाह लै आया मरतकाहलैजासी। जैसेतरुवर वसतपखेरू दिवसचारि के वासी॥ आयाथापी और न जानै जनमतही जरिकाटी। हरि के भक्ति विनायहि देही फिरिलौटेहिय फाटी॥ कामरु कोह मोहमद मत्सर पर अपवादा सुनिये। कहै कवीरसाधुकी संगति रामनाम गुनभानिये ७॥ इति वारहवां वसन्त समाप्तम्॥

इतिवसन्तसम्पूर्णम्॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथचौंतीसीप्रारम्भः ॥

ओंकारआदिहिजोजानै।लिखिकैमेटिताहिफिरिमानै॥वेओंकारकहैसबकोई। जिनहुं लखा सो विरलासोई १ ककाकमलकिरणिमेंपावै। शशिविगसितसंपुटनहिंआवै॥ तहांकुसुंभरंगजोपावै। औगहगहकैगगनरहावै२ खखाचाहै खोरिमनावै। खसमहिंछोड़ि दशौदिशिधावै॥ खसमहिंछोड़िक्षमा ह्वैरहई। होयअखीनअक्षय पदगहई ३ गगागुरुकेवचनैमानै। दूसरशब्द करैनहिंकानै॥तहां विहंग कतहुंनहिंजाई। औगहगहकैगगनरहाई ४ घघाघटबिनशे घटहोई। घटहीमें घटराखुसमोई॥ जोघटघटैघटैफिरिआवै। घट हीमें फिरिघटैसमावै ५ ङङानिरखतनिशिदिनजाई। निरखत नैनरहा रटलाई॥ निमिषएकलौं निरखैपावै। ताहिनिमिषमें नैनछिपावै ६ चचाचित्ररचोबहुभारी। चित्रहि छोड़ि चेतुचित्रकारी॥जिनयहचित्रविचित्र उखेला॥चित्रछोड़ितू चेतुचितेला७ छछाआहि छत्रपति पासा। छकिकै रहसि मेटि सबआसा॥ मैं तोहीं छिनछिन समुझाया। खसमछोड़ि कसआपु बधाया८जजा यातनजियतहि जारो। यौवनजारियुक्तिजोपारो॥ जोकछुजानिजानि परजरै।घटहिज्योतिउजियारीकरै ९झझाअरुझिसरुझि कितजाना। हीठतढूंढतजाहिपराना॥ कोटिसुमेरुढूंढिफिरिआवै। जोगढ़गढ़ागढ़हिसोआवै १०ञञानिरखत नगरसनेहू। करुआपन निरवारु सदेहू॥नहिंदखी नाहिंआपभजाऊ। जहांनहींतहँतन मन लाऊ ११ टटाविकट वातमनमाहीं। खोलि कपाट महल में जाहीं॥ रहैलटपटे जुटितेहि माहीं। होहिं अटलतेकतहुंन जाहीं १२ ठठाठौरदूरिठगनीरे। नितकेनिठुरकीनमनधीरे॥ जेहिठगठगसबलोगसयाना। सो ठगचीन्हि ठौरपहिचाना १३

डढाडरकीन्हें डरहोई। डरहीमेंडरराखुससोई ॥ जोडरडरैडरैफिरि आवै। डरहीमेंपुनिडरहिसमावै १४ ढढाढूढतईकतजाना। ढीग-रढोलहिजाइलोभाना। जहांनहीं तहँसवकछुजानी । जहांनहीं तहँलेपहिचानी १५ णणादूरिवसौरेगाऊं । रेणणाटूटैतेरानाऊं ॥ मुयेएतेजियजाहीघना । मुयेएतादिक केतिकगना १६ तता अ-तित्रियोनाहिंजाई । तनत्रिभुवनमें राखुछपाई ॥ जोतनत्रिभुवन माहँछपावै । तत्त्वहिमिलि सोतत्त्वजोपावै १७ थथाथाहथहोन-हिंजाई । यहथीरेवह थीर रहाई ॥ थोरे थोरे थिरहोभाई । विन थंभे जसमन्दिर जाई १८ ददादेखो विनशनहारा। जसदेखोत-सकरो विचारा। दशोद्वारमें तारीलावै। तव दयालको दर्शनपा-वै १९ धधा अर्द्धमाहँ अँधियारी । जस देखै तसकरै विचारी ॥ अर्द्ध छोड़ि ऊरधमनलावै। अपामेटिकैप्रेमवढ़ावै २० ननावोचौ-थेमें जाई । रामकाग छहहै वरषाई ॥ नाह छोड़ि किय नरकवसे-रा। अजौंमूढ चितचेतु सवेरा २१ पपा पापकरै सवकोई। पा-पकेधरे धर्म नाहिंहोई ॥ पपाकहै सुनोरेभाई । हमरेसे ये कछूनपा-ई २२ फफाफल लागोवड़दूरी। चाखैसतगुरु देवनतूरी। फफा कहैसुनोरेभाई। स्वर्गपतालकी खवरि नपाई २३ ववा वरवरकर सबकोई। बरबर किये काजनहिं होई ॥ ववा वातकहै अरथाई। फलका मर्म न जानेहु भाई २४ भभा भर्म रहा भरि पूरी। भभरेतेहै नियरेदूरी ॥ भभाकहै सुनोरे भाई। भभरे आवे भभरे जाई २५ ममासेये भर्म नपाई। हमरे ते इन मूल गँवाई ॥ ममामूल गहल मनमाना। मर्मीहोहि सो मर्महिजाना २६ यया जगतरहा भरिपूरी। जगतहुतेययाहैदूरी ॥ ययाकहै सुनौरेभाई। हमरेसेये जैजैपाई २७ रररारारि रहा अरुझाई। रामकहै दुखदा-रिदजाई ॥ रराकहै सुनौरे भाई। सतगुरु पूछिकै सेवहुजाई २८ लला तुतरे वातजनाई। तुनरेपावे परचैपाई ॥ अपनातुतुर और कोकहई। एकै खेतदुनो निरवहई २९ ववावह वहकह सवकोई। वहवहकहे काजनहिं होई ॥ ववाकहै सुनहुरेभाई। स्वर्गपताला

की खबरिनपाई ३० शशा शरद देखै नहिंकोई। सरशीतलता एकहिहोई॥ शशाकहै सुनौरे भाई। शुन्यसमानचलाजगजाई ३१ पपा खर खर कह सब कोई। खर खरकहे काजनहिंहोई। पपाकहै सुनहुरेभाई। रामनाम लैजाहु पराई ३२ ससा सरारचो वरिआई। सरवेधे सवलोग तवाई। ससाके घर सुनगुन होई। यतनी बात न जानै कोई ३३ हहा होइहोत नहिंजानै। जबहीं होइ तवै मनमानै। है तो सही लहै सबकोई। जब वाहोइ तब या नाहिंहोई ३४ क्षक्षा क्षणपरलै मिटिजाई। क्षेवपरे तवकोसमुझाई॥क्षेवपरेकोउअंतनपाया। कहकबीरअगमनगोहराया ३५॥

ओंकारआदिहिजोजानै। लिखिकैमेटिताहिफिरिमानै॥
वैओंकारकहौंसबकोई। जिनहुँलखासोबिरलासोई १

ओंकारको आदि जो रामनाम ताको जोकोईजानै पिंडाण्ड ब्रह्माण्डको चाहे लिखिकै कहे उत्पत्तिकै मेटैकहे नाशकरै फिरि मानैकहे पालनकरै सोवह ओंकारको तो सबैकोई कहैहैं परन्तु जिनवाको लखाहै सो कोई बिरलाहै ताके लखिबेको प्रकार हौं कहौहौं अकार लक्ष्मणको स्वरूपउकार शत्रुघ्नको स्वरूपमकार भरतको स्वरूप अर्द्धमात्राश्रीरामचन्द्रको स्वरूप संपूर्णप्रणव श्री जानकीजीकोस्वरूप यहिरीतिते जोकोईप्रणवको जानैसोबिरला है कौनी रीतिते जपकरै त्रिकुटीमें अकार कंठमें उकारहृदय में मकारनाभिमें अर्द्धमात्रा गैवगुफामें संपूर्ण प्रणव ऐसो एक एक मात्राको अर्थविचारत घंटानादकी नाईं जप करनवारो बिरला है साहबमुख यह अर्थ हम दिग्दर्शन करदियोहै और विस्तार ते अर्थ हमारेरहस्य त्रयग्रन्थमें है और सब जगत्मुखअर्थ है १॥

कक्काकमलकिरणिमेंपावै। शशिविगसितसंपुटनहिंआवै॥
तहांकुसुम्भ रंगजोपावै। औगहगहकै गगनरहावै २

काकहिये सुखको सोककाकहे सुखको सुख जो साहबतिनको

किरणि जो अर्द्धमात्राताको नाभि कमलमें ध्यानकरि जीव जानै औ शशि जोचंद्रनाडी तौनको अमृत सींचिकै विगसित कियेरहै संपुटित नहोनपावै औ तहैं कुसुंभरंग जोप्रेमताकोपावै तौअगह जोसाहव जे मनवचन करिकै नहीं गहेजाइँ तिनकोगहिकै गगन जो हृदय आकाश तामेंराखैयाके आवरणके मंत्र औ ध्यान को प्रकार हमारे शान्तशतकमें लिख्योहै ककार सुखकोकहे हैं तामें प्रमाण । कःप्रजापतिरुद्दिष्टः कोवायुरितिशब्दितः ॥ कश्चात्म-निसमाख्यातः कस्सामान्यउदाहृतः १ कंशिरोजलमाख्यातं कंसुखेऽपिप्रकीर्तितम् ॥ पृथिव्यांकुःसमाख्यातः कुःशब्देऽपि प्रकीर्तितः २ ॥

खखा चाहै खोरि मनावै । खसमहिं छोड़ि दशहु दिशि धावै ॥
खसमहिं छोड़ि क्षमा कै रहई । होइ अखीन अक्षयपद गहई ३

खा जो चैतन्याकाशताहूको चैतन्याकाशअर्थात्ब्रह्महूंकोब्रह्म जो साहब ताको जो चाहै तौ अपनी खोरि जो चूकसो मनावै कहेब्रकसावै कौनचूक जौन खसमजे साहवहैं तिनको छोड़िकै जोदशौदिशामेंधावैहैकहे नानाउपासनाकरैहै सो या चूकबकसावै औखजो चैतन्याकाश समकहे सर्वत्रपूर्ण ऐसो जो धोखाब्रह्मता-को छोड़िकै तैंक्षमाह्वैरहु ब्रह्मकोवाद विवादनकरु होइ अखीन कहे आपनो स्वरूप जानिकै कि मैं साहबकोहौं अक्षयहौं ब्रह्महूं में लीनभये मेरो जीवत्व नहीं जाय है ऐसो हंसरूपह्वैकै अक्षय पद जे साहव तिनको गहु ३ ॥

गगा गुरुके बचनै मानै । दूसरशब्द करै नहिं कानै ॥
तहां बिहंगम कतहुं न जाई । औगाहि गाहिकै गगन रहाई ४

गाजोहै साहवको गति ताकोगकहेते गवैयाहै सोहेजीव तैं गुरुजेसाहवहैं तिनके वचनमानु कौनवचनकि॥अजहूं लेउछँड़ाइ

कालसे जो घटसुरतिसँभारै ॥ और दूसर शब्द न कान करु जो घटसुरति सँभारैगो तौ विहंगमजो जीवात्मा सोकतौंनजाइगोऔ गहकहे अवगाहजे साहबहैं तिनको गहिकै गगनजो हृदयाकाश ताहीमें रहैगो अर्थात् जो साहबको गुणगान करैगो तौतेरो मन जो सर्वत्रडोलैहै सो कतौं न जाइगोतामेंप्रमाण॥गोगणपतिरुद्दिष्टोगंधर्वोगःप्रकीर्तितः।गंगीतेगातुगीताचगौश्चधेनुस्सरस्वती ४ ॥

घघा घट बिनशे घट होई । घटहीमें घटराखुसमोई ॥
जोघटघटैघटै फिरिआवै । घटहीमें फिरि घटैसमावै ५

घजोघटहै ताको घाजोनाशहै सो करनवारो अर्थात् जनन मरणवारे हे घघाजीव घटजे पांचौशरीर ताके विनशे घट जो है हंसशरीर सो होइहै कैसे होइहै ताको साधन कहैं हैं घटही में घटराखु समोई कहे स्थूल सूक्ष्ममें सूक्ष्म कारणमें कारण महाकारण में महाकारण कैवल्यमें कैवल्य हंसस्वरूप में समोइराखु अर्थात् एकएकमें लीनकैदेइ जो यहीरीतिते घट जे पांचौ शरीर तिनको घटैघटै फिरिआवै तौ घटजोहै हृदयाकाशताहीमें घट जो हंसशरीरसो समावैअर्थात्जीतै यहीशरीरमें हंसस्वरूपपायजाय घघानको कहे हैं ॥ घोघटेऽपिसमाख्यातःकिंकिणीवाप्रकीर्तितः । हनुमते घासमाख्याताघ्रींमूर्द्धनिप्रकीर्तितः ५ ॥

ङङानिरखतनिशिदिनजाई।निरखतनयनरहतरतनाई॥
निमिषएकलौंनिरखैपावै । ताहिनिमिषमेंनयनछिपावै ६

ङकहेभयानक ङाकहेविषयवांछा सोङङाभयानकविषयवांछा निरखत कहेविचारत तोकोदिनौरातिजाइहै वाहीकेनिरखत में कहे विचारतमें नयजोनीति सो नहीं रहत रतनाई जो अनुरागविषयमें सोईरहिजाइहै कैसीहै वहविषय की एक निमिषलौं निरखैपावै कहवामेंलगे तौतौनेन निमिषमें भोगोपरान्त नयन

छिपावैहै नहीं नीक लागैहै अर्थात् रूपको देख्यो फिरिनयनमें नीर भरिआवै है नहीं नीक लागै है सुगन्धबहुत सूंघ्यो उपरांत नाक बरिउठैहै अच्छोभोजन कियो तृप्तभये पर विरस परिजाइ है गानबहुतसुन्यो फिरि बकवाधिलगै है स्पर्शबहुत सुन्दर स्त्री कियो फिरिवीर्यपातभये नहीं नीकाकेलागैहै गरम लागनलगैहै सोये सबतृप्तके उपरांत जो निमिषहै तौनेनिमिष नहीं नीकलगै है ङविषय वांछाकोकहैहैं तामें प्रमाण ॥ ङकारोभैरवःख्यातोङा ध्वनावपिकीर्त्तितः ॥ ङकारस्स्मरणप्रोक्तोङकारोविषयस्पृहा ६ ॥

चचाचित्ररचोबहुभारी। चित्रछोड़ितूचेतु चित्रकारी ॥
जिनयहचित्रविचित्रउखेला। चित्रछोड़ितूचेतुचितेला ७

चकहेमन काहेते कि मनको देवता चन्द्रमा याते च मनको कही औ दूसर चाचोरको कही सो तेरोमन जो चोर सोतेरेस्वरूपको चोरायलीन्ह्यो साहबको भुलायदीन्हों सो यह जगत्रूप चित्रजो रच्योहै चित्रबिचित्र सोतूछोड़िदे हेजीव चित्रकारी जोमन ताको चेतकरु वही तेरे स्वस्वरूप को भुलाय दियोहै च चन्द्रमा को चोरको कहैहैं ॥ चचंद्रश्चसमाख्यात स्तस्करश्चउदाहृतः ७॥

छछाआहिछत्रपतिपासा। छकिकिनरहैछोड़िसबआसा ॥
मैंतोहींक्षणक्षणसमुझाया।खसमछोड़िकसआपुबधाया ८

छकहेनिर्मल जीव तैं आपने स्वरूपको भूलिकै साहब को भूलिगयो ताते छाकहे खेदरूपही ह्वैगयो तेरेस्वरूपकी क्षयह्वैगई सोतैं तो छत्रपतीजेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकोआहि तिनके पास जायकै ईसब नानादेवनकी आशाछोड़िकै छकिरहुयाबात मैंतोको क्षणक्षण समुझायो परन्तु तुमखसमजे साहबहैं तिनको छोड़िकै तैं काहेको जगत्में अपनपौ बधायो छनिर्मल को औ खेद को कहैहैं तामें प्रमाण ॥ निर्मलेक्षस्समाख्यातः तरणिः

छः प्रकीर्त्तितः ॥ वेदेचछःसमाख्यातो विद्वद्भिःशब्दशासने ८ ॥

जजाईतनजियतहिजारो । यौबनजारियुक्तिजोपारो ॥
घटहिज्योतिउजियारीकरै । जोकछुजानिजानिपरजरै ९

ज कहिये वेगवंतको औ जाकहिये जयनको सो हेजीव वेगवारो जोमनहै सोई तेरो जवनहै ताहीते वागत फिरै है अर्थात् जननमरण होतरहैहै सो यातनको कहेमनरूप तनको तैंजीतेमें कहे यहीशरीरको साधनकरके जारिदे मरेते न जरैगो दूसरशरीर देइगो यौबनकहे युवाअवस्थाको जारिकै वहयुक्तिको पारो कहे धारणकरो फिरि वृद्धावस्थामें साधनकरिबेकी सामर्थ्य नहींरहैहै ताते युवै अवस्थामें इन्द्रिनको बिषय साधनकरि जारु कौनीतरहते जारु कि जो कछु पदार्थ जगत् में जानि राख्योहै ते जानि परैं कि जरिगये अर्थात् मनको संकल्प बिकल्प छूटिजाइ तवहीं ज्योतिजो मनहै सोघटमें साहबकीओर उजियारी करै है ज्योति मनको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ जीवरूपयकअंतरबासा । अंतरज्योतिकीनपरगासा ॥ औ जकारबेगवारेको औजयनको कहैहैं । वेगितेजःसमाख्यातो जयनेजःप्रकीर्त्तितः ९ ॥

झझाअरुझिसरुझिकितजाना।हीठतढूंढ़तजाहिपराना॥
कोटिसुमेरुढूंढ़िफिरिआवै।जोगढ़गढ़ागढ़हिसोपावै १०

झकहिये झंझापवनको औझाकहिये नष्टको सोतैं विषयझझा में परिकै नष्टहोइगये सो यामें अरुझिकै तैंकहां सरुझिकै जैहै झकहिये पीठिको झाकहिये विषयबयारिको सो विषयबयारिमें अरुझिकै साहबको पीठिदैकै सरुझिकै कितजान चाहैहै हींठत ढूंढ़त तेरोपरान जाइहै नाना उपासना नानामतकरैहै अथवा हीठत ढूंढ़त तेरोपरान जाइहै नानामतनमें पैतोको बिषय बयारि न छांड़ैगो वाहीमें अरुझोरहैगो कोटिसुमेरुकहे कोटिन ब्रह्माण्ड

भटकिआवो परन्तु जौन मनशरीर गढ़कोगढ़ाहै कहेबनाव तौने-नको औगढ़कहे शरीरको तपावैगो यातेंतें विषयबयारिको छांडु साहबके सन्मुख होइ झ झझावातको औनष्टको कहैहैं तामें प्र-माण ॥ झझावातेझकारःस्यान्नष्टेझस्समुदाहृतः१० ॥

ञञानिरखत नगर सनेहू । आपनकरुनिरवारुसदेहू ॥
नहिंदेखोनहिंआपुभजाऊ।जहांनहींतहँतनमनलाऊ११

ञकहिये सोइबेको ञाकहिये घर्घर धुनिको सो घर्घर नाक बजावत ऐसो सोवत कहे आपने स्वरूपको भूलो जीव नानामतनमें वादविवाद करत नगर जोजगत् औशरीर ताहीकोनिरखै है औ वाहीमें सनेह करैहै आपने जोसंदेह की मैंसाहब कोहौं कि और को हौं ताको तो निरवारुकरु नयबात ते नहीं देखी जेहिमें साहब मिलै हैं औ न आप भजाऊ कहे न अपनपौ जाने कि मैं कौनकाहौं जिन जिन मतनमें न साहिबै जानिपरै न आपनो स्वरूप जानिपरै तामें तैं तनमनको लगाये है औ ञशयनको औ घर्घर ध्वनिको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ ञकारःशयनेप्रोक्तो ञकारो घर्घर ध्वनौ ११ ॥

टटाविकटबातमनमाहीं ।खोलिकपाट महलमें जाहीं ॥
रहेलटपटेजुटितेहिमाहीं।होहिंअटलतेहिकतहुंनाहीं१२

एक ट कहे जोनाभीमें रेफकी धुनि उठै है औ दूसरो टा कहे जो सुरति कमलमें गुरुरकार धुनिकरैहै सोदूनो धुनिजामें होइ सोटटाकहावैहै सोहेटटाजीव विकटबातकी जेबासना तेरेमनमें तेईकपाटहैं ताकोखोलिकैदूनोंरकारकी धुनिएककै रामनामकी छइउमात्रा जपत अर्थविचारत महलजो साकेत तहांकोजाइरहे लटपटे कहे जैसे होय तैसे राम नाममें जुटिरहु तौ साकेत में जाइकै तैं अटल ह्वै है अथवा बिकट बासनन को तेरे मन में

टटा ह्वैरहाहै सो टटाको खोलिकै महल में जा है लटपटे जौने संसारमें लटपट ह्वै रहे हैं कहे नरक स्वर्गमें तैं गिरै उठै है सो तैं साकेतमें जुटिरहु जेसाकेत में जुटिरहे हैं कहे प्रवेश करिरहे हैं तेई अटल ह्वैरहे हैं उनको जनन मरण नहीं होय वेकतहूं नहीं जायहैं टधुनिको कहैहैं तामेंप्रमाण॥ टःपृथिव्याचकटंकटोध्वनौ चप्रकीर्तितः १२॥

ठठाठौर दूरि ठगनीरे। नितके निठुर कीन्ह मन धीरे॥
जेहिठगठगसबलोगसयाना। सोठगचीन्हिठौरपहिचाना १३

ठकहियें वृहद्ध्वनिको औ ठाकहियेचंद्रमंडलको सो वृहद्है ध्वनिकहे कीर्त्तिजिनकी तीनोंतापके हरणहारे चंद्रमण्डलकी नाईं ऐसे परमपुरुषपरजे श्रीरामचंद्रहैं तिनको ठौर दूरि है औ ठग जो मनहै सोनेरेहै अथवा हेठठ्ठहा मसखराजीव साहबसों मसखरी करनवारो जातेजननमरणछूटैहै वा साहबकोठौर दूरिहै ठगजे मन बुद्धि चित्त अहंकार तेनेरेहैं तैंनित्यको निठुरहै माजो माया ताको नाधीरे करतभेसोकहे तेजकरतेभये ऐसो जोठगमन जौनसब सयाने लोगनको ठगतभो तौने ठगमनको चीन्हिकै साहबको ठौरको पहिचानौ अथवा ठगजेहैं गुरुवालोग तेसाहब ते छोड़ायकै और और में लगायो तेकहां तेरे मनको धीरेकिये नाहीं किये औ ठवृहद्ध्वनिको औ चंद्रमंडलको कहैहै तामें प्रमाण॥ वृहद्ध्वनिश्चठःप्रोक्तस्तथाचंद्रस्यमंडले १३॥

डडा डरकीन्हें डर होई। डरही में डर राखु समोई॥
जोडरडरैडरैफिरिआवै। डरहीमें पुनि डरहिसमावै १४

एक डकहिये धुनिको औ डा कहिये त्रासको सो मायारूप वाणीकी त्रासकहे डरसो याडर तेरे कीन्हेते होइहै अर्थात् ये मिथ्याहैं तेहींबनायलियोहै कैसेमिटै सोजिनको तैंडरै है बिषयन

नकोतिनको इन्द्रिनमेंसमोइदेइंद्रिनकोडरैहै सोमनजोमहाडरहै तासेंसमोइदे औ मनको चिततन्मात्रब्रह्म में समोइदे यारीति ते डरको डरमें समोइकैतें फिरिआउ साधनकरि साहबको जानु डकार ध्वनिको औ त्रासको कहै हैं तामेंप्रमाण ॥ डकारः शंकरे त्रासे डकारोध्वनिरुच्यते १४ ॥

ढढाढूंढ़तईकतजाना । ढींगरडोलहि जाइलोभाना ॥
जहांनहींतहँसबकछुजानी।तहांनहींजहँलेपहिंचानी १५

ढ कहिये बाणीको ढा कहिये निर्गुण ब्रह्म को सो हे जीव बाणीमें लगिकै निर्गुण ब्रह्मको ढूंढ़ततोको कहां जानोहै अर्थात् उहां कुछनहींहै तैंतोसाहबकोहै बाढींगरहै जापुरुपकेहै तौने को ढोलबाजा बानीरूप पानी तौने में लोभाने तैं जाइ अर्थात् या बाणीरूप ढोलबाजा है अहंब्रह्म बुद्धिबतावै है सो दूरिकोढोल सुहावनहै वामें कछुनहीं देशकालबस्तु परिच्छेदतेशून्य है हाथ एकौ न लगैगो सोहे जीव जहांकहे जौने साधनमें साहबनहीं हैं तौनेन साधनको तैं सबकछु जानिलीन्हे है सो जहां नहीं कहे जहां माया ब्रह्म ये एकहू नहीं हैं तहां साहबको तैं पहि· चानले ढनिर्गुणको औ ध्वनि को कहैहैं तामें प्रमाण ॥ ढकारः कीर्त्तितोढक्कानिर्गुणेचध्वनावपि १५ ॥

णणा दूरि बसो रेगाऊं । रेणणा टूटै तेरे नाऊं ॥
मुयेयेते जियजाहीघना ।मुयेयतादिककेतिकजना १६

ण कहिये निष्फलको णा कहिये ज्ञानको सोहे जीव या धोखा ब्रह्मको ज्ञान तेरो निष्फल है या ज्ञान ते साहब न मिलैंगे साहब को गाउं जो साकेत है सो दूरि बसैहै सो रे निष्फल ज्ञानवारे मूढ़ जीवटूटै तेर नाउँ कहे वा धोखा ब्रह्ममें लगै तेरोजीवत्व को नाउँ टूटि जाइगो अर्थात् तैंहू धोखा ब्रह्म कहायनलगैगो सोया

ज्ञान में केतौ मरिगये हैं औवनाकहे बहुत जीव मुये जाहि हैं औकेतेगने यहीरीति मरिजैहैं या धोखाब्रह्म निष्फलज्ञानते साहब न मिलैंगे ण निष्फलको औज्ञानको कहेहैं तामेंप्रमाण॥ णकारःकीर्त्तितोज्ञाने निष्फलेऽपिकीर्तितः १६ ॥

ततात्र्प्रतित्रियो नहिंजाई। तनत्रिभुवनमें राखुछपाई ॥
जोतनत्रिभुवनमाहँछपावै। तत्त्वहिमिलेतत्त्वसोपावै १७

त कहिये चोरको ता कहिये सीगटकी पूंछको सो हे जीवसाहबतेचोराइकै आंखी छपाइकै सिंहजो साहब ताकीशरण छोड़िकै सीगटकी पूंछजो धोखाब्रह्म तौनेकोतैं गहे सोअतित्रियोकहे आसमता ताते कहे अत्यंत चारिउ ओर व्याप्ति त्रिगुणात्मिका मायातौनौ भरितेरी नहीं जाइहे मुक्तिहोवे की कहा कहिये सो तनकहे अणुमात्र जोतैंहै ताको त्रिभुवनमें छपाय राखतिभै माया सोयेजेतेरे पांचौतनहैं तिनको तैंत्रिभुवनमें छपायदे अर्थात्चारिउशरीरहैं तिनको संसारीमानिले औ मैं इनतेभिन्नहौं वा शरीर को अभिमान जो तैं छांड़िदे तौ तत्त्व जो साहबको यथार्थज्ञान कि मैं साहबकोहौं तौन जबतोकोमिलै तबतत्त्वजेसाहबहैं तिनकोपावैतत्त्व यथार्थको कहेहैंतामेंप्रमाण॥तत्त्वंब्रह्मणियाथार्थे ॥औ साहबतत्त्वकहावैंहैंतामेंप्रमाण॥रामएवपरंतत्त्वंरामएवपरंतपः॥ तचोरको औ सीगटकी पूंछको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥तकारःकीर्त्तितश्चोरःक्रोष्टुपुच्छेऽपितःस्मृतः १७ ॥

थथाथाहथहोनहिंजाई। इहथोरे वह थीररहाई॥
थेरे थेरे थिररहुभाई। विनुथँभेजसमँदिलथँभाई १८

थ कहिये शिला समूहको औ थाकहिये रक्षाको सो हे जीव शिलासमूह जोमन जौनेके भयते अपनी रक्षाकरु काहेते थाहहै अर्थात् विचारकीन्हे कुछुवस्तु नहीं है परन्तु काहूके थहाये नहीं

थहाय जायहै शिलासमूह मनहै सो आगेपदमें कहिआयेहैं॥ पाहनफोरि गंगयकनिकसी चहुंदिशि पानीपानी॥ सोयह मनथिर होइ तो वहजीवहू थिररहै तातेतैं थोरेथोरे साधनकरु जातेमन थिरहोइ जो साधननकरैगो तौ मनन थिररहैगो कैसे जैसेविना थंभकहे खंभा देवाल और जोकौनौयशौवाली वात न करै तौवह यशवनै रहतहै मन्दिलथँभैहै अर्थात् नहींथँभैहै अथवा थोरे थोरे साधनकरि मनथिर कैले जब मन थिर ह्वैजाइगो तबसाधन न करन परैगो कैसे जैसे कौनौ यशवाली बातकियो फिर वा यश रूप मंदिर विना थम्भै वनोरहैहै थशिलासमूहकोऔरक्षाकोकहैहैं तामें प्रामण॥ शिलोच्चयेथकारस्त्वारथकारोभयरक्षणे १८॥

ददादेखो बिनशनहारा। जसदेखौ तसकरौविचारा॥
दशौ द्वार में तारी लावै। तबदयालको दर्शनपावै १९

द कहियेकलत्रको औ दा कहिये दानको सोहेजीव यासबकहे यहलोकमें जो कलत्रादि औवहलोक स्वर्गादिक बिनशनहारा है अर्थात् सब नाशमानहै सो जसदेखो कहे जैसा नाशमान देखतेहौ तैसा तुहूं आपनेको बिचारकरो कि हमहूं नाशह्वैजैहैं दशौ द्वारको महमुद्राकरि बंदकरि तालीलावै कहे समाधिकरै तबदयालु जे साहबहैं तिनको दर्शनतैंपावैगो द कलत्रको औदान को कहैहैं तामेंप्रमाण॥ दंकलत्रेबुधैरुक्तं छेदेदानेपिदातरि १९॥

धधाअर्धमाहँअँधियारी। जसदेखै तस करै बिचारी॥
अर्धछोड़ि उरध मनलावै। अपामेटिकै प्रेमबढ़ावै २०

ध कहिये बंधनको औधा कहिये धाताको सो हेजीव मायाके बंधनमें परिकै अपनेको धाताकहे ब्रह्मा मानिलियोहै सोहेजीव तैं अर्धकहे अधोगतिकी अँधियारीमेंपरोहै तोकोनहींसूझिपरै अज्ञानमें परोहै सो जसदेखैहै सुनैहै तैसही बिचार अज्ञान पूर्वक

करैहै सोतैं न करु अर्थजोहै अधोगतिकी राह ताको छोड़िकै उर्ध कह साहबके इहां जावेकी जो राहहै तामें मनलगाउ अपामेटि कहेजो आपन सबमानि राख्यो है सोसबसाहबको मानिकै औ आपनेहू को साहबको मानिकै प्रेमको बढ़ावै ध बंधनको औधाताकोकहैहैंतामेंप्रमाण॥धोबंधनेधनाध्यक्षेधाताधीमिरुतावपि२०॥

ननावो चौथेमें जाई। रामको गदह ह्वै खरखाई॥
नाहछोड़िकियनर्कबसेरा। नीचअजौंचितचेतुसबेरा२१

न कहिये गुणको औ ना कहिये निंदाको सो हेजीव तैंत्रिगुण में बँधिकै निन्दारूप ह्वैगयो अर्थात् निंदाकरिबेलायक ह्वैकै मन बुद्धि चित्तमें अहंकार जो चौथ तामें परिकै अर्थात् आपने को ब्रह्ममानिकै रामको तैं ह्वैकै अर्थात् तैंतो श्रीरामचन्द्रको है परंतु अवरे२ में गदहाह्वै खरखातिफिरैहैअर्थात् झूरज्ञानमेंपरोहै सोनाह जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको छोड़िकै नरकमें बसेराकियोसोहेनीच अबैसबेरोहै अजहूं चेतु न गुणको औ निन्दाको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ नकारःस्याद्गुणेचंद्रेदुःस्तुतौचप्रकीर्तितः २१ ॥

पपापापकरै सबकोई। पापकेधरे धर्मनहिंहोई॥
पपाकहै सुनहुरे भाई। हमरेसेये कछू न पाई २२

प कहिये श्रेष्ठको पा कहिये रक्षकको सो हे जीवतैं साहबको ह्वैकै औरै औरे देवतनको श्रेष्ठ मानैहै औरक्षकमानैहै पापई करै है पापके कियेते धर्म नहीं होयगो अर्थात् औरे देवतनके किये तेरीरक्षा न होयगी काहेते पपा जे हैं श्रेष्ठ रक्षक जिनको तैं मानैहै तेई कहैहैं हे भाई सुनो हमारे सेये कछू न पावैगो मुक्ति हमारी दीनि नहीं दैजाइ मुक्ति श्रीरामचन्द्रही की दई दैजाइ है तामें प्रमाण॥मुक्तिप्रदातासर्वेषांविष्णुरेवनसंशयः॥विष्णु श्रीरामचन्द्र को नामहैसो हमारेसर्वसिद्धान्तमें लिखोहै प श्रेष्ठको औ रक्षकको

कहेहैं तामें प्रमाण ॥ परमेपःसमाख्यातो पापानेचैवपातरि २२ ॥

फफाफललागोबड़दूरी । चाखैसतगुरुदेइँ न तूरी ॥
फफाकहै सुनहुरेभाई । स्वर्गपतालकिखवरिनपाई २३

फ कहिये फलको फा कहिये निष्फल भाषण को सो हे जीव जौने फलको तैं भाषण करैहै कि ऐसो फल होइगो सो या तेरो भाषणो निष्फलहै फल जे साहवहैं ते वहुत दूरिहैं सतगुरु जेहैं जे साहव को जानैहैं तेई चाखैहैं व फल वे तूरिकै काहूको नहीं देइ हैं काहेते वे साहव मन वचनके परे हैं आपहीते आपजाने जाइ हैं आपनी दई इन्द्रीते आप देखे जाइहैं सतगुरु जे वतावै हैं ते साहबके प्रसन्न होवेकी राह वतावैहैं सो हे भाई लोकनमें फल की चाहकरिकै निष्फलके भाषणवाले जे गुरुवालोगहैं ते कहै हैं कि स्वर्ग पाताल में साहव की खवरि हमहूं कहूं नहीं पाई अर्थात् साहव हई नहीं हैं फ फल को औ फा निष्फलभाषण को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ फंफावातेफकारःस्यात्फःफलेऽपिप्रकीर्त्तितः । फकारेऽपिचफःप्रोक्तस्तथानिष्फलभाषणे २३ ॥

बबाबरबर करसबकोई । बरबरकियेकाजनहिंहोई ॥
बबाबातकहैअरथाई । फलकेमर्मनजानेहुभाई २४

व कहिये वरुणको वा कहिये घटको सो वरुण जलके भीतर रहै हैं ऐसे हे जीव तुहूं वाणी के भीतर ह्वैकै घटकी नाईं भक-भकाइ बरबर सब कोई करौहौ सो बरबर के किये काज नहीं होइहै अर्थात् साहब नहीं मिलैहै सो हे बवा घटकी नाईं भक-भकानवारे वात तो वहुत अर्थात् यकै कहैहैं परन्तु हेभाई लोक-नके फलको मर्म नहीं जानौहौ कि वा फल भोगकरि कछु दिन में गिरहो परैंगे व वरुणको औ कलशको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ प्रचेतावःसमाख्यातः कलशोवउदाहृतः २४ ॥

भभाभर्मरहाभरिपूरी। भभरेतेहैनियरेदूरी॥
भभाकहै सुनौरेभाई। भभरेआवैभभरेजाई २५

भ कहिये आकाश शून्यको भा कहिये भ्रमणको सो हे जीव भ भरिबो कहावै है ज्यराबो धोखा या ज्यहि मतनमें कल शून्य है तेहिमतनमें तैंभ्रमण करिरहोहै कहे सो विचारको भ्रमण तेरे पूरिरहोहै सो तोको गुरुवालोग साहबते डेरवाइदियो औधोखा में लगाइ दियो सो तोको डरही डर सर्वत्र देखो परैहै जबआवै कहे जन्महोइहै तबहूं भभरेआवैहै कहे डरैमेंआवैहै औजबजाइहै तबहूं भभरे कहे डरैमेंजाइहै वोहू नानाप्रकारके दुःख होइहैं सो या भभरेते नियरे जे साहबहैं ते दूरि ह्वैगये सो भभाजेहैं धोखा ब्रह्मके भ्रमणवाले तेई कहैहैं सोहभाई सुनो भ्रमैते आवैहै भ्रमते जाइहै महाप्रलयमें लीनहोइहै पुनिसृष्टिसमयमें संसारमें आये भ आकाशको औ भ्रमणको कहैहैं तामें प्रमाण॥ नक्षत्रंभंतथा काशंभ्रमणेभःप्रकीर्त्तितः। दीप्तिर्भाभूस्तथाभूमिर्भीर्भियकथिता बुधैः २५॥

ममासेये मर्म न पाई। हमरेतेइन्हमूलगँवाई॥
ममामूलगहलमनमाना। मर्मीहोइसोमर्महिजाना २६

म कहिये लक्ष्मी मा कहिये बन्धन को सो हे जीव तैं लक्ष्मी के बन्धनमें परिकै ऐश्वर्य्यमें परिकै साहब को मर्म्म तू न पायो हमरेतेकहे यहसब हमारहै यह विचारते यह सब साहब को पहन जानोइहै आपनमानते इन्हमूल जे साहब हैं तिनको गँवाइदियो सो हममा मायाबन्धनमें बँधो जीव जौन तेरे मनमें मानाहै ताहीकोमूलमानिगहिलीन्होंहै सो तैं मूल न पायो काहे ते कि मर्म्मीकहे जो कोई साहबको मर्म्मीहोइहै सोई साहबके मर्मको जानैहै म लक्ष्मीको औ बन्धनको कहैहैं तामें प्रमाण॥

मः शिरश्चन्द्रमावेधा माचलक्ष्मीप्रकीर्त्तिता। मश्चमातरिमानेच वन्धनेमःप्रकीर्त्तितः २६ ॥

यथाजगत रहाभरिपूरी । जगतहुतेयथाहैदूरी ॥
यथाकहैसुनोरेभाई । हमरे सेये जयजय पाई २७

य कहिये त्यागको या कहिये प्राप्तको सो हे जीव त्यागते नाम संन्यास ते प्राप्त जे साहब होइ हैं ते साहब जगत् में पूरिरहे हैं जौन भरिपूरिकह्योसो साहब को सौलभ्यगुण दिखायो न जानै ताको जगत् ते दूरि है अर्थात् बाहर है ते यथा जे साहब हैं ते कहै हैं कि हे भाई सुनो हमरे सेयेते कहे हमरेन सेवा ते सबको जय करनवाला जो काल ताहू ते जयपावै औरी तरहते काल ते जय नहीं पावै है साहब त्यागही ते मिलै है तामें प्रमाण ॥ दोहा ॥ बिगरी जन्म अनेककी सुधरै अबहीं आज।होयरामको राम जपि तुलसी तजि कुसमाज ॥ य त्यागको औ प्राप्त को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ यमोयःकीर्त्तितःशिष्टैर्योवायुरितिविश्रुतः । यानेपात-रियात्यागेकथिताशव्दवेदिभिः २७ ॥

ररारारिरहाअरुझाई । रामकहे दुख दारिद जाई ॥
रराकहै सुनोरे भाई । सतगुरु पूछिके सेवहु आई २८

र कहिये कामको रा कहिये अग्निको सो हे जीव तैं कामाग्निमें अरुझिरह्योहै तामें जरोजाइहै सोयामेंदुःखदरिद्र न जाइगो रामनाम कहेते दुःख दरिद्रजाइहै सो हे भाई सुनों रराकहे रस रूप जे साहब तिनको ज्ञानाग्निते कर्मलायकै सतगुरु जे साहब के जाननवारे तिनसों समुझिकै रामनामको सेवहु रामनाम के सेवनकी युक्ति बूझिकै र को काम अर्थ छोड़िकै र कामको औ अग्निको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ रश्चकामेनलेसूर्ये रुश्चशब्दे प्रकीर्त्तितः २८ ॥

लला तुतरे बात जनाई । ततुरे पावै परचै पाई ॥
अपनाततुरऔरकोकहई।एकैखेतदुनो निरबहई २९

ल कही इन्द्रको ला कही लक्ष्मीको सो हे जीव तैं इन्द्रकी नाई लक्ष्मी पाइ कै तत्त्वकी बातैं जनावैहै सो तत्त्व तब पावैगो जब साधुन ते परचै पावैगो सो हे जीव तत्त्वराति गृहणातीतित त्वरः ॥ अपना तो तत्त्वजेहैं यथार्थ साहब तिनको नहीं जानै है और औरको ज्ञान सिखवै है सो एकखेत जोहै एकहृदय तेरो तामें दोनों निरबहई अर्थात् का दोनों निरबहै हैं नहीं निरबहे हैं कि तैं अज्ञानी बनोरहै है और को ज्ञानकथैहै तौका और के ज्ञानलगै है नहीं लगैहै जो तैंहूं ज्ञानीहोइहै तौ तेरो ज्ञानौ कथिबो औरकोलगै औजो ततुरे पाठहोइ तो या अर्थहै ला इन्द्रको औछेदनकोकहै हैं सो हे जीव जो यज्ञादिककरि इन्द्रादिक देवतन के संतुष्टके वास्ते पशुछेदन करौहौ सो वेद या तुतरे बात जनाई है जैसे लरिका रोटीको टोटीकहै है परन्तु माता तात्पर्य जानै है कि रोटीहीमांगैहै ऐसे वेद जो यज्ञादिककहै हैं सो दुष्कर्म छुड़ाइ कै यज्ञादिक में लगायो फेरि ज्ञानदैकै येऊकर्म छुड़ाइकै तात्पर्यते साहबकोबतावै है सो तुतर जोहै वेदतौनेको अर्थ तबपावै जब वाकेतात्पर्यको पावै सो आपतो तुतरहैं वेदपरदाकैकै बात कहैहैं सब जीवनको ए कहै हैं कि जीव औरको औरई कहैहै मेरो तात्पर्यनहीं समुझैहै सोएकै खेत जो संसारहै तामें दूनों निबहैहैं अथवा साहबके इहां वेद नहीं पहुँचिसकै है न प्रकट वर्णन करि सकैहै तात्पर्यही करिकै कहै है जगत् औ कर्म याहीको प्रकट वर्णनकरैहै औजीवजेहैं ते जगतहीमें परेरहैहैं जे तात्पर्य जानैहैं तेई साहब के समीप पहुँचैहैंतातेवेदौ जीवौ एकखेत जो जगत् है ताहीमों निबहै हैं जो जगत् न रहै तो बद्धविषयी मुमुक्षुई न रहिजायँ मुक्तभरि रहिजायँ औ चारिउ वेद रकार मकार में रहिजायँ ल इन्द्र को लक्ष्मी को छेदन को कहैहैं तामेंप्रमाण॥लइंद्रोलवनोलश्चलाचलक्ष्मीप्रकीर्त्तितः२९॥

ववावहवहकहसबकोई । वहवह कहे काज नहिं होई ॥
ववाकहै सुनोरे भाई । स्वर्गपतालकी खबरिनपाई ३०

व कहिये भक्तको वा कहिये वायुको सो हेजीव तैंतो साहबको भक्तहै वायुकी नाईं जगत्में बहतफिरौहौ वहहै ईश्वर वहहै ईश्वर याकहा सबकोई कहौहौ सो वे नानाईश्वरनके कहे काज कहेमुक्ति न होइहै सो हे ववाकहनेवारेभाई सुनते जाउ तुम स्वर्ग पातालकी खबरि नहीं पाई अर्थात् सबके रखवार साहब को नहीं जानौ हौ तामें प्रमाण ॥ स्वर्ग पताल भूमिलौंबारी । एकै रामसकल रखवारी ॥ वासात्वतको औ वायुको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ सात्वतेवरुणवाते वकारःसमुदाहृतः ३० ॥

शशा सरदेखै नहिं कोई । सर शीतलता एकै होई ॥
शशा कहै सुनोरे भाई। शुन्य समान चला जगजाई ३१

शकहिये सुखको शाकहिये शेशको सोहे जीव तैंतौ सुखसागर जेसाहब हैं तिनको शेषहै अर्थात् अंशहै सो सुखसर जे साहब हैं तिनको तुमकोई नहींदेखौहौ कैसोहै वा सर कि जाकीशितलता एकई है वा शीतलता पायेफिरि जनन मरण नहीं होइहै सो शशाजेसाहबके शेषसाधुहैं तेकहै हैं कि जिनको अंशजीव तिनको नहीं जानै है शून्य जो धोखाब्रह्म ताही में जगत् समान जाइहै शशेषको औसुखको कहैहैं ॥ वदन्तिशंबुधाःशेपे शःशांतश्चनिगद्यते ॥ शश्चशयनमित्याहुः हिंसाशःसमुदाहृतः ३१ ॥

षषा पराकरै सबकोई । परपरकहे काजनहिं होई ॥
षषा कहै सुनोरे भाई । रामनाम लैजाहु पराई ३२

ष कहिये श्रेष्ठको सो षा दूसरीहै सो हे जीव श्रेष्ठौ ते श्रेष्ठ जे साहबहैं तिनको परपर सांचसांच सबै कहैहैं औरेको खोटामानै

हैं परंतु परपर कहेते काज जो है मुक्ति सो न होइगी बिनाराम नामके साधनकीन्हे औ बिना नीकीप्रकार साहबके जाने काहेते पपाकहे श्रेष्ठौते श्रेष्ठ जे साहब हैं तेकहै हैं कि हे भाई सुनौ तुम राम नामको लैकै मायाब्रह्मते पराइजाउ अर्थात् सबको छोड़ि कै रामनाम जपौ ख श्रेष्ठको कहै हैं ॥ खकारःकीर्तितः श्रेष्ठ पूश्चगर्भविमोचने ३२ ॥

ससा सरा रचो बरिआई । शरबेधे सबलोग तवाई ॥
ससाकेघर सुनगुनहोई । यतनी बात न जानै कोई ३३

स कहिये लक्ष्मीको सा कहिये परोक्षको सो हे जीव तेरो ऐश्वर्य्य परोक्षमें है अर्थात् साहबके यहां है या देखबेकी लक्ष्मी तेरी नहीं है सोतें सराजोकर्म है ताको बरिआई रचिलियो सो वाही सरारूपीशरहै कहे कर्मरूपीशरसें लोगबेधे हैं तेसबतवाई में परे हैं नरक स्वर्गमें जायआवै हैं सो ससा जो जीव ताके घर कहे हृदयमें काहूके शून्यकहे धोखा ब्रह्म समान है काहूके गुण जो माया सोसमानहै सो यतनीबात कोई नहीं जानै है कि येई साहबको चीन्हन न देइ हैं सलक्ष्मीको औ परोक्षको कहै हैं ॥ सपरोक्षेसमाख्यातः सचलक्ष्मीप्रकीर्त्तितः ३३ ॥

हहा होइ होतनाहिं जानै । जबहीं होइ तबै मनमानै ॥
हैतोसही लहै सबकोई । जबवाहोत बयानाहिंहोई ३४

ह कहिये विष्कम्भको हा कहिये त्यागको सो हेजीव याविष्कम्भशरीरको त्याग होत कोई नहीं जानैहै जब शरीर त्यागह्वैजाइ है तबहीं जानैहै कि शरीर त्यागह्वैगयो जामें जीव थँभारहैहै सो शरीरमें हंसरूप सहीहै ताजीवको परन्तु सबकोई नहींलगैहै कहे नहींपावैहै जब वा हंसशरीरहोइ जब या शरीरनहीं होइहै वाही हंस शरीरमें थँभारहैहै जब विष्कम्भको औ त्यागको कहै हैं तामें

प्रमाण ॥ हःकोपवारणेप्रोक्तो हस्स्यादपिचशूलिनी। हानेपिहः प्रकथितोहोविष्कम्भःप्रकीर्त्तितः ३४ ॥

क्षक्षाक्षणपरलयमिटिजाई। क्षेवपरे तवको समुझाई ॥
क्षेउपरेकोउअंतनपाया।कहकवीरअगमनगोहराया ३५

क्ष कहिये क्षत्रको क्षा कहिये वक्षस्थलको सो हे जीवतें क्षत्रपतिजे श्रीरामचंद हैं तिनको वक्षस्थलमेंतौ ध्यानकरु तौ तेरी परलय जनन मरण क्षणैमें मिटिजाइ जवक्षेवकहे तेराशरीरक्षय ह्वै जाइगो तवतोको को समुझावैगो क्षेवपरेकहे शरीर क्षयह्वैगये कोऊ अंतसाहवको नहीं पायो है सो कवीरजी कहै हैं कि याही ते तोको हम आगेते गोहरावै हैं कि फिरि क्या करैगो क्ष क्षत्रको औ बक्षस्थलको कहै हैं तामेंप्रमाण ॥ क्षश्चक्षत्रंचाक्षवश्चस्यात् क्षोवक्षसिकथ्यते ॥ क्षत्रकहे क्षत्रपतीको वोध ह्वैजाइ जैसे वलि कहे वलिरामको वोधह्वै जाइ है ३५ ॥

इतिचौंतीसीसम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथविप्रमतीसीलिख्यते ॥

सुनहुसवनमिलिविप्रमतीसी। हरिबिनु बूड़ीनाव भरीली १ ब्राह्मणह्वै कै ब्रह्म न जानैं। घरमें यज्ञप्रतिग्रह आनैं २ जे सिरजा तेहिनहिंपहिचानैं। कर्मभर्मलै बैठि बखानैं ३ ग्रहणअमावस सायरपूजा। स्वातीके पातपरहु जनिदूजा ४ प्रेतकर्मसुखअन्तर वासा। आहुतिसहितहोमकीआसा ५ कुलउत्तम कुलमाहँकहावैं। फिरिफिरि मध्यमकर्मकरावैं ६ कर्मअशुचि उच्छिष्टैखाहीं। मतिभरिष्टयमलोकहिजाहीं ७ सुतदारामिलिजूठोखाहीं। हरि भगतनकी छूतिकराहीं ८ न्हायखोरि उत्तम ह्वैआवैं। बिष्णुभक्त देखे दुखपावैं ९ स्वारथलागिरहेवेआढ़ा। नामलेत जस पावक डाढ़ा १० रामकृष्णकीछोड़िनिआसा। पढ़िगुणिभयेकृत्तिमकेदासा ११ कर्मकरहिं कर्महिं को धावैं। जो पूछैतेहिकर्मदृढ़ावैं १२ निष्कर्मीकै निंदाकीजै। करैकर्म ताहीचितदीजै १३ असभगती भगवतकी लावैं। हरिणाकुशको पंथचलावैं १४ देखहु कुमति नरकपरगासा। विनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५ जाकेपूजेपापनऊड़ैं। नामसुमिरितेभवमेंबूड़ैं १६ पापपुण्यकैहाथेहिपासा। मारि जगतको कीन्हविनासा १७ येबहनी दोउ बहनिनछांड़ैं। यहगृहजारैंवहगृहमांड़ैं १८ बैठेतेघर शाहु कहावै। भितरभेदमन मुसहिलगावै १९ ऐसीविधि सुरविप्र भनीजै। नामलेत पंचास नदीजै २० ऊंचनीचकहुकाहिजोहारा। बूड़िगयेनहिंआपसँभारा २१ ऊंचनीचहैमध्यमबानी। एकैपवनएकहैपानी २२ एकैमटियाएककुम्हारा। एकसवनकासिरजनहारा २३ एकचाकवहुचित्रबनाया। नादविंदुकेवीच समाया २४ व्यापीएकसकलकेज्योती। नामधरे क्याकहिये मोती २५ राक्षसकरणीदेवकहावै। वादकरै

भवपार न पावै २६ हंसदेहतजिन्याराहोई । ताकीजातिकहैधौं कोई २७ श्वेतसुपेदाकिरातापियरा। अवरणवरणाकिताताासियरा २८ हिंदूतुरुककिबूढाबारा। नारिपुरुपमिलिकरौविचारा २९ कहिये काहि कहानहिंमाना । दासकबीर सोई पहिचाना ३० बहिआहै बहिजातुहै करगहि ऐंचहुओर। समुझाये समुझै नहीं देधक्का दुइ और ३१ ॥

सुनहुसबनमिलिविप्रमतीसी। हरिबिनबूड़ी नावभरीसी १
ब्राह्मणह्कै ब्रह्म न जानैं । घरमेंयज्ञ प्रतिग्रह आनैं २
जेसिरजातेहिनहिंपहिचानैं। करमभरमलेबैठिबखानैं ३
ग्रहणअमावससायरपूजा। स्वातीकेपातपरहुजनिदूजा ४

विप्रके वर्णनमें हम तीस चौपाई कहे हैं सो सबन मिलिसुनते जाउ कैसे ब्राह्मणहोतभये कि जिनको जन्महरिविना भरीनाव ऐसीबूड़िगई १ ब्रह्मईके जानेते ब्राह्मण कहावैहै सो ब्रह्मको तो न जान्यो यज्ञादिकनके प्रतिग्रहघरमें लैआवैहैं आदिते दानौ आयो२ जौन उत्पत्तिकियोहै ताको तो जानतईनहीं हैं कर्मकांडको भरम नानाप्रकार के बैठिकै बखाने हैं ३ सोहे दूजाकहे दुखग्रहणमें अमावस में सायरकहे समुद्रादिक तीर्थनमें जैसे स्वाती के जलको पपीहा दौरे है ऐसे तुम्हीं ग्रहण अमावसमें समुद्रादिक तीर्थनमें दानलेनको ताकेरहौहौ परन्तु आशा नहीं पूजैहै ४ ॥

प्रेतकर्ममुखअंतरवासा। आहुतिसहितहोमकीआसा ५
कुलउत्तमकुलमाहँकहावैं। फिरिफिरिमध्यमकर्मकरावैं ६

मुखते प्रेतकर्म करावैहै कि ऐसो पिंडदान करो तौ प्रेतत्व छूटिजाइ औ अंतष्करणमें या आशा बसैहै कि जो या होमकरै तो हमदक्षिणापावैं ५ औ ब्राह्मण तो बड़े उत्तमकुलके कहावैहैं कि हम बड़ेकुलके हैं परन्तु फिरि फिरि कहे बारबार मध्यमकहे नरकजाय वाके कर्मकरावै हैं ६ ॥

कर्मअशुचिउच्छिष्टैखाहीं । मतिभरिष्ट यमलोकहिजाहीं ७
सुतदारामिलिजूठोखाहीं । हरिभगतनकीछूतिकराहीं ८
न्हायखोरिउत्तमह्वैआवैं । विष्णुभक्तदेखेदुखपावैं ९

नानाप्रकारके अपावनकर्म्म कैकै भैरवदुलहा देवादिकनको उच्छिष्टखाय हैं सो मतिभ्रष्ट ह्वैकै यमलोकहि जाइहैं ७ तौनेप्रेतनको जूठ सुत दाराकहे स्त्री त्यहि समेत सबमिलिखाइहैं औ हरिभक्तन की छूति मानैहैं ८ औ नहाय खोरिकै आपने जान पवित्र ह्वैआवैं औ जिनके दर्शनते पवित्र होयहैं ऐसे विष्णुभक्त तिनको देखिकै दुःखपावै हैं ईबड़े तिलकदिये शंख चक्र दीन्हे कहांरहे उनको सुख देखैंगे तो पापलगै है या कहै हैं ९ ॥

स्वारथलागिरहेवेआढ़ा । नामलेतजसपावकडाढ़ा १०
रामकृष्णकीछोड़िनिआसा । पढ़िगुणिभेकिरतिमकेदासा ११

अपने स्त्री पुत्र यहीके स्वारथ में वेअर्थ आढ़ति लगायरहे हैं जिनकेअंशहैं ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके नामलेतमें मानों जीभ पावक में जरीजाइ है १० रामकृष्ण जेहैं तिनकी आशाछोड़िकै पढ़ि गुणिकै किरतिमकहे आपनी बनाई मूर्त्ति अथवा किरतम माया तिनको दास कहावैंहैं ११ ॥

कर्मकरहिंकर्महिकोधावैं । जोपूछैत्यहिकर्मदृढ़ावैं १२
निःकर्मीकैनिंदाकरहीं । कर्मकरैताहीचितधरहीं १३
असभक्तीभगवतकीलावैं । हिरणाकुशकोपंथचलावैं १४

कर्मनानाप्रकारके करैहैं औ कर्मफल जो स्वर्गादिकनको भोग ताहीको धावैहैं औ जो कोई मुक्तिहूकी वात पूछैहै ताको कर्महीं दृढ़ावैहैं १२ निःकर्मी जे साधु हैं तिनकी तौ निन्दा करैं हैं औ कोई कर्म करैहैं ताको सत्कारकरै हैं १३ सो या रीतिते भगवत्

की भक्ति करै हैं या कहै हैं कि ईश्वर तो अजागलथनकी नाईं है
वाते कौनकामहोय है औ कोई हिरणाकुशको पंथ तामसीमत
चलावै हैं कहै हैं कि हमहींब्रह्महैं ऐसो दैत्यनको ज्ञानहै तामेंप्र-
माण ॥ ईश्वरोहमहंभोगी सिद्धोहंबलवान्सुखी ॥ आढ्योभिजन
वानस्मि कोन्योस्तिसदृशोमया १४ ॥

देखहुकुमतिनरकपरगासा । विनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५

सो या कुमतिनको प्रकाशतो देखौ विनु अन्तरके लखे कि हम
कौनके हैं या विनाजाने किरतिम जो माया ताकेदास ह्वैरहे हैं
रक्षक को न माने रक्षा कौनकरे १५ ॥

जाके पूजेपाप न ऊड़ै । नाम सुमिरितैं भवमें बूड़ैं १६
पापपुण्यकेहाथहिपासा । मारिजक्तसवकीनविनासा १७
येबहनीदोउबहानिनछांड़ैं । यहगृहजारैंवहगृहमांड़ैं १८

औ जौने देवताके पूजे न पापछूटै ना मुक्तिहोइ तेई देवतन
को पूजैहैं उनहींको नाम सुमिरि सुमिरि संसारमें बूड़ैहैं १६ औ
नानाप्रकार के कर्म बताइकै पाप पुण्यरूप फांसी डारिकै जगत्
को विनाश करिदेत भये १७ औ कोईविप्रजेहैं ते बहनीकहे सं-
सारमें बहनवारी जो विद्या अविद्या माया पाप पुण्यरूप ताको
बहनिन कहे ढोवनवारो जोविप्र सो ऊपरतेछांड़िकै यहगृह
जारिकै कहे छोड़िकै वहगृह कहे वहांके महन्तभये ध्यान लगाय
कै वैठे १८ ॥

वैठेतेघर शाहु कहावें । भितरभेदमन मुसहिलगावें १९
ऐसीविधि सुरविप्रभनीजे । नामलेतपंचासन दीजे २०
बूड़िगयेनाहिंआपुसँभारा । ऊंचनीचकहुकाहि जोहारा २१
ऊंचनीचहै मध्यम वानी । एकैपवन एक है पानी २२

एकैमटियाएककुम्हारा। एकसबनकोसिरजनहारा २३
एकैचाकबहुचित्रबनाया। नादबिन्दुकेबीचसमाया २४

सो ऊपरते ऐसोध्यानलगायकै घरमें बैठे बड़ेसाधुकहावैं औ अन्तष्करणमें मनते पराईद्रव्य सूसैको भेदलगायेहैं १९ सोयहि रीति विप्रनके सुरनकी विधिकहै हैं नामको लेइहैं कहे मन्त्रजपै हैं औ पचासनकहे पंचआसन देइहैं अर्थात् पंचांगोपासना करै हैं २० सो आपै मायाके धारमें बूड़िगये न सँभारतभये तो ऊंच नीचकहे पांच देवतन में काको जोहारयो कहे काकेभये अर्थात् काहूके न भये २१ सो विप्रनको उत्तम मध्यम नीच बाणीकरिकै होइहैं वास्तव तो सबके शरीरनमें एकै पानी है एकै पवनहै २२ औ एकै सबकी माटीहै कहे सब पंचभौतिक हैं औ सबके सिरजनहार कुम्हार मन एकैहै २३ एकचाक जो जगत्है तामें बहुत विधिके चित्र बनावत भयो मन औ नादबिन्दु के बीच में आपै समातभयो २४ ॥

व्यापीएकसकलमेंज्योती। नामधरेकाकहियेमोती २५
राक्षसकरणीदेवकहावै। बादकरै भवपार न पावै २६
हंसदेहतजिन्याराहोई। ताकीजाति कहै धौं कोई २७
श्वेतसुपेदकिरातापियरा। अबरणबरण कि तासियरा २८

सो एकैज्योति जो आत्मा सो सबमें व्यापि रही है ब्राह्मण नाम धरयो सो ताहीते मोतीकही अर्थात् न कही बिना ब्रह्मजाने ब्राह्मण नहीं कहावै है २५ औ करणी तौ राक्षस की नाईं करै हैं औ जगत् में ब्राह्मणदेवता भूसुर कहावैहैं औ वादविवाद नाना प्रकारके करैहैं परंतु संसारसमुद्रको पारनहींपावैहैं २६ सो हंस जो जीवहै सो देहको त्यागिकै न्यारो ह्वैजाइहै ताकी जाति कोईकहै तो वह कौन वर्णहै ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र २७ औ

वह आत्मा श्वेतकहैश्यामहै कि सुपेदहै कि लालहै कि पियर है कि अवर्णहै कि वर्णमेंहै कि गरमहै कि शीतलहै २८ ॥

हिन्दूतुरुककिवूढ़ावारा । नारिपुरुष मिलिकरहुविचारा २९
कहियेकाहिकहानहिंमाना । दासकवीरस्वईपहिचाना ३०
साखी ॥ वहिआहैवहिजातुहैकरगहिऐंचहुओर ।
समभायेसमभैनहीं देधकादुइओर ३१

पुनि हिन्दूहै कि तुरुकहै कि वूढाहै कि लड़िकाहै या नारि पुरुष मिलिकै सवजने विचारकरो २९ सोयाबात कासोंकहौं कोईनहीं मानैहै सवकेरक्षक जे परमपुरुषश्रीरामचन्द्रहैं तिनकोदासकवीर कहैहैं कि मैं सोई पहिचान्यो है कि उनको अंशजीवहै वेस्वामी हैं ३० या जीव औरे औरेमें लगिकै वहत आयोहै औ वहाजाइ है सोकरगहि कहे एकवेर उपदेशकरिकै और ऐंचौहौं कि साहव में लागु समुभावत आयो हैं औ समुभावतहौं जो समुभाये न समुभै तोलाचारह्वैकै दुइ धका औरमहूं दैदेउँ कि वहांजाय ३१ ॥

इतिविप्रमतीसीसम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथबेलिलिख्यते ॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम । जगतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १ जोजागलसोभागलहोरमैयाराम । सोवतगैलबिगोयहोरमैयाराम २ आजवसेरानियरेहोरमैयाराम । काल्हिबसेरादूरिहोरमैयाराम ३ परेहुबिरानेदेशहोरमैयाराम । नयनमरैंगे ढूंढ़िहोरमैयाराम ४ त्रासमथनदधिकियोहोरमैयाराम । भवनमथ्यो भरिपूरिहोरमैयाराम ५ हंसापाहनभयलहोरमैयाराम । बेधिन पदनिरवानहोरमैयाराम ६ तुमहंसामनमानिकहोरमैयाराम । हटलनमानलमोरहोरमैयाराम ७ जसरेकियोतसपायोहोरमैयाराम । हमरदोपजनिदेहुहोरमैयाराम ८ अगमकाटिगमकीन्हों हो रमैयारम । सहजाकियोबेपारहोरमैयाराम ९ रामनामधन वनिजहुहोरमैयाराम । लादेहुवस्तुअमोलहोरमैयाराम १० नौ वहियादशगोनहोरमैयाराम । पांचलदनवालादेसाथहोरमैयाराम ११ पांचलदनवापरेहोरमैयाराम । खाखरिडारिनिखोरिहो रमैयाराम १२ शिरधुनिहंसाचलेहोरमैयाराम । सरवरमीतजो हारहोरमैयाराम १३ आगीसरवरलागिहोरमैयाराम । सरवर भोजरिछारहोरमैयाराम १४ कहैकबीरसुनोसन्तोहोरमैयाराम । परखिलेहुखरखोटहोरमैयाराम १५ ॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम । जगतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १
जोजागैसोभागैहोरमैयाराम । सोवतगैलबिगोयहोरमैयाराम २

सोहेरामनामके रमनवारे हंसा या शरीररूप सरवरमें तेरो ज्ञान जागतमें चोरमूसि लियो १ जो जागतहै मोहनिशाते सो

भागै है संसारते सो हे राम में रमनवारे मोहनिशा में सोवत सब बिगोय गयेहैं कहे नानायोनिमें संसारस्वप्नमें भटकत फिरे हैं २ ॥

आजुबसेरानियरेहोरमैयाराम। काल्हिबसेरादूरिहोरमैयाराम ३
परेहुबिरानेदेशहोरमैयाराम। नयनभरैगेढूंढिहोरमैयाराम ४

सो हे राममें रमनवार आजुबसेरानेरै है कहे मानुषशरीरई में ज्ञान होइहै सो पाये है काल्हि कहे जब या शरीर छूटिजाइगो तब बसेरा दूरि ह्वै जायगो अर्थात् अनेक योनिनमें भटकत फिरोगे तब मेरो ज्ञान होइगो तैं जागतै में लूटिगयोहै तैं काजागतरहे है नहीं जागतरहे ३ हे राम में रमनवारे आपनोदेश साकेत ताको छोड़िकै बिराने कहे मनके देशमें परयोहै तैसो अनेकयोनिनमें तेरी आंखी आंसू ढारि ढारि फूटि जायँगी ४ ॥

त्रासमथनदधिमथनहोरमैयाराम। भवनमथ्योभरिपूरिहोरमैयाराम ५ हंसापाहनभयलहोरमैयाराम। बेधिनपदनिर्बाणहोरमैयाराम ६ तुमहंसामनमानिकहोरमैयाराम। हटलनमानेहुँमोरहोरमैयाराम ७ ॥

त्रासमथन जो है रामनाम तौनै है दधिमथन कहे मथानीतौनेते हे रामनामके रमनवारे भवसमुद्र जो तेरे हृदयमें भरिपूर है ताको काहे नहीं मथ्यो ५ हेरामनामके रमनवारे तैंतो चैतन्य है मनके साथ तुहूंजड़ ह्वैगये है काहेतेकि निर्वाण पदको न बेधिकै तैं जड़ ह्वै गये है जो निर्वाणपद को बेधते तो मेरे साकेत को जाते ६ हे हंसा तुमहीं मनमें मानि कै कहो तो जब तुम रामनामको जगत्सुख अर्थ करन लग्यो है तब मैं हटक्योंहै सो तुम नहीं मान्यो है सो तुमतो रामनामके रमैयाहौ परंतु रामनामजो मोको वर्णनकरै ताको अर्थ नहींजान्यो संसारमें परयोहै ७ ॥

जसरेकियोतसपायोहोरमैयाराम। हमरदोषजनिदेहुहोरमैयाराम ८ अगमकाटिगमकीन्होंहोरमैयाराम।

सहजकियोंवैपारहोरमैयाराम ९ रामनामधनवनिजहु होरमैयाराम । लादेहुवस्तुअमोलहोरमैयाराम १० ॥

हे रामनामके रमनवारे हंसा जसकियो तसपायो हमारोदोष जनिदेहु ८ अगम जो राम नाम ताको काटि गमकीन्हों अर्थात् साहब मुख अर्थ छांडि जगत् मुख अर्थकियो फिरि वही रामनाम को ब्रह्ममुख अर्थकरि सहज व्यापार कहे सहजसमाधि लगावनलगे कि हमहीं ब्रह्म हैं ९ हे रामनाम के रमनवारे रामनाम धनको वनिज करिकै रामनाम अमोल्ल वस्तुलादेहु परंतु अर्थन जान्यो जो वनिजहु लादहु पाठहोइ तो यहअर्थ है अगमजो है रामनाम ताको काटिकै कहे बीजक में बनाइकै तुमको गमकैदियो कहे सुगम कैदियो समुझनलगे रामनाम को व्यापार तुम को सहजकैदियो अर्थात् रामनाम की सहजसमाधि तुमको केउ वतायदियो सो रामनाम अमोल है ताको वनिज करो औवही धनको लादो यह सांच है और सब झूठहै १० ॥

पांचलदनवालादेहोरमैयाराम । नौवहियादशगोन होरमैयाराम ११ पांचलदनवाआगेहोरमैयाराम । खा खरिडारिनिखोरिहोरमैयाराम १२ शिरधुनिहंसाउड़ि चलेहोरमैयाराम । सरवरमीतजोहारहोरमैयाराम १३॥

ताही ते पांच लदनवालादे अर्थात् पंचभौतिक शरीर धारण कीन्हेंते जौनेमें दशौ गोन दशइंद्री हैं तामें मन बुद्धि चित्तअहंकार पांचों प्राण ते वहिया हैं अर्थात् वहनवारे हैं चलावन वारे हैं ११ खाखरि जो शरीर तौन जब खोरिमें डारेनि अर्थात् नाश भयो तब पांच लदनवा कहे वही पंचभौतिक शरीर आगेमिलै है पांच लदनवा गिरि परे पाठ होइ तो यह अर्थ है कि जबइंद्री

गिरिपरी शक्ति न रहिगई तब शरीरो छूटिजाइ है १२ सो हंसा जो जीव है सो शिरधुनिकै सरवर जो शरीर मीत तौनेको जो- हारिकै उड़ि चलैहै १३ ॥

आगिलगीसरवरमेंहोरमैयाराम । सरवरजरिभोछा रहोरमैयाराम १४ कहैंकबीरसुनोसंतहोरमैयाराम । परखलेहुखरखोटहोरमैयाराम १५॥

जब हंसा उड़ि चलैहै तब सरवर जो शरीर तामें आगि लगै है सरवर जरिकै छारह्वैजाइहै सो हे रामनामके रमनवारे तुम सों संसारमुख अर्थकैकै तुम संसारमें परयो सो तुम्हारी यहदशा होतभई १४ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो साहब जो कहै हैं ताको सुनतेजाउ तुमतो रामनाममें रमनवारेहो सो रामनामको जगत्मुख अर्थ छांड़िकै साहब मुख अर्थ करिकै साहब में लागो साहब की वाणी गहो खरखोट परखिलेहु कौन खराहै कौन खोटहै साहबमुख अर्थ खराहै काहेतें साहिबै अपने मुख कहैहैं जगत्मुख अर्थ खोटहै सो खोट छांड़िकै साहबमें लागो १५ ॥

इतिप्रथमबेलिसमाप्तम् ॥

अथद्वितीयबेलि ॥

भलसुस्मृतिजहडायहुहोरमैयाराम।धोखाकियोविश्वासहोरमै- याराम १ सोतोहैंबनसांकसिहोरमैयाराम । शिरकैलियोविश्वा- सहोरमैयाराम २ ईतोहैंविधिभागहोरमैयाराम । गुरुदीन्होंमो- हिंथापिहोरमैयाराम३ गोबरकोटउठायहुहोरमैयाराम । परिहरि जैहोखोतहोरमैयाराम ४ बुधिबलतहांनपहुंचैहोरमैयाराम। खो जकहांतेहोयहोरमैयाराम ५ सुनिमनधीरजभयलहोरमैयाराम । मनबढ़िरहललजायहोरमैयाराम ६ फिरिपाछेजनिहेरहुहोरमैया

राम। कालवूतसवभायहोरमैयाराम ७ कहकबीरसुनौसंतौहो रमैयाराम। मतिढिगहीफैलावहोरमैयाराम ८॥

भलसुस्मृतिजहडायहुहोरमैयाराम।
धोखाकियेविश्वासहोरमैयाराम १

साहब कहैहैं हे रामनामके रमनवारे जीव तुम भलीतरहते स्मृतिमेंजहडाय गयो स्मृतिको तात्पर्यार्थ जो मैं ताको न जान्यो काहेते कि धोखाब्रह्ममें विश्वास कीन्हेते १॥

सोतौहैबनसीकासिहोरमैयाराम।
शिरकैलियोविश्वासहोरमैयाराम २

सोतौ है कहे सो धोखाब्रह्म बंसीकी नाईहै जो मछरीबंसीमें लागैहै ताको प्राणछूटिजाइहै ऐसे तुहूं वामेंलगैहै सो तेरोजीवत्व न रहैगो अर्थात् तेरा स्वरूप भूलिजाइगो मुरदाकी नाईटँगो रहैगो तौनेधोखाब्रह्ममें शिरकै विश्वास कैलियेहै अथवा जेगुरुवालोग तोको धोखा ब्रह्ममें विश्वास कराइदेइहैं स्मृतिनकाअर्थ फेरिकै ते वनके सीगटहैं उहाहैं वा जो ब्रह्महै सोतैं आहे यही कहैहैं अथवा हुआहै हुआ है या कहैहैं कि तैंलगा सोब्रह्म हुआ जैसे सीगटनकी वाणीमें अर्थ नहींहै ऐसे गुरुवालोगनकीबाणी में अर्थनहींहै तैं ब्रह्म कबहूं न होइगो तैं रामनाममें रमनवारो है सो ताहीमें रमै तबहींतेरोबनैगो २॥

ईतोहैंविधिभागहोरमैयाराम। गुरुदीन्ह्योंमोहिंथापिहोरमैयाराम ३ गोवरकोटउठायहुहोरमैयाराम। परिहरिजैहौखेतहोरमैयाराम ४॥

साहबकहैंहैं कि रामनामकेरमनवो यहस्मृति विधि नि-

पैथका भागकहावै है तौने भागवश मोको गुरुवा लोग वहँकाइ दियो मैं काकरौं मेरोदोप कौनहै तौ हमारो महल छोड़ि तहाँ गोवरको कोट उठायहुहै जो तैंगुरुवालोगनकेनजातेऔरउपासना न पूछते तौ वे काहेको वतौते सो मोको परिहरिके तैंसंसार रूप खेत में जैहै जहां सव उत्पत्तिहोइहै ३ । ४ ॥

बुधिवलतहांनपहुँचैहोरमैयाराम । खोजकहांतेहोय होरमैयाराम ५ सुनिमनधीरजभयलहोरमैयाराम । मन वढ़िरहललजायहोरमैयाराम ६ ॥

सो धोखाब्रह्म में बुधि वल नहीं पहुंचै है शून्यहै खोज कहां ते होइ जो कहो कि आपै में तो बुधि वल नहीं पहुंचैहै तौ जो कोईमेरे रामनाममें रमैहै मोको जानैहै ताकोमहीं वताइदेउँहौं नैनइन्द्री देउँहौं ताहीसे मोहींदेखैहै ५ गुरुवनकी वाणीसुनिकै जो तेरेमनमें धीरजभयो कि हम ब्रह्महवैजाइँगे सोराममेंरमनवारे वा ब्रह्ममें मन वढ़ि कै कहेंबिचार करत करत लजायगयो ब्रह्म न भयो मन आपनी गतिजब नहीं देखै है तब सकुचिकै वाहीमें रहिजाइहै मनको नाशनहीं होयहै ६ ॥

फिरिपाछेजनिहेरौहोरमैयाराम । कालवूतसवआय होरमैयाराम ७ कहकवीरसुनौसंतहोरमैयाराम । मति ढिगहीफैलावहोरमैयाराम ८ ॥

तुमतो रामनाममें रमनवारे ईतो सवतुमते पाछेहैं तिनकी ओर जनि हेरौ मायाब्रह्म कालके पराक्रम आय जो इनके ओर हेरोगे तौ येकालके वूत आयकहेकालके पराक्रमहै अर्थात् माये ब्रह्मद्वारा कालनाश सवको कैदेहै ७ सो श्रीकवीरजी कहैहैं कि हेसंतौ साहव कहैहैं सो सुनतेजाउ तुम तो राम नाममें रमन

वारेहौ दूरिदूरि कहां खोजौहो मतिको ढिगहीमें फैलाव अर्थात् अपने स्वरूपको विचारु कि मैं कौन को हौं तौ या जानि लेइ तें कि मैं राममें रमनवारो हौं रामनाम स्मरण करौगे तबहीं मुक्ति होयगी तामें प्रमाण ॥ असचरितदेखिमनभ्रमैमोर । ताते निशिदिनगुणरमौंतोर ॥ यकपढ़हिंपाठ यकभ्रम उदास । यक नगिननिरंतररहनिवास ॥ यकयोगयुक्तितिनहोहिंखीन । यक रामनामसँगरहललीन ॥ यकहोहिंदीनयकदेहिंदान । यककलपि कलपिकैहैहैंहरान ॥ यकतन्त्रमंत्रऔषधीवान । यकसकलसिद्धि राखैंअपान ॥ यकतीरथव्रतकरिकयाजीति । यकराम नामसों करन प्रीति ॥ यकधूमघोटितनहोहिंश्याम । तेरीमुक्तिनहीं विन रामनाम ॥ सतगुरूशब्दतोहिंकहपुकार । अबमूलगहोअनुभव विचार ॥ मैंजरामरणतेभयउँथीर । मैरामकृपायहकहकबीर ८॥

इतिवेलिसम्पूर्णम् ॥

अथचाचरिलिख्यते ॥

दोहा ॥ खेलतिमायामोहनी जेरकियोसंसार । कटिकेहरिगज गामिनी संशयाकियोशृंगार १ रचैरंगकीचूनरीसुन्दरिपहिरैआय। शोभा अद्भुतरूपकी महिमा बरणिनजाय २ चंद्रवदनिमृगलोच- नी विन्दुक दियोउघालि । यतीसती सबमोहिया गजगतिवाकी चालि ३ नारदकोमुखमाड़िकै लीन्होवदनछिनाय । गर्वगहेलीग- र्वते उलटिचलीमुसकाय ४शिवअरुब्रह्मादौरिकैदोनोंपकरेजाय। फगुवालीनछोड़ायकै वहुरिदियोछिटकाय ५ अनहद धुनिवाजा वजै श्रवणसुनतभोचाव । खेलनहारी खेलिहै जैसीवाकीदाव ६ आगेढालअज्ञानकी टारेटरत नपाव । खेलनिहारी खेलिहैबहुरि न ऐसीदाव ७ सुरनरमुनिभूदेवता गोरख दत्ताव्यास । सनक

सनंदन हारिया और कि केतिकआस ८ छिलकतथोयेप्रेमसोंधरि पिचकारिगात । करिलीनो वशआपने फिरिफिरि चितवत जात ९ ज्ञानगाड़लै रोपिया त्रिगुणलियो है हाथ । शिवसँग ब्रह्मालीनिया और लियेसबसाथ १० एकओर सुरमुनि खड़े एकअकेलीआप । दृष्टिपरेछोड़ैनहींकरिलीनोयकछाप ११ जेतेथेतेतेलियोघूंघुटमाहँ समोय।कज्जलवाकेरेखहैअदगगयानहिंकोय १२इंद्रकृष्णद्वारेखड़े लोचनदोउललचाय । कहकबीरतेऊबरे जाहिनमोहसमाय १३॥

खेलतिमायामोहनी जेरकियोसंसार। कटिकेहरिगज गामिनीसंशयकियोशृंगार १ रचेरंगकीचूनरीसुन्दरिप हिरैआय । शोभाअद्भुतरूपकीमहिमाबरणिनजाय २ ॥

जौन मायासब संसार को जेरकियो है सो मोहिनी माया चाचरि खेलै है केहरि जो है काल सब को खाइलेनवारो सो वाकी कटि है कहेमध्यभागहै मध्यमें बैठिकै अर्धऊर्ध को खाय है औ मनगज है तेहीकरिकै चलै है औ संशय रूपशृङ्गारकिये अर्थात् जहँबहुत संशयहोइहै तहँ माया बहुत शोभितहोइहै १ नारी लोग रचेकहे जो पीउ को रुचैहै सो चूनरी पहिरै हैं औ माया नाना बिषय जो जीवन को नीकलगै ताकीचूनरी पहिरै हैं अद्भुत शोभा स्त्रियनहूं की होइ है यहैमायौकी अद्भुत शोभा है २ ॥

चन्द्रबदनिमृगलोचनीविन्दुकदियोउघालि । यती सतीसबमोहियागजगतिवाकीचालि ३ नारदको मुख माड़िकैलीन्होंबदनछिपाय । गर्बगहेलीगर्बतेउलटिच लीमुसकाय ४ ॥

औ नारी चंद्रबदनी मृगनयनी बिंदुकदीन्हे घूंघुटउघारि गज की नाईं चलिसबको मोहे हैं माया कैसी है कि याहूचंद्रबदनी है आपने पदार्थते सबको आनन्द देय है मृगनयनी कहे यहूचंचल

है विंदुकदीन्हे उघारिकहे आपने रागको फैलाइ देइहै गज गति कहे धीरे धीरे यती सती सब को मोहै है ३ वै स्त्री नारद कहे जाके रदकहे दांतनहीं हैं ऐसे जेवृद्ध पुरुष तिनको मुखमाड़िकैब-दन कहे बोलिवो छिनायलेती हैं अर्थात् और बोलिवो सो छूटि जाइहै नारी नारी यहै कहैहैं चाचरि वोऊ गावैलगे हैं अथवामा-या जोहै सो नारद ऐसे मुनिको बांदरकीनाईं मुखकैदियो शील-निधि राजाकी कन्याको काज करैचले औ स्त्री गर्व को गहे लोगनके मोहिवेको चाचरि में मुसक्याय चलैहैं औ माया जोहै सोऊनारदके गर्वको गहिकै मुसक्याय कै चली है ४ ॥

शिवअरुब्रह्मादौरिकैदोनोंपकरेजाय । फगुवालीनछि नायकैबहुरिदियोछिटकाय ५ अनहदधुनिबाजाबजैश्र वणसुनतभोचाव । खेलनिहारीखेलिहैजैसीवाकीदाव ६ ॥

औ स्त्रीजेहैं तेपुरुषनते चाचरिमें पकरि फगुवालैकै आपुस में छिटकाय कहे बांटिलेइहैं औ माया जोहै सोऊब्रह्माशिवतिन को पकरिकै फगुवा जो नानामत सो लैकै अनेक ब्रह्मांडनमें छि-टकाय दीन्हों ५ चाचरिमें बाजा बजै है ताको सुनिकैचाव होइ है खेलनिहारी आपनो दावँ ताकि ताकि खेलैहै औ माया जोहै सोऊ अनहदबाजा योगिनके बजायकै जोनेके सुनतमें योगिनके चावहोइ है सो खेलनिहारी जो कुंडलिनीशक्ति सो जैसो वाको दावँ है तैसोखेलैहै जीवको चढ़ावै औ उतारै है ६ ॥

आगेढालअज्ञानकीटारेटरतनपाव । खेलनिहारीखे लिहैबहुरिनऐसीदाव ७ सुरनरमुनिभूदेवतागोरखदत्ता व्यास । सनकसनन्दनहारियाऔरकिकेतिकआस ८ ॥

चाचरिमें स्त्रीभोडरकी ढाल आगेकरि पांवपीछेकोनहींटारैहैं

सोखेलनिहारीजे हैं ते जबपतिको पायजाय हैं तबकहेहैं किखेलि लेउ अब ऐसो दावँ न मिलैगो औ मायाजो है सोऊ अज्ञान की ढालआगे लीन्हे है जाकोपांव ज्ञानभक्ति वैराग्यकरि टारेनहींटरै सो खेलनिहारी जोमाया सो खेलवै करी ऐसोदांवँवाको फिरि न मिलैगो अपने वशकरिपायोहै ७ औचाचरि में स्त्रिनते पुरुष हारिजाइहैं सुखमानैहैं औमायाजोहै ताहूसों सुरजेहैं नर जेहैंमुनि जेहैं भूदेवजे ब्राह्मणहैं गोरखजे हैं दत्तात्रेयजे हैं व्यासजे हैं सनकसनंदनजे हैं ते सब हारिगये और की कौनगनती है ८॥

छिलकतथोथेप्रेमसोंधरिपिचकारीगात । करिलीनोबशआपनेफिरिफिरिचितवतजात ९ ज्ञानगाड़लैरोपियात्रिगुणलियेहैहाथ। शिवसँगब्रह्मालीनियाऔरलियेसबसाथ १०॥

चाचरिमें नारी रंगकी पिचकारी गातमें सींचि आपने वशकरि फिरि फिरि चितवत कहे कटाक्ष करै हैं औ मायाजो है सोऊ थोथे कहे झूठेप्रेमसो संसार राग सबको गातसींचै है आपनेवशकरिलियेहै औ फिरि फिरि चितवत जातै है कहेंसबको ताकेरहै है किकोऊ बाच्यो तौनहीं ९ औ चाचरिमें स्त्री लोग रंगकेहौदमें डारिदेइहैं औ फूलनके मालामें हाथबांधै हैं पुरुषनको औ माया जो है सोऊज्ञानके गाड़में ब्रह्मादिक देवतनको डारिकै त्रिगुणकी फांसीमें बांधिलियो १०॥

एकओरसुरमुनिखड़ेएकअकेलीआप । दृष्टिपरेछोड़ेनहींकरिलियएकैछाप ११ जेतेथेतेलियोघूंघुटमाहँसमाय। कज्जलवारेरेखहेंअदगनकोइजाय १२ इन्द्रकृष्णद्वारेखरेलोचनन्निजललचाय । कहकबीरतेउबरेजाहिनमोहसमाय १३॥

औ चाचरिमें दुइपारादोयहैं एक ओर आप एकओरपुरुष होइ

है ऐसे सुर नर मुनि सब एक ओरहैं एक ओर माया अकेली आप है दृष्टिपरे काहूको नहींछोड़ैहै ११ औ स्त्री जेहैं ते आपने घूंघुटमें सबको मन समाय लेइहैं सबके काजर लगाइदेइ हैं अदगकोई नहींजायहै माया जोहै सोऊ आपने में सबको समाय लियो है सबके एकदाग लगाइ दियोहै अदग कोईनहीं बच्यो १२ चाचरि में स्त्रिनके द्वारे इन्द्र कृष्ण सबखड़े रहैहैं लोचन देखिवेको ललचायहैं ऐसेमाया जो है ताहूके द्वारे में इन्द्रकृष्णजे हैं उपेन्द्र ते खड़ेहैं मायाके देखिवे को लोचन ललचाय हैं तो श्री कबीरजी कहैहैं कि तेई पुरुष उबरेहैं जे मोहमें नहीं समाने हैं १३ ॥

इतिपहिली चाचरिसमाप्तम् ॥

अथदूसरीचाचरि ॥

जारहु जगको नेहरा मनबौराहो । जामें शोक संताप समुझ मनबौराहो १ कालधूत को हस्तिनी मनबौराहो । चित्ररच्योजग दीश समुझमन बौराहो २ विना नेइको देवघरा मनबौराहो । विन कहगिलकै ईंट समुझमन बौराहो ३ तन धन क्या सो गर्भ समुझमनबौराहो । भसमक्रीमकीसाजु समुझमनबौराहो ४ कामअन्ध गजवशपरे मन बौराहो । अंकुश सहियाशीश समुझ मन बौराहो ५ ऊँचनीच जानेहु नहींमन बौराहो । घरघरनाचेहु द्वार समुझमन बौराहो ६ मरकट मूठीस्वादकी मनबौराहो । लीन्हों भुजा पसारि समुझ मन बौराहो ७ छूटनकी संशयपरी मनबौराहो । घरघरखायो डांग समुझमन बौराहो ८ ज्योंसुवना नलिनी गह्यो मन बौराहो । ऐसामर्म विचारि समुझमन बौराहो ९ पढ़ेगुनेका कीजिये मन बौराहो । अंतविलैया खाय समुझ मनबौराहो १० सूनेघरका पाहुना मनबौराहो । ज्योंआवै त्यों जाय समुझमनबौराहो ११ न्हानेका तीरथघनी मन बौराहो । पूजेका बहुदेव समुझमन बौराहो १२ बिनपानी नलबूड़ियामन

वौराहो। तुमटेकहु रामजहाजसमुझ मनवौराहो १३ कहकवीर जग भर्मिया मन वौराहो। तुम छोड़े हरिकासेव समुझमन वौराहो १४ इतिदूसरीचाचरिसमाप्तम्॥

जारहुजगकोनेहरा मनवौराहो। जामेंशोकसंतापस मुझमनवौराहो १ कालबूतकीहस्तिनीमनवौराहो। चित्ररचोजगदीशसमुझमनवौराहो २ विनानेइकोदेवघरा मनवौराहो। विनकहगिलकैईटसमुझमनवौराहो ३॥

हेमन करिकै वौराजीव जौनेमें शोक संताप अनेक पावैहै ते सब ऐसो जगत्कोनेहरा समुझिकै जारिदे १ औ या जगत्काल-बूत जो धोखा ताकी हस्तिनी है अर्थात् झूठो है जौनरूपते देखै जगदीश जो साहबताकोरचो यह चित्रहै सो विचारिकै छांड़ो औ यादेह कैसी है जैसेविना नेहकोदेवाला औ धनकैसोहै जैसे विना गिलावाकीईट अर्थात् देवालाकीनाई यातनागिरिही जायगो ईट कीनाई जैसेईट खरकिजाइहै तैसेतन खरकिही जायगो २।३॥

तनधनसों क्यागर्व समुझमनवौराहो। भसमक्रीम कीसाजुसमुझमनवौराहो ४ कामअन्धगजवशपरेमन वौराहो। अंकुशसहियाशीशसमुझमनवौराहो ५ ऊंच नीचजानेहुनहींमनवौराहो। घरघरनाचेहुद्वारसमुझम नवौराहो ६॥

सोऐसे नाशमान तनधनको क्यागर्वकरै है भस्म औ कीरा की साजुहै सोतैं जैसेकामते आंधरह्वैकै हाथीहथिनी वास्तेबाँधि-कै अंकुश शिशमें सहैहै ऐसे तैं विषयकी वशपरिकै नानाप्रकार के दुःखसहैहै ऊंचनीच न पहिंचाने द्वारद्वारवागतफिरैहै ४।५।६॥

मरकटमूठीस्वादकीमनवौराहो। लीन्हींभुजापसारि

समुझमनबौराहो ७ छूटनकीसंशयपरीमनबौराहो। घर घरखायोडांगसमुझमनबौराहो ८॥

जैसेमर्कट स्वादके लिये भुजापसारिचनालेइहै मूठी नहीं छांड़ै है ऐसेतैं मुक्तिकेलिये नानामतन में परिकै दृढ़कैलियो है साहब को नहीं जानैहै सोतोको संसारते छूटिबेकी संशय आइ परी है यमकेघर लाठीखायहै पै मतनहीं छांड़ैहै सो हेबौराजीव मन करिकै समुझुतौ ७।८॥

ज्योंसुवनानलिनीगह्योमनबौराहो। ऐसाभर्मबिचा-रिसमुझमनबौराहो ९ पढ़ेगुनेकाकीजियेमनबौराहो। अंतविलैयाखायसमुझमनबौराहो १०॥

जैसेनलिनीकोसुवाभ्रमतेगहे है कोऊ धरैनहीं है ऐसे तुहूं आ-पने भ्रमते बँधोहै सो साहबको जानै विचारकरैतौ छूटिहीजायहै जो सुवा पढ़े गुने बहुतभयो तौ काभयो बिलैया तो अंतमेंखाय है सो ऐसेतैं बहुत पढ़िगुनि नानामतकीन्हें परन्तुजोनेमें मीचते बचै सो तौ करबही न कियो ९।१०॥

सूनेघरकापाहुनामनबौराहो। ज्योंआवैत्योंजाइसमु झमनबौराहो ११ न्हानेकातीरथघनामनबौराहो। पूजे काबहुदेवसमुझमनबौराहो १२ बिनपानीनलबूड़िया मनबौराहो। टेकहुरामजहाजसमुझमनबौराहो १३ क हकबीरजगभर्मियामनबौराहो। छोड़ेहरिकोसेवसमुझ मनबौराहो १४॥

सोतैं शून्यधोखा ब्रह्ममें लगिकै सूनाघरको पाहुनाभयो जैसे आयो तैसे चल्यो मुक्ति नभईसो जोमुक्ति नभई तौकाबहुत तीर्थ

नहाये भयो का वहुत देवपूजे भयोतें तो विनापानीको जो संसार समुद्रतौनेनमें बूड़िगयो सोतें श्रीरामनामरूपी जहाजसमुभ्किकै धरु श्रीकबीरजी कहै हैं कि हेमन करिकै औराजीवजगत् में भर्मियाकहे भ्रमत फिरै है हरिजे साहवहैं तिनकी सेवाछोड़िकै सो हे मन वौरा अवहूंसमुभ्क ११। १२। १३। १४॥

इतिचाचरिसमाप्तम्॥

—o—

अथहिंडोलालिख्यते॥

भर्महिंडोलना भूलै सबजगआय। जहँपापपुण्यकेखंभदोऊ मेरु मायानाय। तहँकर्मपटुलीवैठिकै कोको न भूलैआय १ यह लोभ मरुवा बिषय भमरा कामकीलाठानि। दोउशुभौ अशुभ बनाय डांड़ीगह्यो दूनौपानि२ भूलेसो गणगंधर्व मुनिनरभुले सुरगण इन्द्र। भूलतसुनारदशारदाहो भुलतव्यासफणिन्द्र३ भूलत बिरंचिमहेश मुनिहो भुलतसूरजइन्दु। औ आपुनिरगुण सगुण है कै भूलियागोविन्दु ४ छचारिचौदहसातयकइस तीनलोकबनाय। चौखानिबानी खोजिदेखौथिरनकोइरहाय ५ शशिसूरनिशि दिनसंधि औतहँ तत्त्वपांचौनाहिं। कालहु अकालहु प्रलय नाहिं तहँसंत बिरलेजाहिं ६ खण्डहु ब्रह्मण्डहु खोजिषटदरशनये छूटे नाहिं। यह साधुसंगविचारि देखौजीउ निसतरिजाहिं ७ तहँके बिछुरिबहुकल्प वीतेपरेभूमि भुलाय। अवसाधुसंगति शोचिदेखौ वहुरिउलटि समाय ८ तेहि भूलवेकीभयनाहिं जोसंतहोहिंसुजानं। कहकवीर सतसुकृतमिलै तौ फिरि न भूलै आन ९॥

भर्महिंडोलनाभूलैसबजगआय। जहँपापपुण्यके खम्भदोऊमेरुमायानाय। तहँकर्मपटुलीवैठिकैकोकोन भूलैआय १ यहलोभमरुवाविषयभमराकामकीलाठा नि। दोउशुभौअशुभवनायडांड़ीगहेदूनोपानि २॥

परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के बिनाजाने भरमको हिंडोला सब संसार झूलैहैकैसोहै हिंडोला जहां पाप पुण्य रूप दोऊ खंभहैं माया जोहै सो मेरुकहे गोलाहै जौने में कर्मरूपी पटुली है ताहीमें बैठिकै कोनहीं झूल्यो अर्थात् सबझूल्यो है १ लोभ जो है सोई मरुवालगो है विषयजो है सोई भमराहै कामजोहै सोई कीलाहै औ शुभौ अशुभ जे उपासनाहैं तेई डांड़ीहैं ताको पाणिते गहिकै सबझूलैहैं को को झूलैहैं ताको आगेकहै हैं २ ॥

झूलेसोगणगन्धर्वमुनिनरझूलेसुरगणइन्द्र । झूलतसुनारदशारदाहोझुलतब्यासफणीन्द्र ३ झूलतबिरंचिमहेशमुनिहोझुलतसूरजइंदु । औआपुनिर्गुणसगुण ह्वै कै झूलियागोविंदु ४ ॥

गन्धर्व मुनि नर सुरगण इन्द्र नारद शारदा व्यासफणीन्द्रजे हैं शेष महेश जेहैं बिरञ्चि सूर्य्य चन्द्रमा ये सब झूलै हैं और कहां तक कहैं सगुण निर्गुण रूपते अर्थात् चितअचित के अंतर्यामी ह्वै कै गोविंद जेहैं तेऊ झूलैहैं ३ । ४ ॥

छचारिचौदहसातयकइसतीनलोकबनाय । चौखानिवानीखोजिदेखौथिरनकोइरहाय ५ ॥

छः जे शास्त्रहैं चारि जेवेदहैं चौदह जे बिद्याहैं सातजेद्वीपहैं औ इक्कीसौ जेहैं सातशून्य सातसुरति सातकमल यतनेमें परेजे तीनिउलोककी रचनाभई सो इनमें चारिउखानिके परे जे जीव तिनकी हम चारिउ बानीते वेदशास्त्रादिकनते बिचारि खोजि देख्यो कोई थिरनहीं रहै हैं सबै झूलैहैं सो तैं इहांको नहीं है तैं तो वाहरको है जहां इहांकीसाजु उहांएकौनहीं है ५ ॥

शशिसूरनिशिदिनसंधिऔतहँतत्त्वपांचौनाहिं । का

लौअकालौप्रलयनहिंतहँसंतविरलेजाहिं ६ खण्डौब्रह्म
ण्डौखोजिषटदरशनयेछूटेनाहिं । यहसाधुसंगविचारि
देखौजीवनिसतरिजाहिं ७॥

न उहां सूर्य्यहैं न चंद्रहैं न दिनहै न राति है न संध्या है न पांचौ तत्त्वहैं न कालहै न अकालहै न उहां प्रलयहै ऐसी जगह में कोई बिरलेसंतजाइहैं ६ पुनिकैसोहैजाकोखण्डजोशरीरब्रह्माण्ड जो जगत्तामें वाको छइउ दर्शनवारे खोजि खोजिहारे परंतु पायेनहीं न संसारते छूटे सो ऐसे लोकको साधुजे हैं तिनको सङ्गकरिकैबिचारिकैदेखै जातेजीव यहिसंसारतेनिस्तरिजाइ७॥

तहँकेबिछुरबहुकल्पबीतेपरेभूमिभुलाय । अबसाधु
संगतिशोचिदेखौबहुरिउलटिसमाय ८ तेहिभूलवेकी
भयनहींजोसंतहोहिंसुजान । कहकबीरसतसुकृतमिले
तौफिरिनभूलेआन ९॥

सो ऐसेलोकते बिछुरे तोकों केतन्यों कल्प व्यतीतिभये तैं संसार में भुलायकैपरेआय सो तैं अबसाधु सङ्गतिकरि बिचारिकै रामनामकोजानै जाते बहुरिकै वहैं समाय अर्थात् जहांतेआये है तहैंजाय यासंसार हिंडोला छांडु जोकोई साहबके जाननवारे सुजानसाधुहैं तिनको या हिंडोलामें भूलवेकी भयनहीं है तिन सों श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो याको सतसुकृत रामनाममिलै तो फिर आनीवार न भूलै को जपिवे जो है सोई सत्य सुकृत है वहीबांमनो गोचरातीतजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके और जेसुकृत हैं ते क्षयमानहैं औ रामनाम पार पहुंचवैहै तहांते नहीं लौटै है तामें प्रमाण॥सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकः । एकएव परोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम्॥ इतिसारस्वततंत्रे ॥ दूसरप्रमाण॥ इममेवपरं मंत्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवताः। ऋषयश्चमहात्मानोमुक्ताज त्वाभवाम्बुधे रितिपुलहसंहितास्मृतिः ८ । ९ ॥

अथदूसराहिंडोला ॥

बहुविधिकेचित्रवनाइकैहरिरच्योक्रीडारास। ज्यहिनाहिंइच्छा झूलवेअसवुद्धिकेहिकेपास १ झूलतझुलतबहुकल्पवीतेमननछो- डैआस। यह रच्यो रहसहिंडोलनानिशिचारियुगचौमास २ कबहूं क ऊंचेनीचकवहूंस्वर्गभूलौंजाय। अतिभ्रमतभ्रमहिंहिंडोलनासो नेकुनहिंठहराय ३ डरपतरहौंयहिझूलिवेकोराखुयादवराय। कह कविरसुनुगोपालबिनतीशरणहौंतुवपाय ४ ॥

बहुविधिकेचित्रबनाइकै हरिरच्योक्रीड़ारास। ज्यहि नाहिंइच्छाझूलवेअसबुद्धिकेहिकेपास १ झूलतझुलत बहुकल्पबीतेमननछोड़ैआस । यहरच्योरहसहिंडोल- नानिशिचारियुगचौमास २ कबहूंकऊंचेनीचकबहूं स्वर्गभूलौंजाय । अतिभ्रमतभ्रमहिंहिंडोलना सोनेकुन हिंठहराय ३ डरपतरहौंयहिझूलिबेको राखुयादवरा य । कहकबिरसुनुगोपालबिनतीशरणहौंतुवपाय ४ ॥

वहुतविधि चित्र वनाइकै या जगत्‌हरि जे हैं गोलोकवासी कृष्णचंद्र आपनी क्रीडा वनाइ राख्योहै अर्थात् अन्तर्यामी रूपते आपही विहारकरैहैं सो या जगत्‌रूप हिंडोला में झूलिबेकी वु- द्धि केहिके नहीं आई अर्थात् सबैके है न झूलिबेकी बुद्धिकोई विरले सन्तनकेहै सो ऐसो हिंडोलना चारियुगजेहैं चौमासतामें रच्योहै जीवनको झूलत झूलत कोटिन कल्पव्यतीतभये तऊ झूलिवेकी आशा मननहीं छोड़ैहै हिंडोलाकेचढ़ैया कहूंनीचेआवै हैं कहूँ ऊँचेजायहैं ऐसेअतिभ्रमतजोजगत्‌रूप हिंडोला तामें परे जे जीव ते कहूं नरकको जायहैं कहूँ स्वर्गको जायहैं सो हे जीवो याजगत्‌रूप हिंडोलाझूलिवेको डरतरहौ राखुयादवराय याकहो कि हेयादवराय कृष्णचंद्रहमको वचायो सोहेकायाके वीरौजीवो

यहकहौ कि हेगोपाल गो जेहैं इन्द्री तिनके रक्षाकरनवारे हमारी विनती सुनौ हम तुम्हारे चरण शरण हैं १।१२॥

अथतीसराहिंडोला॥

जहँलोभमोहकेखम्भदोऊमनरच्योहैहिंडोर। तहँझुलहिंजीव जहानजहँलगिकतहुँनाहिंथिततठोर १ चतुराझुलैंचतुराइयाझूलैं औराजासेव। अरुचन्द्रसूरजदोऊझूलहिंनाहिंपायोभेव २ चौरा-सिलक्षहुजीवझूलैंधरहिंरविसुतधाय। कोटिनकल्पयुगवीतिया मानैनअजहूं हाय ३ धरणीअकाशहुदोऊझूलैंझुलैंपवनहुँनीर। धरिदेहहरिआपहूझूलहिंलखहिंहंसकवीर ४॥

जहँलोभमोहकेखम्भदोऊ मनरच्योहैहिंडोर। तहँझु-लहिंजीव जहानजहँलगि कतहुँनाहिंथिततठोर १ चतुरा झुलैंचतुराइयाझूलैं औराजासेव। अरुचन्द्रसूरजदोऊ झूलहिंनाहिंपायोभेव २ चौरासिलक्षहुजीवझूलैंधरहिं रविसुतधाय। कोटिनकल्पयुगवीतिया मानैनअजहूं हाय ३ धरणीअकाशहुदोऊझूलैंझुलैंपवनहुँनीर। धरि देहहरिआपहूझूलहिं लखहिंहंसकवीर ४॥

जौन जगत्में लोभ मोहके खम्भ बनाइकै मनको रच्यो जो हिंडोल ताहीमें सब जहानके जीव झूलैहैं थिर नहीं कौनो ठौर में रहैहैं१चतुर चतुराईते झूलै हैं राजा झूलैहैं सेवक झूलै हैं चंद्र सूर्य तेऊझूलैहैं हिंडोलाको भेद नहीं पावैहैं२चौरासीलक्षयोनिके जीव झूलैहैं तिनको सबको रविसुत जे यमराज ते धरैहैं सो कोटिन कल्प वीतिगये जीवनको झूलत परन्तु अजहूंनहींमानै हैं३औ धरणी आकाश पवन पानी ये सब वही हिंडोलामें झूलैहैं

औ देहधरिकै कहे अवतारलैकै जौनीरीति सबभूलैहैं तौनीरीति हरि आपहू भूले हैं जीवनको यह दिखाइबेको कि जैसे तुमहूं भूलौहौ तैसे हमहूं भूलैहैं सो देहधरेको फल यहहै इनको हेतु कोई जानिनहीं सकैहै कि जीवनपर दयाकरिकै उद्धार करिबे को हेतुदिखावैहैं कि देहको फल यह संसारई है तातेदेहकोअभिमान छोडि हमारे अवतारके नाम लीलादिकनमें लागि मनको त्यागकरिकै चारोशरीरनको त्याग करिदेउ जबतुम आपनेस्वरूप में स्थित रहौगे तब हंसस्वरूपदै आपने धामको लै आवोगो यह बात कोईनहीं लखैहै कहे जानैहै जेहंसस्वरूपपाये कायाके बीर जीवैहैं तेईजानैहैं याते साहबकी दयालुता व्यंजितभई ४ ॥

इतिहिंडोलासमाप्तम् ॥

अथ बिरहुली लिख्यते ॥

आदिअंतनहिंहोतबिरहुली । नहिंजड़पल्लवपेड़बिरहुली १ निशिबासरनहिंहोतबिरहुली । पानीपवननहोतबिरहुली २ ब्रह्म आदिसनकादिबिरहुली । कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३ मास असाढ़हिशीतबिरहुली । बोइनसातौबीजबिरहुली ४ नितगोड़ै नितसिंचैबिरहुली । नितनवपल्लवपेड़बिरहुली ५ छिछिलबिरहुलीछिछिलबिरहुली । छिछिलरहीतिहुंलोकबिरहुली ६ फूल एकभलफुललबिरहुली । फूलिरहलसंसारबिरहुली ७ तेफुल बंदैभक्तबिरहुली । बांधिकैराउरजाहिबिरहुली ८ तेफुललेहींसंत बिरहुली । डसिगोबेतलसांपबिरहुली ९ बिषहरमंत्रनमानबिरहुली । गाडुरिबोलेआरबिरहुली १० बिषकीक्यारीबोयोबिरहुली।लोरतकापछितायबिरहुली ११ जन्मजन्मअवतरेबिरहुली । फलयककनयलडारबिरहुली १२ कहकबीरसचुपायबिरहुली । जोफलचाखहुमोरबिरहुली १३ ॥

आदिअंतनहिंहोतबिरहुली। नहिंजड़पल्लवपेड़बिरहुली १
निशिवासरनहिंहोतबिरहुली। पानीपवननहोतबिरहुली २
ब्रह्मआदिसनकादिबिरहुली। कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३

बीकहे दुइविद्या अविद्यारूपते रहुलीकहे रहनवाली जोमाया ताको न आदिहै न अंतहै अर्थात् विचारकीन्हे भ्रममात्रहै जीव छूटि मात्रजाइ है सो बिरहुली जोमाया ताके न जड़है न पेड़है न पल्लवहै अर्थात् विचार कीन्हे मिथ्या है १ जब निशिवासर नहीं होत है तबहूं बिरहुली माया रहीहै जब पानी पवन नहीं रह्यो तबहूं बिरहुलीमाया रहीहै औ ब्रह्मा सनकादिककी आदि बिरहुलीहै औ जौनयोग अपार कथिगयेहैं सोऊबिरहुलीहै २।३॥

मासअसाढ़हिशीतबिरहुली। बोइन सातौबीजबिरहुली ४
नितगोड़ैनितसिंचैबिरहुली। नितनवपल्लवपेड़बिरहुली ५

जब प्रथम उत्पत्तिभईहै सोई आषाढ़मासहै काहेते चौमास को आदि आषाढ़ है तैसे युगनको आदि सतयुग है सो कैसा है शीतकहे शुद्धसतोगुण है तौनेमें जीव सातौ सुरति तेईहैं बीज तेके बोवतभयेते सब बिरहुलिन आइ सो मंगल में लिखिआये हैं कि॥ सातसुरति सब मूलहैं प्रलयहु इनहींमाहँ॥ सो जीव नित गोड़ैहै गुरुवनते बोईकर्म्म पूछैहै खोदि खोदि नित सींचैहै कहे बोई कर्म्मकरैहै जाते बिरहुलीकहेमायाबढ़तैजाइहै ४।५॥

छिछिलबिरहुलीछिछिलबिरहुली। छिछिलरहल तिहुँलोकबिरहुली ६ फूलएक भलफुललबिरहुली। फूलिरहलसंसारबिरहुली ७॥

कहूं विद्यारूपते छिछिली है बिरहुलीमाया कहूं अविद्यारूप ते छिछिली है बिरहुलीमाया यहीरीतिते तीनोंलोकमें बिरहुली

छिछिलरही है सो यहीमाया बिरहुली में कहूं कर्म्मत्यागरूप एक फूल धोखाब्रह्म फूलिरह्यो है ताही में सब संसार लगिकै फूलिरहे कहे आनन्द मानिलियेहैं ६। ७॥

तेफुलवन्दैभक्तिबिरहुली। बांधिकैराउरजायबिरहुली ८
तेफुललेहींसंतबिरहुली। डसिगोबेतलसांपबिरहुली ९

ते फुलकहे तौन जो धोखाब्रह्म सो भक्तनको बन्दैहै अर्थात् खुलो नहीं है वै धोखा में नहीं परैहै काहेते वाको बांधिकै कहे खण्डनकरिकै राउर जो साहबको महल है तहांको जाहिहैं औ जे सन्त धोखाब्रह्मरूप फूल लेहिहैं अर्थात् ब्रह्मबिचारमेंजेशांत भे साहब को भूलिगे ते बेतलकहे बेताल भुतहा सांप ऐसो जो धोखाब्रह्म तौनेते डसिगे धुनियाहे जाको सांपडसैहै ताकोस्वरूप भूलिजाइ है सांपै, बोलै है ऐसे जे धोखाब्रह्मवारे हैं तिनहूं को आपनास्वरूप भूलिगये कहैहैं हमहीं ब्रह्महैं ८। ९॥

विषहरमंत्रनमानबिरहुली। गाडुरिबोलैआरबिरहुली १०
विषकीक्यारीबोयोबिरहुली।अबलोरतपछितायबिरहुली ११

जाको ब्रह्मरूप सर्पडस्यो सो ब्रह्मरूप सर्पको बिष हरनवारो जोराम नाम ताकोनहीं मानैहै गाडुरि जेहैं तेआरबोलैहैं भारै हैं इहां सतगुरु जेहैं ते रामनाम उपदेशकरैहैंपरन्तुनहीं मानैहै १० सो विषयकी कियारी जो या संसार तामें आत्मज्ञानरूप बीज बोयो सो वा बिरहुलीकहे मायैआय सो अबलोरतकहे काटतमें का पछिताय है अबका विषय छांड़ैहै नहीं छांड़ैहै कहूं ब्रह्मानंद की कहूं विषयानन्दकी चाह विद्यामें ब्रह्मानन्दकी चाह अविद्या में विषयानन्दकी चाह तोको नहीं छांड़ैहै ११॥

जन्मजन्मअवतरेउबिरहुली । फलयककनयलडारबिरहुलो १२

कहकबीरसचुपायबिरहुली । जोफल चाखहुमोरबिरहुली १३

सो हे जीव बिरहुली जो माया ताहीमें तुम जन्मजन्म अवतरयो जौने बिरहुलीको फल धोखाब्रह्म औ वहकर्मफल कैसोहै कि कनयल कैसो फल है अर्थात् निरसहै रस नहींहै औविषधर है सो कौनीतरहतेसचुपावोगे१२लो श्रीकबीरजीकहे हैं कि तब सचुको पावै जब फल मोर चाखैकहे जौने रामनाममें मैंजपौहौं ताहीफलकोचाखैतो सुचित्तईपावै याकनयलकाफलनचाखै१३॥

इतिबिरहुलीसमाप्तम्॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथसाखीलिख्यते ॥

जहियाजन्ममुक्ताहता तहियाहतानकोइ ॥
छठीतिहारीहोजगा तूकहँचलाबिगोइ १

गुरुमुख ॥ जीवसों साहब कहैहैं जहियाकहे प्रथम जब तुम जन्मते मुक्तरह्योहै कहे जन्ममरणते छूटरह्योहै ताहिया कहे तब येमनादिक नहीं रहे जो जहिया जनमुक्ता हता या पाठहोय तो साहबकहैहैं कि हे जन हमरे दासजब तुममुक्तरहयोहै तब येमनादिक कोई नहीं रहे अणुविज्वर गुणातीत चिन्मात्रमेरो अंशसनातनको या स्वरूपते रह्योहै छठईदेह हमारेपासहै तू कहांबिगरोजाइहै मनादिकनमें लगिकै तैंकैवल्य शरीरमें टिकिकै हमारे प्रकाशमें स्थितरहै हमको नहीं जाने याहीते माया तोको धरिकै संसारमें डारिदियो सोतुम कैवल्यतनते महाकारणमें महाकारणते कारणमें कारणते सूक्ष्ममें सूक्ष्मते स्थूलशरीर में गयो सो जोअजहूं मनादिकनको त्यागिकै मोकोजानै तौमैं तोको हंसशरीरदेउँ तामेंटिकि मेरेपासआवै प्रथमसाहब वरज्यो है ताकोप्रमाणआगे वेलिमें लिखिआये हैं जो कोई कहै कि हंसस्वरूपईते माया तोधरिलेआईहै औभूलिभईहै सोबिना विचारेकहैहै पारिखकरिकैदेखो तो जोहंसस्वरूपईते मायाधरि लेआवती तौपुनि जबहंसस्वरूप पावैगो तबहूं न माया धरि लेआवैगी काहेते कि एकबार तोधरिही लेआई ताते हंसशरीरते माया नहींधरिल्यावैहै जीव कैवल्यशरीरमें सदास्थित रहैहै तहांमनकी उत्पत्तिहोइहै तब माया धरिल्यावैहै जीवसंसारी ह्वैजाइहै पुनिजब महा-

प्रलयहोइहै तबफेरि वही ब्रह्मप्रकाशमें जाइकै एकरूपते रहब-
हैहै तामेंप्रमाण ॥ परेऽव्ययेसर्वएकीभवति ॥ औसबवहै उत्पत्ति
होइहैतामेंप्रमाण ॥ सदेवसोम्येदमग्र आसीत् एकमेवाद्वितीयम् ।
तदैक्षतएकोहंबहुस्यामइतिश्रुतेः ॥ औजबजीवसंसारतेमुक्तह्वैजा-
यहै तबसाहबवहंसस्वरूप देइ हैं तामें स्थितह्वैकै साहबके पास
जाइहै ताकोप्रमाण आगेलिखि आये हैं साहबके पासजाय फेरि
नहीं आवै ॥ नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः। यद्गत्वाननि-
वर्त्तन्तेतद्धामपरमंमम इतिगीतायाम् ॥ औ जबजीव कैवल्यशरी-
रमेंरहै है सो सच्चिदानन्दरूपाकाशमें भरोरहै है तहां जब मनको
अंकुर वह चितहोइहै तब तुरीयअवस्थाको स्मरणहोइहै सो या-
को महाकारणशरीरहै औजब वहसुखके स्मरणते वासनाउपजी
तब सुषुप्तिअवस्थामें मगनहोइहै जागैहै तब कहै है कि आज
खूब सोयो याको या कारण शरीरहै औ जब वहबासना संकल्प
बिकल्परूप भयो या याको सूक्ष्म शरीरहै स्वप्न अवस्थाको सुख
भयो औजब संकल्प विकल्पते नानाकर्मनके फलते पृथ्वी अप
तेज बायु आकाशादिकते स्थूलशरीर पावैहै तहां जाग्रत अव-
स्थासों सुख होइहै तामें प्रमाण पंचदेहकी निर्णयको ॥ एकजीव
जोस्वतःपद बुद्धिभ्रांतिसोकाल । कालहोइ वहकालरचि तामें
भये विहाल ॥ वीहालेकोमतोजो देउसकलबतलाय । जातेपार
खप्रौढ़लहि जीवनष्ट नाहिंजाय ॥ करिअनुमान जोशून्यभो सूझै
कतहूंनाहिं । आपुआप बिसरोजबै तनविज्ञानकहिताहि ॥ ज्ञान
भयो जाग्योजबै करिआपन अनुमान । प्रतिविंवितझाईलखैसा-
क्षीरूपबखान ॥ साक्षीहोयप्रकाशभो महाकारणत्यहिनाम । मसुर
प्रमाणसोबिम्बभो नीलवरणघनश्याम ॥ बढ़योबिम्ब अधपर्वभो
शून्याकारस्वरूप । त्यहिकाकारण कहतहौं महँअँधियारी कूप ॥
कारणसों आकारभो श्वेतअँगुष्ठप्रमान । वेदशास्त्रसब कहतहैं सू-
क्ष्मरूपबखान ॥ सूक्ष्मरूपते कर्मभो कर्महितेअस्थूल । पराजी-
वयारहटमेंसहैयनेरीशूल ॥संतौपटप्रकारकीदेही। स्थूलसूक्ष्मका-

रणमहँकारण केवलहंसकिलेही॥ साढ़ेतीनहाथपरमाना देहस्थूलवखानी। रातावर्णवैखरीवाचा जाग्रतअवस्थाजानी॥ रजोगुणीउँकारमात्रुका त्रिकुटीहै अस्थाना। मुक्तिशलोकप्रथमपदगात्रीब्रह्मावेदवखाना॥ पृथ्वीतत्त्वखेचरीमुद्रा मगपपीलघटकासा॥ क्षरनिर्णयवड़वाग्निदशेंद्रीदेवचतुर्दशवासा॥औरअहैऋग्वेदबतायूअर्द्धशुन्निसंचारा। सत्यलोकविषकाअभिमानी विषयनंदहंकारा॥ आदिअंत औमध्यशब्दया लखैकोई बुधिवारा। कहैकबीरसुनोहो संतो इतिअस्थूलशरीरा १ संतौसूक्ष्मदेहप्रमाना। सूक्षम देहअंगुष्ठवरावरस्वप्नअवस्थाजाना॥श्वेतवर्णउँकारमात्रुकासतोगुणविष्णूदेवा। ऊर्ध्वऔअधतोयजुर्वेदहै कण्ठस्थानअहैवा॥मुक्तिसमीपलोकवैकुण्ठपालनकिरियाराखी।मार्गबिहंगभूचरीमुद्राअक्षरनिर्णयभाखी॥आवतत्त्वकोहंहंकारामंदाअग्नीकहिये। पंचप्राणद्वितीयापदगात्रीमध्यमबाणीलहिये॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधंमनवुधिचितहंकारा॥कहैकबीरसुनौभइसंतौयहतनसूक्षमसारा२संतौकारणदेहसरेखा। आधापर्वप्रमाणतमोगुणकारावर्णपरेखा॥मध्यागन्यमकारमात्रुकाहृदयासोअस्थाना। महदाकाशचाचरीमुद्राइच्छाशक्तीजाना॥ उददाअग्निसुषुप्तिअवस्थानिर्णयकंठस्थानी। कपिमारगतृतीयपदगात्रीअहैप्राज्ञअभिमानी॥ सामवेदपश्यन्तीवाचामुक्तस्वरूपनखानी। तेजतत्त्वअद्वैतानन्दंअहंकारनिरवानी॥ अहैंविशुद्धमहातमजामें तामेंकछुनसमाई। कारणदेहइतीसम्पूरणकहैकबीरवुझाई ३ संतौमहकारणतनजाना। नीलबरणऔईश्वरदेवाहैमसूरपरमाना॥ नाखिस्थानविकारमात्रुकाचिदाकाशपरवानी। मारगमीनअगोचरमुद्रावेदअर्थनहिंजानी॥ ज्वालाकलचतुर्थपदगात्रीआदिशक्तितनुवाऊ। आश्रयलोकाविदेहानंदमुक्तिसज्योतिवताऊ॥ तूर्णप्रकाशिकतुरीअवस्थाप्रतिज्ञातुअभिमानी। सौवन्हकारमहाकारणतनइवोकवीरवखानी ४ संतौकेवलदेहवखाना। केवलसकलदेहकासाक्षीभमरगुफाअस्थाना॥ निराकाशऔलोक निराशय निर्णयज्ञानवशेखा। सूक्ष्मवेदहैउनमुनमु-

द्राउनमुनवाणीलेखा ॥ ब्रह्मानंदकहीहंकाराब्रह्मज्ञानकोमाना । पूरणबोधअवस्थाकहियेज्योतिस्वरूपीजाना ॥ पुण्यगिरीअरुचि-रूमात्रुकानीरंजनअभिमानी । परमारथपंचमपदगात्रीपरामुक्ति पहिचानी ॥ सदासीवऔमार्गसिखाहैलहैसंतमतधीरा । कालेतीतकलासम्पूरणकेवलकहैकवीरा ५ संतौसुनौहंसतनव्याना । अवरणवरणरूपनहिंरेखाज्ञानरहितविज्ञाना ॥ नहिंउपजैनाहिंविनशै कवहूं नहिंआवैनहिंजाहीं । इच्छअनिच्छनदृष्टअदृष्टीनहिंवाहर नहिंमाहीं ॥ मैंतूरहितनकरताभोगता नहींमानअपमाना । नहीं ब्रह्मनहिंजीवनमाया ज्योंकात्योंवहजाना ॥ मनबुधिगुनइंद्रियन-हिंजाना अलखअकहनिर्वाना । अकलअनीहअनादिअभेदा नि-गमनीतिफिरिजाना ॥ तत्त्वरहितरविचंद्रनतारा नहिंदेवीनहिंदे-वा । स्वयंसिद्धिपरकाशकसोई नहिंस्वामीनहिंसेवा ॥ हंसदेहावि-ज्ञानभावयह सकलवासनात्यागे । नहिंआगेनाहिंपाछेकोई निज प्रकाशमेंपागे ॥ निजप्रकाशमेंआपअपनपौ भूलिभयेविज्ञानी । उ-नमतवालपिशाचमूकजडदशापांचइहलानी ॥ खोयेआपुअपनपौ सवरसानिजस्वरूपनहिंजाने । फिरिकेवलमहकारणकारण सूक्ष्म स्थूलसमाने ॥ स्थूलसूक्ष्मकारणमहाकारणकेवलपुनिविज्ञाना । भयेनष्टयेहेरफेरमेंकतौंनहींकल्याना ॥ कहैकवीरसुनोहोसंतोखो-जकरोगुरुऐसा । ज्यहितेआपअपनपौजानो मेटौखटकारैसा ६

औ जव पांचौशरीरते भिन्न अपने को मान्यो अरु आपनेको ब्र-ह्मरूप न मान्यो यहमान्यो कि मैं साहवकोअंशहौं यहजान्योतव साहव याको हंसशरीर देइहै सो जैसे साहव अनिर्वचनीय रस रूपहै ऐसे जीवोहै रकाररूप साहवहै मकाररूप जीव है न्यूनता येतीहै साहव स्वामीहै जीव सेवकहै साहव स्वतन्त्र है यह परत न्त्रहै साहव की मरजी ते सवकाम करैहै जैसे गुण साहवके हैं तैसे याहूके हैं जैसे साहव नहीं आवैजायहै ऐसे यहो नहींआ-वैजायहै साहवके पासते जैसे साहवकी सर्वत्रगति है ऐसे याहू की सर्वत्रगतिहै साहव के वरावर याको भोगहै तामें प्रमाण व्या-

ससूत्रम् ॥ भोगमात्रसाम्यलिंगात्तामेंप्रमाणषट्दोहावलीकोश-
व्दकवीरका ॥ तत्त्वभिन्ननिस्तत्त्वनिरक्षर मनोपवनतेन्यारा । ना-
दविंदुअनहद्अगोचर सत्यशव्दनिरधारा ॥ औस्थूलशरीरपच्चीस
तत्त्वकोहै पृथ्वी अप तेज वायु आकाश दश इन्द्री पञ्चप्राण मन
वुद्धि चित्त अहंकार जीव सो जाग्रतअवस्था में अनुभव होइहै
औ ऋग्वेदहै प्रथमपद गायत्री औ सूक्ष्मशरीर सत्रह तत्त्वको है
पञ्चप्राण दशइन्द्री मन वुद्धि सो स्वप्नअवस्था में अनुभव होइहै
औ यजुर्वेदहै द्वितीयपदगायत्री औ कारण शरीर तीनितत्त्वको
है चित्त अहंकार जीवात्मा सो सुषुप्तिअवस्था में अनुभव होइहै
सामवेद है तृतीयपद गायत्री और महाकारण शरीर दुइतत्त्व
को है अहंकार जीवत्मा सो तुरीयावस्था में अनुभव होइहै अ-
थर्वणवेदहै चतुर्थपदगायत्री वेदहै जीव सूक्ष्मवेद है नी ओंकार
पञ्चमपद गायत्रीहै वचनमें नहीं आवैहै ४ छठौं पद गायत्रीना-
मवेदहै तामेंप्रमाण ॥ निद्रादौजागरस्यांते योभावउपपद्यते ।
तम्भावंभावयेन्नित्यमक्षयानंदमश्नुते ॥ औ कैवल्य शरीर एकत-
त्त्वकोहै चित्मात्रहै औ जौन ब्रह्मको छठौं शरीर मानिराख्यो
सो निस्तत्त्वहै सो वाको भ्रमहै कुछवस्तु नहीं है सो जो कोई
रामनामको स्मरण करत साहवको जान्यो औ पांचो शरीरको
त्यागकियो तव साहव हंसशरीर जीवको देइहै मन वचनमें न-
हीं आवैहै सो हंसशरीर अनिर्वचनीयहै रसरूपहै वह निस्तत्त्व-
हूसे परे है सो जव प्राकृते रसजो है सोऊ व्यंजना वृत्तिकरिकै
जानोपरैहै तो अप्राकृत जो मन वचनके परे है वाको कोई कैसे
जानै सो तौने हंसशरीरमें प्राप्त ह्वैकै साहवके पासजाइकै फिरि
नहीं आवैहै उहां माया मनादिकनकी पहुंचनहीं है सोसाहवकहै
हैं कि हेजीव हंसस्वरूप जो छठौंशरीर तिहारो सो हमारे पास
है तू कहां मनादिकन में लागिकै विगरेजाउहो तुम हमारे पास
आवो और अर्थ इनको स्पष्टै है अंतमें कुछु अर्थ खोलि देइहैं सो
श्रीकवीरजी कहै हैं कि षट् जे हैं छयो शरीर तिनको ऐसा कहे

झगराहै सोमेटो जौने ब्रह्मप्रकाशमेंतुमभरे रहेहौ सोवाको छठों शरीर आपनो मानोहौ सो तिहारो शरीर नहीं है वामें परे तो पिशाचवत् उन्मत्तवत् ह्वै जाइ है जाको भूतलगैहै औ जोउन्मत्त होइहै ताको यथार्थ ज्ञान नहीं होइहै सो ऐसा गुरुकरो जो साहबको बतावै तब आपनो छठाशरीर हंसस्वरूप पावोगे लोकमें जो साहब देइहै तौने इहांसाहब कह्योहै कि छठी तिहारीही जगा कहे छठों शरीर हंसस्वरूप हमारीजगहमें कहे हमारे है सो हमको जानोगे कि वहीब्रह्महै तब हमारे दिये पावोगे जौनछठों शरीर तुम मानिराख्योहै औ खोजोहौ सो तिहारो नहींहै ताते तुम्हारो कार्य्य न सरैगो १ ॥

शब्दहमारातुमशब्दका सुनिमतिजाहुसरक्खि ॥
जोचाहोनिजतत्त्वको तौशब्दैलेहुपरक्खि २

साहबकहै हैं कि शब्द जोहै हमारा रामनाम तौनेही शब्दके तुमहौ सो रामनामको सरेखिकै कहेविचारिकै मायाब्रह्ममें मति जाहु जोनिजतत्त्वको चाहो कि मैं कौनतत्त्व यथार्थहौं तोशब्दजो रामनाम ताकोपरखिलेउअनादिशब्द यहीहै मेरेधाममें यहनाम मेरो सदाबनोरहै है जब आदिउत्पत्ति प्रकरणहोइहै तबयहीनाम लैकै यहीकोअर्थवेदशास्त्र औसबजगत् निकासिकै वाणीजगत्की उत्पत्ति करैहै रामनामको अर्थ मोमेंरूढहैसोअर्थ वाणीगुप्तकैदेइहै तौनअर्थ साधुजानैहै कि रकारजेहैं साहब तिनको अकार जोहै आचार्य्य सतगुरु सो मकार जोहै जीव ताकोशरणकरावैहै सोतुम मकार तत्त्वहो ताको जानो चाहो तो शब्दजो है मेरो रामनाम ताको परखो जो ककारके समीपमकारहोइतो वो मकारकाम रूप सजैहै औ जो दकारके समीप मकार होइ तो दामरूपसजै है इत्यादिक नाना शब्द सजै हैं तहां तौनै रूप ह्वै जायहै वतनी शुद्धता नहीं रहिजाय है जब वहै मकार रकारके समीप सजै है तबहीं शुद्धता होइहै ऐसे तुममेरे समीप सजोहौ सो मेरे पास

आवो मोको जानो तो तुमहूं शुद्धह्वै जाउ जैसे रकार के समीप मकार सदा रहै है तैसे तुमहूं सदाके मेरे समीपीहो ताते मेरे समीपआवो औरे औरे में न लगो रकारके शरण मकारको अकार करावेतामेंप्रमाण ॥ रकारोरामरूपोयंमकारस्तस्यसेवकः । अकार श्रीमकारस्यरकारेयोजनीमता ॥ इतिशंभुसंहितायाम् २ ॥

शब्दहमाराआदिकाशब्दहिपैठाजीव ॥
फूलरहनकीटोकनी घोराखायाजीव ३

साहब कहै हैं कि हमारा शब्द जो रामनाम सो आदिको है आदिहीते यहि शब्दमें जीव पैठाहै सो शब्द रामनाम जीव के रहिबेको पात्रहै जैसे फूलके रहने की टोकनी पात्रहै सो राम नामको लैकै निर्भय सुखपूर्बक को बिचरै कछूभय न लगै तौने रामनामको सार जो अर्थहै सोई घीहै ताको घोरे जे पशुहैं गुरुवा लोग अज्ञानी ते खाइलियो अथवा पूर्व में छांछको घोराकहै हैं जामें सारनहीं है ऐसे जेहैं छांछ गुरुवालोगते साहबको यथार्थज्ञान जो घी ताको खायलियो कहे वाको और और अर्थकरिकै नानामतनमें लगाइदियो जो रामनाम मोको बतावैहै सोअर्थभुलायदियो गुरुवालोगबड़ेघोरहैं येईसंसारमेंतोकोडारिदियोहै ३ ॥

शब्दबिनाश्रुतिआंधरी कहौकहांकोजाय ॥
द्वारनपावैशब्दको फिरिफिरिभटकाखाय ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रुति जो है औ शब्दजो है रामनाम ताके बिना आंधरी हैं काहेते कि रकार मकार श्रुतिकी आंखी हैं ताके बिना कहांकोजाय सो शब्द जो रामनामहै तौनेको द्वारनहीं पावै अर्थात् अर्थनहींजानै रामनाम तो साहब मुख अर्थमें मन वचनकेपरे पदार्थ बतावैहै या श्रुति नेति नेतिकहि बतावैहै याते रामनामको साहब मुख अर्थनहीं कहिसकैहै याते यामें परिकै

जीव फिरि फिरिभटकाखायहै ज्ञानभक्ति विज्ञान योग बतावै है फिरि फिरि नेति नेति कहि कहि देइहै यातेजीव भटकाखाइहै उहां वस्तु कछुनहीं पावै है जो रामनामको साहब मुखअर्थजीव जानिकै लगावै तौ सब श्रुती लागिजायँ औ सबकेपर पदार्थसो जानिजाहिं काहेतेविनाआंखी कोई नहीं देखै जौनी तरहते राम नामते सबश्रुती लागिजायहैं औ अनिर्वचनीय पदार्थ मालूम होयहै सो पीछे लिखि आये हैं ४ ॥

शब्दशब्दबहुअंतरहीमेंसारशब्दमथिलीजै ।
कहकबीरजेहिसारशब्दनहिंधृगजीवनतेहिदीजै ५

जहांजहां अन्तर तहांतहां वहुत शब्द देखेहैं औ तुमरामनाम को अनिर्वचनीयहैं श्रुतिकी आंखी हैं या कहौ हौ सोकैसेहोइगो एकशब्द वोहू होइगो सो या ऐसो नहीं है सार शब्दहै जब सब शब्दनको मथै तब वा जानिपरै सोश्रीकबीरजी कहै हैं कि जेहि को सार जो रामनाम सोनहीं मथिलियो है ताको जीवन संसार में धृगहै सारशब्द मतलीजै जो यहपाठहोइतौ सारशब्द राम नाम ताकोमतलेइ और जेमतहैं तेकुमतहैं तेहिको छोड़िदे राम नाम बर्णन सब श्रुतीकी आंखीहैं तामेंप्रमाण ॥ आखर मधुर मनोहर दोऊ। वरणविलोचन जनजियजोऊ १ मुक्तिस्त्रीकर्णपूरे मुनिहृदयवयसःपक्षतीतीरभूमिः संसारापारसिंधोः कलिकलुषत मस्तोमसोमार्कविम्बे। उन्मीलत्पुण्यपुंजद्रुमललितदलेलोचने चश्रुतीनांकामंरामेतिवर्णौशमिहकलयतांरःन्तसज्जनानाम् ५ ॥

शब्दैमारागिरिगया शब्दैछाड़ाराज ॥
जिनजिनशब्दविवेकियातिनकोसरियाकाज ६

श्री कबीरजी कहै हैं कि शब्दजो रामनामतौनेको जगतमुख अर्थमें वेदशास्त्र पुराण नानामतजे निकसे हैं तामें जो परचोसो

गिरगया अर्थात् संसारमें परचो औ जिन जिन शब्द विवेकिया कहे सब शब्दनते विचारकरि सारशब्द जो रामनाम ताकोजा-निलियो सोई संसाररूप राजको छोड़ि दिये हैं औ तिनहीं को काजसरियाकहे सिद्धभयो है ६ ॥

शब्दहमाराआदिकापलपलकरैजोआदि ॥
अंतफलैगी माहली ऊपरकी सब बादि ७

गुरुमुख साहबकहैहैं कि हे जीवो हमारा शब्द जो रामनाम सोई आदिकोहै अर्थात् याहीते प्रणव वेदशास्त्र वाणी सब निक-सेहैं सो याको आदिकहे स्मरण जो पलपलकहे निरन्तर करैगो तौ अन्तमेंफलैगी साकेत जो हमारो महल ताको माहली होइगो बसैयाहोइगो अर्थात् तहांको जाइगो और ऊपर के जे सबनाना मत हैं ते बादिकहे मिथ्या हैं अथवा और सब ऊपर के मत बाद विवाद हैं ७ ॥

जिनजिनसंबलनाकियाअसपुरपाटनपाय ॥
झालपरेदिनआथयेसंबलकियानजाय ८

श्रीकबीरजी कहै हैं कि असपुरपाटन जो या मानुषशरीर तौने को पायके जिन जिन पुरुष संबल न किया कहे सम्यक् प्रकार बल न कियो अर्थात् मनादिकन न जीतिलियो साहबको न जान्यो अथवा संबलकहे जमासों परलोककी जमा रामनाम को न जानिलियो अथवा संबलकहे कलेवासो दिन अथयेकहे शरीर छूटे झालिपरे अर्थात् चौरासीलाख योनि में परचो अब सबल कियो नहीं जायहै ८ ॥

हंसासरवरतजिचले देहीपरिगैसुन्नि ॥
कहैकबीरपुकारिकै तेईदरतेईथुन्नि ९

हे हंसाजीव विना साहबके जाने या सरवररूपीशरीरतजिकै जाउगे तब या देहीलुन्नि परिजायगी अर्थात् मरिजायगी सोश्री कबीरजीकहै हैं कि हमपुकारिकैकहै हैं विनासाहबके जाने तेई दर तेईथूनविनेहैं अर्थात् नयेतलाये में लाठिगाडिजाइ है सोजहँ जायगो तहैं देहरूपीसरवरमें वासनारूपी दरमें कर्मरूपीथूनि गाड़िलेउगे पुनिपैदाहोइगो जनन मरण न छूटैगो ९ ॥

हंसावकएकरँगलखिय चरैंएकहीताल ॥
क्षीरनीरतेजानियेवकउघरैंतेहिकाल १०

वकुला और हंस एकहीरंग होइहै और एकही तालमें चरै हैं परन्तु जब नीरक्षीर एक करिकै धरिदियो वे दूधपीलिये पानी रहिगयो तब जानिपरो हंसहै औ नीरक्षीर जुदो कीन न भयो तबजान्यो कि वकुलाहै ऐसे टीका कंठीमाला टोपी सब बराबरे होइहैं जब बिचार करनलग्यो मन माया ब्रह्मजीव इनते साहबको अलग मान्यो तौ जान्यो कि ये हंस हैं जो मन माया ब्रह्मजीव ते अलग न कियो साहब को तौ जान्यो कि ये वकुलाहैं १० ॥

काहेहरिणीदूबरी चरैहरियरेताल ॥
लक्षअहेरीयकमृगा केतिकटारोभाल ११

जीवकहैहै कि हेहरिणीवुद्धितैं काहेदूबरी ह्वैरही है संसाररूपी हरियरेतालमें चरिकै यह संसारतालमें लक्ष तौ अहेरी कहे मारनवारोहै सो तैं केतिक भारटारोगे मरिहीजाइगो सो हरियर है जौनेतालमें तौनेमें काहेनहींचरैहै साहबमें निश्चय काहेनहींकरै है औ भक्तिरससरोवरमेंएक एकतेरो और साहबैहै ताते साहबै के तालमें चरु यहसंसार तालको छोड़िदे यहि संसार ताल में लाखन मरवैया हैं ११ ॥

तीनलोकभोपींजरा पापपुण्यभोजाल ॥
सकलजीवसावजभये एकअहेरीकाल १२

तीनोंलोक जो पींजरा हैं तामें पाप पुण्य रूप जाल लगे हैं अर्थात् वाही में सब अटके हैं सो सबजीव सावजहैं तिन को काल जो है शिकारी सो मारिमारि खायहै १२ ॥

लोभयजन्मगँवाइया पापैखायापुन्नि ॥
आधीसोंआधीकहै तापरमेरीखुन्नि १३

लोभैकरतकरत जन्म गँवाइ दियो अर्थात् द्रव्य बिढ़वैके वास्ते नाना पापकिये सो जोप्राकृतनके पाप पुण्यरहैं ताहूको कहै पूर्वजन्म के खायगये सो ऐसी जो लोभवारी बुद्धिहै सो आधी कहे मानसी व्यथाहै सो वा ऐसी बुद्धिको या सम तातभाव ते धी कहैहैं कि मैं वड़ी बुद्धिकैकै जटिल्यायो मैं हरायदियो इत्यादिक कहिकै अपनी बुद्धिको बुद्धिकहैहैं और की बुद्धि नहीं कहैहै तौनेपर मेरी खुन्निहै कहे रिसहै १३ ॥

आधीसाखीशिरखड़ै जोनिरुवारीजाय ॥
क्यापण्डितक्यापोथियारातिदिवसमिलिगाय १४

आधी साखी कबीरकी चारिवेदका जीव सो आगे आधीसाखी राम नामको कहिआयेहैं सो आधी जो है रामनाम सो सब तेशिरखड़ैहै कहे जहिरैहै जो यह साखी निरुवारी जाय अर्थात् रामनाम निरवाराजाइ औ जोखण्डै पाठहोइ तौ अर्द्धचंद्रबिंदु तें खंडैकहे पण्डितौहोइ औ या रामनाम रूपी साखी निरुवारी जाय अर्थात् साहब मुख अर्थ याकोसमुझै तौ पण्डितलोग दिनराति पोथीदेखिरमरैहैं रामनामतें काम ह्वैजाय है तामेंप्रमाण ॥ नामलियातिनसबलिया सकलशास्त्रकोभेद। बिनानाम नरकैगये पढ़ि पढ़ि चारोवेद १४ ॥

पांचतत्त्वकापूतरा युक्तिरचीमैंकीय ॥
मैंतोहिंपूछौंपण्डिताशब्दबड़ाकीजीय १५

यह पांचतत्त्वको पूतरा जो शरीर तामें तैं यह युक्ति रचेहै कि मैंकिय कहे महीं मालिकहौं सो हेपण्डित मैं तोको पूछौहौं कि यहशब्द जो रामनाम जाके विनाजाने संसारीभयो है तौन बड़ाहै कि तैं बड़ाहै जो आपनेको मालिकमानैहै १५ ॥

पांचतत्त्वकोपूतरा मानुषधरियानाउँ ॥
एककलाकेबिछुरते बिकलभयासबठाउँ १६

पांचतत्त्वको पूतरा जो तैंहै ताकोमनुष्य यहनामधरयोहै कला जोहि साहबके नामरूप लीला धामादिक सबपरीरहीं एककला जो रामनाम तौनेके बिछुरतमें सबठाउँमें बिकलह्वैगये कहेजौने शरीर धारण करैहैं तहैं बिकल होइ हैं मनुष्यनाममें यहव्यंग्य है कि है पांचतत्त्व पूतराको मनुष्यनाम धराइलियो है इहांको यह न होइ साहबके इहांकोहै द्विभुज सो आपनो रूप भूलिकै संसार में परयो है १६ ॥

रंगहितेरँगऊपजै सबरँगदेखैंएक ॥
कौनरंगहैजीवको ताकरकरहुबिबेक १७

रंगहि जो है संसार रंग तौनै रंग जब जीवकोलग्योहै तबहीं नाना रंग उपज्योहै कहे नानारूपके भयेहैं ताकोतौहम एक देखैं कहे मायाहीके रंगदेखैहैं यह जीवात्मा शुद्ध जो है ताको कौन रँगहैं यहतौ बिबेककरो १७ ॥

जाग्रतरूपीजीवहै शब्दसोहागाशेख ॥
जरदबुन्दजलकूकुही कहकबीरकोइदेख १८

यहजीवजो है सो जाग्रतरूपहै कहेसदा चैतन्यहै जैसे साहब

को रंगश्वेत चैतन्य आनन्द घनीभूतहै ऐसे याहू अणुचैतन्य है शब्दजो रामनाम सोहागारूप साहबको मिलावनवारो ताको शेषहै अन्तकोवर्णमकारहै सो जरदकुन्द जलकहे जरदबीर्यस्त्री कोजलपुरुषको ये दुनहुनके बीर्यते शरीररूप कूकुहीजीवके लागि गई जैसेखेतनमेंकूकुही लागिजाइहै सो कबीरजीकहैहैं कि याको भीतरविचारकरिदेखो यहिजीवको स्वरूपजानिपरै कूकुहीछड़ाइवो जैसेकूकुहीते अन्ननाश ह्वैजाइहै ऐसे याहू शरीररूप कूकुही जीवकेलगीहै सो एकरीशुद्धताको नाशकैदेइहै १८ ॥

पांचतत्त्वलैयातनकीन्हा सोतनलैकहकीन्ह ॥
कर्महिकेवशजीवकहतहैकर्महिकोजियदीन्ह १९

या पांचतत्त्वनको लैकै या शरीर कियो सो या शरीरलैकै तैं कौनकामकीन्ह्यो कर्मके वशह्वैकै मेरोअंश जोजीव सो कर्महिको देतभयो मेरोह्वैकै अर्थात् कर्मके वशह्वैकै संसारी भोजीव सोकौन बड़ोकामकियो जीव कहवावन लग्यो १९ ॥

पांचतत्त्वकेभीतरे गुप्तवस्तुअस्थान ॥
विरलमर्मकोइपाइहै गुरुकेशब्दप्रमान २०

पांचतत्त्वको जो या शरीर ताकेभीतर जो गुप्तवस्तुजीवात्मा है ताकोस्थानहै ताको मर्म कोई विरला पावैहै कि यह नित्य कौनकोहै यामें गुरुजे साहबहैं तिनका शब्द जो रामनाम सोई प्रमाणहै तौनेको अर्थविचारकरै तौ या जानिलेहिं कि जीव साहबैको है २० ॥

अशुनतत्त्वतअड़िआसनैपिण्डझरोखेनूर ॥
ताकेदिलमेंहौंबसौं सैनालियेहजूर २१

अशुनकहे शून्यनहीं या निराकारके परे अशून्य जोसाहबको

तख्तआदिके तामें आसनकैके अर्थात् ध्यानमें रत पिण्ड जो है शरीर ताकेझरोखा जे हैं नेत्र तिनते साहबको जोकोई नूरदेखै कि सब साहिबैको प्रकाशपूर्ण है सर्वत्र ताके दिलसें आपनेपरि-करते सहित बसोहौं २१ ॥

हृदयाभीतरआरसी मुखतौदेखिनजाय ॥
मुखतौतबहींदेखिहौंजबदिलकीदुविधाजाय२२

हृदय भीतर जो आरसी है कहे तौन आपरन परिकर जे हैं जानकी लक्ष्मणादि तिनको मुख आपनेरूपको जो सो नहीं देखो जायहै वो विचारकरिकै देखोजाइहै भो मुख जो तुम्हारोस्वरूप सो तबहीं देखिहौ जबमैं मोर या दुविधा जात रही कि चित अचित रूप सब साहिबैकेदेखोगे २२ ॥

ऊंचेगांवपहाड़पर औमोटेकीबांह ॥
ऐसोठाकुरसेइये उबरियजाकीछांह २३

जोगांव ऊँचेपर होइहै तहां बूड़ाकी भय नहीं होइ है जाके जबरेकी बांह होइहै ताको डरनहीं होय है ऐसे ऊँचो गांव जो साकेत तहां साहब जे हैं तिनकी जहांबांह ऐसे जे साहब हैं ति-नकी छांहमेंटिकौ जाते उबरौ उहां मायाके बूड़ाको डर नहीं है कहा मन मायादिकन में परेहौ इनमें कालते न बचोगे २३ ॥

ज्यहिमारगगेपण्डिता तेहीगईबहीर ॥
ऊंचीघाटीरामकी त्यहिचढ़िरहेकबीर २४

जौने मार्गमें रामनाम जाने विना पण्डितगये वही मार्ग है मूर्खौजातभये अर्थात् पापी पुण्यी सब वहीयमपुरी ह्वैगये कबीर जी कहै हैं कि ऊँचीघाटी जोरामनाम तामें आरूढ़ह्वैके माया के बूड़ाते बचिगयों सबकोतमाशा देखौहौं २४ ॥

हेकबीरतैंउतरिरहु सँबलपरोहनसाथ ॥
सबलघटेऔपगथके जीवबिरानेहाथ २५

गुरुवालोग मोको समझायो हे कबीर तैं ऊँचीघाटी जो राम नाम तौनेते उतरिरहु न तेरे सँबलकहे कलेवाहै न परोहनकहे वाहनसाथहै सो सँबल औ पगुजब थाकैंगो तबजीव तो बिराने हाथह्वै जाइगो जो हमारेपास आवोगे तो ज्ञानयोगादिकसम्बल बतावैंगे अहंब्रह्मास्मिवाहनदेयँगे तामें आरूढ़ह्वैकै संसार समुद्र पार ह्वै जाइगो २५ ॥

घरकबीरकाशिखरपर जहांसिलिहिलीगैल ॥
पाँयनटिकैंपिपीलिका खलकन्लादैबैल २६

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे गुरुवालोगो हमाराघर शिखर जो रामनामहै तामें तहां गैल चिकनी है चींटी जो बुद्धिहै ताही के पांय नहीं टिकैहैं अर्थात् वा मन वचनके परे है रामनाम और स्वरूपहै ताते बिछुलन हरिहै गैल उहांनानामत नानाशास्त्ररूप लादलादे बैलजेहैं गुरुवा ते नहीं जाइसकै हैं अर्थात् सूक्ष्म बुद्धि नहीं जाइसकै हैं तौ तुम जे नानामतन को लाद लादेहौ सो कैसे जाइसकोहौ जहां मैं टिकौहौं तहांभरि तुमहूं पहुँचि सकते नहीं हौ कहां कलेवादेउगे कहां बाहन देउगे २६ ॥

बिनदेखेवहदेशकी बातैंकहैसोकूर ॥
आपैखारीखातहो बेचतफिरतकपूर २७

श्रीकबीरजीकहैहैं कि जौने शिखरमें हमचढ़ेहैं तौने देशको बिना सतगुरु द्वारादेखे जे बात वहांकी कहैहैं तेकूरहैं अर्थात् तुम हमको उत्तरनाशिखरते बिनाजाने कहौहौ सो तुमहींकूरहौ कैसे हौ आपतोखारी जे नानामत तिनको ग्रहण कीन्हेहौ स्वच्छ उ-

ज्ज्वल कपूर जोहै ज्ञान ताको बेंचत फिरौहो अर्थात् द्रव्य लैकै चेला बनावत फिरौहौ भाव यहहै कि नामको भेद नहीं जानौ हमारे इहां कैसे पहुंचौगे २७ ॥

शब्दशब्दसबकोइकहैं वातोशब्दबिदेह ॥
जिह्वापरआवैनहीं निरखिपरखिकरिलेह २८

शब्द शब्द सबकोई कहैहैं परन्तु वाशब्द जोरामनामहै सो बिदेहहै बिना शरीरका है जिह्वा में नहीं आवैहै मन वचन के परेहै ताको ज्ञानदृष्टि ते निरखिकै पारिख करिलेहु २८ ॥

परबतऊपरहरबसै घोड़ाचढ़िबसगाउँ ॥
बिनफुलभौंरारसचखै कहुबिरवाकोनाउँ २९

पर्वत आगे जीव ब्रह्मको कहिआये हैं सोपर्वतजो ब्रह्म ताके ऊपर हर जो माया सो जोतैहै अर्थात् सबलितह्वैकै संसारकी उत्पत्ति करैहै सो घोड़ा जोहै मन तौनेमें गाउँ जो संसारहै सो बसैहै अर्थात् मनैमें सब संसारहै बिनफुल कहे या संसारतरु को फूल विषय है सोमिथ्या है कछु वस्तुनहींहै तौनेकोरसभौं- रारूप जीव चाखैहै सो वा बिरवाको नाउँतो कहु सोबताउहम को नाम संसार मिथ्याहै जौन याको सांचनाम है ताकोकहु ताको तैंनहीं जानैहै २९ ॥

चन्दनबासनिवारहू तुभकारणबनकाटिया ॥
जिवतजीवजनिमारहूमुयेतेसबैनिपातिया ३०

हेचन्दन जीव अपनी वासना तू निवारणकरु काहेते कि मैं तेरेकारण जौनेगुरुवनकी नानावाणी नाना मतनमें तुमलाग्यो तिनकी वाणीरूपवनमें काटिडारयो अर्थात् खण्डन करिडारयो जाते तुमको ज्ञानहोय सो वासना में परिकै जीवत जीव तुम

अपनो न मारो जोवामें लागि जाहुगे तौतुम्हारो जीवत्व जातरहै मरिजाहुगे वाही धोखामें लगिकै आपको ब्रह्ममानन लगोगे तब निपातिया कहे सब साहब केज्ञानको निपात ह्वै जाहिगो ३० ॥

चन्दनसर्पलपेटिया चन्दनकाहकराय ॥
रोमरोमाबिषभीनिया अमृतकहांसमाय ३१

चन्दन जो जीवहै सो कहाकरै सर्प जेगुरुवालोगहैं ते लपटिरहे हैं सो उनकी वाणी को जोहै बिष सोरोम रोम बिषे भेदि गयोहै हमारो उपदेश जो अमृत सो कहांसमाय ३१ ॥

ज्योंमुदादिसमसानासिलसबयकरूपसमाहिं ॥
कहकबीरसाउजगतिहि तबकीदेखिभुकाहिं ३२

जैसे मुदादि समसानासिल होइहै सो जोकोई देखैहै ताको मुरैलैरूप देखिपरैहै सो कबीरजी कहैहैं कि गुरुवालोगनकी वाणीरूप सिलमें तबकी कहेसृष्टिके आदिमें आपनी गतिदेखै हैं कि तबहूंहम ब्रह्मरहे हैं या मानिकै भोकैहैं कि हमहीं ब्रह्महैं अथवा ज्यों मुदादिकहे-मुदको आदि ब्रह्म ज्योंकहे कैसे जैसे मशानते सहित शिल पाथरकेभुतहा चौरा जेईवा चौरामें बैठेहैं सोअभुआइहैं कहैहैं हमहीं ब्रह्महैं सोई कहैहैं मैं फलानो भूतहौं आपनो रूप भूलिजाइहैं ऐसे जेई गुरुवालोगनकी वाणी उपदेश में परे हैं ताहीके एकरूप ब्रह्म समाहिहै यहीकहैहैं कि सहीं ब्रह्म औ सब ब्रह्महीहै एकरूप दूसरो पदार्थ नहींहै सोश्रीकबीरजी कहैहैं साउज जो जीवहै ताकी तबकी गति गुरुवालोग कहैहैं तब तुम ब्रह्महीरहेहौ आपनेअज्ञानते तुमजीवत्वको धारणकीन्हेहौअबहूं जो ज्ञानकरो तोब्रह्महीह्वैजाहु या मानिकै उपदेश जीवभोकैहै कि हमहीं ब्रह्महैं अर्थात् जैसे वा परदा भूतनहीं ह्वै जाइहै जीवहीरहैहै ऐसे न ब्रह्म रहैहै न ब्रह्म होइगो भोकैपदके शक्ति

ते दूसरो दृष्टांत ध्वनित होइहै जैसे कूकुर कांचके मन्दिरमें आपनो प्रतिविम्ब देखि भूंकै है ऐसे आपने भ्रमते गुरुवनकी वाणीरूप ऐनामें आपनो रूप ब्रह्महीदेखैहैं भूंकैहैं यह नहींजानै हैं कि हम साहबके हैं या गुरुवालोगनकी वाणी में ब्रह्मदेखोपरै है सो हमारे मनहींको अनुभवहै ३२ ॥

गहीटेकछोडैनहीं चोंचजीभजरिजाय ॥
मीठोकाहअँगारहै ताहिचकोरचवाय ३३

ब्रह्मवादिन की टेक कैसीहै जैसे चकोर को ओठ जीभ जरै है परन्तु अँगारैको चावैहै ३३ ॥

झिलमिल झगरा झूलते बाकीछुटीनकाहु ॥
गोरखअँटकेकालपुर कौनकहावैशाहु ३४

झिलमिल झगराकहे दशमुद्राकरिकै वंकनालते खिरकी के राह लैजाइकै वहज्योति जो झिलमिलाइहै तामें आत्माकोमिलाइदेइहै पुनि षट्चक्रते झिलिकै गैव गुफामें जो ब्रह्मज्योतिहै तामें मिलिकै औ झगराकरिकै कहे काम क्रोधादिकन को दूरि करिकै पुनिसंसारमें झूलिपरैहै अर्थात् जबसमाधि उतरिआई तबफेरि वही झगरामें झूलिपरे सो कर्मकीबाकी काहूकीनहीं छूटैहै सब कर्म भोगकरै है जो गोरखैकालपुर में अँटके अर्थात् उनहींको जो कालखाइलियो तो और दूसरो कौनशाहु कहावै है कौनकालते बच्योहै जो वहुत जियोयोगी तो कल्पान्तमें कोई नहीं रहिजाय है जो कोईरहिगयो जलबढ्यो तो जलमें मिलिकै रहिगये अग्नि वढी अग्निमें मिलिकै रहिजाइ है तो महाप्रलय में नहीं रहिजाइ है ३४ ॥

गोरखरसियायोगके मुयेनजारीदेह ॥
मांसुगलीमाटीमिली कोरोमांजीदेह ३५

जो कहौगोरख तो वनेहैं तो प्रलयादिकन में वोऊ नरहैंगे योगके रसियाजेहैं गोरख ते ऐसोयोग हजारनवर्षकियो कि मरयो ते देहको न जारयो मांसगलिकै माटीमें मिलिगयो तब कोरोकहे मई मांजी कहे शुद्धचर्म देह गोरखकी कढ़िआई आखिरपरवहो प्रलयादिकनमें न रहैगो सो उनकीदेह मुयोकहे ऐसो योगकियो कि जाते अज्ञान न रहिगयो संसारछूटिगयो संसारतेमरिगयेकै उनकी सूक्ष्मादिक देहो मरयो पर न जरी जबदेह न जरी तब पुनि २ संसारमें आवतेभये कल्पांतरनमें सो कल्पान्तरमें गोरख आदिदैकै योगी सब आवै हैं सो आगेकहै हैं ३५ ॥

वनतेभगिविहड़ेपरा करहाअपनीबानि ॥
वेदनकरहकसोंकहै कोकरहाकोजानि ३६

वन जोहै संसार तौनेतेभागिकै विहड़जो है अटपटगैल ब्रह्म तामें परयोजाइ सो यहजीवको सदास्वभावई है कि प्रलयादिक-नमें ब्रह्ममेंगयो औपुनिकरहाकहे करहि आयो संसारमें जन्म-लियो शरीर धारण कियो सो यहजीव संसार योगादिक साधन कियो सो यह वेदनकहे पीड़ाजीव कासों कहै औ शरीर काहेते करहिआयो यहकोजानै जैसे आम्रादिक वृक्ष करहि आवै हैं कहे फूलिआवै हैं फेरि फरै हैं आपनी ऋतुपाइकै तैसे जब महाप्रल-यादिकभये तबलीनह्वै गयो जबउत्पत्ति प्रकरणभयो तब फेरि करहिआये कहेशरीर धारणकिये पुनि नानाकर्म करिकै नाना फल पावनलगे ३६ ॥

वहुतदिवससोंहीठिया शून्यसमाधिलगाय ॥
करहापरिगागाड़में दूरिपरेपछिताय ३७

जीववहुतदिन समाधिलगाइकै शून्यमें हीठियाकहे भ्रमतभ-ये कि हमाराजन्म मरणछूटै है सो हजारन कल्पसमाधि लगाये

रहे जबसमाधि उतरी तब पुनि जैसेके तैसेह्वैगये अथवा हजारन वर्ष ब्रह्ममें लीनरहे जबसृष्टिभई तबपुनि संसाररूपीगाड़मेंपरिकै पछितानलगे पछिताइबो कहाहै कि वही बासना लगीरही तातें पुनि नानासाधन करनलगे कि हमारो जन्ममरणछूटै ३७॥

कबिराभर्मनभाजिया बहुविधिधरियाभेख॥
साईंकेपरिचयबिना अन्तररहिगोरेख ३८

कबीरजेहैं कायाकेबीर यहजीव सो बहुतभांति के भेष धरत भयो योगीह्वैकै योगकरतभयो ज्ञानीह्वैकै ज्ञान करतभयो भक्त ह्वैकै भक्तिकरतभयो कर्मकाण्डीह्वैकै कर्मकरतभयो पै जिनको यहजीव अंशहै ऐसे जे हैं साईं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिन के बिनाजाने याको भ्रम न भाजतभयो जो मुक्तहूह्वैगयो आपनेको ब्रह्महू मानतभयो तो मूलाज्ञानरेख याके रहीगई काहेते कि जाकोहै ताको तो जान्योनहीं योगकियो ज्ञानकियो भक्तिकियो औ नानाकर्मकियो ताते पुनि संसारही में परयो कौन रक्षाकरै रक्षकको तो बिसराइ दियो ३८॥

बिनडांड़ेजगडांड़िया सोरठपरियाडांड़॥
बाँटनहारालोभिया गुरतेमीठीखांड़ ३९

यहसंसारमें जीवबिना काहूकेडांड़े डांड़ियाकहे लबड़ारिजाते भये अर्थात् आपनेही कर्मते साहबकोज्ञानभूलिगये औ सोरठ या देशबोलीहै सोरठै फलदेउ दशउ फलदेउ सो ये सोरठै उपाय बतायो चारिवेद छःवेदांग छःशास्त्र ई सोरठते ब्रह्मासाहब को उपदेश इनकोकियो पै ये सबअपने अपनेकर्ममें लागिगये उनको वा सोरठकहे सोरठै जौन ब्रह्मा उपाय बतायो तौन उन को डांड़परयो डांड़ वह कहावैहै जौनबन कटिकै मैदान ह्वैजाय है सो उनको चारिवेद छःवेदांग छःशास्त्र ई जे सोरठ हैं ते डांड़प-

रह्योकहै वामें साहबको खोजनपायो साहबको बिचार उनको दिखाई न पर्‍यो अनतही अनतही लगावैहै वेदशास्त्रका अर्थक-रि काहेते न पायो कि बांटनहारो जोब्रह्माहै सो लोभीरह्योहै कहे रजोगुणीहैं सो वहुत चोराइकैकह्यो परोक्षकह्यो जाते कोईनपावै औ जे जानतभये ब्रह्माको उपदेशते गुरु जेब्रह्मा हैं तिनहूंते अधिकह्वैगये अर्थात् गुरुगुरहीको रह्यो चेला खांड़ह्वैगयो गुरते मीठी खांड़ होयहै काहेते ब्रह्माते अधिक ह्वैगये कि ब्रह्मा गुणको धारण कियेहैं औ वै सगुण निर्गुण के परेकी बात जानैहैं ३९ ॥

मलयागिरिकेबासमें वृक्षरहासबगोइ ॥
कहिबेकोचन्दनभया मलयागिरिनाहोइ ४०

मलयागिरि चन्दनके वृक्षके वासमें सबवृक्ष गोररहेकहे मल-यागिरिकै वास सबमें ह्वैगई कछु मलयागिरि नहींह्वैगये ऐसेति-नको साहबको ज्ञानभयो तिनमें साहबको गुणआइगये शुद्धह्वै गये कछु साहब न ह्वैगये जो कहो ब्रह्मा तो चारिवेद छःवेदांग छः शास्त्र जे सोरठ हैं तिनते सबको उपदेशकियो ताको गुप्तार्थ और लोग काहे न समझ्यो एक साहबको जनैयै काहेते जान्यो तौने को अर्थ दूसरी साखीमें दिखावै हैं ४० ॥

मलयागिरिकेबासमें बेधाढाकपलास ॥
वेनाकबहुंनबेधिया युगयुगरहियापास ४१

मलयागिरिके वास में ढाकपलाश सबवेधिगये औ बेनाजोहै बांस सो युगयुग मलयागिरि के पासरहैहै पै वामें बासनवेधत भई अर्थात् और वृक्षनभीतर साररह्यो तेहिते बास बेधिगई औ बांसके भीतर सारनरह्यो ताते बांस न वेधतभई अर्थात् और जे अज्ञानिउरहे तिनके अन्तष्करणमें शून्य नहीं रह्यो सो जो कोई उपदेशकियो तौ सांचमानिकै समुझिलिये औ जिन के भीतर

वह शून्यब्रह्म धोखा घुसोरह्यो ते और ऊपरते खण्डनकरन-
लगे और और अर्थ वेद शास्त्रके बनाइलियो ते न वासिगये कहे
उनको साहबको रंग न लग्यो चारों युगमें वेद शास्त्र सबपढ़-
तई रहे ४१ ॥

चलतेचलतेपगुथका नगररहानौकोस ॥
बीचहिमेंडेरापस्यो कहोकौनकोदोस ४२

चलत चलत थकिगयो वहनगर नवकोश रह्यो सो नवकोशमें
एकोकोश न चलिसक्यो तौ दशौ कोश जहां साहबको मुकामहै
तहां कैसे जायसकै दशौ कोश दशौमुकाम रेखतामें लिखिआये
हैं सो बीचै में याको डेरापरयो बीचही में रहिगयो ताते जन्म
मरणहोनलग्यो तो कौन को दोषहै साहबके पासभरतो पहुँचि-
बोई न कियो औ मुसल्माननके मतमें वहत्तरहजार परदा के
ऊपर जब गयो तब नवपरदा बाकीरहिजाय हैं तौनै कोशहै
दशयें में साहबहै ४२ ॥

झालिपरेदिनआँथये अन्तरपरिगैसाँझ ॥
बहुतरसिककेलागते वेश्यारहिगैबाँझ ४३

यहिसाखी में अर्थकोऊ यहकहै हैं प्रपञ्च करते करते औ वि-
षयरस लेतेलेते बुढ़ाई आई औ वेद शास्त्र पुराण नानावाणीप-
ढ़तेपढ़ते औ कर्म्म उपासना तपस्या योग वैराग्य करते करते
थके आखिर गुरुपद पारिखकी प्राप्तिनहींभई एकदिन मौतआइ
पहुंची तब आँखिनपर झालि परीकहे अँधियारी परी और दिनक-
हिये ज्ञान सो गाफिलीमें डूबिगया औ हमारो अर्थयहहै झालि
पर कहे जब दिन अँथवा कहे आयुर्दाय घटी तब गिरिपरे तब
बीमारहुये इन्द्री शिथिलभईं तब अन्तष्करणमें अँधियारहैगयो
कहे कुछ न सूझि परन लग्यो तब जैसे बहुत रसिकके सङ्गते
वेश्या बांझरहिजाइहै तैसेगुरुवालोगनकी नानाप्रकारकी वाणी

को उपदेश सुनि सुनिकै शून्य ह्वैगये ज्ञान भक्ति उत्पत्ति भई औ साहब न प्राप्त भये ४३ ॥

मनतोकहैकबजाइये चित्तकहैकबजाउँ ॥
छामासकेहीठतेआधकोशपरगाउँ ४४

मन संकल्प विकल्प करिकै आत्मा को स्वरूप खोजै है कि आत्मा कैसोहै औ चित्त स्मरण करैहै कि आत्माको स्वरूपकैसो है सो छामास जोहैं छवृशास्त्र तौनेमें हीठतकहे स्वरूपकोखोजतई गये पै वह गाउँ आत्माको स्वरूप मकार आधकोश में कहे अर्द्धनाम रकारताकेनिकटही रह्यो पै खोजे न पायो ४४ ॥

गिरहीतजिकैभयेउदासी बनखँडताकोजाय ॥
चोलीथाकीमारया बरइनिचुनिचुनिखाय ४५

घर छोड़िकै जगतते उदासभये बन पहारमें बैठेजाय साहबको तो न जान्यो शरीरऔटिकै तपस्या करनलगे सो या मारतेकहे कन्दर्प ते चोली थकिगई कहे बीर्यकी हानिह्वैगई जब वृद्ध ह्वै गये तब जैसे चोली बरइनिकी थकिगई तबबरइनि सरेसरेपान निकारिडारैहै नयेनये पान चुनि चुनिकै खायहै तैसे मायाजो है बरइनिकहे ज्ञानभक्ति को बरायदेनवारी कहे दूरि करनवारीसो पुरानपुरान जे शरीरहैं तिनको निकारिडारयो नयेनये सुन्दर शरीरदैकै स्वर्गादिकनको सुखदियो राजाबनायो धनवान् बनायो भोगकराइ कराइकै उनकोमाया मृत्युरूपखायलियो ज्ञानी भक्त योगी तपस्वी कोईनहीं बचैहैं जे साहबको जानैहैं तेबचैहैं ४५ ॥

रामनामजिनचीन्हिया झीनेपिंजरतासु ॥
नयननआवैनींदरी अंगनजामैमांसु ४६

जिन रामनामको चीन्ह्योहै तिनकेपिञ्जर झीनेह्वैगयेहैं पांचो शरीर उनके छूटिगये यह स्थूलशरीर कैसो बन्यो है जैसे सूमा

जरिजाय ऐंठनि वनीरहै जब यहौ शरीर छूटैगो तव हंसशरीर में स्थितह्वैकै साहव के पास जाइगो सो इनको शररूपी पिंजरा क्षीन ह्वैगयो है औ नयनन में नींदनहीं आवैहै कहे सोवायदेन वारी जो मायाहै सो उनको स्पर्शनहीं करैहै औ अङ्ग में पुनि मांस नहींजामै अर्थात् पुनि वै शरीर धारण नहीं करैहैं ४६ ॥

जेजनभीजेरामरस विकसितकवहुंनरुक्ख ॥
अनुभवभावनदरशै तेनरसुक्खनदुक्ख ४७

जे जन श्रीरामचन्द्र के रसमें भीजेरहैहैं ते सदा विकासितरहैहैं उनको हृदय कमल सदा प्रफुल्लितईरहैहै रूख कवहूं नहींरहैहै औ रूखजोहै अनुभव भाव वह धोखा ब्रह्मसो उनको कवहूं नहीं दर्शैहै औ तेनरनको न संसारको सुखहोइहै न दुखहोइ हैं वै रामरसही में मग्नरहै हैं ४७ ॥

काटेऑवनमौरिया फाटेजुरैनकान ॥
गोरखपदपरसेविना कहौकौनकीसान ४८

कबीरजी गोरखसों कहैहैं अथवा गोजोहै मनादिक इन्द्री तिनको राखैकहे रक्षाकरै अर्थात् चैतन्यकरै सो गोरखकहावै जीव सोहेजीव जो आत्माकाटिडारै तो फेरिनहीं मौरै है कहे नहीं फूलै है औ कान जो फाटिजाय तौ फेरि नहीं जुरैहै यहि जीवपरजेहैं साहव तिनके पद विना परसेई काहूकी साननहीं राखै हैं कहो कौन को सानरह्योहै अर्थात् योगी ज्ञानी ब्रह्मादिक सबकोकाल खायलियोहै काहूकी साननहीं रहीहै ४८ ॥

पारसरूपीजीवहै लोहरूपसंसार ॥
पारसतेपारसभया परखभयाटकसार ४९

कबीरजीकहैहैं कि यहजीव पारसहै काहेते कि पारस जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको अंश है तौ यहू उन्हींको रूपहै वै

विभुहैं जीवअणुहै सो जीवलोहरूपी संसारमें मिलिके लोहह्वै गयोसोजब पारसजेहैं परमपुरुष श्रीरामचंद्र तिनको स्पर्शकरै तब पारसहोइ औ अपने स्वस्वरूपको जानैकिमैं साहब को अंश हौं तबजानिये कि जौनटकसार मतहै सांचाहै तौनयाको परखभयो कहे जान्यो काहेते यहैमत टकसारहै सांचा है यहीके जाने जन्म मरणनहीं होइहै जोकहो पारसके परसे तो सोनहोइहै तौ यह पारस के परसे सोनहोइहै कहे और जीव अशुद्धह्वैरहे हैं ते शुद्ध होइजाइहैं वाके स्पर्शते औ श्रीरामचन्द्रके चरणारबिन्द पारसके परसे पारसई होइहै काहेते कि वह पारस सच्चाहै औ यहपारस कच्चाहै पाषाणहै जड़है ४९ ॥

प्रेमपाटकाचोलना पहिरिकबीरानाच ॥
पानिपदीन्ह्योतासुको तनमनबोलैसांच ५० ॥

कबीरजी कहैहैं कि हे जीव तैं साहब के प्रेमपाटका चोलना पहिरिकै नाचैहै संसारमें नहीं नाचता पानिपकहे शोभासाहब ताहीको देयहैं जो तनमनते साहबसों सांचबोलै कहे सांच प्रेम करै है ५० ॥

दर्पणकेरीजोगुफा सोनहापैठोधाय ॥
देखतप्रतिमाआपनी भूंकिभूंकिमरिजाय ५१ ॥

दर्पणके गुफाकहे शीशमहलमें कूकुरपैठ्योसो अपनीप्रतिमा देखिकै भूंकि भूंकिकै मरिजाय है अर्थात् यह जीवात्मा यहनहीं समुझैहै कि मेराहीअनुभवयहब्रह्महै दर्पणकीगुफाजोहै ब्रह्म ज्ञान तामें पैठिकैअहंब्रह्म भूंकि भूंकिमरैहै जाको अंशयहजीवहै ताको नजान्यो जैसे कूकुर नहींजानैहै कि मेराही प्रतिबिम्ब है ऐसेही यहभी नहीं जानैहै कि मेराही अनुभव है ५१ ॥

ज्योंदर्पणप्रतिबिम्बदेखिये आपदुहूंघटहोई ॥
ऐसेवातत्त्वयहीतत्त्वसों हैयाहीपुनिसोई ५२

वह ब्रह्मको जो अनुभवकरैहै सो तेराही अनुभव है वह तत्त्व औ तेरो तत्त्व एकहै अर्थात् दूनों चितईतत्त्व हैं भेद इतनाही है वह विभुचितहै तैं अणुचितहै परन्तु तेराही अनुभवहै जैसेदर्पण में अपनोई प्रतिविम्ब देखि परैहै वह तेरई अनुभवहै मैं वही ब्रह्महौं यही धोखा है ५२ ॥

जोबनसायरमुझ्भतेरसियाल्लालकराय ॥
अबकबीरपाजीपरेपन्थीआवाहिंजाय ५३

जौनेबनकहे वाणी करिकै सायरजोहै समुद्र अगाध ब्रह्मतौने में मुझ्भतेकहे मोहको तुमप्राप्तभयो औ वहीके रसियाकहे रसिक ह्वैकै लालकहे दुलारकरतभये अपनेको ब्रह्ममानतभये वाणी को प्रकाशरूप जोब्रह्म है सोअगाहहै याकोपार कोईनहीं जायहै सो कबीरजी कहैहैं कि अबहमसबको जौन नही समुझिपरतरह्यो अगाधरह्यो शुद्धजीवनको सो ब्रह्म पाजी परयोहै वही प्रकाशित ह्वैकै रामरसिकह्वैकै साहबके लोकको चलोजायहै औ पुनिजी-वनके उपदेशकरिवेको चलोआवैहै ब्रह्मप्रकाशह्वैकै साहबकेलोक को चलेजायँहैं तामेंप्रमाण ॥ सिद्धाब्रह्मसुखेमग्ना दैत्याश्चहरि णाहताः । तज्ज्योतिर्भेदनेसक्ता रसिकाहरिवेदिनः ॥ औ साहब के लोकमें जेहैं तिनकी सर्व्वत्र गतिहै तामेंप्रमाण ॥ सस्वृत्युन्त रतिससर्वेषुलोकेषुकामचारोभवति इतिश्रुतेः ५३ ॥

दोहरातौनवतनभया पदहिनचीन्हेकोइ ॥
जिनयहशब्दविवेकियाक्षत्रधनीहैसोइ ५४

सेव्यसेवकभावमान्यो साहबकोजान्यो तब दोहरा तौ तन भया कहे हंसशरीरपायो पराभक्तिपायो तौने पदकहे साहब के लोकमें प्रवेशकरैहै सो वो लोकको नहीं चीन्हैहै जो कहो ब्रह्म रूपह्वैकै कैसे सेव्यसेवकभाव साहबते कियो तुम बनायकै कहौ हौ तौ श्री कबीरजी कहै हैं जिन यहशब्द विवेकिया कहे जिन

साहब यह विवेककरि शब्द बतायो सोई क्षत्रधनी है अर्थात् साहिबैमोको बतायेहै मैं बनायकै नहीं कहौहौं तामें प्रमाण ॥ ज्ञानीवेगिजाहुसंसारा । अमीशब्दकरि जीवउबारा ॥ पुरुषहुकम जबजबमेंपावा । तबतबजीवकोआनिचेतावा ॥ गीतामेंभीलिखा है ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांछति । समस्सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिंलभतेपरां ॥ भक्त्यामामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः । ततोमांतत्त्वतोज्ञात्वा विशतेतदनन्तरम् ५४ ॥

कबिराजातपुकारियाचढ़िचन्दनकीडार ॥
बाटलगायेनालगैफिरिकालेतहमार ५५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जबमैं चन्दनकी डारमें चढ़िकै कहे वह ब्रह्मकेपरेह्वैकै साहबकेलोकको जानलग्यों तबमैं पुकारयों औ अबहूंपुकारौंहौं सो पीछे लिखि आयेहैं कि बिरवा चंदनते बासिजाइहै कछुचंदननहीं ह्वै जाइहै ऐसे ब्रह्मज्ञानकिये जीवशुद्ध ह्वैजाइहै कछु ब्रह्म न होइहै सो ब्रह्म जो है चंदन तौनेकीडार चढ़िकै अर्थात् ब्रह्मज्ञानकरिकै शुद्धह्वैकै वाको जानिकै पुकारयों हों कि साहबकेहोउ ब्रह्महीमेंजनि अटकेरहौ इतनाही नहीं है साहब ब्रह्मकेआगेहै सो सबको मैं बाट लगावौंहौं कि तुमसाहब के होउ तुमहमारेलगाये उसराहमें जोनहीं लगतेहो तो हमारो कहाजायहै अथवा हम जौनचाल बतावैहैं तौनैचाल नहींचलते हो औहमारो फिरक्यालेतेहो कि हम कबीरपंथीहैं सो लम्बी टोपीदीन्हे औ बिनाछिद्रको चंदनदिये औ बहुत साखी शब्दी कएठकरलिये हमारे फिरका न पावोगे मतको न पावोगे यम के धक्काते न बचोगे तामेंप्रमाण ॥ हमारागायागावैगा । अजगैबी धक्कापावैगा ॥ मेराबूझाबूझैगा । सोतीनलोकमेंसूझैगा १ कबीर की साखी शब्दी पढ़िकै और वितण्डावाद अनर्थ करनलगे औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वेदशास्त्रको झूठकरनलगे आपने जीवै को सत्य करनलगे ते यमको धक्का पावैचाहैं औ जे कबीर की

साखी बूझिके औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अंशहै जीव श्री रामचन्द्र याके रक्षकहैं ऐसो जे बूझ्यो ते तीनलोकमें सूझबई करैंगे काहेते उनके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचंद्र तो बनईहैं सर्वत्र रक्षा करिलेइहैं ५५ ॥

सबतेसांचाहैभला जोसांचादिलहोइ ॥
सांचविनासुखनाहिंना कोटिकरैजोकोइ ५६

जोआपना सांचादिलहोइतो सबतेसांचे जेपरमपुरुषश्रीरामचंद्र औउनहींको अंशजीवहै औउन्हींको मैं सांचोदासहों यहमत सबतेसांचहै सोई भलोहै सोयहसांचमतविना सुखकाहूको नहीं है कोटिन उपायकरै औ श्रीरामचंद्र सत्यहैं औजीव सत्यहै औ जीवको औ श्रीरामचंद्रको भेद सत्यहै तामें प्रमाण ॥ सत्यंभिदः सत्यंभिदः ॥ इत्यादि औकबीरजीकी साखिहू को प्रमाण ॥ सत्य सत्य समरथधनी सत्यकरोपरकाश । सत्यलोक पहुंचावहू छूटै भवकी आश ५६ ॥

सांचासौदाकीजिये अपने मनमें जानि ॥
सांचेहीरापाइये झूठे मूरो हानि ५७

आपने मनमें पारिखकै लीजिये तब सांचासौदा कीजिये कहे ऐसी खानि खुदाइये जाते सांचे हीरा पाइये वही में कच्चे हीरा निकसैहैं तिनको छांड़िदीजिये ऐसे वेदपुराण खानिहैं तिनमें साहबको मत निकासि लीजिये यह सांचो सौदा कीजिये औरमतनको त्यागिदीजिये काहेते झूठे मतमें लागे आपनो स्वरूप जोहै साहबको अन्तसूर ताकी हानि है जायहै अर्थात् भूलिजायहै ५७ ॥

सुकृतबचनमानैनहीं आपुनकरैविचार ॥
कहैंकबीर पुकारिकै सपन्योगोसंसार ५८

सुकृत साहब अथवा सुकृतसंत अथवा सुकृतबचन जो मैं कहौंहौं कि साहब को भजन करो सो नहीं मानैहैं जोमनमेंआवै है सो विचार करैहैं सोकबीरजी पुकारिकै कहैहैं किउनकोस्वप्न्यो मेंसंसारगयो अर्थात् स्वप्नेहूमें संसार नही गयो यहकाकुहै ५८॥

लागीअग्निसमुद्रमें धुआंप्रकटनहिंहोइ ।
कीजानैजोजरिमुवा कीज्यहिलाईहोइ ५९

समुद्रमें आगि बडवाग्नि लगीहै औ वाको धुआं नहीं प्रकट होइहै सो वाकोसो जानै है जोवामें जरिजाय कि जाकी वहबड़वा-ग्नि लाई कहे लगाई होय सो जानै अर्थात् संसारमें मायाब्रह्मकी अग्नि लगिरहीहै ताको वही जानै जाको ज्ञान भयो होय या समझै कि मायाब्रह्मकी अग्निमें हम जरेजायहैं अथवा सोजानै जाकी अग्नि बनाईहै संसाररच्योहै ५९ ॥

लाईलावनहारकी जाकीलाईपरजरै ॥
बलिहारीलावनहारकीछप्परबाचैघरजरै ६०

यहअग्नि किसकी लगाईहै ताकेलायेते सगुण निर्गुणजेदोनों परहैं ते जरैहैं औ घरजेहैं पांचो शरीरते जरिजातहैं तामेंप्रमाण॥ अवतौअनुभव अग्निहिलागी। घेरिघेरितनजारनलागी ॥ यहअनु-भवहमकासोंकहिये बूझै कोउवैरागी ॥ज्यठरी लहुरीदोनोंजरिया जरी कामकी वारी । अगमअगोचरसमुझिपरैनहिंभयोअचम्भौ भारी ॥ सम्पतिजरीसम्पदाउवरी ब्रह्मअगिनिपसरी ।कहैकबीर सुनोहोसंतौ बड़ी सो कुशलपरी ६० ॥

बुन्दजोपरासमुद्रमें सोजानैसबकोइ ॥
समुद्रसमानाबुन्दमें बूझैविरलालोइ ६१

यह ब्रह्म ईश्वर मायाआदिदैकै जो संसारसागरहै तामें बुन्द

जो जीवहै सो परयो या सबैजानैहैं कि जीव संसारी ह्वैगयो है वेदशास्त्रमें सर्वत्रलिखैहै अरु यह सिगरो संसारसमुद्र बुन्दरूप जीवमें समायजाय है अर्थात् ईश्वर मायाब्रह्ममय जो संसार ताको जीवही अनुभवकरिलियोहै सो जबजीव याभांतिते अनु-भवत्यागै कि विषय इंद्रीमें इंद्रीमनमें मन चित्तमें चित्त प्राणमें प्राण जीवात्मामें लीनकैदियो तब संसारसागर बुन्दरूप जीवमें समायजायहै अर्थात् संसार मिटिजायहै जीवसाहबको जानि जाय है ६१॥

जहरजिमीदैरोपिया अमिसींचैसौबार॥
कबिराखलकैनातजै जामेंजौनबिचार ६२

जिमीमें जहर को थलहादैकै जो बीजबोवै है सो वामें जो सैकड़ोंबार अमृतौसींचै तो वहिबीजा में जहरको असर आय-बोई करैगो तैसेयहखलककहे संसारमें मायाकीजिमीहै विषय को थलहाहै ताते केतिकौ कोईउपदेशकरै परन्तु मायाकोअसर कबिरा जे जीव हैं तिनके आयही जाय है जोई बिचारआवै है सोईकरैहैं सो संसार नहींछोड़ै ६२॥

दौकीडाहीलाकरी वाभीकरैपुकार॥
अबजोजाउँलोहारघर डाहैदूजीबार ६३

दावानलकी डाहीकहे जरीजो लकरीहै सोई लाईभईवहैपु-कारिकै कहैहै किअब जो लोहारके घरजाउँ तो दूजीबारलोहार मोको डाहै कहे जारै सो दावाग्नि जोहै ब्रह्माग्नि तौनेते जो सम्पूर्ण कर्मजरिहुगे तो कोयलारहिजायहै कहे वहैकैवल्यशरीर रहिजायहै सोकहै है कि जोअब लोहार जे सतगुरु हैं तिनके इहां जाउँ तोकैवल्योशरीर छूटैमुक्त ह्वैजाउँ अर्थात् जो साहबको नजान्यों औ कर्म सब जरिगये तो कैवल्य शरीर रहिगयो अर्थात्

सबसंसारहीमेंआवैहैं जोकैवल्यशरीर छूटै तोहंसशरीरतें मुक्तह्वै जाय काहेते कर्मनके जरे कैवल्यशरीर नहींछूटैहै ६३॥

विरहकिओदीलाकरीसपचैऔगुंगुआय॥
दुखतेतबहींबाचिहौ जबसगरोजरिजाय ६४

विरहकी जरी लाकरीहै अर्थात् याको साहब को विरहभयो है सोवह विरहते ओदीहै याहीतेसपचै है औगुंगुआयहै नानादुःखपावैहै सो जब पांचौशरीर जरिजायहैं हंसशरीरपाय साहब केपासजायहै तब दुःखते बचैहै जोकहौ इहांतो सगरोशरीरको जरिजायबोकह्यो हंसशरीरको जरिबो काहेनकह्यो तो हंसशरीर याको न होय वा साहबके दियेमिलैहै त्याहिते याहीके पांचौशरीर जबजरैहैं तबसतईजगह भूमिकाते नाकिकै आठईभूमिकामेंजायहै तब चितमात्र रहिजायहै तब साहब हंसशरीर देइहैं तामें टिकिकै साहबके पासजायहै सोपाछेलिखिआयेहैं ६४॥

विरहबाणज्यहिलागिया औषधलगतनताहि॥
सुसुकिसुसुकिमरिमरिजियैउठैकराहिकराहि ६५

साहबको विरहरूपीबाण जाकेलग्यो अर्थात् जिनको यहजानिपरचो कि हमते साहबते बिछोह ह्वैगयोहै ते बिरहवारनको ज्ञान योगादिक औषध नहींलगैहै विरहबाणाग्निते तप्त जरैहै मरिमरि जियैहै या जोकह्यो सो विरहाग्निते जरै है स्थूलशरीर को जब अभिमान छूट्यो तब सूक्ष्मशरीरमें जियो जबसूक्ष्मशरीर छूट्यो तब कारण शरीरमें जियो जब कारणशरीर छूट्यो तब महाकारण शरीरमें जियोजब महाकारण शरीरछूट्यो तबकैवल्य शरीरमें जियो यही मरिमरिजीबोहै औतहौंकराहि कराहि उठैहै कहे एकौ शरीरनहीं आछे लगैहैं ६५॥

सांचाशब्दकबीरका हृदयादेखुविचार॥

चितदैसमभैमोहिंनहिंकहतभयलयुगचार ६६

साहब कहैहैं किसांचाशब्दजो कबीरका रामनाम ताकोहृद-यमें विचारिके देखु तोतैं चित्तदैके नहीं समझैहै मोको चारों युग वेद शास्त्रमें कहतभयो औ कबीर जेहैं तेऊचारोंयुगमें कहत आ-येहैं सतयुगमें सत्यसुकृत नामते त्रेतामें मुनीद्रनामते द्वापर में करुणामयनामते औ कलियुगमें कबीर नामते एकराम नामै को उपदेशकियो सो जोतैं वह रामनामको जानते तोतेरे समीप मोको आवनपरतो हंस शरीरदै अपने पास लैआवतो ६६ ॥

जोतूसांचाबानियां सांचीहाटलगाउ ॥
अंदरमेंझारूकोदैकैकूराढूरिवहाउ ६७

हेजीव जोतैं अपने स्वरूप को चीन्है तो तैंसांचा बानियां है सो सांची हाटलगाउ कहे सांचे जे साहब तिनको जानु औ उनकेनामरूप लीलाधाम सबसांचेहैं तिनकीहाटलगाउकहेस्मर-णकरु औ अन्दरमें झारूदैकैविषयबासना औनानामत जेकूराहैं तिनकोढूरिवहायदे तूसांचाहैसाहबकोहै असांचेनमानलागु६७॥

कोठीतोहैकाठकीढिगढिगदीन्हीआगि ॥
पण्डिततोझोलाभयेसाकठउबरेभागि ६८

कोठी जेहैं चारयो शरीर तेतो काठकी हैं जरनवारीहैं ज्ञानाग्नि ढिगढिग उनके लगी है वेद शास्त्र पुराण साहबको बतावैहैं सोजे पण्डित रहे तेसारासारको विचारकर साहब जे सार तिनकोजा-न्यो ते उसअग्निमें परिकै झोला ह्वैगये कहे उनके सबशरीर जरिगये अर्थात् संसारते मुक्त ह्वैगये औसाकठजेहैं शाक्तभागिकै उबरे कहे जोवेद शास्त्र साहबको प्रतिपादनकरै है ताके डांड़ैनहीं गये खण्डन करनलगे उनसों भागिकै संसार में परे मायामें लपटेहैं मायै को स्मरण करन लगे ६८ ॥

सावनकेरामेहरा बुंदपराअसमान ॥
सबदुनियावैष्णवभईगुरूनलाग्योकान ६९

जैसेश्रावणकेमेहकोआसमानबुन्दपरैहै तैसेसबदुनियावैष्णव होतभई सववीजमन्त्र लेतभये जैसे लोकमेंको गुरु हजारनचेला एकैवार वैठायकैमन्त्र गोहरायदेयहैं याहीभांति श्रावण कैसोमेह सवको मन्त्रदेइहैं चेलामन्त्रलेइहैंयाहीरीति गुरुवालोग उपदेश करतभये कोटिन वैष्णवहोतभये गुरु कवै कानलग्योअर्थात्नहीं लग्योअरु गुरुतोवाकोकहैहैं जोअज्ञानको नाशकरै सोजोचेलाको अज्ञान न नाशभयो तौगुरुचेला दोऊनरकको जायहैं तामेंप्रमाण ॥ शिष्यधनहरैंशोकनाहिंहरहीं । तेगुरुघोरनरकमेंपरहीं ॥सो जो वो चेलाको अज्ञान दूरि न कियो तो कौन गुरु है औ जौन गुरुते ज्ञानलै अज्ञान ननाशकियो तो वहकौनचेलाहै अर्थात् वह गुरुनहीं है कायर क्रूरहै औ वह चेला नहीं है टूटमसखरा है औ जो अज्ञानको नाशै सोई गुरुहै तामेंप्रमाण ॥ अज्ञानतिमिरान्धस्यज्ञानाञ्जनशलाकया ।चक्षुरुन्मीलितंयेन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥औ जोसंसारदूरिनहींकरैहै सो गुरुनहींहै तामेंप्रमाण॥गुरुर्नसस्यात् स्वजनोनसस्यात् पितानसस्याज्जननीनसास्यात् ॥ दैवन्नतस्यान्नृपतिश्चसस्यान्नमोचयेद्यस्समुपेतमृत्युम्॥श्रीकबीरजीकी गुरुपारष अंगकी साखी ॥ गुरूसीख देवे नहीं चेलागहै नखूट । लोक वेद भावैनहीं गुरुशिष्यकायरटूट ६९ ॥

ढिगबूड़ाउसलानहींयहैअँदेशामोहिं ॥
सलिलमोहकीधारमेंक्यानिंदआईतोहिं ७०

साहब कहैहैं कि हे जीवो तुमसब संसार सागरके तीरही में बूड़िगये एकहूवार न उसले यहै मोको अंदेशा है या संसार सागरके मोहरूपी सलिलधारमें क्या तोको नींद आईहै भलाएक वारतो मूड़ निकासि उसलि मोको पुकारतो तौ मैं तोको पारही

लगावतो सर्वत्र पूर्णमें बनोहौं तें मेरे ढिगही बूड़ोजातोहै अबहूं जो जानतो मैं पारही लगायदेहुँ ७० ॥

साखीकहैंगहैंनहींचालचलीनाहिंजाय ॥
सलिलमोहनदियाबहैपाँयनहींठहराय ७१

कबीरजी कहैहैं कि साखीतो कहैहैं औ जोमैंसाखी कहोहै ताकोगहैं नहीं हैं वाको विचारै नहीं हैं औ जो मैं चाललिख्यो है सोऊनहीं चलीजाय संसाररूपी नदियामें मोहरूपी सलिलबहै है तामें पांवैंनहींठहराय जीव बिचारा क्याकरै यासाहबसों अर्ज कै जीवको क्षमापनकरावै है ७१ ॥

कहतातो बहुतामिला गहतामिलानकोइ ॥
सोकहताबहि जानदे जोनहिंगहताहोइ ७२

साहबकहै हैं याहीभाँति कहतातो बहुत मिल्यो गहता कोई नहीं मिलै है सोजो कोई गहतानहोय ताको तैंबहिजानदे तोकोकहापरी है ७२ ॥

एकएकनिरवारियाजोनिरवारीजाय ॥
दुइदुइमुखकोबोलनाघनेतमाचाखाय ७३

तामेंपुनि कबीरजीकहै हैं कि हेसाहब याकोजीवको दोपनहीं है एक २ जो निरवारतो तौ वेद शास्त्र ते याको निरवारह्वै जातो अर्थात् जो एकमालिक आपही ठहराय देतो तौ जीव गहिलेतो दुइदुइ मुखकोबोलना वेदशास्त्रको अर्थात् कहीं ब्रह्मकोकहीं ईश्वरको कहीं जीवको कहीं कालको कहीं कर्मको कहीं मालिक बतायो सो या दुइमुख के बोलते जीवघने तमाचा खायहै तुमको नहीं जानिसकै ७३ ॥

जिह्वाकोदेंबंधनै बहुबोलनानिवारि ॥

सोपरखोसोंसंगकरुगुरुमुखशब्दबिचारि ७४

सोकबीरजी कहैहैं कि हेजीव मैं साहबसों बिनती करिलियोहै सोतुम यहराह चलो तुम्हारोउबार साहबकरिलेइगो आपनी जिह्वाबंधनकरो असतबाक्य न बोलनेपावे एकरामनामहीं कहो औ नानामत जो कहौहौ सो कहिबो निवारि देउ औ जौन सबमतनते पारिखकरिकै साहबको ठहरायो होयऐसे पारखीको संगकरु औगुरुमुख जोशब्दहै ताकोतू बिचार करु काहेते साहब याकह्योहै ॥ अबहूंलेहुँ छुड़ायकालसों जो घटसुरतिसँभारै ॥ सो तैं सुरतिसँभारि साहबमें लगायदे अनत न जानदे साहबतोको संसार सागरते उबारिहीलेइँगे ७४ ॥

जाकीजिह्वाबंदनाहिं हृदयानाहींसांच ॥
ताकेसंगनलागिया घालैबटियाकांच ७५

जाकीजिह्वा बंदनहींहै जौने मतकोचाहै तौनेनमतको प्रतिपादनकरैहै औ जिनके हृदयमें साहबके नामरूपादिक नहीं हैं तिन के संगकबहूं न लागिये वे कच्चे हैं उनके संग लागेते संसार में परौगे ७५ ॥

पानीतोजिह्वैढिगैक्षणक्षणबोलकुबोल ॥
मनघालेभरमतफिरैकालदेतहिंडोल ७६

पानीरूप जो बानी है सो याके जीभके ढिगैहै छिन छिनमें कुबोलई बोलबोलै है असतबाणी बोलि २ बानीरूप पानीमें बूड़िगयो अथवा ब्रह्ममायाकी आगीबुझावनवारो पानीयाकेजीभहीके ढिगहै सो नहींकहै है छिन छिनकुबोलही बोलै है सो मनके घालेकहे फेरिसंसारमें भरमत फिरै है कालजो है सोयाकोहिंडोल रूप शरीरदियाहै सो भूलतफिरै है कबहूंमानुषहोय है कबहूं पशु पक्षी इत्यादिक शरीर धारणकरै है ७६ ॥

हिलगैंभालशरीरमेंतीररहीहैटूटि॥
चुम्बकबिननिकसैंनहींकोटिपहनगयेफूटि ७७

जिन मतनमें श्रीरघुनाथजी नहीं मिलै हैं तेई मतनके वाण याकेलगैहैं नाना कुमतिरूपी गाँसी याके भटकी हैं सो रामनाम चुम्बकबिना वे नहीं निकसै हैं ७७॥

आगेसीढ़ीसाँकरीपाछेचकनाचूर॥
परदातरकीसुन्दरीरहीधकादैदूर ७८

साहब के यहां की गैल बहुत साँकरीहै कोई कोई पावैहै औ पाछे संसारमें गिरै तौ चकनाचूर ह्वैजाय परदातरकी सुन्दरी जो माया सो जोकोई साहबसों लगनलगावन लागै है ताको धक्कादेइ है औ जो कोई साहबके सन्मुखभयो वहराहचढ़्यो तेहितेदूरिरहै है धुनियाहै कि जो वाके जायगी तौ गैलसाँकरीहै दूसरेकीसमाई नहींहै पीसिजायगी यहडरै है ७८॥

संसारीसमयबिचारियाक्यागिरहीक्यायोग॥
अवसरमारोजातहै चेतुबिरानेलोग ७९

क्या गिरहीकहे गृहस्थ औ क्या योगवारे कहे योगी ज्ञानीते श्रीरामचन्द्र को छोड़ि छोड़ि और और साहब विचारैहैं ते सबसंसारीसमय विचारतैहैं परमारथ कोईनहीं विचारैहैं अर्थात् संसारहीमेंरहैहैं अर्थात् आपने इष्ट देवतन के लोकगये अथवा ब्रह्म में लीनभये ज्योतिमें लीनभये पुनि संसारमें आयगये सो हेजीव तैं बिरानाहै साहब को है और काहूको नहीं है और मतनमेंलागे तैं न छूटैगो जौन जाको होयहै तौन ताहीके छुड़ायेछूटै है सोया मानुष शरीरपायकै अवसर मारोजायहै चेतुतौ तैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकोहै तिनहींके छुड़ाये संसारतेछूटैगो औ संसारीदेवत-

नको कहापरी है जो आपनेते छुड़ायकै संसारते छुड़ावैंगे वेतौ ओर संसारही में डारेंगे ७९ ॥

संशयसबजगखंधियासंशयखँधैनकोय ॥
संशयखंधैसोजनाजोशब्दविवेकीहोय ८०

संशयजोहै मनको सङ्कल्प विकल्प सो सब जगको खँधाइलियोहै कहे फँदायलियोहै औ संशय जोहै मनको सङ्कल्प विकल्प ताको कोई नहींखँधिसकैहै अर्थात् मनको संकल्प बिकल्प काहूको नहींछूटैहै जो साहबके शब्द रामनामको अर्थ बिचारतरहै है सोई संशयको खँधिसकैहै अर्थात् ताहीके मनकोसंकल्प बिकल्प छूटै है संशय छूटिवे को उपाय याही में है ८० ॥

बोलनाहैबहुभांतिके नयनकछूनाहिंसूझ ॥
कहैकबीरबिचारिकै घटघटबाणीबूझ ८१

सो बोलना तो बहुत प्रकारकेहैं कहे बहुतप्रकारके शब्दहैंबहुतप्रकारके मतहैं तिन मतनमें ज्ञान नयनते सारपदार्थ जो जनन मरणछुड़ावै सो कछू न सूझतभयो सो कबीरजी कहैहैं कि तैं बिचारिकै तौ देखु ये जेबाणीते नानामत घटघटते निकसैहैं ते मनैके संकल्प विकल्पतेहैं सोतौनेते संकल्प विकल्प मनको कैसे छूटैगो येतो मनवचनमेंहै वह घटघटकी वाणी तो झूठकी कहांते निकसीहै वह वाणीको मूल औ मनवचनके परे ऐसो जो राम नाम ताको विचारकरि जानैगो तबहीं छूटैगो यहसब वाणीको मूलरेफहै सो नाभिस्थानमेंहै तहाँते वाणीउठैहै सो जो मूलहै सो तो साहबको बतावैहै रामनामही प्रथम प्रकटकरैहै औ मूलाधार चक्रमें मूल जो रामनाम है मनवचनकेपरे त्यहिते जो अनुसार भयो वाणीको ताहीको आभास परावाणी प्रकटभई रेफ ताहीते मकार जब जोरयो तब रकाररूप हृदय में पश्यन्ती प्रकटहोइहै

औ फेरि जबएक अकार और आयो तब कण्ठमें मध्यमाप्रकट होइहै औ पुनिजब वैखरी में एकअकार और प्रकटभयो जबओ-ठलग्यो तब व्यञ्जन मकार भई तब वहै मन वचनके परे राम नाम सो आपने रूप को आभास वैखरी में प्रकट करै है सोई प्रथमकबीर लिख्यो कि ॥ रामनामलै उचरीबाणी ॥ सो प्रथम याको प्रतिलोमक्रमते जपकरत चारिउबाणीको स्वरूपजानै औ फेरि अनुलोमक्रमते रामनामको उच्चार करै घण्टानादवत् या भाँतिते जो जपकरै तौ मनबचनके परे जो रामनाम ताकोआ-भास जो रामनामहै सो प्रथम याहीकोलैकै बाणीउचरीहै फेरि प्रणवादिक मंत्र भयेहैं यही घटघटबाणी को मूलतैं वृक्ष औ मन बचनते परे जे साहबहैं तिनको पायजाय सो या भाँतितेबाणी कोमूल जो तैं घट घटमें बिचारै तो येसबबाणी ऊपरते नानामत नाना सिद्धान्त कहैहैं याकोमूल सिद्धांत तौ साहिबै को बतावै है स्याहिते चारोवेद छः शास्त्र तात्पर्य्य करिकै श्रीरामचन्द्रही को बतावै हैं सो मेरे सर्व्व सिद्धांत ग्रन्थमें प्रसिद्ध है ८१ ॥

मूलगहेतेकामहै तूमतिभर्म भुलाय ॥
मनसापरमनलहरिहै बहिकतहूंमतिजाय ८२

मनजो है सोई समुद्रहै मनसाकहे मनोरथ ताकी लहरि में बहिकै तैं मतिजा अर्थात् मनको सङ्कल्प विकल्प छोड़िदे नाना बाणी नानामतमें तैं न भूलिजाय मूल जो रामनाम ताहीको ग्रहणकरु याहीके गहेते तेरो उबारहोइगो संसारछूटैगो ८२ ॥

भँवरबिलम्बैबागमें बहुफुलनकीआश ॥
जीवबिलम्बैविषयमें अन्तहुचलैनिराश ८३

जैसेभँवरबागमें बहुतफूलनकी आशकरिकैंबिलंबै है तैसेजीव संसारमेंबहुत विषयकी आशकै परयो सो ऐसो फूल न भ्रमर

पायो कि एकै फूलसूंघेते संतोषह्वैजाय औ न ऐसे विषय जीवही पायो कि जामें संतुष्टह्वैजाय अर्थात् विषयसुख जीवकियो परंतु अंतमें निराशहीह्वैजाय है सो प्रकटही है वह सुख नहीं रहिजाय है परंतु मूढ़जीव नहीं छोड़ै है ८३ ॥

भंवरजालबगुजालहै बूड़ेजीवअनेक ॥
कहकबीरतेबाचिहैं जिनकेहृदयबिबेक ८४

भ्रमरजाल जोहै संसारसागरके विषयको भौंतासोकैसेहैं कि बकुलाजे जीवहैं तिनके बोरिबेको जालहै तामें बहुतजीव बूड़ि गये सो कबीरजीकहै हैं कि जिनके हृदयमें विवेकहै असारबाणी को छोड़िकै सारजोरामनामरूपी जहाजताको विवेक करिगहि लियो है तेई संसारसागरके पारजाइ हैं ८४ ॥

तीनिलोकटींड़ीभई उड़ियामनकेसाथ ॥
हरिजनहरिजानेबिना परेकालकेहाथ ८५

टींड़ी के जब पखनाजामा तब जहैं जाइहै तहैं मरिही जायहै सोतीनिलोकके जीवनके मनरूपी पखनाजामें सो जहां जायहैं तहां मरिही जायहैं सो हैं तो ये हरिकेजन हरिके अंश पै अपनो स्वामी औरक्षक हरिजेहैं परमपुरुष श्रीरामचंद्रसबके क्लेश हरने वाले तिनके विनाजाने कालके हाथमेंपरे औ मनकेसाथ उड़ै हैं सो मरतमें जहैं मनजायहै तौनैरूप ह्वैजायहै तामेंप्रमाण ॥ अंते या मतिःसागतिः॥ औकबीरहूको प्रमाण ॥ जाकी सुरतिलागिहै जहँवां । कहैकबीरसोपहुंचैतहँवां ८५ ॥

नानारंगतरंगहै मनमकरन्दअसूझ ॥
कहैकबीरपुकारिकै अकिलकलालैबूझ ८६

सङ्कल्प विकल्परूप नानारङ्गकी हैं तरंगै जामें ऐसोजोमन

तामें काहेते तरंग उठैहै कि मकरन्द जो विषयरस ताको पान करिकै मतवालो ह्वैगयोहै सो जो मतवालो होयहै सो औरको और करैचाहै सो कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि अकिल जो बुद्धि तामें निश्चयकरिकै कला जोहै रेफ अर्द्धमात्रा ताको लैकै बूझ अर्थात् वही अर्द्ध मात्रा में स्थितकी विधि पाछे लिखिआये हैं अथवा नानारंगकी जामें तरंग उठती हैं ऐसा जो मकरन्दपुष्प रस कहावैहै सो महुवाके फूलकारस मदिरा समुद्र मनसो असूझकहे अपार है वारपारनहीं सूझिपरैहै सो कहांते मनरूपी मद भरयोहै सो अपनी अकिलते कहे बुद्धिते वह कलालकहे कलार को तो बूझ ८६ ॥

बाजीगरकाबंदरा ऐसाजिउमनसाथ ॥
नानानाचनचायकै राखैअपनेहाथ ८७
येमनचंचलचोरई ईमनशुद्धठगार ॥
मनकरिसुरमुनिजहड़िया मनकेलक्षदुवार ८८
विरहभुवंगमतनडसा मन्त्रनमानैकोइ ॥
रामबियोगीनाजियै जियैसोबाउरहोइ ८९

ये दूनों साखिनको अर्थ स्पष्टई है ८७।८८ विरहभुवंगमकहे जिनको साहबकी अप्राप्ति है तिन जीवनको अज्ञान भुवंगमडस्योहै ताते ज्ञानभक्ति वैराग्य योग ये मन्त्र नहींमानै हैं काहेते कि जिनमें साहबको ज्ञाननहीं है तैं भक्ति वैराग्यते विमुखहै सो कबीरजी कहैहैं कि रामके वियोगी जे जीव हैं ते जियै नहीं हैं विषयमें लागेहैं काल उनको खायलेइ है औ जे योगकरिकै वैराग्य करिकै भक्तिकरिकै जियै हैं विषयछांड़िकै संसारको छोंड़ै हैं ते बाउर ह्वैजायहैं कहे वहुतदिन जीवोकिये ब्रह्महूमें लीनभये तौ पुनि संसारमें तो आवहीकरैंगे काहेते कि अपने स्वामीको तो

चीन्हवही न किये अर्थात् बैकल ह्वैगये हैं जो बैकलाय है सो औरको और करैहै यथार्थबात नहीं करैहै ८९ ॥

रामबियोगीविकलतन जनिदुखवोइनकोइ ॥
छूवतहीमरिजायँगे तालाबेलीहोइ ९०

श्रीकबीरजी गुरुवालोगनते कहैहैं जे साहबके बियोगीजीव ह्वैरहे हैं तिनको तुमकाहे दुखावतेहो अर्थात् नानामतनमें नाना उपासनामें काहे भटकावतेहो जरेमें लोनमींजतेहो इनकेभीतर आपहीते ताला बेली परिरहीहै नानामत खोजैहैं ये छुवतहीमरि जायँगे अर्थात् धोखाब्रह्म उपदेशदेतै में गहिलेइँगे सो अबै तौ भला बद्धै भरिहैं नित्य बद्धनहीं हैं जो कहूं साधुते भेंट ह्वैजाय तो उवारहू ह्वै जाय जब धोखाब्रह्म में लागैगो तब वाको न छांड़ैगो साहब को मत खण्डन करैगो सो तुम ऐसे मरेन को काहे मारौहौ ९० ॥

बिरहभुवंगम पैठिकै कीनकरेजेघाव ॥
साधुनअंगनमोरिहै जबभावैतबखाव ९१

बिरहरूपी भुवंगम कहे साहबको अप्राप्तरूपी जो भुवंगम है सो पैठिकै करेजे में घाव करतभयो अर्थात् साहबते विमुख संसारी ह्वैगये अथवा गुरुवालोग नानामत नानाउपासना बताय करेजे में घाव करिदिये हैं अर्थात् साहबते बिमुखकरिदिये सो जेतो असाधुरहे तेतो मारेपरे औ जे कौनेहूजन्म में साहबको पुकारयोहै उपासनाकियो है सो साधुकबहूं न अंगमोरैगो वाकी पूर्ववासना साहब में बढ़तही जायगी आखिर साहबको जानि साहबकेपास पहुंचैगो वे गुरुवनके लगायेधोखामें कबहूंनलागैगो काल उनकोजबचाहै तबखाय वेजबजन्मधरैंगे तबसाहिबैकी उपासनाकरैंगे उपासना सिद्धकरि साहब के पासपहुंचैंगे तामें प्रमाण ॥ भक्तिबीजपलटैनहींजोयुगजाहिंअनन्त ॥ नीचऊंचघर अवतरैहोयसंतकोसन्त । इतिचौरासीअंगकीसाखीसमाप्तम् ९१॥

करककरेजेगड़िरही बचनवृक्षकीफांस ॥
निकसायेनिकसैनहीं रहीसोकाहूगांस ९२

सबजीवको साहब के अप्राप्तकी करककहे पीड़ा गड़िरही है कहे गुरुवनके बैन वृक्षकीफाँसको लगोड़ छोलिकै काठके बाण बनावैहै ताकीफाँस अथवा वृक्षते शरइव आयगई ताकी फाँस करेजे में गड़िरहीहै सो निकासेते नहींनिकसैहै अर्थात् जिनको गुरुवालोग धोखा ब्रह्ममें लगायदियेहैं ते पलटाये नहीं पलटैहैं वाहीको गहेहैं काहूके तो बाण सहितगाँसी के अटकीरहे हैं ते वही ब्रह्मको प्रतिपादन करैहैं सत मतको खंडन करैहैं औ वे जे ऊपर ते बेषबनायेहैं भीतर धोखा ब्रह्महो घुसोहै तिनके भीतर करेजेमें गाँसिही भर अटकी है तामें प्रमाण ॥ अंतश्शक्तावहिश्शैवाः सभामध्येचवैष्णवाः । नानारूपधराःकोलाः विचरंतिमहीतले ॥ अथवा गुरुवालोग जो और और देवतनको मतसुनायो है सोई उनके अंतःकरणमें जाइकै अज्ञानरूपी वृक्षजाम्योहै तौने की कुमति रूपी फाँस याके करेजेमें गड़िरही है सो वह करककहे जनन मरणरोग नहीं जायहै अर्थात् वा फाँस काहूकी निकासी नहीं निकसै केतो उपदेश कोई करै सो कबीरजी कहेहैं कि काहू गुरुवनकी यह जीव के कहा गाँसकहे बैररह्यो है जो ऐसी फाँस मारयोहै जो अबलौं निकासी नहीं निकसै ९२ ॥

कालासर्प्पशरीरमें सबजगखाइसिझारि ॥
बिरलैजनबांचिहैंजोई रामहिंभजेंबिचारि ९३

कालरूप जो सर्प्प सो सब जीवनके शरीरमें बसैहै शरीरके साथै उत्पन्नभयोहै जेती अवस्था जायहै तेतीकाल खातोजायहै जब आयुर्दाय पूरिगई तब सबकाल खायलियो याहीभांति सब जगत्को कालझारादै खायेलेइहै जे सबमतको छोड़ि परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको बिचारिकै भजैहैं तेई बिरलैबांचैहैं तामें प्रमा-

ण कबीरजीको पद ॥ सन्तौरामनामजोपावैं । तौवेबहुरिनभव-जलआवैं ॥ जङ्गमतोसिद्धिहिकोधावैं । निशिवासरशिवध्यान लगावैं ॥ शिवशिवकरतगयेशिवद्वारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥ पण्डितचारिउवेदवखानैं । पढ़ैंगुनैंकछुभेदनआनैं ॥ संध्यातर्प-णनेमअचारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥ सिद्धएकजोदूधअधारा । कामक्रोधनहिंतजैंविकारा ॥ खोजतफिरैंराजकोद्वारा । रामरहेउ-नहूंतेन्यारा ॥ बैरागीवहुवेषवनावैं । करमधरमकीयुगुतिलगावैं ॥ घण्टवजायकरैंभनकारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥ जंगमजीवकवौं नहिंमारैं । पढ़ैंगुनैंनहिंनामउचारैं ॥ कायहिकोथापैंकरतारा । राम रहेउनहूंतेन्यारा ॥ योगीएकयोगचितधरहीं । उलटेपवनसाधना करहीं ॥ योगयुगुतिलैमनमेंधारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥ तपसी एकजोतनकोदहई । वस्तीत्यागिजँगलमेंरहई ॥ कन्दमूलफल करआहारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥ मौनीएकजोमौनरहावैं । और गाउँमेंधुनीलगावैं ॥ दूधपूतदैचलैलवारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥ यतीएकवहुयुगुतिवनावैं । पेटकारणेजटावढ़ावैं ॥ निशिवासरजो करहङ्कारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥ फकरलैजियजवेकराहीं । मुखतेसवतरखुदाकहाहीं ॥ लैकुतकाकहैंदम्ममदारा । रामरहेउ-नहूंतेन्यारा ॥ कहैकवीरसुनोटकसारा । सारशब्दहमप्रकटपुका-रा ॥ जोनहिंमानहिं कहाहमारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ९३ ॥

कालखड़ाशिरऊपरे जागुबिरानेमीत ॥
जाकोघरहैगैलमें क्यासोवैनिश्चीत ९४

जाकोघरगैलमें होइहै सो वेगारि धरिहीजायहै सो हेजीवतेरे ऊपरकालखडाहै तैंकैसे निश्चिन्तह्वैकै वेखवरि सोवैहै तुहूंवेगारि धरोजायगो तातेचेतकरु तैंतो विरानामीतहै अर्थात् तैंतोसाहव को मीतहै सो जागु वेगारि न धरिजायगो ९४ ॥

कायाकाठीकालघुन यतनयतनसोंखाय ॥

कायामध्येकालबस मर्मनकोऊपाय ९५

यहकायारूपी काठमें कालरूप घुनलग्योहै सो यतन यतन सों लवनिमेषपरिमाणयुग बर्षकल्पकरिकै पिंडाडहूको ब्रह्मांडहूको खायलेइहै सो जे शरीर धारणकिये हैं तिनके शरीरहीमें कालबसै है कहै हैं कि हम दशवर्ष के भये बीसवर्ष के भये यह नहीं जानैहैं कि यह काल हमारी एती अवस्था खायलियो ९५॥

मनमायाकीकोठरी तनसंशयकाकोट ॥
बिषहरमंत्रनमानहीं कालसर्पकीचोट ९६

मनमायाकी कोठरी तन संशयका कोटहै तामें परोजोहैजीव ताको काल सर्पकीचोटभईहै कहे कालरूपी सर्प शरीरकोडस्यो है सो विषहर कहे विषके हरनवारे जे ज्ञान योग वैराग्य मंत्र हैं तिनको नहीं मानैहैं अर्थात् मणिते विष उतरि जाय है सो राम नाम जो विष हरनवाली मणि ताको नहीं जानै हैं जाते काल-रूपी सर्पको विष उतरिजाय तामें प्रमाण गोसाईंजीको ॥ मंत्र महामणिविषयव्यालके । मेटतकठिनकुअंकभालके ९६ ॥

मनमायातोएकहै मायामनहिंसमाय ॥
तीनिलोकसंशयपरी काहिकहौंविलगाय ९७

यहमायामनमें समानी है मनमाया एकही ह्वैगईहै सो यह मनमाया साहबको भुलायदियो है ताते तीनलोकमें कालकी संशयपरी है कालके छूटिवेको सब उपायकरैहैं परन्तु छूटैनहींहै मैं काको विलगायकै कहौं कि यह मनमायाको छोड़िके साहब को जानो कालते छोड़ावनवारे कालहूकेकाल साहियहीहैं उनहीं को कालडेरायहै तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ कहहकबीरकालहुकर काला । हैदारुणबड़कालकराला ॥ यहज्ञानसागरकी साखीहै ॥

भो साहिवहीको काल डेरायहै तामें प्रमाण॥ यद्भयाद्वातिवातो यं सूर्य्यस्तपतियद्भयात्। वर्षतीन्द्रोदहत्यग्निर्मृत्युर्द्धावतियद्भयात्॥ इतिभागवते ९७॥

वारीदीन्ह्योखेतमें वारीखेतहिखाय॥
तीनिलोकसंशयपरी काहिकहौंसमुझाय ९८

खेतकी रखवारीवारे वारीरूँधिजायहैं सो जो वारिहीखेतको खाय तो काकरैं तैसे ज्ञान योग वैराग्य ब्रह्मभावना जीवकीरक्षा करिवेको वतायो सो जो ब्रह्महीमें लीनह्वै संसारमेंपरे तौ जीव कहाकरै सो यह संशयरूप जो धोखाब्रह्म सो तीनोंलोकमेंहै मैं काको काकोसमुझाऊं कि तुमधोखामें न जाउ संशयजोहै धोखा ब्रह्म सोई खेतचरेलेइ है तामें प्रमाणकवीरजीकी परिचयकी साखी॥ शब्दविषयकहिब्रह्मऊ गुरुवनकीन्ह्योफेर॥ मातुसुतै विषदेइजो का वशवालककेर ९८॥

मनसायरमनसालहरि बूडेवहेअनेक॥
कहकवीरतेइवाचिहैं जिनकेहृदयविवेक ९९

मनसायर जोहै मनको समुद्र तौने में मनसाकी लहरिजोहै मनको अनुभव धोखाब्रह्म सो ये दुनहुनमें परिकै केतौ बूड़िगये केतौ वहिगये सो कवीरजी कहैहैं कि जिनके हृदय में विवेक है साहव में लगैहैं तेई वाचैहैं ९९॥

सायरवुद्धिवनायकै वायुविचक्षणचोर॥
सारीदुनियाजहड़िगै कोईनलाग्योठोर १००

सायरजोहै संसारसमुद्र तामें वुद्धिवनायकैकहे वुद्धिकोनिश्चय करिकै वायुविचक्षण जोहै वैहर ताहूते चञ्चल जो चोररूपीमन ताको संगकरिकै सवदुनिया जहड़िगई कहे विगरिगई कोईनठौ-

रमें लागतभये अर्थात् कोई न साहब के पास पहुँचत भये मन वायुते चञ्चलहै तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ पानीतेअतिपातलाधूवाँतेअतिभीन। पवनहुँतेअतिऊतलातेहिमित्रकबीराकीन १००॥

मानुषह्वैकैनामुवा मुवासोडाँगरढोर ॥
एकौजीवठौरनहिंलाग्यो भयासोहाथीघोर १०१

जो कोई साहबकेपास पहुँचै सोई मानुषहै अर्थात् साहबाद्विभुजहैं यहाँ द्विभुजह्वैके साहबकेपास जाइहै औ कबहूँ मरै नहीं है सो साहबके जाननवारे नहीं मरैं या पीछे लिखि आये हैं औ जेसाहबको नहींजानै हैं तेई मरैहैं तेवे डाँगरढोरहैं ते मानुषनहीं हैं अर्थात् पशुहैं एकोठौर में नहीं लागैहैं कहे साहबके पासनहीं पहुँचैहैं हाथी घोर इत्यादिक नाना योनिमें भटकै हैं १०१ ॥

मानुषतैंबड़पापिया अक्षरगुरुहिनमानि ॥
बारबारबनकूकुही गर्भधरेचौखानि १०२

हेमानुष तैं तो श्रीरामचन्द्रको अंशहै तेरोस्वरूप मानुष कोहै सो तैंबड़ो पापीह्वैगयो काहेते कि साहब तोको बारबार गोहरायो कि तैं मेरो है मेरे पासआउ सो उनके कहे अक्षर नमान्यो आज्ञाभंग कियो तौने पापते बारबार जो बनकी कूकुही कहेमुर्गी तिनके कैसोगर्भ चारिउ खानिके जीवनमेंपरिकै परिवारके पालन पोषणमें लागिकै पुनि पुनि जन्मधरत भयो नानादुःख सहत भयो इहाँ मुर्गी यातेकह्यो है कि बच्चा बहुतहोय हैं १०२ ॥

मनुषबिचाराक्याकरै कहेनखुलैकपाट ॥
श्वानचौकबैठायकै पुनिपुनिऐपनचाट १०३

वेद शास्त्र पुराण इनकेकहे जो कपाटनहींखुलै हैं अर्थात्ज्ञाननहीं होयहै तौ मानुष बिचारा क्याकरै प्रथम साहबकोकह्यो

नहींमान्यो याते मानुष पशुवत् ह्वैगयो अज्ञानघेरे है सो जोकूकुर कुकुरिया को विवाहकरै चौकमें बैठाइये तौ वे पुनि पुनि अपने चाटैहैं तैसे जीवनको पशुवत् ज्ञानह्वैगयोहै फेरि फेरि वही विषयमें लागै हैं साहबकी ओरनहीं लागै हैं १०३ ॥

मनुषबिचाराक्याकरै जाकेशून्यशरीर ॥
जोजिउझाँकिनऊपजै काहिपुकारकबीर १०४

या मानुष विचारा क्याकरै जाकेशरीरमें शून्यजो धोखाब्रह्म सो समायरह्योहै सो धोखाब्रह्मको झाँकिउ कहे देखिउचुक्योकि इहांकुछ वस्तुनहींहै औ साहबको ज्ञान न उपज्यो तौ कबीरजी कहैहैं कि मैंकाको पुकारौं वहतो बड़ो अज्ञानी है बूड़िगयो जो प्रत्यक्ष देखोनहीं मानैहै कि यह शून्यहीहै यामें कछू न मिलैगो तो मेरो कह्यो कैसे सुनैगो १०४ ॥

मानुषजन्महिंपायकै चूकैअबकीघात ॥
जायपरैभवचक्रमें सहैघनेरीलात १०५

चौरासीलाख योनिमें भटकतभटकत ऐसो मानुष शरीरपायकै अबकी जो घातचूक्यो साहबको न जान्यो तौ संसारचक्रमें परैगो और यमकी घनेरी लातैं सहैगो १०५ ॥

ज्ञानरतनकोयतनकरु माटीकाशृंगार ॥
आयाकबिराफिरिगया झूठाहैहंकार १०६

साहबके ज्ञानरतनको यतनकरु जाते साहब को ज्ञानहोय यहजो माटी कहे शरीरको शृङ्गार करैहै सोअनित्यहै कबिराकहे कायाको वीर जीव यह संसारमें आया और फिरिगया तबशरीर पराय जाताहै यहजो अहंकार करताहै कि हम शरीरहैं हम ब्राह्मणहैं क्षत्रीहैं वैश्यहैं शूद्रहैं सोसब झूठे हैं औ जो फीकाहै संसार

यह जो पाठहोय तौ यह अर्थ है कि साहब के ज्ञानरतनको जो यतन करै है ताको या संसार फीकैलगै है जो कोई दाख को खानवारोहै ताको महुवा फीकै लगैहै १०६ ॥

मनुषजन्मदुर्लभअहै होयनदूजीबार ॥
पक्काफलजोगिरिपरा बहुरिनलागैडार १०७

यह मानुष जन्म तिहारो बड़ो दुर्लभ है जौनअबैहो तौन फिरि न होउगे पक्काफल गिरि परै है तौ पुनि वह डारमें नहीं लगैहै अबै साहब के जानिबे को समय है सो साहबको जानि लेउ १०७ ॥

बांहमरोरेजातहौ मोहिंसोवतलियोजगाय ॥
कहैकबीरपुकारिकै यहिंपैंडेह्वैकैजाय १०८

मुसल्मानुनमें जे साहबके भक्तहोयहैं ते जब भजन न करै हैं तब उनकोपीर दस्ततेदस्त मिलावैहैंसो दस्तमिलायकैसाहबको बताइदेइहैं पास पहुँचायदेयहैं तिनसों जीव वे कहैहैं कि हमारी बांहमरोरे चलेजाउहौ हमसंसारमें सोवतरहे सो जगायलियो तब उनके पीर जे हैं कबीर ते कहैहैं कि यहिपैंड़े ह्वैकै जाउ या कहिकै साहबके जायबेको राहबताय देइ हैं तब उनके परमगुरु जे हैं महम्मद आदिदैकै पैगम्बर तिनके इहां पहुँचायदेय हैं तब उनके चेला वह राहचलि महम्मद के पास पहुँचै हैं तब महम्मद साहब के पास पहुँचावै हैं औ हिंदुनमें जे श्रीरघुनाथ जी को स्मरणकरै हैं ते गुरुद्वाराह्वैकै सुमिरनकरै हैं ते गुरुपरम गुरुको मिलावै हैं परमगुरु आचार्यको मिलावै हैं ते साहबको मिलायदेइहैं जैसे रामानुज मतवारे आपने गुरुको प्राप्तभये औ गुरू शठकोपाचार्यको प्राप्तभये औ वे विष्वक्सेनको प्राप्तकियो जीवको औ वे संकर्षणको प्राप्तकियो औ वे जानकीजीको प्राप्त कियो जानकीजी श्रीरामचन्द्रको प्राप्तकियो कबीरजी रामानंदके

संप्रदायके हैं तेहितेयह संप्रदाय संक्षेपते लिखिदियो है ऐसेसब आचार्यलोग आपनेआपने चेलनको साहबमें लगायदेइहैं१०८॥

बेराबांधिनसर्पको भवसागरकेमाहि ॥
छोड़ैतौबूड़तअहै गहैतौडसिहैवाहि १०९

पंचमुखी सर्पअहंकार ताके पांचमुखनमें पांचप्रकारकी बाणी निकरीहै प्रथममुख विश्वहै ताते कर्मकांड निकरा औ दूसरामुख तैजस ताते योगकांड निकरा औ तीसरामुख प्राज्ञ ताते उपासनाकांड निकरा औ चौथामुख प्रत्यगात्मा ताते ज्ञानकांडनिकरा औ पांचोंमुख निरंजन ताते अद्वैतविज्ञान निकरा सो ऐसे पंचमुखी सर्पमें बेराको बांध्यो आपने मनसे कल्पिकै भवसागर अनुमान कियो ताको मान्यो तब ये नरदेहमें पंचमुखी सर्प अहंकार उठा तौने अहंकारको पहिरिकै वामें सब जीवचढ़े भवसागरपारके वास्ते सो अब जो बिचार करिकै छोड़ाचाहै तौ भवसागरकी भयलागै है कि बूड़िजायँगे औ धरे रहे हैं तौ सर्प डसै है सो पंच शरीराहंकार सर्पको बेराबनेपर सब वाही में आरूढ़हुआ वेरा समुद्रके पारनहीं जायसकै है तीरहीमें रहिगये सो न बेराको गहिसकै न बेराको छोड़िसकै संसारसागर में बूड़ते उतराते हैं १०९॥

करखोराखोवाभरा मगजोहतदिनजाय ॥
कबिराउतराचित्तसों छाँछदियोनहिंजाय ११०

गुरुमुख जे साहब के जनहैं ते कौनीभाँतिते जानेजायहैं कि पूरहैं सर्वत्र साहबको देखैहैं हाथ में खोवाभरा कटोरालीन्हेराह जोहैहैं कि कोई आवैखाय सो सर्वत्र तो साहिबैको देखै हैं ताते जोई आयकै खायहै ताको साहिबै जानै हैं औ साहिबै मानिकै आदरकरैहैं औ खोवा खवावैहैं औ कबहूं परुषबचन नहींबोलै हैं ते जीव साहबके प्यारेहैं औ जिनसों छाँछहूनहींदैजाय लाठीलै

मारेदौरेहैं तेकबीर कायाकेवीर जीवसाहबके चित्तते उतरिजायहैं अर्थात् वेमुक्ति कबहूं नहीं पावे हैं संसारहीमें परे हैं अथवा यह साखीगुरुमुखहै तातेयह अर्थ है साहबकहैहैं कि खोवाभराकटोराहाथमेंलियेहौं रामनाम उपदेशकरौहौं यह कैसोहैकि कहतमें सरलहै फिरि कायाको कलेश कौनौ नहीं करनपरै औ सबको अधिकार है जैसे खोवा खातमें न कौनौ अरसाहै न कौनौश्रम है ऐसे रामनाम रूपी खोवा उपदेश रूप लियोहौं जोकोईयाको खाय अर्थात् स्मरणकरै तो मैंवाको संसारते छोड़ाय देउँ सोमेरे पास आवै तौनेको कायाकेवीर कवीरजीनहीं ग्रहणकरैहैं तेमेरे चित्तमें उतरिजायहैं उनको छाँछऊ मोसों दियोनहीं जाय अरु ज्ञानादिक कर्मादिकके फलतौ मैं देउहौं सो उनके उत्तमकर्महूंके फलमोसों नहींदिये दैजायँ अर्थात् मेरो चित्तनहींचाहै है कि छाँछ जेहैं ज्ञानादिकते उनकेउत्तम कर्मादिकके फलदेउँ सो श्रीकवीरजी कहैहैं कि अबैसाहब समुझावैहैं सो मानिकै रामनाम कहि कैसंसार छोड़िदे फेरिजब यमकेसोंटा लगैंगे तब न कहो कहि जायगो तामेंप्रमाण ॥ बहुरिनबनिहैकहतकछु जबशिरलागिहै चोट ॥ अबहींसबयकठौरहै दूधकटोराटोट ११० ॥

एककहौंतौहैनहीं दोयकहौंतौगारि ॥
हैजैसातैसारहै कहैकबीरविचारि १११

साहब कहै हैं कि हेजीव जोमैं तोको एककहौं कि ब्रह्मई है सब तैहीं है तौ वेदमेंलिखैहै कि॥सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मइतिश्रुतिः॥ ब्रह्म तो ज्ञानमय है सो जो ब्रह्म हो तो तौ मायामें बद्ध ह्वै कै कैसे संसारीहो तो औ जो दोयकहौं कि तैं काहू ईश्वरकोदासहै तौ गारी तोको परैहै काहेते कि तैं तो मेरोअंशहै सो हेकबीर कायाकेवीर जीव बिचारिकै देखुतो तौतैं सनातनको मेरोअंशहै दासहै औरको नहीं है तामेंप्रमाण ॥ ममैवांशोजीवलोकेजीव

भूतः सनातनः ॥ औ मैं मालिक एकईहौं दूजोनहींहै तामेंप्रमाणचौरासीअंगकीसाखी ॥ सोईमेराएकतूऔरनदूजाकोइ ॥ जो साहब दूजाकहै सोदूजाकुलको होइ १११ ॥

अमृतकेरीपूरिया बहुबिधिलीन्हेछोरि ॥
आपसरीखाजोमिलैताहिपिआऊंघोरि ११२

साहब कहै हैं कि अमृतपुरिया जो यारामनाम सो मैं बहुत भाँतिते छोरि लीन्हहौं और जो दिन्हींपाठहोय तौ यहरामनाम की पुरिया छोरि दिन्ह्योंहै कहे बहुतविधिते प्रकट करिदीन्ह्यों है कि यहीसंसारते छोड़ावनवारो है दूसरोनहीं है सोआपसरीखा जो मोकोमिलै ऐसी भावना करतहोय कि मैं साहब को अंशहौं दासहौं सखाहौं दूसरे को नहींहौं ताकोमैं रामनामकी पुरियाघोरिकै पियाइदेउँ कहे अर्थसमेत बताय देउँ औ पुरिया रामनामकी दैकै संसाररोगमिटायदेउँ औ रामनाम औषधहै तामेंप्रमाण ॥ रामनामयक औषधी सतगुरुदियाबताय ॥ औषध खावैपथकरै ताकीवेदनजाय ११२ ॥

अमृतकेरीमोटरी शिरसेधरीउतारि ॥
जाहिकहौंमैंएककहौंमोहिंकहैद्वैचारि ११३

साहबकहैहैं कि अमृतकीमोटरी जो रामनाम ताको तौशिर तेउतारि धरचो कहे वाको तौ कोईविचारकरैहै नहींजासों मैंकहौंहौं किएक मालिक महींहौं सो मोको दुइचारि बतावैहैं कहे छःबतावैहैं अर्थात् पञ्चांगोपासना औछठौं ब्रह्म सबको मालिक जोमैंहौं ताको भूलिगये कोई देवीको कोई सूर्यको कोई गणेश को कोई विष्णुको कोई महादेवको मालिक कहैहैं ११३ ॥

जाकोमुनिवरतपकरैं वेदपढ़ैंगुणगाय ॥

सोईदेवसिखापना नाहिंकोईपतिच्चाय ११४

जाकेहेतु मुनिवर तपस्या करैहैं परन्तु नहीं पावै हैं चौजाको चारोंवेद गावैहैं परन्तुगुणको पारनहीं पावैहैं तौनेन साहब को श्री कबीरजी कहैहैं कि मैं सिखापन दैकै बताऊंहौं कि उनहींके रामनामको जपौ तबहीं संसारते छूटौगे ताहू मैं मोको कोईनहीं पतिआयहै अथवा वोई जौन सिखापन दियो है कि मेरो नाम जपै तौ संसारते उद्धार ह्वै जाय तौनै मैं सिखापनदै बताऊंहौं परन्तु पतिआय नहीं है सो महामूढ़ है ११४ ॥

एकशब्दगुरुदेवका ताकोअनंतविचार ॥
थाकेपण्डितमुनिजना बेदनपावैंपार ११५

एक शब्द जोहै रामनाम ताको अनन्त विचार है अर्थात् ताहीते वेद शास्त्र पुराण नानामत सब निकसेहैं सो हमारे राम मन्त्रार्थ में लिखो है तौने रामनामको अर्थ करतकरत पण्डित मुनि वेद थकिगये पार न पाये अर्थात् अनन्तकोटि ब्रह्मांड में वेद शास्त्रसब याहीते निकसे हैं ये कैसे पारपावैं ११५ ॥

राउरकोपिछवारकै गावैंचारोसेन ॥
जीवपराबहुलूटमें नाकछुलेननदेन ११६

राउर जोहै साहबकोधाम ताको पिछवारेकै दियेहैं चारोसेन जेचारो वेद तिनके श्रुतिनको नानाउपासनामें नानामत में लगायकै तिनहीं मतनको उपासनाकरि जीव लूटमें पर्यो न कछु लेनहै न कछुदेनहै अर्थात् कछूवस्तुहाथ नहीं लगै है ११६ ॥

चौगोड़ाकेदेखतै व्याधाभागाजाय ॥
अचरजहोयकदेखौसन्तौमुवाकालकोखाय ११७

चौगोड़ा जोहै जीवात्मा ताके चारिगोड़ जेहैं मन बुद्धि चित्त अहंकार इनहींतेजीवचलैहै तौने के देखतेकहे जबअपने स्वरूप को चीन्ह्यो कि मैं साहबकोअंशहौं तबव्याधा जोहै कालसो भागि जायहै निकट नहींआवै है सो हे सन्तो एकबड़ो अचरज है जब जीवात्मा स्वरूपको जान्यो तबतोकाल भागतही भर है औ मुवा कहे मनबुद्धिचित्त अहंकार जे चारोगोड़ तिनको औ पांचोशरीर छोड़्यो तब कालखायहीजायहै कहे कालकी भयनहीं रहिजाय है हंसशरीरमें बैठिकै साहबके पास जायहै उहां कालकीभयनहीं है तामें प्रमाण ॥ नयत्रशोकोनजरानमृत्युर्नार्त्तिर्नचोद्वेगऋतेकुतश्चित् । यश्चिन्तितोदःकृपयानिदंविदां दुरंतदुःखप्रभवानुदर्शनात् ॥ इतिभागवते ॥ यस्यब्रह्मचक्षत्रञ्चउभेभवतओदनः॥ मृत्युर्यस्योपसेचतकइत्थावेदयत्रसः ॥ औ वा लोकमें कौनौशोकनहींहैं तामेंप्रमाणधर्म्मदासको पदनामलीलाग्रन्थको ॥ जहांपुरुष सति भाव तहांहंसनकोबासा । नहींयमनकोनामनहींह्वांतृष्णाआसा॥ हर्षशोकवाघरनहीं नहींलोभनहिंहान । हंसापरम अनन्दमें धरै पुरुषकोध्यान ॥ नहिंदेवीनहिंदेव नहींह्वांवेदउचारा । नहिंतीरथ नहिंवर्त्तनहींषटकर्म्मअचारा ॥ उतपतिपरलयह्वांनहींनहीं पुण्य नहिंपाप । हंसापरम अनंदमें सुमिरै सतगुरुआप॥ नहिं सागर संसारनहीं ह्वां पवनहुँ पानी । नहिं धरती आकाशनहीं ह्वांऔर निशानी ॥ चांद सूर वा घरनहीं नहीं कर्म नहिं काल । मगन होय नामै गहै छूटिगयो जंजाल ॥ सुरतिसनेही होइ तासु यम निकट न आवै । परमतत्त्व पहिचानि सत्य साहब मनभावै ॥ अजर अमर विनशै नहीं परमपुरुषपरकास । केवल नामकबीर का गाय कहै धर्मदास ११७ ॥

तीनिलोकचोरीभई सबकासरबसलीन्ह ॥
बिनामूड़काचोरवा परानकाहूचीन्ह ११८

तीनिलोकमें चोरीहोत भई सबको सर्बस्वलै लियो सो ऐसो

जो बिना मूड़को चोर निराकारब्रह्म सोकाहूको न चीन्हिपरयो अथवा बिन मूड़को चोर छिन्नमस्तादेवीके उपासकते आपने हूँ को भावना करै हैं कि हमारो मूड़नहींहै काहेते कि देवोभूत्वा-देवंयजेत् ॥ यह लिखैहै ते शाक्त काहूको नहीं चीन्हिपरै हैं माया मेंडारिकै सबजीवको भरमाइ देइ हैं ११८ ॥

चक्कीचलतीदेखिकै नयननआयारोइ ॥
दोपटभीतरआयकै साबितगयानकोइ ११९

पुण्यऔपापदूनों चक्कीहैं कहे चकरीहैं तामेंद्वैत जोहै हमहमार सो किल्लीहै तौनै चक्कीके दूनोंपटके भीतरआयकै साबित कोई नहीं गयाहै पीसिही गयो है जो कोई साहबको सर्वत्र चिद्‌चित् रूपते देखैहै सोई बाचैहै तामेंप्रमाण ॥ पापपुण्यदुइचक्की कहिये खूंटाद्वैतलगायाहै । तेहिचक्कीतरसबैपीसिगे सुरनरमुनि नवचाया है॥ और प्रमाण सायर बीजकको ॥ चक्की चली रामकी सब जग पीसा झारि ॥ कहकबीरतेऊबरेजेकिल्लीदियोउखारि ११९ ॥

चारिचोरचोरीचले पगपानहींउतारि ॥
चारोदरथून्हीहनी पण्डितकहहुविचारि १२०

चारिचोर जेहैं विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीयते चोरीकोचलेआपनी आपनीपनहीं जो है बिचारताको उतारिकै कहे छोडिकै औरचोर चलैहै तबपनहीं उतारिकै चूपाजायहै तैसेयेऊ चलै हैं सोविश्वा-भिमान कर्म्मकाण्डकी थून्हीगाड़ी औ तैजस अभिमान उपास-नाकाण्डकीथून्हीगाड़ी औ प्राज्ञाभिमान योगकी थून्हीगाड़ी औ प्रत्यगात्मा तुरीयअभिमानने ज्ञानकांडकी थून्हीगाड़ी सो ताही को विचार पण्डितजन करनेलगे अथवा चोर जोहैं मनबुद्धिचित्त अहङ्कारते विचाररूप पनहींको उतारिकै चोरीको चले सो मन सङ्कल्प विकल्पकी थून्हीगाड़ी औ चित्त अनुसंधानकी थून्हीगाड़ी

औ बुद्धिनिश्चयकी थून्हीगाड़ी औ अहंकार अहंब्रह्मकी थून्ही गाड़ी सोताहीकोसबपण्डित विचारकरने लगे सो कहै हैं मनतो संकल्प विकल्प करनेलग्यो किसंसार कौनी भांति ते छूटै औ चित्त अनुसंधान औरे २ ईश्वरन पर करने लग्यो औबुद्धिऔरे औरे ईश्वरनपर निश्चयकरनलागी औअहंकारअहंब्रह्मकोबिचार करनेलग्यो कि मैं ब्रह्महौं सो हे पण्डितो बिचारतौ करो येचारो जेहैं ते चारो दरसे थून्हीगाड़ दिये बिचाररूप पनहीं उतारि कै कहे साहबको विचार न करत भये साहब के विचारको पनहीं काहेते कह्योकि पनहीं पदत्राण कहावैहैं पांय की रक्षा करै हैं सो विचाररूप पनहीं उतारि डारयो ताते जैसे कांटा बेधिजाय है तैसे नानामत नानाप्रकार के भ्रम बेधिगये १२० ॥

बलिहारीवहदूधकी जामेंनिकसैघीव ॥
आधीसाखिकबीरकी चारिवेदकाजीव १२१

वहदूध जोहै चारोवेदअथवा और जे भक्तिशास्त्रतिनकी बलिहारीहै जामें घीव रामनाम निकसै है आधीसाखी जोहै कबीरकी रामनाम सो चारोवेदकाजीवहै काहेते जीवहै किचारों वेदयाही ते निकसेहैं औ आधीसाखी रामनामै को कह्योहै तामेंप्रमाण ॥ रामनामलै उचरीबाणी । सबको आदि रामनामही है १२१ ॥

बलिहारीतिहिपुरुषकी परचितपरखनहार ॥
साईंदीन्ह्योखांड़को खारीबूझगवाँर १२२

कबीरजी कहैहैं कि परचितकहे सब ते परे चिद्रूप जो साहब ताको परखनहार जो अणुचितपुरुषहै ताकी बलिहारीहै औ जे साईं कहे बयाना तो खांड़को दीन्ह्यो कि वेदनमें श्रीरामचन्द्रको बूझै ताको छोड़िखारी जोहैं नानामत तिनको वेदनमें बूझै हैं वोई मतनकी उपासना करैहैं ते गँवार हैं खारीजो बहुतखाय तौ

पेटकाटिदेइहै सो नानासतनमें परिकै नानादुःख सहै हैं १२२ ॥

विषकेबिरवाघरकिया रहासर्प लपटाय ॥
तातेजियरैडरभया जागतरैनिबिहाय १२३

विषको विरवा जोहै संसार तामें जीव घर कियो जामें काल रूपी सर्प लपटायरह्यो है तेहितें जाके हृदय में डरभयो है जागि के साहब को जान्यो ताको मोहरूपी निशा बिहाय जाय है औ जे नहीं जागै हैं तिनको काल डसिखायहै सो जिनको रामोपासना सिद्ध ह्वै गईहै ऐसे जे भक्तहैं तिनके शरीरनहीं छूटैहैं सो हनुमान् कबीरजी प्रकटै हैं १२३ ॥

जोई घरहै सर्पका सो घर साधुनहोइ ॥
सकलसम्पदालैगई विषभरलागीसोइ १२४

जो घर सर्पकोहै सोघर साधुको न होइ अर्थात् सर्प को वरबेमौरहै तामें बहुतछिद्र होइ हैं सो या शरीरौ बहुत छिद्रकी बांबीहै तामें काल बसैहै सो वे मौरमें जोजीवजायहै तिनको सर्प खायलेइ है औ जे या शरीर में कौनौ जीव बसै है तिनको काल खाइलेइहै १२४ ॥

मनभरकेबोयेकभौंघुंघुचीभरनाहोइ ॥
कहाहमरमानैनहीं अन्तहुचलेबिगोइ १२५

शरीरमें जो घुँघुची भर बासनाउठै तौ मनभरकी ह्वै जाती है कहे मनसंकल्प विकल्पकरिकै और बढ़ाइ देइहै मनमें वही भरिरहती है औ मनभर उपदेशकरै तौ घुँघुचीभर ज्ञाननहीं रहै यह मननीचै में जायहै ऊंचेको नहींजाय सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि हम के तौ उपदेशकरैं परन्तु कोईनहीं मानै हैं ताते अन्तमें बिगोइकै कहे बिगरिकै मरिकै नरक में जाय हैं १२५ ॥

अपातजोऔहरिभजो नखशिखतजोविकार ॥
सबजिउतेनिरबैररहु साधु मताहै सार १२६

श्री कबीरजी कहैहैं कि जबभर तैं यहिशरीरको आपनो मानैगो तब भर तेरो जनन मरण न छूटैगो ताते अहंशरीरः मैंशरीर होंयह जो है अपा ताको छोड़िदे तैंतोसाहबको पार्षदस्वरूपहैतामें टिकि तिनको भजनकरु औ नख शिखमें तेरे कामक्रोधादिक विकारई देखेपरैहैं तिनको छोड़दे औ चिदचित् बिग्रहते सर्वत्र साहिबही हैं यह भावना करिकै सबजीवनते निर्वैररहुसाधु मतको यहीसारांशहै सबसाहबकेशरीरहैं तामेंप्रमाण ॥ खंवायुमग्निंसलिलंमहीञ्चज्योतींषिसत्त्वानिदिशोद्रुमादीन् । सरित्समुद्राश्चहरेःशरीरंयत्किञ्चभूतंप्रणमेदनन्यः ॥ चितजोहै जीवसोऊ शरिरहै तामेंप्रमाण ॥ यश्चात्मनितिष्ठन्यमात्मानंवेदयस्यआत्माशरीरम् १२६ ॥

पक्षापक्षीकारणे सबजगरहाभुलान ॥
निरपक्षेह्वैहरिभजैं तेईसन्तसुजान १२७

और तो सबमायैमें भुलानहैं जिनकेकछूसामुझहै ते आपने आपने मतको पक्षकीन्हे हैं आनको पक्ष खण्डनकरिडारैहैं सो जे पक्षापक्षी छोड़िकै साहबको भजैहैं तेईसुजान सन्तहैं १२७ ॥

मायात्यागेक्या भया मान तजानहिंजाय ॥
जेहिमानेमुनिवरठगे मान सबनकोखाय १२८

संतलोग जोमायाकोछोड़िउ दिये तौ कहाभयो मान बड़ाई तौ छोड़िबै न किये याही चाहैहैं कि हमारो मानहोय सो जौने मानमें मुनिवर ठगिगये हैं सोई सबको खायेलेइहै सोहम पूछै हैं कि जो तिहारो बड़ो मानभयो बड़ी बड़ाई भई कि फलाने के

समान उपासनामें कोई नहीं है ज्ञानमें विद्यामें कोईनहींहै तौ यासों कहाभयोजाके निमित्त घरछोड्यो सोतो मिलिबई न भयो तेहिते जोकोई साहबके मिलिबे की संसार छूटिबेकी बातकहै तौ मानिलेइ चाहै आपने मतको होइचाहै बिराने मतको होइ काहेते कि साधुकोमत यही है कि संसारछूटै साहबमिलै औ मानैप्रतिष्ठा भयेसाधुकहावै या कौने शास्त्रमेंलिखाहै तेहिते साधु वही है जो साहबको जानै १२८ ॥

घुंघुचीभरजोबोइयाउपजपसेरीआठ ॥
डेरापराकालघरसाँझसकारेबाठ १२९

यह शरीररूपी क्षेत्रकैसोहै कि जो घुँघुचीभरबोइजाय अर्थात् उठै तौ आठ पसेरी कहे मन उत्पत्ति होयहै कालके घरमें डेरा पर्‍यो है तेहिते यहशरीरको कहूंसाँझ होइ है कहूं सकार होइहै अर्थात् कबहूं मरिजायहै कबहूं उत्पत्ति होइहै औ बाठकहावै बरेठ सो मनमायामें मिलो जो आत्मा सो बरेठ ह्वै गयो बरेठमें तीनलहर होयहै यामें त्रिगुणात्मिकामाया बरिगईहै सो एककैति पुण्यकी गैलहै जप यज्ञ दानते खैंचिकैस्वर्गको लैजायहै औ एककैति पापकी गैलहै कामक्रोधादिकतेखैंचिकै नरकमें डारिदेइ हैं जब बरेठ टूटिजायहै तब ख्याल गुलह्वैजायहै अर्थात् मुक्ति ह्वैजायहै १२९ ॥

बड़ेतेगयोबड़ापनो रोमरोमहंकार ॥
सतगुरुकीपरिचयबिनाचार्‍योबर्णचमार १३०

सबते बड़े कोहैं साधुजे संसारको त्यागकीन्हे हैं तिनमें और दोषतोहईनहीं हैं काहेते कि संसारको छोड़ेहैं परंतुजे चितअचित रूप साहबको नहींदेखैहैं सर्व्वत्रते आपने बड़ापनहीमें गये कि हमारी बराबरीको साधु कोईनहीं है या अहङ्कार रोमरोम बेधि गयो सो सतगुरुतो पायो न जो रामनामको बताइदेइ जातेसा-

हब याकीरक्षाकरैं सो साहबके जाननवारे जेसाधु तिनके बिना परिचय चारिउवर्ण चमारकेतुल्यहैं १३० ॥

मायाकीझकजगजरै कनककामिनीलागि ॥
कहकबीरकसबाचिहौरुईलपेटीआगि १३१

झकवाकोकहैहैं कि जैसे या कहैहैं कि भूतकी झकलगीहै सो कनक कामिनीमें लागि मायाकी झकमें बैकलायकै जरैहै सोश्री कबीरजी कहैहैं कि कनक कामिनीरूप रुईमें लपटिकै बिषय आगिसेवन करौहौ सोकैसे बाचिहौ अर्थात् जरिहीजायगो १३१ ॥

मायाजगसाँपिनिभई बिषलैबैठीबाट ॥
सबजगफंदेफंदियागयाकबीराकाट १३२

संसारमें माया साँपिनिभईहै सो बिषलैकै संसार की जे हैं सबरा हैं तन धन कर्म्म तिनमें बैठीहै सो सम्पूर्ण जग वाके फंदे में फंदिगयो जोई कबीर कहे जीव वेराहनमें चलैहै सोई काटा जायहै अथवा कबीरजी कहैहैं कि मैं जौनेजौने राहनमें वहसाँ-पिनि बैठीरहीहै तौनेतौने राहनको काटिकै कहे बरायकै और राह है चलोगयो १३२ ॥

साँपबीछिकोमंत्रहै माहुरझारेजाय ॥
बिकटनारिकेपालेपराकाटिकरेजाखाय १३३

साँपबीछीको बिष मंत्रनते झारे जायहै औ वह बिकटनारि जो मायाहै ताकेपाले जो परयो ताको करेजा काटिकै खायलेइ है अर्थात साहबके ज्ञानादिक जे अंतःकरणमें हैं तिनकोखाय है सोई मायाको रूप कहैहैं १३३ ॥

तामसकेरेतीनगुणभौंरलेइतहँवास ॥

एकैगरीतीनफलभांटाऊँख कपास १३४

आदितामस जोहै अज्ञान मूल प्रकृति तामें रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी तीनफल लगेहैं तोसतोगुणीऊँखहै जो ऊँखचुस्यो तो पहिले रस पान कियो कहे यज्ञादिक कर्म्म कियो स्वर्ग में जायकै अप्सरन्के साथ सुख कियो जब पुण्यक्षीण भयो तबफेरि संसारमें परे सोयहै हाथमें लग्यो फिरि चौरासीमें भटकनलग्यो औ रजोगुणी कपासहै कपासको लियो कपरा बिनायो पहिरयो ह्वांई फटिगयो तैसे रजोगुणी कर्म्म कियो तामें राजाभयो सुख भोग कियो दियो लियो बड़ोयश कियो फेरि फेरि मरिकै जैसो कर्म्मकियो तैसो भयो जाय औ तमोगुणीकर्म्म भांटाहै टोरयोतब कांटालग्यो औ जब खायो तबपुरुषशक्तिकी हानि ह्वैगई अखाद्य लिखैहैं द्वादशी त्रयोदशी इत्यादिक दिनमें जो खायो तो नरक को गयो ऐसे तमोगुणी कर्म्मते काहूको मारयो तो मरिगयो औ पापलग्यो राजाबांधिकै शूली दियो मारोगयो दुःखपायो सो इहां दुःखपायो औ वहांनरकमें दुःख पायो १३४ ॥

मनमतंगगैयरहनै मनसाभईसचान ॥
यंत्रमंत्रमानैनहीं लागीउड़ि उड़िखान १३५

मनरूपी जो हाथीहै मतवार सो गैयरकहे आपने मरते कहे हठते गवा जोहै जीव अर्थात् साहब को भूलिगयोजोहै जीवअथवा गैयर कहे बड़ा जोहैजीव ताको हनैहै सो जबजीव मारेपरयो तब मनसाजोहै मनोरथ सोई सचान भयोहै कहे शार्दूल भयो सो उड़ि उड़ि याको खायहै अर्थात् जब मरनलागैहै तब जहँ मनोरथ जायहै तहँ जीव जायहै सोई खायबोहै औ यन्त्रमंत्रजो नानाउपदेश वेदशास्त्रकहैहै सो नहीं मानैहै १३५ ॥

मनगयंदमानैनहीं चलैसुरतिके साथ ॥
दीनमहावतक्याकरै अंकुशनाहींहाथ १३६

मनरूपी जो मतंगहै सो नहीं मानैहै सुरतिरूपी जो हाथि-नीहै ताके साथ चलैहै महाउत जोहैजीव सो कहाकरै अंकुशजो है नामका ज्ञान सो याके हाथई नहींहै १३६ ॥

यामायाहैचूहरी औचूहरकीजोइ ॥
बापपूतअरुभायकै सगनकाहुकीहोइ १३७

यामाया चूहरी कहे चाण्डालिनीहै औ चूहरैकी जोइहै कहे जीव की जोइह्वैकै जीवहूको चूहर बनायलियो अर्थात् आपनेबश कैलियो सोयहमाया काहूकी सगनहींहै मन जोहै बाप पूत जो है ब्रह्मताको पतिजोहै जीव तासों अरुभाय दियोहै १३७ ॥

कनककामिनीदेखिकै तूमतिभूलसुरंग ॥
बिछुरनमिलनदुलेहरा केचुलितजैभुजंग १३८

साहब कहैहैं कियह कनककामिनीरूप मायाको देखि तू मतिभुलाय तैंतो सुरंगहै साहब कहैहैं किमेरे अनुरागमें रंगनवारो है सोआपने स्वरूप तो विचारु यह कनककामिनीरूप जो माया है तौनेमें जो रँग्योहै ताकोजोछोड़िदे तौ जैसे भुजंगकेचुलिछो-ड़िदेइहै तबवाको स्वरूप निकरि आवैहै तैसे तेरेचारो शरीरछूटि जायँ तब हंस शरीर पाय मेरे पास आवै १३८ ॥

मायाकेबशसबपरे ब्रह्माविष्णुमहेश ॥
नारदशारदसनकऔ गौरीसुतगन्नेश १३९
पीपरएकजोमहँगेमान।ताकरमर्मनकोऊजान ॥
डारलफायनकोऊखायखसमअछतबहुपीपरजाय१४०

अर्थ याको स्पष्टहीहै १३९ एकपीपरके वृक्षको सबै महँगेमा-निलियो है सो वह ब्रह्महै अनुभवगम्यहै वाको मर्म कोई नहीं जानेहै किपीपर को डारलफायकै कोई नहीं खायहै अर्थात् वा

अलखहै कैसेमिलो वातो कथनमात्रही है सो साहब कहै हैं कि जीवनको खसम अछतमैंबनैहीं ताकोतौनहीं प्राप्तिहोय वहपीपर जो ब्रह्मताही में सबचलेजातेहैं सो वहब्रह्म झाँई हैतामें प्रमाण मूल रमैनी को ॥ निर्गुणअलखअकहनिरवाना । मनबुधि इन्द्री जाहिनजाना ॥ विधिनिषेधजहँवांतनहोई । कहकबीरपदझांई सोई ॥ पहिलेझांईझांकतेपैठीसन्धिककाल । झांईकीझांई रही गुरुबिनसकैको टाल १४० ॥

शाहूतेभोचोरवा चोरनतेभोजुज्झ ॥
तबजानैगोजीयरा मारुपरैगोतुज्झ १४१

प्रथम शाहुरहेकहे शुद्धरहेहौ सो ब्रह्ममाया मनचोर हैं तिनमें लगिकै तैंहू चोर ह्वै गये अर्थात् उपदेशकरिकै जीवन के साहब को ज्ञान चोरायलियो काहूको कह्यो कि ब्रह्म तूहीं है काहू को कह्यो कि आदिशक्तिको भजु जगतको कर्त्ता वहीहै काहूकोकह्यो जो मनमें आवै सो करु बन्धमोक्षको कारण मनै है याही रीति गुरुवाचोरन ते जुज्झभयो सो तुज्झ कहे तोहीं तबहीं समुझि परैगो जब यमको सोंटा शीश में लगैगो तब तब जानैगो कि रक्षक को भुलाय दियो १४१ ॥

ताकीपूरीक्योंपरै गुरुनलखाईवाट ॥
ताकोबेराबूड़िहै फिरिफिरिअवघटघाट १४२

जाको गुरूने साहब के पास पहुंचिवे की बाट नहीं लखाई ताकी पूरि कैसेपरै ताको वेरा जो है ज्ञान सो अवघटघाटमेंबूड़ि जाइगो अर्थात् जबउनके शरीर छूटिजायँगे पुनिपुनि जननमरण होइगो तब वा ज्ञान भूलि जायगो १४२ ॥

जानानहिंबूझानहीं समुझिकियानाहिंगौन ॥
अन्धेकोअन्धामिला राहबतावैकौन १४३

मनमायादिक जो जगतहै ताको न जान्यो कि यह जड़ है मैं इनको नहींहौं इनते भिन्नहौं वा ब्रह्मको न बूझ्यो विचारई करत रहिगये अपने स्वरूपको न जान्यो कि मैं साहबको अंशहौं समुझिकै नानामतन में गौननकिये कि ये नरक लैजानवारे हैंसो आंधर जे जीव तिनको आंधरै गुरुवालोग मिलै साहबके यहांकी राह कौन बतावै १४३ ॥

जाकोगुरुहैआंधरा चेलाकहाकराय ॥
अंधेअंधाठेलिया दोऊकूपपराय १४४
मानसकेरीअथाइया मतिकोइपैठैधाय ॥
एकुइखेतेचरतहैं बाघगदहरागाय १४५

याकोअर्थस्पष्टहीहै १४४ या संसारमें मनुष्यकी अथाई हैं तामेंधायकै कोई मति पैठे काहे ते कि एकुइ खेतजोहै संसार तामें बाघजोहै जीव औ गदहा जोहै मन औ गाय जो है माया सो एकई संगचरै हैं गदहामनको कह्यो सो कर्मको बोझा याहीमें लादिजायहै औ जीवबाघहै समर्थजो साहबको जानै तो गाय जो है मायाताको खायजाइ अर्थात् नाश करदेइ १४५ ॥

चारिमासघनबरसिया अतिअपूर्बशरनीर ॥
पहिरेजड़तरबख्तरीचुभैनएकौतीर १४६

कबीरजीकहैहैं कि घनजोहौंमैं सो चारि मास जे हैं चारियुग तामें अतिअपूर्व जोहै शरकहे बाणरूपी नीरज्ञान ताको बरसत भयोकहे उपदेश करतभयो सबजीवनको परन्तु ऐसो जड़तरकहे जड़ौ ते जड़ बख्तर पहिरे हैकि तीर कहे एकौ ज्ञान नहीं चुभै है अथवा चारिमास जे हैं चारिउ वेदते घनकहे बहुतज्ञानकी वर्षा कियो कहे सबजीवन को उपदेश कियो परन्तु साहबको कोई न समुझतभयो वेदको अर्थ औरई में लगाय दियो सबशब्दको सार

रामनाम न जाने सब नरकको चलेगये तामेंप्रमाण ॥ नाम लिया सो सबकिया वेदशास्त्रको भेद ॥ बिनानामनरकेंगये पढ़िपढ़ि चारयोवेद १४६ ॥

गुरुकेभेलाजिवडरै कायाछीजनहार ॥
कुमतिकमाईमनबसै लागुजुवाकीलार १४७

कबीरजी कहैहैं कि गुरुके भेलेमें जिउडरैहै वहगुरुकी भेली कैसीहै कि कायाजेहैं पांचौ शरीर तिनको छीजनकहे छोड़ायदेनवारीहै सो येसंसारी जीवनके मनमें कुमतिकी कमाई लगीहै ताते जुवाकी लार मानुषशरीरमें लागहै न कर्म करत बन्यो तौ नरकगयो कर्म करत बन्यो तो स्वर्ग गये कर्मछूटनको उपाय नहीं करैहैं लारसंगको कहैहैं पश्चिमकी बोलीहै १४७ ॥

तनसंशयमनसोनहा कालअहेरीनित्त ॥
एकैडांगबसेरवा कुशलपुंछौकामित्त १४८

साहब कहैहैं संशय जो मन सोई तनमें सोनहाहै जीवनको शिकारखेलैहै औ एकयहकाल अहेरीहै अर्थात् जबकालमारैहै तब मनकी सुरतिजहां मरतमें जायहै तहां आत्मा जातरहैहै तौनै शरीर धारण करैहैं सोमन सोनहाकाल अहेरीजीवसावजयेतीनों एकै डांग जो शरीर तामें बसैहैं सो हेमित्र तुमतौ हमारे सखाहौ भूलिकै यह डांगजो शरीर तामें कहांबसेहौ चारो शरीरनकोछोड़ि हंसशरीरमेंबैठि मेरेपास आवो १४८ ॥

शाहुचोरचीन्हैनहीं अंधामतिकाहीन ॥
पारिखबिनाबिनाशहैकरिबिचारहोभीन १४९

हे अंधा हे ज्ञाननयनको हीन तैंतोशाहुरह्योहै चोर जोहैमनताकोतैंनचीन्हें ताते तैंहूं चोरह्वैगये सो बिचारनकियो कि पारिख बिनाबिनाशहै सो पारिखतो करु तैं तो चितहै औ यहमन जड़है

तेरो वाको साथनहीं वनिपरै है सोजैसे तैं अणुचितहै तैसेसाहब विभुचित हैं चिताचितको साथहोइहै सो विचारकरि यहि मनते भिन्न ह्वै मेरे पास आउ १४९ ॥

गुरुसिकिलीगरकीजिये मनहिमसकलादेइ ॥
शब्दछोलनाछोलिकै चितदर्पणकरिलेइ १५०

जोकहौमनतेहमकौनीभांतिते भिन्नहोइँतौगुरु सिकिली गरहै आत्मातरवारिहै मनादिकनकी काटनवारीहै तामें साहबकोज्ञान रूपीमसकलादै रामनाम छोलनाते अज्ञानरूपी मुरचाछोलिप्रेम की वाढ़िधरि मनादिकनकेकाटिबेकोसमर्थ करिदेइ अर्थात्चारिउ शरीरको छोड़िस्वरूपरूपी दर्पणमें आपनो हंसशरीर जानिलेइ कि मैं साहब को अंशहौं १५० ॥

मूरुखकेसमुझावते ज्ञानगांठिकोजाय ॥
कोइलाहोइनऊजरो नौमनसाबुनखाय १५१
मूढ़करमियामानवा नखशिखपाखरआहि ॥
वाहनहाराकाकरै बाणनलागैताहि १५२

यहसाखीको अर्थ प्रसिद्धै है १५१ मूढ़कर्मी कहे मूढ़ है औ कर्मी है कर्म्मत्यागको उपायनहीं करैहै ऐसो जोहै मनुष्य सो नख शिखलौं अज्ञान रूपी पाखरपहिरेहै औ जो मूढ़कर्मीपाठहोय तौ बानरकीनाईं बांध्यो है हठ नहीं छांड़ै १५२ ॥

सेमरकेरासूवनासिहुलेबैठाजाय ॥
चोंचचहोरैशिरधुनै यहवाहीकोभाय १५३

सेमरकासुवा जो सिहुले कहेमदारेमेंबैठिकैचोंच मारयोजव धुवा निकरयोतवशिर धुनैहै याकहैहै किया वहीको भाईहैअर्थात् जीव संसार सुख लागिरह्यो जब कुछ न पायो तब ब्रह्म सुख में

लग्यो कि मोको ब्रह्मानन्द होयगोसो वहौ विचार करतजवअठईं भूमिकामें गयो तव अनुभवौ न रहिगयो तवजान्यो कि जैसे संसारीसुख मिथ्याहै तैसे ब्रह्मसुखौ मिथ्याहै कुछुनहीं रहिजायहै अथवा घरछोड़िकै वैरागीभये महन्तीलिये मठवाँधेचेलाभये सो घरमें एकैमेहरीरही एकैवेटारहो इहां वहुत चेली भईं वहुतचेला भये वहुत घरभये न गृहस्थीमें वन्यो न वैराग्यमें वन्योतामें प्रमाण चौरासी अङ्ककीसाखी ॥ घरहुतजिनितौ अस्थलवाँधिनि अस्थल तजिनितौफेरी। फेरी तजिनितौ चेलामूड़िनियहि विधि माया घेरी १५३ ॥

सेमरसुवनावेगितजु घनीविगुर्चनपाँख ॥
ऐसासेमरजोसेवे हृदयानाहींआँख १५४

हेसुवाजीव संसाररूपसेमर को तैंछोड़िदे तैंतोपक्षीहै ते रेमेरे पास आवनको पक्षहै कहे तेरे स्वरूपमें मेरेपास आवनको ज्ञान वनोहै जो संसारी ह्वै जायगो मायाब्रह्म में लगैगो तौ मेरे पास आवनेको तेरे पखना विगुर्चन ह्वैजायंगे कहेघुवा ऐसोचोथिडारेंगे नाम नाना ज्ञानमें लगाय देइँगे वा ज्ञान न रहिजायगो सो ऐसे संसाररूपी सेमरकोसेवैहै जाके हृदयमें आंखी नहीं हैं मेरो ज्ञान नहीं है १५४ ॥

सेमरसुवनासेइये दुइढेढीकीआश ॥
ढेढीफुटीचटाकदै सुवनाचलेनिराश १५५

हे सुवनाजीव संसार सेमरकीदुइ ढेढीकी आशसेवैहैसेमरकी दुइढेढी कौनिहैं एकफूलकीहै एकफलकीहै औयासंसारमें एकतौ संसारी सुखहै एक परलोक सुखहै सो सेमरमें रसकी चाहकियो जव चोंचचहोरयो तवढेढी चटाकदै फूटिगई घुवा निकस्योसुवा निराशह्वैकैचलेगये रसकी प्राप्ति न भई तैसे तैं संसारमें परयो जनन मरण छुटावे के वास्ते धोखा ब्रह्ममें लाग्यो परन्तु जनन मरण न छूट्यो १५५ ॥

लोगभरोसेकौनके जगबैठिरहेअरगाय ॥
ऐसेजियरैयमलुटै जसमेढ़ैलुटैकसाय १५६॥

अरेलोगौ यहि संसार में कौनके भरोसे अरगायकै कहेचुपाय कै बैठिरहेहौ ज्ञानकरिकै कि महीब्रह्महौं अथवा या मानिकै कि महीं जीवका मालिकहौं अथवा योग करिकै कुंडलिनी के साथ प्राणको चढ़ायकै ज्योतिमें मिलायकै औ चुपह्वैकै बैठि रहे सो हम पूछैहैं कि तुम कौनके भरोसे बैठिरहे साहबकोतौ जानिबोई न कियो जब उत्पत्ति भई तब ब्रह्मते माया तुमको धरिलैआई औ पुण्य क्षीणभई तबस्वर्गादिकनते उतरि आये औ जबसमाधि छूटी तब जीव उतरि आयो पुनि जसके तसह्वैगये औ आपनेहीं को मालिक मान्यो तौ जबशरीर छूट्यो तबयम खूबलूट्योजैसे मेढ़ाको कसाई लूटै हैं तैसे बिनारक्षक कौन बचावै १५६ ॥

समुझिबूझिजड़ह्वैरहे बलतजिनिर्बलहोय ॥
कहकबीरतासंतको पलानपकरैकोय १५७

सर्व्वत्रसाहबको समुझिकै औ साहबको रूपबूझिकैकियाभाँति को हे जड़वत् ह्वै रहे कि जो करैहै सो साहब करै है ऐसेसाहबको जो जानैहै ताके बहुत सामर्थ्य ह्वै जायहै जो चाहै सो करिलेइ तौने आपने बलको छपायकै आपको निर्ब्बलै मानैहै किहमकहा करैहैं जौन कामकरैहै तौन साहिबै करै है वे समर्थ हैं सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि ऐसे संतको पला कोई नहीं पकरैहै कहे बाधा कोई नहीं करिसकैहै सब साहिबै करैहैं तामें प्रमाण कबीरजीके ज्ञान संबोधनकी साखी ॥ पापपुण्यफलदोयसबैसमर्पैसमरथै ॥ निजमन शक्तिनहोय मनसावाचाकर्मणा १५७ ॥

हीराबहीसराहिये सहैघननकीचोट ॥
कपटकुरंगीमानवापरखतनिकसाखोट १५८

हीरा जोहै साहबका ज्ञान सोई सराहा जायहै जो घन चोट

सहैकहे नानामत करिकै कोई वादखिण्डन न करिसकै औ मानुष जे कपटकुरंगी कहे हरिणी ह्वैरहे हैं अर्थात् चंचलह्वै रहेहैं सो जब घनकी चोटलगी कहे गुरुवालोग आपनेमत समुझायो तब हृदय फूटिगयो साहबको ज्ञानतो जानो न रहै तामें प्रमाण कबीरजी की परिचयकी साखी ॥ झूंठजवाहिरको वनिज तबलगि परिहै पूर । जबलगिमिलैनपारखी घनेचढ़ानहिंकूर ॥ सोवा मायाके रंगवारे मानुष परखतमें खोटही निकसैहैं १५८ ॥

हरिहीराजनजौंहरीसबनपसारीहाट ॥
जबआवैजनजौंहरीतबहीरौंकीसाट १५९

हरि जेहैं तेई हीराहैं औ जन जेहैं तेई जौंहरी हैं कहे जाननवारे हैं सो सब जीव हाट लगावन लगे कहे साहबको जानन लगे ज्ञान कथनलगे गुरुवालोग आपने मतमें खैंचिगये सो जब साहबके जाननवारे साहबके जनाय देनवारे साहब जन जौंहरी आये तब सबके मत खण्डन करि हरि हीराके समीप कनी जे जीव तिनको पहुँचाय देतभये अर्थात् जीवनको या जनायदियो कि तुम साहबकेहौ साहब में लगौ या हीरौंके साटको अर्थ है और मतनमेंपरे जनन मरण न छूटैगो ये कनफुक्का संसारहीको लैजायगो तामें प्रमाण ॥ कनफुक्कागुरुहद्दका बेहदका गुरुऔर । बेहदकागुरुजोमिलै तबपावैनिजठौर १५९ ॥

हीरातहांनखोलियेजहँकुँजरोंकीहाट ॥
सहजैगांठीबाँधिकैलगीआपनीबाट १६०

जहाँ कुँजरों की हाट है तहाँ हीरा न खोलिये काहेते कि वे भाँटा खीरा के बेंचनवारे हीराकोभेद कहाजानैं अर्थात् जहाँ आपने आपने मतमें काउ काउ करिरहेहैं तहाँ साहबके ज्ञानरूपी हीरा न खोलिये साहबमें मनलगाये एकान्त बैठिरहिये यही आपने बाटमें लगेरहिये १६० ॥

हीरापरा वजारमेंरहाछारलपटाय ॥
वहुतकमूरखचलिगयेपारिखलियाउठाय १६१

हीरा जो है रामनाम सो वजार में पराहै कहे सब संसार के लोग कहेहैं छार में लपटाय रह्यो है अर्थात् नानामत रामनाम हीते निकसेहैं औ सब मत रामनामही ते सिद्धहोय हैं यानहीं जानैं ऐसे जे मूरखते संसार वजारमें चलिगये न लीन्हे सोजाते साहवको ज्ञान होय है ऐसो रामनाम हीरा ताके जे पारखीरहैं ते राम नामको जानिकै साहबको पहिंचानिकै मुक्त ह्वैगये सो येही रामनामको लैकै सब साहबको जान्योहै तामें प्रमाण ॥ रामकोनामचौमुक्तिकामूलहैनिगमनिचोररसतत्त्वछानी । रामकोनामषटशास्त्रमेंमथलिया रामषटदर्शमेंहैकहानी । रामकोनाम लैध्यानब्रह्माकिया ररंकारैधुनिसुनीमानी । कहैंकब्बीरअवगाह लीलावड़ी रामकोनामनिर्बाणबानी । रामकोनामलैविष्णुपूजा करैंरामकोनामशिवयोगध्यानी । रामकोनामलैसिद्धसाधकजियो जियोसनकादिनारदहुज्ञानी । रामकोनामलैरामदीक्षालियागुरू वाशिष्ठमिलिमन्त्रदानी । रामकोनामलैकृष्णगीताकथी पथीपारथनहिंमर्मजानी १६१ ॥

हीराकीओवरीनहींमलयागिरिनहिंपाँति ॥
सिंहनकेलेहड़ानहींसाधुनचलैंजमाति १६२

सबको मालिक साहब एकहीहै औ साहब के जाननवारेबिरलेसाधुहैं जे रामनामको जपैहैं वे सब साधुनकेशिरमौरहैं तामें प्रमाण ॥ साधुहमारे सबखड़ अपनी अपनीठौर । शब्दबिबेकी पारखी सोमाथेकोमौर ॥ तामें या दृष्टान्तहै जैसे मलयागिरि चन्दन एकहै सिंहएकहै तैसे हीराजो राम नामहै तेहिते साहब को ज्ञान होयहै सो एकही है औ ताके जाननवारे साधु एकहीहैं वे जमाति में नहीं चलै हैं ऐसे तो सब साधुही कहावै हैं औ रामनामवस्तुखोयकै औरमेंलागैहैं तेगँवारहैंतामेंप्रमाण॥वहहीरा

मति जानिये जेहिलादै वनजार ॥ यहहीराहै मुक्तिको खोयेजात गँवार १६२ ॥

अपनेअपनेशीशकीसबनलीनहैमानि ॥
हरिकीबातदुरंतरीपरीनकाहूजानि १६३

जौनजाकोमतनीकलाग्यो सोतौनेनमतको शीशचढ़ाय मानि लीन्ह्यो हरिकी जोदुरंतरी वातहै सवते दूरकहेपरे सोकाहू को न जानिपरी कि सवके रक्षक साहवै हैं १६३ ॥

हाड़जरैंजसलाकड़ीतनवाजरैजसघास ॥
कबिराजरैसोरामरसजसकोठीजरैकपास १६४

कबीर जेजीवहैं तिनके रामरसजोहै रामभक्ति सोकैसे उनके अंतः करणमें जरैहै जैसे कोठीमें कपास भितरैजरै है याहीते उनके हाड़बार लकड़ी घासकी नाईं जरै हैं १६४ ॥

घाटभुलानाबाटबिनभेषभुलानाकानि ॥
जाकीमाड़ीजगतमासोनपरापहिचानि १६५

घाटकहे सत्संगबाटजोहै विचारताकेबिना भूलिगयो अर्थात् साहबको तौ जान्यो न अपनेहीकोब्रह्म माननलग्यो विचारभूलि गयो सत्संग काहेको करै आपने गुरुवनकी कानिमानि भ्रमबारे मत न छाड़तभये भेषवारे साधु सवभुलायगये सोजाकीमाड़ीकहे माया जगत्में पूरिरही ऐसेजोसाहवसो न पहिचानिपर्योमाड़ी मायामें भूलिगये १६५ ॥

मूरुखसोंक्याबोलियेशठसोंकहावसाय ॥
पाहनमेंक्यामानियेचोखातीरनशाय १६६

मूरुखकौन कहावैहै कि साधुनके समुझायेते सूझै परंतु बूझै नहीं है तासों क्याबोलिये शठकौनकहावैहै कि चाहे नीकोकोऊ बतावै परंतुछांड़ै न हठकीन्हे वाहीमें लागरहै जौन गुरुवा लोग

पहिले वतायनिहै चाहै कूपौमा गिरिपरै पैछांडै न सोऐसेलोग नते कहा वसाय उनको ज्ञानदीन्हे ज्ञानौ खराव हायगो पाहन के मारे तीरही टूटैगो शठ मूरुख नहीं समुझै तामें प्रमाण ॥ पानी कोपाषाण भीजैतौ वेधै नहीं ॥ त्यों मूरुखको ज्ञान सूझै तौ वूझै नहीं १६६ ॥

जैसेगोलीगुमजकी नीचपरेढुरिजाय ॥
ऐसेहृदयामूर्खकेशब्दनहींठहराय १६७

जैसे गुम्मजमें जो गोलीमारिये तौ ऊँचेपरे ढरकिजायहै ऐसे मूरुखके हृदयमेंशब्द रामनाम केतौ उपदेशकरिये परंतु ठहराय नहीं है एकघरभिर तोज्ञानरह्यो फिरि ज्योंकोत्योंह्वैगयो १६७ ॥

ऊपरकीदोऊगईं हियकीगईहेराय ॥
कहकवीरचारिउगईंतासोंकहावसाय १६८

ऊपरकी आँखिनते यादेखै हैं कि साहबकोभाजिके हनुमानादिक अजर अमरह्वैगये जिनकी पूजा देवताकरै हैं सब सिद्धिको प्राप्तहैं कालशक्र विष्णु सवते अधिकहैं औहियेकी आँखिनतेदखै हैं कि हाथिनको पति ऐरावतहै पक्षिनको पति गरुड़है भक्तनमें महादेवपतिहैं मनुष्यनमें भूपतिहै ऐसे सब ईश्वरन के मालिक श्रीरामचन्द्रहैं तिनको नहीं भजन करैहै सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जाकीभीतरौबाहरकी आँखिफूटिगई तासोंकहावसाय१६८॥

केतेदिनऐसेगये अनरूचेकोनेह ॥
वोयेउसरनऊपजैजोघनवरसैंमेह १६९

जैसे ऊसरमें बोवै घन वहुतौ वरसै परंतु जामै नहीं है तैसे निराकार धोखामें लग्यो फलकछू न हाथलग्यो वातो कुछ वस्तु हीनहींहै अनरुचेकोनेहहै अर्थात् यावड़ी प्रीतिकियो वातोप्रीति ही नहीं करै १६९ ॥

मैंरोऊंसवजगतकोमोकोरोवैनकोइ ॥
मोकोरोवैसोजनाजोशब्दविवेकीहोइ १७०

साहव कहैहैं कि मैं सव जगतपर दयाकरिकै रोऊहौं कि मेरो अंश जीवमोकोभूलिगयो तातें जगतमें जननमरणरूपी दुःखसहैहै औ जीव मोको नहींरोवैहै कि हम अपने मालिकको भूलिगये नाना मालिकमानि नानादुःखपावैहैं सो मोको सोजनरोवैहै जो शब्द जो रामनाम ताको विवेकीहोय कि रकारके समीप मकार शोभितहोइ है मैं साहवकोहौं १७० ॥

साहवसाहवसवकहैंमोहिंअँदेशाऔर ॥
साहवसोंपरिचयनहीं वैठेगाकेहिठौर १७१

कवीरजी कहैहैं कि साहव साहव तो सवजीव कहैहैं अर्थात् आपने आपने इष्टदेवताको सवतेपरेकहैहैं कि येई सवकेमालिकहैं सो येतो सव एकएक मालिक वनायेहैं पै मोको या और अन्देशा है कि जौन रामनाम साहबकोवतावैहै तौने रामनामको जानि साहवते परिचय तो करिवैनकिये ये कौने ठौरवैठैंगे काके पास जायँगे अर्थात् जनन मरण न छूटैगो १७१ ॥

जिवविनजिववाचैनहीं जिवकाजिवअधार ॥
जीवदयाकरिपालियेपण्डितकरहुविचार १७२

या जीव विनाजीवकहे सतगुरु विना नहीं वाचैहै जीवको जीव जो सतगुरु है सोई आधारहै सो जीवपर दयाकरि अर्थात् सतगुरुकेशरणह्वै जीवउद्धारकरो हेपण्डित तुम विचारकरदेखो तो विनासतगुरु संसारपार नहोउगे १७२ ॥

हमतोसवहीकीकहीमोकोकोईनजान ॥
तवभीअच्छाअच्छाअवभीयुगयुगहोहुनआन १७३

साहवकहै हैं कि हमतो सवके अच्छेकी कही जाते कालते

बचिजायँ परंतु मोको कोई न जानतभयो सो तब भी अच्छाहै अबभीअच्छाहै काहेते कि युगयुगमें मैं आननहीं होउँहौं वहीवही बनोहौं जो अबहूं मोकोजानै मैं कालते बचायलेउँ तामेंप्रमाण गोसाईंजीको ॥ दोहा ॥ बिगरी जन्मअनेककीसुधरैअबहीं आज। होयरामकोरामजपि तुलसीतजिकुसमाज ॥ औकबीरजीनेकह्यो है ॥ कहकबीर हमयुगयुगकही। जबहींचेतोतबहींसही १७३ ॥

प्रकटकहौंतौमारियापरदालखैनकोइ ॥
सहनाछपापयारतरकोकहिबैरीहोइ १७४

श्रीकवीरजीकहैहैं कि जो मैं प्रकट कहौहौं कि तुम साहबके हौ और के नहीं हौ तौ मारन धावै है अर्थात् वादविवादकरै है औ जो परदे सों कहौहौं तौ कोई समुझतै नहीं है काहेते नहीं समुझैहै कि सहना जोहै मन जौन संसारको रचिलियोहै सो शरीर जो पयार तामें छपा है साहबको नहीं जानन देइ है पयार शरीर याते कह्यो कि सारजो साहबको ज्ञान सो निकसि गयोहै सो याकोकाहिकै वैरीहोइ ब्रह्मवादिनते औसहनावोकहावैहै जो सरकारते पयादा आवैहै सो ब्रह्म माया के साथ या मन आयो है साहबकाज्ञान छिदेहै साहबको जाननहीं देइहै या मनहीं सबसंसार रचिलियोहै तामें प्रमाण कबीरजीकोपद॥संतो यामनहैबड़जालिम। जासोंमनसोंकामपरोहैतिसहीहैहैमालुम॥ मनकारणकी इनकी छाया तेहिछायामेंअटके । निरगुणसरगुण मनकीवाजी खरेसयानेभटके ॥ मनहीं चौदहलोकबनाया पाँच तत्त्वगुणकीन्हे । तीनिलोकजीवनवशकीन्हे परेनकाहूचीन्हे ॥ जोकोउकहैहममनकोमाराजाकेरूपनरेखा । छिनछिनमेंकेतनो रँगल्यावै जेसपनेहुनहिंदेखा॥ रासातलयकईशब्रह्मण्डासबपर अदलचलावैं । पटरसमें भोगमिनराजा सोकैसेकैपावै ॥ सबके ऊपरनामनिरक्षरतहँलैमनकोराखै । तबमनकीगतिजानिपरैयह सत्यकबिरमुखभाखै १७४ ॥

देशविदेशनहौंफिरा मनहींभरासुकाल ॥
जाकोढूंढ़तहौंफिरौं ताकोपरादुकाल १७५

देशकहे संसार विदेशकहे ब्रह्म तौने में फिराहै सो ये दूनों मायाको सुकालभराहै अर्थात् वहब्रह्म मनहींको अनुभव है औ संसार मनहीं को कल्पना है जौन वस्तु का में ढूंढ़त फिरौं हौं जो मन बचन के परे है ताको दुकालपरयो वा न ब्रह्म में है न संसार में है १७५ ॥

कलिखोटाजगआंधरा शब्दनमानैकोइ ॥
जाहिकहौंहितआपना सोउठिवैरीहोइ १७६

जगत् तो आँधराहै ज्ञानदृष्टि याके नहीं है कुछु समुझै नहीं है तौनेमें या कलि खोटा प्राप्तभयो सो जाको शब्द जो राम नाम मैं बताऊँहौं सोई वैरी होइहै कहे शास्त्रार्थ करै है मानै नहीं है १७६ ॥

मसिकागदतोछुयोनाहिं कलमगहीनाहिंहाथ ॥
चारिहुयुगमाहात्म्यजेहि करिकैजनायोनाथ १७७

गुरुमुख ॥ चारिउ युगमें है माहात्म्य जिनको ऐसे जे नाथ रघुनाथ हैं तिनको कबीरजी सबकोजनायो न कलमगही न कागद लियो न मसिलियो मुखहीते कह्यो येतो सरलकरिकैकह्यो कि जामें एकौसाधन न करन परै सो साहबकहैहैं कि जो मोको जानिलेइ तौ संसारते तरिजाय जो कहो कबीर जी मुखही ते कह्यो है ग्रन्थ कैसेभये हैं तौ कबीर जी कहते गये हैं शिष्यलोग लिखतेगये हैं १७७ ॥

फहमैआगेफहमैपाछे फहमैदाहिनेडेरी ॥
फहमैपरजोफहमकरतहै सोईफहमहैमेरी १७८

गुरुमुख ॥ फहमजोहै ज्ञानस्वरूप ब्रह्मसोई आगेहै सोईपाछे है सोई दहिनेहै सोई डेरी कहे बांयेंहै अर्थात् सर्व्वत्रपूर्ण है सो यह जो फहम है ज्ञानस्वरूप ब्रह्म तौनेके ऊपर ब्रह्म याहूके परे साहबहै फहमकरैहै कि वह ज्ञानरूप उनहींको प्रकाश है याहूके परे साहब है तौन फहम मेरीहै कहे वहज्ञान मेरोहै १७८ ॥

हद्दचलैसोमानवा बेहदचलैसोसाध ॥
हदबेहददोनोंतजै ताकोमताअगाध १७९

हद जो चलैहै सो मानवाहै कहे उनको मान कहे प्रमाण है अर्थात् जो जौने देवता की उपासना कियो सो तौने देवताके लोकगये वाको वहैभर प्रमाण है वतनैज्ञान होइ है औ जे बेहद चलै हैं ब्रह्ममें लगैहैं ते साधुहैं जो ब्रह्मको साधन करिकै सिद्धि करिलेइ सो साधु सो हद जोहै सगुणसंसार औ बेहदजोहै निर्गुण ब्रह्म ये दोनों को जे तजिकै निर्गुण सगुणकेपरे परमपुरुष श्री रामचन्द्र के सेवक ह्वैरहे हैं ऐसे जे रामोपासक हैं तिनहीं के मत अगाध हैं १७९ ॥

समुझेकीगतिएकहै जिनसमुझासबठौर ॥
कहकबीरजेबीचके बलकहिऔरैऔर १८०

जेरामोपासक निर्गुण सगुणको समुझिकै ताहूतेपरे साहब कोजान्यो तिनकी गति एकहै कहे एक साहबहीको सबठौर निर्गुण सगुणमें समुझैहैं कबीरजी कहे हैं कि जे बीचकेहैं ते और और उपासना करै हैं और और ज्ञानकरैहैं औ आपने आपनेदेव-तनमें बलकै हैं कि येई सबके मालिक हैं १८० ॥

राहबिचारीकाकरै पथिकनचलैबिचारि ॥
आपनमारगछोड़िकै फिराहिंउजारिउजारि १८१

पथिक जो विचारिकै न चलै तौ राह बिचारी कहाकरै वेद पुराण शास्त्र येई सवराहै हैं तिनको तात्पर्य्य यही है यहजीव साहबको अंशहै उनहीं के जाने संसारते छूटैहै सो रामनामको जपिकै साहबको ह्वैरहै यहजोहै आपनो मारग तौनेको छोड़िकै उजारि उजारिकहे कोई ब्रह्ममें कोई ईश्वरमें कोई नानादेवतन की उपासनामें फिरैहैं सो उनके जननमरण रूप कण्टकलागि-बोईचाहैं नरकरूप खोह गिरैचाहै औ जीवसाहबको अंशहै तामें प्रमाण॥ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः ॥ औ ब्रह्ममाया ईश्वरजगत् इनको बिचारकरै तौ भ्रममात्रहै कछू इनते जीवको उद्धारनहींहोयहै तामें प्रमाण॥ ब्रह्मजीवईश्वरजगतईसबभ्रन-मिलसैन । निरबाहेठहरैनहीं भाषतभ्राई बैन १८१ ॥

मूआहैमरिजाहुगे बिनशरथोथेभाल ॥
परेकल्हारैवृक्षतर आजुमरैकीकाल १८२

अरेजीवो तुम केतनौबार मरतआयेहौ औ मरिजाउगे बिना शर काहेते कि तुम्हारे भालेमें थोथेलिखे हैं बिनाफलके बाणसों तुम यहि संसार वृक्षतरे जो बोलते बतातेहौ सो परे कल्हारते हौ आजु मरिजाउ कि काल्हि मरिजाउ वादाकछूनहींहै १८२ ॥

बोलीहमारीपूर्वकीहमैंलखानाहिंकोइ ॥
हमकोतोसोईलखै घरपूरुबकाहोइ १८३

हमारी जो पूर्बकहे पहिलेकी बोली जो साहबकोरूप उप-देशकरिआये जीवको स्वरूप वतायआये सो कोईनहीं लखैहै न हमको लखैहै सो हमारीवाणीको तो सोईलखैहै जो कोई पूरुब को कहे शुद्धजीव ह्वैजाय जस पूर्वही रह्योहै १८३ ॥

जेहिचलतेरवंदेपरा धरतीहोइविहार ॥
सोइसावजघामेंजरै पण्डितकरोविचार १८४

जेहिजीवके चलतकहे निकसतमें यहशरीर रवदेकहे धूरिमें मिलिजायहै पुनि वहैजीव जो कहूं अवतरैहै तब यहै शरीरको पाइकै धरतीमें विहारकरै है औ वहै साउज जोहै जीव सो शरीरनकोपायके आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक जे तीनों तापहैं तेईवास हैं तिनहींमेंजरैहै सो हेपण्डित तुमविचारकरिकै असारको त्यागकरायकै सार जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बताओ तौ तीनों तापते जीव छूटै १८४ ॥

पायँनपुहुमीनापते दरियाकरतेफाल ॥
हाथनपरबततौलते तेहिधरिखायोकाल १८५

जे हाथनते पर्वत तौलतेरहे औ पायँनते पुहुमी नापते रहे औ समुद्रको एकफाल करतेरहे हिरण्याक्षादिक तिनहूँको काल धरिखायो १८५ ॥

नवमनदूधबटोरिकै टिपकाकियाविनाश ॥
दूधफाटिकांजीहुआ भयाघीवकानाश १८६

नवमन कहे नवीन नवीन जामें होते आये मन ऐसो कै तौ देहधरे अव यहदूध मनुष्यशरीर पायो सो कांजीका टिपका जो धोखा ब्रह्ममें लागिबो ताते दूध जोमनुष्य शरीर सो कांजीभया कहेपशुतुल्यभयाघीवजोसाहबकोज्ञानरहैताकोनाशह्वैगयो१८६ ॥

केत्योमनावैंपायँपरि केत्योमनावैंरोइ ॥
हिन्दूपूजेंदेवता तुरकनकाहुकहोइ १८७

श्रीकबीरजी कहै हैं कि केतन्यो हिंदूते देवतन के पायँ परि मनावै हैं कि हमारी मुक्ति ह्वैजाय औ नानादेवतनको पूजतेहैं औ केतन्यो जे मुसल्मान तिनकोहाल आवती है औ साहबके इश्कमें रोवते हैं औ मानते हैं कि साहब बेचून बेचिगून वेसुवा

वेनिमून निराकारहैं सो जे देवतनकोमनावतेहौ पायँपरिकै ति-
नहींकी मुक्ति नहींभई तिहारी मुक्ति कैसे होयगी देवतातो सब
सगुणहैं विष्णु सतोगुणी के ब्रह्मा रजोगुणी के रुद्र तमोगुणीके
अभिमानी हैं मुक्त नहीं भये तौ तुमको कैसे मुक्तकरेंगे सो जौन
तीनों देवतनको अधिकार दियेहैं सबको मालिक श्रीरामचंद्र ति-
नको भजनकरु तब मुक्ति पावैगो औ हेमुसल्मानो तुमनिराकार
तौ मानौहौ इश्ककाकेपर करौहौ सो जो साहबकोरूप न मानौगे
तौ इश्क तुम्हारा झूँठा ठहरि जायगा ताते बिचारौ तौ साहब
रूप न होता तौ मूसा पैगम्बर को छिगुनी कैसे देखावता ताते
उसकेरूपहैं परंतु मायाकृत पञ्चभौतिकनहीं हैं दिव्यरूप हैं याते
निराकार कहैहैं सगुण निर्गुणके परे जो साहब श्रीरामचंद्र ताको
वन्दाहोउ आपनेको जोमालिक मनौगे तौ बड़ीमार सहौगे तामें
प्रमाण ॥ स्वामीतोकोईनहीं स्वामीसिरजनहार । स्वामीह्वै जो
वैठियेयनीपरैगीमार १ औ साहब निर्गुण सगुणके परे हैं तामेंप्र-
माण ॥ सर्गुणकीसेवाकरौ निर्गुणकाकरुज्ञान। निर्गुणसर्गुणकेपरे
तहैं हमारान्यान १८७ ॥

मानुषतेरागुणबड़ा मांसनआवैकाज ॥
हाड़नहोतेआभरण त्वचानबाजनबाज १८८

हेमानुष जो तैं देहको अभिमान करैहै सो नाहक करैहै यह
देह तेरी कौनेकामकीहै तेरोमांसकामनहींआवै कोईनहींखायहै
हाड़नके आभरण नहीं होते हैं त्वचाके वाजन नहीं वाजते हैं
सो तेरे एकगुण है या देहते साहब मिलते हैं सो मिलिबेकी
यतनकरु १८८ ॥

जौलगिढोलातवलगिवोला तौलगिधनव्यवहार ॥
ढोलाफूटाधनगया कोईनझाँकैद्वार १८९
सबकीउतपतिधरणिमें सबजीवनप्रतिपाल ॥

धरतीनजानैआपगुण ऐसागुरूदयाल १९०

एकको प्रकटैहैं एकको कहै हैं दुःखसुख नीकनागा सबकीउ-त्पत्ति धरतीहीते है कहे शरीरहीते है जौनेज्ञानते सब जीवनको प्रतिपाल है ऐसेज्ञानको तूजान अपने गुणको धरती जो शरीर ताको न मानु तेपांचोशरीर ते वाहिरेहैं ऐसे गुरु दयालहैं साहब छुड़ावन वारे ताको जानु तैं अंशहै साहब अंशीहैं १८९।१९० ॥

धरतीजानतआपगुण तौकधीनहोतअडोल ॥
तिलतिलहोतोगारुवा क्वैरहतठिकौकीमोल १९१

धरतीजो शरीर ताको धरैया जोजीव धरती सो आपनोगुण नहीं जानत कि मोमें साहबकीप्राप्तिहोय वो यहीगुणहै उत्पत्ति जोकरौहौ सो साहबकी शक्तिते मेरीशक्ति नहीं है तौकधीडोलन होतो अर्थात् मनादिकनको उत्पत्ति करि संसारी न होतो शुद्धै बनोरहतो धरती जीव आपनो गुण कहा जानै जो आपनो गुण साहबको प्राप्तहोइबोजानतो तौ तिलतिलमें गरुई होत जातो कहे तिलतिल वहज्ञान बाढ़तो औठीकजो है शुद्धसाहबकेजनैया जी-वात्मा ताके मोलह्वैजातो कहेयही अमरह्वैजातो जेसाहबसों मेल किये रहैहैं शरीरहूसांचह्वैजायहै तामेंप्रमाण ॥ जाकीसांचीसुरति हैसांचीसाखीखेल ॥ आठपहरचौंसठघरीहैसाहबसोंमेल १९१ ॥

जहियाकिरतिमनाहता धरतीहतानतीर ॥
उतपतिपरलयनाहती तबकी कहीकबीर १९२

कबीरजी कहैहैं कि जब येरहवै नहींभये तबकीकहैहैं १९२ ॥

जहांबोलअक्षरनाहिंआया।जहँअक्षरतहँमनहिंदृढ़ाया ॥
बोलअबोलएकहैसोई।जिनयालखासोबिरलाहोई १९३

जहांबोल जो शब्दभया तहां अक्षर आपहीजायहै जब अक्षर

भया तब मन दृढावहीकरैहै कहे मनकी उत्पत्तिहोतहीहै सो तब तो आकाशही नहींरह्यो शब्दकहांते निकसा सो प्रथम जो वाणी रामनाम लैकै उचरी सो अबोलहै कहे अनिर्वचनीयहै सोईकहे तौनै जोहै रामनाम सोईबोलहै कहे वहीते सब अक्षर निकसे हैं सोवही अबोलहै कहे अनिर्वचनीयहै सो यहबात कोइ विरला जानैहै काहेते कि जबकुछु नहींरहै तब एकसाहबही रहैहैं तिनहीं ते सबकी उत्पत्ति भई है वहतो सबको मूलहै वाको कोई कैसे कहिसकै जबयहसाहबको ह्वैजाय और आशा छोड़देइ तबसाहबही प्रसन्नह्वैकै सबबनायलेइहैं तामें प्रमाणसाहबकीउक्ति ॥ जानै सोजोमहींजनाऊं। बांहपकरिलोकैपहुंचाऊं ॥ यहैप्रतीतिमानुतैं मेरी। यहसुयुक्तिकाहूनहिंहेरी ॥ सत्यकहौं तोसोंमैंटेरी। भवसागरकी टूटैबेरी १९३ ॥

जौलौंताराजगमगै तौलौंउगैनसूर ॥
तौलौंजियजगकर्मबश जौलौंज्ञाननपूर १९४

जौलौं सूर्यनहीं उगैहै तौलगि तारा जगमगायहै ऐसै जौलौं साहबको पूरोज्ञान नहीं होयहै तौलौं जीव नानाकर्मनके वशह्वै नानामतन में लागै है जबजीव साहबको जान्यो औ साहबको ह्वैगयो तब साहबै अपनो ज्ञानदेयहैं कर्म छूटिजायहै १९४ ॥

नामनजानैग्रामको भूलामारगजाय ॥
कालगड़ैगाकांटवा अगमनकसनखोराय १९५

अरे साहब के तो नगरको नामही नहीं जानै है औरे मतन मारगमें काहे भूलाजायहै यहकालरूप कांटा तेरे गड़ैगा काल तोको मारिडारैगा तेहिते अगमनकहे आगे वहखोरि कहे राहमें आवै जेहिते कालते बचिजाय १९५ ॥

संगतिकीजैसाधुकी हरैऔरकीव्याधि ॥

औ़ौसंगतिकूरकी आठौपहरउपाधि १९६

जो साधुकी संगति करिये जे साहबको जनाय देनवारे हैं तौ साहबको जानिकै औरकी व्याधिहरै औ जो क्रूरजे असाधु तिन की संगतिकरै तौ आठौपहर उपाधिही लगीरहैहै १९६॥

जैसीलागीऔरकी तैसोनिबहैथोर॥
कौड़ीकौड़ीजोरिकै पूज्योलक्षकरोर १९७

और ते जो थोरहूथोर साहबमेंलगै भक्तिकरै औ तैसै छोरलों निबहिजाय है तौ जो थोरऊ थोर साहबमें लगै औ साहबकीभक्तिकरै तौ जैसे कौड़ी कौड़ीजोरे केतो करोरि ह्वैजायहै ऐसेवाकी भक्तिहूह्वैजाय है अनेक जन्मके संसिद्धते मुक्तह्वैजाय है १९७॥

आजुकाल्हिदिनएकमें अस्थिरनहींशरीर॥
केतेदिनलोंराखिहो काचेबासननीर १९८

आजु काल्हि यहि कलिकालमें एकौदिनमें शरीर स्थिरनहीं है केतनीबेरथों शरीर छूटिजाय आगे तो प्रमाण रह्योहै कि येती आयुर्दाय मनुष्यकीहै अबतो कछू प्रमाणै नहींहै केतीबेर शरीर छूटिजाय तेहिते साहबको भजन करो कच्चेबासन शरीरमें केते दिन नीरराखौगे १९८॥

करुबहियांबलआपनी छांडुबिरानीआस॥
जाकेआंगननदीहै सोकसमरैपियास १९९

अरे औरे औरे मतनमें जोलगैहै तिनमें न लागु बिरानीआशा छोड़िदे तैं काहूके छुड़ाये न छूटैगो आपनी बहियांको बलकरु तेरे उद्धारकरिबेको तेरी बहियां श्रीरामचन्द्रहैं सो आगे कहिआयेहैं कि मोटे की बाँहले औ जाके आँगन में नदिया है सो का

पिआसन मरैहै तेरा तो साहब ऐसो रक्षकबनोंहै तैं काहे साहब को भूलि और और मतनमें लगैहै १९९ ॥

बहुबन्धनतेबांधिया एकविचाराजीव ॥
काबलछूटैआपने जोनछुड़ावेपीव २००

कबीरजीकहैहैं कि ये विचारेजीव तेबहुतबंधनते बँध्योहै बहुत गरीबहैं सो जो तैं आपने विचारते छूटा चाहै तौ तैं न छूटैगो बिना श्रीरामचन्द्रके छोड़ाये वोई तेरे पीउहैं उनकी या प्रतिज्ञा है कि जो एकहूबार मोको जीव गोहरावै तौमैं वाको छुड़ायलेउ हौं ताते तैं साहब की शरण जाय जाते संसारते छूटिजाय जे साहब की शरणजायहैं ते कालहूके माथ पै लातदै चले जायहैं तामेंप्रमाण कबीरजीको॥ कालकेमाथेपगधरी सतगुरुकेउपदेश॥ साहब अङ्कपसारिकै लैगेअपनेदेश १ गगनमँडल दृगमहलमें द्वै घाटीकेईश॥ नामलेतहंसाचले कालनबाचैशीश २ औ जे राम नाम नहीं लेइहैं ते नहीं मुक्तहोयहैं तामें प्रमाण ॥ यह औतार चेतोनहीं पशुज्यों पालीदेह ॥ रामनाम जान्योनहीं अन्तपरा मुख खेह २०० ॥

जिवमतिमारहुआपुरा सबकाएकैप्राण ॥
हत्याकबहुँ नछूटिहै कोटिनसुनैपुराण २०१
जीवघातना कीजिये बहुरिलेतवहकान ॥
तीरथगयेनबाचिहौ कोटिहिरादेदान २०२
तीरथगयेतुतीनजन चितचञ्चलमनचोर ॥
एकौपापनकाटिया लादेदशमनऔर २०३
तीरथगयेतेबहिमुये जूड़ेपानीन्हाय ॥
कहकबीरसन्तौसुनौ राक्षसह्वैपछिताय २०४

याकेअर्थ स्पष्ट ई हैं २०१।२०२।२०३ ॥ तीर्थ में जे जाय हैं ते तीर्थके जूड़पानी में नहायकै बहिमुये कहे खराब ह्वै मुये काहे ते कि जौन तीर्थ जावे नहावेकी विधिहै सो एकौ न किये काहू को धक्कामारयो काहूपै कोपकियो सो कबीरजीकहैंहैं कि हेसन्तौ सुनौ ते नरराक्षसहोइकै पछितायहैं कि हमसों न बनी २०४ ॥

तीरथभैविषवेलरी रहीयुगनयुगछाय ॥
कबिरनमूलनिकन्दिया कौनहलाहलखाय २०५

तीरथकहेतीनिहैं रथजाके सतरजतम ऐसी जो त्रिगुणात्मिका माया सो विष वेलरीभै चारिउयुगमें छायरहीहै कबिरन मूल· निकन्दिया कहे मूल जो रामनामहै ताको कबिरा जे जीव हैं ते निकन्दिया कहे न ग्रहणकरतेभये जोकोई कहवौ कियो ताहूको खण्डि डारतभये सो या नाना कुमतिरूप हलाहल खाय जीव क्यों न नरकैजाय जावेही चाहै २०५ ॥

हेगुणवन्तीवेलरी तवगुणवरणिनजाय ॥
जरकाटेतेहरिअरी सींचेतेकुंभिलाय २०६

हेगुणवन्ती वेलरी माया वाणी तेरोगुण वरणि नहीं जायहै कहांलों वर्णन करैं जब तेरी जरकाटन चलैं हैं तीर्थ करिकै अहं ब्रह्मास्मि कैकै तौ अधिक हरिअरी होयहै महीं ब्रह्महौं या अभि· मान बढ्यो अधिक हरिअरी भई तामें प्रमाण ॥ कुशलाःब्रह्म वार्तायां वृत्तिहीनाःसुरागिणः ॥ तेपियांतितमोनूनं पुनरायान्ति यान्तिच २०६ ॥

वेलिकुढंगीफलवुरो फुलवाकुवुधिबसाय ॥
मूलविनाशीतूमरी सरोपातकरुआय २०७

यह मायारूपी जो वेलिहै सो कुढंगीहै काहेते कि याकोदुःख

रूपी फल वुरोहै औ कुवुधि जो है सोई फूलहै वाकी नानावासना जेहैं सोई वासवसायहै सो या मूल विनाशीहै अर्थात् मिथ्या है याको मूल नहीं है आपहीते उत्पत्ति भई है औ जेते भरमायिक पदार्थ हैं ते पातहैं तिनमें सवमें करुआईहै अर्थात् साँचे सुख नहीं हैं २०७ ॥

पानीतेअतिपातला धूवांतेअतिझीन ॥
पवनहुँतेअतिऊतला दोस्तकबीराकीन २०८

पानिहुँते पातर धूमौं ते झीन औ पवनौंते चंचल ऐसो जो क्षुद्रमन ताको कबीरा जे जीव ते दोस्त कियेहैं सो चौरासीलक्ष योनिमें डारिदियो २०८ ॥

सतगुरुवचनसुनौहो सन्तौमतिलीजैशिरभार ॥
होहजूरठाढ़ाकहौं अबतेंसमरसँभार २०९

साहब कहैहैं सतगुरु जो कबीर तिनको वचन सुनिकै हेसंतौ आपनेमें मनको भारा मतिलेहु तुमसों समर ह्वैरह्यो है सो मनको जीतिलेहु मैं हजूरमें ठाढ़कहौंहौं अर्थात् दूरि नहींहौं जो तुम मनको जीतौ तौमैं अपनाय लेहुं २०९ ॥

येकरुआईबेलरी औकरुवाफलतोर ॥
सिंधुनामजबपाइये वेलिबछोहाहोर २१०

हे कल्पनारूप वेलि तेराफल बहुतकरुवाहै जो कल्पना करैहै सो नरकहीको जायहै सो तब सिंधुनाम पावैगो जौने जगतमुख्य अर्थवेद शास्त्रमाया ब्रह्मजीव सब जगत्‌भरोहै तौनेको जब पावैगो तब साहब मुख अर्थ जानिकै साहब रत्नको पावैगो तब कल्पन वेलिको बिछोह ह्वैजायगो २१० ॥

परदेपानीढारिया संतौकरहुबिचार ॥
शरमीशरसापचिमुया कालघसीटनहार २११

गुरुमुख ॥ परदेते पानी ढारियाकहे गुरुवालोग नयेमंत्र ब-नायके परदे परदे उपदेशकियो औ सिखापनदियो कि काहूसों कहियोनहींसब वेदशास्त्र झूठेहैं जीवात्मै सत्यहै ताहीमानो या समुझायदियो सोवही धरे धरे जीव नरककोगये जो साँचो राम नामहै ताको न जान्यो वही गुरुवनको बतावो मंत्र ताहीके भ-रोसे सब पूजापाठ धर्मकर्म सब छांड़िदियो कहैहैं हमनिःकर्महैं सो यहबात पूछो तो कि भगवान् पूजादिक ये कर्मनमें नहीं हैं तामें प्रमाण कबीरजीको॥ और कर्मसबकर्महैं भक्तिकर्मनिःकर्म। कहैकबीरपुकारिकै भक्तिकरौतजिभर्म ॥ सो देखो तो भाजी के लियेतो बाजारमें मूड़फोरैहैं भगवान्की भक्ति करिबेको कहैहैं हम निष्कर्महैं पिसानके चौकडारि मालपुवा धरिकै चौकाकरैहैं आ-रतीकरैहैं औ भगवान्की आरती करिबेको कहैहैं हमहीं मालिक हैं हमारी आरती सबजने करतेजाउ सो हेसंतौ बिचारतेतौजाउ यह आपने शरमा शरमीमें पचिमुवाहै या कहैहैं कि हम गुरुवन को उपदेश न छांड़ैंगे-या नहींजानैहै कि या शरममें हमको औ हमरे गुरुवौको यम घसीटिडारैंगे नरकमें डारिदेयहैं तबमालिक हैकै न बचौगे तब कौन रक्षाकरैगो साहबको तौ जानबै न कियो औ जिन साहबको जान्योहै हनुमान् अंगद कबीरते अबलौं बने हैं तेहिते साहबको भजनकरौ जेहिते कालते बचिजाउ नहीं तो शरमा शरमीमें नरकमें पचिमरौगे औ तुम भगवान्को नहींमा-नौहौ भगवान्के पाछे नहींचलौहौ सो ब्रह्मराक्षस होइगो तामें प्रमाण ॥ नानुव्रजतियोमोहात् व्रजंतजगदीश्वरं । ज्ञानाग्निदग्ध कर्मापिसभवेत्ब्रह्मराक्षसः ॥ इतिपुरुषोत्तममाहात्म्ये ॥ औ सब झूंठाहै साहबको भजनसाँचाहै तामेंप्रमाणकबीरजीको ॥ कंचन केवलहरिभजन दूजोकथाकथीर ॥ झूंठायाजंजालतजि कपरासाँ-

चकबीर १ जोरक्षकहैजीवकोनाहिंकरोपहिंचान ॥ रक्षककेचीन्हे बिना अंतहोइगहिान २ तेहिते तुमसाहब को भजनकरो जाते साहबके लोकैजाउ जहां कालकी गम्यनहीं है तामें प्रमाण ॥ जहांकालकीगमिनहींमुआनसुनियेकोइ ॥ जोकोइगमिताकोकरै अजरअमरसोहोइ १ साहबते विमुख करनवाले गुरुवालोग यम दूतहैं तामेंप्रमाण॥नानारूपधराःदूताःजीवानांज्ञानहारकाः ॥ कालाज्ञांसमनुप्राप्य विचरन्तिमहीतले २ औ कबीरजी चौकामें रघुनाथजीकी पूजा षोड़शही प्रकारकी लिख्योहै तामेंप्रमाण ॥ अगरचंदनघसिचौकपुरावासतसुकृतमनभावा।भरझारीचरणामृत कीन्हाहंसनकोबरतावा। पूरनमौजऔररखवारा सतगुरुशब्दलखावा । लौंगलायचीनरियलआरतिधोतीकलशलेसावा। श्वेत सिंहासनअगमअपारासोअतिबरठहराया।छांड़ेलोकअमृतकीकायाजगमें जोलहकाहाया। चौरासीकीबंदिछोड़ाया निरअक्षरवत लाया ।साधुसबैमिलिआरातिगावैंसुकृतभोगलगाया । कहैकबीरशब्दटकसारा यमसोंजीलछड़ाया ॥ पूरणमासीआदिजोमङ्गल गाइये । सतगुरुकेपदपरशिपरमपदपाइये । प्रथमैमँदिरझरायकै चँदनलिपाइये।नूतनवस्त्रअनेकचँदोवातनाइये ।तवपूरणगुरुको हेतुतौआसनबिछाइये।गुरुकेचरणपरछालितहाँबैठाइये।गजमेतिनकी चौकसुतहांपुराइये।तापरनरियलधोतीमिष्टान्नधराइये। केराऔरकपूरतौबहुबिधिल्याइये। अष्टसुगंधसुपारीलोपानमँगाइये।पलौसहितसोकलशसँवारिकैज्योतिबराइये ।तालमृदङ्गबजायकैमङ्गलगाइये। साधुसङ्गलैआरतितबहिं उतारिये। आरतिकरि पुनिनरियलतबहिंभराइये ।पुरुषकोभोगलगाइसखामिलिखाइये। युगयुगक्षुधाबुझाइतौपाइअघाइये ।परमअनंदितहोयतौगुरुहिमनाइये।कहैकबीरसतभायसोलोकसिधाइये ॥ इहां पूजाके मंत्रनहीं लिख्यो सो पुरुष सूर्यनके मंत्रहैं ताते नहींलिख्योहै ॥ दशौदिशाकरमेटौधोखा। सोकड़िहारबैठहीचोखा ॥ दशौदिशाकर लेखाजानै । सोकड़िहारआरतीठानै ॥ दशइंद्रीकैपारिखपावै । सो

कड़हारआरतीगावै ॥ जोनहिंजानैएतिकसाजै । चौकायुक्तिकरै क्यहिकाजै॥ हिंसकारणकरहींगुरुआई । बिगरैज्ञानजोपंथपराई॥ पदसाखीअरुग्रंथदृढावै । बिनपारिखउत्तमघरपावै ॥ शब्दसाखी सिखिपारसकरहीं । होयभूतपुनिनरकहिपरहीं ॥ बिनाभेदकड़ हारकहावै। आगिलजन्मश्वानकोपावै ॥ पदसाखीनहिंकरहिबि- चारा । भूंकिभूंकिजसमरैसियारा ॥ पदसाखीहै भेदहमारा । जो बूझैसोउतरहिपारा ॥ जबलगपूरागुरूनपावै । तबलगभवजल फिरिफिरिआवै ॥ पूरागुरुजोहोयलखावै । शब्दनिरखिपरगट दिखलावै ॥ एकबारजियपरचोपावै । भवजलतरैबारनहिंलावै॥ शब्दभेदजोजानहीं सोपूराकड़हार । कहकबीरधूमक्षहै सोहं शब्दहिपार २११ ॥

आस्तिकहोतोकोइनपतीजै बिनाआस्तिकोसिद्ध॥
कहैकबीरसुनोहोसन्तो हीरैहीराबिद्ध २१२

कबीरजी कहै हैं कि आस्तिकमत जो मैंसबको बताऊंहौं तो कोई नहीं पतिआयहैं काहेते कि गुरुवा लोगनकी बाणी मानि उनको सिद्धजानै हैं या नहीं जानैहैं कि ये आस्तिकनहीं हैं साहब को नहीं जानैहैं इनते संसार न छूटैगो साहबके जाननवारे जे सांचे साधु हैं तिनहीं ते संसार छूटै है काहेते हीरा हीरैते बेधि जाय हैं २१२ ॥

सोनासज्जनसाधुजन टूटिजुरैसौबार ॥
दुर्जनकुम्भकुम्हारके एकैधकादरार २१३

सज्जन साधुजन जे हैं ते सोनाहैं जो सैकरनवार टूटै फिरि फिरि जुरिजायहैं औ दुर्जनजे हैं कुम्हारके कुम्भकहेघड़ा जोफूटा तो फिरि नहींजुरै है अर्थात् जोसाधुजन कहूंमार्गमें भूलिहूजायँ परंतु फिरि समझाये वाहीमें लगिजायहैं खोटीराह छाड़ि देइहैं

औ दुर्जन जे हैं ते घड़ासे फूटिजायहैं अर्थात् जोने कुसंगमेंपरे तौनेही केभये फिरि नहीं बूझै हैं २१३ ॥

काजरकेरीकोठरी बूड़न्तासंसार ॥
बलिहारीतेहिपुरुषकीपैठिकैनिकसनहार २१४

यह काजरकै कोठरी मायाहै तौनेमें यहसंसार बूड़िगयो सो वह जीवकी बलिहारीहै जो मायामेंभाय निकसिजाय २१४ ॥

काजरहीकीकोठरी काजरहीकाकोट ॥
तौभीकारीनाभई रहाजोओटहिओट २१५

गुरुमुख ॥ साहबकहैहैं कि यह मायाकाया काजरकी कोठरी है याके काजरहीके कोटबनेहैं नाना आशा नानामत मानेहैं सो यद्यपि ऐसहू रह्यो परंतु मोको रक्षक मानेरह्यो मेरीभक्तिकीओट ही ओट बचिगयो अर्थात् मायाते बचिगयो २१५ ॥

अर्बखर्बलोंद्र्बहै उदयअस्तलौंराज ॥
भक्तिमहातमनातुलै येसबकौनेकाज २१६

अर्बखर्बलौं द्रव्यभई अथवा अर्बखर्बलौं विद्या को पटजाना भयो साखी शब्द चौपाई दोहा कंठभये सब शास्त्र कंठ भये औ उदय अस्तलौं राज्यभयो बड़ो बादशाहभयो सबको अपने वश कैलियो अथवा महंत भयो पंडित भयो सबको उदय अस्तलौं चेलाकरिलियो औशास्त्रार्थ करिकै जीतिलियो औमन नजीत्यो तौकहाकियो भक्तिके माहात्म्यको नहीं तुलै है २१६ ॥

मच्छविकानेसबचले ढीमरकेदरबार ॥
रतनारीअँखियांतरी तूक्योंपहिराजार २१७

मनमेंलगिकै सबजीव मच्छमायाको अनुभवबहतहैं ताहीके

हाथ जीवबिकायगये औढीमरके दरबार सब चलेजायहैं अर्थात् काल मनरूपी जलमें सबको फँदायलेइहै ताहीके दरबार सब चलेजायँहैं अर्थात् मायाके मारिवेको सब उपायकरैहैं कि माया को नाशकैकै ब्रह्मह्वैजायँ मनरूपी जालमें फन्दे मछरी जो मायाको अनुभव ब्रह्म ताही के साथ बिकाय गये अर्थात् वही में लीनभये ताहूपै कालते न बचे सो साहब कहै हैं कि तैंतो मेराहै तेरे ज्ञाननयन रतनारेरहेहैं कहे मोमेंतेरो अनुराग रह्योहै तैंकाहे मनरूपी जालमें परिकै कालके दरबार चलो जाय है जामें मेरो अनुरागहै वे आपनो ज्ञाननयनखोलु मेरी निर्गुणभक्ति छागुणवारीहै सोकरुमेरेपासआइकै मनमायाकालतेबाचिजायगो २१७॥

पानीभीतरघरकिया शय्याकियापतार ॥
पांसापराकरमको तबमैंपहिराजार २१८

जीवमुख ॥ जीवकहै हैं कि मैं बाणीरूप पानीमें घरकियो है गुरुवालोग बाणीको उपदेश करिकै वही बाणीरूप पानीमें डारि दिये औ संसाररूपी जोपतारहै वनतामें शय्याकिया तबकर्मको पाँसापरयो तामें मनरूपी जालमैं पहिरयो अर्थात् मनरूपजाल में फँदिगयो २१८ ॥

मच्छहोयनाबाचिहौ ढीमरतेरेकाल ॥
जेहिजेहिडाबरतुमफिरौ तहँतहँमेलैजाल २१९

हेजीव जोतुम मच्छजोहै मायाको अनुभव ब्रह्म सोई ह्वैकै जो बाचाचाहौ तौ न बाचौगे तेरो फँदावनवारो ढीमर जोहै मन सोई कालहै सो तुमको फँदायकै कालकेघर पहुँचाय देइगो अर्थात् जो ज्ञानकरि ब्रह्महूह्वैजाउगे तबहूं मायाधरिही लैआवैगी अथवा समाधिकरिकै प्राणको ब्रह्मांड में पठायकै ज्योति में लीनौहोउगे तबहूं माया धरिलै आवैगी तेहिते जौने

जौने मतजे डावरतामें फिरौगे कहेमतमें लागौगे तहाँतहाँ यास-नरूपी ढीमरजाल फेंकिकै तुमको धरिहैलै आवैगी तेहिते मन वचनके परे जोभक्तियोग तौनेको जानो तबवह कालते बचौगे सो भक्तिकेगुण पाछेकहिआयेहैं औ भक्तियोग मनवचनके परेहै तामें प्रामाण कबीरजीके शब्दावली ग्रन्थको ॥ अवधूऐसा योग विचारा। जोअक्षरहू सोंहै न्यारा ॥ जौनपवन तुमगङ्ग चढ़ावोक रौगुफामेंवासा। सोतो पवन गगनज़ब विनशै तबकह योगतमा सा ॥ जबहींविनशै इंगलापिंगला विनशै सुषु मन नारी। जोउन सुनिसोनाड़ी लागी सोकहरहै तुम्हारी॥ मेरुदण्डमें डारिदुलैचा योगीआसन ल्याया। मेरुदण्डकी खाकउठैगी कच्चे योग कमा-या ॥ सोतो ज्योतिगगनमेंदरशै पानीमें ज्योंतारा। विनशो नीर-नसों जबतारा निसरौगे केहिद्वारा ॥ द्वैतलाग वैराग कठिनहै घटके सुनिजन योगी। अक्षरलौं सवखबरि बतावै जहँलौंमुक्ति वियोगी ॥ सोपदकह्यो कहे सोन्यारा सत्य असत्यनिवेरा। कहै कबीरताहि लखुयोगी बहुरि न करियेफेरा २१९ ॥

बिनरसरीगरसबबँध्यो तामेंबँधाअलेख ॥
दीन्होंदर्पणहाथमें चशमविनाक्यादेख २२०

गुरुमुख ॥ बिनरसरी सबकेगर बाँधिलियो ऐसोजोहै धोखा ब्रह्मतामें अलेख जेजीवहैं तेबँधेहैं साहब कहैहैं तिनके हाथमें दर्पणदियो रामनाम बताइदियो सोचशमतो हैं नहीं कहेरामना-मको ज्ञानताहै नहीं आपनोरूप कैसेदेखै किमैं साहबको अंशहौं मकारस्वरूपहौंजबआपनोरूपनजान्योतबमोकोकहाजानै २२०॥

समुझायेसमुझैनहीं परहथआपबिकाय ॥
मैंखैंचतहौंआपको चलासोयमपुरजाय २२१

साहब कहैहैं कि मैं बहुत समझाऊंहौं कि तैंमेराहै मेरे पास

माउमानके हाथकहां विकान जायहै नानामतनमें लागैहै ब्रह्म में लागैहै कि आपहीको मालिकमानैहै सोमैं बहुतखैंचौहौं आपनीओर कि तैं मेरेपासैं आउ यह यमपुरहीको चलोजायहै २२१॥

लोहेकेरोनावरी पाहनगरुआभार ॥
शिरमेंबिषकीमोटरी उतरनचाहैपार २२२

या काया लोहेकी नावसंसार समुद्र पारजाबेकोहै मनपाहन ताको गुरुवाभार भराहै तापर बिषयरूप बिषकीमोटरी शिरपर लीन्हेहै सोजीव कैसेकै पारजाय २२२ ॥

कृष्णसमीपीपाण्डवा गलेहेवारहिजाय ॥
लोहाकोपारस मिलै काईकाहेकखाय २२३

कृष्ण समीपके बसनवारे पाण्डवाते हेवारमें गलेजाय सोकृष्णचन्द्रको जोवेजानते तोहेवारमें काहेकोजाते काहेते जोपारस में लोहाछुइजातोहै तामेंकाई नहींलागैहै अर्थात् सोना ह्वै जायहै साहबको जाननवारो पारसही ह्वै जायहै यामें याहेतुहै कि जे नीकीतरह साहबको जानैहैं तेयही देहजायहैं सोगोपी याहीदेह गई हैं सो ब्रह्मवैवर्तक में प्रसिद्ध है सो गोपिका नीकी प्रकार जान्यो है २२३ ॥

पूरबऊगैपश्चिमअथवै भखैपवनकोफूल ॥
ताहूकोतोराहुगरासै मानुषकाहेकभूल २२४

पूरबते सूर्यउगैहैं औ पश्चिम अथवैहैं पवनको फूलभखै हैं अर्थात् प्रबल पवनचलैहै वाही भ्रमतरहैहैं ऐसेसूर्य हैं तिनहूंसूर्य को राहुगरासैहै अरेमनुष्य जो तैं भूलहै कि पवनतेमैं आत्माको चढ़ाइलेउँ हजारन वर्षपवनै खायजियैगो मुक्त ह्वै जायगो सो तैं केतेदिन पवनखायगो जेसूर्य केतौदिन पवनखायो ताहूको कालराहु गरासैहै तैं कैसे कालते बचौगे २२४ ॥

नैनकेआगेमनवसै पलपलकरैजोदौर ॥
तीनिलोकमनभूपहै मनपूजासवठौर २२५

ज्ञाननयनके आगेमनहीं वसैहै वहधोखाव्रह्म मनहींकोअनु-
भवहै पलपलमें दौरैहै नयनविषयनमेंलगैहै नानामतनमें लगेहै
नानाज्ञान विचारकरैहै तीनिलोक में यामनहीं भूपहै मनहींकी
पूजा सवठौरहोइहै अर्थात् मनहीं ब्रह्महूवै पुजावैहै मनहींजीवा-
त्माको ज्ञानकरैहै कि मही मालिकहौं जो मनके परे साहव हैं
ताको कोईनहीं जानैहै २२५ ॥

मनस्वारथआपहिरसिकविषयलहरिफहराय ॥
मनकेचलतैतनचलत तातेसरवसुजाय २२६

या आपनो स्वारथ मनहीं को मानिलियो मनको रसिक
आपहीभयो अर्थात् मनको रस आपहीलेइहै मनके कियेजेपाप
पुण्य तिनको भोगै या आपही बन्योहै याही हेतुते याके विषय
लहरि फहरायरही है सोई विषयनको जवमनचल्यो तवजीवहु
चल्यो मनकेचलते तनहु चल्योजायहै विषय करनको तातेसरव
सुहानि या जीवकी होती है अर्थात् विषयालिये पापादिक कर्म
कियोनरककोगयोऔयेई विषयनालिये अप्सरनको भोगकरैहै ना-
नायज्ञादिक कियो स्वर्गको चलोगयो सो सरवसु याकोसाहवहै
तिनके ज्ञानकी हानिहूवैगई पाण्डवनके दृष्टांतते उपासनाकाण्ड
औ सूर्यके दृष्टांततेयोग काण्ड औ मनके अनुभवके दृष्टांतत्तेज्ञान
काण्ड औ विषयलहरिके दृष्टांतते कर्मकाण्ड कह्यो सो इनमें
लगिकै नित्यविहारी साकेतनिवासी जे श्रीरामचंद्र तिनकोजीव
भूलिगये याहीते जीवनको जरामरण नहींछूटैहै २२६ ॥

ऐसीगतिसंसारकी ज्योंगाड़रकीठाट ॥
एकपराजोगाड़में सबैजाततेहिवाट २२७

या संसारकी ऐसी गतिहै जैसे गाडरकी पाँतिजोएक गाड़में गिरे तौ वाहरिाह सिगरीगिरतीजायहैं सो या संसारको भेड़िया धसान यहीहै एकजोकौनौमतगहैतौसिगरे वामतगहैं नीकनागा को विचार न करैं २२७ ॥

वामारगतोकठिनहै तहँसतिकोइजाय ॥
जेगेतेवहुरेनहींकुशलकहैकोआय २२८

वामागितो महाकठिनहै जे साहबकेपास जायहैं ते नहींलौटै हैं उनके जनन मरण नहींहोयहै इहां फिरि आइकै वा मार्गकी खबरिकोकहै अर्थात् कुशल को बतावै राहिगे कुसंगी तिनकोसंग करिकै जीवनरकको चलेजाय हैं साहबकोनजाने २२८ ॥

मारिमरैकुसंगकी केराकेढिगबेर ॥
वहहालैवहअँगचिरै विधिनेसंगनिबेर २२९

केराकेसाथ बेरजामेहै तौ जैसेबेरकेहाले केराकोअंगफटिजाय है वाकेकाँटातेतैसे कुसंगकीन्हे साहबकोज्ञान जातरहैहै गुरुवन केवचनजेहैं तेईकाँटाहैं गुरुवालोगबेरहैं २२९ ॥

केरातबहिंनचेतिया जबढिगलागीबेरि ॥
अबकेचेतक्याभया कांटनलीन्होघेरि २३०

गुरुमुख ॥ साहब कहै हैं कि अरेकेरा अरेजीवौतैंतौ बड़ोकोमल है तब न चेतकियो जब तेरेसमीप बेरलागी अर्थात् गुरुवा लोग उपदेश करनलगे अब तेरेचेते कहाभयो अबतौ उपदेशरूप काँटा तोकोघेरिलियो तेरेज्ञानको फारिडारयो अब कहाचेतैहै तासेंप्रमाण ॥ आछेदिनपाछेगये कियोनहरिसोंहेत ॥ अबक्या चेतसूहतैं चिड़ियाचुनिगईखेत २३० ॥

जीवमरणजानैनहीं अंधभयासबजाय ॥

वादीद्वारेदादिनहिं जन्मजन्मपछिताय २३१

सो कबीरजी कहैहैं कि साहब या प्रकारते उपदेशकरैहैं पै जीवको कोई मरण नहीं जानैहै किहम मरिजायँगे हमारोजनन मरण न छूटैगो सोएकतो आंधरहीरहे साहबकोज्ञान नहीं रह्यो तापैगुरुवनको उपदेश भयो आंधरते आंधर होतजायहैं वादीके द्वारे दादि नहींपावै अर्थात् जासोंपूछैहैं किहम कौनकेहैं हमारो जनन मरण कैसेछूटै नरकते कौनहमारी रक्षाकरै तौवेतौवादी हैं साहबको कैसे बतावैं औरऔर मतमें लगायदियो फिरियादि-हूकिये साहबकोनपायो ताते जगतमें जनमि २ पछितायहैं जनन मरण नछूटयो गुरुवासाहबको ज्ञान भुलायदियो तामें प्रमाण विप्रमतीसी को ॥ बिनपरशनदरशन बहुतेरहैहैं ब्रह्मज्ञानी । बीजबिना विज्ञानकथैगो धोखाकीसहिदानी ॥ कृतिमउपासीकर्म्म बिलासी जायँतेजनयमद्वारं । हमकरता भजिकरताह्वैरहे औरै के उपकारं ॥ रामकहैगा सोनिबहैगा उलटिरहैजोगाड़ा । धोखा ढुंढुरबहुतउठैगारामभक्तिकेआड़ा ॥ हिंदूतुरुक दोऊदलभूलेलोक वेदबटपारं । सतगुरुबिनासिद्धनहिंकोईखिरकीकैनउघारं २३१

जाकोसतगुरुनामिल्यो ब्याकुलचहुँदिशिधाय॥
आंखिनसूझैबावरा घरजारैघूरबुताय २३२

गुरुमुख ॥ जाकोसतगुरु नहींमिलेहैं सोब्याकुलह्वैके चारों ओर धावैहैं कहूंब्रह्ममें कहूंनानाईश्वरनमें नानामतनमें लागैहैं कि हमारी मुक्तिह्वैजाय सो अरेबावरे तेरी आंखिनमें नहीं सूझै है औरेऔरे मतनमें निश्चय करैहै सोघूरहै ताकोकहा बुतावै है मेरोरूप औआपनोरूप ताकोतौजानु या घरतो जरोजायहै ताकोबुताउ जामें जनन मरण छूटै घूरबुताये कहाहै २३२ ॥

अनतवस्तुजोअनतैखोजैकेहिविधिआवैहाथ ॥
ज्ञानीसोइसराहिये पारिखराखैसाथ २३३

श्रीकवीरजी कहैहैं किअनतकी वस्तु अनतै खोजैहैं कहे यह जीव साहवको अंशहै सदाको दासहै तौनेको कहैहैं किब्रह्मको है देवतनकोहैईश्वरन को दासहै सोजौनेसाहवको दासहै ताको तो जानवही न कियो आपनोस्वरूप कौनेरीतिते जानै सो हम तो सोईज्ञानीको सराहतेहैं जो पारिख आपनेसाथ राखैहै कि हमसाहवकेहैं दूसरेके नहींहैं न ब्रह्मके न मायाके न ईश्वरन केहैं सोई सांचेज्ञानको हमसराहतेहैं २३३ ॥

सुनियेसबकीनिवेरियेअपनी ॥
सिन्धुरकोसेंदुराझपनीकीझपनी २३४

जहांजहां सुनिये तहांतहां साहवहीकी बात निवेरिलीजिये और मत खण्डन करि डारिये काहेते कि वेदशास्त्र सोईहै जामें साहवको परख होइ जोकहूं वेदशास्त्रकरिकै साहबकोनजान्यो ताको उपदेश यहिरीतिते जैसे सिंधुरजो हाथी ताको सुंदर शृंगारकियो वेशुण्डते धूरि भरिलियो झपनीकी झपनी कहे जैसे रजझपिगई तैसे जवलों उपदेश सुन्यो तवलोंज्ञान रह्यो फिरि नहींरहै औ जौने वेदशास्त्रमें साहव को परखहोइ सोई अर्थतामें प्रमाणचौरासीअंगकी साखी ॥ रामनामनिजजानिले येहीवड़ा अरत्थ ॥ काहेको पढ़िपढ़िमरै कोटिनज्ञानगरत्थ २३४ ॥

वाजनदेवायंत्ररी कलिकुकुरीमतिछेर ॥
तुझैविरानीक्यापरी तूआपनी निवेर २३५

जे और और वातैं सवकहैहैं सो या शरीरयंत्रकहे वीणाहै जैसो वजवैया वजावैहै तैसोवाजैहै ऐसे या शरीर मनके आधीन है जहां चलावैहै तहां चलैहै कहूं वकवककरावैहै कहूं ब्रह्ममें लगावैहै नाना मतनको सिद्धांतकरैहै सो वा यंत्रको वाजनदेमन वेकलकुकुरियाहै वाको विपजो तेरे चढ़ैगो तौतुहूं वेकलह्वै मरि जाइगो अर्थात् चौरासी योनिमें परैगो सोताको विरानी कहा

परीहै तैं आपनी निबेरु जो तेरे यंत्र वाजैहैं सुरति कमलमें गुरू राम नाम ध्वनि उहदेश देइहैं ताको ध्यान करु राम नाम शब्द सब शब्दते अलगहै सोई साँचहै और सब मिथ्याहैं सो तैं राम नाम ते सनेहकरु रामनामको सनेही मरत नहींहै तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ शुन्यमरैअजपामरैअनहृदहूमारिजाय ॥ रामसनेहीनामरै कहकबीरसमुझाय २३५ ॥

गावैंकथैंबिचारैंनाहीं अनजानैकोदोहा ॥
कहकबीरपारसपरशेबिनज्योंपाहनाबिचलोहा २३६

नानापुराण नानाशास्त्र नानामत गावैंहैं औ उनको कथनी करैंहैं और औरको समुझावैंहैं परन्तु सर्वशास्त्रको अर्थ साहवही हैं यह नहीं बिचारै हैं जैसेशुकचित्रकूटी राम कहिदिये न चित्रकूटको अर्थ न रामको अर्थ जानैंहै आनैमें आनसाजैहै रसाभाव करिदेयहैं ऐसे सर्व शास्त्रको सिद्धांत जोसाहव पारसरूपतिनको तो जानतही नहीं है कौनीरीति जीव लोहाकंचनहोइ अर्थात् जबस्पर्शहोयउनकोजानिउनमेंलगैभजनकरैतवकंचनहोय २३६

प्रथमैएकजोहोकिया भयासोबारहवाट ॥
कसतकसौटीनाटिका पीतरभयानिराट २३७

प्रथममें यह जीवको एककियो कहे एकराहमें लगायो कि मेरी भक्तिकरैगो तौ संसारते छूटिजायगो औ यह वारहवनभयो कहे आपने रूपबिाणको वारहलक्षमें लगायो अर्थात्छःशास्त्रके सिद्धांतमें छःदर्शनमें लगाय दियो वारहवाट भयो मोकोन जान्यो सो जव ज्ञानरूपी कसौटीमें कस्यो किसाहवको ज्ञानहै कि नहीं तव पीतरही ह्वैगयो जगत् मुखै ठहरयो साहव मुख न ठहरयो साहव को ज्ञान सोना न ठहरयो २३७ ॥

कबिरनभक्तिबिगारिया कंकरपत्थरधोय ॥
अंदरमेंबिषराखिकैअमृतडारैखोय २३८

कविरा जे जीवहैं तेभक्तिको बिगारि डारयो कंकर जोहै जौने कोपत्थर जोहै मनतामेंधोयकै॥पाहनफोरिगंगयकनिकरीचहुँदिशि पानीपानी ॥ या पदमें पाहन मनको लिखिआयेहैं सो पाषाणमें जो कंकरधोये तौ और चूर चूरह्वैजाय सो मेरे भक्तिरूपीजलमें आपने अणुजीव कंकरको तैं नहींधोवे पाथरमेंधोये ताते चूरचूर ह्वै नानामत नानादेवमेंलागे आपने स्वरूपको न जाने अंदर में विषयरूपी विषराखि अमृत रूप साहब को ज्ञान ताको खोइ डारयो २३८॥

रहियएककीभयअनेककी बेश्याबहुलभतारी ॥
कहकबीरकाकेसँगजरिहैबहुतपुरुषकीनारी २३९

गुरुमुख ॥ साहबकहै हैं कि हेजीव तैंतोमेरोरह्योहै सोतैं अब बहुत मतनमें लगिकै बहुत मालिक माननलग्यो सो कौनतेरो उद्धार करैगो बहुतभतारी वेश्या काके काके साथजरैगी २३९

तनबोहितमनकागहैलखयोजनउड़िजाय ॥
कबहींदरियाअगमबहकबहींगगनसमाय २४०

येचारिउ शरीर बोहित कहे नावहैं तामें मनरूपी कागबैठो है सो लख योजनलों उड़िजायहै कबहूं संसारसमुद्रमें बहतरहै है औ कबहूं पंचवांशरीर जो कैवल्य चैतन्याकाश अगमजायवेलायकनहीं तामें महाप्रलयादिकनमें समायहै सो जेहरि की शरण जायहैं ते यहिसंसारसमुद्र को गोखुरकी तुल्य उतरि जायहैं तामेंप्रमाण ॥ इच्छाकरभवसागरबोहितरामअधार। कह कबीर हरिशरणगहु गोवच्छखुर विस्तार २४० ॥

ज्ञानरत्नकीकोठरीचुपकरिदीन्होताल ॥
पारखि आगेखोलियेकुंजीबचनरसाल २४१

ज्ञानरत्नकी जो कोठरीहै तामें चुपको तारादीन्हेहैंरहिये जो

कोई समुझने वारो पारखीहोइ ताहीकेआगे रसालवचन कुंजीते चुपको तारावोलिकै ज्ञानको प्रकटकरिये काहेते कि जे नहीं समुझैहैं तिनके आगे न कहिये साहबको ज्ञानरत्न वे कहाजानैं २४१॥

स्वर्गपतालकेवीचमें द्वैतुमरीयकविन्द ॥
षटदर्शनसंशयपरोलखचौरासीसिद्ध २४२

यहस्वर्ग पातालरूपी वृक्षमें जीवईश्वररूप दुइतुमरी लगी हैं तामें जीवरूपी तुमरीवेधी है कहे जीवहीते नानाशब्द निकसे हैं शरीर सारी हैं सोयेई जेजीवहैं पट्दर्शन आदिदैकै तिनकोनानामत करिकै संशय परो है साहबको नहीं जानै हैं एक सिद्धान्त नहीं पावै हैं तिनको चौरासी लाख योनि सिद्धि बनी हैं भटकतही रहै हैं २४२ ॥

सकलौदुरमतिदूरिकरु अच्छाजन्मबनाउ ॥
कागगवनवुधिछोड़िदेहंसगवनचलिआउ २४३

साहब कहैहैं कि अरे जीव तेरो जो सकलहै शरीर सोई दुर्मतिहै सोपांचौ शरीरनको छोड़िदे औ आपनो अच्छो जन्मबनाउ कागबुद्धिको त्यागु मेरो दियो हंस शरीर तामें टिकिकै मेरे पास आउ २४३ ॥

जैसीकहौंकरौजोतैसी रागदोषनिरुवारै ॥
तामेंघटैवढैरतिऔनाहिं यहिविधिआपसँभारै २४४

गुरुमुख ॥ साहबकहैहैं कि जैसोउपाय मैं तेरेछूटिवे को कहिआयोंहै तैसोकरै औ संसारमें नानाराग द्वेष करिराखेहैं ताकोनिरुवारै सोमें प्रीति रतिउभर घटै न पावै एक रसही आवै २४४ ॥

द्वारेतेरेरामजी मिलाकबीरामोहिं ॥

तूतोसबमेंमिलिरहासैंनमिलौंगातोहिं २४५

साहब कहैहैं कि हे जीव तेरे मुखद्वारमें मेरो राम असनाम बनो है ताको भजनकरि हे कबीरजीवौ मोको मिलौ जो कहौ कि साहब दयालुहैं वोई मिलिबे की सामर्थ्य देइँगे सो सत्यहै तेरी दया मोकोलगैहै परन्तु तैं सबमें मिलिरहा है ताते मैं तोको न मिलूंगा तैं सब छोड़िदे तौ मैं तोको आपसे मिलौंआइ २४५॥

भर्मपरातिहुँलोकमेंभर्मबसासबठाउँ ॥
कहहिकबीरपुकारिकैबसैभर्मकेगाउँ २४६

कबीरजी कहैहैं कि हे जीव साहब को तैं कैसे मिलै काहेते कि तीनोंलोक कर्म भर्म जोहै धोखाब्रह्म सो भरोहै तिनमें भर्म बसो है भरमहीमें सबमिलिरहेहैं भरमकेपार जे साहबहैं तिनको तो जानबेही न कियो २४६॥

रतनलड़ाइनिरेतमें कंकरचुनिचुनिखाय ॥
कहकबीरयहअवसरबीतेबहुरिचलेपछिताय २४७

रतन जोहै साहबको ज्ञान ताको रेतमें लड़ाय कहे लगाय दियो अति कठोरजोहै कंकर ब्रह्मज्ञान तामें आत्माको लगायो चुनिचुनि खानलग्यो सो कबीरजी कहै हैं कि जब या अवसर बीति जायगो अर्थात् शरीर छूटिजायगो तब पछितायगो वा धोखाब्रह्ममें कुछ न मिलैगो २४७॥

जेतेरेणुबनस्पती औगंगाकीरेणु ॥
पण्डितविचाराक्याकहैकबिरकहैसुखबेणु २४८

सारासारके विचार करनेवारे पण्डित तोको केतो समुझावैं-गे कबीरजी कहैहैं कि जेतो मैं समुझायोहै कि बनस्पती पत्र

गिनि जायँ औ गंगाकी रेणु गनीगनिजायँ परन्तु मेरे मुखके बैन गनेनहीं गिनिजायहैं तऊ न तुम बूझ्यो २४८ ॥

हमजान्योकुलहंसहौतातेकीन्होसंग ॥
जोजनत्योंबकबरणहौछुवननदेत्योंअंग २४९

कबीरजीकहैंहैं कि हमतो तुमको हंसके कुलमें जानतेरहेहैं ताते तुमको उपदेश कियो तुम्हारो संग कियोहै जो तुमको बकैके वर्ण जानते कि हंस नहींहो तो एकौअंग छुवन न देत्यों अर्थात् उपदेशकी बातहू न चालतो उपदेश तौ कौन २४९ ॥

गुणियातोगुणकोगहै निर्गुणगुणाहिघिनाय ॥
बैलहिदीजैजायफर क्याबूझैक्याखाय २५०

गुणियाकहे जो सगुणहोयहै सो गुणकोगहैहै सत रज तम को जो धारण करैहै सो अशुद्धई रहैहै ते मायाते नहीं छूटैहैं औ जो निर्गुण उपासक होइहै सो सगुणको घिनाय है सो निर्गुणौवाले सगुणवाले साहबके गुणको कहाजानैं वैतोसगुण निर्गुणके परेहैं मायाकृत गुणते रहितहैं दिव्यगुण सहितहैं काहेतेकहैंहैं कि बैल के आगे जो जायफर धरिदीजिये तौ कहाबूझै क्याखाय ऐसे वै साहब के गुणको कहाजानैं २५० ॥

अहिरहुतजिखसमहुतज्यो बिनादांतकोठोर ॥
मुक्तिपरीबिललातिहै वृन्दावनकीखोर २५१

बिनादाँतको ढोर जो है बूढा गाय बैल ताको अहिरो चराइबो छाँड़िदेइहै औ खसम जो है बैलको मालिक सोऊ छोड़िदेइहै अर्थात् बूढ़ाजानिकै कि मेरे कामको नहींहै तब वह बैल वृन्दावनकीखोरि बिललानलग्यो ऐसे जब मनरूपीदाँत उखारिडारयो तब अज्ञानअहिर याको छोड़िदियो औ याको खसम

जो है माया सवलितब्रह्म सो जब मन न रहिगयो तब याहू छांडिदियो तब आपहीआप मुक्तह्वैगयो सर्वत्र साहबहीको देखन लग्यो जैसे वृन्दावनमें डारमें पातमें कृष्ण देखिपरैहैं मुक्ति परी विललाइहै काको मुक्तकरै ऐसे यहूसर्वत्र साहबको देखनेलग्यो मुक्तही ह्वैगयो मुक्तिकाको मुक्तिकरै तामें प्रमाण ॥ सबनदियाँ गङ्गाभई सवशिलशालिग्राम । सकलौवनतुलसीभयो चीन्हौ आतमाराम २५१ ॥

मुखकीमीठीजेकहैं हृदयाहैमतिआन ॥
कहकबीरतेहिलोगसों रामौवड़ेसयान २५२

जो याभाँतिते मनकोत्यागिकै सर्व्वत्र साहब को देखै हैं तिनको साहब सर्व्वत्र देखिपरै हैं औ जिनकेमनमें औ मुख में आनैआनहै तिनको कबीरजी कहै हैं कि रामऊ बड़ेसयान हैं अर्थात् उनते दूरिरहैहैं २५२ ॥

इततेसबतोजातहैं भारलदायलदाय ॥
उततेकोइनआइया जासोंपूंछौंधाय २५३

नानाकर्म्मके नानाउपासनाके नानाज्ञानके भारलदायलदाय इनते सबजातहैं परंतु उहांते ऐसाकोई न आया जासों धायकै उहांकी खबरि पूंछौं कि कौनफलपाया सो आपनेही जन्मकी खबरि नहींजानै साहबकी खबरि कहाजानै २५३ ॥

भक्तिपियारीरामकी जैसेप्यारीआगि ॥
सारापाटनजरिगयाफिरिफिरिल्यावैमांगि २५४

यहभक्ति साहबकी बहुतपियारीहै जैसेआगि पियारीहोइ है कि आगिलगी औ सारापाटन कहे शहरजरिजाय पुनि आगीकी चाहना बनीहीरहैहै पुनिपुनि मांगिलैआवै है आपनीकरै है काम

लोग ऐसे साहवकीभक्ति केतौलोग साहवकी भक्तिकरि संसारते पारह्वैगये परंतु अवतक जोकोई भक्ति करै है सो पियारे होत जायहै संसारते उतरिजाय है २५४ ॥

नारिकहावैपीउकी रहैऔरसँगसोइ ॥
जारमीतहिरदैवसै खसमखुशीक्याहोइ २५५

नारितौ अपनेप्रीतमकी कहावैहै औ आनपतिलैकै सोइरहैहै तौ खसम कैसेखुशीहोय ऐसे यहजीव साहवको अंशहै औरऔर मतमें लग्यो कहीं ब्रह्ममें कहीं माया में सो साहव कैसे खुशीहोय २५५ ॥

सज्जनतौदुर्जनभया सुनिकाहूकोवोल ॥
कांसातांवाह्वैरहा नहिंहिरण्यकामोल २५६

सज्जन शुद्धजीवहैं ते गुरुवालोगनके वोलसुनिकै दुर्जनह्वैगये सो जो हिरण्यकामोलहै सो जातरहा काँसा ताँवाकी तुल्य ह्वैरहाहै २५६ ॥

विरहिनसाजीआरती दर्शनदीजैराम ॥
मुयेतेदरशनदेहुगे आवैकौनेकाम २५७

कवीरजी कहै हैं कि जे श्रीरामचन्द्रके विरहीजीवहैं ते आरतीसाजेखड़ेहैं कि जो रामजीमिलैं तौआरतीकरैं संसारछाँड़िएक तुम्हारे मिलिवेकी आशाकिये हैं सो हेसाहव दर्शनदीजै मुये ते दर्शनतो देवहीकरोगे परन्तु औरजीवनके काम न आवोगे काहेते वैतौ उपदेशकरही न आवैंगे साहव विरहीकोमिलैहै तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकीसाखी ॥ विरहिनजरती देखिकै साईंआयेधाय। प्रेमवुन्दतेसींचिकै हियमेंलईलगाय २५७ ॥

पलमेंपरलयवीतिया लोगनलगीतमारि ॥

आगिलशोचनिवारिकैपाछेकरौगोहारि २५८

पलभरेमें प्रलयतेरी होतिजायहै आयुक्षीणहोतीजायहै यही तमारि लोगनके लगीहै फिरि वा घरी नहीं मिलै ताते आगिल शोच छाँड़िदेउ जौनधन जोरिजोरि आलरिकनहेत धरयोहै पाछिलगोहारिकरौ साहवको जानो जाते जनन मरणछूटै २५८ ॥

एकसमानासकलमें सकलसमानाताहि ॥
कविरसमानावूझमें तहांदूसरानाहि २५९

एक जोब्रह्महै सो सबजीवन में समाय रह्योहै औ कवीरजी कहै हैं कि मैं वूझमें समान्यो है ब्रह्मके प्रकाशी औ सबजगत्के अन्तर्यामी ऐसे जे श्रीरामचन्द्र तिनको जबबूझ्यो तब वही वूझमें समायरह्यो है सर्वत्र साहवहीको देखनलग्यो दूसरा न देखत भयो मुक्तह्वै सांचा दासभयो तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ जीवनमुक्तै ह्वैरहै तजैखलककी आस। आगेपीछे हरि फिरैं क्यों दुख पावैदास २५९ ॥

यकसाधेसवसाधिया सवसाधेयकजाय ॥
उलटिजोसींचैमूलको फूलैफलैअघाय २६०

एक जो साहवकी भक्तिहै ताकेसाधे सब सधिजायहै अर्थात् लोकौपरलोक वनिजायहै और जब साधेते अर्थात् नानामतनमें लागेते एक जोसाहबकी भक्ति सो जातरहैहै औ ऊपर ते वृक्षको जलमें डारिराखै तौ पत्ता फूलफल सरिजायहैं औजोवृक्षकोमूल तेरसींचै तौ फूलैफलै अघायके ऐसे सबके मूलसाहब हैं तिनकी भक्ति कीन्हे सबफूलै फलैहै दूसरेकी चाहनहीं रहिजायहै दूसरे की उपासनामें संसार नहीं छूटैहै २६० ॥

जेहिवनसिंहनसंचरै पक्षीनहिंउड़िजाय ॥

सोवनकविरनहींठियाशून्यसमाधिलगाय २६१

जेहि वाणीरूपवनमें कहे जेहि वाणीते ब्रह्मज्ञानौ कथेहै तौ-नीवाणिमें सिंहजेहैं शुद्धजीव साहबके जाननवारे तेनहीं संचरैहें कहे नहींजायहैं औ पक्षीजेहैं नानामतवारे नानाशास्त्रवारे तेआ-पनेआपने पक्षकरि ब्रह्मको विचारकरैहैं उड़ैहैं पारकोई नहींपा-वैहैं सो तौने वनको कवीरजेहैं जीव सो हींठिया कहे हींठतभयो वही शून्यसमाधि लगायके साहबकी प्राप्ती न भई तामें प्रमाण चौरासी अंगकीसाखी ॥ शून्यमहल में सुन्दरी रही अकेलेसोइ। पीउमिल्यो ना सुखभयो चलीनिशाशारोइ २६१ ॥

बोलीएकअमोलहै जोकोइबोलैजानि ॥
हियेतराजूतौलिके तवमुखबाहरआनि २६२

सो वै शून्यसमाधि लगायकै शून्यब्रह्म में जायहैं तिनकोकहि आये अब ज्ञानकरिकै जे ब्रह्ममें लीनह्वैहैं तिनको कहैहैं कि वह बोली सोहं असोल ताको जोकोई जानिकै हियेके तराजूमें तौलि कै मुखके बाहर लैआइकै बोलै कहे श्वास श्वासमें यहीजपै जात में सो आवतमें हृदय तराजूमें यही तौलै कि सो पार्षद रूप हंस साहबको है २६२ ॥

वोहूतौवैसहिभया तूमतिहोइअयान ॥
तूगुणवन्तावैनिरगुणी मतिएकैमेंसान २६३

श्रीकबीरजीकहैहैं कि योगी तौ समाधिकरिकै शून्यमेंगये औ वहू जेहैं वहज्ञानी सहजसमाधिवारे तौनौ ज्ञानकरिकै वैसेभये कहे वही शून्यमें समायरह्यो तू मति अयानहोय कहे अज्ञानी होइ तूतो गुणवन्ता कहे दिव्यगुण सहित जे साहबहैं तिनकोहै दिव्यगुण तेरहूहै निर्गुण जो धोखाब्रह्म तामें तू काहे सानैहै तू मतिसान साँचाह्वैकै तू असाँच काहे होइहै २६३ ॥

साधूहोनाचहहुजो पक्काकेसँगखेल ॥
कच्चासरसोंपेरिकै खरीभयानाहिंतेल २६४

जो तुमसाधुहोना चाहो तौ पक्के जे साहबकेजाननवारे तिनके संगखेलकहे सत्संगकरौ जो तुम और नानादेवता नानामतनमें लगौगे तौ तुम्हारो न लोकैबनैगो न परलोकै बनैगो जैसे कच्चे सरसों को पेरनो न तेलैभयो न खरीभई २६४ ॥

सिंहेकेरीखालरी मेढ़ाओढ़ेजाय ॥
वाणीतेपहिंचानिया शब्दहिदेतबताय २६५

सिंहकी खालरीकहे शुद्धजीवनको वेष गुरुवालोग संसारमें बनाये कण्ठी छापा टोपी दीन्हे हैं सबलोगजानैं कि बड़ेसाधुहैं जैसे सिंहकी खालरी मेढ़ाको वढ़ायदेइ अर्थात् मढ़िदेइ तो सब सिंहेकी नाईं जानैहैं परन्तु जब भ्याँ भ्याँ बोलनलग्यो तबबाणी ते जानिपरयो कि सिंहनहीं है मेढ़ाहै ऐसे जब गुरुवनको सत्संग कीन्ह्यो तब बाणीते जानिपरे कि ये साहबको नहीं जानैहैं वेषैभरि बनायेहैं इनते संसार न छूटैगो तामें प्रमाण चौरासीअंग की साखी ॥ स्वामीभयातोकाभयाजान्योनहींबिबेक । छापातिलकबनायकैदग्धैजन्मअनेक १ जपमालाछापातिलक सरैनएकौ काम । मनकाचेनाचेवृथा साँचेराचेराम २६५ ॥

ज्यहिखोजतकल्पनभया घटहीमेंसोपूर ॥
बाढ़ेगर्वगुमानते तातेपरिगोदूर २६६

जौने मुक्तिको खोजतखोजत कल्पैभयो अर्थात् कल्पनाकरत करत कल्पनारूप ह्वैगया ब्रह्ममें लीनभया मुक्तिको मूल जो रामनाम सो तेरे घटहीमेंहै ताको अहंब्रह्मास्मिके गर्वते तोको दूरि परिगयो अबहूं समुझ तौ तेरे समीपही हैं २६६ ॥

दशद्वारेकापीपरा तामेंपक्षीपौन ॥

रहिबेकोआश्चर्यहै जायतोअचरजकौन २६७
रामहिसुमिरहिंरणभिरैं फिरैंऔरकीगैल ॥
मानुषकेरीखालरी ओढ़िफिरतहैं बैल २६८

२६७। राम नामको तौसुमिरैहै परन्तु रामनाम जपिबेकी बिधि सतगुरुते नहीं पाये वादविवादकरत साधुनते भिरतफिरै हैं साहबको नहींजानैहैं ते मानुषकीखाल ओढ़े तौहैं परन्तु बैल हैं अर्थात् पशु हैं जानै नहीं हैं २६८ ॥

खेतभलाबीजौभला बोइयेमूठीफेर ॥
काहेबिरवारूखरा यागुणखेतैकेर २६९

खेततोनीकईहै परंतु तृणादिकनके जरकोकारण वामेंबनोहै त्यहिते बिरवा उठै नहींपावै तृणछायजायहै सो या गुण खेतैको है ऐसे खेत अंतःकरणमें नानावासनारूप तृण जामिरहेहैं तामें रामनामरूपी बीजफेरिफेरिबोवैहैं परंतु तृण वासननके मारेलगै नहींपावैं साहबमें प्रीतिनहीं होयदेइ जबसत्संग करिकै निराय डारै तौ तृण औ रामनामरूप अंकुर दृढ़ह्वैजाय साहबको जाननलगै संसार छूटिजाय पापजारेमें नामकी बड़ीशक्तिहै तामें प्रमाण ॥ नाम्नीतियावतीशक्तिः पापनिर्दहनेहरेः ॥ तावत्कर्त्तुंनशक्नोति पातकम्पातकीजनः २६९ ॥

गुरुसीढ़ीतेऊतरै शब्दबिमूखाहोइ ॥
ताकोकालघसीटिहै राखिसकैनाहिंकोइ २७०

गुरुके बताये साधनसीढ़ीमें चढ़ो फिरउतरि और औरसाधनमेंलगो रामनामते विमुखह्वैगयो ताको कालनरकमें घसीटि कै डारिहींदेइगो कोई नहीं राखिसकैगो २७० ॥

आगिजोलगीसमुद्रमें जरैसोकांदोभारि ॥

पूरबपश्चिमपण्डितामुयेविचारिविचारि २७१

यासंसारसमुद्रमें अज्ञानरूपी अग्निलगीहै सो पूरबपाश्चिमके पंडित कहे उदय अस्तके पण्डित विचारि विचारिमरे परंतु अज्ञानरूपी अग्नि न बुतानि उपासनाकरिकै ज्ञानहूकरिकै संसार समुद्रसूखिहूगयोपरंतुवामूलअज्ञानरूपकांदोमेंफँसेजरेजायहैं२७१

जोमोहिंजानैत्यहिमैंजानौं लोकवेदकाकहानमानौं ॥
भूभुरघामसबैघटमाहीं सबकोउबसैशोककीछाहीं २७२

गुरुमुख ॥ अज्ञानरूपी घामते अंतःकरणरूपी भूमि सब कै तपिरहीहै शोकरूपी जेनाना उपासना तिनकीछायाचाहै है परंतु वहीते और तप्तहोयहै शीतलनहींहोइहै सो मोको तो जानतही नहींहैंमैं वाकोकाहेकोजानौं जोकोई मोकोजानै तौमैंवाकोजानौं जानवही करौं लोकवेद तो कहतही है कि जोजाकोहै सो ताहूको जानैहै सोयालोक वेदको कहा मानबहीकरौं अथवा कैसो पापी होइ जोमेरी शरणआवै तौमैंलोक वेदकाकहा नमानूं वाकोशरणमें राखवईकरौं वाकेसम्पूर्ण पापमहीं छुडायदेउँ तामेंप्रमाण ॥ शकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतम्मम २७२ ॥

जौनमिलासोगुरुमिला चेलामिलानकोइ ॥
छइउलाखछानबेरमैनी एकजीवपरहोइ २७३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि एकजीवकेउपदेशपर मैंछःलाखछानबेरमैनी युगयुग कह्यो पैमेरो कह्यो कोई न समझ्यो जो मिलो सो गुरुहीमिलो चेलाकोई न मिलोजोमेरो कहोबूझै साहबको जानै संसारते छूटै छानबेरमैनी में प्रमाण ॥ सहसछानबे और छलाखा ॥ युगपरमाणरमैनी भाखा २७३ ॥

जहँगाहहँकतहौंनहीं हौंजहँगाहकनाहिं ॥

बिनविबेकभटकतफिरैपकरिशब्दकीछाहिं २७४

गुरुमुख ॥ जहांनानाईश्वर नानाउपासना नानाज्ञान इनए-
कहूको जहां गाहकहै तहां मैंनहींहौं अथवा जहांकौनिहू वस्तुकी
चाहहै तहां मैं नहींहौं जहां कोनिहूं वस्तुकी चाहनहीं है तहां मैं
हौं सोविनाविवेक कहे बिना सांच असांचकेजाने अर्थात् सांचजो
रामनाम ताकेविना जाने गुरुवालोगनके शब्दकी छांहपकरिकै
संसार भटकत फिरैहै जननमरण नहींछूटैहै जब रामनामजानै
तब संसारते छूटैतामें प्रमाण ॥ सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रम
कारकाः एकएवपरोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम् २७४ ॥

शब्दहमाराआदिका इनतेबलीनकोइ ॥
आगेपाछेजोकरै सोबलहीनाहोइ २७५

गुरुमुख ॥ साहब कहैहैं कि शब्द जोहै हमारो रामनाम सो
आदिकाहै अर्थात् रामनहींते सबकी उत्पत्ति भईहै सो या राम
नामते बलीकोई नहींहै यह आदिशब्द जो रामनाम ताके जपिबे
में जो आगे पिछेकरैहै अर्थात् याको बलछोड़ि और देवतन को
बलमानै है सो बलहीन होइ है अर्थात् मुक्तिहोने को बल नहीं
रहिजाय २७५ ॥

नगपषाणजगसकलहै लखिआवैसबकोइ ॥
नगतेउत्तमपारखीजगमेंबिरलाकोइ २७६

या जगमें नगजोहै तिहारोमन सो पाषाण ह्वै रह्योहै त्यहिते
तुमहूं पाषाण ह्वैगयो मनमें मिलिकै जगहूं ह्वैगये सो वहीमें आवै
है वहीमें जाइहै सोनग जो है मन त्यहिते उत्तम जेपारखी जीव
हैं अर्थात् मनते न्यारे जे जीवहैं तौन जक्तमें कोई बिरलाहै औ
मनको माणिक पीछे बेलिमें कहिआयेहैं २७६ ॥

ताहिनकहियेपारखी पाहनलखैजोकोइ ॥

नगनलयादिलसोलखै रतनपारखीसोइ २७७

जो कोई पाहनरूपी मनको देखैहै अर्थात् जबभरम जाकेमनबनोरहै है ताको पारखी न कहिये औ जो कोई नर आपनो आत्मारूप जोहै नगस्वस्वरूप सोआपनेदिलमें रामनाममें देखैहै अर्थात् मकारस्वरूप जोहै आपनो स्वस्वरूप ताको रकाररूपजेहैं साहब तिनके समीपदेखै सोई पारखीहै जबनग मुंदरीमें जड़ि जायहै तवहीं शोभाहोयहै नहीं तो पाहनैहै २७७॥

सारीदुनियाँबिनशती अपनीअपनीआगि॥
ऐसाजियरानामिला जासोंरहियेलागि २७८

सारी दुनियां आपनी आपनी आगिमेंकहे कोई ब्रह्ममेंलागिकै कोई नानादेवतनमें लागिकै कोईनानामतनमें लागिकै बिशेपते बिनशिरहेहैं साहबको नहीं जानै हैं सोकबीरजीकहैहैं ऐसा जियराकहे रामोपासक संत कोई न मिला जासों लागि रहैं अर्थात् सत्संग करौं कहे जे साहबको नहीं जानैं ते बिनशिजाय हैं तामें प्रमाण॥ यश्चरामंनपश्येतयंचरामोनपश्यति॥ निंदितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनंविगर्हते २७८॥

सपनसायामानवा खोलिदेखैजोनैन॥
जीवपराबहुलूटमें नाकछुलेननदेन २७९

जो मानुष आपनी आँखिखोलिकै देखै तो सब स्वप्नैहै यह जीव बहुत लूटमें परयो है नानामतनमें नानाउपासननमेंलग्यो है साहबको नहींजानै ताते न कछुलेनहै नदेनहैयाते या आयो किइनमें वृथैलागेहैं मुक्तिकाहूकी दईनहींदैजायहै॥ या सब स्वप्न है तामें प्रमाण कबीरजीको गोरखपूछे हैं॥ कर्त्ताकोस्वरूपकौन। अण्डकोस्वरूपकौन। अण्डपारब्रसैकौन। नादबिन्दुयोगकौन।

जीव ईश्वरभोगकौन। औमीअवतारकौन। निराकारपारकौन। पापपुण्यकरैकौन। वेदऔवेदान्तकौन। वाचाऔअवाचाकौन चंद्रसूर्यभासकौन। पञ्चमें प्रपंचकौन। सोहंऔसोहंकौन। स्वर्ग नरकवसैकौन। पिण्डऔब्रह्माण्डकौन। आत्मपरमात्मकौन। जरामरणकालकौन। गुरुशिष्यबोधकौन। अक्षरक्षरनिक्षरकौन॥ तवकबीरजीबोले॥ नादविंदुयोगस्वप्न जीवईश्वरभोगस्वप्नऔमीअवतार स्वप्न निराकारस्वप्न है। पापपुण्यकरैस्वप्न वेदऔ वेदान्तस्वप्न वाचा औ अवाचास्वप्न चंद्र सूर स्वप्नहै॥ इत्यादिक बहुत वाक्य हैं २७९॥

नष्टैकायहराज्यहै नफरकवरतेंछेक॥
सारशब्दटकसारहै हिरदयमाहिंविवेक २८०

नष्टजोहै धोखा ताहीकोयहराज्यहै अर्थात् अहंब्रह्मास्मिकहिके सब नष्टभये औ नफरजोहै काल ताहीकोछेक संसारवरतरह्योहै अर्थात् सब संसारको काल छेकिछेकि खायेजायहै सारशब्दजो रामनाम टकसार ताको हृदय में कोई कोई विवेक करत भये अर्थात् कोईसाहबको न जानतभये संसारते न छूटतभये २८०॥

दृष्टमानसबबीनशै अदृष्टलखैनाकोइ॥
हीनकोइगाहकमिलै बहुतैसुखसोहोइ २८१

जहांभरदृष्टमानहै सो सबविनशैहै नाशहोयहै औ मन वचन के अगोचर जो ब्रह्महै ताकोतौ कोई देखतैनहीं है धोखहीहै सो दृष्ट अदृष्ट के परे हनि कोईकहे कोईहीनहोइ अर्थात् दीन होइ ताको गाहक ऐसे जे साहब श्रीरामचन्द्रते मिलैं जो जीवकोतौ बहुतसुख सोहोय अर्थात् जननमरण छूटिजाय साहबकेसमीप सेवामें वनोरहै तामें प्रमाण॥ गोसाईंजीकोदोहा॥ पदगहि कहति सुलोचना सुनहुवचनरघुवीर। तुमहिंमिलेनाहिंहोइभव यथासिन्धुकरनीर २८१॥

दृष्टिहिमाहिंविचारहै बूझैबिरलाकोइ ॥
चरमदृष्टिछूटैनहीं तातेशब्दीहोइ २८२

जोकहो साहबको देखै कैसेहैं तौ दृष्टिहीं में विचारहै साहब को देखैहै या चर्मदृष्टिकरिकै साहबको नहीं देखै या बात कोई बिरला बूझैहै याजीवकी चर्म्मदृष्टि नहींछूटै है तेहिते जो मन वचनमेंआवैहैसोज्ञानकरैहैशब्दीह्वैजायहै विषयनमेंलागैहै२८२ ॥

जबजगढोलातबलगबोलातबलगधनव्यवहार ॥
ढोलाफूटाधनगया कोइनझांकैद्वार २८३

जबलग या ढोलाकहे शरीरहै तबलग बोलै है तबलगसबधन व्यवहारहै जब ढोलाशरीर छूट्यो कहे फूट्यो तबघर धनव्यवहार सब आनैको ह्वैगयो कोई वाकोनाम नहींलेइ न कोईद्वार झांकै यातेया आयो कि साहबकोजानोजाते संसारछूटै २८३ ॥

करुबन्दगीविवेककी भेषधरेसबकोइ ॥
सोबन्दगिबहिजानदे शब्दविवेकनहोइ २८४

अरे मूढ़ विवेक करिकै बंदगी करु ईसब जितने मतवाले भेष धरे हैं तिनमें शब्द जो रामनाम ताको विवेक जाके न होइ अर्थात् साहब न जानतहोइ ताको बहिजानदे न ग्रहणकरु जे संसारसुख अर्थ छांड़िकै साहबसुख अर्थ विवेककरि जानैहैं ताको वंदगी करु २८४ ॥

सुरनरमुनिऔदेवता सातद्वीपनवखण्ड ॥
कहकबीरसबभोगिया देहधरेकादण्ड२८५

जे साहबसुख अर्थजानि साहबमें न लगे असांचमतनमें लगे ते सात द्वीप नवखण्ड जहांभर सुर नर मुनि हैं ते सब कर्म भोग भोगै हैं २८५ ॥

जौलगदिलपरदिलनहीं तौलगसबसुखनाहिं ॥
चारोंयुगनपुकारिया सोसंशयादिलमाहिं २८६

जबलग दिलपर दिलकहे जोदिलहै मन ताकेपरे जोसाहबको दियोमन हंसस्वरूपवाला सोमन जब लग याकेनहीं है तबलग याकोसुखनहींहै अर्थात् एकहूसुख नहींहै सोकबीरजी कहैहैं कि मोको चारौयुगनमें चारिरूपते पुकारत भयो पै सोसंशय इनके दिलमें पराहीरह्यो साहबको न जान्यो जातेसंसारछूटै २८६ ॥

यंत्रबजावतहौं सुना टूटिगये सबतार ॥
यंत्र बिचाराक्याकरै गयो बजावनहार २८७

अनहद आदिक बजावत मैं सुन्योहै जब बजावनहारो जीव जब शरीरते निकसिगयो कहे शरीर छूटिगयो तब नस जेसब तारहैं ते टूटिगये तबयंत्र जो शरीरहै सो बिचारा कहाकरै अरु वह अनहद बाजाकैसे बाजै जहां भरवाणी सबबोलैहैं तेसबबाजैहैं जीव बजावनवारो निकसो बाजा कहाकरै २८७ ॥

जोतुमचाहौ मूझको छांडुसकलकी आस ॥
मेराऐसाह्वैरहै सबकुछ तेरेपास २८८

गुरुमुख ॥ साहब कहैहैं कि जो तुम मोको चाहो तोसबकी भाशाछोंड़िदे जब तैं सबकी आशाछोड़िकै मोमें लगैगो तब तैं मे रा ऐसाह्वै रहै औ सबकछु तेरेपास ह्वै जायगो कछुकसी न रहैगी अथवा जैसा मैंद्विभुजहौं तैसा तुहूंरहैगो २८८ ॥

साधुभयातो क्याभया जोनाहिंबोलविचार ॥
हतैपराईआतमा जीभलियेतलवार २८९

जो वाके बोलकहे शब्दको विचार नहीं है तौ साधुभया तो क्याभया वातो जीभरूपी तलवारलिये पराई आत्मा हतैहैकैसे कि सबको उपदेश करिकै नानामतनमें लगावैहै सोउनको उद्धारकबहूं नहींहोयहै तेहिते अरेमूढ़ौ आपनी जीभरूपी तरवारि तें कहे सबके आत्माको हतन करौहौ जीवनको जननमरणदेवावौ हौ बिनासाहबके जाने जननमरण न छूटैगो २८९ ॥

हंसाकेघटभीतरे बसैसरोवर खोट॥
जीवठौरलागैनहीं रहासोओटैओट २९०

याहंसाजोहै जीवतौनेके घटभीतर एकमनरूपी सरोवरखो-टहै तहँ या हंसजीव बसैहै सो याजीवठौरमें न लग्यो केहेसाहब केपास न गयो वहीमनके ओटही ओटमें रहिगयो अर्थात् मन रूपी सरोवरैमें रहिगयो २९० ॥

मधुरबचनहैं औषधीकटुकबचनहैं तीर॥
श्रवणद्वारह्वै संचरैं शालैंसकल शरीर २९१

कटुकबचन तीरहैं औ मधुरबचन औषधहैं ते ये दोऊ श्रवण द्वारह्वैकै सञ्चरैहैं कहेजाइहैं औसिगरे शरीर मेंशालैहैं कहेव्याप्त ह्वै जायहैं जोकोई मीठबचनकह्यो तौवासों रागभयो औजोकोई कटुकबचन कहयो तौवासों द्वेषभयो औमधुर बचन ते जहांराग कियो जहांमन लग्योतहँ जन्मतभयो औ कटुकबचनसुनि कोप करि बधादिक कियो तेहिते आयु हानिभई मरतभयो याते मधुर बचन कटुबचन दोऊ बराबर शालैहैं २९१ ॥

ईजगतो जहड़ेगया भया योगना भोग॥
तिलतिलझारिकबीरलियतिलठीझारैलोग२९२

याजगतो जहडेगयो कहे ह्वै गयो काहेते कि न याको योगही सिद्धभयो न भोगही सिद्धभयो कैसेउ हजारन बर्षलों योगके जिये महाप्रलय भररहे आखिर नाशही ह्वै जायहै जोधर्म्मकरि दिविको भोगकियो तौ जब पुण्यक्षीण ह्वै जाइहै तबतो मृत्युही लोकको आवैहै याते न भोगसिद्ध भयो न योग सिद्धभयो सोतिलजो है रसरूपाभक्ति साहबकी ताकोतोकबीरजीकहैहैं कि मैं झारिलियो तिलेठीजोहै नानामत नानाउपासना तिनकी ओरलोग झारैहैं नामकरैहैं जामेंरस नहीं है २९२ ॥

ढाढसदेखुमरजीवको धसिकैपैठिपताल॥

जीवअटकमानैनहीं गहिलैनिकस्यो लाल २९३
मरजीवते कहावै हैं जेसमुद्रमें पैठिरत्न निकारै हैं ताको ढाढस देखो ढाढस करिकै पातालमें पैठैहैं जीवको अटक नहींमानै हैं समुद्रते लालगहिलैआवै हैं तैसेजीव तैहूंमनादिकनको त्यागिदे मरिवेकोनडेराय विश्वासकरिकैसाहब रसरूपसागरमेंपैठु २९३॥

येमरजीवाअमृतपीवा काधसिमरैपताल ॥
गुरुकीदयासाधुकीसंगति निकसिआउयहिकाल २९४

ये मरजीवा कहे तैंतो अमृतको पीवनवारो पातालमें धसि कैकहे संसार में परिकै कहामरैहै औ जियैहै नरकको चलाजाइ है सो गुरूकी दयाते साधुनकी संगतिते तूयहीकालमें संसारते निकसिआउजोतैं साहबके जाननवारे साधुनकी शरणहोइवाही चालचलै २९४॥

एकबुंदहलफेगये केतेगयेबिलोइ ॥
एकबुंदकेकारणेमानुषकाहेकोरोइ २९५

हा इति कष्टमें है सो कबीरजी कहैहैं कि हाय केतन्यो जीव लफेकहे नैगयै अर्थात् ढरकि गये अर्थात् साहबके मार्गचलेसा-हबकी उपासनाकियो पै गुरुवालोग जो नानामत लखायोतिन हींमें लफेकहे नैगये सोकेतौ तौ या प्रकारसोंगये औकेतौपहिले-हीते विगोयगये कहे बिगरिगये सो हे मानुष श्रीरामचंद्रको जो आनन्दसमुद्र ताके एकबुन्दके कारण हे संसारजिव तें काहेरोवै है धोखाब्रह्मकोछांड़ि साहबकोजानु जाते जननमरणछूटै २९५॥

आगिजोलगीसमुद्रमें टुटिटुटिखसैजोझोल ॥
रोवैकबिराढिम्भिया मोरहीराजरैअमोल २९६

या संसारसमुद्र में अज्ञानरूपी आगिलगी कर्मरूप झोलागे

शरीरके कारणहैं ते या देहते टुटिटुटि वा देहमें गये या देहजरि-
गई याहीरीतिते नानादेह धरै हैं संसार नहीं छूटैहै सो कबीर
जी रोवैहैं कि दम्भीह्वैके मोर अमोल हीराजीव ते अज्ञानरूपी
अग्निमें जरेजाय हैं २९६ ॥

सांचेशापनलागिया सांचेकालनखाय ॥
सांचेसांचेजोचलै ताकोकहानशाय २९७

कबीरजी कहैहैं कि दम्भकरिकै काहे अज्ञानरूपी आगिमेंजरे
जाउहौ जोसाँचे साहबमें लगिकैसाँचे साधुहोउ तौ वे सवतेजवर
होइहैं न वाकोशापलागै न वाकोकाल खायहै सो जाम्बवंतहनु-
मानादिक अबतकबने हैं २९७ ॥

पूरासाहबसेइये सबबिधिपूराहोइ ॥
ओछेनेहलगाइये मूलौआवैखोइ २९८

पूरा साहब जे सर्वत्र पूर्णहैं तिनको जो सेइये तौ सबबिधि
पूरोहोइ औ ओछेजेहैं नानामत धोखा तौने में जो लगाइये तो
नफाकी कौनचालै मूलौकीहानिह्वैजायहै २९८ ॥

जाहुवैद्यघरआपने बातनपूछैकोइ ॥
जिनयहभारलदाइया निरबाहैगासोइ २९९

कबीरजी कहैहैं कि हेवैद्य गुरुवालोगौ तुम आपनेघरकोजाहु
तुमको बात कोईनहीं पूछैहै जिन यह संसाररूपी भारलदायाहै
कहे संसार उत्पत्ति किया है तौनै निर्बाहैगा अर्थात् न निर्बाहैगा
चेतोसबमायिकहैंअधिक बाँधनेवारेहैं छुड़ावनेवारेनहीं हैं २९९॥

औरनकेसमुझावते मुखमेंपरिगोरेत ॥
राशिबिरानीराखते खायेघरकोखेत ३००

औरेनको उपदेश करत करत तुम्हारे मुखमें रेतकहे धूरिपरि गई अर्थात् कुछु न तुमसों वनिपरयो विरानी राशि तो तुम राखतेहौ कह और औरेको उपदेश करिकै समुझावतेहौ आपने घरको खेत जो स्वरूप ताको नहीं ताकतेहौ काल खायेलेइहै सो तुम्हारो स्वरूप खेततौ ताको नहीं रहै औरकी राशिकहे आत्मा तुमकैसे ताकौगे ३०० ॥

मैंचितवतहौंतोहिंको तुमकहचितवैऔर ॥
नालतऐसेचित्तको चित्तएकदुइठौर ३०१

गुरुमुख ॥ साहब जीवसों कहै हैं कि मैंतो तेरीओर चितवौ हौं सदा सन्मुखबनेरहौहौं औ तूकहा और औरमें चित्तलगावै है सो ऐसेतेरेचित्तको नालतिहै कि एकआपने चित्तको मायामें औ ब्रह्ममें दुइठौर लगाये है ३०१ ॥

तकततकावततकिरहे सकेनबेझामारि ॥
सबैतीरखालीपरे चलेकमानीडारि ३०२

साहब कहै हैं कि जेजीव मोको तकै हैं अर्थात् मेरे सन्मुख भयेहैं तिनको माया कालादिक जेहैं ते कामक्रोधादिकनते तका वैहैं कि जबहीं संधिपावैं तबहीं मारिलेइँ औ आपहू ताके रहैं हैं परन्तु जेजे मोकोतकेरहे चारयोयुग तिनको येकबहूं न बेझामा- रिसकै हैं सो जब सबैतीर खालीपरे माया कालादिकनते तब कमानी डारिकै चलेगये अर्थात् मोको जे हंसजीव जाने हैं तिन में माया कालादिकनको जोर नहीं चलैहै ३०२ ॥

जसकथनीतसकरनियो जसचुम्बकतसनाम ॥
कहकबीरचुम्बकबिना क्योंछूटैसंग्राम ३०३

जस साधूनकी कथनीकहे कहैहैं तस करनिउहै कैसे जैसेचु-

म्बक श्रीरामचन्द्रहैं तैसे उनको नामहूहै सो कबीरजी कहैहैं कि रामनाम चुंबकविना कामादिकनको संग्रामयाको कैसेछूटै जैसे लोहेको कना धूरिमें मिलोरहैहै जब चुम्बक देखावो तौ वाही में लपटिआवैहै धूरिमें नहींरहै ऐसे या जीवसाहबको है साहब को नामलेइहै तबहीं संसारतेछूटै है नहीं भटकतै रहैहै ३०३ ॥

अपनीकहैमेरीसुनै सुनिमिलिएकैहोइ ॥
मेरेदेखतजगगया ऐसामिलानकोइ ३०४

गुरुमुख ॥ साहबकहैहैं कि आपनीशंका मोसोंकहै पुनिजौन में वेदशास्त्रादिकनमें कह्योहै ताकोसुनै औ वहमेरेबाक्यसोंमिला वै देखै तो कोई शंका रहिजातीहै अर्थात् न रहिजायगी तबएकै मतह्वैजाय एकजोमैंहौं ताहीको जानिलेइ और सब छोड़ि देइ सो ऐसा मोको कोई न मिला जो मेरेदेखत जगगया होइ कहे जगतते दूरि भयाहोइ ३०४ ॥

देशदेशहमबागिया ग्रामग्रामकीखोरि ॥
ऐसाजियरानामिला जोलेइफटकिपछोरि ३०५

कबीरजी कहैहैं कि मैं देशदेश गाउँ गाउँ खोरि खोरि बाग्यो परन्तु ऐसा जियरा मोको कोई न मिला कि जो मैं कहौहौं ताको फटकि पछोरिलेइ ३०५ ॥

लोहेचुम्बकप्रीतिजस लोहालेतउठाय ॥
ऐसाशब्दकबीरको कालतेलेइछड़ाय ३०६

लोहेकी औ चुम्बककी प्रीतिहै जो लोहको चुम्बक देखैहै सो उठायलेइ है ऐसे कबीरजोहै कायाको बीर जीव ताको या शब्द रामनामहै जौनजीवको कालते छड़ाय लेइहै जैसे चुम्बकलोहे

के किणकाको आपने में लगाय लेइहै ऐसे रामनाम जीवको आपने में लगायलेइ है ३०६ ॥

गुरूबिचाराक्याकरैशिष्यहिमेंहैचूक ॥
शब्दबाणबेधैनहींबाँसबजावैफूंक ३०७

कबीरजी कहैहैं कि गुरू जोहै साहब सो बिचारा कहाकरै शिष्यजो है जीव ताहीमेंचूकहै कौनचूकहैयासों किरामनामरूपी जोशब्दबाण ताकेसाथ छइउजेचक्रहैं तिनकोवेधिकैसातोंचक्र जे हैंसुरतिचक्र ताकोबेधिकै उहांजोगुरूबतावैहै मकरतारडोरिताही चढ़िकैरामनाम रूपीवाणकेसाथ साहबके पासजायवो नजान्यो वहै निर्गुण ब्रह्मजोहै भूरवाँस ताहीमें लागिकै फूंकिफूंकिबजावै हैं अर्थात् वोहीको ज्ञानकथै हैं ३०७ ॥

दादाबाबाभाईकेलेखैचरनहोइगेबंधा ॥
अबकीबेरियाजोनासमुझ्योसोइसदाहैअंधा ३०८

मानुषशरीरपायकै दादा बाबा भाई सबसाहिबैको मानै है सोईसाहबके चरणको बंधाहोइहै कहे साहबके चरणमें सदालगे रहैहैं सो अबकी बेरियाकहे या मानुष शरीरपायके साहबको न जान्यो सोई सदाको अंधाहै ३०८ ॥

लघुताईसबतेभलीलघुताइहिसबहोइ ॥
जसद्वितियाकोचन्द्रमाशीशनवैसबकोइ ३०९

लघुताई सबते भलीहै लघुताइन ते सबहोइहै सर्वत्रसाहब को देखै आपनेको दासमानै तौ वाकीप्रीति साहबमें बढ़तै जाय है औ सब मायनावैहैं तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ लघुतातेप्रभुतामिलै प्रभुता ते प्रभुदूरि ॥ चींटीलै शक्करचली हाथी के शिरधूरि ३०९ ॥

मरतेमरतेजगमुवामरणनजानैकोइ ॥
ऐसाह्वैकेनामुवाजोवहुरिनमरनाहोइ ३१०

मरते मरते सबजग मराजायहै मरणकोईनहीं जानैहै ऐसा ह्वैकै कोई न मुवा जातेफेरि मरण न होय अर्थात् इन्द्रिनतेमन ते शरीरते भिन्न ह्वैकै साहबमें न लगे जाते पुनि जनन मरण नहीं होय ३१० ॥

वस्तुअहैगाहकनहींबस्तुसोगरुवामोल ॥
बिनादामकोमानवाफिरैसोडामाडोल ३११

वह गरुवामोलको जो साहबहै सर्बत्र पूर्णहै परंतुवाकोगाहक कोई नहींमिलैहै औ बिना दामको कहे बिनामोलको यहजीव साहबके ज्ञानबिना डामाडोलमें फिरै है अर्थात् जैसे बाजारमें गयो औ सबसाज उहां बनीहै औ हाथमें दामनहीं है तौ डामा-डोल फिरैहै लेनहीं सकैहै तैसेसाहब सर्बत्रपूर्ण हैं परंतु सतगुरु को उपदेशरूपदामनहीं है डामाडोल फिरैहै ३११ ॥

सिंहअकेलाबनरमैपलकपलककैदौर ॥
जैसाबनहैआपनातैसाबनहैऔर ३१२

वनजो है शरीर तामें सिंह जोहै जीव सो अकेला रमैहैऔ पलक पलकमें दौरकरिकै गुरुवनसों पूछैहै सो असनहीं बिचारै है कि जैसा वनकहे शरीर मेरोहै तैसे औरहूकोहै जैसे मोकोअ-ज्ञानहै तैसे इनहूंको अज्ञानहै येई नहीं संसारते छूटे हमको कैसे छड़ावैंगे ३१२ ॥

मरतेमरतेजगमुवाबहुरिनकियाबिचार ॥
एकसयानी आपनीपरबशमुवासंसार ३१३

मरत मरत सवजग मरिगया औ मरत चलोजायहै पै बहुरि कै कहे उलटिकै कोई न विचार कियो कि काहेते मरे जाय हैं आपनी आपनी सयानीते एकएक खाविंद खोजिलियो साहब को न जान्यो जे जीवके मालिक हैं तेहिते कालके वशह्वै सब मरे जायँ हैं ३१३ ॥

पैठाहैघरभीतरैबैठाहैसाचेत ॥
जबजैसीगतिचाहतातबतैसीमतिदेत ३१४

साहब जोहै सो सब के घटमें पैठाहै औ साचेत बैठाहै जब जैसी गति जीवचाहै है तब तैसी मतिजीवको देइहै जीव अणु-चैतन्यहै साहब विभुचैतन्य हैं सो जीव जौनेकर्मको सन्मुख हो-इहै तब चैतन्यता वढ़ाय देइहै तैसेमति वढ़ाय देइहै औ विना साहब के समर्थ जीव कछूनहीं करिसकै तामें प्रमाण॥ कर्तृत्त्वं करणत्वंच सुभावश्चैतनाधृतिः॥ यत्प्रसादादिमे संति नसंतिय-दुपेक्षया इतिश्रुतेः ३१४॥

बोलतहीपहिंचानियेचोरशाहुकेघाट ॥
अंतरकीकरणीसबैनिकसैमुखकीवाट ३१५

जे साहब में लगेहैं ते औ जे धोखाब्रह्ममें लगे हें ते इनको कैसेपहिंचानिये तौ उनके बोलते अन्तरकी करणी मुखकीवाट निकसैहै तबहीं चोर शाहू पहिंचाने परैहैं इहांचोर जो कह्यो सो यह जीव साहबकोहै तिनको चोराइकै कहे छोड़िकै धोखा में लग्यो तातेचोरकह्योहै तामेंप्रमाण ॥ नारिकहावैपीउकी रहैऔर सँगसोइ ॥ जारपुरुषहिरदेवसै खसमखुशीक्यों होइ ३१५ ॥

दिलकामहरमकोइनमिलिया जोमिलियासोगरजी ॥
कहकबीरअसमानैफाटा क्योंकरिसीवैदरजी ३१६

मन दिलका महरमी कहे निःकामह्वै साहब में लगै याकोई न मिल्यो जो मिल्यो सोगरजवाला मिल्यो ताको तेतनै मँजूरी दैकै साहब अऋण ह्वैजाय हैं सो कबीरजी कहे हैं कि जो जीव साहबकोहै तौ जौन जौनबस्तु साहबकी है तौनतौन बस्तुजीव हूकीहै पै आपनेको असफाटा कहे जुदाजुदामानैहै कि साहबसों मांगैहै कि फलानी वस्तु मोको देउ या मूर्ख नहीं समुझै है कि साहबकी शरणभये कौनौ बातकीटोटी न रहिजायगी सो दरजी जो साहबहै सो कहांतक सीवै कहे आपने में मिलावै ३१६ ॥

बनाबनायामानवा बिनाबुद्धिबेतूल ॥
कहालाललैकीजिये बिनाबासकाफूल ३१७

यह मानवा जोहै मनुष्य सो बनै बनावा औ बेतूल है कहे कौनौ देवता याकी बराबरीको नहीं है पै बिना बुद्धिकोहै याही ते सबते नीचह्वै रह्योहै बिनाबासको कहे बिना सुगंधको लाल फूल लैकै कहाकरै ऐसे जीव बहुत सुन्दर भयो औ साहबको न जान्यो औरे मतनमें लागिकै लालह्वैरह्यो वा बुद्धिनहीं जातेसाहबकोबूझै तौ कहाभयोतामेंप्रमाण ॥ कहाभयो जोबडकुलउपजे बड़ीबुद्धिहैनाहिं ॥ जैसेफूलउजारिकेवृथालालझरिजाहिं ३१७॥

साँचबरोबरतपनहीं झूठबरोबरपाप ॥
जाकेभीतरसाँचहै ताकेभीतरआप ३१८
करतैंकियानविधिकियारबिशशिपरीनदृष्टि ॥
तीनलोकमेंहैनहीं जानतसकलौसृष्टि ३१९

यासाखीको अर्थस्पष्टै है ३१८ कर्त्ता पुरुष भगवान् नहीं किया न करतार किया न रवि शशि दृष्टि परी न तीन लोक में खोजेमिलै परंतु सबसृष्टि जानैहै सो कबीरजी कहै हैं कि या झूठ कहांते आई है ३१९ ॥

आगेआगेदववरै पीछेहरियरहोइ ॥
वलिहारीवावृक्षकी जरकाटेफलहोइ ३२०

कर्त्ता जगतको वनायो सो कैसोहै ताकोकहे हैं आगेआगेदव वरै आगे शरीर सवके जरतजायहै औ पीछे हरियरहोय है कहे नयेनये शरीरधारणहोतहैं सो ऐसेसंसाररूपी विटपकी वलिहारी है जामें जरकाटे फलहोइहै अर्थात् जौने जीवकोसंसार निर्म्मूल ह्वैगयो तौनेजीवकोसाहवरूपीफल मिलै है ३२० ॥

सरहरपेड़अगाधफल अरुवैठाहैपूर ॥
वहुतलालपचिपचिमरे फलमीठापैदूर ३२१

या शरीररूपी सरहर वृक्षवड़ाऊंचा है सरलहूहै सवकोमिलैहै और शरीर वृक्षको फलकहा है साहवकोजानै सरअगाध है औ सर्व्वत्र पूर्णहै अंतर्यामी रूपते सवके हियेमेंवैठाहै सो ऐसोसा-हवको ज्ञानरूपीफलमीठाहै परंतु दूरिहै वहुतलालकहे वहुतजे जीवहैं ते पचिपचि मरे पै पायेनहीं अथवा साहवको ज्ञानरूपी फल सरहरहै कहे चीकनहै चढ़नेमाफिक नहींहै खसिलि परैहै तामेंप्रमाण कवीरजीको ॥ वहुतकलोग चढ़ेविनभेदा देखाशिख गहिपानी । खसिलापाउँऊर्ध्वमुखभूले परेनरकीखानी ॥ औ शरीरकोफल साहवको भजनहै,तामेंप्रमाण गोसाईंजी को ॥ देह धरेको याफलभाई । भजीरामसवकामविहाई ३२१ ॥

वैठरहैसोवानियाँ खड़ारहैसोग्वाल ॥
जागतरहैसोपाहरू तिनहुंनखायोकाल ३२२

वनियां वैठरहैहैं दुकान लगाये ते गुरुवालोग हैं जे जौने देव-ताको मंत्र मांगै हैं ताको तौनही मंत्र देइहैं औग्वालखड़े गोवन को चरावै हैं तेवे हैं जे आत्मैको मालिकमानैहैं इन्द्रिनको चरावैं

हैं जोने विषयचाहैहैं तोने भोगैहैं दूसरोलोक नहीं मानैहैं शरीर हीको मानै हैं औ जे जागत रहे हैं ते पाहरू हैं आपनी वस्तु ताकै हैं ते योगीहैं आपनी इन्द्री को ताकेरहे हैं समाधि लगाये सदा जागत रहैहैं सो ये तीनों साहबको नजान्यो ताते तिनहुंन को काल धरिखायो ३२२ ॥

युवाजराबालापनबीत्यो चौथिअवस्थाआई ॥
जसमुसवाकोतकैबिलैया तसयमघातलगाई ३२३

तीनिउँ अवस्था बीतगई चौथि अवस्था आयगई जैसे मूसको बिलारी ताकैहै ताको घात लगाये है तैसे यम तोको घातलगाये हैं सो अजहूं साहब को चेतु ३२३ ॥

भुलासोभुलाबहुरिकैचेतु ॥ शब्दकिछुरीसंशयकोरेतु ३२४

गुरुमुख ॥ साहब कहे हैं कि हे जीव तैंभूला सो भूलाभला यह संसारते बहुरि कहे उलटिकै तौ चेतकरौ सार शब्द जो राम नाम छूरी तेहिते आपनी संशय रेतडारु कहे काटिडारु अर्थात् रामनामको अर्थ तो विचारु तैं मेरोई है और पदार्थ छोड़िदे तामें प्रमाण ॥ यकरामराम जानेबिना भवबूड़िमुवा संसार ३२४ ॥

सबहीतरु तरजायकैसबफललीन्होचीखि ॥
फिरिफिरिमाँगतकबिरहैदर्शनहींकीभीखि ३२५

सबही तरुतर जायकै कहे शरीरधारण करिकै सुख दुःखरूप फल सब चाख्यो नाना उपासना योग ज्ञान वैराग्य सबकैचुक्यो शरीर धरेको फल कोई न पायो सोशरीर धरेको फल साहबको दर्शन है सो फिर फिर कबीर मागै है ३२५ ॥

श्रोतातोघरहीनहीं वक्ताबदैसोबाद ॥
श्रोतावक्ताएकघर तबकथनीकोस्वाद ३२६

श्रोता तौ घरहीमें नहींहै अर्थात् सुनतैनहीं है औ वक्ताआपनो मत वादिवादिवदैहै श्रोताको समुझावैहै सो जब श्रोतावक्ता एक घरहोइ कहे एकै उपासनाहोइ एकैमतहोय तबकथनीको स्वादहै कहे कथाको स्वाद तबहीं मिलैहै जैसे याज्ञवल्क्य भरद्वाज इत्यादिक तामेंप्रमाण ॥ इष्टमिलैअरुमनमिलै मिलैभजनरसरीति ॥ तुलसिदाससोइसंतसों हठकरिकीजैप्रीति १ शिष्यसांचगुरुसांचहै झूंठनजियतनमान ॥ बध्योशिष्यसांचीप्रकृति छोरतगुरुदैज्ञान २ औकबीरहूजीकोप्रमाण॥नामसत्यगुरुसत्यहै आपसत्यजबहोइ ॥ तीनसत्यप्रकटैंजबै गुरुकाअमृतहोइ ३२६ ॥

कंचनभोपारसपरसिबहुरिनलोहाहोइ ॥
चंदनबासपलाशबिधि ढाखकहैनहिंकोइ ३२७

पारसको परसिकै कंचनभयो जो लोहहै सो फिरि लोहा नहीं होइहै औ चंदनके बासते पलाश जो छिउलहै सो बेधिगयो ताको ढाख कोईनहीं कहैहै चंदनै कहैहै ऐसे जो जीव साहबको ह्वैगयो साहब के पासगयो ताको जीव कोई नहीं कहैहै पार्षदरूप कहावनलगै है ३२७ ॥

बेचूनैजगराचिया साईंनूरनिनार ॥
तबआखिरकेवखतमें किसकाकरौदिदार ३२८

बेचून निराकार जौन जगतको रचिसिहै सोसाईं के नूरते कहे प्रकाशते निनारहै जुदाहै अर्थात् साहबको प्रकाश न होइ वा नूरही अल्लाहहै ऐसा जो मानो तो हे मुसल्मानो मैं पूछता हौं कि आखिरके वखतमें कहे क़यामतके वखतमें वानिसाफ़ करैगा ऐसा कुरानमें लिखताहै सो उसको बेचून मानतेहौ निराकार मानतेहौ तौ भला वा किसतरहसे निसाफ़ करेगा औ केसका दिदार करौगे अर्थात् किसकी संगति देखौगे भाव या है

कि या निराकार नहीं है साकारहै तुमको भ्रम भया है सो या बात सत्ताईस रमैनी के मूलमें है साहबको नूरजो है प्रकाशसो सबके भीतर बाहर भराहै कोई जगह उससे खाली नहीं है औ साहब औ साहबकी सामग्री औसाहबको लोक सब नूरही नूर का है वहां बहुतसानूर समिटिकै एकसल देखि परैहै जिसतरह की मिसालकि जैसासाहबहै तैसासाहबै है दृष्टान्तकाकोदेइ सो कबीरजी पूछे हैं कि भला तुमहूँ तो विचारिदेखो कि जो उसके हाथै पांउ न होतो तौ जगतको कैसे रचतो सो साहब साकारहै तुमको निराकारकी भ्रमभईहै तामें प्रमाण ॥ कलिमा बाँगने वाजगुजारै । भरमभई अल्लाह पुकारै ॥ अजबभरमयकभई तमासा । लामकान बेचूननिवासा ॥ बेनिमून वै सबके पारा । आखिरकाकोकरौदिदारा ॥ रगरैमहजिदनाकअचेता । भरमाने बुतपूजाहोता ॥ बावनतीसबरणनिरमाना । हिन्दूतुरुकदोऊपर माना ॥ भरमिरहेसबबरणमहँहिन्दूतुरुकबखान । कहैकबीरबिचारिकै विनगुरुकीपहिंचान ॥ भरमतभरमतसबभरमाना ॥ राम सनेहीबिरलाजाना ३२८ ॥

साईनूरदिलएकहै सोईनूरपाहिंचानि ॥
जाकेकरतेजगभया सोबेचूनक्योंजानि ३२९

साईजोहै साहब श्रीरामचन्द्र ताहीको एकनूरसबकेदिलमेंहै सोई नूरतें प्रकाश पहिंचानु जौनेके करते जग सब उत्पत्तिभया है ऐसो जो साहब ताकोतू बेचूनकहे निराकार न जान वे साहब साकारहैं औनिर्गुण सगुणकेपरेहैं तामें प्रमाण कबीरजीकोसाक्षी॥ अपअखण्डितव्यापीचैतन्यश्चैतन्य । ऊंचेनीचेआगेपीछेदाहिन वायँअनन्य ॥ बड़ातेबड़ा छोटते छोटा मीहीते सबलेखा । सब केमध्य निरन्तरसाईं दृष्टिदृष्टिसोंदेखा ॥ चामचश्मसोंनजरिभ आवै खोजुरुहके नैना । चूनचगूनवजुदन मानुतैं सुभानमूना

ऐना ॥ ऐनाजैसे सबदरशावै जो कछुवेष बनावै । ज्यों अनुमान करैसाहबको त्योंसाहब दरशावै॥ जाहिरूह अल्लाहके भीतरतेहि भीतरकेठाईं । रूपअरूप हमारि आशहै हमदूनहुंके साईं ॥ जो कोउरूहआपनीदेखै सो साहबकोपेखा । कहैंकबीरस्वरूपहमारा साहबकोदिलदेखा ३२९ ॥

रेखरूपजेहिहैनहीं अधरधरोनहिंदेह ॥
गगनमँडलकेमध्यमेंरहतापुरुषबिदेह ३३०

कैसो साहबहै कि जाके रूपरेखानहीं है औ विशेषिकै देहधारणकीन्हें है अर्थात् रसहीरस देहधारण किये है पंचभौतिक नहीं है औ अधर जो आकाश तामेंदेह कबहूं नहीं धरै अर्थात् जोकबहूँ नरहै तब न देहधारै वातोसर्बत्र पूर्णहै गगनमंडलके मध्यमें कहे तीन आकाशहैं एकनीचे एक मध्यमें एक ऊपर सो तीनों आकाशमें वा विदेहपुरुष पूर्ण है ३३० ॥

धरोध्यानवापुरुषको लावहुवज्रकेवाल ॥
देखिकैप्रतिमाआपनी तीनोंभयेनिहाल ३३१

वह परमपुरुष साहबजे रसरूप तिनको ध्यानधरो जलन्धर बन्ध लगायकै झटकादैकै वज्रकपाट लगायो सुरति कमलमें जो रकारहै सो ध्यान किये साहब आपही प्रकट होयहै यही ध्यान करिकै तीनों ब्रह्मा विष्णु महेश आपनी आपनी प्रतिमा देखिकै निहालभयेहैं अर्थात् साहबके समीप हज़ारन ब्रह्मा विष्णु महेश देखिकै या निहालभये कि धन्य हमारी भाग्यहै कि श्रीरामचन्द्र के द्वारमें हमहूं हैं यहांतो कोटिन ब्रह्माण्ड के ब्रह्मा विष्णु महादेव मौजूद हैं ठाढ़े स्तुति करैहैं ३३१ ॥

यहमनतोशीतलभया जबउपजाब्रह्मज्ञान ॥

जेहिबैसन्दरजगजरै सोपुनिउदकसमान ३३२

जब ब्रह्मज्ञान भयो तब यह मन शीतल ह्वैगयो अर्थात् संकल्प विकल्प छोड़िदियो तपिबो मिटिगयो सो जौने बैसन्दरते कहे ब्रह्मज्ञानते मनको संकल्प विकल्प छूटिगयो जग जरिगयो अर्थात् न रह्यो तौन जो ब्रह्मज्ञान सो उदक जो साहबकी प्रेमा भक्ति तामें समान अर्थात् जब साहबकी भक्तिभई तब वा ब्रह्माग्नि न रहिगई यामें ते या आयो कि ज्ञानको फल साहब की भक्तिहै तामें प्रमाण ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति॥ समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपरां १ भक्तिमेंछागुण हैं ॥ क्लेशघ्नी शुभदामोक्ष लघुताकृत्सुदुर्लभा । सांद्रानन्दविशेषात्मा श्रीकृष्णाकर्षणमिता ॥ विनाभक्ति साहब नहीं मिलैं तामें प्रमाण कबीर जीको भवतरणग्रन्थको ॥ सुनुधर्मदासभक्तिपदऊंचा । तिनसीढ़ी नहिंकोउपहूंचा ॥ व्रतएकहै भक्तिकोपूरा । औरव्रत सबकोजैदूरा॥ और व्रत सबजनकीफाँसी । भक्तिहिव्रतमिलैं अविनासी ३३२॥

जासोंनाताआदिकोविसरिगयोसबठौर ॥
चौरासीकेवशपरेकहतऔरकोऔर ३३३

जौने साहबको आदिको नातारहै कहे जाको सदाको दासअंश तौने रामचन्द्रको भक्तिविसरिगयो मायामेंपरि चौरासीलाखयोनिके वशह्वै औरको और कहहैं अर्थात् कहूंकहैं कि वा ब्रह्मनहीं हों कहूं आत्मैको मालिकमानैहैं कहूं नानादेवतनकोस्वामीमानै हैं परन्तु संसार काहूको छुड़ायो न छूट्यो ३३३ ॥

बूझौशब्दकहांतेआयाकहांशब्दठहराय ॥
कहकबीरहसशब्दसनेहीदीन्हाअलखलखाय ३३४

लीन्ह्योफटिकपछोरि यहसाखीमर सबपोथिनको पाठमिलि आवाहै औ लोहे चुम्बक प्रीतिजसयह साखीते चौरासीकेवशयह

साखीभो उन्तिससाखी एक पोथी के क्रमते ह्वैआवा अर्थ अब एक पोथी में अट्टाइस साखी औरई और हैं तिनहुंनको अर्थ लिखै हैं यहशब्द जो रामनाम है सो बूझौ कहे विचारौ कहांते आयाहै औ कहां ठहरायहै सो हम वही शब्दके सनेहीहैं वाशब्द तुम नहीं बूझते हौ कैसो है शब्द कि साहब के इहां ते आयो है रामनामलै उचरीबाणी ॥ यह रमैनी में लिखि आये हैं सो जब कुछुनहींरह्यो तबरामनामहीते सबकी उत्पत्तिभईहै सो राम नाम मंत्रार्थ जोमैंबनायोहै तामें विस्तारतेलिखिदियोहै इहांसं-क्षेपते जनाये देउँहौं अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ च् हयवरट् लण् ञमङणनम् झभञ् घढधष् जबगडदश् खफछठथ् चटतव् कपय् शष सर् हल् ॥ येसबवर्णचौदहसूत्रमेंपाणिनिलिखिदियो॥आद्यंताभ्यां आद्यंतौ सहमध्यगानामसंज्ञा ॥ यहसूत्र करिकै अकार आदिका लीन औलकारअन्तकालीन तब अलप्रत्याहारकीनतेहितेबीचके चरण सब आयगये सो अलप्रत्याहार रामनामको एकदेशते नि-कसैहै सो रामनामके रकारको वर्णविपर्यय कियो तब अकारको यहकैतिलै औ रकारको वह कैतिलैगये तब अरभयो सो रकार लकारकोअभेदहै तेहिते अलभयो तेहितेरामनामके एकदेशतेसब निकसिआये तेहितेसबकोआदिरामनामहैसोरामनामकोअर्थसा-हिबैकेठहरायहै अर्थात् रामनाम साहबहीकोबतावैहैसोश्रीकबीर जीकहैहैं कि हमवही शब्दकेसनेहीहैं कैसोहै शब्द कि अलखहै वा सबको लखावैहै वाको कोईनहींलखैहै जैसेआंखीते सबकोदेखैऔ आंखी आपनी कोईनहींदेखैहै जो कहो कबीर कैसेकहैहैं कि हम अलखकोलखायदियो तौसुनो जैसे ऐनालैकैदेखै तौ आपनीआं-खीकोप्रतिबिंबदेखिपरैहै सो यह बीजकरूपऐनाहै तामें अनिर्वच-नीयजोरामनामताकोप्रतिबिंब बीजकमेंदिखायो अर्थात् यहबताय दियो कि रामनामहीते जगतमुखअर्थमें सबकीउत्पत्तिभई है औ रामनामही साहबको बतावै है साहबमुखअर्थमें औअनिर्वचनीय साहबको रामनामही देखायदेइहैयहकबीरजीअलखकेदेखिबेको

उपाय बतायदियो यही अलखको लखावनोहै सो जब साहबको ह्वैजाय तबयालखै तामें प्रमाणसुखसागरको॥ अलखअपारलखै केहिभांती। अलखलखैअलखैकीजाती ३३४॥

बूझौकरताआपना मानौबचनहमार॥
पंचतत्त्वकेभीतरैजिसकायहबिस्तार ३३५

तुमकहांते आये औ तुमको कोकियो सो अपने कर्त्ताको तुम बूझौ वहसाखीमेंतो वचनहमकहिआये ताको तुममानौ तुमवह शब्द रामनामहीते भयेहौ जिसका यहबिस्तार सबदेखतेहौ औ जौन जौन मानिदी तुम मानिराखेहौ सो सब पंचतत्त्वकेभीतर है एकवह रामनामही पंचतत्त्वके बाहिरेहै औ वही तुम्हारोआदि कर्त्ताहै ३३५॥

हमकर्त्ताहैंसकलसृष्टिकेहमपरदूसरनाहि॥
कहैंकबीरहमैंनहिंचीन्हैसकलसमानाताहि ३३६॥

हमहींसम्पूर्णसृष्टिकेकर्त्ताहैं हममालिकदूसरनहींहै हमहींसबके मालिकहैं सबमहींमें समानहै हमहीं ब्रह्महैं ऐसाकोईकोईकबीर कायाके बीरजीव कहैहैं ताको आपै खण्डनकरै हैं ३३६॥

सुतनहिंमानैबातपिताकीसेवैपुरुषबिदेह॥
कहैकबीरअबहुँकिनचेतौछांड़ोझूठसनेह ३३७

तैं सुतहै रामनाम प्रतिपाद्य जे साहबहैं ते तेरे पिताहैं तिन की बात तैं नहीं मानैहै औ विदेह पुरुष जोहै ब्रह्म ताकोसेवैहै कहे आपही ब्रह्महवै बैठै है सो अबहूं चेतकरु साहब कहिआये हैं कि अजहूं लेहुँ छड़ाय कालसों जो घटसुरतिसँभारै॥ सोऐसे पिताकी बातमानु यह झूठसनेह छोड़िदे जो आपने को ब्रह्म

मानिकै वैठेहैं कि महींब्रह्महौं यहब्रह्मतो मनको अनुभवहै झूठा है जीव ब्रह्म कबहूं नहिंहोय है ३३७ ॥

सबैआशकरशून्यनगरकी जहांनकर्त्ताकोई ॥
कहकबीरबूझौजियअपनेजातेभरमनहोई ३३८

सबै वह शून्यनगरकी आशाकरैहैं जहां कोईकर्त्ता नहीं है सो वह तो झूठांहै सो कबीरजी कहैहैं कि तुम आपने मनमें बूझो तौ उहांतौ कर्त्ताहईनहीं है औ जगत् बनै है तौ कौन जगत् को कियो है तेहिते निराकार अकर्त्ता ब्रह्म कहनूति जो कहौहौ सो सब झूठीहै सो यह तुम आपने जियमें बूझौ जेहिते ब्रह्मवालो भ्रम तुमको न होइ ३३८ ॥

भक्तिभक्तिसबकोइकहै भक्तिनआईकाज ॥
जहँकोकियाभरोसवा तहँते आईगाज ३३९

भक्तिभक्ति सबकोई कहै हैं औरे औरे देवतनकी भक्तिकरै हैं सो वा भक्ति कौनौ काज न आई जेहिजेहि देवको भरोसाकियो तहांते गाजआई कहे वेसब काल स्वरूप हैं सब याको मारिकै आपने लोक लैगये जब महाप्रलय भई तब इष्ट औ उपासक दोऊ नरहे पुनि सबजगत्की उत्पत्तिभई तब कर्म्मानुसार दोऊ उत्पत्ति भये ३३९ ॥

समुझौभाईज्ञानियोकाहुनकहासँदेश ॥
जेइगयेबहुरेनहीं हैवहकैसादेश ३४०

हे भाई ज्ञानिउ तुम समुझतेजाउ तौन तुम ब्रह्मब्रह्मकहौ हौ तहां को संदेश कोई न कह्यो कहे सब वेदांती ब्रह्मज्ञानी कहै हैं कि वाको तो हम कहिनहीं सकैहैं यों कैसाहै औ जे उहां गयेते

बहुरिकै न आये जो वहां को संदेश बतावैं अर्थात् कुछ न हाथ लग्यो ३४० ॥

धोखेसबजगबीतिया धोखेगईसिराइ ॥
थितिनाकरैसोआपनी यहदुखकहानजाइ ३४१

धोखाहीते सम्पूर्ण जगत् व्यतीतहोगया और धोखाहीते सिरायगया औ यहमन आपनी थिति नहीं पकरै हैकहे स्थिर नहीं होयहै सोआपनीभूल कासोंकहै याढुःख काहूसोंनहींकह्यो३४१ ॥

मायातेमनऊपजै मनतेदशअवतार ॥
ब्रह्मविष्णुधोखेगये भरमपरासंसार ३४२

साहब औ साहबके पास पहुँचे हैं जे तिनको छोड़े औरसब मनके फन्दमें परेहैं और अर्थ स्पष्टहीहै ३४२ ॥

रामकहतजगबीतेसिगरे कोईभयेनराम ॥
कहकबीरजिनरामहिंजाना तिनकेभेसबकाम ३४३

हमहीं रामहैं हमहीं रामहैं या कहत कहत सबजगबीतिगये कहे मरिगये परन्तु कोईरामनभये और कबीरजीकहैहैं कि जिन श्रीरामचन्द्रको मालिकजान्योहै तिनके सबकामह्वैगयेहैं ३४३ ॥

यहदुनियाभैबावरी अदिटसोंबांध्योनेह ॥
दृष्टमानकोछोड़िकै सेवैपुरुषविदेह ३४४

यह दुनिया बावरी ह्वैगई है अदृष्ट जो निराकार ब्रह्म तासों नेहबांध्योहै सो वातो धोखाहै काकोमिलै जीवब्रह्म होतही नहीं है सो दृष्टमान जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं तिनको छोड़िकै वा विदेहपुरुष निराकार ब्रह्मको सेवैहै अर्थात् वाहीमें लागेहैं ३४४॥

राजारैयतह्वैरहा रैयतलीन्हीराज ॥

रैयतचाहैसबलिया तातेभयाअकाज ३४५

राजा जो साहब है सो रैयत ह्वैरहा है अर्थात् वाको कोई जानतहीनहींहै औ रैयत जो धोखाब्रह्म सो सबलेतभयो अर्थात् सबजगत् वाही में लगत भयो सो रैयत जोहै अहंब्रह्मास्मि सो साहबको सब लियो चाहैहै अर्थात् आपै ब्रह्म होनचाहै है ताते अकाज भयो माया के वश ह्वै आपनेन को मालिक मानन लग्यो ३४५॥

जिसकामंत्रजपैसबसिखिकै तिसकेहाथनपाऊं॥
कहैंकबीरमातुसुतकाही दियानिरंजननाऊं ३४६

जिसका मंत्र सब सिखिकै जपै हैं प्रणव उसकाअर्थ ब्रह्मही है जिसके हाथपांउ नहीं हैं औ निरञ्जन जो है ब्रह्म ताको निरञ्जननाम मायैकोधरायोहै माया वा निरञ्जन ब्रह्मकीमाता है काहेते किया निरञ्जन नाम बचन में आवै है विज्ञान करिकै अनुभव जो ब्रह्महोइहै सो मनको अनुभवहै मायैको पुत्रहै वह माया मनमेंमिलि इच्छारूपहै सो जाको तुम ब्रह्मकहौहो सोई मायाते रहित नहीं है तुम कैसे अहंब्रह्म मानि माया ते रहित होउगे तामेंप्रमाण कबीरजीकेशब्दको॥ मनपरपंचमिनैनिरञ्जन मनहीहै ओंकारा॥ तीनलोकमनफांसिलियाहै कोईनमन तेन्यारा ३४६॥

जनिभूलौरेब्रह्मज्ञानी लोकवेदकेसाथ॥
कहकबीरयहबूझहमारी सोदीपकलियेहाथ ३४७

कबीरजीकहैहैं कि रेब्रह्मज्ञानी तुमजनिभूलौ लोकवेदकेसाथ लोकमें सरहना पायकै वेदमें धोखा ब्रह्ममें लागिकै अर्थात् तुम यामेंनखराबहोउ सो कहकबीर यह बूझहमारी कहे कायाकेबीर जीवौ परमपर पुरुष जे साहब श्री रामचंद्र तिनमें तन मन ते

लागो जो हमारीबूझहै सोई साहबके अनुरागरूप दीपक हाथमें लेउ जाते संसाररूप अंधकारते पारहोउ ३४७ ॥

देवनदेखासेवकहि सेवकदेवनदीख ॥
कहकबीरइनमरतेदेखो यहगुरुदेईसीख ३४८

देवता आपने सेवक को सेवक आपने इष्ट देवता को न दीख तिनको कबीरजी कहै हैं कि हम दूनों को मरते देखा है अर्थात् महाप्रलय में नहीं रहैं ताते हम गुरूकी सीख इन को देतेहैं कि धोखा औ नानामतको त्यागि साहब को जानो जाते जनन मरणछूटै यासीख देतेहैं ३४८ ॥

तेरीगतितैंजानैदेवा । हममेंसमरथनाहीं ॥
कहकबीरयहभूलसबनकीसबपरेसंशयमाहीं ३४९

सबलोग या कहैहैं कि तुम्हारी गति तुम्हींजानो हममें सामर्थ्य नहीं है जौन हमको गुरू बताय दियो है ताही में लगे हैं तिनको कबीरजी कहै हैं कि इन सबकी भूल ईश्वर तो बतावै न आवैंगे औ जीवको तो आपने साहबको जानबै चाही नाहक संशयमें परे हैं साहबको जानैं तो साहब छड़ाय लेइँगे ३४९ ॥

खालीदेखिकैभरमभा ढुंढ़ताफिरैचहुंदेश ॥
ढूंढ़तढूंढ़तमरगया मिलानानिर्गुणभेश ३५०

जौने संशय में सब बुड़िगये हैं सो संशय कबीरजी देखावै हैं खाली कहे शून्य देखि कै सबजीवनको भरम भयो सो देवता परोक्षहै वाको अर्थ जानैं नहीं हैं औ चारों देश में ढूंढत फिरै हैं औ केते वा निर्गुण धोखा ब्रह्मको ढूंढत ढूंढत मरिगये खोज नलाग्यो ३५० ॥

बूझआपनीथिररहै योगीअमरसोहोइ ॥
अबबूझैमरसैतजै आपैऔर न कोइ ३५१
देखादेखीसबजगभरमा मिलानसतगुरुकोइ ॥
कहैकबीरकरतनितसंशयजियराडाराखोइ ३५२

गुरुवा लोग कहै हैं कि जो बूझ थिर रहै तौ योगी अमर ह्वै जाय जोजगत्के नाना भ्रमछोड़िकै अबहूं बूझै तौएक आपहीहै दूसरानहीं है मारैगा कौन ऐसे कहि कहि देखादेखी श्रीकबीरजी कहैहैं कि सबजगत् भरमि गयो सतगुरु कहेसाहबके जाननवारे इनको कोई न मिलो हमहीं ब्रह्महैं यही संशय में डारिकैआपने जीवनको खोइडारे अर्थात् नरकमें डारिदीन्हे ३५१। ३५२॥

झांकीआशलगाइया झूठीझांकीआश ॥
गृहतजिवनखँडमानिया युगयुगफिरैनिराश ३५३

वा ब्रह्म जो धोखा ताकीआश लगाये है सोआशतेरी झूठीहै गृहत्यागिकै जाके हेततुम बनखण्डमें टिकेहु सोयुग युग निराश फिरैगो अर्थात् ठिकान न लगैगो वह मिथ्याहै बिना साहबके जाने संसारते न छूटैगो ३५३ ॥

नेइकेबिचलेसबघरबिचला अबकछुनाहिंबसाइ ॥
कहैकबीरजोअबकीससुझैताकोकालनखाइ ३५४

कबीरजी कहैहैं कि नेइ जब बिगरि जायहै तब सगरो घर बिगरिजायहै ऐसे नेइजोहै धोखाब्रह्म जौनेको गुरुवालोग समुझावैहैं सोई जब मिथ्या ठहरयो तबऔरसब लोकके देवता येई घरहैं तेबिगरिबोई चाहैं अर्थात् इनते अब कौन सांचफलमिले सो श्रीकबीरजी कहै हैं जो कोई साहब को समुझै अर्थात् तन मनते लागै ताको कालनहीं खाय है और सब काल को कलेवा हैं ३५४ ॥

रामरहेवनभीतरे गुरुकीपूजिनआश ॥
कहकबीरपाखंडसब झूठेसदानिराश ३५५

वन जो है संसार तौनेके भीतर जब जीव भयो तब रामरहे कहे वह जीव रामते रहित भयो रामको पुनि बरिआई पावै है अथवा रामतेरहित जब जीव भयो तब संसारी ह्वै जाय है और परम गुरुजे सुरति कमल में बैठ रामनाम बतावैहैं तिनकीआश न पूजतभई वे रामनाम बतावैहैं यह नहीं सुनैहैं वे छड़ावनचहै हैं सो नहीं छूटैहैं औरजेसाहबको छोड़ि और औरमें लगावैहैं ते सब पाखण्डहैं झूठेहैं औपाखण्डीजेहैं और औरमें लागेहैं तिन-की मुक्ति कबहूंनहीं होइहै वेसदानिराशरहैं तामेंप्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ चकईबिछुरीरैनिकी जायमिलीपरभात ॥ जे जनबिछुरेरामते दिवसमिलैंनहिंरात ३५५॥

बिनारूपबिनरेखको जगतनचावैसोइ ॥
मारैपांचौजोनहीं ताहिडरैसबकोइ ३५६

जोमन जगत् को नचावैहै सो बिनारूपकोहै औबिनारेखको है आकाश वायु आदिकजेहैं तिनमें रूप नहीं है पै रेखदेखीपरै हैऔ वायुको परसहोइहै साई रेखहै औ मनके रेखऊनहींहै सो जेपाँचौज्ञानेन्द्री पाँचो कर्मेन्द्री को नहीं मारै हैं ऐसे गुरुवन को सबजने डेरातेजाउ नहीं तौ तुमहूं को संसार में डारि देइँगे ३५६ ॥

डरउपजाजियहैडरा डरतेपरानचैन ॥
देखारामहिंहैनहीं यहौकहैदिनरैन ३५७

यहीमनतेडरउपजा कहे यहीके अनुभवते ब्रह्मभयो सो भूत ब्रह्मको सबै डेरायहैं सो यही ब्रह्मके डरमेंजीवडराहै कहेपराहै सो यह ब्रह्मकेडरते चैननयाकोपरा अर्थात्यह ब्रह्मकोढूंढतहीं

रहिगये पायोनब्रह्म न भयो नचैन भयो यह कहै हैं कि रामको कोई देखाहै हमतोनहीं देखा जोकोई हमको देखाइदेइ तौ हम मानैं सो अरेमूढ़ौ तुमतोडरमें परेहौ तुमको कैसे देखाइदेईं जाको साहब कृपाकरैहैं ताकोदेखाइदेइहौं ३५७॥

सुखकोसागरमैंरच्याहुखदुखमेलोपांव॥
थितिनापकरैआपनी चलेरंकऔराव ३५८

श्रीकबीरजी कहैहैं कि मैंतो या बीजक ग्रन्थमें सुखकोसागर रच्योहै कहे साहबको बताइदियोहै तामेंनहीं लगैदुःखमें पाँउ में लैहै अर्थात् कहूं ब्रह्ममें कहूं ईश्वरनमें कहूं नानामतमें लागै है जहां याकीथितिहै साहबमें तिनको नहीं पकरै याहीते राजारङ्क सबचलेजायहैं कालखायेलेइहै ३५८॥

दुखनहतासंसारमें हतानशोगबियोग॥
सुखहीमेंदुखलादिया बोलैबोलीलोग ३५९

यासंसारजोहै सो चितअचितरूप साहबकोहै सोजोकोईसाहबरूपकरि संसार को देखैहै ताको न दुखहै न शोगहै न वियोग है साहबतो सर्वत्रपूर्णहै ऐसो सुखरूप जोहै संसारतामें मोरतोर में परिकै दुखलादिया कहे दुखभोगनलग्यो औवही मोरतोरकी बोलीलोगबोलैहैं साहबकोनहीं जानैहैं ३५९॥

लिखापढ़ीमेंपरेसब यहगुणतजैनकोइ॥
सबैपरेभ्रमजालमें डारायहाजियखोइ ३६०

सबलिखापढ़ीमें परे हैं वेदशास्त्रतात्पर्य्य करिकै साहबको बतावैहैं सो तो नजान्यो वादाविवाद पढ़िपढ़ि करनलगे नयेनये ग्रंथ बनायलेन लगे लिखनलगे वेदशास्त्रको अर्थफेरिडारनलगे

साहब सुख अर्थ जौनतात्पर्य करिकै वेदशास्त्रबतावै हैं ताको छोड़िअर्थबदलैहैं यागुणको कोई नहीं छांडै याहीते सबभ्रम जालमेंपरे आपनेजियको खोइडारयो ३६० ॥

धोखेधोखेसबजगवीता ह्वैअगुआकेसाथ ॥
कहैकबीरपेड़जोबिगरै अबका आवैहाथ ३६१

कबीरजीकहै हैं कि एकशुभकर्म एक अशुभकर्म येदुइअथवा विद्या अविद्यामायाये दुइ अथवा माया ब्रह्मयेदुइअगुआके साथ विगरिगयोअर्थात् माया वादीशक्ति ब्रह्मबादीयेदुइअगुआहैं तामें प्रमाणकबीरजीको ॥ कबिरायुगयुगसंप्रदा सिरीशङ्करीदोय ॥ सि-रीसुबादीशक्तिकेशङ्करशिवहीहोइ १ सोधोखेधोखेनसबजगबीता कहे मरिगयेसरतजायहैं मरिजाइँगे श्रीकबीरजीकहै हैं कि पेड़ही विगरिगयोकाहेते कि साहबजीवकोबहुतगोहरायो कि मेरेपासआ परंतुपेड़ही तेअर्थात् प्रथमहीते मेरेपास न आयो मन औ मनका अनुभव ब्रह्मको औमायाको मिलिकैयहजीव संसारीह्वैगयो सा-हबको न जान्यो जवशुद्धरह्योहै तबहींमायामन ब्रह्मयाको करि कै संसारी कैदियोहै ताहीके बश परयोहै अबकहां याकेहाथ सा-हब आवैहैं सो याको भावयहहै कि जो मन माया ब्रह्म ईश्वर उपासना ज्ञान सबछोड़ि साहबमें लगै तबयह जीवको कल्याण होइ यह जीव श्रीरामचंद्रहीको है औरको नहीं है सो आपने स्वामीकोचीन्है तबहीं याकोकल्याणहोइगो औरीभांति कल्याण न होइगो औ बीजक भरेको सिद्धांत यहहैकि वेदशास्त्र पुराणा-दिककुरान कितावनको कि जीवसाहब श्रीरामचंद्र कोहै सोजब उनको जानैतबहीं कल्याणहै औरीभांति कल्याण नहीं है औजो यासिद्धांत न जानै तौ संसारमें भटकतही रहै सो मैंसर्व सिद्धांत ग्रन्थमें स्पष्टही लिख्योहै कि वेदशास्त्र सिद्धांत में प्रतिपाद्य श्री-रामचंद्रही को कियोहै सो देखिलीजियो औ बीजकमें सोई क-बीरजी सिद्धांत कियोहै कि मनवचनकेपरे निर्गुण सगुणके परे श्रीरामचंद्रहैं औतिनहीं के जानेजीवकीमुक्तिहोइहै तामेंप्रमाण ॥

सायरबीजककोपद॥ संतौबीजकमतपरमाना। कैयकखोजीखोजिथकेकोइ बिरलाजनपहिंचाना॥ चारिउयुगऔनिगमचतुर्भुज गावैग्रंथअपारा। विष्णुविरंचिरुद्रऋषिगावैंशेषनपावैपारा॥ कोइ निर्गुणसगुणठहरावै कोईज्योतिबतावै। नामधनीकोसबठहरावै रूपकोनहींलखावै॥ कोउसूक्षमअस्थूलबतावै कोउअक्षरनिज सांचा। सतगुरुकहँबिरलेपहिचानैंभूलेफिरैंअसांचा॥ लोभकेभक्ति सरैंनहिंकासा साहबपरमसयाना। अगमअगोचरधामधनीको सबैकहैंह्वांजाना॥ देखैनपंथमिलैनाहिंपंथीढूंढतठौरठिकाना। कोउठहरावौशुन्यककीन्हा ज्योतिएकपरमाना॥ कोउकहैंरूपरेख नहिंवाकेधरतकौनकोध्याना॥ रोमरोममेंपरगटकर्त्ताकाहेभरम भुलाना॥ पक्षअपक्षसबैपचिहारेकरताकोइनविचारा। कौनरूपहै सांचासाहब नहिंकोईबिस्तारा॥बहुपरचैपरतीतिदृढावैसांचेको बिसरावै। कलपतकोटिजन्मयुगबागैदर्शनकतहुंनपावै॥ परमदयालुपरमपुरुषोत्तमताहिचीन्हनरकोई।ततपरहालनिहालकरतहै रीझतहैनिजसोई॥ बधिककर्मकरिभक्तिदृढावैनानामतकोज्ञानी। बीजकमतकोइबिरलाजानै भूलिफिरेअभिमानी॥ कहकबीर कर्त्तामेंसबहै कर्त्तासकलसमाना। भेदबिनासब भरमपरेकोउ बूझैसंतसुजाना ३६१॥

सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्री
सीतारामचन्द्रकृपापात्राधिकारिविश्वनाथसिंहजू
देवकृतपाखण्डखण्डनीटीकासमाप्ताशुभमस्तु।

श्लोक॥

पाखण्डखण्डनीनाम टीकेयंपरमामता॥
प्रेरणात्विश्वनाथेनविश्वनाथप्रकाशिता १

दोहा॥

बीजकग्रन्थकबीरको कहरासाखी ज्ञान॥

गूढ़मूललखितिलककिय श्रीविश्वनाथसुजान १
लहिविश्वनाथरजायशुभ रामनाथपरधान ॥
लिख्यो आपने हस्तते साखीशब्द महान २
इतिसाखीसम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीबीजककबीरदाससम्पूर्णम्

मुंशीनवलकिशोर(सी,आई,ई)केछापेखानेमुक़ामलखनऊमेंछपी
जून सन् १८९३ ई० ॥